

Neki Ki Da'wat (Hindi)

नेकी की दा'वत

हिस्सए अव्वल



फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द 2 का एक बाब

नेकी की दा'वत की ज़रूरत	नेकी की दा'वत की फ़ज़ीलत	नेकी की दा'वत तर्क करने के नुक़्सानात
बात करने वाला अजीब शक्ल का जानवर	क़सम और इस के कफ़्फ़ारे का बयान (ह-नफ़ी)	क्या वाक़ेई मूसीक़ी रूह की गिज़ा है ?
रियाकारी की 80 मिसालें	सुरमा लगाने की ब-र-कत से बुढ़ापे में भी बीनाई तेज़ थी	ज़ालिम का चेहरा देखने से दिल काला होता है
इबादत की ता'रीफ़	बारिश के पानी से बीमारियों का इलाज	जहन्नम की लरज़ा ख़ेज़ कहानी जिब्रईल عليه السلام की ज़बानी



शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج۱ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(नेकी की दा'वत)

येह किताब **(नेकी की दा'वत)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाई है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुता–लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा

Neki Ki Da'wat (Hindi)



नेकी की दा'वत

हिस्सए अव्वल



फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द 2 का एक बाब

नेकी की दा'वत की ज़रूरत | नेकी की दा'वत की फ़ज़ीलत | नेकी की दा'वत तर्क करने के नुक़्सानात

- बात करने वाला अ़जीब शक्ल का जानवर
- रियाकारी की 80 मिसालें
- इख़्लास की ता'रीफ़
- क़सम और इस के कफ़्फ़ारे का बयान (ह-नफ़ी)
- सुरमा लगाने की ब-र-कत से बुढ़ापे में भी बीनाई तेज़ थी
- बरसात के पानी से बीमारियों का इलाज
- क्या वाक़ेई मूसीक़ी रूह की गिज़ा है ?
- ज़ालिम का चेहरा देखने से दिल काला होता है
- जहन्नम की लरज़ा ख़ेज़ कहानी जिब्राईल की ज़बानी



शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

नाम किताब : **नेकी की दा'वत (हिस्सए अव्वल)**

मुअल्लिफ़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

साले इशाअ़त : **जुमादस्सानी 1433 सि.हि. मुत़ाबिक़ अप्रील 2012 सि.ई.**

नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना, अह़मद आबाद**

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19,20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (C/0) जामिअ़तुल मदीना, कमाल शाह बाबा दरगाह के पास मोमिन पुरा नाग पूर फ़ोन : 0712 -2737290

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह,

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

E-mail: maktaba@dawateislami.net

Ph : 9327168200 - Email : maktabahind@gmail.com

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

इस किताब के बारे में अहम म-दनी फूल

ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "क़ियामत के दिन सब नबियों से ज़ियादा मेरी उम्मत होगी।" (مسلم ص۱۲۸ حدیث ۳۳۱) मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : **जन्नतियों** की 120 सफ़ें होंगी जिन में से 80 सफ़ें ह़ुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत की होंगी बाक़ी 40 सफ़ों में सारे नबियों عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की उम्मतें। (ترمذی ج٤ ص٢٤٥ حدیث ٢٥٥٥) मुफ़्ती साह़िब एक और जगह लिखते हैं : जैसे ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम नबियों عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के सरदार हैं, ऐसे ही ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत सारी उम्मतों की सरदार है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 5, 586)

अल्लाहु रब्बुल आ़-लमीन جَلَّ جَلَالُہٗ का करोड़ हा करोड़ एह़सान कि उस ने हमें इन्सान और मुसल्मान बनाया और अपने प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत में पैदा किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस उम्मत को दुन्या व आख़िरत में जो रिफ़्अ़त व मन्ज़िलत, शानो अ़-ज़मत और सआ़दत व शराफ़त इनायत फ़रमाई है इस का एक सबब इस उम्मत का اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَ نَھْیٌ عَنِ الْمُنْکَر (या'नी नेकी का हुक्म करने और बुराई से मन्अ़ करने) के फ़रीज़े को अदा करना भी है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, "**कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" सफ़ह़ा 129 पर पारह 4 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 110 में इर्शाद होता है :

كُنْتُمْ خَیْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई, भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) पर ईमान रखते हो।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **हर मुसल्मान अपनी अपनी जगह मुबल्लिग़ है** ख़्वाह वोह किसी भी शो'बे से **तअ़ल्लुक़** रखता हो, या'नी वोह आ़लिम हो या **मु-तअ़ल्लिम** (या'नी त़ालिबे इ़ल्म) इमामे मस्जिद हो या मुअज़्ज़िन, पीर हो या मुरीद, ताजिर हो या गाहक, सेठ हो या मुलाज़िम, अफ़्सर हो या मज़दूर, ह़ाकिम हो या मह़कूम, **अल ग़रज़** जहां जहां वोह रहता हो, काम काज करता हो, रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ अपनी सलाह़िय्यत के मुत़ाबिक़ अपने गिर्दो पेश के माह़ोल को **सुन्नतों** के सांचे में ढालने के लिये कोशां (या'नी कोशिश करने वाला) रहे और नेकी की दा'वत का म-दनी काम जारी रखे, मगर

अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना येह अ़ज़ीम म-दनी काम बहुत ज़ियादा सुस्ती का शिकार है, इस सुस्ती को चुस्ती से बदलने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त, म-दनी क़ाफ़िलों, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत, म-दनी तरबिय्यती कोर्स, फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स, म-दनी चेनल और **दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत** वग़ैरा के ज़रीए़ ख़ूब सर गर्मे अ़मल है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ "फ़ैज़ाने सुन्नत" के ता दमे तह़रीर **पांच अब्वाब :** (1) फ़ैज़ाने **बिस्मिल्लाह** (2) आदाबे त़आ़म (3) पेट का क़ुफ़्ले मदीना (4) फ़ैज़ाने र-मज़ान और (5) ग़ीबत की तबाह कारियां मन्ज़रे आ़म पर आ चुके हैं, अब छटा बाब **"नेकी की दा'वत** (हि़स्सए अव्वल)" आप के हाथों में है जिस में नेकी की दा'वत देने की **अहम्मिय्यत** व फ़ज़ीलत और न देने के नुक़्सानात का बयान है (येह बाब काफ़ी वसीअ़ है इस में हि़कायातुल अम्बिया, नेकी की दा'वत के लिये सह़ाबए किराम की क़ुरबानियां, करामत के ज़रीए़ नेकी की दा'वत, मक्तूबात के ज़रीए़ नेकी की दा'वत, बा'दे वफ़ात नेकी की दा'वत, कमसिन मुबल्लिग़ीन वग़ैरा वग़ैरा पर काम करने की निय्यत है, ज़िन्दगी का भरोसा नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी चहीती म-दनी मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" को सलामत बा करामत रखे। इस मजलिस को वसिय्यत करता हूं कि मेरे बा'द भी इस काम को जारी रखते हुए मज़्कूरा मौज़ूआ़त की तक्मील कर के इन्हें **फ़ैज़ाने सुन्नत** में शामिल कर दे)। इस किताब को तक़रीबन 125 क़ुरआनी आयात, म-दनी आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के 249 इर्शादात, 113 इब्रत अंगेज़ हि़कायात, 51 म-दनी बहारों और मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर सेंकड़ों **म-दनी फूलों** से मुज़य्यन किया गया है। **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से उम्मीद है कि येह किताब पढ़ने से इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों में नेकी की दा'वत के अ़ज़ीम म-दनी काम के जज़्बे को मज़ीद तक़्विय्यत मिलेगी। किताबे हाज़ा को अग़लात़ से बचाने की बहुत कोशिश की गई है और दा'वते इस्लामी के तह़त चलने वाले दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मुफ़्ती साहि़ब से बा क़ाइदा शर-ई तफ़्तीश भी करवाई गई है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी कोशिश रहती है कि अपनी कुतुब व रसाइल और ना'तिया कलाम को उ़-लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की नज़र से गुज़ार कर ही मन्ज़रे आ़म पर लाया जाए, ग़-लति़यों से डर लगता है कि कहीं ऐसा न हो कोई ग़लत़ मस्अला छप जाए लोग उस पर अ़मल करते रहें और مَعَاذَاللّٰه आख़िरत में मेरी गरिफ़्त हो जाए। बहर ह़ाल अपनी कोशिश पूरी है ताहम मुम्किन है कि ग़-लति़यां रह गई हों, लिहाज़ा इस में अगर कोई शर-ई ग़-लती़ पाएं तो बराए मेहरबानी ब निय्यते सवाब मुझे ज़रूर बिज़्ज़रूर ख़बरदार फ़रमाएं और ख़ुद को अज्रे अ़ज़ीम का ह़क़दार बनाएं। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **सगे मदीना** عُفِیَ عَنْهُ को बिला वजह अड़ता नहीं शुक्रिया के साथ रुजूअ़ करता पाएंगे।

इल्तिजाए अ़त्तार : तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में म-दनी इल्तिजा है कि इस किताबे मुस्तत़ाब के ज़रीए़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने के लिये अच्छी

अच्छी निय्यतों के साथ रोज़ाना कम अज़ कम **दो दर्स** (इन में से एक घर में ज़रूर) दीजिये या'नी मुख़्तलिफ़ दो अवक़ात में पढ़ पढ़ कर मुसल्मानों को सुनाइये अगर किसी का दिल चोट खा गया और वोह क़ुरआनो सुन्नत की राह पर आ गया तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का भी बेड़ा पार होगा। **नबिय्ये हाशिर,** रसूले साबिरो शाकिर, महबूबे रब्बे क़ादिर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए किसी एक शख़्स को हिदायत अ़ता फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास **सुर्ख़ ऊंट** हों। (مُسلِم ص١٣١١ حديث ٢٤٠٦) ह़ज़रते अ़ल्लामा यह्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस ह़दीसे न-बवी की शर्ह़ में लिखते हैं : **सुर्ख़ ऊंट** अहले अ़रब का बेश क़ीमत माल समझा जाता था, इस लिये ज़र्बुल मसल (या'नी कहावत) के तौ़र पर सुर्ख़ ऊंटों का ज़िक्र किया गया। उख़्रवी उमूर को दुन्यवी चीज़ों से तश्बीह (या'नी मिसाल) देना सिर्फ़ समझाने के लिये है वरना ह़क़ीक़त येही है कि हमेशा बाक़ी रहने वाली आख़िरत का एक ज़र्रा भी दुन्या और इस जैसी जितनी दुन्याएं तसव्वुर की जा सकें, उन सब से बेहतर है।

(شَرحِ مُسلِم لِلنَّوَوِی ج ١٥ ص١٧٨)

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّ وَجَلَّ जो कोई रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत के दो दर्स दिया या सुना करे नीज़ 25 दिन के अन्दर अन्दर इस किताब (नेकी की दा'वत (हि़स्सए अव्वल)) का अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा मुत़ा-लआ़ भी कर ले उसे ईमान पर इस्तिक़ामत, सकरात में सरवरे किश्वरे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत, कलिमा पढ़ कर ईमान पर दुन्या से रिह़लत, क़ब्र व ह़श्र में राह़त और अपनी रह़मत से बे हि़साब मग़्फ़िरत से नवाज़ कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस इनायत फ़रमा और सगे मदीना عُفِىَ عَنْهُ, मुआ़विनीन, **मुफ़त्तिशीन** उ़-लमाए दीन, मजलिसे **मक-त-बतुल मदीना** के निगरान व अराकीन और मक्तबे के म-दनी अ़मले के ह़क़ में भी येह तमाम दुआ़एं क़बूल कर और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلہٖ وسلَّم

है तुझ से दुआ़ रब्बे रह़मत, मक़्बूल हो फ़ैज़ाने सुन्नत
घर घर मस्जिद मस्जिद पढ़ कर इस्लामी भाई सुनाता रहे

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلہٖ وسلَّم

ता़लिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व बे हि़साब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस



2 र-मज़ानुल मुबारक 1432 सि. हि.
03 अगस्त 2011 सि. ई.

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

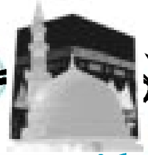
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"या अल्लाह ! फ़ैज़ाने सुन्नत आ़म हो जाए" के तेईस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 23 निय्यतें

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : **نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِه** मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجَمُ الكبير لِلطَّبَراني ج٦ص١٨٥ حديث ٥٩٤٢)

दो म-दनी फूल : ﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता। ﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़्हे पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴾12﴿ शर-ई़ मसाइल सीखूंगा ﴾13﴿ अगर कोई बात समझ न आई तो उ़-लमा से पूछ लूंगा ﴾14﴿ ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इस क़ौल "عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ" या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है। (حِليةُ الاولياء ج ٧ ص٣٣٥رقم ١٠٧٥٠) पर अ़मल करते हुए ज़िक्रे सालिह़ीन की ब-र-कतें लूटूंगा ﴾15﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा ﴾16﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) "याद दाश्त" वाले सफ़्हे पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾17﴿ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते ह़ुसूले इ़ल्मे दीन रोज़ाना चन्द सफ़्ह़ात पढ़ कर इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा ﴾18﴿ दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾19﴿ इस ह़दीसे पाक **تَهَادَوْا تَحَابُّوْا या'नी** एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (موطا امام مالك ج ٢ ص ٤٠٧ رقم ١٧٣١) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताबें ख़रीद कर दूसरों को तोह़्फ़तन दूंगा ﴾20﴿ जिन को दूंगा ह़त्तल इम्कान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने (म-सलन 25) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये ﴾21﴿ जो नहीं जानते उन्हें सिखाऊंगा ﴾22﴿ इस किताब के मुत़ा-लए़ का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा ﴾23﴿ किताबत वग़ैरा में शर-ई़ ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़्लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)



اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ ۙ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ؕ

नेकी की दा'वत की ज़रूरत

मग़्फ़िरतों भरा इज्तिमाअ़ : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि **सरकारे मदीनए मुनव्वरह,** सरदारे **मक्कए मुकर्रमा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ सय्याह़ (या'नी सैर करने वाले) फ़िरिश्ते हैं, जब वोह मह़ाफ़िले **ज़िक्र** के पास से गुज़रते हैं तो एक दूसरे से कहते हैं : (यहां) बैठो । जब ज़ाकिरीन (या'नी ज़िक्र करने वाले) दुआ़ मांगते हैं तो फ़िरिश्ते उन की दुआ़ पर **आमीन** (या'नी "ऐसा ही हो") कहते हैं । जब वोह नबी पर **दुरूद** भेजते हैं तो वोह फ़िरिश्ते भी उन के साथ मिल कर **दुरूद** भेजते हैं ह़त्ता कि वोह **मुन्तशिर** (या'नी इधर उधर) हो जाते हैं, फिर फ़िरिश्ते एक दूसरे को कहते हैं कि इन ख़ुश नसीबों के लिये ख़ुश ख़बरी है कि वोह **मग़्फ़िरत** के साथ वापस जा रहे हैं । (جَمۡعُ الۡجَوامِع لِلسُّیُوطی ج۳ص۱۲۵حدیث۷۷۵۰)

मस्जिद आबाद करने के तीन फ़ज़ाइल : سُبۡحٰنَ اللّٰہ ! ज़िक्र व दुरूद की मह़फ़िलों की भी क्या बात है ! याद रहे ! सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त, दर्स के म-दनी ह़ल्क़े और इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त वग़ैरा भी **ज़िक्र** ही की मह़फ़िलें हैं । किस क़दर ख़ुश नसीब हैं वोह मुसल्मान जो **अच्छी अच्छी निय्यतों** के साथ इस त़रह़ के रह़मतों भरे इज्तिमाआ़त में दिल लगा कर शिर्कत फ़रमाते हैं और फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मग़्फ़िरत याफ़्ता उठते हैं । अलबत्ता ऐसे मग़्फ़िरत भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत की सआ़दत हर एक को नहीं मिला करती येह फ़क़त़ ख़ुश क़िस्मत ह़ज़रात ही का ह़िस्सा है । उ़मूमन दर्स व

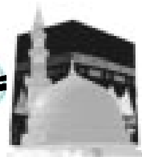
बयान **मसाजिद** में हुवा करते हैं और मसाजिद के अन्दर होने वाले म-दनी हल्क़ों में बैठना चूंकि बहुत ज़ियादा सवाब का बाइस होता है लिहाज़ा शैतान मस्जिद में दिल लगने ही नहीं देता। **"मस्जिद भरो तहरीक"** जारी फ़रमाइये और मस्जिदें ख़ूब ख़ूब आबाद कीजिये और शैतान को नाकाम व ना मुराद कीजिये। **हज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन मा'क़िल رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम से बयान किया जाता था कि اَلْمَسْجِدُ حِصْنٌ حَصِينٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ या'नी मस्जिद शैतान से बचने के लिये एक मज़्बूत़ क़ल्आ़ है। (مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبَہ ج۸ ص۱۷۲) मज़ीद तह़रीस (या'नी ह़िर्स दिलाने) के लिये मस्जिद के फ़ज़ाइल पर मब्नी **तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पेश किये जाते हैं : ﴾1﴿ बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के घरों को आबाद करने वाले ही **अल्लाह** वाले हैं। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ص۵۸حدیث ۲۵۰۲) ﴾2﴿ जो मस्जिद से **मह़ब्बत** करता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे अपना मह़बूब बना लेता है (ایضاً ج۶ ص۴۰۰ حدیث ۶۳۸۳) ﴾3﴿ जब कोई बन्दा ज़िक्र या नमाज़ के लिये **मस्जिद** को ठिकाना बना लेता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस की त़रफ़ रह़मत की नज़र फ़रमाता है जैसा कि जब कोई ग़ाइब आता है तो उस के घर वाले उस से ख़ुश होते हैं। (اِبن ماجه ج۱ ص۴۳۸ حدیث ۸۰۰)

वोह सलामत रहा क़ियामत में पढ़ लिये जिस ने दिल से चार सलाम
मेरे प्यारे पे मेरे आक़ा पर मेरी जानिब से लाख बार सलाम
मेरी बिगड़ी बनाने वाले पर
भेज ऐ मेरे किर्दिगार सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ किसी का मोह़ताज नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हर चीज़ पर क़ादिर है, वोह हरगिज़ हरगिज़ किसी का मोह़ताज नहीं, उस ने अपनी क़ुदरते कामिला से इस दुन्या को बनाया, इसे त़रह़ त़रह़ से सजाया और फिर इस में इन्सानों को बसाया। **अल्लाह** तआ़ला ने लोगों की हिदायत के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन **रुसुल व अम्बिया** عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मब्ऊ़स


फ़रमाया (या'नी भेजा)। वोह अगर चाहे तो **अम्बियाए किराम** عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बिग़ैर भी बिगड़े हुए इन्सानों की इस्लाह़ कर सकता है, लेकिन उस की मशिय्यत (या'नी मरज़ी) कुछ इस त़रह़ है कि मेरे बन्दे **नेकी की दा'वत** दें, मेरी राह में **मशक़्क़तें** झेलें और मेरी बारगाहे आ़ली से द-रजाते रफ़ीआ़ (या'नी बुलन्द द-रजे) ह़ासिल करें। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने रसूलों और नबियों عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को **नेकी की दा'वत** के लिये दुन्या में भेजता रहा और आख़िर में अपने प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मब्ऊ़स किया और **आप** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर सिल्सिलए **नुबुव्वत ख़त्म** फ़रमाया। फिर येह **अ़ज़ीमुश्शान** मन्सब अपने प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत के सिपुर्द किया कि ख़ुद ही आपस में एक दूसरे की इस्लाह़ करते रहें और **नेकी की दा'वत** के इस अहम फ़रीज़े को सर अन्जाम दें। यूं रहती दुन्या तक **हर मुसल्मान अपनी अपनी जगह मुबल्लिग़ है** ख़्वाह वोह किसी भी शो'बे से **तअ़ल्लुक़** रखता हो, या'नी वोह आ़लिम हो या इमामे मस्जिद, पीर हो या मुरीद, ताजिर हो या मुलाज़िम, अफ़्सर हो या मज़्दूर, ह़ाकिम हो या मह़्कूम, **अल ग़रज़** जहां जहां वोह रहता हो, काम काज करता हो, अपनी सलाह़िय्यत के मुत़ाबिक़ अपने गिर्दो पेश के माह़ोल को **सुन्नतों** के सांचे में ढालने के लिये कोशां रहे और **नेकी की दा'वत** का म-दनी काम जारी रखे।

मैं मुबल्लिग़ बनूं सुन्नतों का, ख़ूब चरचा करूं सुन्नतों का
या ख़ुदा दर्स दूं सुन्नतों का, हो करम बहरे ख़ाके मदीना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ुरआन में नेकी की दा'वत का हुक्म : **ख़ुदाए रह़मान** عَزَّوَجَلَّ ने अपने पाक क़ुरआन में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर **नेकी की दा'वत** की जानिब रग़बत दिलाई है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़ह़ा 128 पर




फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

पारह 4 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 104 में इर्शाद होता है **:**

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में एक गुरौह ऐसा होना चाहिये कि भलाई की त़रफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी से मन्अ़ करें और येही लोग मुराद को पहुंचे।

हर एक अपने अपने मन्सब के मुताबिक़ नेकी की दा'वत दे : मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان "तफ़्सीरे नईमी" में इस आयते करीमा के तह़त फ़रमाते हैं **: ऐ मुसल्मानो !** तुम सब को ऐसा गुरौह होना चाहिये या ऐसी तन्ज़ीम बनो या ऐसी तन्ज़ीम बन कर रहो जो तमाम टेढ़े (या'नी बिगड़े हुए) लोगों को ख़ैर (या'नी नेकी) की दा'वत दे, काफ़िरों को ईमान की, फ़ासिक़ों को तक़्वे की, ग़ाफ़िलों को बेदारी की, जाहिलों को इ़ल्म व मा'रिफ़त की, ख़ुश्क मिज़ाजों को **लज़्ज़ते इ़श्क़** की, सोने वालों को बेदारी की और अच्छी बातों, अच्छे अ़क़ीदों, अच्छे अ़-मलों का ज़बानी, क़-लमी, अ़-मली, क़ुव्वत से, नरमी से (और ह़ाकिम अपने मह़कूम व मा तह़त को) गरमी से हुक्म दे और बुरी बातों, बुरे अ़क़ीदे, बुरे कामों, बुरे ख़यालात से लोगों को (अपने अपने मन्सब के मुताबिक़) ज़बान, दिल, अ़मल, क़लम, तलवार से रोके। **मज़ीद** फ़रमाते हैं **:**

हर मुसल्मान मुबल्लिग़ है : सारे मुसल्मान मुबल्लिग़ हैं, सब पर ही फ़र्ज़ है कि लोगों को अच्छी बातों का हुक्म दें और बुरी बातों से रोकें। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 4, स. 72, बि तग़य्युर) कुछ आगे चल कर ह़ज़रते क़िब्ला मुफ़्ती साह़िब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी तफ़्सीरे नईमी में **बुख़ारी शरीफ़** की येह ह़दीसे पाक नक़्ल की है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे **नुबुव्वत, मख़्ज़ने** जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** بَلِّغُوْا عَنِّیْ وَلَوْ اٰيَةً या'नी मेरी त़रफ़ से पहुंचा दो अगर्चे एक ही आयत हो। (صَحیح بُخاری ج ۲ ص۴۶۲ حدیث۳۴۶۱)

मैं नेकी की दा'वत की धूमें मचा दूं
हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही

अफ़्ज़ल अ़मल वोह है जिस का फ़ाएदा दूसरों को पहुंचे : **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मजीद फ़रमाते हैं : "इस्लाम में तब्लीग़ बड़ी **अहम इबादत** है कि तमाम इबादतों का फ़ाएदा ख़ुद अपने को (या'नी अपनी ज़ात को) होता है मगर तब्लीग़ का फ़ाएदा दूसरों को भी। "**लाज़िम**" (या'नी सिर्फ़ अपनी ज़ात को फ़ाएदा पहुंचाने वाले अ़मल) से "**मु-तअ़द्दी**" (ऐसा अ़मल जो दूसरों को भी फ़ाएदा दे वोह) अफ़्ज़ल है। (रिवायत में है कि) किसी ने ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा कि बेहतरीन बन्दा कौन है ? फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला से डरने वाला, सिलए रेह़मी (या'नी रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक) करने वाला, **अच्छी बातें बताने वाला** और बुराइयों से रोकने वाला। **(اَلزُّهدُ الكبير لِلْبَيْهَقِى ص ٣٢٧ حديث٨٧٧)** ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन (बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى) फ़रमाते हैं कि "जो अच्छी बातों का हुक्म दे, बुराइयों से रोके वोह **अल्लाह** तआ़ला का भी ख़लीफ़ा है, उस के रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) का भी और उस की किताब (या'नी क़ुरआने करीम) का भी।" (ह़दीसे पाक में है) अगर मुसल्मानों ने तब्लीग़ छोड़ दी तो उन पर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत़ होंगे, और उन की दुआ़एं क़बूल न होंगी। **(رُوحُ الْمَعانى ج٤ ص٣٢٦)** **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि ऐ लोगो ! भलाई का हुक्म दो, बुराई से मन्अ़ करो तुम्हारी ज़िन्दगी बख़ैर गुज़रेगी। **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि तब्लीग़ बेहतरीन जिहाद है **(تفسير كبير ج٣ ص٣١٦)** जैसे तब्लीग़ करना बेहतरीन इबादत है ऐसे ही तब्लीग़ छोड़ देना बद तरीन जुर्म और छोड़ने वाला ज़लीलो ख़्वार।" (तफ़्सीरे नईमी, जि. 4, स. 72, बि तग़य्युर) **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : जो दिल अच्छाई को अच्छाई न समझे और बुराई को बुराई न समझे तो उस (दिल) के ऊपर वाले ह़िस्से को ऐसे नीचे कर दिया जाएगा जैसे थेले को उलटा किया जाता है और फिर थेले के अन्दर की चीज़ें बिखर जाती हैं। **(مُصَنَّف ابن اَبى شَيْبه ج٨ ص٦٦٧ رقم١٢٥٠١٢٤)**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و اله وسلم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

गुनाहों भरी ज़िन्दगी पर नदामत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल चारों त़रफ़ गुनाह ही गुनाह किये जा रहे हैं ह़त्ता कि ब ज़ाहिर किसी नेक नज़र आने वाले शख़्स के क़रीब जाएं तो वोह भी बसा अवक़ात अ़क़ीदे की ख़राबियों, ज़बान की बे एह़तियातियों, बद निगाहियों और बद अख़्लाक़ियों की आफ़तों में मुब्तला नज़र आता है, आह ! हर सम्त गुनाह गुनाह और बस गुनाह ही नज़र आ रहे हैं ! नेक बन्दे बेशक मौजूद हैं मगर इन की ता'दाद काफ़ी कम हो चुकी है । ऐसे ना मुसाइद ह़ालात में اَلْحَمْدُ لِلّٰه सुन्नतों भरी तह़रीक, **"दा'वते इस्लामी"** का वुजूदे मस्ऊद किसी ने'मते ग़ैर **मु-तरक़्क़बा** से कम नहीं । आइये ! और दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त और आ'माल की इस्लाह़ का सामान कीजिये । आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे **बाबुल मदीना** (कराची) के अ़लाक़ा केमाड़ी में मुक़ीम एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है **:** अ़र्सए दराज़ से मैं गुनाहों के मरज़ में मुब्तला था, बात बात पर गाली गलोच, लड़ाई झगड़ा और दंगा फ़साद जैसी ना पसन्दीदा ह़-र-कतें मेरी आ़दत में शामिल हो चुकी थीं और फ़िल्में डिरामे देखने, गाने बाजे सुनने का शौक़ तो जुनून की ह़द तक था । मेरी तौबा की सबील (या'नी राह) कुछ इस त़रह़ बनी कि मैं एक बंगले पर बत़ौरे ड्राइवर मुला-ज़मत करता था, एक दिन काम से फ़ारिग़ हो कर T.V रूम में बैठ गया । वहां मुझे ब ज़रीअ़ए **म-दनी चेनल** सुन्नतों भरा बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल हुई, बयान ने मुझे सर ता पा हिला कर रख दिया, मुझे अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी पर नदामत होने लगी, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने गुनाहों से सच्चे दिल से तौबा की और राहे सुन्नत अपना ली । जब म-दनी चेनल पर र-मज़ानुल मुबारक के 30 दिन के तरबिय्यती ए'तिकाफ़ की रग़बत दिलाई गई तो **लब्बैक** कहते हुए मैं ने 30 दिन के तरबिय्यती ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ली । ता दमे तह़रीर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस निय्यत को अ़-मली जामा पहनाते हुए दा'वते इस्लामी के **आ़-लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना** बाबुल मदीना (कराची) में ए'तिकाफ़ की ब-र-कतें ह़ासिल कर रहा हूं ।

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ए'तिकाफ़ से फ़ारिग़ होते ही मैं हाथों हाथ यक मुश्त 12 माह के म-दनी क़ाफ़िले में भी सफ़र करूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गुनाहों की दवा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! म-दनी चेनल की ब-र-कत से गुनाहों की बीमारी में इफ़ाक़ा हुवा और मुकम्मल माहे र-मज़ानुल मुबारक के ए'तिकाफ़ की और वोह भी दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में सआ़दत मिल गई और हाथों हाथ 12 माह के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनने की भी निय्यत नसीब हुई बहर हाल सभी को चाहिये कि गुनाहों की बीमारी का इलाज करें, अगर गुनाह करते करते बिग़ैर तौबा मर गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हुवा तो यक़ीन जानिये कहीं के न रहेंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की अदाएं भी ख़ूब हुवा करती हैं, वोह नेकियां करने के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते और **गुनाहों की दवा** तलाश करते फिरते हैं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा, किसी इबादत गुज़ार नौ जवान के साथ बसरे में कहीं से गुज़र रहा था कि एक **त़बीब** पर नज़र पड़ी, जिस के सामने बहुत से मर्द व औ़रत और बच्चे हाथों में पानी से भरी शीशियां लिये अपनी बीमारी के इलाज के त़लब गार थे। मेरे साथ जो इबादत गुज़ार नौ जवान था उस ने कहा : ऐ त़बीब ! क्या आप के पास कोई **गुनाहों की दवा** भी है ? वोह बोला : है। नौ जवान ने कहा : मुझे इनायत फ़रमा दीजिये। उस ने जवाब दिया : **गुनाहों की दवा** का नुस्ख़ा दस चीज़ों पर मुश्तमिल है : ﴾1﴿ **फ़क्र** और **इन्किसारी** के दरख़्त की जड़ें लो। फिर ﴾2﴿ उस में **तौबा** का **हलीला** (या'नी हड़ नामी देसी दवा) मिला लो। फिर ﴾3﴿ उसे **रिज़ाए** इलाही की खरल (या'नी दवा कूटने की पथ्थर की कूंडी) में डालो और ﴾4﴿ **क़नाअत** के हावन दस्ते से ख़ूब अच्छी त़रह पीस लो। फिर ﴾5﴿ उसे **तक़्वा** व परहेज़ गारी की देग में डाल दो और ﴾6﴿ साथ ही उस में **हया** का पानी भी मिला लो। फिर ﴾7﴿ उसे **महब्बते इलाही** की आग से जोश दो ﴾8﴿ इस के बा'द उसे **शुक्र** के पियाले में डाल लो। और ﴾9﴿ **उम्मीद** व रजा

के पंखे से हवा दो और फिर ﴾10﴿ **ह़म्दो** सना के चमचे से पी जाओ। अगर तुम ने येह सब कुछ कर लिया तो याद रखो कि येह **नुस्ख़ा** तुम्हें, दुन्या व आख़िरत की हर बीमारी व मुसीबत में नफ़्अ़ पहुंचाएगा। (اَلْمُنَبِّهات ص ١١١)

कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब ! नेक कब ऐ मेरे अल्लाह ! बनूंगा या रब !
कब गुनाहों के मरज़ से मैं शिफ़ा पाऊंगा कब मैं बीमार, मदीने का बनूंगा या रब !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खाओ पियो और जान बनाओ ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज ग़ैर मुस्लिमों की मज़्मूम तह़रीकें दुन्या में हर जगह अपने मज़्हब की सालिमिय्यत व बक़ा बल्कि इरतिक़ा (या'नी तरक़्क़ी) के लिये सर गर्मे अ़मल हैं मगर अफ़्सोस ! दुन्या की **मह़ब्बत** में मस्त मुसल्मान को दुन्या के धन्दों ही से फ़ुरसत नहीं, अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! इस दौर के मुसल्मानों की अक्सरिय्यत ने फ़क़त़ **"खाओ पियो और जान बनाओ"** को ही गोया मक़्सदे ह़यात समझ रखा है, दूसरों को सलातो सुन्नत की तल्क़ीन की किस को पड़ी है ! बल्कि इन के पास तो आख़िरत की भलाई पाने के लिये इतना वक़्त भी नहीं जो इत़्मीनान से नमाज़ ही पढ़ सकें और वोह दर्द भरा दिल भी कहां से लाएं जो सुन्नत की **मह़ब्बत** से लबरेज़ हो। बस हर वक़्त दुन्या, दुन्या ही की बेहतरियों का तसव्वुर है ! **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 125 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "शुक्र के फ़ज़ाइल" सफ़्ह़ा नम्बर 103 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जो फ़क़त़ खाने, पीने और लिबास ही को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत समझे तो यक़ीनन उस का इ़ल्म कम है।

(اَلزُّهد لابن المبارك ص ١٣٤ رقم ٣٩٧)

देता हूं तुझे वासित़ा मैं प्यारे नबी का
उम्मत को ख़ुदाया रहे सुन्नत पे चला दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 100)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुन्या ना पसन्द होने का पुरकैफ़ सबब : हमारी हालत येह है कि दुन्या की **महब्बत** दिल से कम होने का नाम नहीं लेती और हर वक़्त दुन्या की ने'मतें और आसाइशें बढ़ाने ही की धुन है जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे और हक़ीक़ी आ़शिक़ाने रसूल ख़्वाहिशाते दुन्या से महफ़ूज़ी और दुन्या की ने'मतों की कमी पर शुक्र गुज़ार होते थे चुनान्चे "शुक्र के फ़ज़ाइल" सफ़ह़ा नम्बर 68 पर दी हुई एक इब्रत नाक रिवायत सुनिये और इब्रत से सर धुनिये : ह़ज़रते सय्यिदुना **मज्मअ़** अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَيْه के **मु-तअ़ल्लिक़** बयान करते हैं कि उन्हों ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुझे दुन्या (की आसाइशों) से बचा लेने का एह़सान, इस (या'नी दुन्या) की कुशा-दगी (म-सलन माल व दौलत वग़ैरा) की सूरत में मिलने वाली ने'मत से अफ़्ज़ल है । क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये दुन्या को पसन्द नहीं फ़रमाया, इस लिये मुझे वोह ने'मतें जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये पसन्द फ़रमाईं, उन ने'मतों से ज़ियादा प्यारी हैं, जो उस ने अपने नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये ना पसन्द फ़रमाईं ।" (شُعَبُ الْإِيمان ج٤ ص١١٧ حديث ٤٤٨٩ مُلَخّصاً) दुन्या के माल व दौलत की कसरत और इस की ख़ूब आसाइशें होना बेशक ने'मत है मगर इन चीज़ों से बच कर रहना येह **बड़ी ने'मत** है ।

पीछा मेरा दुन्या की महब्बत से छुड़ा दे
या रब ! मुझे दीवाना मुह़म्मद का बना दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लाम का सिर्फ़ नाम रह जाएगा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ह़ालात बद से बदतर होते जा रहे हैं, ऐसा लगता है कि अब **इस्लाम** का तो सिर्फ़ नाम ही नाम रह गया है, सद करोड़ अफ़्सोस ! मुसल्मानों का अन्दाज़े ज़िन्दगी ज़ियादा तर ग़ैर मुस्लिमों वाला हो चुका है, निहायत तवज्जोह से येह रिवायत समाअ़त फ़रमाइये और दिल

जलाइये बल्कि हो सके तो आंसू बहाइये, चुनान्चे ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : अ़न्क़रीब लोगों पर वोह वक़्त आएगा, जब **इस्लाम का सिर्फ़ नाम** और क़ुरआन का सिर्फ़ (रस्म व) रवाज ही रह जाएगा, उन की मस्जिदें आबाद होंगी मगर हिदायत से ख़ाली, उन के उ़-लमा आस्मान के नीचे बद तरीन ख़ल्क़ होंगे, उन से फ़ितना निकलेगा और उन्हीं में लौट जाएगा । **(شُعَبُ الْإِيمان ج٢ ص٣١١ حديث١٩٠٨)**

सिर्फ़ नाम के मुसल्मान रह जाएंगे : **मुफ़स्सिरे** शहीर, **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : "(इस्लाम का सिर्फ़ नाम ही रह जाएगा या'नी वोह) इस त़रह़ कि मुसल्मानों के नाम इस्लामी होंगे और अपने (आप) को मुसल्मान (भी) कहते होंगे मगर रंग ढंग सब काफ़िरों के से (होंगे) जैसा (कि) आज (कल) देखा जा रहा है **या** अरकाने इस्लाम के नाम व शक्ल तो बाक़ी रहेंगे मगर मक़्सूद फ़ौत हो जाएगा, (म-सलन) **नमाज़** का ढांचा होगा ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ नहीं (होगा), **ज़कात** देंगे मगर क़ौम परवरी ख़त्म हो जाएगी, **ह़ज** करेंगे मगर सिर्फ़ सैर (व तफ़रीह़) के लिये, **जिहाद** होगा मगर सिर्फ़ मुल्क गीरी (ह़ुकूमत व सल्त़नत के ह़ुसूल) के लिये ।" मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (क़ुरआन का सिर्फ़ रस्म व रवाज ही रह जाएगा) की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : **रस्म** नक़्श को भी कहते हैं और त़रीक़े को भी, यहां दोनों मा'ना दुरुस्त हैं या'नी **क़ुरआन** के नुक़ूश काग़ज़ में और अल्फ़ाज़ ज़बान पर होंगे मगर एह़तिराम क़ल्ब (या'नी दिल) में और अ़मल क़ालिब (या'नी बदन) में न होगा **या** रस्मन क़ुरआन पढ़ा **या** रख्खा जाएगा, कचहरियों (या'नी कोर्टों) में झूटी क़समें खाने के लिये और घरों में मय्यित पर पढ़ने के लिये (तो इस का इस्ति'माल होगा मगर) अ़मल (करने) के लिये ईसाइयों (या'नी क्रिस्चेनों) के क़वानीन होंगे । (इस ह़िस्सए ह़दीस, "उन की मस्जिदें आबाद होंगी मगर हिदायत से ख़ाली" से मुराद येह है कि) **मस्जिदों** की इ़मारत आ़लीशान, दरो दीवार **नक़्शीं,**

(या'नी नक़्शो निगार से आरास्ता) बिजली की फ़िटिंग (भी) ख़ूब मगर नमाज़ी कोई नहीं, उन के इमाम बे दीन, गोया मस्जिदें बजाए हिदायत के बे दीनियों का सर चश्मा बन जाएंगी, हर मस्जिद से लाउड स्पीकर के ज़रीए दर्स की आवाज़ें (तो) आएंगी मगर (उन बे दीन उ़-लमा के) वोह दर्स ज़हरे क़ातिल होंगे, जिन में क़ुरआन के नाम पर कुफ़्र व तुग़यान (तुग़यान या'नी बग़ावत, सरकशी) फैलाया जाएगा। (ह़दीसे पाक के आख़िरी हि़स्से की शर्ह़ करते हुए फ़रमाते हैं :) या'नी बे दीन उ़-लमाए सूअ (या'नी बद मज़हब और बद अ़मल आ़लिमों) की कसरत होगी, जिन का फ़ितना सारे मुसल्मानों को (ऐसे) घेर लेगा जैसे दाएरे का ख़त़ (कि) जहां से शुरूअ़ होता है वहीं पहुंच कर दाएरे को मुकम्मल बना देता है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 229)

कफ़न चोर ने जब ग़ैबी आवाज़ सुनी...... : **याद रहे !** मसाजिद में होने वाले उ़-लमाए ह़क़ के दर्से क़ुरआनो ह़दीस और ईमान अफ़्रोज़ बयान की यहां हरगिज़ मज़म्मत मुराद नहीं, इन ह़ज़रात के दुरूस व बयानात उम्मत के लिये सर चश्मए हिदायत और बाइ़से नुज़ूले रह़मत व सबबे मग़्फ़िरत होते हैं चुनान्चे मश्हूर बुज़ुर्ग **ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم एक बार "बल्ख़" शहर में बयान फ़रमा रहे थे, दौराने बयान गुनहगारों की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़्त दुआ़ मांगी : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इस इज्तिमाअ़ में जो सब से बड़ा गुनहगार है, अपनी रह़मत से उस की मग़्फ़िरत फ़रमा।" एक **कफ़न चोर** भी वहां मौजूद था, जब रात हुई तो वोह कफ़न चुराने की ग़रज़ से क़ब्रिस्तान गया मगर जूं ही **क़ब्र** खोदी एक ग़ैबी आवाज़ गूंज उठी : "**ऐ कफ़न चोर !** तू आज दिन के वक़्त **ह़ातिमे असम** के इज्तिमाअ़ में बख़्शा जा चुका है फिर आज रात येह गुनाह क्यूं करने लगा है !" येह सुन कर वोह रो पड़ा और उस ने सच्चे दिल से तौबा कर ली। (تذکرۃ الاولیاء ص ۲۲۲ مُلَخَّصًا)

मुझे दे दे ईमान पर इस्तिक़ामत पए सय्यिदे मुह़्तशम या इलाही
मेरे सर पे इस्यां का बार आह मौला ! बढ़ा जाता है दम बदम या इलाही

ज़मीं बोझ से मेरे फटती नहीं है

येह तेरा ही तो है करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या ग़ैर मुस्लिम भी हमारी नक़्ल करते हैं ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! वाक़ेई नेक बन्दों की ज़ियारत व सोहबत, इन के बयान की ब-र-कत और आशिक़ाने रसूल के इज्तिमाआत में शिर्कत दोनों जहानों के लिये बाइसे सआदत है । इस **हिकायत** से येह भी मा'लूम हुवा कि मुबल्लिग़ को बिगड़े हुए मुसल्मानों से हमदर्दी होनी चाहिये, गुनहगारों को समझाने के साथ साथ उन के हक़ में दुआए ख़ैर से भी ग़फ़्लत नहीं करनी चाहिये । येह तो तब्ए ताबिईन के ज़र्रीं (या'नी सुनहरे) दौर का वाक़िआ था । अफ़्सोस अब तो अ़-मली तौर पर दीन से कुछ ज़ियादा ही दूरी हो चुकी है, आज कल के अक्सर मुसल्मानों को न जाने क्या हो गया है कि वोह सुन्नतों को भुला कर अग़्यार (या'नी ग़ैरों) के फ़ेशन अपनाने ही में फ़ख़्र महसूस करते हैं, ग़ैर मुस्लिमों जैसे लिबास में मल्बूस होना ही इन के नज़्दीक शायद ऐन सआदत है ! क्या किसी ग़ैर मुस्लिम को भी आप ने देखा है जो मुसल्मान की हक़ीक़ी वज़्अ़ क़त्अ़ (जैसा कि एक मुठ्ठी दाढ़ी, सुन्नत के मुताबिक़ ज़ुल्फ़ें, इमामा शरीफ़ और सुन्नतों भरा लिबास वग़ैरा) अपनाए हुए हो ! हरगिज़ नहीं देखा होगा । येह लोग बड़े अ़य्यार व मक्कार हैं, वोह अपने बातिल व बदबूदार अत्वार छोड़ कर मुसल्मानों की नक़्ल हरगिज़ नहीं करते मगर सद करोड़ अफ़्सोस ! ग़ैरों की नक़्क़ाली वाली हमाक़त तो अब मुसल्मानों के दिमाग़ों में घुस गई है ।

ऐ मेरे ग़फ़्लत की नींद सोने वाले इस्लामी भाइयो ! ख़ुदारा होश कीजिये !! इस से पहले कि मौत का फ़िरिश्ता आप का रिश्तए हयात इस दुन्या से हमेशा हमेशा के लिये मुन्क़तअ़ कर दे (या'नी काट कर रख दे), जाग उठिये ! और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी बेदार कीजिये !! वरना याद रखिये

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ मुसल्मानो !

तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नाकाम आशिक़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मानों के हालात आज ना गुफ़्ता बिह हैं, गुनाहों का ज़ोरदार सैलाब जिसे देखो बहाए लिये जा रहा है, ऐसे में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माहोल किसी ने'मते उज़्मा से कम नहीं, इस से हर दम वाबस्ता रहिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस से मुन्सलिक होने वालों की ज़िन्दगियों में हैरत अंगेज़ तब्दीलियां बल्कि म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाता है । इस ज़िम्न में एक **म-दनी बहार** मुला-हज़ा हो, चुनान्चे बाबुल मदीना (कराची) के अलाक़े मलीर के एक इस्लामी भाई अपनी ज़िन्दगी में आने वाले म-दनी इन्क़िलाब के बारे में कुछ यूं तहरीर फ़रमाते हैं : मैं शूमिये क़िस्मत से **इश्क़े मजाज़ी** में गरिफ़्तार हो कर गुनाहों में बद मस्त हो गया था, एक रोज़ मुझे ख़बर मिली कि घर वालों ने "उस" की शादी कहीं और कर दी है । इस वुक़ूए (या'नी सदमे) के बा'द मेरी ज़िन्दगी अजीरन (या'नी दुश्वार) हो कर रह गई, बिल आख़िर **मेरा भी अन्जाम वोही हुवा जो इश्क़े मजाज़ी में शैतान के हाथों खिलोना बनने वाले सेंकड़ों नाकाम व ना मुराद आशिक़ों का हुवा करता है** चुनान्चे बेज़ार हो कर **मैं चरस, अफ़्यून, शराब, हेरोईन और नशा आवर इन्जेक्शन जैसी मोहलिक मुनश्शिय्यात का आदी बन गया ।** अपने फ़ासिद गुमान में क़ल्बी सुकून पाने की ख़ातिर शायद ही कोई नशा हो जो मैं ने न किया हो । ज़िन्दगी से इस क़दर तंग आ चुका था कि مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ **कई बार तो ख़ुदकुशी की भी नाकाम कोशिश की, ख़ुद को ख़त्म करने की ख़ातिर डेटोल, पेट्रोल और तेज़ाब तक पिया** लेकिन सांसों की गिनती अभी पूरी न हुई थी । **रब्बुल आ-लमीन** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी पर क़ुरबान जाऊं कि इतनी ना फ़रमानियों के बा वुजूद उस ने मुझ पर बाबे रहमत बन्द न किया, सबबे करम कुछ यूं हुवा कि मेरी मुलाक़ात

दा'वते इस्लामी के महके महके मुश्कबार म-दनी माहोल से वाबस्ता एक **आशिक़े रसूल** से हो गई। उन के मीठे बोल सुन कर मेरे दिल में अज़् सरे नौ जीने की उमंग जाग उठी, उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से 29 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1427 सि. हि. ब मुताबिक़ 2006 सि. ई. को मुझे दा'वते इस्लामी के आलमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना की रूहानिय्यत से भरपूर फ़ज़ाओं में आने की सआदत हासिल हुई। यहां हर सू सब्ज़ सब्ज़ इमामे वाले आशिक़ाने रसूल को देख कर मेरा ईमान ताज़ा हो गया और हाथों हाथ 1427 सि. हि. के माहे **र-मज़ानुल मुबारक** के 30 रोज़ा इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बैठ गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझ गुनाहगार को भी **र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़े रखने की सआदत हासिल हुई, **म-दनी माहोल की ब-र-कत से मेरे सर से इश्क़े मजाज़ी का भूत उतर गया, दिल से बुरे ख़यालात जाते रहे, मैं ने चेहरे पर दाढ़ी, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ और बदन पर सुन्नत के मुताबिक़ म-दनी लिबास सजा लिया** और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पंज वक़्ता नमाज़ का पाबन्द बन गया और ता दमे तहरीर **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है''** के मुक़द्दस जज़्बे के तहत म-दनी कामों के लिये कोशां हूं।

अ़ताए हबीबे ख़ुदा म-दनी माहोल — है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा म-दनी माहोल
ब फ़ैज़ाने अहमद रज़ा اِنْ شَآءَاللہ — येह फूले फलेगा सदा म-दनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ैर शर-ई इश्क़े मजाज़ी की तबाह कारियां : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! इश्क़े मजाज़ी की आग में सुलगने वाला आशिक़े नाशाद एक आशिक़े रसूल की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में आ कर **इश्क़े रसूल** का जाम पीने में काम्याब हो गया। बस इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम हो गया वरना **इश्क़े मजाज़ी** का ऐसा अ़जीबो ग़रीब मुआ़-मला है कि उ़मूमन जो एक बार इस की लपेट में आ गया, उस का बच निकलना

दुश्वार होता है। आज कल इश्क़े मजाज़ी की ख़ूब हवा चल रही है, इस की सब से बड़ी वजह अक्सर मुसल्मानों में इस्लामी मा'लूमात की कमी और दीनी माहोल से दूरी है। इसी सबब से हर त़रफ़ गुनाहों का सैलाब उमंड आया है ! T.V, V.C.R और इन्टरनेट वग़ैरा में इश्क़िया फ़िल्मों और फ़िस्क़िया डिरामों को देख कर या इश्क़ बाज़ियों की मुबा-लग़ा आमेज़ अख़्बारी ख़बरों नीज़ नाविलों, बाज़ारी माहनामों डाइजस्टों में फ़र्ज़ी इश्क़िया अफ़्सानों को पढ़ कर या कॉलेजों और यूनीवर्सिटियों की मख़्लूत़ (जहां लड़का लड़की साथ हों ऐसी) क्लासों में बैठ कर या ना महरम रिश्तेदारों के साथ ख़ल्त़ मल्त़ हो कर आपस में बे तकल्लुफ़ी की दलदल के अन्दर उतर कर अक्सर नौ जवानों को किसी न किसी से **इश्क़** हो जाता है। पहले यक त़रफ़ा होता है फिर जब फ़रीक़े अव्वल फ़रीक़े सानी को मुत्त़लअ़ करता है तो बा'ज़ अवक़ात दो त़रफ़ा हो जाता है और फिर उ़मूमन गुनाह व इस्यान का तूफ़ान खड़ा हो जाता है। फ़ोन पर जी भर कर बे शरमाना बात बल्कि बे हिजाबाना मुलाक़ात के सिल्सिले होते हैं, मक्तूबात व सौग़ात के तबा-दले होते हैं, शादी के ख़ुफ़्या क़ौल व क़रार हो जाते हैं, अगर घर वाले दीवार बनें तो बसा अवक़ात दोनों फ़िरार हो जाते हैं, बा'दहू (या'नी उस के बा'द) अख़्बार में उन के इश्तिहार छपते हैं, ख़ानदान की आबरू का सरे बाज़ार नीलाम होता है, कभी "कोर्ट मेरेज" की तरकीब बनती है तो مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कभी यूं ही बिग़ैर निकाह के...... और ऐसे बे रह़मों के ना जाइज़ बच्चों की लाशें कचरा कूंडियों में मिलती हैं नीज़ ऐसा भी होता रहता है कि भागते नहीं बनती तो **ख़ुदकुशी** की राह ली जाती है जिस की ख़बरें आए दिन अख़्बारात में छपती रहती हैं।

यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का दामन इश्क़े मजाज़ी से पाक है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल इस्लामी मा'लूमात की कमी का दौर दौरा है, जहालत डेरा डाल कर पड़ी है, बा'ज़ आ़शिक़ाने नाशाद, अपनी गन्दी इश्क़ बाज़ियों पर पर्दा डालने के लिये यहां तक कहते सुनाई देते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने भी **ज़ुलैख़ा** से इश्क़ किया था ! (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) ऐसा हरगिज़ नहीं, यक़ीनन इस त़रह बकने वाले आ़शिक़ाने नादान सख़्त ख़त़ा पर हैं। अपने नफ़्स की शरारतों के मुआ़-मले में शैत़ान की बातों में आ कर बे सोचे समझे किसी भी नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

के बारे में ज़बान खोलना ईमान के लिये इन्तिहाई ख़त़रनाक होता है। **याद रखिये ! नबी** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **की अदना गुस्ताख़ी भी कुफ़्र है ।** ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी हैं और हर नबी मा'सूम। नबी से हरगिज़ कोई मज़्मूम ह़-र-कत सादिर नहीं हो सकती। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा कुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़ह़ा 445 पर पारह 12 **सूरए यूसुफ़** की आयत नम्बर 24 में **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक औ़रत ने इस का इरादा किया और वोह भी औ़रत का इरादा करता अगर अपने रब की दलील न देख लेता।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला ने अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के **नुफ़ूसे** त़ाहिरा को अख़्लाक़े ज़मीमा व अफ़्आ़ले रज़ीला (या'नी मज़्मूम अख़्लाक़ और ज़लील कामों) से पाक पैदा किया है और अख़्लाक़े शरीफ़ा त़ाहिरा मुक़द्दसा पर उन की ख़िल्क़त (या'नी पैदाइश) फ़रमाई है इस लिये वोह हर ना कर्दनी (या'नी हर बुरे) फ़े'ल से बाज़ रहते हैं। एक रिवायत येह भी है कि जिस वक़्त **ज़ुलैख़ा** आप عَلَيْهِ السَّلَام के दरपै हुई उस वक़्त आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना **या'क़ूब** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को देखा कि अंगुश्ते (या'नी उंगली) मुबारक दन्दाने अक़्दस (या'नी पाकीज़ा दांतों) के नीचे दबा कर इज्तिनाब (या'नी बाज़ रहने) का इशारा फ़रमाते हैं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

ह़क़ीक़त येही है कि **इश्क़** सिर्फ़ **ज़ुलैख़ा** की त़रफ़ से था ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का दामन इस से क़त़्अ़न यक़ीनन पाक था। पारह 12 **सूरए यूसुफ़** आयत नम्बर 30 में शु-रफ़ाए मिस्र की बा'ज़ औ़रतों का क़ौल इस त़रह़ नक़्ल किया गया है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (طبرانی)

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۳۰﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और शहर में कुछ औ़रतें बोलीं कि अ़ज़ीज़ की बीबी अपने नौ जवान का दिल लुभाती है, बेशक उन की **महब्बत** इस के दिल में पैर गई है, हम तो इसे सरीह़ ख़ुद रफ़्ता पाते हैं।

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "**ज़ुलैख़ा** को रग़बत थी मगर ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ताक़त व कुदरत रखने के बा वुजूद इस (या'नी ज़ुलैख़ा की त़रफ़ रग़बत) से बाज़ रहे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने करीम में आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बाज़ रहने के अ़मल को ख़ूब सराहा।" (اِحیاءُ الْعُلُوم ج۳ ص ۱۲۹)

आ़शिक़ाने नादान का रद हो गया ! : इस से अज़्हर मिनश्शम्से व अब्यन मिनल अम्स या'नी सूरज से ज़ियादा रोशन और रोज़े गुज़श्ता से ज़ियादा क़ाबिले यक़ीन हो गया कि आज कल के जो **आ़शिक़ाने नादान** अपने गुनाहों भरे सड़े हुए बदबूदार इ़श्क़ को दुरुस्त साबित करने के लिये مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और **ज़ुलैख़ा** के वाक़िए़ को आड़ बनाते हैं, येह हुक्मे कुरआनी के सरासर ख़िलाफ़ और कई सूरतों में सीधा **कुफ़्र तक ले जाने वाला** है। **सूरए यूसुफ़** में सिर्फ़ **ज़ुलैख़ा** की त़रफ़ से इ़श्क़ का तज़्किरा है मगर कहीं भी कोई इशारा तक नहीं मिलता कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी उस के इ़श्क़ में शरीक थे। लिहाज़ा जो लोग ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को भी इ़श्क़ में शरीक ठहराते हैं, वोह इस से तौबा और तज्दीदे ईमान करें या'नी तौबा कर के नए सिरे से मुसल्मान हों। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की शान बहुत अ़ज़ीम होती है और वोह गुनाहों से मा'सूम होते हैं।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें अपनी ह़क़ीक़ी **महब्बत** और अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्ची पक्की उल्फ़त नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! दुन्या

की चाहत हमारे दिल से निकाल दे। **या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! जो मुसल्मान गुनाहों भरे "इश्क़े मजाज़ी" के जाल में फंसे हुए हैं उन्हें रिहाई दे कर अपने म-दनी महबूब صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ुल्फ़ों का असीर (क़ैदी) बना दे। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰلہٖ وسلَّم

महब्बत ग़ैर की दिल से निकालो या रसूलल्लाह
मुझे अपना ही दीवाना बना लो या रसूलल्लाह

(इश्क़े मजाज़ी के **मु-तअ़ल्लिक़** दिलचस्प मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल** की मत़्बूआ़ किताब, "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" सफ़हा 318 ता 356 का मुता-लआ़ फ़रमाइये)

इमाम औज़ाई का रिक़्क़त अंगेज़ बयान : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये मश्हूर मुहद्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल ग़ाफ़िलों को झंझोड़ झंझोड़ कर बेदार करने वाला, पुरसोज़ और इ़ब्रत अंगेज़ बयान सुनते हैं चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 125 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "शुक्र के फ़ज़ाइल" सफ़हा नम्बर 32 ता 33 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! (दुन्या में मिली हुई) इन ने'मतों के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की भड़क्ती हुई उस आग से भागने पर मदद ह़ासिल करो जो दिलों पर चढ़ जाएगी, बेशक तुम ऐसे घर (या'नी दुन्याए ना पाएदार) में हो जिस में (लम्बी उ़म्र के ज़रीए मिली हुई) क़ियाम की त़वील मुद्दत भी क़लील (या'नी थोड़ी) है और इस में तुम्हें मुक़र्ररा मुद्दत तक उन गुज़श्ता लोगों का जा नशीन बना कर भेजा गया है, जिन्हों ने दुन्या की ख़ुश नुमाई और इस की रौनक़ व बहार का रुख़ किया, उन की उ़म्रें तुम से त़वील और क़द तुम से दराज़ थे और निशानात अ़ज़ीम थे। उन्हों ने पहाड़ों को चीर डाला, पथ्थर की चटानें काटीं, शहरों में घूमते रहे, ज़ियादा क़ुव्वत वाले, उन के जिस्म सुतून की त़रह थे। इस के बा वुजूद ज़माने ने जल्द ही उन की मुद्दतों को लपेट दिया, उन के

निशानात को मिटा दिया। उन के घरों को नेस्तो नाबूद कर दिया और उन के ज़िक्र को भुला दिया। अब तुम न उन को देखते हो न उन की आवाज़ सुनते हो। वोह झूटी उम्मीदों पर ख़ुश, ग़फ़्लत में रात दिन बसर करते थे। फिर तुम जानते हो कि रात के वक़्त उन के घरों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब उतरा तो सुब्ह़ उन में से अक्सर अपने घरों में मुंह के बल औंधे पड़े रह गए और जो बच गए वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब, उस की ने'मतों के ज़वाल और हलाकत में मुब्तला होने वालों के मुन्हदिम (या'नी गिरे हुए) घरों के आसार देखते रह गए। इस में निशानी है उन लोगों के लिये जो दर्दनाक अ़ज़ाब से डरते हैं और इ़ब्रत है उन के लिये जो दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा रखते हैं। और अब उन के बा'द तुम्हारी मुद्दत कम है और दुन्या आ़रिज़ी है और ज़माना ऐसा आ गया है कि न अ़फ़्वो दर गुज़र रहा और न ही नरमी बल्कि बुराई की कीचड़, बाक़ी मांदा रन्जो ग़म, इ़ब्रत नाक होल नाकियां, बची कुची सज़ाओं के अ-सरात, फ़ितनों के सैलाब, पै दर पै ज़ल्ज़लों और बद तरीन जा नशीनों का दौर दौरा है। उन की बुराइयों की वजह से ख़ुश्की व तरी में ख़राबी ज़ाहिर हुई। पस तुम उन की त़रह़ न होना जिन्हें लम्बी उम्मीदों और लम्बी मुद्दतों ने धोके में डाल दिया और वोह ख़्वाहिशात के हो कर रह गए। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करते हैं कि हमें और तुम्हें उन लोगों में कर दे जो अपनी नज़्र की ह़िफ़ाज़त करते हुए उसे पूरा करते हैं और अपने (ह़क़ीक़ी) ठिकाने को पहचान कर ख़ुद को तय्यार रखते हैं।" (تاریخ دِمشق لابن عساکر ج ۳۵ ص ۲۰۸ رقم ۳۹۰۷)

मौत ठहरी आने वाली आएगी जान ठहरी जाने वाली जाएगी
रूह़ रग रग से निकाली जाएगी तुझ पे इक दिन ख़ाक डाली जाएगी
क़ब्र में मय्यित उतरनी है ज़रूर
जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

इमाम औज़ाई कौन थे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रह़मान औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى जिन का अभी अभी रिक़्क़त अंगेज़ बयान सुना, येह जय्यिद आ़लिम, ज़बर दस्त मुफ़्ती और अहले शाम के बहुत बड़े इमाम गुज़रे हैं, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सत्तर हज़ार फ़तवे दिये हैं, तब्ए़ ताबिई़न में से थे । विलादते बा सआ़दत 88 सि.हि. में और वफ़ात शरीफ़ रबीउ़न्नूर 157 सि.हि. में हुई । (حياة الحيوان ج١ص١٩٨)

ख़्वाब में रब की करम नवाज़ियां : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं ने एक बार खु़दाए ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ का ख़्वाब में दीदार किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! तू ही **नेकी की दा'वत** देता और बुराई से रोकता है ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां मेरे प्यारे प्यारे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तेरे ही फ़ज़्लो करम से इस की तौफ़ीक़ मिली है । मेरे मौला عَزَّوَجَلَّ ! मुझे दुन्या से **इस्लाम** पर उठाना । इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : **सुन्नत** पर भी । (حِلْيَةُ الْاَولياء ج٦ص١٠٣ رقم٨١٣١)

वफ़ात का अ़जीब वाक़िआ़ : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى बैरूत में रहते थे, एक मर्तबा बैरूत के ह़म्माम में दाख़िल हुए तो ह़म्माम का मालिक बे ख़याली में दरवाज़ा बाहर से बन्द कर के चला गया । कुछ दिनों के बा'द आ कर जब उस ने ह़म्माम का दरवाज़ा खोला तो ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम औज़ाई** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى सीधा हाथ रुख़्सार (गाल) के नीचे कर के क़िब्ला रू लैटे हुए थे और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी । (ابنِ عساكِر ج٣٥ص٢٢٢) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सरकारे मदीना की सुन्नत पे जो चलते हैं
अल्लाह के वोह बन्दे ज़िन्दा हैं मज़ारों में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शराबी आया मुअज़्ज़िन बन गया ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी का मक़्सद समझने, इसे ह़ासिल करने, मौत की तय्यारी का ज़ेह्न बनाने और शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए दुन्या के साथ साथ अपनी आख़िरत संवारने का जज़्बा पाने के लिये तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। देखिये तो सही ! दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल कैसे कैसे बिगड़े हुओं को सुधार देता है ! सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतों से मालामाल सुन्नतों भरा सफ़र मुआ़-शरे के ठुकराए हुओं को कहां से कहां पहुंचा देता है ! चुनान्चे **महाराष्ट्र** (हिन्द) के इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं म-रज़े इस्यां (या'नी गुनाहों की बीमारी) में इन्तिहा द-रजे तक मुब्तला हो चुका था। दिन भर मज़दूरी करने के बा'द जो रक़म ह़ासिल होती रात को उसी से مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **शराब ख़रीद कर ख़ूब अ़य्याशी करता, शोर शराबा करता, गालियां बकता और वालिदैन व अहले मह़ल्ला को ख़ूब तंग करता इस के इलावा मैं परले द-रजे का जूआरी व बद तरीन बे नमाज़ी भी था।** इसी ग़फ़्लत में मेरी ज़िन्दगी के क़ीमती अय्याम ज़ाएअ़ होते रहे, आख़िरे कार मेरे मुक़द्दर का सितारा चमका। हुवा यूं कि ख़ुश क़िस्मती से मेरी मुलाक़ात **दा'वते इस्लामी** के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई से हुई। उन्हों ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र की तरग़ीब दी, उन के मीठे बोल ने कुछ ऐसा रंग जमाया कि मुझ से इन्कार न हो सका और मैं हाथों हाथ तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया। म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत मिली और दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ़ रसाइल भी सुनने को मिले। जिस की येह ब-र-कत ह़ासिल हुई कि मुझ जैसा पक्का बे नमाज़ी, शराबी व जूआरी ताइब हो कर न सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने वाला बन गया बल्कि **सदाए मदीना** लगाने (या'नी फ़ज्र की नमाज़ के लिये मुसल्मानों को जगाने) और दूसरों को म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनाने वाला बन गया।

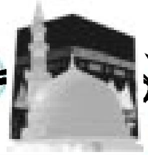
اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ **मेरी इन्फ़िरादी कोशिश से** (ता दमे बयान) **30 इस्लामी भाई म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन चुके हैं** और इस वक़्त मैं एक मस्जिद में **मुअज़्ज़िन** हूं और म-दनी कामों की धूमें मचाने की कोशिश कर रहा हूं ।

छोड़ें मै नोशियां मत बकें गालियां आएं तौबा करें क़ाफ़िले में चलो
ऐ शराबी तू आ, आ जूआरी तू आ छूटें बद आ़दतें क़ाफ़िले में चलो
होगा लुत्फ़े ख़ुदा, आओ भाई दुआ़ मिल के सारे करें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 615)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

बयान कर्दा म-दनी बहार के ज़रीए नेकी की दा'वत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! बे नमाज़ी, शराबी, जूआरी, मां बाप का दिल दुखाने और पड़ोसियों को सताने, गाली गलोच करने वाला, अल्लहड़ नौ जवान मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की "इन्फ़िरादी कोशिश" के नतीजे में म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बना, वहां **आ़शिक़ाने रसूल** की सोहबतों में सुन्नतों भरे म-दनी रसाइल सुनने और ताइब हो कर सुन्नतों के म-दनी फूल लुटाने वाला, सदाए मदीना लगाने वाला, मस्जिद में अज़ानें दे कर नमाज़ों के लिये बुलाने वाला बना और म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बन कर दूसरों को बनाने वाला बन गया । ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! याद रखिये ! **नमाज़** हर आ़क़िल बालिग़ मुसल्मान मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है, नमाज़ अदा करने वाला जन्नत का मुस्तह़िक़ है जब कि बिला उ़ज़्र एक वक़्त की नमाज़ भी जो क़ज़ा करने वाला है, वोह हज़ारों साल अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है । **शराबी व जूआरी** की दोनों जहानों में ज़िल्लतो ख़्वारी और दोज़ख़ की ख़ौफ़नाक सज़ाओं की ह़क़दारी है, **मां बाप को बुरा भला कहने वालों** को सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने शबे मे'राज इस ह़ाल में मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि वोह आग की शाख़ों से लटके हुए थे । **पड़ोसी** के बहुत सारे हुक़ूक़ हैं ! **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : वोह जन्नत में नहीं जाएगा, जिस का पड़ोसी उस की आफ़तों से अम्न में नहीं है । (مُسلم ص٤٣ حدیث٧٣.(٤٦)) किसी मुसल्मान को


गाली निकालना ह़राम व जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

जो ख़ुद खाओ पहनो वोही ख़ुद्दाम को भी दो : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 246 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"मुन्तख़ब ह़दीसें"** सफ़ह़ा 156 ता 160 पर गाली के सुदूर और इस पर नदामत वग़ैरा के मु-तअ़ल्लिक़ दिये गए मज़्मून से कुछ हिस्सा बित्तसर्रुफ़ पेश किया जाता है, सुनिये और इस में से ख़ूब ख़ूब ईमान अफ़्रोज़ **म-दनी फूल** चुनिये चुनान्चे **बुख़ारी** शरीफ़ में है : ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से "र-बज़ा" (नामी मक़ाम जो कि मदीने शरीफ़ से तीन मन्ज़िल दूर है) में मुलाक़ात की, वोह और उन का ग़ुलाम एक ही जैसा जोड़ा पहने हुए थे तो मैं ने इस के बारे में उस से सुवाल किया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं ने एक शख़्स से झगड़ा किया और उस को मां के ह़वाले से बुरा कहा तो ह़ुज़ूरे पुरनूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ अबू ज़र ! तुम ने उस की मां की निस्बत बुरे अल्फ़ाज़ कहे तुम ऐसे आदमी हो कि तुम्हारे अन्दर जाहिलिय्यत की ख़स्लत है। तुम्हारे लौंडी ग़ुलाम तुम्हारे (दीनी) भाई हैं, **अल्लाह** तआ़ला ने इन लोगों को तुम्हारा मा तह़्त बना दिया है तो जिस का भाई उस के मा तह़्त हो, उस को चाहिये कि जो ख़ुद खाए उस को खिलाए और जो ख़ुद पहने उस को पहनाए और तुम उन ख़ादिमों को ऐसे कामों की तक्लीफ़ मत दो जो उन्हें लाचार कर दे और अगर तुम ऐसी तक्लीफ़ दो (या'नी कोई मशक़्क़त का काम दो) तो ख़ुद भी काम में इन की मदद करो। (صَحیح بُخاری ج ۱ ص۲۳ حدیث ۳۰)

अ़ज़ीमुश्शान नदामत और अनोखा कफ़्फ़ारा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने जिस शख़्स को ग़लत़ अल्फ़ाज़ कहे थे, वोह ह़ज़रते सय्यिदुना **बिलाले** ह़बशी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ हैं। वोह अल्फ़ाज़ مَعَاذَاللّٰہ कोई मुरव्वजा गन्दी गाली नहीं थी, बस इतना कह दिया था कि (ऐ काली मां के बेटे) ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने जब दरबारे रिसालत में इस की शिकायत की तो **सरकारे मदीना** صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم




ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को डांटा और नसीह़त फ़रमाई। इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर इस का क्या रद्दे अ़मल हुवा, येह बहुत ही लरज़ा बर अन्दाम कर देने वाली दास्तान है, इस को सुनिये और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से लरज़िये : चुनान्चे दरबारे रिसालत की मलामत सुन कर फ़ौरन ही ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू ज़र गिफ़ारी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना **बिलाले** ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में नदामत के साथ ह़ाज़िर हुए और एक दम अपना ह़सीन रुख़्सार (या'नी गाल) ज़मीन पर रख कर इन्तिहाई लजाजत के साथ रोते और गिड़गिड़ाते हुए कहा : **"ऐ बिलाल !** जब तक तुम अपने क़दम के तल्वे से मेरे इस रुख़्सार (या'नी गाल) को न रौंदोगे मैं उस वक़्त तक अपना येह चेहरा हरगिज़ हरगिज़ ज़मीन से नहीं उठाऊंगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू ज़र गिफ़ारी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के शदीद इस्रार से मजबूर हो कर ह़ज़रते सय्यिदुना **बिलाल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बा दिले ना ख़्वास्ता अपना क़दम सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुबारक चेहरे पर रख कर फ़ौरन ही हटा लिया और ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू ज़र गिफ़ारी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मुआफ़ कर दिया। (ارشادالسّاری ج١ ص١٩٧)

अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ **पैकरे परहेज़ गारी थे : ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ल्लामा क़स्त़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانِی ने इस वाक़िए के बारे में येह भी तह़रीर फ़रमाया है कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू ज़र गिफ़ारी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह आ़र (या'नी ग़ैरत) दिलाने वाली बात ह़ज़रते सय्यिदुना **बिलाले** ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये उस वक़्त कही थी जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ की ह़ुरमत (या'नी ह़राम होने) का इ़ल्म नहीं हुवा था। वरना ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जैसे पैकरे तक़्वा व परहेज़ गारी से ऐसी बात का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता। इसी लिये **ह़ुज़ूरे पुरनूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सिर्फ़ येह लफ़्ज़ कह कर उन की सर-ज़निश (या'नी मलामत) फ़रमाई कि "तुम्हारे अन्दर अभी जाहिलिय्यत की ख़स्लत बाक़ी है।" और येह ज़ज्र व तौबीख़ (या'नी डांट डपट) भी उन के बुलन्द मरातिब की वजह से हुई कि इतने बड़े आदमी की ज़बान से इतनी छोटी और गिरी हुई बात नहीं निकलनी चाहिये थी। (ایضاً)

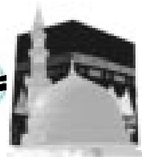
सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رضی اللہ عنہ की इस्तिक़ामत : **हज़रते** सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत ही क़दीमुल इस्लाम सहाबी हैं, यहां तक कि बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام का क़ौल है कि इस्लाम क़बूल करने में बाहरी (ग़ैर हिजाज़ी) सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के अन्दर आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ का पांचवां नम्बर है। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के मुसल्मान होने का पूरा हाल **बुख़ारी** शरीफ़ में मुफ़स्सल मज़्कूर है। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के ईमानी जज़्बे का हाल येह था कि क़बूले इस्लाम के बा'द चन्द दिन तक बुलन्द आवाज़ से रोज़ाना मज्मए कुफ़्फ़ार में अपने इस्लाम का ए'लान फ़रमाते और कुफ़्फ़ारे मक्का आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ पर पिल पड़ते और इस क़दर ज़दो कोब या'नी मारपीट करते कि आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ लहू लुहान हो कर बेहोश हो जाते मगर जूं ही होश में आते फिर अपने इस्लाम का ए'लान फ़रमाते। (मुन्तख़ब हदीसें, स. 157) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ख़ुदाया ब हक़्क़े बिलालो अबू ज़र मुझे दीन पर इस्तिक़ामत अ़ता कर
इलाही न कुछ पूछना रोज़े महशर मुझे बख़्श बहरे बिलालो अबू ज़र
इलाही बराए बिलालो अबू ज़र
मुझे ख़ुल्द में दे जवारे पयम्बर

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

क़ियामत के क़रीब एक ख़ौफ़नाक जानवर निकलेगा : **बराए** करम ! नेकी की दा'वत की **अहम्मिय्यत** को समझने की कोशिश कीजिये। जब क़ियामत क़रीब आ जाएगी तो लोग नेकी की दा'वत तर्क कर देंगे, उन की इस्लाह की कोई उम्मीद बाक़ी न रहेगी। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा कुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़्हा 712 पर पारह 20 **सू-रतुन्नम्ल** की आयत नम्बर 82 में रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने अ़ज़ीम है :






وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿۸۲﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब बात उन पर आ पड़ेगी हम ज़मीन से उन के लिये एक **चौपाया** निकालेंगे जो लोगों से कलाम करेगा इस लिये कि लोग हमारी आयतों पर ईमान न लाते थे।

बात करने वाला अ़जीब शक्ल का जानवर : **ह़ज़रते** सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : या'नी उन पर ग़-ज़बे इलाही होगा और अ़ज़ाब वाजिब हो जाएगा और हुज्जत पूरी हो चुकेगी, इस त़रह़ कि लोग اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَ نَہْیٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना) तर्क कर देंगे और उन की दुरुस्ती की कोई उम्मीद बाक़ी न रहेगी या'नी क़ियामत क़रीब हो जाएगी और उस की अ़लामतें ज़ाहिर होने लगेंगी और उस वक़्त तौबा नफ़्अ़ न देगी। **मज़ीद** फ़रमाते हैं : उस चौपाए को **दाब्बतुल अर्द़** कहते हैं, **येह अ़जीब शक्ल का जानवर** होगा जो कोहे सफ़ा (वाक़ेअ़ **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا) से बर आमद हो कर तमाम शहरों में बहुत जल्द फिरेगा, फ़साह़त के साथ कलाम करेगा, हर शख़्स की पेशानी पर एक निशान लगाएगा, ईमानदारों की पेशानी पर अ़साए मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से नूरानी ख़त़ (या'नी रोशन लकीर) खींचेगा, काफ़िर की पेशानी पर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की अंगुश्तरी (या'नी अंगूठी) से सियाह मोहर लगाएगा। **मज़ीद** फ़रमाते हैं : और ब ज़बाने फ़सीह़ (या'नी साफ़ अल्फ़ाज़ में) कहेगा : هٰذَا مُؤْمِنٌ وَّ هٰذَا كَافِرٌ (या'नी) येह मोमिन है और येह काफ़िर है। **मज़ीद** फ़रमाते हैं : या'नी क़ुरआने पाक पर ईमान न लाते थे, जिस में बअ़्स (या'नी क़ियामत में उठाए जाने) व ह़िसाब व अ़ज़ाब व ख़ुरूजे **दाब्बतुल अर्द़** (या'नी चौपाया निकलने) का बयान है।

जो रोएगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा : **मक्की** म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ौफ़े ख़ुदा से रोते हुए **सू-रतुत्तकासुर** पढ़ने के तअ़ल्लुक़ से निहायत दिलरुबा अन्दाज़ में **नेकी की दा'वत** इर्शाद फ़रमाई। चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना जरीर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, नबियों के सरवर, मदीने के ताजवर,





मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम से फ़रमाया : मैं तुम्हारे सामने **सू-रतुत्तकासुर** पढ़ता हूं तुम में से **जो रोएगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा** । चुनान्चे सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे पढ़ा। हम में से कुछ तो रोए और कुछ न रोए। जो नहीं रो सके थे उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हम ने रोने की कोशिश की मगर न रो सके। सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं तुम्हारे सामने इसे दोबारा पढ़ता हूं जो रोएगा, उस के लिये **जन्नत** होगी और जो न रो सके वोह रोने की सी शक्ल ही बना ले। **(نوادرُالاصول ج ١ ص ٦١١ حديث ٨٦٢)**

क़ाबिले रश्क म-दनी मुन्ना : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत में हमारे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के निहायत अछूते अन्दाज़ में **नेकी की दा'वत** देने का रिक़्क़त अंगेज़ बयान है। इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से जिसे चाहें जो चाहें इनायत फ़रमा दें, जभी तो फ़रमाया : **"जो रोएगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।"** इस रिवायत में कुरआने करीम के आख़िरी पारे की 8 आयतों पर मुश्तमिल **सू-रतुत्तकासुर** का तज़्किरा है, जिस के पढ़ने वाले को एक हज़ार आयतें पढ़ने का सवाब मिलता है, इस में क़ब्र व आख़िरत और जहन्नम का इन्तिहाई लरज़ा ख़ेज़ बयान है, काश ! हम कन्ज़ुल ईमान से इस का तरजमा ज़ेहन नशीन कर लें और जब भी येह सूरत पढ़ें या सुनें ख़ौफ़े ख़ुदा से रोना नसीब हो जाए। आइये ! इस सूरत के ह़वाले से एक ऐसे **म-दनी मुन्ने की पुरसोज़ ह़िकायत** सुनते हैं, जिस ने अ़-मली त़ौर पर ख़ौफ़े ख़ुदा भरी **नेकी की दा'वत** दे कर हर एक को ह़ैरत में डाल दिया ! चुनान्चे एक बुज़ुर्ग ने किसी मद्रसे के बाहर एक म-दनी मुन्ना देखा जो खड़ा रो रहा था। इस्तिफ़्सार (या'नी पूछने) पर उस ने बताया, हमारे उस्ताज़ साह़िब ने आज के सबक़ में तख़्ती पर बा'ज़ आयाते करीमा लिखवाई हैं, जो मुझे रुला रही हैं, येह कहते हुए उस ने तख़्ती आगे बढ़ा दी। उस में लिखा था :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (حاکم)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ﴿۱﴾ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ؕ﴿۲﴾ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ﴿۳﴾ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ﴿۴﴾ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ؕ﴿۵﴾ (پ۳۰، التکاثر:۱تا۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला। तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़-लबी ने यहां तक के तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा। हां हां जल्द जान जाओगे। फिर हां हां जल्द जान जाओगे। हां हां अगर यक़ीन का जानना जानते तो माल की **मह़ब्बत** न रखते।

म-दनी मुन्ना बराबर रोए जा रहा था, वोह बुज़ुर्ग उस की येह रिक़्क़त देख कर बेहृद **मु-तअस्सिर** हुए और फ़रमाने लगे : बेटा इस सूरत का सबक़ यहां तक पूरा नहीं हो जाता बल्कि आगे भी है, जो शायद तुम्हें कल दिया जाए। येह कहते हुए उन्हों ने **सू-रतुत्तकासुर** की बक़िय्या आयाते करीमा भी सुना दीं जो येह हैं :

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۙ﴿۶﴾ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۙ﴿۷﴾ ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ﴿۸﴾ (پ۳۰، التّکاثر:۶تا۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक ज़रूर जहन्नम को देखोगे। फिर बेशक ज़रूर उसे यक़ीनी देखना देखोगे। फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी।

म-दनी मुन्ना जहन्नम का तज़्किरा सुन कर थर्रा उठा, कांपता हुवा गिरा और तड़पने लगा और पछाड़ें खा खा कर ठन्डा हो गया। उस का उस्ताज़ लपक कर आया और उस ने उन बुज़ुर्ग को पकड़ लिया। लोग इकठ्ठे हो गए, मर्हूम म-दनी मुन्ने के मां बाप भी आ पहुंचे। उन बुज़ुर्ग को बत़ौरे क़ातिल अ़दालत में पेश कर दिया गया। क़ाज़ी साहिब ने उन बुज़ुर्ग से सफ़ाई त़लब की तो उन्हों ने सारा मा-जरा कह सुनाया। येह सुन कर क़ाज़ी साहिब ने फ़रमाया : येह **म-दनी मुन्ना** इन्तिहाई सआ़दत मन्द था और ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ की तलवार से शहीद हुवा है। उन बुज़ुर्ग को बा इ़ज़्ज़त बरी कर दिया गया। (مُلَخص از نزهة المجالس ج ۲ ص۹٤) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के सदके़ हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो ।

सुनते ही आयतें ढेर जो हो गया
म-दनी मुन्ने के ख़ौफ़े ख़ुदा पर फ़िदा,
मेरे मरने का बाइस हो ख़ौफ़े ख़ुदा
काश ! मिल जाए मुझ को भी ऐसी विला,

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

आक़ा عَلَیْہِ السَّلَام ने रोते रोते नेकी की दा'वत दी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ के आ़लम में रोते हुए **नेकी की दा'वत** इर्शाद फ़रमाने की एक रिक्क़त अंगेज़ रिवायत मुला-हज़ा कीजिये चुनान्चे **"इब्ने माजह"** की ह़दीसे पाक है : ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम **सरकारे मदीना** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह एक जनाज़े में शरीक थे, आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **क़ब्र** के कनारे बैठे और इतना **रोए** कि आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की चश्माने अक़्दस (या'नी पाकीज़ा आंखों) से निकलने वाले आंसूओं से मिट्टी नम (या'नी गीली) हो गई । फिर फ़रमाया : इस (**क़ब्र**) के लिये तय्यारी करो ।

(سُنَنِ اِبن ماجه ج٤ ص٤٦٦ حديث ٤١٩٥)

क़ब्र देख कर सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी गिर्या व ज़ारी फ़रमाते : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने **ख़ौफ़े ख़ुदा से रोते हुए नेकी की दा'वत** इर्शाद फ़रमाई, मेरे मीठे मीठे **आक़ा** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **क़ब्र** व **ह़श्र** के मुआ़-मलात में हर त़रह़ के अ़ज़ाब से यक़ीनी क़त़ई तौर पर मह़फ़ूज़ी के बा वुजूद **क़ब्र** के ह़ालात की ह़क़ीक़ी मा'रिफ़त (या'नी पहचान) की वजह से ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब इस के तज़्किरे पर रो दिये । **अमीरुल मुअमिनीन** ज़ुन्नूरैन, जामिउ़ल कुरआन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान इब्ने अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ क़त़ई जन्नती होने के बा वुजूद भी **क़ब्र** की ज़ियारत के मौक़अ़ पर आंसू रोक न सकते थे चुनान्चे

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 695 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"अल्लाह वालों की बातें"** (जिल्द अव्वल) के सफ़्ह़ा 139 पर है : **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ग़ुलाम (ह़ज़रते सय्यिदुना) हानी (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) फ़रमाते हैं कि **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब किसी **क़ब्र** के पास खड़े होते तो इस क़दर **रोते** कि आंसूओं से आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की रीश (या'नी दाढ़ी) मुबारक तर हो जाती। (ترمذی ج٤ ص١٣٨ حديث٢٣١٥) **अल मवाइ़ज़ुल अ़स्फ़ूरिया** में इस ह़िकायत को क़दरे तफ़्सील से बयान किया गया है और उस में कुछ यूं भी है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से **क़ब्र** को देख कर बहुत ज़ियादा रोने का सबब पूछा गया तो फ़रमाया : मुझे अपनी **तन्हाई** याद आ जाती है क्यूं कि **क़ब्र** में मेरे साथ लोगों में से कोई भी न होगा, (फिर **नेकी की दा'वत** के म-दनी फूल इनायत करते हुए) फ़रमाया : जिस के लिये उस की दुन्या क़ैदख़ाना है उस के लिये उस की **क़ब्र** जन्नत और जिस के लिये उस की दुन्या जन्नत है उस की **क़ब्र** उस के लिये क़ैदख़ाना है, जिस के लिये दुन्या की ज़िन्दगी बत़ौरे क़ैद थी मौत उस की रिहाई का पैग़ाम है, जिस ने दुन्या में नफ़्सानी ख़्वाहिशात को तर्क किया वोह आख़िरत में पूरा पूरा ह़िस्सा पाएगा, बेहतर शख़्स वोह है जो कि इस से पहले कि दुन्या इसे छोड़े वोह ख़ुद दुन्या को तर्क कर (या'नी छोड़) चुका हो और अपने परवर दगार عَزَّ وَجَلَّ से मिलने से क़ब्ल उस عَزَّ وَجَلَّ से राज़ी हो गया हो। हर शख़्स की **क़ब्र** का मुआ़-मला उस की दुन्यवी ज़िन्दगी के मुत़ाबिक़ है या'नी नेकियों में ज़िन्दगी गुज़ारी तो **क़ब्र** में राह़तें और अगर बदियां करते हुए मरा तो हलाकतें ही हलाकतें। (موعظۂ حسنه، ص٦١-٦٢)

किसी की क़ब्र बाग़ और किसी की क़ब्र में आग : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नेक बन्दे **क़ब्र** के अन्दरूनी ह़ालात पर ख़ूब ग़ौर फ़रमाया करते हैं और अफ़्सोस ! हम बारहा **क़ब्रें** देखते हैं मगर इ़ब्रत नहीं पकड़ते, काश ! हम भी सन्जी-दगी से ग़ौर करने वाले बनें। बाहर से ब ज़ाहिर यक्सां नज़र आने वाली क़ब्रें अन्दर से एक जैसी नहीं होतीं, किसी की **क़ब्र** अन्दर से गुलो गुलज़ार और बाग़ो बहार होती है जब कि किसी की **क़ब्र** में सुलगती

अंगार होती और वोह **क़ब्र** सांप बिच्छूओं का ग़ार होती है और येह भी याद रहे ! **क़ब्र** में अ़क्ल सलामत रहेगी, लिहाज़ा जो नेक बन्दे ईमान सलामत लिये **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की रिज़ा पर दुन्या से रुख़्सत होते हैं, वोह बा'दे वफ़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत को पहुंचते हैं और उन के बस मज़े ही मज़े होते हैं मगर गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार कर **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की नाराज़ी के साथ जो लोग मरते और **क़ब्र** में उतरते हैं, उन की बस शामत ही आ जाती है। चूंकि अ़क्ल व होश सब सलामत होते हैं लिहाज़ा मरने वाले को **क़ब्र** में सब कुछ समझ आ रही होती है, देखने सुनने की क़ुव्वत ख़त्म होना कुजा मज़ीद बढ़ जाती है और **मुर्दा** बहुत कुछ देख और सुन रहा होता है, उस के दोस्त अह़बाब दफ़्न करने के बा'द उसे वापस जाते साफ़ साफ़ दिखाई दे रहे होते हैं यहां तक कि उन के क़दमों की चाप भी सुनाई दे रही होती है।

क़ब्र की तन्हाई : सिर्फ़ इतना सोचिये कि गुनाहों के सबब क़ब्र में बिलफ़र्ज़ और कोई अ़ज़ाब न भी हो सिर्फ़ इतना ही मुआ़-मला हो कि बस यूं ही बन्दा घुप अंधेरी **क़ब्र** में तन्हा बन्द पड़ा रहे, ख़ुदा की क़सम ! इस में भी बहुत कुछ इ़ब्रत है, सोचिये तो सही ! उस का वक़्त कैसे पास होगा नीज़ क़ब्र के ऐसे ख़ौफ़नाक अंधेरे और तन्हाई के वहूशत भरे होशरुबा माहोल में गुनहगार इन्सान पर क्या गुज़रेगी ! इस का हर ज़ी शुऊ़र कुछ न कुछ अन्दाज़ा लगा सकता है। येह तो सिर्फ़ एह़सास दिलाने के लिये अ़र्ज़ किया है वरना क़ब्र के ऐसे ऐसे अ़ज़ाबात मन्कूल हैं कि सुन कर आदमी के रूंगटे खड़े हो जाएं। चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना मसरूक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقُدُّوس से रिवायत है : जो शख़्स चोरी या शराब ख़ोरी या ज़िना में मुब्तला हो कर मरता है उस पर **दो सांप** मुक़र्रर कर दिये जाते हैं जो उस का गोश्त नोच नोच कर खाते रहते हैं। (کتابُ ذِکر الموت مَع موسُوعَه امام ابنِ اَبِی الدُّنیا ج ٥ص٤٧٦ رقم٢٠٧) **ज़रा** इतना ही ग़ौर कर लीजिये कि सिर्फ़ एक नमाज़ तर्क करने पर या एक बार झूट बोलने पर या एक बार ग़ीबत करने के सबब या एक बद निगाही के बाइस या एक बार गाना सुनने या एक फ़िल्म देखने या एक गाली

निकालने या एक बार गुस्से से बिला इजाज़ते शर-ई किसी को झाड़ने या एक बार दाढ़ी मुंडाने की सज़ा में अगर पकड़ कर **तंग क़ब्र** के अन्दर घुप अंधेरे और ख़ौफ़नाक तन्हाई में रख दिया जाए तो क्या गुज़रेगी ! यक़ीनन ख़ाइफ़ीन (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वालों) के लिये येह तसव्वुर ही लरज़ा देने वाला है । येह तो सिर्फ़ दुन्यवी तसव्वुर है वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी की सूरत में मरने के बा'द जिन अज़ाबाते क़ब्र का सामना होगा वोह कौन बरदाश्त कर सकेगा ! "**हिल्यतुल औलिया**" में रिवायत है : "जब बन्दा क़ब्र में दाख़िल होता है तो उस को डराने के लिये वोह तमाम चीज़ें आ जाती हैं जिन से वोह दुन्या में डरता था और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से न डरता था ।" (حِلْيَةُ الْاَولياء ج١٠ص١٢ رقم١٤٣١٨) हम अज़ाबे क़ब्र व जहन्नम से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अमान चाहते हैं ।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 667)

तेरी जवानी कहीं धोके में न डाल दे ! : मश्हूर **वलिय्युल्लाह** ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने एक नौ जवान पर इन्फ़िरादी कोशिश कर के उसे **नेकी की दा'वत** देते हुए फ़रमाया : ऐ जवान ! तुझे तेरी जवानी धोके में न डाल दे, कई जवानों ने तौबा में देर कर दी, लम्बी उम्मीद रखी, मौत को याद न किया और कहा : मैं कल या परसों तौबा कर लूंगा, वोह तौबा से ग़ाफ़िल रहे । आख़िर क़ब्र के पेट में चले गए । उन को माल, ग़ुलाम, मां बाप और औलाद ने कुछ नफ़्अ़ न दिया जैसा कि क़ुरआने करीम में पारह 19 **सू-रतुश्शु-अ़राअ** की आयत नम्बर 88 ता 89 में इर्शाद है :

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿۸۹﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन न माल काम आएगा न बेटे मगर वोह जो **अल्लाह** के हुज़ूर हाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर ।

मिले ख़ाक में अहले शां कैसे कैसे मकीं हो गए ला मकां कैसे कैसे

हुए नामवर बे निशां कैसे कैसे ज़मीं खा गई नौ जवां कैसे कैसे

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है

येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ल्बे सलीम किसे कहते हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "क़ल्बे सलीम" या'नी सलामत दिल, इस से मुराद है दिल का बद अ़क़ी-दगियों से पाक होना । **सदरुल अफ़ाज़िल** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی इन आयात के तह़त फ़रमाते हैं : जो शिर्क, कुफ्र व निफ़ाक़ से पाक हो उस को उस का माल भी नफ़्अ़ देगा जो राहे ख़ुदा में ख़र्च किया हो और औलाद भी जो सालेह़ (या'नी नेक) हो जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है कि जब आदमी मरता है उस के अ़मल मुन्क़त़अ़ हो (या'नी रुक) जाते हैं सिवा तीन के, एक स-द-क़ए जारिया, दूसरा वोह माल जिस से लोग नफ़्अ़ उठाएं, तीसरी नेक औलाद जो उस के लिये दुआ़ करे । [مُسلِم ص ۸۸۶ حدیث ۱۶۳۱] (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 593)

मीज़ां पे सब खड़े हैं आ'माल तुल रहे हैं

रख लो भरम ख़ुदारा अ़त्तार क़ादिरी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 195)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पांच से मह़ब्बत और पांच से ग़फ़्लत : ग़फ़्लत से बेदार करने वाले नेकी की दा'वत पर मब्नी पांच म-दनी फूल मुला-ह़ज़ा हों, **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : سَیَاْتِیْ زَمَانٌ عَلٰی اُمَّتِیْ یُحِبُّوْنَ خَمْسًا وَّ یَنْسَوْنَ خَمْسًا ـ मेरी उम्मत पर वोह ज़माना जल्द आएगा कि वोह पांच से **मह़ब्बत** रखेंगे और पांच को भूल जाएंगे

(1) يُحِبُّوْنَ الدُّنيَا وَ يَنْسَوْنَ الْاٰخِرَةَ दुन्या से **मह़ब्बत** रखेंगे और आख़िरत को भूल जाएंगे
(2) وَيُحِبُّوْنَ الْمَالَ وَ يَنْسَوْنَ الْحِسَابَ माल से **मह़ब्बत** रखेंगे और मुह़ा-सबे को भूल जाएंगे
(3) وَيُحِبُّوْنَ الْخَلْقَ وَيَنْسَوْنَ الْخَالِقَ मख़्लूक़ से **मह़ब्बत** रखेंगे और ख़ालिक़ को भूल जाएंगे
(4) وَيُحِبُّوْنَ الذُّنُوْبَ وَيَنْسَوْنَ التَّوْبَةَ गुनाहों से **मह़ब्बत** रखेंगे और तौबा को भूल जाएंगे
(5) وَ يُحِبُّوْنَ الْقُصُوْرَ وَيَنْسَوْنَ الْمَقْبَرَةَ मह़ल्लात से **मह़ब्बत** रखेंगे और क़ब्रिस्तान को भूल जाएंगे । (مُكاشَفَةُ الْقُلوب ص ٣٤)

वोह है ऐ़शो इ़शरत का कोई मह़ल भी — जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी
बस अब अपने इस जह्ल से तू निकल भी — येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गाने बाजों से तौबा नसीब हो गई : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रिज़ाए इलाही पाने, दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ जगाने, ईमान की ह़िफ़ाज़त की कुढ़न बढ़ाने, मौत का तसव्वुर जमाने, ख़ुद को अ़ज़ाबे क़ब्र व जहन्नम से डराने, गुनाहों की आ़दत मिटाने, अपने आप को सुन्नतों का पाबन्द बनाने, दिल में इ़श्क़े रसूल की शम्अ़ जलाने और जन्नतुल फ़िरदौस में मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाने का शौक़ बढ़ाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र करते रहिये और **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ रोज़ाना **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाते रहिये । आइये आप की तरग़ीब व तह़रीस

के लिये आप को एक **म-दनी बहार** सुनाऊं : बाबुल इस्लाम (सिन्ध) हैदरआबाद के एक इस्लामी भाई की तहरीर का ख़ुलासा है कि मैं दुन्या की रंगीनियों में ज़िन्दगी गुज़ारने वाला एक छेल छबीला नौ जवान था, नमाज़ों से कोसों दूर और सुन्नतों से महरूम था, दुन्या की बे शुमार ना जैबा ह़-र-कतों जैसा कि गाने बाजों, फ़िल्मों डिरामों वग़ैरा वग़ैरा की लपेट में था। मेरे म-दनी माहोल में आने का सबब कुछ इस त़रह बना कि ख़ुश किस्मती से **र-मज़ानुल मुबारक** 1429 सि. हि. ब मुताबिक़ 2008 सि. ई. में **म-दनी चेनल** का आग़ाज़ हुवा और केबल पर इस के म-दनी सिल्सिले जारी हो गए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत से मैं ने इन सिल्सिलों को देखा तो मुझे बहुत अच्छे लगे, अब मैं अक्सरो बेशतर म-दनी चेनल ही देखने लगा, एक बार म-दनी चेनल पर सुन्नतों भरा बयान **"काले बिच्छू"** सुनने की सआदत नसीब हुई। मैं ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ उठा, मैं ने हाथों हाथ अपने चेहरे पर दाढ़ी सजाने की निय्यत कर ली और म-दनी चेनल पर जब "गानों के 35 कुफ़्रिय्या अश्आर" नामी बयान सुना तो मैं ने घबरा कर हाथों हाथ गाने सुनने से भी तौबा कर ली। म-दनी चेनल पर जब बैअ़त करवाई गई तो اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं **हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म** सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی का मुरीद हो कर क़ादिरी बन गया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत से नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी है। करम बालाए करम ! येह तहरीर पेश करते वक़्त आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** बाबुल मदीना (कराची) में दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाले माहे **र-मज़ानुल मुबारक** के 30 रोज़ा सुन्नतों भरे ए'तिकाफ़ में शरीक हूं।

म-दनी चेनल सुन्नतों की लाएगा घर घर बहार — म-दनी चेनल से हमें क्यूं वालिहाना हो न प्यार
ऐ गुनाहों के मरीज़ो ! चाहते हो गर शिफ़ा — ऑन करते ही रहो तुम म-दनी चेनल को सदा
इस में इस्यां से हिफ़ाज़त का बहुत सामान है — اِنْ شَآءَاللّٰه ख़ुल्द में भी दाख़िला आसान है

(वसाइले बख़्शिश, स. 605, 606)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

नेकी की दा'वत देते हुए ख़ौफ़े ख़ुदा से रो पड़े : हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن "नेकी की दा'वत" देने का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने देते, अगर राह चलते बल्कि दौराने सफ़र भी मौक़अ़ मिलता तो "नेकी की दा'वत" इर्शाद फ़रमाते चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्राहीम बिन बश्शार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि मैं फ़-सवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के हमराह मुल्के शाम की त़रफ़ जा रहा था कि रास्ते में एक शख़्स लपक कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सामने आया और सलाम करने के बा'द अ़र्ज़ करने लगा : "**ऐ अबू यूसुफ़ !** मुझे कुछ नसीह़त फ़रमा दीजिये ।" येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **रो पड़े** और (नेकी की दा'वत पेश करते हुए) फ़रमाया **: ऐ भाई !** बेशक शबो रोज़ का (जल्द जल्द) आना जाना, आप के बदन के घुलने, उ़म्र के ख़त्म होने और हर दम मौत के क़रीब से क़रीब तर होते चले जाने का पता दे रहा है । इस लिये मेरे भाई ! आप को उस वक़्त तक हरगिज़ मुत़्मइन हो कर न बैठ रहना चाहिये जब तक कि अपने **अच्छे ख़ातिमे** का मा'लूम न हो जाए नीज़ येह पता न चल जाए कि जन्नत में जाना है या कि जहन्नम ठिकाना है ? और येह ख़बर न हो जाए कि आप का परवर दगार عَزَّوَجَلَّ आप के गुनाहों और ग़फ़्लतों की वजह से नाराज़ है या अपने फ़ज़्ल व रह़मत के सबब आप से राज़ी है । **ऐ कमज़ोर इन्सान !** अपनी औक़ात मत भूलिये ! आप का आग़ाज़ एक "नापाक क़त़रा" है जब कि अन्जाम **सड़ा हुवा मुर्दा ।** अगर अभी येह नसीह़त समझ नहीं भी आ रही तो अ़न्क़रीब समझ में आ जाएगी जिस वक़्त आप **क़ब्र** में जाएंगे । वहां गुनाहों पर नदामत तो होगी मगर काम न देगी । येह फ़रमा कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **रोने लगे** और वोह शख़्स भी जज़्बाते **तअस्सुर** से रोने लगा । रावी कहते हैं **:** उन दोनों को **रोता** देख कर मैं भी **रोने लगा** यहां तक कि वोह दोनों **बेहोश** हो कर गिर गए ।

(ذَمُّ الْهَوٰى ص ٤٣٧ مُلَخصاً)

मुझे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे दे — पए ताजदारे ह़रम या इलाही
जो नाराज़ तू हो गया तो कहीं का — रहूंगा न तेरी क़सम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

किसी को रोता देखो तो रो पड़ो : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का ख़ौफ़े ख़ुदा ! कि बसा अवक़ात नेकी की दा'वत देते हुए उन्हें ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब रोना आ जाता था। आज भी अगर नेकी की दा'वत देते हुए ख़ौफ़े ख़ुदा से कोई रो पड़े, रोते हुए बयान करे, रो रो कर दुआ़ करे, तिलावते क़ुरआन या ना'त शरीफ़ सुन कर रो पड़े तो येह उस के लिये बड़ी सआ़दत की बात है। उस को **रियाकार** समझते हुए उस पर हरगिज़ **बद गुमानी** न की जाए कि मुसल्मान पर **बद गुमानी** करना **ह़राम** और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। दूसरों पर बद गुमानी कर के अपने दिल जलाने वालों की ख़ुद अपनी ही बरबादी है, ह़ज़रते सय्यिदुना **मक्हूल** दिमश्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जब किसी को **रोता हुवा** देखो तो तुम भी रो पड़ो और उसे **रियाकार** न समझो, मैं ने एक दफ़्आ़ किसी रोने वाले शख़्स को "रियाकार" तसव्वुर किया तो मैं **एक साल तक रोने से मह़रूम रहा।** (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّيْن ص١٠٧)

यादे नबी में रोने वाला हम दीवानों को
लाख पराया हो वोह फिर भी अपना लगता है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकार बे वुक़ूफ़ों का सरदार है : किसी को दुआ़ वग़ैरा में रोता देख कर बिग़ैर वाज़ेह़ क़रीने के उसे **रियाकार** समझने वाला बेशक गुनहगार और नारे जहन्नम का ह़क़दार है अलबत्ता ख़ुद रोने वाले को 112 बार ग़ौर कर लेना चाहिये कि वोह क्यूं रो रहा है ! अगर **रिया** का शाइबा भी हो तो जब तक इस्लाह़ न हो ले रोने से बाज़ रहे। यक़ीनन **रियाकार बे वुक़ूफ़ों का सरदार है** कि किसी इन्सान को अपनी ज़ात से मु-तअस्सिर करने, उस की त़रफ़ से ता'रीफ़ी कलिमात सुनने की आ़रिज़ी लज़्ज़त पाने, अपने आप को उस की नज़र में नेक बन्दा बनाने की तमन्ना पर कि वोह इस की त़रफ़ ब निगाहे तह़सीन (या'नी पसन्दी-दगी की नज़र से) देखे और येह दिल ही दिल में लुत़्फ़ अन्दोज़ हो और मह़ज़ इस मा'मूली सी लज़्ज़त के लिये रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मिलने वाले अ़ज़ीमुश्शान

इन्आमात को दाव पर लगा देता है और इस की महरूमी की इन्तिहा दुन्या में भी येह है कि अक्सर खुद इस फिटकार के ह़क़दार रियाकार को पता तक नहीं चल पाता कि दिखावा कर के जिस की नज़र में नेक बनना चाहता था वोह **मु-तअस्सिर** भी हुवा या नहीं ! बिलफ़र्ज़ वोह **मु-तअस्सिर** हो भी गया और उस ने पीछे से कोई ता'रीफ़ कर भी दी तब भी आ़म तौ़र पर अपने बारे में ता'रीफ़ी कलिमात सुनना कम ही किसी को नसीब होता है ! और अगर किसी ने मुंह पर ता'रीफ़ कर भी दी तो हलाकत ही में इज़ाफ़ा होगा । यक़ीन मानिये ! अगर किसी आहो ज़ारी करने और रोने वाले या इ़बादत का इज़्हार करने वाले के बारे में लोगों को पता चल जाए कि येह **रियाकारी** कर रहा है तो उस से ठीक ठाक बदज़न हो जाएं तो अब ग़ौर कर ले कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सब कुछ मा'लूम है तो ऐसी सूरत में उस عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी किस क़दर शदीद होती होगी !

आज बनता हूं मुअ़ज़्ज़ज़ जो खुले ह़श्र में ऐ़ब
हाए रुस्वाई की आफ़त में फंसूंगा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 91)

आ'माल ज़ाएअ़ हो जाएंगे : **रियाकारी** से बचने बचाने का जज़्बा बढ़ाने की निय्यत से इस ज़िम्न में बतौ़रे "नेकी की दा'वत" चन्द आयात व रिवायात पेश की जाती हैं । यक़ीनन दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ देने वाले नादान रियाकारों के अ़मल का सवाब **ज़ाएअ़** हो जाएगा । चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा कुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़्ह़ा 418 ता 419 पर पारह 12 **सूरए हूद** आयत नम्बर 15 में रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَ هُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿۱۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो दुन्या की ज़िन्दगी और आराइश चाहता हो हम उस में उन का पूरा फल दे देंगे और इस में कमी न देंगे ।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُمَا इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि **रियाकारों** को दुन्या में ही उन की नेकियों का बदला दे दिया जाता है और उन पर ज़र्रा भर ज़ुल्म नहीं किया जाता। (تفسیرِطَبَری ج ۷ ص ۱۳)

रियाकारियों से बचा या इलाही
बना मुझ को मुख़्लिस बना या इलाही

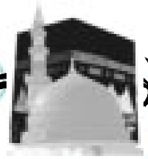
रिया काराना अ़मल क़बूल नहीं होता : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 166 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "**रियाकारी**" सफ़ह़ा 16 पर है : ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे **नुबुव्वत, मख़्ज़ने** जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस अ़मल को क़बूल नहीं करता जिस में राई के दाने के बराबर भी **रिया** (या'नी दिखावा) हो।" (اَلتَّرغِیب وَالتَّرھِیب ج ۱ ص ۳۶ حدیث ۲۷)

दिखावे से मुझ को इलाही बचाना
मुझे अपनी रह़मत से मुख़्लिस बनाना

रियाकार पर जन्नत ह़राम है : **शहन्शाहे** दो जहान, मक्के मदीने के सुल्तान صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर **रियाकार** पर जन्नत **ह़राम** कर दी है। (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطی ج ۲ ص ۲۴۲ حدیث ۵۳۲۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो ईमान के साथ दुन्या से जाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो बे ह़िसाब बख़्शा जाए, अगर वोह عَزَّوَجَلَّ चाहे तो सज़ा दे कर जन्नत में दाख़िल फ़रमाए। लिहाज़ा **रियाकार पर जन्नत ह़राम है,** की शर्ह़ बयान करते हुए ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बयान कर्दा ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी **रियाकार** मुसल्मान इब्तिदाअन जन्नत में






दाख़िल न होगा। (فَیْضُ الْقَدِیر لِلْمناوِی ج۲ ص۲۸۶ تَحتَ الْحدیث۱۷۲۵)

ख़ताएं मेरी अफ़्व ग़फ़्फ़ार कर दे
रियाकारियों से तू बेज़ार कर दे

रियाकारी को इस मिसाल से समझिये : **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی **रियाकारी** को इस मिसाल से समझाते हैं : म-सलन कोई शख़्स सारा दिन बादशाह के सामने खड़ा रहे जिस तरह ख़ुद्दाम की आदत होती है लेकिन उस का **मक़्सूद** बादशाह का क़ुर्ब हासिल करना न हो बल्कि उस की किसी कनीज़ को देखना हो तो येह (या'नी उस शख़्स का खड़ा होना) बादशाह के साथ यक़ीनन मज़ाक़ है। तो इस से ज़ियादा क़ाबिले हक़ारत व नफ़रत और क्या बात होगी कि कोई शख़्स **अल्लाह** तआला की इबादत उस के कमज़ोर व लाचार बन्दे को दिखाने के लिये करे जो उस को बिज़्ज़ात (या'नी ज़ाती तौर पर) न नफ़्अ पहुंचा सकता है न नुक़्सान। (اِحیاءُ العُلوم ج۳ ص۳۶۹ مُلَخَّصًا)

इख़्लास नेकियों में ऐ रब्बे करीम दे
अ़क़्ले सलीम दे मुझे क़ल्बे सलीम दे

रियाकारी की ता'रीफ़ : **रियाकारी** के बा'ज़ नुक़्सानात की मा'लूमात तो हुई, आइये ! अब येह मा'लूम करते हैं कि गुनाहों भरी रियाकारी कहते किसे हैं ! तो सुनिये : **रिया** की ता'रीफ़ येह है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की रिज़ा के इलावा किसी और इरादे से इबादत करना।**" गोया इबादत से येह ग़रज़ हो कि लोग इस की इबादत पर आगाह हों ताकि वोह उन लोगों से माल बटोरे या लोग उस की **ता'रीफ़** करें या उसे नेक आदमी समझें या उसे **इज़्ज़त** वग़ैरा दें। (اَلزَّواجر ج۱ ص۷۶)




रियाकारी की 80 मिसालें

(जो मिसालें पेश की जा रही हैं वोह अगर्चे रियाकारी ही की हैं ताहम कई जगह निय्यत के फ़र्क़ से अह़काम में तब्दीली हो सकती है)

नमाज़ के मु-तअ़ल्लिक़ रियाकारी की 11 मिसालें

﴾1﴿ किसी शख़्स का इस लिये पाबन्दी से नमाज़ पढ़ना कि लोग उस को पक्का नमाज़ी कहें।

﴾2﴿ किसी ह़ाफ़िज़ का तरावीह़ में इस लिये "मुसल्ला सुनाना" या'नी क़ुरआने करीम पढ़ना कि पैसे मिलेंगे ।

﴾3﴿ अपनी शादी वाले दिन या घर में मय्यित के मौक़अ़ पर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी देना या बा जमाअ़त नमाज़ की पाबन्दी करना या सदाए मदीना लगाना (या'नी मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने के लिये घर से निकलना) ताकि लोग अश अश करें कि वाह भई ! ऐसे मौक़अ़ पर भी इस ने इन नेक कामों की छुट्टी नहीं की ! (ख़्वाह इस के इलावा बिला तकल्लुफ़ नाग़े होते हों !)

﴾4﴿ **लोगों** को **मु-तअस्सिर** करने के लिये उन के सामने इत़्मीनान और **ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़** के साथ नमाज़ पढ़ना ।

﴾5﴿ **अगर** बड़ी रात के इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में शब बेदारी करने या किसी रात तहज्जुद पढ़ने का मौक़अ़ मिले तो दिन में लोगों के सामने इस लिये आंखें मलना या अंगड़ाइयां वग़ैरा लेना कि सब को पता चल जाए कि येह रात सोया नहीं बल्कि नेकियों के लिये जागता रहा है ।

﴾6﴿ दूसरों की मौजू-दगी में इस लिये इशराक़ व चाश्त और अव्वाबीन व तहज्जुद अदा करना ताकि लोग नफ़्लें पढ़ने वाला तस्लीम करें ।

﴾7﴿ किसी के लिये लोगों का ह़ुस्ने ज़न हो कि येह तहज्जुद गुज़ार और नफ़्ल रोज़ों का आ़दी है। जब कि ह़क़ीक़तन ऐसा न हो मगर उस के सामने कोई इन ख़ुसूसिय्यात के साथ तआ़रुफ़ करवाए तो येह इस निय्यत के साथ मुस्करा कर सर झुका ले कि इन पर मेरी नेकूकारी का **तअस्सुर** क़ाइम रहे ।

﴾8﴿ तहज्जुद में उठने की सआ़दत मिलने पर इस लिये ज़ोर ज़ोर से खांसना या ऐसे मुआ़-मलात करना कि ज़ौजा या घर के दीगर अफ़राद जाग जाएं और देख कर **मु-तअस्सिर** हों कि ओहो ! येह तहज्जुद के लिये उठा है !

﴾9﴿ नमाज़ के बा'द मस्जिद में इस लिये देर तक ठहरा रहना कि लोग नेक आदमी क़रार दें ।

﴾10﴿ नमाज़ में पहली सफ़ का इस लिये एहतिमाम करना कि लोग **मु-तअस्सिर** हों, ता'रीफ़ करें ।

﴾11﴿ अपनी पहली सफ़ या जमाअ़त रह जाने पर लोगों के सामने इज़्हारे अफ़्सोस करना ताकि लोग **मु-तअस्सिर** हों और इस को पहली सफ़ और जमाअ़त का ह़रीस समझें ।

मुबल्लिग़ीन के लिये रियाकारी की 18 मिसालें

﴾1﴿ इज्तिमाअ़ वग़ैरा में इस लिये बयान करना कि लोग इस के बयान की ता'रीफ़ करें और अच्छा मुबल्लिग़ कहें ।

﴾2﴿ मुबल्लिग़ का बयान के दौरान दिल पर चोट करने वाले जुम्ले गरज दार आवाज़ में बोलना या पुरजोश अन्दाज़ में अश्आ़र पढ़ना ताकि सामिईन ता'रीफ़ी अन्दाज़ में ना'रा लगाएं, बुलन्द आवाज़ से سُبْحٰنَ الله कहें, वाह वाह ! मरह़बा ! कह कर दाद दें, बयान की ता'रीफ़ करें, शो'ला बयान मुबल्लिग़ कहें ।

﴾3﴿ बयान में इस लिये उ़म्दा जुम्ले, दक़ीक़ अल्फ़ाज़, अ़-रबी व इंग्रेज़ी मक़ूले वग़ैरा शामिल करना कि लोग पढ़ा लिखा समझें और इस से **मु-तअस्सिर** हों ।

﴾4﴿ सुनने वाले उसे **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **में क़ुरबानियां** देने वाला तसव्वुर करें इस लिये बयान के आग़ाज़ में मुबल्लिग़ का म-सलन इस त़रह़ के कलिमात कहना : मैं 6 दिन से मुसल्सल सफ़र पर हूं, इस वक़्त भी 13 घन्टे का सफ़र कर के यहां पहुंचा हूं, बहुत थका हुवा हूं, अभी खाना भी नहीं खाया मगर बयान करने ह़ाज़िर हो गया हूं वग़ैरहा ।

﴾5﴿ इस्लामी भाइयों को म-सलन इस त़रह़ कहना : मैं तो 25 माह से म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर हूं, वक़्फ़े मदीना हूं, इसी रोज़ से रोज़ाना बयान कर रहा हूं,

आज कल कई रोज़ से मुसल्सल म-दनी मश्वरों की तरकीब है, हर माह दो (या चार) म-दनी क़ाफ़िलों में तीन तीन दिन के लिये सफ़र कर रहा हूं, इतने बरस से हर माह तीन रोज़ा म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरकीब है और इन बातों का सबब लोगों में इ़ज़्ज़त बनाना हो कि ख़ूब शाबाश मिले, इस्लामी भाई इस की मिसालें दें, दीन के लिये ख़ूब क़ुरबानियां देने वाला कहें ।

﴾6﴿ जोश में आ कर एक ही दिन में **फ़ैज़ाने सुन्नत** से पचास या सो बार दर्स दे डालना ताकि ख़ूब वाह वाह हो, हौसला अफ़्ज़ाई के नाम पर ता'रीफ़ हो, दा'वते इस्लामी के बड़े ज़िम्मेदारान से पीठ थपक्वाने और तोह़फ़े पाने की तरकीब हो ।

﴾7﴿ किसी बड़ी शख़्सिय्यत के सामने सुन्नतों भरा बयान करने का मौक़अ़ मिले तो ख़ूब बना संवार कर उ़म्दगी से बयान करना ताकि वोह इस से **मु-तअस्सिर** हो, इस की ता'रीफ़ करे ।

﴾8﴿ मुबल्लिग़ का सियासी, हुकूमती या दुन्यवी शख़्सिय्यात के साथ मुरासिम रखना ताकि लोगों को मा'लूम हो या ख़ुद बता सके कि फ़ुलां फ़ुलां शख़्सिय्यत मुझ से **मु-तअस्सिर** है, येह लोग मुझे दुआ़ओं का कहते हैं, फ़ुलां ने तो मेरे हाथ चूम लिये, इन के यहां मेरा बड़ा एह़तिराम है ।

﴾9﴿ किसी मुबल्लिग़ का तरकीबें बनाना कि किसी त़रह़ कोई अफ़्सर या वज़ीर वग़ैरा उन के घर आ जाए ताकि लोगों पर ज़ाहिर हो कि भई ! बड़े बड़े लोग इस के अ़क़ीदत मन्द हैं इस से दुआ़ करवाने या ब-र-कत ह़ासिल करने के लिये ह़ाज़िर होते हैं ।

﴾10﴿ किसी दुन्यवी बड़ी शख़्सिय्यत को इस लिये इस्लाह़ की बात कहना या ख़त़ा पर टोकना कि लोगों पर येह असर पड़े कि वाह भई वाह ! येह तो बड़े बड़ों से मरऊ़ब नहीं होता और हुक्मे शरीअ़त बयान करने में किसी का भी लिह़ाज़ नहीं करता ।

﴾11﴿ किसी बड़े आदमी को दाढ़ी रखवा दी या बदनाम शख़्स को तौबा पर आमादा कर लिया तो अपनी ज़ात से **मु-तअस्सिर** करने के लिये बयान में या इस्लामी भाइयों में अपने इस कारनामे (या म-दनी बहार) का तज़्किरा करना ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

《12》 लोगों में बैठे हुए या दौराने बयान या गुफ़्त-गू करते हुए इस लिये निगाहें नीची रखना कि देखने वाले **मु-तअस्सिर** हों, ह़या से नज़रें झुकाने वाला और आंखों का क़ुफ़्ले मदीना लगाने वाला कहें । (ख़्वाह जब लोगों से जुदा हो तो आंखें हर त़रफ़ घूमती, फिरती और ख़ूब भटक्ती हों)

《13》 तन्हाई में ख़ाशिआना नमाज़ पढ़ने या निगाहें नीची रखने की मश्क़ करना ताकि दूसरों की मौजू-दगी में भी नमाज़ में ख़ुशूअ़ क़ाइम रहे, निगाहें नीची रख सके और लोगों के दिलों में मक़ाम बना सके । (येह दूनी रिया है या'नी तन्हाई वाली मश्क़ भी रिया है कि इस का मक़्सूद रिज़ाए इलाही नहीं, बन्दों पर अपनी पारसाई का सिक्का जमाना है)

《14》 पाबन्दी से फ़िक्रे मदीना करते हुए म-दनी इन्आ़मात की ख़ाना पुरी करने और दूसरों पर म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल की ता'दाद ज़ाहिर करने से मक़्सूद येह हो कि इस की ता'रीफ़ हो, मिसाल दी जाए कि फ़ुलां म-दनी इन्आ़मात का पक्का आ़मिल है, उस का इतने इतने म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल है ।

《15》 किसी का इस लिये दीन की ख़िदमत करना, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना, दीनी कामों के लिये ख़ूब वक़्त देना और इस की ख़ातिर मशक़्क़तें बरदाश्त करना कि लोग इस की क़ुरबानियों की वाह वाह करें, दीनी कामों के लिये इस को ख़ूब मु-तह़र्रिक (ACTIVE) तसव्वुर करें ।

《16》 दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक के अन्दर राहे ख़ुदा में इस निय्यत से सफ़र करना कि इस्लामी भाई इस की क़ुरबानियों की दाद दें, इस की मिसालें बयान करें, इस को बैनल अक़्वामी मुबल्लिग़ कहें ।

《17》 इस लिये पाबन्दी से सदाए मदीना लगाना या'नी लोगों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने के लिये घर से निकलना कि इस की ता'रीफ़ हो कि येह न अंधेरे से घबराता है, न कुत्तों के भौंकने से डरता है, न ही सर्दी और बारिश की परवाह करता है नीज़ रात सोने में चाहे कितनी ही ताख़ीर हो जाए येह फिर भी **सदाए मदीना** का नाग़ा नहीं करता ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (کنزالعمال)

﴾18﴿ **किसी** को नेकी की दा'वत इस **निय्यत** से देना कि लोग इसे मुसल्मानों का अ़ज़ीम **ख़ैर ख़्वाह** तसव्वुर करें या किसी को बुराई से इस लिये मन्अ़ करना कि लोग इस से **मु-तअस्सिर** हों कि "बड़ा **ग़ैरत मन्द** शख़्स है, बुराई देख कर बिल्कुल ख़ामोश नहीं रह सकता।" (काश ! अपने घर में होने वाली बुराई देख कर भी ग़ैरत आया करे, दिल जला करे और इस्लाह़ की सआ़दत की कोशिश नसीब हो)

ना'त शरीफ़ पढ़ने, सुनने वालों के लिये रियाकारी की 16 मिसालें

﴾1﴿ इज्तिमाअ़ वग़ैरा में इस ग़रज़ से तिलावत करना, ना'त शरीफ़ पढ़ना कि लोग नोटें चलाएं, इसे खाना खिलाएं, लिफ़ाफ़ा पेश करें, सूटपीस ह़ाज़िर करें, आवाज़ व अन्दाज़ वग़ैरा की दाद दें, तलफ़्फ़ुज़ की अदाएगी के उस्लूब और पढ़े गए कलाम की ता'रीफ़ करें।

﴾2﴿ ना'त शरीफ़ पढ़ते हुए मुख़्तलिफ़ अश्आ़र पर ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़ वग़ैरा से ब कसरत अश्आ़र इस लिये मिलाना कि लोग कहें : वाह वाह ! इस को तो बहुत सारे और कैसे मुश्किल मुश्किल अश्आ़र याद हैं !

﴾3﴿ किताब से देखे बिग़ैर इस लिये ना'तें पढ़ना कि सुनने वाले कहें वाह भई वाह ! इस को बहुत सी ना'तें ज़बानी याद हैं !

﴾4﴿ ना'त ख़्वान (या मुबल्लिग़) का किसी मुश्किल शे'र की इस लिये शर्ह़ बयान करना ताकि लोग इसे ज़हीन समझें और इस की मा'लूमात की दाद दें।

﴾5﴿ नायाब कलाम तलाश कर के या किसी कलाम की नई त़र्ज़ बना कर (या चुरा कर) छुपा कर रख कर बड़ी रात वग़ैरा किसी ख़ास मौक़अ़ पर कसीर इज्तिमाअ़ में ना'त ख़्वां का इस लिये पढ़ना कि सामिईन झूम उठें और ज़ोर ज़ोर से سُبْحٰنَ الله कह कर दाद दें, ख़ूब ना'रे लगाएं और दूसरे ना'त ख़्वान भी ता'रीफ़ करने पर मजबूर हों।

﴾6﴿ ना'त ख़्वानी, तिलावते क़ुरआन, बयान वग़ैरा पर ब-यक वक़्त इस लिये उ़बूर ह़ासिल करना कि लोग इस को "हर फ़न मौला" कहें।

﴾7﴿ मालदारों के यहां रग़बत के साथ जाना, उन की या किसी भी दीनी व दुन्यवी शख़्सिय्यत

की मौजू-दगी में इस लिये ना'त शरीफ़ पढ़ना कि मालदार "नोटें" चलाए, शख़्सिय्यत की सदाए दादो तह्सीन से नफ़्स "लज़्ज़त" पाए।

﴾8﴿ बैरूनी ममालिक में इ़ज़्ज़त व शोहरत या नज़रानों की ख़्वाहिश पर ना'त पढ़ने जाना नीज़ इस से येह भी मक़्सूद हो कि अपने नाम के साथ "बैनल अक़्वामी शोहरत याफ़्ता ना'त ख़्वां" कहा और इश्तिहारात में लिखा जाए।

﴾9﴿ **T.V.** चेनल पर इस लिये ना'त पढ़ना (या बयान करना) कि ख़ूब शोहरत मिले, लोग रास्ते में रोक कर इ़ज़्ज़त से मिलें, अपने यहां मह़ाफ़िल में मदऊ़ कर के आव भगत करें, मीडिया, या फ़ुलां चेनल का मश्हूरो मा'रूफ़ ना'त ख़्वां (या मुबल्लिग़) कहें या इश्तिहारात में लिखें, V.C.D जारी हो कि जिस से ख़ूब नाम चमके।

﴾10﴿ ना'त ख़्वां (या मुबल्लिग़) का शोहरत और वाह वाह ! के लिये c.d. या v.c.d जारी करवाना।

﴾11﴿ बयान करते या सुनते हुए या दुआ़ करते या दुआ़ करवाते, या मुनाजात या ना'त शरीफ़ पढ़ते या सुनते हुए इस लिये रोने जैसी आवाज़ निकालना, रोनी सूरत बनाना, आंखें पट-पटा कर या ज़ोर से मीच कर ज़बर दस्ती आंसू छलकाना या बार बार आंखें पोंछना कि लोग इस की त़रफ़ मु-तवज्जेह हों और इसे ब निगाहे तह्सीन (या'नी ता'रीफ़ी नज़र से) देखें।

﴾12﴿ इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में इस लिये आगे आगे बैठना, ना'तें सुन कर ख़ूब झूमना, बुलन्द आवाज़ से वाह वाह ! سُبْحٰنَ الله कहना, ना'रे लगाना कि लोग आ़शिक़े रसूल समझें।

﴾13﴿ मुनाजात या ना'त शरीफ़ सुन कर चीख़ो पुकार और उछल कूद कर के ह़ाज़िरीन की तवज्जोह चाहना, अगर रिक़्क़त त़ारी हो गई थी और जोश में खड़ा हो गया था, मगर अब कैफ़िय्यत से बाहर आ जाने के बा वुजूद इस लिये खड़े खड़े हाथ पैर हिलाने का सिल्सिला जारी रखना कि लोग येह न कह सकें कि अरे इतनी जल्दी येह नोर्मल हो गया ! या इस लिये ज़मीन पर गिरना तड़पना कि लोग पकड़ें सहलाएं, होश में लाने के लिये जतन करें, पानी पिलाएं और येह "हू हू" करता हुवा आहिस्ता आहिस्ता होश में आने का अन्दाज़ इख़्तियार करे और यूं लोगों की नज़र में ख़ुद को उ़श्शाक़ में खपा ले।

﴾14﴿ ना'त वग़ैरा सुन कर इस लिये फ़िराक़े मदीना में आहें भरना बार बार मदीना मदीना कहना ताकि लोग "मदीने का दीवाना" समझें ।

﴾15﴿ इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में सिर्फ़ बिरयानी या खिचड़ा वग़ैरा खाने के लिये शिर्कत करना ।

﴾16﴿ मुनाजात, ना'त व मन्क़बत वग़ैरा लिखने वाले का इस के मक़्त़अ़ में अपना तख़ल्लुस इस लिये डालना कि नेक नामी हो, दाद मिले, लोगों पर छाप पड़े कि वाह भई वाह ! येह तो बहुत अच्छा शाइर है ।

राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वालों के लिये रियाकारी की 3 मिसालें

﴾1﴿ दीनी कामों में इस लिये चन्दा देना कि लोग सख़ी कहें ।

﴾2﴿ इस लिये ग़रीबों में ख़ैरात बांटना कि वोह इस के गिर्द ह़ाजी साह़िब ! सेठ साह़िब ! कह कर हुजूम करें, इस की मिन्नत समाजत करें, इस के सामने गिड़-गिड़ाएं ।

﴾3﴿ मरीज़ों, दुखियारों और सैलाब ज़दों वग़ैरा की ख़िदमत के लिये इस लिये भागदौड़ करे कि लोग मुसीबत ज़दों का ख़ैर ख़्वाह या बेहतरीन समाजी कारकुन कहें ।

रियाकारी के मु-तअ़ल्लिक़ मु-तफ़र्रक़ 32 मिसालें

﴾1﴿ फ़न्ने क़िराअत इस लिये सीखना कि लोग "क़ारी साह़िब" कहें ।

﴾2﴿ क़ारी साह़िब का इज्तिमाआ़त में ह़ाज़िरीन की मिक़्दार के मुत़ाबिक़ (और इमाम साह़िब का जहरी नमाज़ों में मुक़्तदियों की क़िल्लत व कसरत को मद्दे नज़र रखते हुए) तज्वीद के क़वाइद की रिआ़यत और आवाज़ के उतार चढ़ाव में कमी बेशी करने से मक़्सूद ह़ाज़िरीन की ख़ुशनूदी हो । (काश ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये सिर्री नमाज़ों में भी ह़स्बे ज़रूरत तज्वीद के क़वाइद की रिआ़यत की आ़दत बने)

﴾3﴿ अपने लिये आ़जिज़ी के अल्फ़ाज़ म-सलन फ़क़ीर, गुनहगार, नाकारा वग़ैरा इस लिये बोलना या लिखना कि लोग मुन्कसिरुल मिज़ाज समझें, आ़जिज़ी की

ता'रीफ़ करें। (दिल की ताईद के बिग़ैर अपने लिये ऐसे अल्फ़ाज़ की अदाएगी मुना-फ़क़त भी है)

﴾4﴿ लोगों से इस लिये पुर तपाक त़रीक़े से मिलना कि मिलन-सार और बा अख़्लाक़ कहलाए।

﴾5﴿ दुआ़ वग़ैरा में सब के सामने रोना आ जाए तो इस लिये आंसू पोंछते रहना कि लोगों पर येह **तअस्सुर** क़ाइम हो कि येह रियाकारी से बचने के लिये जल्दी जल्दी आंसू पोंछ लेता है।

﴾6﴿ लोगों के दिलों में जगह बनाने के लिये इस त़रह़ के जुम्ले कहना : मुझे गुनाहों से बड़ा डर लगता है, मुझे बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ रहता है, हाए ! अंधेरी क़ब्र में क्या होगा ! आह ! क़ियामत में ह़िसाब कैसे दूंगा !

﴾7﴿ लोगों पर अपनी दुन्या से ला तअ़ल्लुक़ी और पारसाई की छाप डालने के लिये कहना : मैं तो मालदारों और शख़्सिय्यात से मिलने से बचता हूं (अगर येह फ़िक़्रा मालदार वग़ैरा को अपने से ह़क़ीर समझ कर कह रहा है तो तकब्बुर की आफ़त में भी फंसा)

﴾8﴿ किसी की मुसीबत का सुन कर इस लिये मुंह बनाना या हम दर्दाना जुम्ले कहना कि लोग रह़्म दिल कहें। (अलबत्ता दुखियारे मुसल्मान की दिलजूई की निय्यत से रिज़ाए इलाही के लिये उस के सामने ऐसा करना इबादत और बाइ़से सवाबे आख़िरत है)

﴾9﴿ हाथ में इस लिये तस्बीह़ रखना, और नुमायां करना, या लोगों के सामने इस लिये होंट हिला हिला कर या उन्हें आवाज़ पहुंचे इस त़रह़ दुरूद व अज़्कार पढ़ना कि नेक समझा जाए।

﴾10﴿ **जल्वत** में (या'नी लोगों के सामने) खाते पीते, उठते बैठते वग़ैरा वग़ैरा मवाक़ेअ़ पर सुन्नतों का अच्छी त़रह़ ख़याल रखना ताकि लोग सुन्नतों पर अ़मल करने वाला क़रार दें। (काश ! अकेले में भी खाने पीने और दीगर अफ़्आ़ल में ख़ूब सुन्नतें अपनाने का ज़ेह्न बन जाए)

﴾11﴿ दा'वत में या दूसरों की मौजू-दगी में इस लिये कम खाना कि देखने वाले इसे **मुत्तबेए सुन्नत** (या'नी सुन्नत की पैरवी करने वाला) और **क़लीलुल ग़िज़ा** (या'नी कम खाने वाला) तसव्वुर करें। (अफ़्सोस ! येह रियाकार जब घर में या बे तकल्लुफ़ दोस्तों के दरमियान हो

तो दूसरों का हिस्सा भी चट कर जाए)

﴾12﴿ **किसी** को अपने नेक काम बता कर येह कहना कि "आप किसी और को मत बताना।" ताकि सामने वाला **मु-तअस्सिर** हो कि बहुत **मुख़्लिस** शख़्स है कि किसी पर अपना नेक अ़मल ज़ाहिर नहीं करना चाहता।

﴾13﴿ अपने नाम के साथ **हा़फ़िज़** बोलने या लिखने का इस लिये एहतिमाम करना कि लोग ब नज़रे तह़सीन देखें مَاشَآءَاللّٰه बोलें, एह़तिरामन हा़फ़िज़ साहिब या हा़फ़िज़ जी कहें, दुआ़ओं की इल्तिजाएं करें। (अगर रिया की निय्यत न हो तो हा़फ़िज़ का अपने मुंह से ख़ुद को हा़फ़िज़ बोलना लिखना मन्अ़ नहीं)

﴾14﴿ **र-मज़ानुल मुबारक** का ए'तिकाफ़ करना या सब के सामने इस लिये तिलावत करना, या ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ़एं मांगना कि लोग नेक आदमी समझें।

﴾15﴿ **र-मज़ानुल मुबारक** का इस लिये ए'तिकाफ़ करना कि मुफ़्त में स-ह़री और इफ़्तारी की तरकीब बन जाए।

﴾16﴿ मौत मय्यित के मौक़अ़ पर भागदौड़ करना नीज़ जनाज़े के जुलूस और तदफ़ीन वग़ैरा में आगे आगे रहना ताकि लोगों में नुमायां हो, अहले मय्यित **मु-तअस्सिर** हों, उन की नज़र में अच्छा इन्सान बने।

﴾17﴿ नेक कामों में ख़ूब बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेना ताकि लोग नेकियों का ह़रीस समझें।

﴾18﴿ अपने **दीनी कारनामे** इस लिये बयान करना कि सुनने वाले इसे दीन का बहुत बड़ा **ख़ादिम** तसव्वुर करें और इस की **अ़-ज़-मतों** के मो'तरिफ़ हों। म-सलन अपने फ़ज़ाइल का क़ाइल करने के लिये यूं कहना : मुझे तो 15 साल हो गए नेकी की दा'वत आ़म करते हुए, मैं इतने अ़र्से तक दा'वते इस्लामी की फुलां फुलां **ज़िम्मेदारी** पर फ़ाइज़ रहा, मैं ने इतने अ़लाक़ों बल्कि मुल्कों में जा कर **म-दनी काम** किया, मैं ने सेंकड़ों को दाढ़ी रखवाई, इ़मामे सजवाए, म-दनी काम करने पर आमादा किया, उन की **तरबिय्यत** की, फुलां फुलां ज़िम्मेदारान को भी मैं म-दनी माह़ोल में लाया हूं वग़ैरा वग़ैरा।

﴾19﴿ मुता-लए के दौरान कोई हिक्मत भरा उ़म्दा म-दनी फूल मिल गया तो दूसरों से पोशीदा रख कर बड़े इज्तिमाअ़ में इस लिये बयान करना ताकि वाह वाह سُبْحٰنَ اللّٰه का शोर हो, कसीर अफ़राद पर अपनी कसरते मा'लूमात का सिक्का बैठे और ता'रीफ़ हो ।

﴾20﴿ अपनी **फ़ी सबीलिल्लाह** इमामत या दीनी तदरीस का इस लिये दूसरों से तज़्किरा करना कि लोग इस से **मु-तअस्सिर** हों, क़द्र की निगाह से देखें ।

﴾21﴿ बड़ी रात या इज्तिमाआ़त वग़ैरा में इस लिये ख़ूब लहजे के साथ अज़ान देना कि लोग आवाज़ व अन्दाज़ की वाह वाह करें ।

﴾22﴿ ख़रीदारी करते वक़्त या उजरत पर किसी से कोई काम करवाते वक़्त अपने दीनी मन्सब म-सलन दीनी तालिबे इल्म या हाफ़िज़े क़ुरआन या इमामे मस्जिद या **मुअज़्ज़िन** या मुबल्लिग़ वग़ैरा होने का इस लिये इज़्हार करना कि वोह रिआ़यत कर दे या फिर पैसे ही न ले ।

﴾23﴿ किताब या रिसाला लिखते वक़्त इस निय्यत से इब्रत अंगेज़ रिवायात व ख़ूब दिलचस्प हिकायात और उ़म्दा उ़म्दा म-दनी फूल शामिल करना कि पढ़ने वाले दादो तह्सीन देने पर मजबूर हो जाएं ।

﴾24﴿ अपने हज व उ़म्रे की ता'दाद, तिलावते क़ुरआन की यौमिया मिक़्दार, **र-जबुल मुरज्जब व शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के मुकम्मल और दीगर नफ़्ली रोज़ों, नवाफ़िल, दुरूद शरीफ़ की कसरत वग़ैरा का इस लिये इज़्हार करना कि वाह वाह हो और लोगों के दिलों में एहतिराम पैदा हो ।

﴾25﴿ छोटी बड़ी दीनी किताबों के नामों के साथ या बिग़ैर नाम बताए अपने कस्रते मुता-लआ़ का इज़्हार करना ताकि इस्लामी भाई इल्मे दीन का शैदाई समझें, दूसरों को इस की मिसाल दें ।

﴾26﴿ इस लिये हज करना या अपने हज का इज़्हार करना कि लोग हाजी कहें, मुलाक़ात के लिये हाज़िर हों, गिड़गिड़ा कर दुआ़ओं की इल्तिजाएं करें, गजरा पहनाएं, तहाइफ़ वग़ैरा पेश करें । (अगर अपनी इ़ज़्ज़त करवाना या तोहफ़े वग़ैरा हासिल करना मक़्सूद न हो बल्कि तह्दीसे

ने'मत वगै़रा अच्छी अच्छी निय्यतें हों तो हज व उ़म्रे का इज़्हार करने अ़ज़ीज़ों और रिश्तेदारों को जम्अ़ करने, "महफ़िले मदीना" सजाने की मुमा-न-अ़त नहीं बल्कि कारे सवाबे आख़िरत है)

﴾27﴿ सादाते किराम का इस लिये एह़तिराम बजा लाए, दस्त बोसी वगै़रा करे कि सय्यिदों के दिलों में इ़ज़्ज़त पैदा हो या लोग मुह़िब्बे अहले बैत कहें।

﴾28﴿ मज़ारात की इस लिये ब कसरत ज़ियारतें करे, हर जगह उ़र्सों में पेश पेश रहे कि लोग औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का आ़शिक़ कहें।

﴾29﴿ सरकारे गौ़से आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का इस लिये बार बार तज़्किरा करे या ग्यारहवीं शरीफ़ की नियाज़ करे या आप की मन्क़बत में ख़ूब झूमे कि लोग गौ़से पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه दीवाना समझें।

﴾30﴿ अपने पीर की इस लिये ख़ूब ख़िदमत करे, लोगों के सामने इन ख़िदमात का तज़्किरा करे, उन के क़रीब नज़र आए ताकि इसे लोग अपने मुर्शिद का मुक़र्रब, मन्ज़ूरे नज़र और ख़ादिमे ख़ास समझें, इ़ज़्ज़त करें, हाथ चूमें, नुमायां जगह पर बिठाएं, दुआ़ओं की इल्तिजाएं करें, तोह़फ़े नज़राने पेश करें, पीर साहिब के लिये सिफ़ारिशी बनाएं।

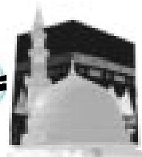
﴾31﴿ पीरो मुर्शिद की बची हुई चीज़ दूसरों की मौजू-दगी में इस लिये झटपट खाए कि लोग "तबर्रुक का ह़रीस" तसव्वुर करें। (और अगर कोई देखता न हो तो तबर्रुक को हाथ भी न लगाए या दूसरों की त़रफ़ सरका दे)

﴾32﴿ दूसरों की मौजू-दगी में इस लिये चुपचाप रहना या इशारे से या लिख कर गुफ़्त-गू करना कि लोग सन्जीदा, ख़ामोश त़बीअ़त और ज़बान का कुफ़्ले मदीना लगाने वाला तसव्वुर करें। (ख़्वाह घर में और बे तकल्लुफ़ दोस्तों में ख़ूब क़ह्क़हे लगाता और **शेरे बबर** की त़रह़ दहाड़ता या'नी चीख़ता हो)

रिया की ता'रीफ़ के तहत मज़्कूरा मिसालों पर ग़ौर कीजिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा मिसालों को ज़ेहन में रखते हुए **रियाकारी की ता'रीफ़** पर एक बार फिर नज़र डाल लीजिये जैसा कि **बहारे शरीअ़त** जिल्द 3 सफ़्हा 629 पर है : **"रिया** या'नी दिखावे के लिये (नेक) काम करना और **"सुम्आ़"** या'नी इस लिये (नेक) काम करना कि लोग सुनेंगे और अच्छा जानेंगे, येह दोनों चीज़ें बहुत बुरी हैं, इन की वजह से इबादत का सवाब नहीं मिलता बल्कि गुनाह होता है और येह शख़्स मुस्तह़िक़े अ़ज़ाब होता है।" **रियाकारी की ता'रीफ़** में येह भी शामिल है कि लोगों पर अपनी इबादत गुज़ारी की धाक बिठाना, अपनी ता'रीफ़, वाह वाह और इ़ज़्ज़त चाहना या उस नेक काम से सूटपीस, या रक़म का लिफ़ाफ़ा या खाना या मिठाई या किसी क़िस्म के नज़राने का हुसूल मक़्सूद होना। नीज़ पेश कर्दा मिसालों में **"हुब्बे जाह"** या'नी "इ़ज़्ज़त व शोहरत की **मह़ब्बत"** भी मौजूद है। क्यूं कि रियाकारी का एक बहुत बड़ा सबब "हुब्बे जाह" है।

रियाकारी की मिसालों के बारे में एक ज़रूरी वज़ाह़त : याद रहे ! रियाकारी की येह तमाम मिसालें पढ़ने सुनने वाले के अपने आप में **रियाकारी** तलाश करने के लिये हैं, किसी दूसरे को रियाकार क़रार देने के लिये नहीं क्यूं कि रियाकारी का तअ़ल्लुक़ दिल से है और किसी के दिल के ह़ालात पर हर कोई मुत्तलअ़ नहीं हो सकता। लिहाज़ा इन मिसालों पर क़ियास करते हुए किसी मुसल्मान पर **बद गुमानी** न की जाए, बद गुमानी ह़राम और जहन्नम में ले वाला काम है और इसी त़रह़ किसी के बारे में तजस्सुस (या'नी गुनाह की तलाश) करना, उस की पर्दा दरी करना (या'नी ऐ़ब खोलना) और उस में येह (या'नी रियाकारी की) अ़लामात तलाश करना ताकि उस को बदनाम किया जाए **येह भी ह़राम है।**

ख़ुद को रियाकारी के अ़ज़ाब से डराइये ! : बराए करम ! अपनी नेकियों को टटोलिये कि कहीं इस में **रिया** तो छुपी हुई नहीं ! क्यूं कि **रिया** च्यूंटी की चाल से भी बारीक चाल के ज़रीए अ़-मले ख़ैर में दाख़िल हो जाती है, ह़क़ीक़त येह है कि "रिया" में जो "लज़्ज़त" है वोह न उ़म्दा ग़िज़ाओं में है न ही


माल व दौलत की कसरत में, इस से बचना बहुत बहुत बहुत ज़रूरी है कि येह "लज़्ज़त" जहन्नम में पहुंचाने वाली है लिहाज़ा अगर अपने किसी नेक अ़मल में **रिया** का शाइबा (या'नी शक) भी पाएं तो तौबा करें और अपने आप को डराएं कि **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : "बेशक **जहन्नम** में एक वादी है जिस से जहन्नम रोज़ाना चार सो मर्तबा **पनाह** मांगता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह वादी उम्मते मुहम्मदिय्यह عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के उन **रियाकारों** के लिये तय्यार की है जो कुरआने पाक के **हाफ़िज़, ग़ैरुल्लाह** के लिये **स-दक़ा** करने वाले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घर के **हाजी** और राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में **निकलने** वाले होंगे।" **(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج١٢ص١٣٦حديث ١٢٨٠٣)** अगर कोई इस्लामी भाई या इस्लामी बहन खुद में मज़्कूरा मिसालों में से कोई मिसाल पाए तो लाज़िमन **रियाकारी का इलाज** करे मगर येह न हो कि अस्ल नेकियों और सआ़दत मन्दियों ही को छोड़ दे क्यूं कि नाक पर मख्खी बैठ जाए तो मख्खी को उड़ाया जाता है नाक नहीं काटी जाती।

बचा ले रिया से बचा या इलाही
तू इख़्लास कर दे अ़ता या इलाही

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 166 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "रियाकारी" का मुता-लआ़ फ़रमाइये)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकार की अ़लामात : **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे खुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इर्शाद फ़रमाया : **रियाकार** की तीन अ़लामतें हैं :




《1》 **तन्हाई** में हो तो अ़मल में **सुस्ती** करे और लोगों के सामने हो तो **चुस्ती** दिखाए 《2》 **ता'रीफ़** की जाए तो अ़मल में **इज़ाफ़ा** कर दे और 《3》 **मज़म्मत** की जाए तो अ़मल में **कमी** कर दे। (اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْکَبائِر ج ۱ ص ۸۶)

लोगों में अपनी मज़म्मत करना भी रिया की अ़लामत है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना ख़्वाजा ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जो शख़्स किसी मज्मअ़ में अपनी **मज़म्मत** करता (या'नी ख़ुद को गुनहगार, बदकार, सियाह कार वग़ैरा कहता) है वोह दर ह़क़ीक़त अपनी **ता'रीफ़** करता है (कि लोग ऐसे शख़्स को मु-तवाज़ेअ़ और मुन्कसिरुल मिज़ाज कह कर उस की आ़जिज़ी की ता'रीफ़ करते हैं) और येह भी **रिया** की अ़लामतों में से एक **अ़लामत** है। (تَنبِیهُ الْمُغتَرّین ص ۲٤)

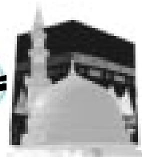
याद रहे ! अपने लिये आ़जिज़ी के अल्फ़ाज़ का इस्ति'माल उस सूरत में रियाकारी है जब कि **रियाकारी** की निय्यत हो और अब येह गुनाह है और इसी त़रह़ अगर सिर्फ़ ज़बान से आ़जिज़ी के अल्फ़ाज़ कह रहा हो और दिल में येह कैफ़िय्यत न हो तो मुना-फ़क़त है और येह भी गुनाह है।

रोज़े के बारे में न पूछो : **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : अपने भाई से उस के **रोज़े** के बारे में न पूछो, क्यूं कि अगर वोह कहता है कि मैं रोज़ादार हूं तो उस का नफ़्स **ख़ुश** होगा और अगर कहे कि मैं रोज़ादार नहीं हूं तो उस का नफ़्स **ग़मगीन** होगा और येह दोनों **रिया की अ़लामतों** में से हैं। (تَنبِیهُ الْمُغتَرّین ص ۲٤)

ज़रूरतन रोज़े का इज़्हार कर दीजिये : **ज़रूरतन** रोज़े के इज़्हार में मुज़ा-यक़ा नहीं जैसा कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : जब किसी को दा'वत दी जाए और वोह रोज़े से हो तो उसे चाहिये कि कह दे : **मैं रोज़ादार हूं।** (صَحیح مُسلِم حدیث ۱۱۵۰ ص ۵۷۹)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि नफ़्ली रोज़े का छुपाना बेहतर है






मगर चूंकि यहां (म-सलन किसी के घर जाना हुवा हो तो वहां) छुपाने से या साहिबे ख़ाना के दिल में अ़दावत पैदा होगी या रन्जो ग़म, (रिज़ाए इलाही की निय्यत से) मुसल्मान के दिल को खुश करना भी इबादत है इस लिये रोज़े के इज़्हार का हुक्म दिया गया ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 199)

नेकी के सबब चीजें सस्ती मिलना : **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन **ह़जर मक्की शाफ़ेई** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی **रियाकारी** की अक़्साम बयान करते हुए फ़रमाते हैं : इस से भी बढ़ कर **ख़फ़ी** (या'नी पोशीदा) **रिया** येह है कि (अपनी नेकियों पर) न तो लोगों के आगाह होने की ख़्वाहिश हो और न ही इबादत के ज़ाहिर होने पर खुशी (पैदा होती) हो, अलबत्ता इस बात पर मसर्रत हो कि मुलाक़ात के वक़्त लोग सलाम में पहल करें और उस से ख़न्दा पेशानी से मिलें, नीज़ इस की ता'रीफ़ करें और इस की ज़रूरिय्यात पूरी करने में जल्दी करें, ख़रीदो फ़रोख़्त में इस की रिआ़यत करें (म-सलन वोह कुछ ख़रीदना चाहे तो उसे सस्ता दें या मुफ़्त पेश कर दें) और जब वोह लोगों के पास आए तो वोह इस के लिये जगह छोड़ दें । (उस को एह़तिराम की जगह बिठाएं, दुआ़ओं के लिये इल्तिजाएं करें, उस के लिये आवाज़ पस्त रखें, हाथ जोड़ें, गिड़-गिड़ाएं वग़ैरा) जब कोई शख़्स इन मुआ़-मलात में कोताही करे तो येह बात अपनी पोशीदा नेकियों को बड़ा समझने के सबब इस के दिल पर गिरां गुज़रे । गोया उस का नफ़्स उस इबादत के मुक़ाबले में अपना एह़तिराम चाहता है, यहां तक कि अगर येह फ़र्ज़ कर लिया जाए कि इस ने येह नेकियां नहीं कीं तो इस का नफ़्स इस एह़तिराम की ख़्वाहिश भी न रखता । (اَلزَّوَاجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِر ج ۱ ص ۹۳)

मुख़्लिसीन का रिया से बचने का अन्दाज़ : **मज़ीद** फ़रमाते हैं : लिहाज़ा मुख़्लिस बन्दे हमेशा **ख़फ़ी** (या'नी पोशीदा) **रिया** से डरते रहते हैं और दीगर लोग जितनी कोशिश अपने गुनाह छुपाने में करते हैं येह उन से ज़ियादा अपनी नेकियां छुपाने के ह़रीस होते हैं और इस की वजह सिर्फ़ येह है कि येह लोग अपनी नेकियों को ख़ालिस करना चाहते हैं ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन लोगों के सामने इन्हें अज्र अ़ता फ़रमाए क्यूं कि इन्हें इस बात पर यक़ीन है कि





अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ सिर्फ़ वोही आ'माल क़बूल फ़रमाता है जो **इख़्लास** के साथ किये गए हों और वोह येह भी जानते हैं कि क़ियामत के दिन लोग सख़्त मोह़ताज और भूके होंगे और इन के माल व औलाद इन्हें कुछ काम न आएंगे सिवाए इस के कि जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में क़ल्बे सलीम (या'नी गुनाहों से मह़फ़ूज़ दिल) ले कर ह़ाज़िर होगा । **(اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْکَبائِر ج۱ص۹۳)**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कहीं हम रियाकार तो नहीं ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि **दियानत दारी** से ख़ुद पर ग़ौर करें कि कहीं हम **तन्हाई** में इ़बादत के मुआ़-मले में **सुस्ती** और लोगों के सामने **चुस्ती** का मुज़ा-हरा तो नहीं करते ? कहीं हम नेकी करने के बा'द इस का लोगों पर **बिला ज़रूरत इज़्हार** तो नहीं कर दिया करते ? फिर अगर कोई इस पर हमारी **ता'रीफ़** कर दे तो "फूल कर" अ़मल में **इज़ाफ़ा** तो नहीं कर देते ? और **ता'रीफ़** न होने की सूरत में कहीं हम **ग़मगीन** तो नहीं हो जाते और उस अ़मल में **कमी** तो नहीं आ जाती ? कहीं ऐसा तो नहीं कि हमें लोगों के **सामने** नेकी करने में बड़ी **लज़्ज़त** मिलती हो मगर तन्हाई में **मज़ा** न आता हो ? कहीं हम लोगों के सामने (ख़ुद को सियाह कार, गुनाहगार, मुजरिम, फ़क़ीर, ह़क़ीर और आ़जिज़ व मिस्कीन वग़ैरा कह कर) अपनी **मज़म्मत** उन्हें **मु-तअस्सिर** करने के लिये तो नहीं करते ? हम कहीं अपने मुबल्लिग़ या सुन्नतों भरे म-दनी हुल्ये वग़ैरा से फ़ाएदा उठाते हुए अपने से **मु-तअस्सिर** होने वाले दुकान दारों से इस लिये तो सौदा नहीं लेते कि वोह हमें मुफ़्त में या सस्ते दामों दे ? अगर इन सुवालात के जवाबात **हां** में आएं तो फ़ौरन से पेशतर **तौबा** कर लीजिये और हुसूले **इख़्लास** की कोशिशों में लग जाइये कि कहीं ऐसा न हो कि तौबा से पहले मौत आ जाए और **रियाकारी** के सबब दोज़ख़ में डाल दिया जाए ।

रियाकारी से तौबा की ब-र-कत : मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان लिखते हैं : ख़याल रहे कि **रिया** से इ़बादत **ना जाइज़** नहीं

हो जाती (या'नी ऐसा नहीं कि रियाकारी से नमाज़ पढ़ी तो उसे तर्के नमाज़ समझा जाए) बल्कि **ना मक़्बूल** होने का अन्देशा होता है अगर **रियाकार** आख़िर में रिया से (सच्ची) **तौबा** करे तो उस पर रिया की इबादत की **क़ज़ा** वाजिब नहीं बल्कि इस तौबा की **ब-र-कत** से गुज़श्ता **ना मक़्बूल रिया की इबादात भी क़बूल हो जाएंगी ।** मुत़्लक़न **रिया** से ख़ाली होना बहुत **मुश्किल** है **कोई शख़्स रिया के अन्देशे से इबादात न छोड़े बल्कि रिया से बचने की दुआ़ करे ।** (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 127)

तेरे रह़्मो करम पर आस मैं ने बांध रख्खी है
बड़ी उम्मीद है आक़ा ! करम रोज़े जज़ा होगा

(वसाइले बख़्शिश, स. 188)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

म-रज़े रिया का इलाज कीजिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम अपने दिल में इस **म-रज़े रिया की अ़लामात** मह़सूस करें तो बा'दे तौबा **इलाज** में देर नहीं करनी चाहिये । जब हम अपने **बात़िन** को **पाकीज़ा** करने की कोशिश करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारा ज़ाहिर भी **सुथरा** हो जाएगा । **शहन्शाहे मदीना,** क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जो अपने **बात़िन की इस्लाह़** करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के **ज़ाहिर की** (भी) **इस्लाह़** फ़रमा देगा ।" **(اَلْجامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطی ص٥٠٨ حدیث ٨٣٣٩)**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"इख़्लास का नूर" के दस ह़ुरूफ़ की निस्बत से रियाकारी के 10 इलाज

﴾1﴿ **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ के ज़रीए़ मदद त़लब कीजिये ﴾2﴿ रियाकारी के नुक़्सानात पेशे नज़र रखिये ﴾3﴿ रिया के अस्बाब का ख़ातिमा कीजिये ﴾4﴿ अपने आ'माल में इख़्लास पैदा कीजिये ﴾5﴿ निय्यत की ह़िफ़ाज़त कीजिये ﴾6﴿ दौराने इबादत शैत़ानी वस्वसों से बचिये





《7》 तन्हाई हो या हुजूम यक्सां अ़मल कीजिये 《8》 नेकियां छुपाइये 《9》 सिर्फ़ अच्छी सोह़बत में रहिये 《10》 अवरादो वज़ाइफ़ का मा'मूल बना लीजिये। अब इन मुआ़-लजात की वज़ाह़त मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

《पहला इलाज》 अल्लाह तआ़ला से दुआ़ के ज़रीए मदद त़लब कीजिये

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **है :** اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِن **या'नी** दुआ़ मोमिन का हथियार है। (اَلْمُسْتَدرَك لِلْحاكِم ج۲ ص ۱۶۲ حديث۱۸۰۰) शैत़ान के ख़िलाफ़ जंग में येह हथियार इस्ति'माल करते हुए ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार के दरबारे करम बार में यूं **दुआ़** कीजिये : या रब्बे मुस्त़फ़ा ! मुझे **रियाकारी** की बीमारी से **शिफ़ा** अ़त़ा फ़रमा, मेरी ख़ाली झोली **इख़्लास** की ला ज़वाल दौलत से भर दे। मेरा सामना उस दुश्मन (या'नी शैत़ान) से है जो मुझे देखता है मगर ख़ुद दिखाई नहीं देता लेकिन तू उस को **मुला-ह़ज़ा** फ़रमा रहा है, ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! मुझे इस दुश्मन के **मक्रो फ़रेब** से बचा ले, ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि **लोगों की नज़र** में तो मेरा ह़ाल बहुत **अच्छा** हो, वोह मुझे नेक और परहेज़ गार समझते रहें मगर तेरे दरबार में **सज़ा का ह़क़दार** ठहरूं।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

《दूसरा इलाज》 रियाकारी के नुक़्सानात पेशे नज़र रखिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि **रियाकारी** की आफ़ात और इस के नुक़्सानात अपने पेशे नज़र रखें क्यूं कि आदमी का दिल किसी चीज़ को उस वक़्त तक ही **पसन्द** करता है जब तक वोह उसे नफ़्अ़ बख़्श नज़र आती है मगर जब उसे उस शै




के **नुक़्सान देह** होने का पता चलता है तो वोह उस से बचता है म-सलन किसी इस्लामी भाई को लज़्ज़त और मिठास की वजह से **शहद** बहुत पसन्द हो लेकिन अगर उसे येह बता दिया जाए कि येह **शहद** जिसे तुम पीने जा रहे हो, इस में **ज़हर** मिला हुवा है तो वोह उस में मौजूद लज़्ज़त व मिठास नहीं **ज़हर** को देखेगा और उसे हरगिज़ हरगिज़ **नहीं पियेगा ।** इसी त़रह़ लोगों पर अपना नेक अ़मल **ज़ाहिर** करने और उन की त़रफ़ से **वाह वाह** होने में यक़ीनन नफ़्स को बड़ी **लज़्ज़त** मिलती है बल्कि उस लज़्ज़त के सबब इबादत की मशक़्क़त भी आसान हो जाती है, लेकिन हम इस लज़्ज़त के बजाए **रियाकारी** के ज़रीए होने वाले **ज़हर से भी ख़त़रनाक नुक़्सानात** ज़ेह्न में रखें तो इस से बचना हमारे लिये क़दरे आसान हो जाएगा क्यूं कि **ज़हर** का नुक़्सान सिर्फ़ **दुन्या** की ह़द तक है जब कि "रिया" **आख़िरत** के लिये तबाह कार है । क्या **रियाकारी** का येही नुक़्सान कुछ कम है कि नेक अ़मल में **मशक़्क़त** उठाने के बा वुजूद सवाब से **मह़रूमी** रहे ! उस **मज़दूर** का क्या ह़ाल होगा जो सारा दिन धूप में **पसीना** बहाए और जब **मज़दूरी** मिलने का वक़्त आए तो उस की मज़दूरी येह कह कर रोक ली जाए कि तुम ने फ़ुलां फ़ुलां **ग़-लत़ी** की है इस लिये तुम्हें मज़दूरी नहीं मिलेगी । मगर आह ! **रियाकार** तो सवाब से **मह़रूमी** के साथ साथ अ़ज़ाबे नार का भी ह़क़दार है, वोह इन्सान कितना **नादान** है कि जिस शै से वोह लाखों कमा सकता है उसे सिर्फ़ वक़्ती ख़ुशी की ख़ात़िर मुफ़्त के दामों बेच दे, बिल्कुल इसी त़रह़ वोह **इबादत गुज़ार** कितना ना समझ है जो इबादत के ज़रीए **ख़ालिक़** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब चाहने के बजाए **मख़्लूक़** को अपना बनाने की कोशिश करे, ऐसे रियाकार ने गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **ना फ़रमानी** गवारा कर ली और इस के बदले लोगों से उन की **मह़ब्बत** चाही, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से होने वाली **मज़म्मत** के बदले लोगों की मिद्ह़त (या'नी ता'रीफ़) का त़ालिब हुवा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **नाराज़ी** के बदले लोगों की **रिज़ा** व ख़ुशनूदी त़लब की और बाक़ी रहने वाली **जन्नती ने'मतें** फ़ानी दुन्या के बदले बेच डालीं ! फिर सब लोगों को राज़ी रखना **दूध की नहर** खोदने के मु-तरादिफ़ है कि अगर कुछ लोग एक बात से **ख़ुश** होते हैं तो उसी बात से **नाराज़** होने वालों की भी एक ता'दाद होती है ।

अ़ता कर दे इख़्लास की मुझ को ने'मत
न नज़्दीक आए रिया या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

दिखावे के लिये अ़मल करने वाले की मिसाल : लोगों को दिखाने और सुनाने के लिये अ़मल करने वाले की **मिसाल** उस शख़्स की त़रह़ है जो अपनी जेब में ख़ूब कंकरियां भर कर उसे नुमायां करते ख़रीदारी के लिये बाज़ार चला गया, जब लोगों ने उस की उभरी हुई जेब देखी तो ह़ैरत से कहने लगे : ''वाह भई ! देखो तो सही ! इस की जेब किस क़दर रक़म से भरी हुई है !'' मगर उसे लोगों की इस **वाह वाह** के इ़लावा कोई फ़ाएदा नहीं मिलेगा क्यूं कि वोह जूं ही दुकान दार को दाम अदा करने के लिये अपनी जेब से रक़म के बदले पथ्थर निकालेगा, **ज़लीलो रुस्वा** हो जाएगा। इसी त़रह़ **दिखाने** और **सुनाने** के लिये अ़मल करने वाले रियाकार को लोगों की त़रफ़ से बोले जाने वाले **ता'रीफ़ी कलिमात** के इ़लावा कोई नफ़्अ़ ह़ासिल नहीं होगा और न ही उसे क़ियामत के दिन कोई **सवाब** मिलेगा। (اَلزَّوَاجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِر ج ١ ص ٨٦ بِتَصَرُّفٍ)

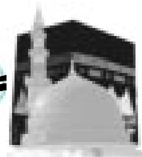
बड़ी कोशिशें की गुनह छोड़ने की
रहे आह ! नाकाम हम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

﴾तीसरा इलाज﴿ रिया के अस्बाब का ख़ातिमा कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर बीमारी का कोई न कोई **सबब** होता है अगर सबब मिटा दिया जाए तो बीमारी भी **रुख़्सत** हो जाती है। इसी त़रह़ **रियाकारी** के भी बुन्यादी त़ौर पर **तीन अस्बाब** हैं, अगर इन तीन चीज़ों से जान छुड़ा ली जाए तो


اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ रियाकारी से बचना बेहद **आसान** हो जाएगा । वोह तीन अस्बाब येह हैं : **(1) हुब्बे जाह या'नी शोहरत की ख़्वाहिश (2) मज़म्मत का ख़ौफ़ और (3) माल व दौलत की ह़िर्स ।**

《1》 शोहरत की ख़्वाहिश : हुब्बे जाह की ता'रीफ़ है, "शोहरत व इ़ज़्ज़त की ख़्वाहिश करना ।" **हुब्बे जाह** की मज़म्मत करते हुए **हुज्जतुल इस्लाम** इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : शोहरत का मक़्सद लोगों के दिलों में मक़ाम बनाना है और येह ख़्वाहिश हर फ़साद की जड़ है । हमें चाहिये कि "हुब्बे जाह" या'नी **शोहरत की ख़्वाहिश** पर क़ाबू पाने के लिये अह़ादीसे मुबा-रका में वारिद इस के नुक़्सानात पर ग़ौरो फ़िक्र करें, चुनान्चे इस ज़िम्न में **चार फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-हज़ा फ़रमाइये : 《1》 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता़अ़त को बन्दों की त़रफ़ से की जाने वाली **ता'रीफ़ की मह़ब्बत** से मिलाने से बचते रहो, कहीं तुम्हारे आ'माल **बरबाद** न हो जाएं (فردوس الاخبار للديلمى ج١ ص٢٢٣ حديث١٠٦٧) 《2》 माल और मर्तबे की **मह़ब्बत** मोमिन के दिल में **मुना-फ़क़त** को इस त़रह़ बढ़ाती है जैसे पानी सब्ज़ा उगाता है (اِحياءُالعلوم ج٣ ص٣٤٢٠٢٨٦) 《3》 दो **भूके भेड़िये** बकरियों के रेवड़ में इतनी **तबाही** नहीं मचाते जितनी तबाही हुब्बे माल व जाह (या'नी माल व दौलत और इ़ज़्ज़त व शोहरत की मह़ब्बत) मुसल्मान के दीन में मचाती है (تِرمِذی ج ٤ ص١٦٦ حديث٢٣٨٣) 《4》 अपनी ता'रीफ़ पसन्द करना आदमी को अन्धा बहरा कर देता है । (فردوس الاخبارللديلمى ج١ ص٣٤٧ حديث٢٠٤٨)

यूं फ़िक्रे मदीना कीजिये : **कोशिश** कर के इस त़रह़ ग़ौरो ख़ौज़ (फ़िक्रे मदीना) कीजिये : लोगों का मेरी **ता'रीफ़** में चन्द जुम्ले बोल देना या मुझे ता'रीफ़ी निगाहों से देखना, या शोहरत मिल जाना नफ़्स के लिये यक़ीनन बाइ़से **लज़्ज़त** है मगर लोगों की त़रफ़ से की जाने वाली ता'रीफ़ मुझे बरोज़े ह़श्र बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में **काम्याबी व कामरानी** नहीं दिलवा सकती क्यूं कि येह ता'रीफ़ें करने वाले लोग तो खुद ख़ौफ़े इ़ताब से लरज़ा बर अन्दाम होंगे ।




इन के **ता'रीफ़** करने से न मेरा **रिज़्क़** बढ़ेगा न **उम्र** में इज़ाफ़ा होगा और न ही आख़िरत में कोई **मक़ाम व मर्तबा** नसीब हो सकेगा, लिहाज़ा ऐसे लोगों की त़रफ़ से की जाने वाली **ता'रीफ़ की ख़्वाहिश का क्या फ़ाएदा !** मैं क्यूं इन लोगों को **दिखाने** के लिये नेक अ़मल करूं बल्कि मैं सिर्फ़ **अपने रब** عَزَّوَجَلَّ **की रिज़ा के लिये इबादत करूंगा।** اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

अपनी झूटी ता'रीफ़ पसन्द करना ह़राम है : इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 21 सफ़ह़ा 597 पर लिखते हैं : अगर (कोई आदमी) अपनी **झूटी ता'रीफ़** को दोस्त रखे (या'नी पसन्द करे) कि लोग उन फ़ज़ाइल से उस की सना (या'नी ता'रीफ़) करें जो (फ़ज़ीलत व ख़ूबी) इस में नहीं, जब तो सरीह़ **ह़रामे क़त़ई** है। **क़ालल्लाहु** (या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया)

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ یَفْرَحُوْنَ بِمَاۤ اَتَوْا وَّ یُحِبُّوْنَ اَنْ یُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ یَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ (۱۸۸) (پ۴، اٰل عمرٰن:۱۸۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हरगिज़ न समझना उन्हें जो ख़ुश होते हैं अपने किये पर और चाहते हैं कि बे किये उन की ता'रीफ़ हो ऐसों को हरगिज़ अ़ज़ाब से दूर न जानना और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

आज बनता हूं मुअ़ज़्ज़ज़ जो खुले ह़श्र में ऐब
हाए रुस्वाई की आफ़त में फंसूंगा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 91)

﴾2﴿ लोगों की मज़म्मत का ख़ौफ़ : लोगों की त़रफ़ से **मज़म्मत** होने (या'नी बुरा भला कहे जाने) का ख़ौफ़ इस त़रह़ दूर किया जा सकता है कि आप अपना ज़ेहन बना लीजिये कि किसी के **मज़म्मत** करने (या'नी बुरा भला कहने) से न मेरी **मौत** जल्दी आ जाएगी और न मेरे **रिज़्क़** में कमी बेशी होगी, अगर मेरा **रब** عَزَّوَجَلَّ मुझ से **राज़ी** है तो फिर लोगों की मज़म्मत और इन की त़रफ़ से किया जाने वाला इज़्हारे नाराज़ी मेरा **बाल भी बीका** नहीं कर सकती। येह लोग तो ख़ुद मजबूर व **आ़जिज़** हैं

कि अपने लिये नफ़्अ़ व नुक़्सान और ज़िन्दगी व मौत के **मालिक** नहीं तो मैं क्यूं इन की मज़म्मत के **ख़ौफ़** से नेक अ़मल करूं या छोड़ूं, **मुझे सिर्फ़ अपने रब** عَزَّوَجَلَّ **के क़हरो ग़ज़ब से डरना चाहिये।**

﴾3﴿ माल व दौलत की ह़िर्स : माल व दौलत की ह़िर्स से नजात ह़ासिल करने के लिये अपना इस त़रह़ ज़ेह्न बनाइये कि **माल** देने और रोकने के सिल्सिले में लोगों के दिल **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ही के क़ब्ज़े में हैं, मैं जिन लोगों की ख़ात़िर **रियाकारी** या'नी दिखावे का अ़मल करने लगा हूं वोह तो ख़ुद मजबूरे मह़ज़ है, रिज़्क़ देने वाली ज़ात सिर्फ़ व सिर्फ़ रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की है। जो शख़्स लोगों के माल का **लालच** रखता है वोह **ज़लीलो रुस्वा** हो जाता है और अगर उसे माल मिल भी जाए तो देने वाले के **एह़सान तले दबना** पड़ता है, तो जब **रिया काराना अ़मल** के सबब माल का मिलना भी **यक़ीनी** नहीं और ज़िल्लतो रुस्वाई का **अन्देशा** भी पूरा है तो फिर मैं क्यूं नेक कामों के ज़रीए़ लोगों को **मु-तअस्सिर** कर के इन से **माल** ह़ासिल करने की कोशिश करूं ? बस **मैं अपने रब** عَزَّوَجَلَّ ही **को राज़ी करने के लिये इबादत और हर त़रह़ के नेक काम किया करूंगा।** اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

पीछा मेरा दुन्या की मह़ब्बत से छुड़ा दे
या रब मुझे दीवाना मदीने का बना दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 100)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾चौथा इलाज﴿ अपने आ'माल में इख़्लास पैदा कीजिये

सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये **इख़्लास** के साथ अ़मल करो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वोही आ'माल क़बूल फ़रमाता है जो उस के लिये **इख़्लास** के साथ किये जाते हैं और येह न कहो कि येह (अ़मल) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये और रिश्तेदारी के लिये। (سُنَن دارقطنی ج۱ ص۷۳ حدیث ۱۳۰)

इख़्लास के बिग़ैर सवाब नहीं मिलता : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़हा 892 ता 893 पर पारह 25 **सू-रतुश्शूरा** आयत नम्बर 20 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

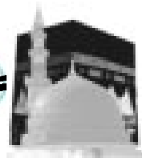
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो आख़िरत की खेती चाहे हम उस के लिये खेती बढ़ाएं और जो दुन्या की खेती चाहे हम उसे उस में से कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं।

तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान से इस आयते मुबा-रका के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों की तफ़्सीर मुला-ह़ज़ा हो : ﴾**जो आख़िरत की खेती चाहे**﴿ या'नी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की रिज़ा और जनाबे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की **ख़ुशनूदी** चाहे, **रिया** के लिये आ'माल न करे ﴾**हम उस की खेती बढ़ाएं**﴿ या'नी उसे ज़ियादा नेकियों की **तौफ़ीक़** देंगे, नेक काम **आसान** कर देंगे, आ'माल का **सवाब** बे ह़िसाब बख़्शेंगे। ﴾**और जो दुन्या की खेती चाहे**﴿ कि मह़ज़ **दुन्या** कमाने के लिये नेकियां करे, **इ़ज़्ज़त व जाह** (और शोहरत व वाह वाह) के लिये आ़लिम, ह़ाजी बने, (माले) **ग़नीमत** (पाने) के लिये ग़ाज़ी (बने), ﴾**और आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं**﴿ क्यूं कि उस ने आख़िरत के लिये **अ़मल** किये ही नहीं। मा'लूम हुवा कि **रियाकार सवाब से मह़रूम रहता है** मगर शरअ़न इस का अ़मल दुरुस्त है, रिया की नमाज़ से फ़र्ज़ अदा हो जाएगा, मगर सवाब न मिलेगा इस लिये فِي الْاٰخِرَةِ (या'नी आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं) की क़ैद लगाई।

(नूरुल इरफ़ान, स. 774)

मुख़्लिस के आ'माल को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **मश्हूर करता है :** **ह़ुज़ूरे पाक,** साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर तुम में से कोई शख़्स किसी ऐसी सख़्त चट्टान में कोई अ़मल करे जिस का न तो कोई दरवाज़ा हो

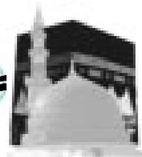

और न ही **रोशन दान**, तब भी उस का अ़मल ज़ाहिर हो जाएगा और जो होना है हो कर रहेगा।" (مُسندِ امام احمد بن حنبل ج٤ ص٥٧ حديث ١١٢٣٠)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : इस फ़रमाने आ़ली का मक़्सद येह है कि तुम **रिया** कर के सवाब क्यूं **बरबाद** करते हो ! तुम **इख़्लास** से नेकियां करो, ख़ुफ़्या (या'नी छुप कर इ़बादत) करो। **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी नेकियां ख़ुद बख़ुद लोगों को बता देगा लोगों के दिल तुम्हें **नेक** मानने लगेंगे। येह निहायत ही **मुजर्रब** (या'नी आज़्माया हुवा) है, बा'ज़ लोग **ख़ुफ़्या** (या'नी छुप कर) **तहज्जुद** पढ़ते हैं लोग ख़्वाह म ख़्वाह उन्हें तहज्जुद ख़्वां कहने लगते हैं। तहज्जुद बल्कि हर **नेकी का नूर** चेहरे पर नुमूदार हो जाता है जिस का दिन रात मुशा–हदा हो (या'नी देखा जा) रहा है, लोग हुज़ूरे ग़ौसे पाक (और) ख़्वाजा अजमेरी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) को **वली** कहते हैं, क्यूं कि रब तआ़ला कहलवा रहा है। येह है इस फ़रमाने आ़ली का ज़ुहूर। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 145)

मुख़्लिस किसे कहते हैं ? : "**इन्सान** मुख़्लिस कब होता है" इस बारे में **अस्लाफ़े किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام के चार अक़्वाल मुला–ह़ज़ा हों : ﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से सुवाल हुवा : **इन्सान कब मुख़्लिस होता है ?** फ़रमाया : जब **शीर ख़्वार** (या'नी दूध पीते) **बच्चे** की त़रह़ उस की **आ़दत** हो, शीर ख़्वार बच्चे की कोई **ता'रीफ़** करे तो उसे **अच्छी** नहीं लगती और **मज़म्मत** करे तो **बुरी** नहीं लगती। तो जिस त़रह़ वोह अपनी ता'रीफ़ व मज़म्मत से **बे परवाह** होता है इसी त़रह़ इन्सान जब अपनी ता'रीफ़ व मज़म्मत की परवाह न करे तो **मुख़्लिस** कहा जा सकता है (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص٢٤) ﴾2﴿ ह़ज़रते ज़ुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से किसी ने पूछा : **आदमी को किस त़रह़ मा'लूम हो कि वोह मुख़्लिस है ?** फ़रमाया : **जब वोह आ'माले सालिह़ा** (या'नी नेकियों) **में पूरी कोशिश सर्फ़ कर देने के बा वुजूद इस बात को पसन्द करे कि मैं मुअ़ज़्ज़ज़** (या'नी इ़ज़्ज़त वाला) **न समझा जाऊं** (اَيضاً ص٢٣) ﴾3﴿ किसी इमाम से पूछा गया : **मुख़्लिस कौन है ?** फ़रमाया : मुख़्लिस वोह है जो अपनी **नेकियां** इस त़रह़ **छुपाए** जिस त़रह़ अपनी **बुराइयां छुपाता है** (اَلزَّواجِر ج١ ص١٠٢) ﴾4﴿ एक और बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़र्ज़ की गई : इख़्लास की ह़द कहां






तक है ? फ़रमाया : येह कि **तुम्हें येह ख़्वाहिश ही न रहे कि लोग तुम्हारी ता'रीफ़ करें।** (اَیضاً)

यक्सां हो मद्ह़ो ज़म मुझ पे कर दो करम

न ख़ुशी हो न ग़म ताजदारे ह़रम

(वसाइले बख़्शिश, स. 271)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى محمَّد

﴾पांचवां इलाज﴿ निय्यत की हिफ़ाज़त कीजिये

रियाकारी से बचने के लिये अपनी निय्यत की हिफ़ाज़त ज़रूरी है कि आप जो अ़मल करने लगे हैं उस का मक़्सद क्या है ! अगर **दिखावे** की बू पाएं तो फ़ौरन अपनी निय्यत की इस्लाह फ़रमाएं और येह ज़ेहन बनाएं कि सिर्फ़ वोही अ़मल मक़्बूल होगा जो रिज़ाए इलाही के लिये किया जाएगा अगर मैं ने लोगों को दिखाने या सुनाने की ख़ातिर कोई नेकी की तो क़बूल होना तो एक त़रफ़ रहा, जहन्नम के अ़ज़ाब का ह़क़दार हो जाऊंगा ! शैत़ान अगर्चे लाख रुकावट डाले मगर रिया और दिखावे की निय्यत से बचना और अच्छी निय्यत करनी ही होगी। ह़ज़रते सय्यिदुना नुऐम बिन ह़म्माद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَوَاد फ़रमाते हैं : हमारी पीठ का कोड़ों की मार खाना हमारे लिये (अच्छी) **निय्यत** करने के मुक़ाबले में आसान तर है। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص٢٥)

निय्यत की ता'रीफ़ : **निय्यत** लु-ग़वी त़ौर पर दिल के **पुख़्ता** (या'नी पक्के) **इरादे** को कहते हैं और शरअ़न इबादत के इरादे को **निय्यत** कहा जाता है। (माख़ूज़ अज़ नुज़्हतुल क़ारी शर्हे सह़ीहुल बुख़ारी, जि. 1, स. 226) निय्यत की **अहम्मिय्यत** दिल में उजागर करने के लिये सात रिवायात मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

"चल मदीना" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से अच्छी निय्यत की फ़ज़ीलत पर मब्नी 7 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿ आ'माल का दारो मदार **निय्यतों** पर है और हर शख़्स के लिये वोही है जिस की वोह **निय्यत** करे (بُخاری ج١ ص٦ حديث١) ﴾2﴿ **मुसल्मान की निय्यत उस के**





अ़मल से बेहतर है (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج٦ ص١٨٥ حديث ٥٩٤٢) ﴿3﴾ सच्ची निय्यत सब से **अफ़्ज़ल अ़मल** है (اَلْجَامِعُ الصَّغِير ص٨١ حديث ١٢٨٤) ﴿4﴾ **अच्छी निय्यत** बन्दे को **जन्नत** में दाख़िल करेगी (اَلْفِرْدَوس بمأثور الْخَطَّاب ج٤ ص٣٠٥ حديث ٦٨٩٥) ﴿5﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आख़िरत की **निय्यत** पर दुन्या **अ़त़ा** फ़रमा देता है लेकिन दुन्या की **निय्यत** पर आख़िरत **अ़त़ा** फ़रमाने से इन्कार कर देता है (اَلزُّهْد لِابنِ مُبارَك ص١٩٣ حديث ٥٤٩) ﴿6﴾ **सच्ची निय्यत** अ़र्श से मुअ़ल्लक़ है पस जब कोई बन्दा **सच्ची निय्यत** करता है तो अ़र्श **हिलने** लग जाता है, फिर उस बन्दे को **बख़्श** दिया जाता है (تاريخ بغداد ج١٢ ص٤٤٤ حديث ٦٩٢٦) ﴿7﴾ जिस ने **नेकी** का **इरादा** किया फिर उसे न किया तो उस के लिये एक **नेकी** लिख्खी जाएगी । (صَحيح مُسلِم ص٧٩ حديث ١٣٠)

अच्छी अच्छी निय्यतों का हो ख़ुदा जज़्बा अ़त़ा
बन्दए मुख़्लिस बना, कर अ़फ़्व मेरी हर ख़त़ा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾छटा इलाज﴿ दौराने इबादत शैत़ानी वस्वसों से बचिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इख़्लास क़बूलिय्यत की कुन्जी (चाबी) है, लिहाज़ा जिस त़रह नेक अ़मल से पहले दिल में **इख़्लास** होना ज़रूरी है इसी त़रह हर नेकी व इबादत के दौरान इसे क़ाइम रखना भी ज़रूरी है क्यूं कि शैत़ान मुसल्सल हमारे दिल में **वस्वसे** डालने की कोशिश में लगा रहता है । ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : जो शख़्स अपने आ'माल में साहिर (या'नी जादूगर) से ज़ियादा **होशियार** न होगा (शैत़ान के झांसे में आ कर) ज़रूर **रियाकारी** में फंस जाएगा । (تَنبِيهُ الْمُغْتَرِّيْن ص٢٣)

इबादत में वस्वसों से नजात के लिये तीन चीज़ें ज़रूरी हैं : इबादत के दौरान शैतानी वस्वसों से छुटकारे के लिये तीन चीज़ें ज़रूरी हैं : ﴾1﴿ उस वस्वसे को पहचानना ﴾2﴿ उसे ना पसन्द करना और ﴾3﴿ उसे क़बूल करने से इन्कार करना। म-सलन किसी ने अच्छी अच्छी **निय्यतें** कर के नमाज़े तहज्जुद शुरूअ़ की, अब दौराने नमाज़ शैतान ने दिल में **रियाकारी** का वस्वसा डाला कि जब लोगों को मेरी तहज्जुद गुज़ारी का पता चलेगा तो वोह मुझ से बहुत **मु-तअस्सिर** होंगे, अब इस वस्वसे को फ़ौरी तौर पर **पहचानना** कि येह शैतान की तरफ़ से है उस नमाज़ी के लिये बहुत ज़रूरी है। फिर इसे **ना पसन्द** भी जाने कि **ख़ालिक़** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किये जाने वाले अ़मल से **मख़्लूक़** को **मु-तअस्सिर** करने की कोशिश करना **ग़-ज़बे इलाही** को दा'वत देने के मु-तरादिफ़ है, फिर उस **वस्वसे से अपनी तवज्जोह हटा ले।** अगर्चे येह काम **मुश्किल** ज़रूर है मगर **ना मुम्किन** नहीं, आग़ाज़ में येह काम बेहद कठिन महसूस होता है, लेकिन जब तकल्लुफ़ कर के एक अ़र्से तक इस पर **सब्र** करे तो **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम और हुस्ने तौफ़ीक़ से येह काम **आसान** हो जाता है, हमारा काम **कोशिश** करना है, काम्याबी देने वाली ज़ात **रब्बे काएनात** عَزَّوَجَلَّ की है : पारह 21 **सू-रतुल अ़न्कबूत** आयत नम्बर 69 में **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَالَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا لَنَهْدِیَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِیْنَ۠ ﴿۶۹﴾
(پ۲۱،العنکبوت:۶۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक **अल्लाह** नेकों के साथ है।

तू शैतां के शर से बचा या इलाही
हो दिल वस्वसों से सफ़ा या इलाही
मुझे वस्वसों से बचा या इलाही
हो शर दूर शैतान का या इलाही

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

«सातवां इलाज» तन्हाई हो या हुजूम यक्सां अ़मल कीजिये

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुकर्रम है : जब बन्दा अ़लानिया नमाज़ पढ़े तो भी **अच्छी** और ख़ुफ़्या (या'नी पोशीदा) नमाज़ पढ़े तो भी **अच्छी** तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि येह मेरा **सच्चा बन्दा है।** (سُنَنِ اِبن ماجہ ج٤ ص٤٦٨ حدیث ٤٢٠٠)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी इस बन्दे में **रियाकारी** नहीं है येह बन्दा **मुख़्लिस** है अगर रियाकार होता तो **अ़लानिया** नमाज़ **अच्छी** त़रह़ पढ़ता **ख़ुफ़्या** (या'नी तन्हाई) में **मा'मूली** त़रह़, जब येह ख़ुफ़्या (या'नी तन्हाई) में भी अच्छी त़रह़ पढ़ता है तो **मुख़्लिस** ही है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 140)

इमाम सिर्री नमाज़ में भी क़वाइदे तज्वीद की रिआ़यत करे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि तन्हाई में हों या इस्लामी भाइयों के दरमियान, दोनों जगह अ़मल को **यक्सां** अन्दाज़ में करने की ख़ूब कोशिश करें। म-सलन जिस **ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़** से लोगों के सामने **नमाज़** पढ़ते हैं वोही अन्दाज़ अकेले में भी **क़ाइम** रखें, इमाम साह़िब को चाहिये कि जिस त़रह़ जहरी (या'नी बुलन्द आवाज़ वाली क़िराअत की) नमाज़ों में क़वाइदे तज्वीद की रिआ़यत करते हैं, सिर्री (या'नी आहिस्ता क़िराअत वाली) नमाज़ों में भी येही करें। नीज़ हम जो काम लोगों के सामने करना पसन्द नहीं करते तन्हाई में भी न किया करें। शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुबीन है : "जो काम लोगों के **सामने** करना **ना पसन्द** करते हो वोह **तन्हाई** में भी **न** किया करो।" (اَلْجامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطی ص٤٨٧ حدیث٧٩٧٣)

बचा मुझ को शैत़ां की मक्कारियों से
ख़ुदा बहरे ह़ैदर रियाकारियों से

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾आठवां इलाज﴿ नेकियां छुपाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काश ! येह सआ़दत मिल जाए कि हम अपनी नेकियों को भी इस त़रह़ छुपाएं जिस त़रह़ अपने गुनाहों को छुपाते हैं और बस इसी को काफ़ी समझें कि **अल्लाह** तआ़ला हमारी नेकियां जानता है। बिल ख़ुसूस पोशीदा नेकी करने के बा'द नफ़्स की ख़ूब निगरानी की जाए क्यूं कि हो सकता है येह इ़बादत ज़ाहिर करने की ह़िर्स नफ़्स के अन्दर जोश मारे और वोह कुछ इस त़रह़ फंसाने की तरकीब करे कि अपनी येह इ़बादत लोगों पर ज़ाहिर कर दे कि इस त़रह़ नेकियां छुपाए रखने से जब लोगों को तेरे मक़ाम व मर्तबे का इ़ल्म ही नहीं होगा तो वोह बेचारे तेरी पैरवी से मह़रूम रह जाएंगे, ऐसे में तू लोगों का मुक़्तदा (या'नी पेशवा व रहनुमा) कैसे बनेगा ? तेरे ज़रीए़ नेकी की दा'वत कैसे आ़म होगी ? वग़ैरा। ऐसी सूरत में **अल्लाह** तआ़ला से इस्तिक़ामत व साबित क़दमी की दुआ़ करनी चाहिये और अपने अ़मल के बदले में मिलने वाली जन्नत की अ़ज़ीमुश्शान दाइमी ने'मत याद करनी चाहिये। ख़ुद को डराना चाहिये कि जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत के ज़रीए़ उस के बन्दों से अज्र (या'नी बदले) का त़ालिब होता है उस पर **अल्लाह** तआ़ला का ग़ज़ब नाज़िल होता है और येह भी हो सकता है कि दूसरों के सामने अपना अ़मल ज़ाहिर करने की वजह से वोह उन के नज़्दीक तो मह़बूब (या'नी प्यारा) हो जाए लेकिन **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक उस का मक़ाम व मर्तबा गिर जाए ! तो कहीं इस त़रह़ मेरा अ़मल भी ज़ाएअ़ न हो जाए ! फिर नफ़्स को इस त़रह़ समझाए कि मैं किस त़रह़ इस अ़मल को लोगों की ता'रीफ़ के बदले बेच दूं वोह तो ख़ुद आ़जिज़ व लाचार हैं न तो वोह मुझे रिज़्क़ दे सकते हैं और न ही मौत व ह़यात के मालिक हैं।

पोशीदा अ़मल अफ़्ज़ल है : पोशीदा अ़मल के फ़ज़ाइल पर भी ग़ौर करे जैसा कि **नबिय्ये** पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : **ज़ाहिरी अ़मल के** मुक़ाबले में **पोशीदा अ़मल अफ़्ज़ल** है। (شُعَبُ الْاِيمان ج٥ ص٣٧٦ حديث٧٠١٢)

अ़मल के इज़्हार की एक सूरत : **ऐसा** शख़्स कि जिस की पैरवी की जाती हो वोह लोगों को रग़बत दिलाने की निय्यत से ऐसा अ़मल ज़ाहिर कर सकता है जब कि इस इज़्हार में रिया की आमैज़िश न हो । इस त़रह़ इख़्लास के साथ अ़मल के इज़्हार से वोह सवाबे अ़ज़ीम का ह़क़दार है । चुनान्चे एक ह़दीसे पाक में है : जब अ़लानिया अ़मल की पैरवी की जाए तो वोह (ज़ाहिर किया जाने वाला अ़मल) छुप कर किये जाने वाले अ़मल से अफ़्ज़ल है । (اَیضاً)

आ़जिज़ी की इन्तिहा : **अपना** पोशीदा अ़मल तह़दीसे ने'मत या दूसरों की रग़बत के लिये ज़ाहिर करने से पहले ख़ूब अच्छी त़रह़ ग़ौर कर लेने की ह़ाजत है कि कहीं येह शैत़ान की चाल तो नहीं ! कहीं मैं रियाकारी में तो नहीं जा पड़ूंगा । इस ज़िम्न में हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की इन्किसारी बे मिसाल है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं मैं ने जिस क़दर आ'माल **ज़ाहिर** कर के किये हैं, उन को न होने के बराबर समझता हूं क्यूं कि जब लोग देख रहे हों उस वक़्त **इख़्लास** का बाक़ी रखना हम जैसों की क़ुदरत से बाहर है । (تَنبِيهُ الْمُغْتَرِّيْن ص ٢٦)

बसरे की हर गली से तिलावत की आवाज़ आती थी : **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی लिखते हैं : किसी ज़माने में बसरे की हर गली से ज़िक्रे इलाही और तिलावते क़ुरआने करीम की आवाज़ें **बुलन्द** होती थीं और इस त़रह़ लोगों को ज़िक्रो अज़्कार की रग़बत मिलती थी । इत्तिफ़ाक़न उस ज़माने में किसी आ़लिम साह़िब ने **"रिया की बारीकियों"** के बारे में एक रिसाला तह़रीर फ़रमाया, तो तमाम लोगों ने बुलन्द आवाज़ से ज़िक्रो तिलावत करना बन्द कर दिया । इस पर कई लोगों ने कहा : काश ! उन आ़लिम साह़िब ने येह **रिसाला** न लिखा होता !

(کیمیائے سعادت ج٢ ص ٦٩٢)

अब तो न किये हुए अमल में भी रियाकारी की जाती है : हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम ने पहले तो लोगों को इस हालत में पाया था कि वोह उन नेकियों में **रिया** करते थे जो वोह करते थे और अब लोगों की येह हालत है कि वोह उन बातों में **रिया** करते हैं जो वोह नहीं करते । **(تنبيه المغترين ص ٢٥)** या'नी पहले लोग मख़्लूक़ को राज़ी करने के लिये नेक काम करते थे और अब नेक काम भी नहीं करते बल्कि नेकों की सूरत बना कर इस का यक़ीन दिलाना चाहते हैं कि वोह नेक काम करते हैं पस येह पहले के **रियाकारों** से भी बदतर हैं ।

नेकियां छुप कर करें ऐसी हिदायत दे ख़ुदा
हम को पोशीदा इबादत की तू लज़्ज़त दे ख़ुदा

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾नवां इलाज﴿ सिर्फ़ अच्छी सोहबत में रहिये

अल्लाह तआला के मुख़्लिस बन्दों और आशिक़ाने रसूल की सोहबत अगर नसीब हो जाए तो ऐन सआदत है, उन के क़ुर्ब और उन की तरफ़ से वक़्तन फ़ वक़्तन मिलने वाली नेकी की दा'वत की ब-र-कत से दीगर फ़वाइद के साथ साथ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **रियाकारी का इलाज** भी होता रहेगा । येह याद रहे कि सिर्फ़ व सिर्फ़ अच्छी सोहबत इख़्तियार करनी चाहिये जब कि बुरे लोगों के साए से भी भागना चाहिये । मक्की म-दनी सुल्तान, रहमते आ-लमियान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : अच्छे और बुरे मुसाहिब की मिसाल, मुश्क (या'नी कस्तूरी) उठाने वाले और भट्टी धोंकने वाले की तरह है, कस्तूरी उठाने वाला तुम्हें **तोहफ़ा** देगा या तुम उस से **ख़रीदोगे** या तुम्हें उस से उम्दा **ख़ुश्बू** आएगी, जब कि भट्टी धोंकने वाला

या तुम्हारे कपड़े **जलाएगा** या तुम्हें उस से **ना गवार** बू आएगी। (صَحیح مُسلِم ص١٤١٤ حدیث ٢٦٢٨)

चंगे बन्दे दी सोह़बत यारो जीवीं दुकान अ़त्तारां सौदा भावें मुल न लय्ये हुल्ले आन हज़ारां
बुरे बन्दे दी सोह़बत यारो जीवीं दुकान लोहारां कपड़े भावें कुंज कुंज बय्ये चिंगा पैन हज़ारां

(या'नी अच्छे शख़्स की सोह़बत अ़त्तार (य'नी इत्र फ़रोश) की दुकान की त़रह़ है कि जहां से आदमी कुछ न भी ख़रीदे मगर उसे ख़ुश्बू तो आ ही जाती है और बुरे शख़्स की सोह़बत लोहार की दुकान की मिस्ल है, जहां अपने कपड़ों को जितना भी समेट कर रखें, चिंगारियां उस तक पहुंच ही जाती हैं)

सोह़बत के फ़ौरी अ-सरात की मिसालें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर सोह़बत अपना असर ज़रूर रखती है, म-सलन अगर आप की मुलाक़ात किसी ऐसे इस्लामी भाई से हो, जिस की आंखों में अपने किसी अ़ज़ीज़ की मौत की वजह से **नमी** हो, चेहरे पर **आसारे ग़म** ख़ूब नुमायां हों और लहजे से **उदासी** झलक रही हो तो उस की येह ह़ालत देख कर कुछ देर के लिये आप भी **ग़मगीन** हो जाएंगे। और अगर आप को किसी ऐसे इस्लामी भाई के पास बैठने का इत्तिफ़ाक़ हो जिस का चेहरा किसी काम्याबी की वजह से **ख़ुशी** से दमक रहा हो, लबों पर **मुस्कराहट** खेल रही हो और उस की बातों से **मसर्रत** का इज़्हार हो रहा हो तो ख़्वाही न ख़्वाही आप भी कुछ देर के लिये उस की **ख़ुशी** में शरीक हो जाएंगे।

अच्छी बुरी सोह़बत के अ-सरात : इसी त़रह़ अगर कोई शख़्स ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करेगा जो फ़िक्रे आख़िरत से यक्सर **ग़ाफ़िल** हों और गुनाहों के इरतिकाब में किसी क़िस्म की **झिजक** मह़सूस न करते हों तो ग़ालिब गुमान है कि वोह भी बहुत जल्द उन्ही की **मानिन्द** हो जाएगा और अगर कोई आदमी आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत इख़्तियार करे जिन के दिल **फ़िक्रे मदीना** से मा'मूर हों, वोह दिन रात आख़िरत की फ़लाह़ (या'नी काम्याबी) के लिये अपनी **इस्लाह़** की कोशिश में मसरूफ़ रहते हों, उन की आंखें **अल्लाह** तआ़ला के **ख़ौफ़** से रोती हों, तो बहुत उम्मीद है कि येही कैफ़िय्यात उस शख़्स के दिल में भी सरायत (या'नी असर) कर जाएं। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

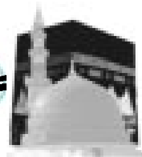
फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

बुरी सोहबतों से बचा या इलाही
बना मुझ को अच्छा बना या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अच्छी अच्छी म-दनी सोहबत पाने के लिये आप को परेशान होने की क़त्अन ज़रूरत नहीं, तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, इस की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ'ला अख़्लाक़ी औसाफ़ ग़ैर मह़सूस त़ौर पर आप के किरदार का ह़िस्सा बनते चले जाएंगे । हर इस्लामी भाई को चाहिये कि वोह अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत करे और सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र करे । इन म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपने साबिक़ा त़र्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल आ़क़िबत की बेहतरी के लिये बेचैन हो जाएगा, जिस के नतीजे में गुनाहों की कसरत पर नदामत होगी और तौबा की सआ़दत मिलेगी । आ़शिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी क़ाफ़िलों में मुसल्सल सफ़र करने के नतीजे में फ़ोह़्श कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह लब पर दुरूदे पाक का विर्द होगा और ज़बान तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रो ना'त की आ़दी बन जाएगी, ग़ुस्से की जगह नरमी, बे सब्री की जगह सब्रो तह़म्मुल, **तकब्बुर** की जगह आ़जिज़ी और एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा मिलेगा । दुन्यावी माल व दौलत के लालच से पीछा छूटेगा और नेकियों की ह़िर्स मिलेगी, अल ग़रज़ बार बार राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ । **इस्लामी बहनों** को भी चाहिये कि अपने शहर में होने वाले इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत करें ।






फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है । (مسلم)

दिल और नाक के मरज़ से नजात : **आप** की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत की ब-र-कत से मम्लू एक **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे **मुरादआबाद** (यूपी, हिन्द) के एक इस्लामी भाई की तह़रीर का ख़ुलासा है : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, "दा'वते इस्लामी" के मुश्कबार म-दनी माहोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं गुनाहों के समुन्दर में ग़रक़ था । नमाज़ों से दूरी, फ़ेशन परस्ती और बे ह़याई की नुहूसतों में जकड़ा हुवा होने के सबब मेरी ज़िन्दगी के अय्याम जो कि यक़ीनन अनमोल हीरे हैं ग़फ़्लत की नज़्र थे । रूहानी अमराज़ के इ़लावा मैं जिस्मानी अमराज़ में भी गरिफ़्तार था, चुनान्चे मुझे **नाक की हड्डी** बढ़ जाने के साथ साथ **दिल की बीमारी** भी थी, जिस की वजह से मैं काफ़ी अज़िय्यत का शिकार रहता था । बिल आख़िर इस्यां की तारीक रात के सियाह बादल छटे । हुवा यूं कि मुझे दा'वते इस्लामी के तह़त सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र करने वाले **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत नसीब हुई, आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत की बदौलत मेरी ज़िन्दगी के अन्दर म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और मैं ने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर के अपने आप को सुन्नतों के रास्ते पर डाल दिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ येह ब-र-कत भी नसीब हुई कि **म-दनी क़ाफ़िले से वापसी पर मेरी नाक की बढ़ी हुई हड्डी दुरुस्त हो चुकी थी और कुछ दिनों के बा'द मेरा दिल का मरज़ भी ख़त्म हो गया ।**

दिल में गर दर्द हो डर से रुख़ ज़र्द हो — पाओगे फ़रहतें क़ाफ़िले में चलो
है शिफ़ा ही शिफ़ा, मरह़बा ! मरह़बा ! — आ के ख़ुद देख लें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 612)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने मुआ़-शरे के एक बिगड़े हुए फ़र्द को जब **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत और इस दौरान आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत मुयस्सर आई तो उन की इस्लाह़ के भी अस्बाब हुए और बि फ़ज़्लिही तआ़ला




वोह जिस्मानी बीमारियों से भी सिहहत याब हुए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की नाक की बढ़ी हुई हड्डी भी दुरुस्त हुई और दिल के मोहलिक मरज़ से भी उन्हें नजात मिली। ज़िम्नन सवाब कमाने की निय्यत से दिल के इलाज का एक **म-दनी नुस्ख़ा** हाज़िरे ख़िदमत करता हूं। चुनान्चे

अ़ज्वा खजूर की गुठली से दिल का इलाज : एक मक़ामी अख़्बार के "कॉलम" में दिये हुए एक वाक़िए को **बित्तसर्रुफ़** अ़र्ज़ करता हूं : 84 सालह एक बहुत बड़े साबिक़ फ़ौजी अफ़्सर का बयान है कि 56 साल की उ़म्र में मुझे दिल का आ़रिज़ा लाहिक़ हुवा, मैं अपने मरज़ को ख़ुफ़्या रखना चाहता था क्यूं कि इस के इज़्हार से मेरे फ़ौजी केरियर पर ज़द पड़ सकती थी चुनान्चे मैं डॉक्टरी इलाज से कतरा रहा था। ऐसे में मुझे किसी साहिब ने बताया कि मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की मश्हूर खजूर "अ़ज्वा" की गुठलियां बारीक पीस कर उस का पाउडर (या'नी सुफूफ़) रोज़ाना सुब्ह़ आधी चम्मच पानी के साथ निगल लीजिये। मैं ने उस म-दनी नुस्ख़े पर अ़मल किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हैरत अंगेज़ तौर पर मेरी सिहहत में बेहतरी आ गई। येह नुस्ख़ा वोह (23-12-2010 के अख़्बार के मुताबिक़) आज भी इस्ति'माल कर रहे हैं और शायद इसी की ब-र-कत से 84 साल की उ़म्र में भी वोह न सिर्फ़ सिहहत मन्द और रोज़ मर्रा के कामों में **मु-तहर्रिक** (ACTIVE) हैं बल्कि उन का दिल भी जवानों की त़रह मज़्बूत है। उसी अख़्बारी कॉलम में येह भी है कि 1995 सि. ई. में पाकिस्तान की एक मश्हूर तरीन शख़्सिय्यत को डॉक्टरों ने बताया कि आप के दिल की तीन नालियां बन्द हो चुकी हैं। इस पर उन्हों ने **एन्जियो प्लास्टी** (Angioplasty) करवाने के लिये लन्दन जाने का फ़ैसला किया। मैं ने (या'नी मज़्कूरा साबिक़ फ़ौजी अफ़्सर ने) उन्हें भी येह **म-दनी नुस्ख़ा** बताया और मश्वरा दिया कि आप 30 दिन तक येह इलाज कर लीजिये, अगर फ़ाएदा न हो तो बेशक **एन्जियो प्लास्टी** करवा लीजिये। चुनान्चे उन्हों ने येह **म-दनी नुस्ख़ा** लिया और इस का इस्ति'माल शुरूअ़ कर दिया, एक महीने के बा'द येह लन्दन गए, वहां उन्हों ने दुन्या के एक नामवर कॉर्डियो लोजिस्ट (या'नी माहिरे अमराज़े क़ल्ब) से राबिता किया, उस ने उन के टेस्ट कराए और टेस्टों के नताइज देख कर उन्हें बताया आप का दिल मुकम्मल तौर पर ठीक है, आप को किसी क़िस्म

के इलाज की ज़रूरत नहीं। उन्हों ने अपने पुराने टेस्ट की रिपोर्ट्स उस के सामने रख दीं, उस ने दोनों टेस्ट मेच किये और येह मानने से इन्कार कर दिया कि येह दोनों टेस्ट एक ही शख़्स के हैं। क़िस्सा मुख़्तसर वोह वापस पाकिस्तान आए और उन्हों ने इस **म-दनी नुस्ख़े** को अपना मा'मूल बना लिया। 2009 सि. ई. में उन्हों ने दोबारा टेस्ट करवाए, पुराने टेस्ट की रिपोर्ट्स मिला कर देखी और इस के बा'द येह बता कर हैरान कर दिया कि 1995 सि. ई. से ले कर 2009 सि. ई. तक उन के दिल में किसी क़िस्म का कोई फ़र्क़ नहीं आया, उन का दिल मुकम्मल तौर पर सिह्हत मन्द है। वोह येह **म-दनी नुस्ख़ा** आज भी इस्ति'माल कर रहे हैं और अपने बे शुमार दोस्तों को भी करवा रहे हैं।

न हो आराम जिस बीमार को सारे ज़माने से
उठा ले जाए थोड़ी ख़ाक उन के आस्ताने से

(ज़ौक़े ना'त)

म-दनी इन्आमात : **दा'वते इस्लामी** ने इस पुर फ़ितन दौर में "नेक बनने का नुस्ख़ा" बनाम **"म-दनी इन्आमात"** ब सूरते सुवालात इनायत फ़रमाया है। इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63** और त-ल-बए इल्मे दीन के लिये **92**, दीनी तालिबात के लिये **83** और म-दनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये **40** और ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों (या'नी गूंगे बहरों) के लिये **27 म-दनी इन्आमात** हैं। बे शुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और त-लबा वग़ैरा म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल (या किसी भी मुनासिब वक़्त पर) **"फ़िक्रे मदीना"** या'नी अपने आ'माल का जाएज़ा ले कर म-दनी इन्आमात के "जेबी साइज़ रिसाले" में दिये गए ख़ाने पुर करते हैं। **इन** म-दनी इन्आमात को अपना लेने के बा'द नेक बनने और गुनाहों से बचने की राह में हाइल रुकावटें **अल्लाह** तआला के फ़ज़्लो करम से दूर होती चली जाती हैं और इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनता है। बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से म-दनी इन्आमात का रिसाला हासिल कीजिये और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपना मुहा-सबा) करते हुए उस में दिये गए ख़ाने पुर कीजिये और हिजरी सिन के मुताबिक़ हर म-दनी माह

के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के म-दनी इन्आ़मात के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

आ़मिलीने म-दनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने वाले किस क़दर ख़ुश क़िस्मत होते हैं इस का अन्दाज़ा इस **म-दनी बहार** से लगाइये, चुनान्चे हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ ह़ल्फ़िय्या (या'नी क़सम खा कर) बयान है कि माहे र-जबुल मुरज्जब 1426 सि. हि. की एक शब मुझे ख़्वाब में **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की अ़ज़ीम सआ़दत मिली। लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **जो इस माह रोज़ाना पाबन्दी से म-दनी इन्आ़मात से मु-तअ़ल्लिक़ फ़िक्रे मदीना करेगा, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।**

म-दनी इन्आ़मात की भी मरह़बा क्या बात है
क़ुर्बे ह़क़ के त़ालिबों के वासित़े सौग़ात है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿दसवां इलाज﴾ अवरादो वज़ाइफ़ का मा'मूल बना लीजिये

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **रियाकारी** से बचने के लिये बयान कर्दा मुआ़-लजात के साथ साथ ह़स्बे तौफ़ीक़ अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ येह 8 **रूह़ानी इलाज** भी कीजिये, जिन से रियाकारी के वस्वसे दूर होंगे।

﴿1﴾ रोज़ाना येह दुआ़ तीन बार पढ़ लीजिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ छोटी बड़ी हर त़रह़ की **रिया** दूर रखेगा। दुआ़ येह है : "اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ وَاَنَا اَعْلَمُ وَ اَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا اَعْلَمُ"[1]

मदीना

1. ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं जान बूझ कर तेरा शरीक ठहराने से तेरी पनाह चाहता हूं और ला इल्मी में ऐसा अ़मल करने पर तुझ से मग़्फ़िरत का सुवाल करता हूं।

﴾2﴿ जब भी दिल में **रियाकारी** का ख़याल आए तो "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم" एक बार पढ़ने के बा'द उलटे कन्धे की त़रफ़ तीन बार थू थू कर दीजिये ।

﴾3﴿ रोज़ाना दस बार "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم" पढ़ने वाले पर शैत़ान से ह़िफ़ाज़त करने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर कर देता है ।

﴾4﴿ सू-रतुल इख़्लास ग्यारह बार सुब्ह़ (आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमक्ने तक सुब्ह़ है) पढ़ने वाले पर अगर शैत़ान मअ़ लश्कर के कोशिश करे कि इस से गुनाह कराए तो न करा सके जब तक कि येह (पढ़ने वाला) ख़ुद न करे । (अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 21)

﴾5﴿ सू-रतुन्नास पढ़ लेने से भी वस्वसे दूर होते हैं ।

﴾6﴿ **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "**सूफ़ियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि जो कोई सुब्ह़ शाम इक्कीस इक्कीस बार "**लाह़ौल शरीफ़**" पानी पर दम कर के पी लिया करे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **वस्वसए शैत़ानी** से बहुत ह़द तक अम्न में रहेगा ।"

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 87)

﴾7﴿ هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ (پ۲۷ الحدید۳) कहने से फ़ौरन **वस्वसा** दूर हो जाता है ।

﴾8﴿ سُبْحٰنَ الْمَلِكِ الْخَلَّاقِ، ﴿اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۙ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ۝﴾ (پ۱۳ ابراهیم آیت ۱۹،۲۰) की कसरत इसे या'नी वस्वसे को जड़ से क़त़्अ़ कर (या'नी काट) देती है । (मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 770) (इस दुआ़ के ह़िस्सए आयत को आप की मा'लूमात के लिये **मुनक़्क़श** हिलालैन और रस्मुल ख़त़ की तब्दीली के ज़रीए वाज़ेह़ किया है)

रियाकारी से हर दम तू बचाना

ख़ुदाया बन्दए मुख़्लिस बनाना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इलाज के बा वुजूद इफ़ाक़ा न हो तो ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर भरपूर इलाज के बा'द भी **इफ़ाक़ा** न हो तो घबराइये नहीं बल्कि इलाज जारी रखिये कि "**दिल को भी आराम हो ही जाएगा ।**" क्यूं कि अगर हम ने इलाज तर्क कर दिया तो गोया खुद को मुकम्मल तौ़र पर शैत़ान के ह़वाले कर दिया कि इस त़रह़ तो वोह हमें कहीं का न छोड़ेगा । लिहाज़ा हमें चाहिये कि **रियाकारी** से जान छुड़ाने की कोशिश जारी रखें । दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **मिन्हाजुल आ़बिदीन** में **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने जो कुछ फ़रमाया उस का खुलासा है : अगर आप येह मह़सूस करें कि शैत़ान, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पनाह मांगने के बा वुजूद पीछा नहीं छोड़ रहा और ग़ालिब आने की कोशिश में है तो इस का मत़लब येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को आप के मुजा-हदे, **कु़व्वत** और सब्र का इम्तिह़ान मत़्लूब है, या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आज़्मा रहा है कि आप शैत़ान से मुक़ाबला और मुह़ा-रबा (या'नी जंग) करते हैं या उस से मग़्लूब हो (या'नी हार) जाते हैं । **(مِنہاجُ العابِدین(عربی) ص٤٦)**

रियाकारियों से बचा या इलाही

सियहकारियों से बचा या इलाही

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابو یعلٰی)

تُوبُوا اِلَى الله!　اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इबादत की ता'रीफ़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी रियाकारी का बयान किया गया और येह भी मा'लूम हुवा कि रियाकारी **इबादत** में की जाती है लिहाज़ा **इबादत की ता'रीफ़** भी अ़र्ज़ करता हूं, फिर मज़ीद **नेकी की दा'वत** पेश करते हुए اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ इबादत की अक़्साम और कुछ **निय्यत** के मु-तअ़ल्लिक़ भी अ़र्ज़ करने की निय्यत है। **इबादत की ता'रीफ़** बयान करते हुए **उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं :** किसी को इबादत के लाइक़ समझते हुए उस की किसी क़िस्म की ता'ज़ीम करना "इबादत" है और अगर इबादत के लाइक़ न समझें तो वोह मह्ज़ (या'नी सिर्फ़) **ता'ज़ीम** होगी इबादत नहीं कहलाएगी, जैसे नमाज़ में हाथ बांध कर खड़ा होना इबादत है लेकिन हाथ बांधने का येही अ़मल बारगाहे रिसालत में सुनहरी जालियों के रू बरू हो, या सलातो सलाम पढ़ने में हो, किसी बुज़ुर्ग की तशरीफ़ आ-वरी के मौक़अ़ पर हो, **तबर्रुकात** की ज़ियारत करते हुए हो, किसी **वलिय्युल्लाह** के मज़ार शरीफ़ के सामने हो, अपने पीर साहिब, उस्ताद या मां बाप वग़ैरा के लिये हो तो येह इबादत नहीं फ़क़त़ **ता'ज़ीम** है।

रिज़ाए रब्बुल अनाम वाला हर काम इबादत है : **इबादत** का मफ़्हूम बहुत वसीअ़ है और येह रिज़ाए रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के लिये किये जाने वाले हर काम को मुह़ीत़ (या'नी घेरे हुए) है, जैसा कि फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 29 में **ग़म्ज़ुल उ़यून** और **रद्दुल मुह़्तार** के ह़वाले से लिखा है : "इबादत वोह है कि जिस के करने पर सवाब दिया जाता है और वोह सवाब की निय्यत पर मौक़ूफ़ होती है।" **ताजुल अ़रूस** में नक़्ल किया : "इबादत वोह फ़े'ल है जिस के करने पर रब राज़ी होता है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 29, स. 647, 648)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان की तह़रीर का ख़ुलासा है : जो भी काम रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने के लिये किया जाए **इबादत** है।

(मुलख़्ख़स अज़ तफ़्सीरे नईमी, जि. 1, स. 77)

क़बूलिय्यते अ़मल की शराइत़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! अ़मल की क़बूलिय्यत के लिये सवाबे आख़िरत की **निय्यत** ना गुज़ीर (या'नी ज़रूरी) है चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **''कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान''** सफ़्ह़ा 529 पर पारह 15 **सूरए बनी इस्राईल** की उन्नीसवीं आयते करीमा में **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓىٕكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۱۹﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो आख़िरत चाहे और उस की सी कोशिश करे और हो ईमान वाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी।

इस आयते करीमा के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : अ़मल की क़बूलिय्यत के लिये तीन चीज़ें दरकार हैं : (1) **त़ालिबे आख़िरत** होना या'नी **निय्यत नेक** (अच्छी निय्यत हो) (2) **सअ़्य** (कोशिश) या'नी अ़मल को ब एहतिमाम उस के ह़ुक़ूक़ के साथ अदा करना (3) **ईमान** जो सब से ज़ियादा ज़रूरी है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 554)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बुरी निय्यतों से नजात और **अच्छी अच्छी निय्यतों** की आ़दात नसीब होंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हर अ़मल का दारो मदार निय्यत पर है : **क़ुरआने** करीम के बा'द सब से ज़ियादा मो'तबर किताब **बुख़ारी** शरीफ़ है, इस की सब से पहली ह़दीसे पाक है : اِنَّـمَا الْاَعْـمَالُ بِالنِّـيَّاتِ या'नी आ'माल का दारो मदार **निय्यतों** पर है। (بُخاری ج۱ ص۶ حدیث۱) इस ह़दीसे पाक के बारे में शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इस ह़दीस का येह मत़लब हुवा कि आ'माल का सवाब निय्यत ही पर है, बिग़ैर निय्यत किसी सवाब का इस्तिह़्क़ाक़ (या'नी ह़क़दार) नहीं। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 1, स. 172)

अच्छी निय्यतों के मु-तअ़ल्लिक़ 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 853 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल"** सफ़्ह़ा 173 ता 174 से अच्छी निय्यतों के फ़ज़ाइल पर दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ﴾1﴿ सच्ची निय्यत सब से अफ़्ज़ल अ़मल है। (اَلْجَامِعُ الصَّغِير ص۸۱ حدیث ۱۲۸٤) ﴾2﴿ अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल करेगी। (اَلْجَامِعُ الصَّغِير ص۵۵۷ حدیث ۹۳۲۶)

निय्यत किसे कहते हैं : **निय्यत,** दिल के पुख़्ता इरादे को कहते हैं ख़्वाह वोह किसी चीज़ का हो। और शरीअ़त में (निय्यत) इबादत के इरादे को कहते हैं। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 1, स. 169)

मुबाह़ काम अच्छी निय्यत से इबादत हो जाता है : **बहुत** सारे काम **मुबाह़** हैं, मुबाह़ उस जाइज़ अ़मल या फ़े'ल (या'नी काम) को बोलते हैं जिस का करना न करना यक्सां हो या'नी ऐसा काम करने से न सवाब मिले न गुनाह। म-सलन खाना पीना, सोना, टहलना, दौलत इकठ्ठी करना, तोह़फ़ा देना, उ़म्दा या ज़ाइद लिबास पहनना वग़ैरा काम मुबाह़ हैं। अगर थोड़ी सी तवज्जोह दी जाए तो मुबाह़ काम को **इबादत** बना कर उस पर सवाब कमाया जा सकता है, इस का

तरीक़ा बयान करते हुए **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हर मुबाह़ (या'नी ऐसा जाइज़ अ़मल जिस का करना न करना यक्सां हो) निय्यते ह़सन (या'नी अच्छी निय्यत) से **मुस्तह़ब** हो जाता है । (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 452) फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : मुबाह़ात (या'नी ऐसे जाइज़ काम जिन पर न सवाब हो न गुनाह उन) का हुक्म अलग अलग निय्यतों के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ हो जाता है, इस लिये जब इस से (या'नी किसी मुबाह़ से) त़ाआ़त (या'नी इ़बादात) पर **क़ुव्वत** ह़ासिल करना या त़ाआ़त (या'नी इ़बादात) तक पहुंचना मक़्सूद हो तो येह (मुबाह़ात या'नी जाइज़ चीज़ें भी) इ़बादात होंगी म-सलन खाना पीना, सोना हुसूले माल और वत़ी[1] करना ।

(اَیضاً ج۷، ص۱۸۹،رَدُّالْمُحتار ج٤ ص۷٥)

मुबाह़ काम में अच्छी निय्यतें न करने वाले नुक़्सान में हैं :

अगर कोई मुबाह़ काम बुरी निय्यत से किया जाए तो **बुरा** हो जाएगा और अच्छी निय्यत से किया जाए तो **अच्छा** और कुछ भी निय्यत न हो तो मुबाह़ रहेगा और क़ियामत के ह़िसाब की दुश्वारी दरपेश होगी । लिहाज़ा अ़क़्ल मन्द वोही है कि हर मुबाह़ काम में कम अज़ कम एक आध अच्छी **निय्यत** कर ही लिया करे, हो सके तो ज़ियादा निय्यतें करे कि जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा होंगी उतना ही सवाब ज़ियादा मिलेगा । **निय्यत** का येह भी फ़ाएदा है कि निय्यत करने के बा'द अगर वोह काम किसी वजह से न कर सका तब भी निय्यत का सवाब मिल जाएगा जैसा कि **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : **نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ** या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।

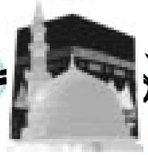
(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطّبَرانی ج٦ ص۱۸۵حدیث ۵۹٤۲)

निय्यत न करने के नुक़्सान और करने के फ़ाएदे की रिवायत :

मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं रिवायत में आया है, जब फ़िरिश्ते बन्दों के आ'माल नामों को आस्मानों पर ले कर जाते और दरबारे इलाही

مدینہ

1 : या'नी मियां बीवी का "मिलाप"


में पेश करते हैं तो **अल्लाह** तआला फ़रमाता है : اَلْقِ تِلْكَ الصَّحِيْفَةَ اَلْقِ تِلْكَ الصَّحِيْفَةَ या'नी "इस नामए आ'माल को फेंक दो, इस नामए आ'माल को फेंक दो।" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : **या अल्लाह !** तेरे इस बन्दे ने जो नेक आ'माल किये हैं उन को हम ने देख कर और सुन कर लिखा है। **अल्लाह** तआला इर्शाद फ़रमाता है कि لَمْ يُرِدْ وَجْهِي या'नी "इस बन्दे ने इन आ'माल में मेरी रिज़ा की निय्यत नहीं की थी," इस लिये येह मेरे दरबार में मक़्बूल नहीं। फिर एक दूसरे फ़िरिश्ते को **अल्लाह** तआला येह हुक्म फ़रमाता है कि اُكْتُبْ لِفُلَانٍ كَذَا وَكَذَا या'नी "फुलां बन्दे के नामए आ'माल में फुलां फुलां अ़मल लिख दे।" फ़िरिश्ता अ़र्ज़ करता है : "**या अल्लाह !** येह अ़मल तो इस बन्दे ने नहीं किया !" **अल्लाह** तआला इर्शाद फ़रमाता है : गो इस ने येह अ़मल नहीं किया मगर **इस की निय्यत तो इस अ़मल के करने की थी इस लिये मैं इस की निय्यत पर इस को इस अ़मल का अज्र दूंगा।** (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء ج٢ص٣٠٦ رقم ٢٠٤٨ وغيره) हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मज़ीद फ़रमाते हैं : ह़दीसे मुबा-रका में येह भी आया है, نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी "मोमिन की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।" (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج٦ ص١٨٥ حديث ٥٩٤٢) ज़ाहिर है कि नेक अ़मल पर तो सवाब उसी वक़्त मिलेगा जब कि **निय्यत** अच्छी हो और अगर **निय्यत** बुरी हो तो नेक अ़मल पर कोई सवाब ही नहीं, मगर अच्छी **निय्यत** पर तो बहर ह़ाल सवाब मिलेगा ख़्वाह अ़मल करे या न करे। इस लिये कि मोमिन की **निय्यत** उस के अ़मल से बेहतर है। इसी लिये बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن ने फ़रमाया है

ہر کرا اندر عمل اِخلاص نیست
در جہاں از بندگانِ خاص نیست

या'नी जिस के अ़मल में इख़्लास नहीं वोह दुन्या में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ास बन्दों में से नहीं है

ہر کرا کار از برائے حق بُوَد
کارِ او پیوستہ بارَونق بُوَد

या'नी जिस का अ़मल रिज़ाए रब्बे लम यज़ल के लिये होता है हमेशा उस का अ़मल बा रौनक़ रहा करता है। (اشعة اللمعات ج١ ص ٣٩)




मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अच्छी निय्यत अच्छा और बुरी निय्यत बुरा फल लाती है। बल्कि बसा अवक़ात **बुरी निय्यत** का बुरा फल हाथों हाथ ज़ाहिर हो जाता है। इस ज़िम्न में **दो हिकायात** पेशे ख़िदमत हैं चुनान्चे

﴾1﴿ अनोखी गाय : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : एक बादशाह एक बार अपनी सल्त़नत के दौरे पर निकला। इस दौरान एक शख़्स के पास उस का क़ियाम हुवा, (मेज़बान बादशाह को जानता न था) मेज़बान ने शाम को अपनी गाय को दोहा तो बादशाह येह देख कर ह़ैरान रह गया कि उस से 30 गायों के बराबर दूध निकला ! उस ने दिल ही दिल में वोह **अनोखी गाय** छीन लेने की **बुरी निय्यत** कर ली। दूसरे रोज़ शाम को उस गाय से आधा दूध निकला, बादशाह ने जब **तअ़ज्जुब** का इज़्हार किया तो मेज़बान कहने लगा : "बादशाह ने अपनी रिआ़या के साथ ज़ुल्म की **निय्यत** की है जिस की नुहूसत से आज दूध आधा हो गया है कि जब बादशाह ज़ालिम हो तो ब-र-कत ख़त्म हो जाती है" येह ह़ैरत अंगेज़ इन्किशाफ़ सुन कर बादशाह ने **अनोखी गाय** ज़ुल्मन छीन लेने की **निय्यत** ख़त्म कर दी। चुनान्चे दूसरे दिन गाय ने फिर उतना ही दूध दिया जितना पहले दिया था। इस वाक़िए़ से बादशाह को बहुत इ़ब्रत ह़ासिल हुई और उस ने अपनी रिआ़या पर ज़ुल्म करना बन्द कर दिया। (مُلَخَّص ازشُعَبُ الْاِیمان ج٦ ص٥٣رقم٧٤٧٥)

﴾2﴿ गन्ने का ठन्डा मीठा रस : **ईरान** के बादशाहों का लक़ब पहले "किस्रा" हुवा करता था जिस त़रह़ मिस्र के तमाम बादशाह "फ़िरऔ़न" कहलाते थे। एक बार एक बादशाहे किस्रा अपने लश्कर से बिछड़ कर किसी बाग़ के दरवाज़े पर जा पहुंचा, उस ने पीने के लिये पानी मांगा तो एक बच्ची **गन्ने का ठन्डा मीठा रस** ले आई। बादशाह ने पिया तो बहुत लज़ीज़ था, उस ने बच्ची से इस्तिफ़्सार किया (या'नी पूछा) : कैसे बनाती हो ? उस ने बताया कि इस बाग़ में बहुत आ'ला क़िस्म के गन्नों की पैदावार होती है, हम अपने हाथों से गन्ने निचोड़ कर रस निकाल लेते हैं ! बादशाह ने एक और गिलास की फ़रमाइश की, वोह लेने गई, इस दौरान बादशाह की **निय्यत ख़राब** हो गई और उस ने तै कर लिया कि मैं येह बाग़ ज़बर दस्ती ले कर दूसरा

बाग़ इन को दे दूंगा। इतने में वोह बच्ची रोती हुई आई और कहने लगी : हमारे बादशाह की **निय्यत** ख़राब हो गई है। बादशाह बोला : तुम्हें इस का कैसे इल्म हुवा ? कहने लगी : "पहले ब आसानी रस **निचुड़** जाता था लेकिन अब की बार ख़ूब ज़ोर लगाने के बा वुजूद भी मैं रस न निकाल सकी।" बादशाह ने फ़ौरन बाग़ छीनने की बुरी **निय्यत** तर्क कर दी और कहा : एक बार फिर जाओ और कोशिश करो। चुनान्चे वोह गई और ब आसानी रस निकाल कर लाने में काम्याब हो गई।

(حیاۃ الحیوان الکبریٰ ج ۱ ص ۲۱٦، المنتظم فی تاریخ الملوک والامم لابن الجوزی ج ۱٦ ص ۳۱۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी किसी सुन्नत वग़ैरा पर अ़मल करने का मौक़अ़ हो तो उस वक़्त दिल में निय्यत हाज़िर होनी ज़रूरी है। म-सलन कपड़े पहनते वक़्त पहले सीधी आस्तीन में हाथ डाला, या उतारते वक़्त उलटी आस्तीन से पहल की, इसी त़रह़ जूते पहनने उतारने में ह़स्बे आ़दत येही तरकीब बनी येह सब सुन्नतें हैं मगर अ़मल करते वक़्त **सुन्नत** पर अ़मल की बिल्कुल ही **निय्यत** दिल में नहीं थी तो येह अ़मल "इ़बादत" नहीं, "आ़दत" कहलाएगा सुन्नत का सवाब नहीं मिलेगा।

निय्यत के मु-तअ़ल्लिक़ एक मा'लूमाती फ़तवा : दा'वते इस्लामी के मा तह़्त चलने वाले "दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत" का **निय्यत** के मु-तअ़ल्लिक़ एक मा'लूमाती **फ़तवा** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : बेशक बिग़ैर **निय्यत** के किसी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता बल्कि इस त़रह़ येह (बिला निय्यत की जाने वाली) **इ़बादतें** "आ़दतें" बन जाती हैं। किसी **अ़-मले ख़ैर में निय्यत** का मत़लब येह है कि जो अ़मल किया जा रहा है दिल उस की त़रफ़ **मु-तवज्जेह** हो और वोह अ़मल **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये किया जा रहा हो, इस निय्यत से इ़बादत और आ़दत में फ़र्क़ करना मक़्सूद होता है। इस से पता चला कि **दिल का मु-तवज्जेह होना और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा पेशे नज़र होना ही निय्यत है** और इसी से इ़बादत और आ़दत में फ़र्क़ होता है लिहाज़ा अगर इ़बादत में **निय्यत** कर ली जाए तो सवाब मिलता है और अगर **निय्यत** न की जाए तो अ़मल आ़दत बन जाता है और इस पर सवाब भी नहीं मिलता जैसा कि ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی

फ़रमाते हैं : اَلنِّيَّةُ لُغَةً:اَلْقَصْدُ وَشَرْعاً تَوَجُّهُ الْقَلْبِ نَحْوَالْفِعْلِ ابْتِغَاءَ لِّوَجْهِ اللّٰهِ وَالْقَصْدُ بِهَا تَمْيِيزُالْعِبَادَةِ عَنِ الْعَادَةِ या'नी निय्यत के **लु-ग़वी मा'ना** हैं : "क़स्द व इरादा" और **शर-ई मा'ना** हैं : जो अ़मल करने लगे हैं, दिल को उस की त़रफ़ **मु-तवज्जेह** करना और वोह अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किया जा रहा हो और निय्यत से "इ़बादत" और "आ़दत" में फ़र्क़ करना मक़्सूद होता है । (مرقاۃ المفاتیح ج ١ ص ٩٤) लेकिन इस के साथ येह याद रहे कि बहुत से आ'माल ऐसे हैं कि जिन में हम मह़सूस करते हैं कि येह मह़ज़ आ़दत के त़ौर पर कर रहे हैं ह़ालां कि इस में भी "इ़बादत की निय्यत" मौजूद होती है और इस का एह़सास इस लिये कम होता है कि इब्तिदाअन या बत़ौरे ख़ास जिस क़दर तवज्जोह दी जाती है वोह बारहा अ़मल करने की वजह से बर क़रार नहीं रहती । हां अगर अस्लन (या'नी बिल्कुल) ही निय्यत कुछ न हो तो उस पर वाक़ेई कोई सवाब नहीं । وَاللّٰہُ تَعَالٰی وَرَسُوْلُہٗ اَعلَم صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

अच्छी निय्यतों की तौफ़ीक़ किसे मिलती है : **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : हर **मुबाह़** काम (या'नी जाइज़ काम जिस के करने में न सवाब हो न गुनाह) एक या ज़ियादा **निय्यतों** का एह़तिमाल (या'नी इम्कान) रखता है जिस के ज़रीए़ वोह मुबाह़ काम उ़म्दा **इ़बादात** में से हो जाता है और उस के ज़रीए़ बुलन्द द-रजात ह़ासिल होते हैं । वोह इन्सान कितने बड़े नुक़्सान में है जो मुबाह़ कामों को **अच्छी निय्यतों** के ज़रीए़ सवाब वाले काम बनाने के बजाए जानवरों की त़रह़ ग़फ़्लत से बजा लाता और ख़ुद को सवाबों से मह़रूम रखता है । बन्दे के लिये मुनासिब नहीं कि किसी ख़त़रे (या'नी ज़ेह्न में आने वाले ख़याल) लह़ज़े (या'नी लम्ह़े) और उठाए जाने वाले क़दम को ह़क़ीर या'नी ग़ैर अहम जाने, क्यूं कि इन तमाम कामों के बारे में क़ियामत के दिन सुवाल होगा कि क्यूं किया था ? और इस से मक़्सूद क्या था ? येह बात (या'नी मुबाह़ का अच्छी निय्यत के ज़रीए़ इ़बादत बन जाना) सिर्फ़ उन मुबाह़ उमूर के बारे में है जिन में कराहत न हो । इसी लिये नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : حَلالُهَا حِسَابٌ وَّحَرَامُهَا عَذَابٌ ۔ या'नी इस के ह़लाल में ह़िसाब है और ह़राम में अ़ज़ाब । (اَلْفِردَوس بمأثور الْخطّاب ج٥ ص٢٨٣ حديث ٨١٩٢) मज़ीद फ़रमाते हैं : जिस के दिल में आख़िरत की भलाइयां इकट्ठी करने का जज़्बा होता है उस के लिये इस त़रह़ की

निय्यतें करना आसान होता है अलबत्ता जिस के दिल में दुन्यवी ने'मतों का ग़-लबा हो उस के दिल में इस त़रह़ की **निय्यतें** नहीं आतीं बल्कि कोई याद दिलाए तब भी उस के अन्दर इस क़िस्म की निय्यतों का जज़्बा पैदा नहीं होता और अगर निय्यत हो भी तो मह़्ज़ एक ख़याल सा होता है ह़क़ीक़ी निय्यत से इस का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं होता ! (اِحیاءُ الْعُلوم ج ٥ ص ٩٨)

वॉशरूम जाने में भी निय्यतें करनी चाहिएं : **बैतुल ख़ला** जाने में भी निय्यतें करनी चाहिएं एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं हर काम में निय्यत पसन्द करता हूं ह़त्ता कि खाने, पीने, सोने और बैतुल ख़ला (या'नी लेट्रीन) में दाख़िल होने के लिये भी । (اِحیاءُ الْعُلوم ج ٥ ص ٩٨)

एक साह़िब छत पर बाल बना रहे थे, उन्हों ने अपनी बीवी को आवाज़ दी कि मेरी **कंघी** लाना । औ़रत ने पूछा : क्या **आईना** भी लेती आऊं ? वोह थोड़ी देर ख़ामोश रहे । फिर फ़रमाया : हां । किसी सुनने वाले ने जवाब फ़ौरन न देने की वजह दरयाफ़्त की तो फ़रमाया : मैं ने **एक निय्यत** के साथ अपनी ज़ौजा को **कंघी** लाने के लिये कहा था, जब उन्हों ने **आईना** लाने का पूछा तो उस वक़्त आईने के सिल्सिले में मेरी कोई **निय्यत** न थी लिहाज़ा मैं ने निय्यत बनाने के लिये ग़ौरो फ़िक्र किया, ह़त्ता कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे **निय्यत** इनायत फ़रमाई इस पर मैं ने कह दिया : हां । वोह भी ले आइये । (قُوتُ القُلُوب ج ٢ ص ٢٧٤)

पहले के मुसल्मान बा क़ाइदा इल्मे निय्यत सीखते थे : **ह़ज़रते** सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : "जैसे सलफ़ (या'नी पहले के मुसल्मान) इल्म ह़ासिल करते थे इसी त़रह़ अ़मल के लिये **इल्मे निय्यत** भी सीखते थे ।" (ایضاً ص ٢٦٨) ह़ज़रते सय्यिदुना सरी स-क़त़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "ख़ुलूसे निय्यत के साथ दो रक्अ़तें पढ़ना तेरे लिये सत्तर अह़ादीस लिखने से बेहतर है ।" या येह फ़रमाया कि "सात सो अह़ादीस लिखने से बेहतर है ।" (ایضاً ص ٢٧٦) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "कई छोटे अ़मल ऐसे हैं जिन को **निय्यत** बड़ा अ़मल बना देती है ।" (ایضاً ص ٢٧٥)

ग़ार का आ़बिद : लोगों को दिखाने और वाह वाह करवाने की निय्यत से किये जाने वाले पहाड़ जितने बड़े बड़े आ'माल भी ना मक़्बूल होते हैं चुनान्चे मन्क़ूल है : बनी इस्राईल के एक आ़बिद (या'नी इ़बादत करने वाले) ने एक ग़ार में चालीस बरस तक **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत की। फ़िरिश्ते उस के आ'माल ले कर आस्मानों पर जाते और वोह क़बूल न किये जाते। फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की : "ऐ हमारे परवर दगार तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! हम ने तेरी त़रफ़ सह़ीह़ (आ'माल) उठाए हैं।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! तुम ने सच कहा, मगर (इ़बादत में उस की **निय्यत** बुरी होती है) वोह चाहता है कि इस का मक़ाम (सब को) मा'लूम हो जाए (या'नी रिया व शोहरत का त़लब गार है)

(ایضاًص٢٦٤)

निय्यत की ब-र-कत से मग़्फ़िरत की दिलचस्प ह़िकायत : मन्क़ूल है कि एक **अ़-जमी** (या'नी ग़ैर अ़-रबी शख़्स) चन्द आदमियों (अ़-रबिय्यों) के पास से गुज़रा जो बैठे मज़ाक़ और छेड़छाड़ में मसरूफ़ थे। (अ़-रबी के जुम्ले सुन कर) वोह ग़रीब समझा कि येह लोग **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कर रहे हैं, उस ने ह़ुस्ने निय्यत के मुत़ाबिक़ (या'नी अच्छी निय्यत के साथ) उन की त़रह़ कहना शुरूअ़ कर दिया। कहा जाता है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अच्छी निय्यत की वजह से उस **अ़-जमी** को बख़्श दिया। (ایضاًص٢٦٣)

अच्छी निय्यतें दुश्वार हैं इस से तो पीठ पर कोड़े खाना आसान है :

अच्छी अच्छी निय्यतें करने के लिये ज़रूरी है कि ज़ेहन ह़ाज़िर रहे, जो अच्छी निय्यतों का आ़दी नहीं है उसे शुरूअ़ में ब तकल्लुफ़ इस की आ़दत बनानी पड़ेगी लिहाज़ा इब्तिदाअन इस के लिये सर झुकाए, आंखें बन्द कर के ज़ेहन को मुख़्तलिफ़ ख़यालात से ख़ाली कर के यक्सू हो जाना मुफ़ीद है। इधर उधर नज़रें घुमाते हुए, बदन सहलाते खुजाते हुए, कोई चीज़ रखते उठाते हुए या जल्द बाज़ी के साथ **निय्यतें** करना चाहेंगे तो शायद हो नहीं पाएंगी। **निय्यतों** की आ़दत बनाने के लिये इन की **अहम्मिय्यत** पर नज़र रखते हुए आप को सन्जी-दगी के साथ पहले अपना ज़ेहन बनाना पड़ेगा। ह़ज़रते सय्यिदुना नुऐ़म बिन

ह़म्माद علیہ رَحْمَۃُ اللہِ الجَوَاد फ़रमाते हैं : **"हमारी पीठ का कोड़े खाना अच्छी निय्यत के मुक़ाबले में आसान है ।"** (تَنبِیهُ المُغتَرِّین ص ۲۰)

दुन्यवी ने'मतों के सबब आख़िरत की ने'मतों में कमी आएगी :

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی का इर्शादे आ़ली है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होना गुनाह नहीं है, लेकिन इस से **सुवाल** ज़रूर होगा और जिस से ह़िसाब में पूछगछ हुई वोह हलाक हो जाएगा और जो आदमी दुन्या में मुबाह़ चीज़ों को इस्ति'माल करता है अगर्चे इसे क़ियामत में इस पर अ़ज़ाब नहीं होगा लेकिन इसी मिक़्दार में आख़िरत की ने'मतें कम हो जाएंगी, ग़ौर तो कीजिये ! कितने बड़े नुक़्सान की बात है कि इन्सान फ़ानी ने'मतों के ह़ुसूल में बहुत जल्दी करे और इस के बदले उख़रवी ने'मतों में कमी के ज़रीए नुक़्सान उठाए ।"

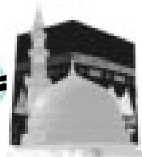
(إحياءُ العُلوم ج ٥ ص ٩٨)

दुन्यवी लज़्ज़ात का दिल से मिटा दे शौक़ तू
कर अ़त़ा अपनी इ़बादत का इलाही ज़ौक़ तू

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ख़ुश्बू लगाने की निय्यतें : **अल्लाह** तआ़ला की बे शुमार ने'मतों में से **ख़ुश्बू** भी एक बहुत प्यारी ने'मत है, इस का इस्ति'माल करना मुबाह़ (या'नी न सवाब न गुनाह) है, येह ने'मत इस त़रह़ इस्ति'माल करनी चाहिये कि **इ़बादत** बन जाए और सवाब हाथ आए । चुनान्चे इस को "इ़बादत" बनाने के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें करनी होंगी । जब भी कोई काम करने लगें तो एक दम शुरूअ़ मत कर दीजिये, पहले कुछ ठहर जाइये और ज़ेह्न पर ज़ोर दे कर **अच्छी अच्छी नियतें** कर लीजिये । म-सलन ख़ुश्बू लगानी है तो उस की शीशी उठाने से क़ब्ल और अगर उठा ही ली है तो खोलने से पहले यक्सूई






के साथ, सर झुका कर हो सके तो आंखें बन्द कर के इत्मीनान से और ख़ूब तवज्जोह के साथ **निय्यतें** कीजिये। **इत्र** लगाने के ज़रीए मुख़्तलिफ़ सवाबात कमाने का मश्वरा देते हुए **आ़रिफ़ बिल्लाह, मुहृक़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन,** ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : मुबाह़ कामों में भी अच्छी निय्यत करने से सवाब मिलेगा, म-सलन ख़ुश्बू लगाने में इत्तिबाए़ सुन्नत और (मस्जिद में जाते हुए लगाने पर) ता'ज़ीमे मस्जिद (की निय्यत भी की जा सकती है), फ़रह़ते दिमाग़ (या'नी दिमाग़ की ताज़गी) और अपने इस्लामी भाइयों से ना पसन्दीदा बू दूर करने की निय्यतें हों तो **हर निय्यत का अलग सवाब** मिलेगा। (اشعۃ اللمعات ج۱ ص۳۷) यहां ह़स्बे ह़ाल **मज़ीद निय्यतें** भी शामिल की जा सकती हैं म-सलन **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर शीशी उठाऊंगा, **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर ढक्कन खोलूंगा, **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर लगाऊंगा, मुसल्मानों और फ़िरिश्तों को ख़ुश्बू से फ़रह़त (या'नी सुरूर व ख़ुशी) पहुंचाऊंगा, (ख़ुसूसन गरमी में कपड़ों के अन्दर अगर पसीने की बदबू हो जाती हो तो येह निय्यत भी की जा सकती है कि) ख़ुद से बदबू दूर कर के मुसल्मानों को **ग़ीबत** से बचाऊंगा, (नमाज़ से क़ब्ल लगाने में येह निय्यत भी शामिल कर सकते हैं कि) नमाज़ के लिये ज़ीनत ह़ासिल करूंगा। ख़ुश्बू सूंघ कर **दुरूद शरीफ़** पढ़ूंगा, (ख़ुश्बू ने'मत है इस लिये इस्ति'माल करने और सूंघने में बत़ौरे शुक्रे इलाही) اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहूंगा। ख़ुश्बू लगाऊंगा ताकि अ़क़्ल में इज़ाफ़ा हो, इस से दीनी अह़काम (दीनी ता'लीम, दीनी तदरीस, सुन्नतों भरे बयान वग़ैरा) समझने में मदद ह़ासिल करूंगा। "एह़याउल उ़लूम" में है : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "**जिस की ख़ुश्बू अच्छी हो उस की अ़क़्ल में इज़ाफ़ा होता है।**" (إحياءُ العُلوم ج ٥ ص ٩٨)

ख़ुश्बू लगाने की ग़लत़ निय्यतों की निशान देही : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुश्बू लगाने में अक्सर शैत़ान ग़लत़ **निय्यत** में मुब्तला कर देता है। लिहाज़ा इत्र लगाने में **अच्छी निय्यतों** का ख़ुसूसी एहतिमाम होना चाहिये। चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ामिद इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی का फ़रमाने आ़ली है : इस निय्यत से ख़ुश्बू लगाना कि लोग वाह वाह करें या क़ीमती ख़ुश्बू लगा कर लोगों पर अपनी मालदारी का सिक्का बिठाने





की निय्यत हो तो इन सूरतों में ख़ुश्बू लगाने वाला गुनहगार होगा और ख़ुश्बू बरोज़े क़ियामत मुर्दार से भी ज़ियादा बदबूदार होगी । (ایضاً)

दुन्या पसन्द करती है इत्रे गुलाब को
लेकिन मुझे नबी का पसीना पसन्द है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की ब-र-कत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बुरी निय्यतों से नजात **और अच्छी निय्यतों** की आ़दात नसीब होंगी । **कोरंगी** (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है, मेरी फ़ौज में मुला-ज़मत थी और मैं मॉडर्न नौ जवान था, अलबत्ता नमाज़ पढ़ा करता था । अम्मीजान की बीमारी के बाइ़स सख़्त तश्वीश थी, एक इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दी, मैं ने मा'ज़िरत चाहते हुए उन से कहा : अम्मीजान सख़्त बीमार हैं ऐसी ह़ालत में उन्हें छोड़ कर सफ़र नहीं कर सकता । उन्हों ने मश्वरा दिया : "आप सिर्फ़ म-दनी क़ाफ़िले में **सफ़र की निय्यत** कर लीजिये कि जब भी मौक़अ़ मिला, कर लूंगा और आज नमाज़े **तहज्जुद** अदा कर के गिड़गिड़ा कर अम्मीजान की सिह़्ह़त याबी के लिये दुआ़ फ़रमाइये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़रूर करम होगा ।" उन्हों ने येह बात कुछ ऐसे दिल नशीन अन्दाज़ में कही कि दिल को लग गई और मैं ने **सफ़र की निय्यत** कर ली । रात उठ कर **तहज्जुद** अदा कर के ख़ूब रो रो कर दुआ़ मांगी, फिर नमाज़े **फ़ज्र** के लिये मस्जिद का रुख़ किया, वापसी पर जब घर पहुंचा तो ह़ैरत से खड़े का खड़ा ही रह गया ! क्या देखता हूं कि मेरी वोह ज़ार नज़ार (या'नी कमज़ोर) और सख़्त बीमार अम्मीजान जो ख़ुद उठ कर

बैतुल ख़ला (या'नी वॉशरूम) भी नहीं जा सकती थीं बैठी इत्मीनान से कपड़े धो रही हैं ! मैं ने अ़र्ज़ की ! अम्मीजान ! आप आराम फ़रमाइये कहीं त़बीअ़त ज़ियादा न बिगड़ जाए, मैं ख़ुद कपड़े धो लूंगा । इस पर फ़रमाया : बेटा ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज मुझे न कोई दर्द है न तक्लीफ़, मैं अपने आप को बहुत हलकी फुलकी मह़सूस कर रही हूं । येह सुन कर मेरी आंखों में ख़ुशी के आंसू आ गए, मेरे दिल में एक इत्मीनान की कैफ़िय्यत पैदा हुई कि **सफ़र की निय्यत** की ब-र-कत से दुआ़ को मक़्बूलिय्यत मिल गई है । इस्लामी भाई से मुलाक़ात पर तफ़्सील अ़र्ज़ की, तो उन्हों ने ख़ूब ह़ौसला बढ़ाया और हम-दर्दाना मश्वरा दिया कि बिला ताख़ीर **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र कर लीजिये । लिहाज़ा मैं **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र और इस दौरान आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की ब-र-कत से हमारे घर में **म-दनी माह़ोल** बन गया, मुझ जैसा मॉडर्न नौ जवान दाढ़ी और इमामा सजा कर सुन्नतों की ख़िदमत में लग गया, अम्मीजान और मेरे बच्चों की मां दोनों इस्लामी बहनों के इज्तिमाअ़ में शिर्कत करती हैं । ग़ौर फ़रमाइये ! मैं ने सिर्फ़ म-दनी क़ाफ़िले में **सफ़र की निय्यत** की और इस के सबब ब-र-कत ही ब-र-कत हो गई तो न जाने म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरे सफ़र की क्या क्या म-दनी बहारें होंगी ! काश ! हर इस्लामी भाई हर माह कम अज़ कम तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र का आ़दी बन जाए ।

अच्छी निय्यत का फल पाओगे बे बदल — सब करो निय्यतें क़ाफ़िले में चलो
दूर बीमारियां और ना दारियां — हों टलें मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **म-दनी क़ाफ़िले** की निय्यत करने वाले का बेड़ा पार हो गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मां की सिह़्ह़त के साथ साथ घर भर के लिये आख़िरत की राह़त के ह़ुसूल के लिये तय्यारियों का भी सामान हो गया । वाक़ेई **अच्छी निय्यत** फिर अच्छी निय्यत होती है । अच्छी निय्यत से **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करने के क्या कहने !

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

जब जूता पहनने में उलटे पाउं से पहल की तो...... : **हुज़ूर** मुहद्दिसे आ'ज़मे पाकिस्तान हज़रते अल्लामा मौलाना सरदार अहमद क़ादिरी चिश्ती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के एक शागिर्दे रशीद फ़रमाते हैं कि मैं 1955 सि. ई. में जब दौरए हदीस शरीफ़ से फ़ारिग़ हुवा और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रुख़्सत ले कर आने लगा, मैं ने ग़-लती से अपना जूता पहले बाएं (या'नी उलटे) पाउं में पहन लिया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने देख कर मुझे फ़ौरन वापस बुला लिया, मुझे अपनी ग़-लती का एहसास हो गया, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने (मुझे नेकी की दा'वत देते हुए) फ़रमाया : "जूता पहनने में **सुन्नत** येह है कि पहले दाएं (या'नी सीधे) पाउं में पहना जाए और जूता उतारने की सुन्नत येह है कि पहले बाएं (या'नी उलटे) पाउं से उतारा जाए।" (हयाते मुहद्दिसे आ'ज़म, स. 85)

जूते पहनने की निय्यतें : **कोई** सा भी काम हो एक दम शुरूअ़ कर देने के बजाए पहले कुछ ठहर कर **निय्यत** करने की आ़दत बनानी चाहिये म-सलन **जूते पहनने लगे** हैं तो रुक जाइये और हस्बे हाल पहले येह **निय्यतें** कर लीजिये : ★ इत्तिबाए़ सुन्नत में जूते पहनूंगा ★ चलने वाले के जूतों की आवाज़ चूंकि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ना पसन्द थी इस लिये राह चलते या सीढ़ी चढ़ते उतरते हुए आवाज़ न पैदा हो इस का ख़याल रखूंगा ★ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ कर पहनूंगा ★ जूते के ज़रीए़ पाउं को ज़ख़्म या गन्दगी वग़ैरा से महफ़ूज़ रखने की कोशिश के ज़रीए़ **इबादत** पर मदद हासिल करूंगा ★ पहनने में सीधे जूते से पहल करने की सुन्नत अदा करूंगा ★ सुन्नते **तन्ज़ीफ़** अदा करूंगा या'नी पाउं को मैल कुचैल से बचाऊंगा। इसी त़रीक़े पर हस्बे हाल मज़ीद निय्यतें भी की जा सकती हैं। इसी त़रह **जूते उतारते वक़्त** भी بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ने, उलटे से पहल करने, मौक़अ़ हो तो बुज़ुर्गों की अदा की मुशा-बहत करते हुए जूतों का अगला रुख़ क़िब्ले की त़रफ़ रखने वग़ैरा की **निय्यतें** हो सकती हैं। जूते **क़िब्ला रुख़** रखने के **मु-तअ़ल्लिक़** अ़र्ज़ है, हुज़ूर मुहद्दिसे आ'ज़मे पाकिस्तान हज़रत मौलाना सरदार अहमद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد के शागिर्द व मुरीद मेरे मख़्दूम

व मोह़तरम ह़ज़रते क़िब्ला मुफ़्ती अ़ब्दुल्लत़ीफ़ साह़िब اطال اللہ عمرہٗ की सोह़बत में चन्द रोज़ गुज़ारने की सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को सआ़दत मिली, उन दिनों मुफ़्ती साह़िब مُدَّظِلُّہٗ का येह अ़मल देखा कि हमारे बे तरतीब रखे हुए जूतों, **चप्पलों** का रुख़ अपने दस्ते मुबारक से जानिबे क़िब्ला फ़रमा देते थे मैं ने **मु-तअ़ज्जिब** हो कर सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया कि मैं ने क़िब्ला उस्ताज़े गिरामी ह़ुज़ूरे मुह़द्दिसे आ'ज़म मौलाना सरदार अह़मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الصَّمَد को देखा है कि आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالی عَلَیْہ न सिर्फ़ जूते बल्कि हर चीज़ क़िब्ला रू रखना पसन्द फ़रमाते थे और इस अ़मल में **सरकारे ग़ौसे आ'ज़म** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم की इस ह़िकायत की त़रफ़ इशारा किया : चुनान्चे

लोटा क़िब्ला रुख़ हो गया : **एक** बार जीलान शरीफ़ के मशाइख़े किराम رَحِمَھُمُ اللہُ تَعَالٰی का एक वफ़्द ह़ुज़ूर सय्यिदुना **ग़ौसे आ'ज़म** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم की ख़िदमते सरापा अ़-ज़मत में ह़ाज़िर हुवा, उन्हों ने आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالی عَلَیْہ के लोटे शरीफ़ को ग़ैरे क़िब्ला रुख़ पाया (तो उस की त़रफ़ आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالی عَلَیْہ की तवज्जोह दिलाई इस पर) आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالی عَلَیْہ ने अपने ख़ादिम को जलाल भरी नज़र से देखा। वोह आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالی عَلَیْہ के जलाल की ताब न लाते हुए एक दम गिरा और तड़प तड़प कर जान दे दी। अब एक नज़र लोटे पर डाली तो वोह ख़ुद बख़ुद **क़िब्ला रुख़** हो गया। (بہجۃ الاسرار ص ۱۰۱)

अच्छों की नक़्ल भी अच्छी होती है : **येह** आ़म दस्तूर है कि जिस से **मह़ब्बत** होती है उस की हर अदा प्यारी लगती है, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم और, ह़ुज़ूरे मुह़द्दिसे आ'ज़मे पाकिस्तान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان से बहुत **मह़ब्बत** है। लिहाज़ा जब से आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالی عَلَیْہ की येह अदा मा'लूम हुई है इस अदा को अदा करने की आ़दत बना ली है और अपने लोटे, चप्पल और दीगर चीज़ों का अगला रुख़ जानिबे क़िब्ला रहे इस की कोशिश रहती है। अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ **अल्लाह** वालों की नक़्क़ाली में यक़ीनन ब-र-कत ही ब-र-कत है और क्यूं न हो कि काएनात के तमाम **अल्लाह** वालों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تعالی عَلَیْہِ وَ الِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : اَلْبَرَکَۃُ مَعَ اَکَابِرِکُم या'नी ब-र-कत तुम्हारे बुज़ुर्गों के साथ है। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۶ ص ۳۴۲ حدیث ۸۹۹۱)

"चल मदीना" के सात हुरूफ़ की निस्बत से जूते पहनने के 7 म-दनी फूल

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ 32 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला, **"101 म-दनी फूल"** सफ़्ह़ा 20 ता 22 से (मअ़ तसर्रुफ़) अ़र्ज़ है : **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : ﴿1﴾ जूते ब कसरत इस्ति'माल करो कि आदमी जब तक जूते पहने होता है गोया वोह सुवार होता है । (या'नी कम थकता है) (مُسلِم ص۱۱۶۱حدیث۲۰۹۶) ﴿2﴾ जूते पहनने से पहले झाड़ लीजिये ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए, कहते हैं किसी जगह दा'वत में फ़ारिग़ हो कर एक साह़िब ने जूं ही जूता पहना चीख़ निकल गई और पाउं लहू लुहान हो गया । दर अस्ल बात येह हुई कि खाने के दौरान किसी ने नोकदार हड्डी फेंकी तो वोह जूते के अन्दर चली गई और पहनने वाले ने जूते झाड़े बिग़ैर पहने तो पाउं ज़ख़्मी हो गया ﴿3﴾ सुन्नत येह है कि पहले सीधा जूता पहनिये फिर उलटा और उतारते वक़्त पहले उलटा जूता उतारिये फिर सीधा । **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम में से कोई जूते पहने तो दाईं (या'नी सीधी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये और जब उतारे तो बाईं (या'नी उलटी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये ताकि दायां (या'नी सीधा) पाउं पहनने में अव्वल और उतारने में आख़िरी रहे । (بُخاری ج ٤ ص ٦٥ حدیث ٥٨٥٥) **नुज़्हतुल क़ारी** में है : मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त हुक्म येह है पहले सीधा पाउं मस्जिद में रखे और जब मस्जिद से निकले तो पहले उलटा पाउं निकाले । मस्जिद के दाख़िले के वक़्त इस (जूते पहनने की तरतीब वाली) ह़दीस पर अ़मल दुश्वार है । **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने इस का ह़ल येह इर्शाद फ़रमाया है : जब मस्जिद में जाना हो तो पहले उलटे पाउं को निकाल कर जूते पर रख लीजिये फिर सीधे पाउं से जूता निकाल कर मस्जिद में दाख़िल हों । और जब मस्जिद से बाहर हों तो उलटा पाउं निकाल कर जूते पर रख लीजिये फिर सीधा पाउं निकाल कर सीधा जूता पहन लीजिये फिर उलटा पहन लीजिये । (नुज़्हतुल क़ारी जि. 5, स. 530) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जो शख़्स हमेशा जूता पहनते वक़्त

सीधे पाउं से और उतारते वक़्त उलटे पाउं से पहल करे वोह **तिल्ली की बीमारी** से मह़फ़ूज़ रहेगा। (حياة الحيوان ج٢ ص ٢٨٩) **《4》** मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना जूता इस्ति'माल करे **《5》** किसी ने **ह़ज़रते** सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا से अ़र्ज़ की, कि एक औ़रत (मर्दों की त़रह़) जूते पहनती है । उन्हों ने फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मर्दानी औ़रतों पर ला'नत फ़रमाई है। (اَبُو دَاوٗد ج٤ ص ٨٤ حديث ٤٠٩٩)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : या'नी औ़रतों को मर्दाना जूता नहीं पहनना चाहिये बल्कि वोह तमाम बातें जिन में मर्दों और औ़रतों का इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) होता है इन में हर एक को दूसरे की वज़्अ़ इख़्तियार करने (या'नी नक़्क़ाली करने) से मुमा-न-अ़त है, न मर्द औ़रत की वज़्अ़ (त़र्ज़) इख़्तियार करे, न औ़रत मर्द की । (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 422) **《6》** जब बैठें तो जूते उतार लीजिये कि इस से क़दम आराम पाते हैं **《7》** इस्ति'माली जूता उलटा पड़ा हो तो सीधा कर दीजिये। (तंग दस्ती का एक सबब येह भी है कि) औंधे जूते को देखना और उस को सीधा न करना। हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 (304 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "सुन्नतें और आदाब" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये।

आ'ला ह़ज़रत की ख़िदमत में सुवाल : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में कुछ यूं अ़र्ज़ की गई : कुछ ग़रीब मुसल्मान ब ग़-रज़े **तब्लीग़े सलात** (या'नी नमाज़ की तब्लीग़ के लिये) शहर से बाहर मवा-ज़ेआ़त (या'नी बा'ज़ देहात) में पैदल, धूप और प्यास की तक्लीफ़ उठा कर बिला किसी ज़ाती नफ़्अ़ के लालच के **फ़ी सबीलिल्लाह** आधी रात से उठ कर गए और दूसरे दिन वापस आए, बा'ज़ लोग उन में भूके प्यासे भी शामिल थे, उन की कोशिश से तक़्रीबन एक सो मुसल्मान मुस्तइदे नमाज़ (या'नी नमाज़ के लिये तय्यार) हुए। बयान किया जाए कि उन के लिये क्या अज्र है ताकि आगे हिम्मत बढ़े। हमारे इस नेक काम करने पर एक शख़्स ने कहा : "इस में रखा ही

क्या है ! कोई अपने लिये नमाज़ पढ़ेगा तुम क्यूं कोशिश करते हो ।" वोह शख़्स कैसा है जो लोगों का हौसला पस्त करता है ?

आ'ला ह़ज़रत का जवाब : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने कुछ इस त़रह़ **जवाब** इर्शाद फ़रमाया : नमाज़ की दा'वत देने वालों के लिये उन की **निय्यत** पर अज्रे अज़ीम है, नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए़ किसी एक शख़्स को हिदायत अ़त़ा फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास **सुर्ख़ ऊंट** हों ।" (صَحیح مُسلِم ص ١٣١١ حدیث ٢٤٠٦) हिदायत को जाने के लिये आते जाते जितने क़दम उन के पड़े हर क़दम पर दस नेकियां हैं, (चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला पारह **22 सूरए यासीन** की आयत नम्बर 12 में इर्शाद फ़रमाता है :)

وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ؕ
(پ٢٢ سورۃ یٰس:١٢)

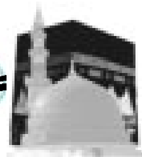
तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम लिख रहे हैं जो उन्हों ने आगे भेजा और जो निशानियां पीछे छोड़ गए ।

येह कहना कि "**तुम क्यूं कोशिश करते हो**" शैत़ानी क़ौल है । اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَہْیٌ عَنِ الْمُنْکَر (या'नी नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना) **फ़र्ज़** है, फ़र्ज़ से रोकना शैत़ानी काम है । (शिकार की मुमा-न-अ़त के बा वुजूद) बनी इस्राईल में से जिन्हों ने (हफ़्ते को) मछली का शिकार किया था वोह भी **बन्दर** कर दिये गए और जिन्हों ने उन्हें नसीह़त करने को मन्अ़ किया था (वोह भी तबाह हो गए) (मन्अ़ करने वालों का क़ौल पारह 9 **सू-रतुल आ'राफ़** की आयत नम्बर 164 में बयान किया गया है :)

لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्यूं नसीह़त करते हो उन लोगों को जिन्हें **अल्लाह** हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अ़ज़ाब देने वाला ।

(तो गुनाह से रोकने वालों को गुनाह से रोकने के कारे ख़ैर से मन्अ़ करने वाले) भी तबाह हुए और नसीह़त करने वालों ने नजात पाई । और येह कहना कि "**इस** (या'नी नमाज़ की दा'वत देने के काम) **में रखा ही क्या है !**" सब से सख़्त कलिमा है, कहने


वाले को तज्दीदे इस्लाम व तज्दीदे निकाह़ चाहिये। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعۡلَمُ۔

(मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 117)

सुर्ख़ ऊंटों से क्या मुराद है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه के इस मुबारक फ़तवे में नेकी की दा'वत देने वालों की ह़ौसला शि-कनी करने वालों के इस जुम्ले "तुम क्यूं कोशिश करते हो" को शैत़ानी क़ौल क़रार दे कर इस की मज़म्मत की गई है, यहां वोह लोग इब्रत ह़ासिल करें जो बसा अवक़ात **मुबल्लिग़ीन** से कह देते हैं कि "छोड़ो छोड़ो इस को समझाने का क्या फ़ाएदा। येह तो नेकी की बात मानता ही नहीं" (गुनाह छोड़ता ही नहीं, सुधरता ही नहीं, राहे रास्त पर आता ही नहीं) येह जुम्ला बिल्कुल ग़लत़ ग़लत़ और ग़लत़ है यक़ीनन समझाना फ़ाएदे से ख़ाली होता ही नहीं, अच्छी निय्यत हो तो इस्लाह़ के लिये समझाना कारे सवाब है तो क्या "सवाब" मिलने में "फ़ाएदा" नहीं ? "येह मानता ही नहीं !" बोल कर आप क्या कहना चाहते हैं ? क्या आप नहीं जानते कि मुबल्लिग़ की ज़िम्मेदारी "मनवाना" नहीं फ़क़त़ "पहुंचाना" है मनवाने वाली ज़ात रब्बे काएनात جَلَّ جَلَالُهٗ की है। इस फ़तवे में "मुस्लिम शरीफ़" की येह ह़दीसे पाक बयान की गई है कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए़ किसी एक शख़्स को हिदायत अ़त़ा फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास **सुर्ख़ ऊंट** हों। (مُسلِم ص۱۳۱۱ حدیث ۲٤۰٦) **ह़ज़रते** अ़ल्लामा यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی इस ह़दीसे न-बवी की शर्ह़ में लिखते हैं : "**सुर्ख़ ऊंट** अहले अ़रब का बेश क़ीमत माल समझा जाता था, इस लिये ज़र्बुल मसल (या'नी कहावत) के त़ौर पर सुर्ख़ ऊंटों का ज़िक्र किया गया। उख़्रवी उमूर की दुन्यवी चीज़ों से तश्बीह (या'नी मिसाल) सिर्फ़ समझाने के लिये है वरना ह़क़ीक़त येही है कि हमेशा बाक़ी रहने वाली आख़िरत का एक ज़र्रा भी दुन्या और इस जैसी जितनी दुन्याएं तसव्वुर की जा सकें, उन सब से बेहतर है।" (شَرحِ مُسلِم لِلنَّوَوی ج۱۵ ص۱۷۸)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الۡحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी एक काफ़िर को मुसल्मान बनाना दुन्या की बड़ी दौलत से भी बेहतर है बल्कि काफ़िर को क़त्ल करने से बेहतर है कि उसे रग़बत दे कर




फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (حاکم)

मुसल्मान कर लिया जावे कि (**अल्लाह** ने चाहा तो) इस से उस की (आयन्दा) सारी नस्ल मुसल्मान होगी। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 8, स. 416)

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की 44 निय्यतें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से किये जाने वाले सुवाल के ज़रीए़ येह भी मा'लूम हुवा कि नमाज़ों का जज़्बा रखने वाले उस दौर के मुसल्मान भी नेकी की दा'वत के लिये क़ाफ़िले में सफ़र किया करते थे और अब तो फ़ैज़ाने रज़ा से इस म-दनी काम के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी म-दनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** भी क़ाइम हो गई है। जिस का म-दनी पैग़ाम ता दमे तह़रीर कमो बेश दुन्या के 150 मुल्कों में पहुंच चुका है ! सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िरों के तो बस वारे ही न्यारे हो जाते और नेकियों के ढेर लग जाते हैं, इस म-दनी सफ़र में जिस क़दर **अच्छी अच्छी निय्यतें** करेंगे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उसी क़दर सवाब भी बढ़ता चला जाएगा। म-सलन ह़स्बे ह़ाल इन में येह **निय्यतें** की जा सकती हैं : ❁ अगर शर-ई मिक्दार का सफ़र हुवा तो घर में रवानगिये सफ़र की दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करूंगा ❁ अपने ज़ाती ख़र्च पर सफ़र करूंगा ❁ पल्ले से खाऊंगा ❁ हर बार सुवारी की दुआ़ पढ़ूंगा और मौक़अ़ मिला तो पढ़ाऊंगा ❁ अगर किसी इस्लामी भाई को जगह नहीं मिलेगी तो अपनी निशस्त तर्क कर के उस पर उस को **ब इस्रार** बिठाऊंगा ❁ बस या रेलगाड़ी में कोई बूढ़ा या बीमार मुसल्मान नज़र आएगा तो उस के लिये निशस्त ख़ाली कर दूंगा ❁ म-दनी क़ाफ़िले वालों की ख़िदमत करूंगा ❁ अमीरे क़ाफ़िला की इताअ़त करूंगा ❁ ज़बान, आंखों और पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाऊंगा या'नी फ़ुज़ूल गोई, फ़ुज़ूल निगाही से बचूंगा और ख़्वाहिश से कम खाऊंगा ❁ सफ़र में भी हर मौक़अ़ पर "म-दनी इन्आ़मात" पर अ़मल जारी रखूंगा ❁ वुज़ू, नमाज़ और क़ुरआने पाक पढ़ने में जो ग़-लतियां होंगी वोह आ़शिक़ाने रसूल की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (کنزالعمال)

सोहबत में रह कर दुरुस्त करूंगा । (जो जानता हो वोह येह निय्यत करे कि सिखाऊंगा) ❁ सुन्नतें और दुआएं सीखूंगा और ❁ दूसरों को सिखाऊंगा और ❁ इन पर ज़िन्दगी भर अमल करता रहूंगा ❁ तमाम फ़र्ज़ नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअत अदा करूंगा ❁ तहज्जुद, इशराक़, चाश्त और अव्वाबीन की नमाज़ें पढ़ूंगा ❁ एक लम्हा भी ज़ाएअ नहीं होने दूंगा, फ़ारिग़ अवक़ात मिले तो **अल्लाह अल्लाह** करता रहूंगा, दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहूंगा । (दौराने दर्सो बयान वग़ैरा बिग़ैर कुछ पढ़े ख़ामोशी से सुनना होता है) ❁ "सदाए मदीना" लगाऊंगा या'नी नमाज़े फ़ज्र के लिये मुसल्मानों को जगाऊंगा ❁ रास्ते में जब जब मस्जिद नज़र आएगी तो बुलन्द आवाज़ से ! صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب कह कर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد कहूंगा और कहलवाऊंगा ❁ बाज़ार में जाना पड़ा तो बिल ख़ुसूस नीची निगाहें किये गुज़रते हुए बाज़ार की दुआ पढ़ूंगा और मौक़अ मिला तो पढ़ाऊंगा ❁ मुसल्मानों से पुर तपाक तरीक़े पर मुलाक़ात करूंगा ❁ ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश करूंगा ❁ हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये मुसल्मानों को तय्यार करूंगा ❁ नेकी की दा'वत दूंगा ❁ दर्स दूंगा ❁ मौक़अ मिला तो सुन्नतों भरा बयान करूंगा ❁ जहां क़ाफ़िला जाएगा वहां के किसी बुज़ुर्ग के मज़ार शरीफ़ पर म-दनी क़ाफ़िले के हमराह हाज़िरी दूंगा ❁ सुन्नी आलिम की ज़ियारत करूंगा ❁ अगर म-दनी क़ाफ़िले का कोई मुसाफ़िर बीमार हो गया तो तीमार दारी करूंगा ❁ अगर किसी मुसाफ़िर के पास ख़र्च ख़त्म हो गया तो अमीरे क़ाफ़िला के मश्वरे से उस की माली इमदाद करूंगा ❁ सफ़र में अपने लिये, घर वालों के लिये और उम्मते मुस्लिमा के लिये दुआए ख़ैर करूंगा ❁ जिस मस्जिद में क़ियाम होगा वहां वुज़ूख़ाने और मस्जिद की सफ़ाई करूंगा ❁ अगर किसी ने बिला वजह सख़्ती की तब भी **सब्र** करूंगा ❁ थकन वग़ैरा के सबब ग़ुस्सा आ गया तो ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगाते हुए ज़ब्त करूंगा ❁ अगर मस्जिद में म-दनी क़ाफ़िले को क़ियाम की इजाज़त न मिली तो किसी से उलझने के बजाए इस को अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर करूंगा और म-दनी क़ाफ़िले के साथ हाथ उठा कर दुआए ख़ैर करता हुवा पलटूंगा ❁ अगर कोई झगड़ा करेगा तो हक़ पर होने के बा वुजूद उस से झगड़ा न कर के हदीसे पाक में दी हुई इस बिशारत का हक़दार बनूंगा, जिस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

फ़रमाते हैं : **जो ह़क़ पर होने के बा वुजूद झगड़ा नहीं करता मैं उस के लिये जन्नत के (अन्दरूनी) कनारे में एक घर का ज़ामिन हूं।** (ابوداؤدج٤ ص ٣٣٢حدیث ٤٨٠٠) ❁ अगर किसी ने ज़ुल्मन मारा भी तो जवाबी कारवाई करने के बजाए शुक्र अदा करूंगा कि राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में मार खाने वाली "सुन्नते बिलाली" अदा हुई ❁ अगर मेरी वजह से किसी मुसल्मान की दिल आज़ारी हो गई तो उसी वक़्त आ़जिज़ी के साथ मुआ़फ़ी मांगूंगा ❁ चूंकि हर वक़्त साथ रहने में ह़क़ त-लफ़ियों का इम्कान ज़ियादा रहता है लिहाज़ा वापसी पर हर एक से फ़र्दन फ़र्दन इन्तिहाई लजाजत के साथ मुआ़फ़ी तलाफ़ी करूंगा ❁ (शर-ई) सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिये तोह़फ़ा ले जाने की सुन्नत अदा करूंगा ❁ (सफर अगर शर-ई हुवा तो) मस्जिद में आ कर ग़ैर मकरूह वक़्त में वापसिये सफ़र के दो नफ़्ल पढ़ूंगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उम्मते मुस्त़फ़ा की ख़ुसूसिय्यत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाहु रब्बुल इबाद** عَزَّوَجَلَّ इस उम्मत की ख़ुसूसिय्यत बयान करते हुए पारह 4 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 110 में इर्शाद फ़रमाता है :

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ تَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुईं, भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) पर ईमान रखते हो।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम ख़ुश नसीब हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! हम ख़ुश नसीब हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीबे मुकर्रम صَلَّى اللہ تعالیٰ علیہ وَ اٰلہٖ وَسَلَّم का दामने करम हमारे गुनहगार हाथों में आया, यक़ीनन हमारे प्यारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہ تعالیٰ علیہ وَ اٰلہٖ وَسَلَّم तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में सब से अफ़्ज़लो आ'ला हैं और आप صَلَّى اللہ تعالیٰ علیہ وَ اٰلہٖ وَسَلَّم के सदक़े में आप صَلَّى اللہ تعالیٰ علیہ وَ اٰلہٖ وَسَلَّم

की उम्मत भी तमाम उ-ममे साबिक़ा (या'नी पिछली उम्मतों) से अफ़्ज़ल है। अफ़्ज़लिय्यत का सबब हरगिज़ हरगिज़ येह नहीं कि इस उम्मत में सरमाया दारों की कसरत होगी या येह लोग दुन्यवी तौ़र पर बहुत ज़ियादा ता'लीम याफ़्ता होंगे, इन में **इन्जीनियर** और डॉक्टर ब कसरत होंगे, न ही फ़ज़ीलत की येह वजह है कि येह जंगजू, बहादुर और ताक़त वर होंगे या येह इस लिये अफ़्ज़ल हैं कि निहायत ही चालाक व ज़ीरक (या'नी होशियार) होंगे बल्कि इन की **अफ़्ज़लिय्यत की वजह** तो येह है कि येह **اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر** (या'नी भलाई का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने) के अहम मन्सब पर फ़ाइज़ हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे कि हम अपने इस मन्सबे आ़ली की **अहम्मिय्यत** समझने में काम्याब हो जाएं।

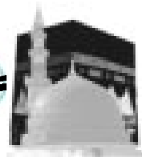
اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر की ता'रीफ़ : **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **"तफ़्सीरे नईमी"** में इन आयाते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : **"अल मा'रूफ़"** और **"अल मुन्कर"** में सारी भलाइयां **अज़ मुस्तह़ब्बात ता ईमानिय्यात** (या'नी मुस्तह़ब्बात से ले कर इस्लामी अ़क़ाइद तक) दाख़िल हैं, और सारी बुराइयां **अज़ मक्रूहात ता कुफ़्रिय्यात** (या'नी ना पसन्दीदा बातों से ले कर हर क़िस्म के कुफ़्र तक) शामिल हैं। और **"अम्र"** (के मा'ना हैं हुक्म) या'नी (यहां) हुक्म से मुराद हर क़िस्म का हुक्म है, ज़बानी हो या क़-लमी या ताक़त वाला, ख़्वाह बड़ों से अ़र्ज़ कर के हो या साथियों को मश्वरा दे कर, या छोटों को दबाव से हुक्म दे कर, या'नी तुम्हारी शान येह है कि हर भलाई का हर त़रह़ हुक्म दो और हर ख़ूबी हर त़रह़ फैलाओ और हर बुराई को हर त़रह़ मिटाओ और लोगों को इस (या'नी बुराई) से बाज़ रखो। **मज़ीद** फ़रमाते हैं : इस आयते मुक़द्दसा में गोया फ़रमाया गया कि ऐ मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत ! तुम मेरी सि-फ़ते हिदायत के मज़्हर (या'नी ज़ाहिर करने वाले) हो, लिहाज़ा तुम बेहतरीन उम्मत हो, तुम्हारे दम से तमाम लोग फ़ाएदा उठाते रहेंगे, मैं तुम्हारे ज़रीए़ लोगों को ईमान, क़ुरआन और इरफ़ान (या'नी अपने रब की पहचान) बख़्शूंगा और तुम्हारी ही रोशनी से उन्हें राहे जिनान (या'नी जन्नत का रास्ता) दिखलाऊंगा, जो मुझ तक पहुंचना चाहे तुम्हारे ज़ुमरे (या'नी गुरौह) में आ जाए। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 4, स. 89, 95)

सुन्नतें आम करें दीन का हम काम करें
नेक हो जाएं मुसल्मान मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुसल्मानों की भारी अक्सरिय्यत बे अ़-मली का शिकार है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मानों में "नेकी की दा'वत" आ़म करने की जितनी ज़रूरत आज है शायद पहले कभी न थी । अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! आज मुसल्मानों की भारी अक्सरिय्यत बे अ़-मली का शिकार है, नेकियां करना नफ़्स के लिये बेहद दुश्वार और इरतिकाबे गुनाह बहुत आसान हो चुका है, मस्जिदों की वीरानी और सिनेमा घरों और डिरामा गाहों की रौनक़, दीन का दर्द रखने वालों को आठ आठ आंसू रुलाती है । टी वी, वी सी आर, डिश एन्टीना, इन्टरनेट और केबल का ग़लत् इस्ति'माल करने वालों ने गोया अपनी आंखों से ह़या धो डाली है, तक्मीले ज़रूरिय्यात व ह़ुसूले सहूलिय्यात की ह़द से ज़ियादा जिद्दो जहद ने मुसल्मानों की भारी ता'दाद को फ़िक्रे आख़िरत से यक्सर ग़ाफ़िल कर दिया है । गाली देना, तोहमत लगाना, बद गुमानी करना, ग़ीबत करना, चुग़ली खाना, लोगों के ऐब जानने की जुस्त-जू में रहना, लोगों के ऐब उछालना, झूट बोलना, झूटे वा'दे करना, किसी का माल नाह़क़ खाना, ख़ून बहाना, किसी को बिला इजाज़ते शर-ई तक्लीफ़ देना, क़र्ज़ दबा लेना, किसी की चीज़ आ़रियतन (या'नी वक़्ती त़ौर पर) ले कर वापस न करना, मुसल्मानों को बुरे अल्क़ाब से पुकारना, किसी की चीज़ उसे ना गवार गुज़रने के बा वुजूद बिला इजाज़त इस्ति'माल करना, शराब पीना, जूआ खेलना, चोरी करना, ज़िना करना, फ़िल्में डिरामे देखना, गाने बाजे सुनना, सूद व रिश्वत का लैन दैन करना, मां बाप की ना फ़रमानी करना और इन्हें सताना, अमानत में ख़ियानत करना, बद निगाही करना, औ़रतों का मर्दों की और मर्दों का औ़रतों की मुशा-बहत (या'नी नक़्क़ाली) करना, बे पर्दगी, ग़ुरूर, तकब्बुर, ह़सद, रियाकारी, अपने दिल में किसी मुसल्मान का बुग़्ज़ व कीना रखना, शुमातत (या'नी किसी मुसल्मान को मरज़, तक्लीफ़ या नुक़्सान पहुंचने पर






ख़ुश होना), ग़ुस्सा आ जाने पर शरीअ़त की ह़द तोड़ डालना, गुनाहों की ह़िर्स हुब्बे जाह, बुख़्ल, ख़ुद पसन्दी वग़ैरा मुआ़-मलात हमारे मुआ़-शरे में बड़ी बेबाकी के साथ किये जाते हैं ।

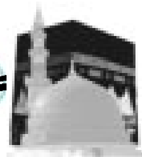
गुनाह करने वालों का दूसरों पर भी वबाल : **कसीर गुनाह** ऐसे हैं जिन की वजह से बराहे रास्त दूसरों को नुक़्सान उठाना पड़ता है, म-सलन अगर कोई चोरी का गुनाह करेगा तो उस शख़्स का नुक़्सान होगा जिस की चीज़ चुराई जाएगी, बिल्कुल येही मुआ़-मला डाका डालने, अस्लिह़ा दिखा कर मोबाइल फ़ोन वग़ैरा छीन लेने वालों का है । दुन्यवी नुक़्सानात तो एक त़रफ़ रहे गुनाह करने वाले का अस्ल बड़ा नुक़्सान तो आख़िरत का है । **ऐ सुन्नतों का दर्द रखने वाले आ़शिक़ाने रसूल !** ज़रा सोचिये !! गुनाहों की दलदल में फंसने वालों को कौन निकालेगा ? अख़्लाक़ी **तनज़्ज़ुलों** और पस्तियों की त़रफ़ गिरते चले जाने वालों को किरदार की बुलन्दियों की जानिब कौन उभारेगा ? जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल में मसरूफ़ रहने वालों को जन्नत में ले जाने वाले आ'माल पर कौन लगाएगा ? **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हमें ख़ुद ही एक दूसरे की इस्लाह़ की कोशिश करनी होगी । चन्द **सच्ची ह़िकायात** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और "नेकी की दा'वत" का दिल में जज़्बा बढ़ाइये ।

मस्जिद पर ताला था : **तब्लीग़े** क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़शिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** 3 दिन, 12 दिन, 30 दिन और 12 माह के लिये राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करते रहते हैं । आ़शिक़ाने रसूल का एक **म-दनी क़ाफ़िला** सुन्नतों की तरबिय्यत की ग़रज़ से बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के एक गाउं में पहुंचा वहां की **मस्जिद पर ताला** पड़ा था, लोगों से तरकीब बना कर जब मस्जिद का दरवाज़ा खोला तो म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर येह देख कर ग़मगीन हो गए कि त़वील अ़र्से से सफ़ाई न किये जाने के सबब मस्जिद के दरो दीवार गर्दो ग़ुबार से अटे पड़े हैं और हर त़रफ़ मकड़ियों के जाले तने हुए हैं । म-दनी क़ाफ़िले वालों के इस्तिफ़्सार (या'नी पूछने) पर बताया गया कि "काफ़ी










अ़र्सा हुवा यहां के मुसल्मानों ने नमाज़ पढ़नी छोड़ दी है जिस की बिना पर इमाम साहि़ब भी जा चुके हैं, इसी वजह से मस्जिद पर ताला लगा दिया गया है ।'' अफ़्सोस ! मस्जिद बन्द कर दी गई थी और गाउं में हर त़रफ़ गुनाहों की गर्म बाज़ारी थी, अक्सर दुकानों पर गाने बाजे और T.V. पर फ़िल्में दिखाने का सिल्सिला जारी था ।

मस्जिद की ह़ैरत अंगेज़ रौनक़ें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! अब मुसल्मानों की ह़ालत किस क़दर **अबतर** (या'नी बुरी) होती जा रही है ! ह़ालां कि एक दौर ऐसा भी था कि रात दिन मस्जिदें आबाद हुवा करती थीं, चुनान्चे **हु़ज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : ''नेक लोग फ़िक्रे आख़िरत की वजह से मस्जिदों में पड़े रहते थे ताकि जितना ज़ियादा हो सके इस मुख़्तसर तरीन ज़िन्दगी की मोहलत से फ़ाएदा उठा कर आख़िरत की अ-बदी (या'नी हमेशगी वाली) ने'मतें जम्अ़ कर लें । इ़बादत करने वालों की कसरत के सबब मस्जिद के बाहर लड़के वग़ैरा अश्याए ख़ुर्दो नोश (या'नी खाने पीने की चीज़ें) फ़रोख़्त करते, यूं खाने पीने की अश्या भी इ़बादत गुज़ारों को ब आसानी दस्त-याब हो जातीं ।'' سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! वोह कैसा पाकीज़ा दौर था कि मस्जिदों में रात दिन रौनक़ होती थी और आह ! आज तो मसाजिद की वीरानी देख कर कलेजा मुंह को आता है । ऐ मौत का यक़ीन रखने वाले इस्लामी भाइयो ! जिस से बन पड़े वोह कस्बे ह़लाल और वालिदैन व औलाद वग़ैरा की देखभाल नीज़ दीगर हु़क़ूक़ुल इ़बाद की बजा आ-वरी के बा'द जो वक़्त फ़ारिग़ बचे उसे ज़रूर ज़िक्रो दुरूद, फ़िक्रे आख़िरत और अच्छी सोह़बत में गुज़ारने की कोशिश करे । **(كيميائے سعادت ج ١ ص ٣٣٩)** हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का कोई लम्ह़ा **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ख़ाली न गुज़रता था । काश ! हमें भी अनमोल वक़्त की क़द्र नसीब हो जाती ।

या ख़ुदा क़द्र वक़्त की दे दे

कोई लम्ह़ा न फ़ालतू गुज़रे





नमाज़े बा जमाअ़त का अ़जीब जज़्बा : पहले के मुसल्मान बा जमाअ़त नमाज़ों का भी निहायत ज़बर दस्त एहतिमाम फ़रमाया करते थे चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद **ग़ज़ाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : (पारह 18 **सू-रतुन्नूर** आयत नम्बर 37 में रब्बे ग़फ़ूर عَزَّ وَجَلَّ का फ़रमाने नूरुन अ़ला नूर है :)

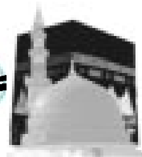
رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ اِقَامِ الصَّلٰوةِ وَ اِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَ الْاَبْصَارُ ﴿۳۷﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह मर्द जिन्हें ग़ाफ़िल नहीं करता कोई सौदा और न ख़रीदो फ़रोख़्त **अल्लाह** (عَزَّ وَجَلَّ) की याद और नमाज़ बरपा रखने और ज़कात देने से, डरते हैं उस दिन से जिस में उलट जाएंगे दिल और आंखें।

येह आयते करीमा नक़्ल करने के बा'द सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद **ग़ज़ाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی का बयान है कि बा'ज़ मुफ़स्सिरीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن ने लिखा है कि इस में उन नेक लोगों की त़रफ़ इशारा है कि उन में से जो **लोहार** होता था वोह अगर ज़र्ब (या'नी चोट) लगाने के लिये हथोड़ा ऊपर उठाए हुए होता और इसी ह़ालत में **अज़ान** की आवाज़ सुनता तो अब हथोड़ा लोहे वग़ैरा पर मारने के बजाए फ़ौरन रख देता नीज़ अगर **मोची** या'नी चमड़ा सीने वाला सूई चमड़े में डाले हुए होता और जूं ही अज़ान की आवाज़ उस के कानों में पड़ती तो **सूई** को बाहर निकाले बिग़ैर चमड़ा और सूई वहीं छोड़ कर बिला ताख़ीर **मस्जिद** की त़रफ़ चल पड़ता। या'नी उठे हुए हथोड़े की एक ज़र्ब लगा देना या सूई को दूसरी त़रफ़ निकालना भी उन के नज़्दीक **ताख़ीर** में शामिल था ह़ालां कि इस में वक़्त ही कितना लगता है ! (کیمیائے سعادت ج۱ ص۳۳۹)

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही
मैं पढ़ता रहूं सुन्नतें वक़्त ही पर हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही
दे शौक़े तिलावत दे ज़ौक़े इबादत
रहूं बा वुज़ू मैं सदा या इलाही

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد


बूढ़ा रोने लगा : आ़शिक़ाने रसूल का 30 दिन का एक **म-दनी क़ाफ़िला** राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र पर था। इस दौरान एक मक़ाम पर सुन्नतें सीखने सिखाने के **म-दनी ह़ल्क़े** में जब "ग़ुस्ल के फ़राइज़" सिखाए गए तो एक बुज़ुर्ग रोते हुए कहने लगे कि "मेरी उ़म्र 70 साल हो चुकी है मगर मुझे **ग़ुस्ल के फ़राइज़** की मा'लूमात न थी, आज **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से मुझे ग़ुस्ल के फ़राइज़ सीखने को मिले, अफ़्सोस ! मुझे तो येह तक पता न था कि ग़ुस्ल में फ़राइज़ भी होते हैं !"

सब से पहले क्या सीखना फ़र्ज़ है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ुस्ल के फ़राइज़ तक से ला इ़ल्मी का ए'तिराफ़ करने वाले 70 सालह इस्लामी भाई के वाक़िए से म-दनी क़ाफ़िलों की ज़रूरत व **अहम्मिय्यत** का आप बख़ूबी अन्दाज़ा लगा सकते हैं। किसी मुसल्मान को बीमार या भूक प्यास में गरिफ़्तार या बे रोज़गार व क़र्ज़दार या आफ़तों में गरिफ़्तार या दुन्यवी मुसीबतों का शिकार या मुश्किलात से दो चार देख कर हमें तर्स आता है और आना भी चाहिये लेकिन गुनाहों की भरमार के सबब आख़िरत को दाव पर लगाने वाले और अपने आप को क़ब्र व जहन्नम के अ़ज़ाब का ह़क़दार बनाने वाले मुसल्मान पर बिल्कुल ही तर्स नहीं आता येह क़ाबिले अफ़्सोस है गोया दुन्यवी मुसीबतों के मुक़ाबले में आख़िरत की मुसीबतों को कमतर समझ लिया गया है ! ह़ालां कि "जिस्मानी मरीज़" के मुक़ाबले में रूह़ानी या'नी **गुनाहों का मरीज़** ज़ियादा तवज्जोह का मुस्तह़िक़ है कि मुसल्मान को दुन्या की तक्लीफ़ें आख़िरत में राह़तें दिला सकती हैं मगर गुनहगार को उस के गुनाह दोज़ख़ के ग़ार में पहुंचा सकते हैं। लिहाज़ा इस बात की शिद्दत के साथ ज़रूरत है कि इ़ल्मे दीन की रोशनी फैलाई जाए कि मा'लूमात होंगी जभी तो बन्दा गुनाहों से बचेगा, अगर गुनाह व सवाब की शुदबुद ही न होगी तो येह सुन्नतों भरी ज़िन्दगी क्यूंकर गुज़ार सकेगा ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल नादान मुसल्मान नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर इस फ़ानी जहान पर तो दिलो जान से क़ुरबान है मगर उसे फ़राइज़ तक का इ़ल्म नहीं ह़ालां कि




सरकारे दो[2] आ़लम, **नूरे मुजस्सम,** शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ **या'नी** इ़ल्म ह़ासिल करना हर मुसलमान पर **फ़र्ज़** है। (ابن ماجه ج١ ص١٤٦ حديث ٢٢٤) इस ह़दीसे पाक से स्कूल कॉलेज की मुरव्वजा दुन्यवी ता'लीम नहीं बल्कि **ज़रूरी दीनी इ़ल्म** मुराद है। लिहाज़ा सब से पहले **इस्लामी अ़क़ाइद** का सीखना फ़र्ज़ है, इस के बा'द **नमाज़** के फ़राइज़ व शराइत़ व मुफ़्सिदात (या'नी नमाज़ किस त़रह़ दुरुस्त होती है और किस त़रह़ टूट जाती है) फिर र-मज़ानुल मुबारक की तशरीफ़ आ-वरी हो तो जिस पर रोज़े फ़र्ज़ हों उस के लिये **रोज़ों** के ज़रूरी मसाइल, जिस पर ज़कात फ़र्ज़ हो उस के लिये **ज़कात** के ज़रूरी मसाइल, इसी त़रह़ **ह़ज** फ़र्ज़ होने की सूरत में ह़ज के, **निकाह़** करना चाहे तो इस के, **ताजिर** को तिजारत के, **ख़रीदार** को ख़रीदने के, **नोकरी** करने वाले और नोकर रखने वाले को इजारे के, وَعلٰى هٰذا الْقِياس (या'नी और इसी पर क़ियास करते हुए) **हर मुसल्मान आ़क़िल व बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है।** इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले ह़लाल व ह़राम भी सीखना फ़र्ज़ है। नीज़ **मसाइले क़ल्ब** (बात़िनी मसाइल) या'नी फ़राइज़े **क़ल्बिया** (बात़िनी फ़राइज़) म-सलन आ़जिज़ी व इख़्लास और **तवक्कुल** वग़ैरहा और इन को ह़ासिल करने का त़रीक़ा और **बात़िनी गुनाह** म-सलन **तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद,** बद गुमानी, बुग़्ज़ व कीना, शुमातत (या'नी किसी की मुसीबत पर ख़ुश होना) वग़ैरहा और इन का इ़लाज सीखना हर मुसल्मान पर **फ़र्ज़** है। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 613-624 मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये) मोहलिकात या'नी हलाकत में डालने वाली चीज़ों जैसा कि वा'दा ख़िलाफ़ी, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बोहतान, बद निगाही, धोका, ईज़ाए मुस्लिम वग़ैरा वग़ैरा तमाम सग़ीरा व कबीरा गुनाहों के बारे में ज़रूरी अह़काम सीखना भी फ़र्ज़ है ताकि इन से बचा जा सके। ड्राइवर व पेसेन्जर, मियां बीवी, वालिदैन व औलाद, भाई और बहन, पड़ोसी व रिश्तेदार, क़र्ज़ ख़्वाह व क़र्ज़दार, सुपर वाइज़र व ठेकेदार, मज़दूर व मि'मार, किसान व ज़मीन दार, किराए पर लेने वाला और किराए पर देने वाला, ह़ाकिम व मह़कूम, उस्ताज़ व शागिर्द, डॉक्टर व ह़कीम, मुक़ीम व मुसाफ़िर, क़स्साब व माहीगीर, चन्दा करने वाला और चन्दा देने वाला, मस्जिद या मद्रसा या क़ब्रिस्तान या समाजी इदारे वग़ैरा के मु-तवल्लियान, जानवर बेचने वाला

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

और पालने वाला, चरवाहा, धोबी, दरज़ी, बढ़ई (CARPENTER), लोहार, कारीगर आख़िरुज़्ज़िक्र पांचों से धुलवाने, सिलवाने और बनवाने वाले वग़ैरा वग़ैरा हर एक के लिये उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ ज़रूरी मसाइल जानना **फ़र्ज़े ऐन** है। शैत़ान के इस वस्वसे पर हरगिज़ तवज्जोह मत दीजिये कि सीखेंगे तो अ़मल करना पड़ेगा बल्कि इस हुक्मे शर-ई को ज़ेहन में रख लीजिये कि ह़स्बे ह़ाल **फ़र्ज़ उ़लूम** न जानना गुनाह और न जानने के सबब कर गुज़रना गुनाह दर गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाला काम है।

ख़ुदाया हम इस्लामी अह़काम सीखें
बचाएं जो दोज़ख़ से वोह काम सीखें

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गुस्ल का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी आप ने सुना कि एक 70 सालह इस्लामी भाई म-दनी क़ाफ़िले वालों के म-दनी ह़ल्क़े में शरीक हुए तो उन्हें गुस्ल के फ़राइज़ का पहली बार पता चला, इसी त़रह़ न जाने कितने मुसल्मान ऐसे होंगे जो येह अह़काम नहीं जानते होंगे। लिहाज़ा इस ज़िम्न में **नेकी की दा'वत** का सवाब लूटने की निय्यत से गुस्ल का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी) पेश करता हूं, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 496 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"नमाज़ के अह़काम"** सफ़ह़ा 100 पर से शुरूअ़ होने वाले मज़्मून से ज़रूरतन रद्दो बदल करते हुए अ़र्ज़ है : निय्यत के बिग़ैर भी गुस्ल हो जाएगा मगर सवाब नहीं मिलेगा, इस लिये **बिग़ैर** ज़बान हिलाए दिल में इस त़रह़ निय्यत कीजिये कि "मैं पाकी ह़ासिल करने के लिये गुस्ल करता हूं।" पहले दोनों हाथ पहुंचों तक तीन तीन बार धोइये, फिर इस्तिन्जे की जगह धोइये ख़्वाह नजासत

हो या न हो, फिर जिस्म पर अगर कहीं नजासत हो तो उस को दूर कीजिये फिर नमाज़ का सा वुज़ू कीजिये मगर पाउं न धोइये, **हां** अगर चौकी वग़ैरा पर ग़ुस्ल कर रहे हैं तो पाउं भी धो लीजिये, फिर बदन पर तेल की त़रह़ पानी चुपड़ लीजिये, ख़ुसूसन सर्दियों में (इस दौरान साबुन भी लगा सकते हैं) फिर तीन बार सीधे कन्धे पर पानी बहाइये, फिर तीन बार उलटे कन्धे पर, फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार, फिर ग़ुस्ल की जगह से अलग हो जाइये, अगर वुज़ू करने में पाउं नहीं धोए थे तो अब धो लीजिये। नहाने में क़िब्ला रुख़ न हों, तमाम बदन पर हाथ फैर कर मल कर नहाइये। ऐसी जगह नहाना चाहिये जहां किसी की नज़र न पड़े अगर येह मुम्किन न हो तो मर्द अपना सत्र (नाफ़ से ले कर दोनों घुटनों समेत) किसी मोटे कपड़े से छुपा ले, मोटा कपड़ा न हो तो ह़स्बे ज़रूरत दो या तीन कपड़े लपेट ले क्यूं कि बारीक कपड़ा होगा तो पानी से बदन पर चिपक जाएगा और مَعَاذَاللهِ عَزَّوَجَلَّ घुटनों या रानों वग़ैरा की रंगत ज़ाहिर होगी, औ़रत को तो और भी ज़ियादा एह़तियात़ की ह़ाजत है। दौराने ग़ुस्ल किसी क़िस्म की गुफ़्त-गू मत कीजिये, कोई दुआ़ भी न पढ़िये, नहाने के बा'द तोलिये वग़ैरा से बदन पोंछने में ह़रज नहीं। नहाने के बा'द फ़ौरन कपड़े पहन लीजिये। अगर मक्रूह वक़्त न हो तो दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करना **मुस्तह़ब** है। (عالمگیری ج١ ص١٤, माख़ूज़न बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 319 वग़ैरा)

ग़ुस्ल के तीन फ़राइज़

《1》 कुल्ली करना 《2》 नाक में पानी चढ़ाना 《3》 तमाम ज़ाहिर बदन पर पानी बहाना। (فتاوٰی عالمگیری ج١ ص١٣)

《1》 कुल्ली करना

मुंह में थोड़ा सा पानी ले कर पच कर के डाल देने का नाम कुल्ली नहीं बल्कि मुंह के हर पुर्ज़े, गोशे, होंट से ह़ल्क़ की जड़ तक हर जगह पानी बह जाए। **इसी** त़रह़ दाढ़ों के पीछे गालों की तह में, दांतों की खिड़कियों और जड़ों और ज़बान की हर करवट पर बल्कि ह़ल्क़ के कनारे तक पानी बहे। रोज़ा न हो तो ग़र-ग़रा भी कर लीजिये कि सुन्नत है। दांतों में

छालिया के दाने या बोटी के रेशे वग़ैरा हों तो उन को छुड़ाना ज़रूरी है । हां अगर छुड़ाने में ज़रर (या'नी नुक़्सान) का अन्देशा हो तो मुआफ़ है, ग़ुस्ल से क़ब्ल दांतों में रेशे वग़ैरा महसूस न हुए और रह गए नमाज़ भी पढ़ ली बा'द को मा'लूम होने पर छुड़ा कर पानी बहाना **फ़र्ज़** है, पहले जो नमाज़ पढ़ी थी वोह हो गई । जो हिलता दांत मसाले से जमाया गया या तार से बांधा गया और तार या मसाले के नीचे पानी न पहुंचता हो तो मुआफ़ है । (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 316, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 439, 440) जिस तरह की एक कुल्ली ग़ुस्ल के लिये फ़र्ज़ है इसी तरह की तीन कुल्लियां वुज़ू के लिये सुन्नत हैं ।

﴾2﴿ नाक में पानी चढ़ाना

जल्दी जल्दी नाक की नोक पर पानी लगा लेने से काम नहीं चलेगा बल्कि जहां तक नर्म जगह है या'नी सख़्त हड्डी के शुरूअ़ तक धुलना लाज़िमी है । और येह यूं हो सकेगा कि पानी को सूंघ कर ऊपर खींचिये । येह ख़याल रखिये कि बाल बराबर भी जगह धुलने से न रह जाए वरना ग़ुस्ल न होगा । नाक के अन्दर अगर रींठ सूख गई है तो इस का छुड़ाना फ़र्ज़ है, नीज़ नाक के बालों का धोना भी फ़र्ज़ है । (ऐज़न, स. 442, 443)

﴾3﴿ तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना

सर के बालों से ले कर पाउं के तल्वों तक जिस्म के हर पुर्ज़े और हर हर रूंगटे पर (कम अज़ कम दो दो क़तरे) पानी बह जाना ज़रूरी है, जिस्म की बा'ज़ जगहें ऐसी हैं कि अगर एहतियात न की तो वोह सूखी रह जाएंगी और ग़ुस्ल न होगा । (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 317) वुज़ू व ग़ुस्ल और नमाज़, नमाज़े जुमुआ, क़ज़ा नमाज़, सफ़र की नमाज़, नमाज़े जनाज़ा वग़ैरा के **मु-तअ़ल्लिक़** ज़रूरी अहकाम जानने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ 496 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"नमाज़ के अहकाम"** का मुता-लआ फ़रमाइये ।

बहते पानी में ग़ुस्ल का त़रीक़ा : अगर बहते पानी म-सलन दरिया, या नहर में नहाया तो थोड़ी देर उस में रुकने से तीन बार धोने, तरतीब और वुज़ू येह सब सुन्नतें अदा हो गईं। इस की भी ज़रूरत नहीं कि आ'ज़ा को तीन बार ह़-र-कत दे। अगर तालाब वग़ैरा ठहरे पानी में नहाया तो आ'ज़ा को तीन बार ह़-र-कत देने या जगह बदलने से **तस्लीस** या'नी तीन बार धोने की सुन्नत अदा हो जाएगी। बरसात में (नल या फ़व्वारे के नीचे) खड़ा होना बहते पानी में खड़े होने के हुक्म में है। बहते पानी में वुज़ू किया तो वोही थोड़ी देर उस में उ़ज़्व को रहने देना और ठहरे पानी में ह़-र-कत देना तीन बार धोने के क़ाइम मक़ाम है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 320) वुज़ू और ग़ुस्ल की इन तमाम सूरतों में कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना होगा।

फ़व्वारा जारी पानी के हुक्म में है : फ़तावा अहले सुन्नत ग़ैर मत़्बूआ़ में है : फ़व्वारे (या नल की धार) के नीचे ग़ुस्ल करना जारी पानी में ग़ुस्ल करने के हुक्म में है लिहाज़ा इस के नीचे ग़ुस्ल करते हुए वुज़ू और ग़ुस्ल करते वक़्त की मुद्दत तक ठहरा तो तस्लीस (या'नी तीन बार धोने) की सुन्नत अदा हो जाएगी। चुनान्चे "**दुर्रे मुख़्तार**" में है : अगर जारी पानी या बड़े हौज़ या बारिश में वुज़ू और ग़ुस्ल करने के वक़्त की मुद्दत तक ठहरा तो उस ने पूरी सुन्नत अदा की। (دُرِّمُختار ج ۱ ص ۳۲۰) याद रहे ! ग़ुस्ल या वुज़ू में कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना है।

फ़व्वारे की एह़तियातें : अगर आप के ह़म्माम में फ़व्वारा (SHOWER) हो तो उसे अच्छी त़रह़ देख लीजिये कि उस की त़रफ़ मुंह कर के नंगे नहाने में मुंह या पीठ क़िब्ले शरीफ़ की त़रफ़ तो नहीं हो रही ! इस्तिन्जा ख़ाने में भी इस की एह़तियात़ फ़रमाइये। क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ होने का मा'ना येह है कि 45 द-रजे के ज़ाविये के अन्दर अन्दर हो। लिहाज़ा येह एह़तियात़ भी ज़रूरी है कि 45 डिग्री के ज़ाविये (ANGLE) के बाहर हो। इस मस्अले से अक्सर लोग ना वाक़िफ़ हैं।

W.C. का रुख़ दुरुस्त कीजिये : मेहरबानी फ़रमा कर अपने घर वग़ैरा के डब्लयू.सी (W.C.) और फ़व्वारे का रुख़ अगर ग़लत़ हो तो उस की इस्लाह़ फ़रमा लीजिये । **ज़ियादा** एह़तियात़ इस में है कि w.c. क़िब्ले से 90 के द-रजे पर या'नी नमाज़ पढ़ने में सलाम फैरने के रुख़ कर दीजिये । मि'मार उ़मूमन ता'मीराती सहूलत और ख़ूब सूरती का लिहाज़ करते हैं आदाबे क़िब्ला की परवाह नहीं करते । मुसल्मानों को मकान की ग़ैर वाजिबी बेहतरी के बजाए आख़िरत की ह़क़ीक़ी बेहतरी पर नज़र रखनी चाहिये ।

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले
भाई नहीं भरोसा है कोई ज़िन्दगी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 185)

कब कब ग़ुस्ल करना सुन्नत है : जुमुआ, ईदुल फ़ित्र, बक़र ईद, अ़-रफ़े के दिन (या'नी 9 **ज़ुल हिज्जतिल ह़राम**) और एह़राम बांधते वक़्त नहाना सुन्नत है ।

(فتاوٰی عالمگیری ج۱ ص۱٦)

बारिश में ग़ुस्ल : लोगों के सामने सित्र खोल कर नहाना ह़राम है । (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 3, स. 306) बारिश वग़ैरा में भी नहाएं तो पाजामा या शलवार के ऊपर मज़ीद रंगीन मोटी चादर लपेट लीजिये ताकि पाजामा पानी से चिपक भी जाए तो रानों वग़ैरा की रंगत ज़ाहिर न हो ।

तंग लिबास वाले की त़रफ़ नज़र करना कैसा ? : ज़ोर से हवा चलने के सबब या बारिश या साह़िले समुन्दर या नह्‌र वग़ैरा में कोई अगर्चे मोटे कपड़े में नहाए और कपड़ा इस त़रह़ चिपक जाए कि सत्र के किसी कामिल उ़ज़्व म-सलन रान की मुकम्मल गोलाई की हैअत (उभार) ज़ाहिर हो जाए ऐसी सूरत में उस (मख़्सूस) उ़ज़्व

की त़रफ़ दूसरे को नज़र करने की इजाज़त नहीं। येही हुक्म तंग लिबास वाले के सित्र के उभरे हुए उ़ज़्वे कामिल की त़रफ़ नज़र करने का है।

नंगे नहाते वक़्त ख़ूब एह़तियात़ : **ह़म्माम** में तन्हा नंगे नहाएं या ऐसा पाजामा पहन कर नहाएं कि उस के चिपक जाने से रानों वग़ैरा की रंगत ज़ाहिर हो सकती है तो ऐसी सूरत में क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ मत कीजिये।

बालटी से नहाते वक़्त एह़तियात़ : **अगर** बालटी के ज़रीए़ ग़ुस्ल करें तो एह़तियात़न उसे तिपाई (STOOL) वग़ैरा पर रख लीजिये ताकि बालटी में छींटें न आएं। नीज़ ग़ुस्ल में इस्ति'माल करने का मग भी फ़र्श पर न रखिये।

सारा गाउं ही दाढ़ी मुन्डा ! : **सुन्नतों** की तरबिय्यत का 30 रोज़ा म-दनी क़ाफ़िला सफ़र करता हुवा (बाबुल इस्लाम, सिन्ध) ज़िलअ़ **दादू** के किसी गाउं की एक **मस्जिद** में पहुंचा, वहां **मुअज़्ज़िन** साहि़ब मौजूद न थे लिहाज़ा ख़ुद ही **अज़ान** दी, जब जमाअ़त का वक़्त हुवा तो चन्द नमाज़ी मस्जिद में आए और **म-दनी क़ाफ़िले** वालों से कहा कि आप ही नमाज़ भी पढ़ा दीजिये "यहां मस्जिद में **नमाज़ की जमाअ़त** नहीं होती, सब लोग अपनी अपनी नमाज़ पढ़ते हैं क्यूं कि पूरे गाउं में एक भी शख़्स ऐसा नहीं है जो **दाढ़ी वाला** हो और इमाम बन सके।"

मस्जिद को आबाद रखना वाजिब है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मक़ामे इ़ब्रत है। दुन्या की **मह़ब्बत** में बड़ी नुह़ूसत है कि इस की मसरूफ़िय्यत ने मज़्कूरा गाउं के बाशिन्दों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत से मह़रूम कर दिया और ख़ानए ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ या'नी मस्जिद वीरान हो गई ! याद रखिये ! मस्जिद को आबाद रखना मह़ल्ले के मुसल्मानों पर वाजिब है चुनान्चे **फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़** में साबिक़ा शराब फ़रोशों की बनाई हुई मस्जिद के बारे में **सुवाल** हुवा जिन्हों ने तौबा

करने के बा'द ह़लाल माल से बनाई थी। इस का **जवाब** देते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن "फ़तावा र-ज़विय्या" जिल्द 8 सफ़ह़ा 125 पर फ़रमाते हैं : वोह मस्जिद कि उन लोगों ने बा'दे तौबा माले ह़लाल से बनाई है बेशक मस्जिदे शर-ई है और उस में नमाज़ फ़क़त़ हो सकती ही नहीं बल्कि उस के क़ुर्बो जवार वालों अहले मह़ल्ला पर उस का आबाद रखना **वाजिब** है, उस में (पांचों वक़्त) अज़ान व इक़ामत व जमाअ़त व इमामत करना ज़रूर है, अगर ऐसा न करेंगे गुनहगार होंगे और जो उस में नमाज़ से रोकेगा वोह उन सख़्त ज़ालिमों में दाख़िल होगा जिन की निस्बत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا

(پ۱، البقرة:۱۱٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** की मस्जिदों को रोके उन में नामे ख़ुदा लिये जाने से और उन की वीरानी में कोशिश करे।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 8, स. 125)

जंगल में मस्जिद : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िम्नन अ़र्ज़ करता चलूं कि जहां मुसल्मान रहते ही न हों ऐसी वीरान व ग़ैर आबाद जगह पर बनाई जाने वाली मस्जिद सिरे से **मस्जिद** के हुक्म में ही नहीं चुनान्चे एक **सुवाल** के जवाब में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن "फ़तावा र-ज़विय्या" जिल्द 16 सफ़ह़ा 505 पर फ़रमाते हैं : जब कि येह सह़ीह़ हो कि वोह जगह आबाद नहीं हो सकती और वोह मस्जिद काम में भी न आएगी तो वोह मस्जिद न हुई, उन ईंटों और रुपै को दूसरी मस्जिद में सर्फ़ (या'नी इस्ति'माल) कर सकते हैं, "आ़लमगीरी" में है : "किसी शख़्स ने जंगल या वीराने में मस्जिद बनाई जहां किसी की रिहाइश न हो और लोगों का वहां से गुज़र भी कम हो तो वोह मस्जिद न होगी क्यूं कि उस जगह मस्जिद बनाने की ह़ाजत नहीं है।" (فتاوٰی عالمگیری ج٥ص ٣٢٠)

करे मस्जिदें जो भी आबाद मौला

तू रख उस मुसल्मान को शाद मौला

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

9 ग़ैर मुस्लिमों का क़बूले इस्लाम : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये और सारी दुन्या में **नेकी की दा'वत** आ़म करने का दर्द रखने वाली ''म-दनी तह़रीक'' या'नी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर ''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश'' में लग जाइये । अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये । आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक मुश्कबार ''म-दनी बहार'' आप के गोश गुज़ार की जाती है चुनान्चे बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के मश्हूर शहर **ह़ैदरआबाद** से एक **3 रोज़ा म-दनी क़ाफ़िला** ''टन्डो आदम'' नामी शहर में पहुंचा, तीसरे दिन एक शख़्स ने मस्जिद के बाहर खड़े हो कर अमीरे क़ाफ़िला से मिलने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की, मुलाक़ात होने पर उस आदमी ने बत़ौरे ग़ैर मुस्लिम अपना तआ़रुफ़ करवाने के बा'द **इस्लाम** की बहुत ता'रीफ़ की । अमीरे क़ाफ़िला ने इस्लाम की त़रफ़ माइल देख कर उस पर **इन्फ़िरादी कोशिश** की जिस की ब-र-कत से कुछ ही देर में اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस ने इस्लाम क़बूल कर लिया और कहने लगा कि मेरे घर वालों को भी चल कर इस्लाम की दा'वत पेश कीजिये । **म-दनी क़ाफ़िले वाले उस के घर गए और उन पर इस्लाम पेश किया जिस की ब-र-कत से** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **9 अफ़राद पर मुश्तमिल सारा घराना मुसल्मान हो गया ।** अमीरे क़ाफ़िला ने उस नौ मुस्लिम से दरयाफ़्त किया कि जब आप पहले ही से दीने इस्लाम से **मह़ब्बत** करते थे तो मुसल्मान होने में इतनी देर क्यूं लगाई ? उस ने जवाब दिया कि जिस इस्लाम से मैं **मु-तअस्सिर**

हुवा वोह किताबों में तो लिखा था लेकिन मुझे मौजूदा मुसल्मानों में नज़र नहीं आ रहा था। जब आ़शिक़ाने रसूल के सुन्नतों भरे **म-दनी क़ाफ़िले** को देखा तो मेरा दिल इस त़रफ़ खिंचा और मैं ने आप ह़ज़रात की ह़-रकातो स-कनात का जाएज़ा लेना शुरूअ़ कर दिया, मैं 3 दिन से आप लोगों के मुआ़-मलात व मा'मूलात देख रहा हूं। आते जाते नज़रें झुकाए रखना, मुस्करा कर मुलाक़ात करना फिर आप लोगों का सफ़ेद लिबास, सर पर इमामा शरीफ़ का ताज, चेहरे पर नूर, वग़ैरा देख कर **मुझे किताबों वाला ह़क़ीक़ी इस्लाम आप लोगों के किरदार में नज़र आ गया।** जिस की वजह से मैं ने ज़ेहन बना लिया कि अब इन के हाथों पर मुसल्मान हो जाना चाहिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ येह बयान देते वक़्त आज कल येह नौ मुस्लिम इस्लामी भाई एक मस्जिद में **मुअज़्ज़िन** हैं और मुसल्मानों को नेकी और नमाज़ की दा'वत भी देते हैं और इन के म-दनी मुन्ने दा'वते इस्लामी के **मद्र-सतुल मदीना** में कुरआने करीम की ता'लीम ह़ासिल कर रहे हैं।

आइये आ़शिक़ीं, मिल के तब्लीग़े दीं — काफ़िरों को करें, क़ाफ़िले में चलो
काफ़िर आ जाएंगे, राहे ह़क़ पाएंगे — اِنْ شَآءَاللّٰه चलें, क़ाफ़िले में चलो
कुफ़्र का सर झुके, दीं का डंका बजे
اِنْ شَآءَاللّٰه चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत मरह़बा ! : سُبْحٰنَ اللّٰه म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत सद करोड़ मरह़बा ! तमाम इस्लामी भाई पाबन्दी के साथ हर माह कम अज़ कम तीन दिन और सालाना यक मुश्त 30 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की ज़रूर सआ़दत ह़ासिल किया करें। बयान कर्दा खुश गवार

व ख़ुश्बूदार "म-दनी बहार" में مَاشَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ 9 ग़ैर मुस्लिमों के हिदायत पाने और दामने इस्लाम में आने का ईमान अफ़्रोज़ बयान है। वाक़ेई बड़े सआ़दत मन्द हैं वोह इस्लामी भाई जिन की कोशिशों से कोई ग़ैर मुस्लिम कुफ़्र के अंधेरे से ईमान की रोशनी की त़रफ़ निकल आए या कोई मुसल्मान गुनाहों से ताइब हो कर सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने पर कमर बस्ता हो जाए।

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे हि़साब बख़्शिश फ़रमा। हमें सुन्नतों का मुख़्लिस मुबल्लिग़ बना, पाबन्दी से म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की सआ़दत दे और म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बन कर दूसरों को भी म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने वाला बनाने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा।

न नेकी की दा'वत में सुस्ती हो मुझ से
बना शाइक़े क़ाफ़िला या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 85)

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ीबत की ता'रीफ़

किसी शख़्स के पोशीदा ऐ़ब को उस की बुराई करने के त़ौर पर ज़िक्र करना।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 532)

चुग़ली की ता'रीफ़

किसी की बात ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचाने के इरादे से दूसरों को पहुंचाना **चुग़ली** है। (عُمدۃ القاری ج۲ ص۵۹٤ تحت الحدیث ۲۱٦)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

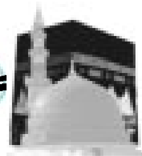
नेकी की दा'वत की फ़ज़ीलत

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

(صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد की फ़ज़ीलत)

हज़रते सय्यिदुना अबुल मुज़फ़्फ़र मुहम्मद बिन **अ़ब्दुल्लाह ख़य्याम** समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं एक रोज़ रास्ता भूल गया, अचानक एक साहिब नज़र आए और उन्हों ने कहा : "मेरे साथ आओ।" मैं उन के साथ हो लिया। मुझे गुमान हुवा कि येह हज़रते सय्यिदुना **ख़िज़्र** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं। मेरे इस्तिफ़्सार (या'नी पूछने) पर उन्हों ने अपना नाम **ख़िज़्र** बताया, उन के साथ एक और बुज़ुर्ग भी थे, मैं ने उन का नाम दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : येह **इल्यास** (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) हैं। मैं ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रहमत फ़रमाए, क्या आप दोनों हज़रात ने सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात, **महबूबे रब्बुल अर्द़े वस्समावात, अहमदे मुज्तबा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **ज़ियारत** की है ? उन्हों ने फ़रमाया : हां। मैं ने अ़र्ज़ की : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना हुवा इर्शादे पाक बताइये ताकि मैं आप से रिवायत कर सकूं। उन्हों ने फ़रमाया कि हम ने रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह






फ़रमाते सुना कि जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े उस का दिल **निफ़ाक़** से इसी त़रह़ पाक किया जाता है जिस त़रह़ पानी से कपड़ा पाक किया जाता है। नीज़ जो शख़्स "صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد" पढ़ता है तो वोह अपने ऊपर रह़मत के **70** दरवाज़े खोल लेता है।

(اَلْقَوْلُ الْبَدِيع ص٢٧٧، جَذْبُ الْقُلُوب ص٢٣٠)

साक़िये हौज़े कौसर पे लाखों सलाम *दोनों आ़लम के सरवर पे लाखों सलाम*
जिस का अब्रे करम सब पे साया फ़िगन *ऐसे प्यारे पयम्बर पे लाखों सलाम*
जिस की ख़ुश्बू से त़यबा की गलियां बसीं
ऐसे जिस्मे मुअ़त्त़र पे लाखों सलाम

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़िज़्र व इल्यास عَلَيْهِمَا السَّلَام **के बारे में दिलचस्प मा'लूमात :** मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد" पढ़ने की आ़दत बनाइये और अपने ऊपर रह़मतों के ख़ूब ख़ूब दरवाज़े खुलवाइये। बयान कर्दा रिवायत में ह़ज़राते **ख़िज़्र व इल्यास** عَلَيْهِمَا السَّلَام का ज़िक्रे ख़ैर है। रह़मतों के नुज़ूल और ब-र-कतों के ह़ुसूल की उम्मीद पर इन ह़ज़रात के बारे में ईमान अफ़रोज़ मा'लूमात के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 561 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" से दो **अ़र्ज़ व इर्शाद** पेश करता हूं, सुनिये और ईमान ताज़ा कीजिये।

अ़र्ज़ : ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام नबी हैं या नहीं ?

इर्शाद : जम्हूर (या'नी अक्सर) का मज़्हब येही है और सह़ीह़ भी येही है कि वोह **नबी** हैं, ज़िन्दा हैं। **(عُمْدَةُ الْقارِی ج٢، ص٨٤، ٨٥)**

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام **ज़िन्दा हैं :** (आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फिर





फ़रमाया) चार नबी ज़िन्दा हैं कि उन को (वफ़ात की सूरत में) वा'दए इलाहिय्यह अभी आया ही नहीं, यूं तो हर नबी ज़िन्दा है (जैसा कि ह़दीसे पाक में आता है) : اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللّٰهِ حَيٌّ يُّرْزَقُ या'नी बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने ह़राम किया है ज़मीन पर कि अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जिस्मों को ख़राब करे तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नबी ज़िन्दा हैं रोज़ी दिये जाते हैं। (اِبنِ ماجه ج۲ ص۲۹۱ حديث۱۶۳۷) अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर एक आन को महज़ तस्दीक़े वा'दए इलाहिय्यह के लिये मौत त़ारी होती है बा'द इस के फिर उन को ह़याते ह़क़ीक़ी ह़िस्सी दुन्यवी (या'नी दुन्या जैसी ज़िन्दगी) अ़त़ा होती है। ख़ैर इन चारों में से दो आस्मान पर हैं और दो ज़मीन पर। **ख़िज़्र व इल्यास** عَلَيْهِمَا السَّلَام ज़मीन पर हैं और **इदरीस व ईसा** (عَلَيْهِمَا السَّلَام) आस्मान पर। (تفسيرِدُرِّ مَنْثُور ج۵ ص۴۳۲)

सब को मौत का ज़ाएक़ा चखना है :

अ़र्ज़ : हुज़ूर इन (चारों नबियों) पर मौत त़ारी होगी ?

इर्शाद : ज़रूर होगी। (पारह 4 आले इमरान की आयत नम्बर 185 में है :) كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** हर जान को मौत चखनी है) (फिर फ़रमाया) जब येह (या'नी पारह 27 सूरए रह़मान की) आयत (नम्बर 26) नाज़िल हुई। كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है) फ़िरिश्ते ख़ुश हुए कि हम बचे कि हम ज़मीन पर नहीं, जब दूसरी (या'नी पारह 4 आले इमरान की) आयत (नम्बर 185) नाज़िल हुई : كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** हर जान को मौत चखनी है) मलाएका ने कहा : अब हम भी गए। (या'नी हमें भी मौत आएगी)

(رُوحُ الْبَيان ج۹ ص۲۹۷،۲۹۸ मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 483, 485)

अम्बिया को भी अजल आनी है मगर ऐसी कि फ़क़त़ आनी है
फिर उसी आन के बा'द इन की ह़यात मिस्ले साबिक़ वोही जिस्मानी है

रूह़ तो सब की है ज़िन्दा उन का
जिस्मे पुरनूर भी रूह़ानी है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

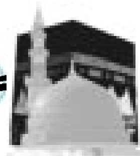
शर्हे कलामे रज़ा : सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़्कूरा अश्आर का खुलासा येह है कि पारह 4 **सूरए आले इमरान** आयत नम्बर 185 में वारिद शुदा रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के इर्शादे गिरामी "كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** हर जान को मौत चखनी है।" के मुत़ाबिक़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर मौत त़ारी होती है मगर सिर्फ़ एक आन या'नी लम्ह़े भर के लिये फिर पहले ही की त़रह़ रूह़ लौटा दी जाती है। हर इन्सान की रूह़ जिन्दा रहती है मगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुबारक जिस्म भी सलामत रहते हैं : ह़दीसे पाक में है : اَلْاَنْبِيَاءُ اَحْيَاءٌ فِیْ قُبُوْرِهِمْ يُصَلُّوْنَ या'नी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं और नमाज़ भी पढ़ते हैं (ابو يعلى ج٣ ص٢١٦ حديث ٣٤١٢) एक और ह़दीसे पाक में है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर ह़राम फ़रमा दिया है कि वोह अम्बियाए किराम के बदन खाए। **अल्लाह** के नबी ज़िन्दा हैं और उन को रोज़ी दी जाती है।" (ابن ماجه ج٢ ص٢٩١ حديث ١٦٣٧) हर नबी ज़िन्दा है जब हर नबी ज़िन्दा है तो फिर मेरे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم क्यूं ज़िन्दा न होंगे ! और आ़शिके़ रसूल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में झूम झूम कर क्यूं न अ़र्ज़ करें :

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : दुन्यवी और ज़ाहिरी आंखों से ऐ मेरे छुप जाने वाले और मुझे ब ज़ाहिर नज़र न आने वाले ! खुदा की क़सम ! आप ज़िन्दा हैं, **अल्लाह** पाक की क़सम आप ज़िन्दा हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد


फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (طبرانی)

नेकी की दा'वत देने वाले की ता'रीफ़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुरआने मजीद में फ़रमाने आ़लीशान है :

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ۝ (پ۲۴ حٰم السّجدۃ ۳۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो **अल्लाह** की त़रफ़ बुलाए और नेकी करे और कहे मैं मुसल्मान हूं ।

इस आयते मुबा-रका के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی लिखते हैं : ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि मेरे नज़्दीक येह आयत **मुअज़्ज़िनों** के ह़क़ में नाज़िल हुई और एक क़ौल येह भी है कि जो कोई किसी त़रीक़े पर भी **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ दा'वत दे वोह (या'नी हर नेकी की दा'वत देने वाला) इस में दाख़िल है ।

जो नेकी की दा'वत की धूमें मचाए
मैं देता हूं उस को दुआ़एं मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 152)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

बेहतरीन आदमी की ख़ुसूसिय्यात : साह़िबे क़ुरआने मुबीन, **मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन,** जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक मर्तबा मिम्बरे अक़्दस पर जल्वा फ़रमा थे कि एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : **"या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में सब से अच्छा कौन है ?" फ़रमाया : लोगों में से वोह शख़्स सब से अच्छा है जो कसरत से क़ुरआने करीम की तिलावत करे, ज़ियादा मुत्तक़ी हो, **सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाला हो** और सब से ज़ियादा सिलए रेह़्मी (या'नी रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव) करने वाला हो ।

(مُسندِ اِمام احمد ج ۱۰ ص ۴۰۲ حدیث ۲۷۵۰۴)




तिलावत, परहेज़ गारी, नेकी की दा'वत और सिलए रेहूमी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ूब सवाब लूटने की निय्यत से बयान कर्दा ह़दीसे मुबा-रका की रोशनी में कुछ ''नेकी की दा'वत'' पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। इस रिवायत में सब से **अच्छे आदमी** की चार ख़ुसूसिय्यात बयान की गई हैं : (1) ब करसत तिलावत (2) ख़ूब परहेज़ गारी (3) सब से ज़ियादा नेकी की दा'वत देना और बुराई से मुमा-न-अ़त करना और (4) रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक। वाक़ेई येह चारों निहायत ही उ़म्दा सिफ़ात हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नसीब करे। आमीन। इन चारों के फ़ज़ाइल मुला-ह़ज़ा हों ﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, **नूरे मुजस्सम,** रसूले अकरम, शहन्शाहे आदम व बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन कुरआन पढ़ने वाला आएगा तो कुरआन अ़र्ज़ करेगा : **या रब** عَزَّوَجَلَّ ! इसे हुल्ला (या'नी जन्नत का लिबास) पहना। तो उसे **करामत का हुल्ला** (या'नी बुज़ुर्गी का जन्नती लिबास) पहनाया जाएगा। फिर कुरआन अ़र्ज़ करेगा : ''**या रब** عَزَّوَجَلَّ ! इस में इज़ाफ़ा फ़रमा,'' तो उसे **करामत का ताज** पहनाया जाएगा, फिर कुरआन अ़र्ज़ करेगा : ''**या रब** عَزَّوَجَلَّ ! इस से **राज़ी** हो जा।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी हो जाएगा। फिर इस कुरआन पढ़ने वाले से कहा जाएगा : कुरआन पढ़ता जा और जन्नत के द-रजात तै करता जा और हर आयत पर उसे एक ने'मत अ़ता की जाएगी। (ترمذی ج٤ ص٤١٩ حدیث ٢٩٢٤) ﴾2﴿ परहेज़ गारों को आख़िरत में काम्याबी की नवीद (या'नी ख़ुश ख़बरी) सुनाई गई है चुनान्चे पारह 25 **सू-रतुज़्ज़ुख़रुफ़** आयत नम्बर 35 में इर्शाद होता है : وَالْاٰخِرَۃُ عِنْدَ رَبِّکَ لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿۳۵﴾ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और आख़िरत तुम्हारे रब के पास परहेज़ गारों के लिये है। (پ٢٥، الزخرف: ٣٥) ﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना **का'बुल अह़बार** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इर्शाद है : ''**जन्नतुल फ़िरदौस** ख़ास उस शख़्स के लिये है जो اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَھْیٌ عَنِ الْمُنْکَر करे।'' (या'नी नेकी का हुक्म दे और बुराई से मन्अ़ करे) (تنبیہ المغترین ص ٢٣٦) ﴾4﴿ फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : जिसे येह पसन्द हो कि उस की उ़म्र और रिज़्क़ में इज़ाफ़ा कर दिया जाए तो उसे चाहिये कि अपने वालिदैन के साथ अच्छा

बरताव करे और अपने रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़्मी किया करे ।

(اَلتَّرْغِيب وَالتَّرْهِيب ج٣ ص ٢١٧ حديث١٦)

उ़म्र व रिज़्क़ में ज़ियादती के मा'ना : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द 3 सफ़ह़ा 560 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ह़दीस में आया है कि "सिलए रेह़्म से उ़म्र ज़ियादा होती है और रिज़्क़ में वुस्अ़त (या'नी ज़ियादती) होती है ।" बा'ज़ उ़-लमा ने इस ह़दीस को ज़ाहिर पर ह़म्ल किया है (या'नी ह़दीस के ज़ाहिरी मा'ना ही मुराद हैं) या'नी यहां क़ज़ा **मुअ़ल्लक़** मुराद है क्यूं कि क़ज़ा मुबरम टल नहीं सकती ।[1]

اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٤٩﴾ (پ١١، يونس:٤٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब उन का वा'दा आएगा तो एक घड़ी न पीछे हटें न आगे बढ़ें ।

और बा'ज़ (उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام) ने फ़रमाया कि ज़ियादतिये उ़म्र का येह मत़लब है कि मरने के बा'द भी इस का सवाब लिखा जाता है गोया वोह अब भी ज़िन्दा है या येह मुराद है कि मरने के बा'द भी इस का ज़िक्रे ख़ैर लोगों में बाक़ी रहता है ।

(رَدُّالْمُحتار ج٩ ص٦٧٨)

हाथों हाथ फूफी से सुल्ह़ कर ली : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल बात बात पर लोग रिश्तेदारियां काट कर रख देते हैं, लिहाज़ा आपस में **मह़ब्बत** की फ़ज़ा क़ाइम होने की ख़्वाहिश की अच्छी निय्यत के साथ मज़ीद सवाब कमाने के लिये रिश्तेदारों के साथ ह़ुस्ने सुलूक के ज़िम्न में नेकी की दा'वत पेश करते हुए मज़ीद **म-दनी फूल** पेश करने की सअ़्य करता हूं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ एक मर्तबा **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

1 : क़ज़ा से मुराद यहां क़िस्मत है । क़ज़ा की अक़्साम और इस के बारे में तफ़्सीलात जानने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 14 ता 17 का मुत़ा-लआ़ कीजिये, ख़ुसूसन मजलिस, अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से दिये गए ह़वाशी बे मिसाल और मु-तअ़द्दिद वसाविस का इलाज हैं ।

की अहादीसे मुबा-रका बयान फ़रमा रहे थे, इस दौरान फ़रमाया : हर क़ातेए रेहम (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने वाला) हमारी महफ़िल से उठ जाए । एक नौ जवान उठ कर अपनी फूफी के हां गया जिस से उस का कई साल पुराना झगड़ा था, जब दोनों एक दूसरे से राज़ी हो गए तो उस नौ जवान से फूफी ने कहा : तुम जा कर इस का सबब पूछो, आख़िर ऐसा क्यूं हुवा ? (या'नी सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ए'लान की क्या हिक्मत है ?) नौ जवान ने हाज़िर हो कर जब पूछा तो हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि मैं ने **हुज़ूरे अन्वर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से येह सुना है : "जिस क़ौम में क़ातेए रेहम (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने वाला) हो, उस (क़ौम) पर **अल्लाह** की रहमत का नुज़ूल नहीं होता ।"

(اَلزَّوَاجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِر ج ۲ ص ۱۵۳)

सास बहू में सुल्ह का राज़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! पहले के मुसल्मान किस क़दर ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले हुवा करते थे ! ख़ुश नसीब नौ जवान ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के डर के सबब फ़ौरन अपनी फूफी के पास ख़ुद हाज़िर हो कर सुल्ह की तरकीब कर ली । सभी को चाहिये कि ग़ौर करें कि ख़ानदान में किस किस से अनबन है जब मा'लूम हो जाए तो अब अगर शर-ई उ़ज़्र न हो तो फ़ौरन नाराज़ रिश्तेदारों से "सुल्हो सफ़ाई" की तरकीब शुरूअ़ कर दें । अगर झुकना भी पड़े तो बेशक रिज़ाए इलाही के लिये झुक जाएं । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सर बुलन्दी पाएंगे । **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰهِ رَفَعَهُ اللّٰهُ या'नी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी करता है **अल्लाह** तआ़ला उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है । **(شُعَبُ الْاِيمَان ج ٦ ص ٢٧٦ حديث ٨١٤٠)** अपने घरों और मुआ़-शरे को **अम्न का गहवारा** बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये, और हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये नीज़ **म-दनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये । आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** पेश करता हूं, चुनान्चे **बाबुल मदीना** (कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि तवील अ़र्से से मेरी ज़ौजा और वालिदा या'नी **सास बहू** में ख़ूब ठनी हुई थी, नतीजतन

ज़ौजा **रूठ** कर मयके जा बैठी। मैं सख़्त परेशान था, समझ में नहीं आता था कि इस मस्अले को कैसे **ह़ल** करूं। ऐसे में दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की जारी कर्दा "म-दनी मुज़ा-करे" की VCD **"घर अम्न का गहवारा कैसे बने !"** मेरे हाथ आई। मौज़ूअ़ देखा तो बड़ी उम्मीद के साथ येह VCD ख़ुद भी देखी और अपनी वालिदए मोह़तरमा को भी दिखाई और एक VCD अपने सुसराल भी भेज दी। मेरी वालिदा को येह VCD इतनी **पसन्द** आई कि उन्हों ने इसे दो बार देखा और ह़ैरत अंगेज़ तौर पर मुझ से फ़रमाने लगीं : **"चल बेटा ! तेरे सुसराल चलते हैं।"** मैं ने सुकून का सांस लिया कि लगता है जो काम मैं भरपूर इन्फ़िरादी कोशिश के बा वुजूद न कर सका वोह इस VCD ने कर दिया। **मेरे** सुसराल पहुंच कर वालिदा साह़िबा ने बड़ी **मह़ब्बत** से मेरी ज़ौजा को **मनाया** और उसे वापस घर ले आईं। दूसरी जानिब मेरी ज़ौजा ने भी **मुस्बत त़र्ज़े अ़मल** का मुज़ा-हरा किया और घर पहुंचने के बा'द दूसरे ही दिन अपनी सास (या'नी मेरी वालिदा) से कहने लगीं : अम्मीजान ! मेरा कमरा बहुत बड़ा है, जब कि दीगर घर वाले जिस कमरे में रहते हैं वोह क़दरे छोटा है, आप मेरा कमरा ले लीजिये और मैं उस छोटे कमरे में रिहाइश इख़्तियार कर लेती हूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ हमारा घर जो फ़ितने और फ़साद का शिकार था, दा'वते इस्लामी की ब-र-कत से **अम्न का गहवारा** बन गया। (म-दनी मुज़ाकरे की मज़्कूरा VCD "घर अम्न का गहवारा कैसे बने" **मक-त-बतुल मदीना** से हदिय्यतन ली जा सकती और दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net पर देखी और सुनी जा सकती है।)

जहां रिश्ता तोड़ने वाला मौजूद हो वहां रह़मत नहीं उतरती : "त़-बरानी" में ह़ज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल है, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ एक बार सुब्ह़ के वक़्त मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा थे, उन्हों ने फ़रमाया : मैं क़ात़ेए़ रेह़्म (या'नी रिश्ता तोड़ने वाले) को **अल्लाह** की क़सम देता हूं कि वोह यहां से उठ जाए ताकि हम **अल्लाह** तआ़ला से मग़्फ़िरत की दुआ़ करें क्यूं कि क़ात़ेए़ रेह़्म (या'नी रिश्ता तोड़ने वाले) पर आस्मान के दरवाज़े बन्द रहते हैं। (या'नी अगर वोह यहां मौजूद रहेगा तो रह़मत नहीं उतरेगी और हमारी दुआ़ क़बूल नहीं होगी) **(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج ٩ ص١٥٨ رقم٨٧٩٣)**

"हुस्ने सुलूक" के 7 हुरूफ़ की निस्बत से सिलए रेहमी के सात म-दनी फूल

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द 3 सफ़हा 559 ता 560 पर से **"हुस्ने सुलूक"** के सात हुरूफ़ की निस्बत से सात **म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये :

﴾1﴿ किस रिश्तेदार से क्या बरताव करे : **अहादीस** में मुत़्लक़न (या'नी बिग़ैर किसी क़ैद के) रिश्ते वालों के साथ सिला (या'नी सुलूक) करने का हुक्म आता है, क़ुरआने मजीद में मुत़्लक़न (या'नी बिला क़ैद) ज़विल क़ुरबा (या'नी क़राबत वाले) फ़रमाया गया मगर येह बात ज़रूर है कि रिश्ते में चूंकि मुख़्तलिफ़ द-रजात हैं (इसी त़रह़) सिलए रेह़्म (या'नी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) के द-रजात में भी तफ़ावुत (या'नी फ़र्क़) होता है । वालिदैन का मर्तबा सब से बढ़ कर है, इन के बा'द ज़ू रेह़्म मह़रम का, (या'नी वोह रिश्तेदार जिन से न-सबी रिश्ता होने की वजह से निकाह़ हमेशा के लिये ह़राम हो) इन के बा'द बक़िय्या रिश्ते वालों का अ़ला क़-दरे मरातिब । (या'नी रिश्ते में नज़्दीकी की तरतीब के मुत़ाबिक़)

(رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۷۸)

﴾2﴿ रिश्तेदार से सुलूक की सूरतें : **सिलए** रेह़्म (या'नी रिश्तेदारों के साथ सुलूक) की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं, इन को हदिय्या व तोह़फ़ा देना और अगर इन को किसी बात में तुम्हारी इआ़नत (या'नी इमदाद) दरकार हो तो इस काम में इन की मदद करना, इन्हें सलाम करना, इन की मुलाक़ात को जाना, इन के पास उठना बैठना, इन से बातचीत करना, इन के साथ लुत़्फ़ व मेहरबानी से पेश आना । (دُرَر ج۱ ص۳۲۳)

﴾3﴿ परदेस हो तो ख़त़ भेजा करे : अगर येह शख़्स परदेस में है तो रिश्ते वालों के पास ख़त़ भेजा करे, इन से ख़त़ व किताबत जारी रखे ताकि बे तअ़ल्लुक़ी पैदा न होने पाए और हो सके तो वत़न आए और रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात ताज़ा कर ले, इस त़रह़ करने से **मह़ब्बत** में इज़ाफ़ा होगा । (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۷۸) (फ़ोन या इन्टरनेट के ज़रीए़ भी राबिते़ की तरकीब मुफ़ीद है)

﴾4﴿ परदेस में हो, मां बाप बुलाएं तो आना पड़ेगा : येह परदेस में है वालिदैन इसे बुलाते हैं तो आना ही होगा, ख़त़ लिखना काफ़ी नहीं है । यूहीं वालिदैन को इस की ख़िदमत की ह़ाजत हो तो आए और उन की ख़िदमत करे, बाप के बा'द दादा और बड़े भाई का मर्तबा है कि बड़ा भाई **ब मन्ज़िला** बाप के होता है, बड़ी बहन और ख़ाला मां की जगह पर हैं, बा'ज़ उ़-लमा ने चचा को बाप की मिस्ल बताया और ह़दीस : عَمُّ الرَّجُلِ صِنْوُ اَبِيْهِ (या'नी आदमी का चचा बाप की मिस्ल होता है) से भी येही मुस्तफ़ाद होता (या'नी नतीजा निकलता) है । इन के इ़लावा औरों के पास ख़त़ भेजना हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) भेजना किफ़ायत करता है ।

(رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۷۸)

﴾5﴿ किस किस रिश्तेदार से कब कब मिले : रिश्तेदारों से नाग़ा दे कर मिलता रहे या'नी एक दिन मिलने को जाए दूसरे दिन न जाए وَعَلٰی هٰذَا الْقِيَاس (या'नी इसी पर अन्दाज़ा लगा कर) कि इस से **मह़ब्बत** व उल्फ़त ज़ियादा होती है, बल्कि अक़्रिबा (या'नी क़राबत दारों) से जुमुआ़ जुमुआ़ मिलता रहे या महीने में एक बार और तमाम क़बीले और ख़ानदान को एक (या'नी मुत्तह़िद) होना चाहिये, जब ह़क़ उन के साथ हो (या'नी वोह ह़क़ पर हों) तो दूसरों से मुक़ाबला और इज़्हारे ह़क़ में सब मुत्तह़िद हो कर काम करें ।

(دُرَر ج۱ ص۳۲۳)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

《6》 रिश्तेदार ह़ाजत पेश करे तो रद कर देना गुनाह है : जब अपना कोई रिश्तेदार कोई ह़ाजत पेश करे तो उस की ह़ाजत रवाई करे, उस को रद कर देना क़त्ए रेह़्म (या'नी रिश्ता तोड़ना) है । (ایضاً) (याद रहे ! सिलए रेह़्म वाजिब है और क़त्ए रेह़्म ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है)

《7》 सिलए रेह़्म येह है कि वोह तोड़े तब भी तुम जोड़ो : सिलए रेह़्मी (रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक) इसी का नाम नहीं कि वोह सुलूक करे तो तुम भी करो, येह चीज़ तो ह़क़ीक़त में मुकाफ़ात या'नी अदला बदला करना है कि उस ने तुम्हारे पास चीज़ भेज दी तुम ने उस के पास भेज दी, वोह तुम्हारे यहां आया तुम उस के पास चले गए । ह़क़ीक़तन **सिलए रेह़्म** (या'नी रिश्तेदारों से ह़ुस्ने सुलूक) येह है कि वोह काटे और तुम जोड़ो, वोह तुम से जुदा होना चाहता है, बे ए'तनाई (या'नी ला परवाही) करता है और तुम उस के साथ रिश्ते के ह़ुक़ूक़ की मुराआ़त (या'नी लिह़ाज़ व रिआ़यत) करो ।

(رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۷۸)

ह़ुस्ने ज़न रखने का त़रीक़ा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा सातों **म-दनी फूल** निहायत तवज्जोह के क़ाबिल हैं, बिल ख़ुसूस सातवें **म-दनी फूल** जिस में "अदले बदले" का ज़िक्र है इस के बारे में अ़र्ज़ है कि आज कल उ़मूमन येही "अदला बदला" हो रहा है । एक रिश्तेदार अगर इस को शादी की दा'वत देता है जभी येह उस को देता है अगर वोह न दे तो येह भी नहीं देता । अगर उस एक ने इस को ज़ियादा अफ़्राद की दा'वत दी और येह अगर उस को कम अफ़्राद की दा'वत दे तो इस का ठीक ठाक नोटिस लिया जाता, ख़ूब तन्क़ीदें और ग़ीबतें की जाती हैं । इसी त़रह़ जो रिश्तेदार इस के यहां किसी तक़्रीब में शिर्कत नहीं करता तो येह उस के यहां होने वाली तक़्रीब का बाएकाट कर देता है और यूं फ़ासिले मज़ीद बढ़ाए जाते हैं । ह़ालां कि कोई हमारे यहां शरीक न हुवा हो तो उस के बारे में अच्छा गुमान

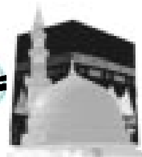
रखने के कई पहलू निकल सकते हैं, म-सलन वोह न आने वाला बीमार हो गया होगा, भूल गया होगा, ज़रूरी काम आ पड़ा होगा, या कोई सख़्त मजबूरी होगी जिस की वज़ाहत उस के लिये दुश्वार होगी वग़ैरा। वोह अपनी ग़ैर हाज़िरी का सबब बताए या न बताए, हमें **हुस्ने ज़न** रख कर सवाब कमाना और जन्नत में जाने का सामान करते रहना चाहिये। चुनान्चे फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ या'नी हुस्ने ज़न उ़म्दा इ़बादत से है। (ابوداؤد ج٤ ص٣٨٨ حديث ٤٩٩٣) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के मुख़्तलिफ़ मत़ालिब बयान करते हुए लिखते हैं : या'नी मुसल्मानों से अच्छा गुमान करना, इन पर **बद गुमानी** न करना येह भी अच्छी इ़बादात में से एक **इ़बादत** है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 621)

जन्नत का मह़ल उस को मिलेगा जो......: **बिलफ़र्ज़** हमारा रिश्तेदार सुस्ती के सबब या किसी भी वजह से जान बूझ कर हमारे यहां नहीं आया या हमें अपने यहां मद-ऊ़ नहीं किया बल्कि उस ने खुल्लम खुल्ला हमारे साथ बद सुलूकी की तब भी हमें बड़ा ह़ौसला रखते हुए तअ़ल्लुक़ात बर क़रार रखने चाहिएं, **ह़ज़रते** सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है : जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) मह़ल बनाया जाए और उस के द-रजात बुलन्द किये जाएं, उसे चाहिये कि जो उस पर ज़ुल्म करे येह उसे मुआ़फ़ करे और जो उसे मह़रूम करे येह उसे अ़त़ा करे और जो उस से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ करे येह उस से नात़ा (या'नी तअ़ल्लुक़) जोड़े। (اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج٣ ص١٢ حديث ٣٢١٥)

दुश्मनी छुपाने वाले रिश्तेदार को स-दक़ा देना अफ़्ज़ल तरीन है :

बहर ह़ाल कोई हमारे साथ हुस्ने सुलूक करे या न करे हमें हुस्ने सुलूक जारी रखना चाहिये। "**मुस्नदे इमाम अह़मद**" की ह़दीसे पाक में है : إِنَّ اَفْضَلَ الصَّدَقَةِ الصَّدَقَةُ عَلٰى ذِى الرَّحِمِ الْكَاشِحِ बेशक अफ़्ज़ल तरीन स-दक़ा वोह है जो दुश्मनी छुपाने वाले रिश्तेदार पर किया जाए। (مُسندِ إمام احمد ج٩ ص١٣٨ حديث ٢٣٥٨٩)






रिश्तेदार से जब सख़्त दुख पहुंचा : **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र **सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपने ख़ालाज़ाद भाई ग़रीब व नादार व मुहाजिर और बद्री सहाबी ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्त़ह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जिन का आप ख़र्च उठाते थे उन से सख़्त रन्ज पहुंचा और वोह येह कि उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की प्यारी बेटी या'नी **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर तोहमत लगाने वालों के साथ मुवा-फ़क़त की थी (वोह त़वील क़िस्सा है जो कि "वाक़िअ़ए इफ़्क" कहलाता है इस का तज़्किरा सफ़ह़ा **196** पर आ रहा है) इस पर आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने ख़र्च न देने की क़सम खाई । इस पर पारह 18 **सू-रतुन्नूर** की आयत नम्बर 22 नाज़िल हुई । वोह आयते मुबा-रका येह है :

وَلَا یَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَ السَّعَةِ اَنْ یُّؤْتُوْۤا اُولِی الْقُرْبٰى وَ الْمَسٰكِیْنَ وَ الْمُهٰجِرِیْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ﳚ وَ لْیَعْفُوْا وَ لْیَصْفَحُوْاؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ یَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۲۲﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और क़सम न खाएं वोह जो तुम में फ़ज़ीलत वाले और गुन्जाइश वाले हैं क़राबत वालों और मिस्कीनों और **अल्लाह** की राह में हिजरत करने वालों को देने की और चाहिये कि मुआ़फ़ करें और दर गुज़रें क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि **अल्लाह** तुम्हारी बख़्शिश करे और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है ।

जब येह आयत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पढ़ी तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : बेशक मेरी आरज़ू है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़्फ़िरत करे और मैं मिस्त़ह़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के साथ जो सुलूक करता था उस को कभी मौक़ूफ़ (या'नी बन्द) न करूंगा चुनान्चे आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने उस (माली तआ़वुन) को जारी फ़रमा दिया । इस आयत से मा'लूम हुवा कि जो शख़्स किसी काम पर **क़सम** खाए फिर मा'लूम हो कि उस का करना ही बेहतर है तो चाहिये कि उस काम को करे और **क़सम का कफ़्फ़ारा** दे, ह़दीसे सह़ीह़ में येही वारिद है । मज़ीद फ़रमाते हैं : इस आयत से ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फ़ज़ीलत साबित हुई, इस से आप की उ़लुव्वे शान व मर्तबत (या'नी रुत्बे की अ़-ज़मत) ज़ाहिर होती है कि **अल्लाह** तआ़ला





ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को (आयते कुरआनी में) **ऊलुल फ़ज़्ल** (या'नी फ़ज़ीलत वाला इर्शाद) फ़रमाया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 563) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का — है यारे ग़ार मह़बूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

मक़ामे ख़्वाबे राह़त चैन से आराम करने को
बना पहलूए मह़बूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़सम और उस के कफ़्फ़ारे का बयान (ह़-नफ़ी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अमीरुल मुअमिनीन** आ़शिक़े अक्बर, ह़ज़रते सय्यिदुना **सिद्दीक़े अक्बर** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के वाक़िए में **क़सम** का और तफ़्सीर में **क़सम के कफ़्फ़ारे** का तज़्किरा है, चूंकि आज कल कसीर लोगों का बात बात पर क़समें खाने की त़रफ़ रुजह़ान देखा जा रहा है, बारहा झूटी क़सम भी खा ली जाती है, न तौबा का शुऊ़र न कफ़्फ़ारा देने की कोई शुदबुद, लिहाज़ा उम्मत की ख़ैर ख़्वाही का सवाब कमाने की ह़िर्स के सबब बत़ौरे **नेकी की दा'वत** क़दरे तफ़्सील के साथ **क़सम** और इस के **कफ़्फ़ारे** के बारे में **म-दनी फूल** पेश करता हूं, क़बूल फ़रमाइये। इस का अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा मुत़ा-लआ़ या बा'ज़ इस्लामी भाइयों का मिल बैठ कर दर्स देना सिर्फ़ मुफ़ीद ही नहीं, اِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुफ़ीद तरीन साबित होगा।

क़सम की ता'रीफ़ : **क़सम** को अ़-रबी ज़बान में "**यमीन**" कहते हैं जिस का मत़लब है : "दाहिनी (या'नी सीधी) जानिब", चूंकि अहले अ़रब उ़मूमन **क़सम** खाते या क़सम लेते वक़्त एक दूसरे से दाहिना (या'नी सीधा) हाथ मिलाते थे इस लिये **क़सम** को "यमीन" कहने लगे, या फिर **यमीन** "**युम्न**" से बना है जिस के मा'ना हैं "ब-र-कत व कु़व्वत", चूंकि क़सम में **अल्लाह** तआ़ला का बा ब-र-कत नाम भी लेते हैं और इस से अपने कलाम को कु़व्वत देते हैं इस लिये इसे **यमीन** कहते हैं या'नी ब-र-कत व कु़व्वत वाली गुफ़्त-गू। (मुलख़्ख़स अज़ मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 194) शर-ई़ ए'तिबार से **क़सम** उस अ़क़्द (या'नी अ़हदो पैमां) को कहते हैं जिस के ज़रीए़ क़सम खाने वाला किसी काम के करने या न करने का पुख़्ता (पक्का) इरादा करता है। (دُرِّمُختار ج٥ ص٤٨٨) म-सलन किसी ने यूं कहा : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं कल तुम्हारा सारा क़र्ज़ अदा कर दूंगा" तो येह **क़सम** है।

क़सम की तीन अक़्साम : **क़सम** तीन त़रह़ की होती है :

(1) लग़्व (2) ग़मूस (3) मुन्अ़क़िदा।

﴾1﴿ **लग़्व** येह है कि किसी गुज़रे हुए या मौजूदा अम्र (या'नी मुआ़-मले) पर अपने ख़याल में (या'नी ग़लत़ फ़हमी की वजह से) सह़ीह़ जान कर **क़सम** खाए और दर ह़क़ीक़त वोह बात उस के ख़िलाफ़ (या'नी उलट) हो, म-सलन किसी ने क़सम खाई : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! ज़ैद घर पर नहीं है" और इस की मा'लूमात में येही था कि ज़ैद घर पर नहीं है और इस ने अपने गुमान में सच्ची क़सम खाई थी मगर ह़क़ीक़त में ज़ैद घर पर था तो येह क़सम "लग़्व" कहलाएगी, येह मुआ़फ़ है और इस पर कफ़्फ़ारा नहीं ﴾2﴿ **ग़मूस** येह है कि किसी गुज़रे हुए या मौजूदा अम्र (या'नी मुआ़-मले) पर दानिस्ता (या'नी जान बूझ कर) झूटी क़सम खाए म-सलन किसी ने क़सम खाई : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! ज़ैद घर पर है," और वोह जानता है कि ह़क़ीक़त में ज़ैद घर पर नहीं है तो येह क़सम "ग़मूस" कहलाएगी और क़सम खाने वाला सख़्त गुनहगार हुवा, इस्तिग़फ़ार व तौबा फ़र्ज़ है मगर कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं ﴾3﴿ **मुन्अ़क़िदा** येह है कि आयन्दा के लिये क़सम खाई म-सलन यूं कहा : "रब عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं कल तुम्हारे घर ज़रूर आऊंगा।" मगर दूसरे दिन न आया तो **क़सम** टूट गई, उसे **कफ़्फ़ारा** देना पड़ेगा और बा'ज़ सूरतों में गुनहगार भी होगा। (فتاوٰی عالمگیری ج٢ ص٥٢)

ख़ुलासा येह हुवा कि क़सम खाने वाला किसी गुज़री हुई या मौजूदा बात के बारे में क़सम खाएगा तो वोह या तो सच्चा होगा या फिर झूटा, अगर सच्चा होगा तो कोई ह़रज नहीं और अगर झूटा होगा तो उस ने वोह क़सम अपने ख़याल के मुताबिक़ अगर सच्ची खाई थी तो अब भी ह़रज नहीं या'नी गुनाह भी नहीं और कफ़्फ़ारा भी नहीं हां अगर उसे पता था कि मैं झूटी क़सम खा रहा हूं तो गुनहगार होगा मगर कफ़्फ़ारा नहीं है, और अगर इस ने **आयन्दा के लिये** किसी काम के करने या न करने की **क़सम** खाई तो अगर वोह क़सम पूरी कर देता है फ़बिहा (या'नी ख़ूब बेहतर) वरना **कफ़्फ़ारा** देना होगा और बा'ज़ सूरतों में क़सम तोड़ने की वजह से गुनहगार भी होगा। (इन सूरतों की तफ़्सील आगे आ रही है)

झूटी क़सम खाना गुनाहे कबीरा है : **रसूले** बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना, किसी जान को क़त्ल करना और **झूटी क़सम** खाना कबीरा गुनाह हैं।" **(بُخاری ج٤ص٢٩٥حدیث٦٦٧٥)**

सब से पहले झूटी क़सम शैतान ने खाई : ह़ज़रते सय्यिदुना **आदम सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को सज्दा न करने की वजह से शैतान मरदूद हुवा था लिहाज़ा वोह आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को नुक़्सान पहुंचाने की ताक में रहा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़राते सय्यिदैना **आदम व ह़व्वा** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام وَ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से फ़रमाया कि जन्नत में रहो और जहां दिल करे बे रोक टोक खाओ अलबत्ता इस "दरख़्त" के क़रीब न जाना। शैतान ने किसी त़रह ह़ज़राते सय्यिदैना **आदम व ह़व्वा** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام وَرَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास पहुंच कर कहा कि मैं तुम्हें "**श-जरे ख़ुल्द**" बता दूं, ह़ज़रते सय्यिदुना **आदम सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने मन्अ़ फ़रमाया तो शैतान ने **क़सम** खाई कि मैं तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह (या'नी भलाई चाहने वाला) हूं। इन्हें ख़याल हुवा कि **अल्लाह** पाक की झूटी क़सम कौन खा सकता है ! येह सोच कर ह़ज़रते सय्यि-दतुना **ह़व्वा** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इस में से कुछ खाया फिर ह़ज़रते सय्यिदुना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है । (عبدالرزاق)

आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दिया उन्हों ने भी खा लिया । (مُلَخَّص از تفسیر عبد الرّزاق ج۲ ص۷٦) जैसा कि पारह 8 सू-रतुल आ'राफ़ की आयत 20 और 21 में इर्शाद होता है :

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ۝ وَقَاسَمَهُمَاۤ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर शैत़ान ने उन के जी में ख़त़रा डाला कि उन पर खोल दे उन की शर्म की चीज़ें जो उन से छुपी थीं और बोला : तुम्हें तुम्हारे रब ने इस पेड़ से इसी लिये मन्अ़ फ़रमाया है कि कहीं तुम दो फ़िरिश्ते हो जाओ या हमेशा जीने वाले और उन से **क़सम** खाई कि मैं तुम दोनों का ख़ैर ख़्वाह हूं ।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی तफ़्सीरे **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में लिखते हैं : मा'ना येह हैं कि इब्लीसे मल्ऊ़न ने झूटी क़सम खा कर ह़ज़रते (सय्यिदुना) आदम (عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को धोका दिया और **पहला झूटी क़सम खाने वाला इब्लीस ही है,** ह़ज़रते आदम (عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को गुमान भी न था कि कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खा कर झूट बोल सकता है, इस लिये आप ने उस की बात का ए'तिबार किया ।

किसी का ह़क़ मारने के लिये झूटी क़सम खाने वाला जहन्नमी है :

रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : जो क़सम खा कर किसी मुसल्मान का ह़क़ मार ले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जहन्नम वाजिब कर देता और उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा देता है । अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर्चे वोह थोड़ी सी चीज़ ही हो ? इर्शाद फ़रमाया : "अगर्चे **पीलू** की शाख़ ही हो ।" (مُسلِم ص۸۲ حدیث ۲۱۸۔(۱۳۷)) **पीलू** एक दरख़्त है जिस की शाख़ और जड़ से मिस्वाक बनाते हैं ।

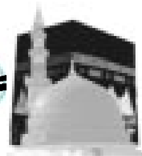
झूटी क़सम खाने वाले के ह़श्र में हाथ पाउं कटे हुए होंगे : एक **ह़ज़्रमी** (या'नी **मुल्के यमन** के शहर "**ह़ज़्र मौत**" के बाशिन्दे) और एक **किन्दी** (या'नी क़बीलए **किन्दा** से वाबस्ता एक शख़्स) ने मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अन्वर में **यमन** की एक ज़मीन के **मु-तअ़ल्लिक़** अपना झगड़ा पेश किया, **ह़ज़्रमी** ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी ज़मीन इस के बाप ने छीन ली थी, अब वोह इस के क़ब्ज़े में है।" तो नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम्हारे पास कोई गवाही है ?" अ़र्ज़ की : "नहीं, लेकिन मैं इस से क़सम लूंगा कि **अल्लाह** की क़सम खा कर कहे कि वोह नहीं जानता कि वोह मेरी ज़मीन है जो इस के बाप ने ग़सब कर ली थी।" **किन्दी** क़सम खाने के लिये तय्यार हो गया तो रसूले अकरम, शहन्शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो (झूटी) क़सम खा कर किसी का माल दबाएगा वोह बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में इस ह़ालत में पेश होगा कि **उस के हाथ पाउं कटे हुए होंगे ।**" येह सुन कर **किन्दी** ने कह दिया कि येह ज़मीन उसी (या'नी ह़ज़्रमी) की है। **(سُنَنِ ابوداوٗد ج۳ص۲۹۸ حدیث۳۲۴٤)**

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : سُبْحٰنَ الله ! येह है असर उस ज़बाने फ़ैज़ तरजुमान का कि दो कलिमात में उस (किन्दी) के दिल का ह़ाल बदल गया और सच्ची बात कह कर ज़मीन से ला दा'वा हो गया। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 403)

सात ज़मीनों का हार : **रिश्वतों** के ज़रीए़ दूसरों की जगहों पर क़ब्ज़ा कर के इमारतें बनाने वालों, लोगों की त़रफ़ से ठेके पर मिली हुई ज़र-ई ज़मीनें दबा लेने वाले किसानों, वडेरों और ख़ाइन ज़मीन दारों को घबरा कर झटपट तौबा कर लेनी चाहिये और जिन जिन के हुक़ूक़ दबाए हैं वोह फ़ौरन अदा कर देने चाहिएं कि "मुस्लिम शरीफ़" में सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो शख़्स किसी की बालिश्त भर ज़मीन नाह़क़ त़ौर पर लेगा तो उसे क़ियामत के रोज़ सात ज़मीनों का त़ौक़ (या'नी हार) पहनाया जाएगा।"

(صَحیح مُسلِم ص۸٦۹ حدیث ۱٦۱۰)






शारेए़ आ़म पर बिला ह़ाजते शर-ई रास्ता मत घेरिये : **बा'ज़** लोग शारेए़ आ़म पर बिला ह़ाजत रास्ता घेर लेते हैं जिन में कई सूरतें लोगों के लिये सख़्त तक्लीफ़ का बाइ़स बनती हैं, म-सलन ﴿1﴾ बक़र ईद के दिनों में क़ुरबानी के जानवर बेचने या किराए पर रखने या ज़ब्ह़ करने के लिये बा'ज़ जगह बिला ज़रूरत पूरी पूरी गलियां घेर लेते हैं ﴿2﴾ रास्ते में तक्लीफ़ देह ह़द तक कचरा या मल्बा डालते, ता'मीरात के लिये ग़ैर ज़रूरी त़ौर पर बजरी और सरियों का ढेर लगा देते हैं और यूंही ता'मीरात के बा'द महीनों तक बचा हुवा सामान व मल्बा पड़ा रहता है ﴿3﴾ शादी व ग़मी की तक़रीबों, नियाज़ों वग़ैरा के मौक़ओ़ं पर गलियों में देगें पकाते हैं जिन से बा'ज़ अवक़ात ज़मीन पर गढ़े पड़ जाते हैं, फिर उन में कीचड़ और गन्दे पानी के ज़ख़ीरे के ज़रीए़ मच्छर पैदा होते और बीमारियां फैलती हैं ﴿4﴾ आ़म रास्तों में खुदाई करवा देते हैं मगर ज़रूरत पूरी हो जाने के बा वुजूद भरवा कर ह़स्बे साबिक़ हमवार नहीं करते ﴿5﴾ रिहाइश या कारोबार के लिये ना जाइज़ क़ब्ज़ा जमा कर इस त़रह़ जगह घेर लेते हैं कि लोगों का रास्ता तंग हो जाता है। इन सब के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 853 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल)" सफ़ह़ा 816 पर इमाम इब्ने **ह़जर** मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى कबीरा गुनाह नम्बर 215 में इस फ़े'ल (या'नी काम) को गुनाहे कबीरा क़रार देते हुए फ़रमाते हैं : "शारेए़ आ़म में ग़ैर शर-ई तसर्रुफ़ (मुदा-ख़लत) करना या'नी ऐसा तसर्रुफ़ (या'नी दख़्ल देना या अ़मल इख़्तियार) करना जिस से गुज़रने वालों को सख़्त नुक़्सान पहुंचे" इस का सबब बयान करते हुए तह़रीर करते हैं कि इस में लोगों की ईज़ा रसानी और ज़ुल्मन उन के ह़ुक़ूक़ का दबाना पाया जा रहा है। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जिस ने एक बालिश्त ज़मीन ज़ुल्म के त़ौर पर ले ली क़ियामत के दिन सातों ज़मीनों से इतना ह़िस्सा त़ौक़ बना कर उस के गले में डाल दिया जाएगा।" (صحیح بُخاری ج ۲ ص۳۷۷حدیث۳۱۹۸)





झूटी क़सम घरों को वीरान कर छोड़ती है : झूटी क़सम के नुक़्सानात का नक़्शा खींचते हुए **मेरे** आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **झूटी क़सम** घरों को वीरान कर छोड़ती है (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 602) एक और मक़ाम पर लिखते हैं : झूटी क़सम गुज़श्ता बात पर दानिस्ता (या'नी जान बूझ कर खाने वाले पर अगर्चे) इस का कोई कफ़्फ़ारा नहीं, (मगर) इस की सज़ा येह है कि **जहन्नम के खौलते दरिया में ग़ोते दिया जाएगा ।** (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 13, स. 611) **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ज़रा ग़ौर कीजिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस ने हमें पैदा किया, पूरी काएनात को तख़्लीक़ किया (या'नी बनाया), जिस पर हर हर बात ज़ाहिर है, कोई चीज़ उस से पोशीदा नहीं, ह़त्ता कि दिलों के भेद भी वोह ख़ूब जानता है, जो रह़मान व रह़ीम भी है और क़हहार व जब्बार भी है, उस रब्बुल अनाम का नाम ले कर **झूटी क़सम** खाना कितनी बड़ी नादानी की बात है और वोह भी दुन्या के किसी आ़रिज़ी (वक़्ती) फ़ाएदे या चन्द सिक्कों के लिये !

यहूदियों ने शाने मुस्त़फ़ा छुपाने के लिये झूटी क़सम खाई : यहूद के अह़बार (या'नी उ़-लमा) और इन के रईसों (या'नी सरदारों) **अबू राफ़ेअ़ व किनाना बिन अबिल हुक़ैक़** और **का'ब बिन अशरफ़** और **हुयय्यिब्नि अख़्त़ब** ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वोह अ़ह्द छुपाया जो सय्यिदे आ़लम, रसूले मोह़तरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने के **मु-तअ़ल्लिक़** इन से **तौरैत** शरीफ़ में लिया गया। वोह इस त़रह़ कि उन्हों ने इस को बदल दिया और इस की जगह अपने हाथों से कुछ का कुछ लिख दिया और **झूटी क़सम** खाई कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है, येह सब कुछ उन्हों ने अपनी जमाअ़त के जाहिलों से रिश्वतें और मालो ज़र ह़ासिल करने के लिये किया। उन के बारे में येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَ اَیْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِیْلًا اُولٰٓىٕكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ وَ لَا یُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَ لَا یَنْظُرُ اِلَیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَ لَا یُزَكِّیْهِمْ۪ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ(۷۷)

(پ۳،اٰل عمرٰن:۷۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो **अल्लाह** के अ़ह्द और अपनी **क़समों** के बदले ज़लील दाम लेते हैं आख़िरत में उन का कुछ हिस्सा नहीं और **अल्लाह** न उन से बात करे, न उन की त़रफ़ नज़र फ़रमाए क़ियामत के दिन और न उन्हें पाक करे और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

(تفسیرِخازن ج۱ص۲٦۰)

नीली आंखों वाला मुनाफ़िक़ : **अ़ब्दुल्लाह बिन नब्तल** (नामी एक) मुनाफ़िक़ (था) जो रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मजलिस में ह़ाज़िर रहता और यहां की बात यहूद के पास पहुंचाता (था), एक रोज़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ फ़रमा थे, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस वक़्त एक आदमी आएगा जिस का दिल निहायत सख़्त और शैत़ान की आंखों से देखता है, थोड़ी ही देर बा'द **अ़ब्दुल्लाह बिन नब्तल** आया, उस की आंखें **नीली** थीं, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : तू और तेरे साथी क्यूं हमें गालियां देते हैं ? वोह **क़सम** खा गया कि ऐसा नहीं करता और अपने यारों को ले आया, उन्हों ने भी **क़सम** खाई कि हम ने आप को गाली नहीं दी, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَیْهِمْؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَ لَا مِنْهُمْۙ وَ یَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَ هُمْ یَعْلَمُوْنَ(۱۴)

(پ۲۸،مجادلہ:۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम ने उन्हें न देखा जो ऐसों के दोस्त हुए जिन पर **अल्लाह** का ग़ज़ब है, वोह न तुम में से न उन में से, वोह दानिस्ता **झूटी क़सम** खाते हैं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

जहन्नम में ले जाने का हुक्म होगा : **मन्क़ूल** है कि क़ियामत के दिन एक शख़्स को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़ा किया जाएगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम में ले जाने का हुक्म फ़रमाएगा। वोह अ़र्ज़ करेगा : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे किस लिये जहन्नम में भेजा जा रहा है ? इर्शाद होगा : नमाज़ों को उन का वक़्त गुज़ार कर पढ़ने और मेरे नाम की **झूटी क़समें** खाने की वजह से। (مُکاشَفَۃُ الْقُلوب ص۱۸۹)

झूटी क़सम खाने वाले ताजिर के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, **दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तीन शख़्स ऐसे हैं जिन से **अल्लाह** तआ़ला न कलाम फ़रमाएगा, न उन की त़रफ़ नज़रे करम फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक करेगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह बात तीन बार इर्शाद फ़रमाई तो मैं ने अ़र्ज़ की : वोह तो तबाह व बरबाद हो गए, वोह कौन लोग हैं ? इर्शाद फ़रमाया : ﴾1﴿ **तकब्बुर** से अपना तहबन्द लटकाने वाला और ﴾2﴿ एह़सान जतलाने वाला और ﴾3﴿ झूटी क़सम खा कर अपना माल बेचने वाला।

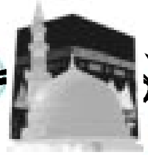
(صَحیح مُسلِم ص۶۷ حدیث۱۷۱(۱۰۶))

झूटी क़सम से ब-र-कत मिट जाती है : **इस** रिवायत से ख़ुसूसन वोह ताजिर व दुकान दार ह़ज़रात इ़ब्रत पकड़े जो **झूटी क़समें** खा कर अपना माल फ़रोख़्त करते हैं, अश्या के उ़यूब (या'नी ख़ामियां) छुपाने और नाक़िस व घटिया माल पर ज़ियादा नफ़्अ़ कमाने की ख़ात़िर पै दर पै **क़समें** खाए चले जाते हैं और इस में किसी क़िस्म की आ़र (या'नी शर्म व झिजक) मह़सूस नहीं करते, इन के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है कि शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **झूटी क़सम** से सौदा फ़रोख़्त हो जाता है और ब-र-कत मिट जाती है। (کَنْزُ الْعُمّال ج۱۶، ص۲۹۷ حدیث۴۶۳۷۶) एक और जगह फ़रमाया : "**क़सम** सामान बिकवाने वाली है और ब-र-कत मिटाने वाली है।" (صَحیح بُخاری ج۲ ص۱۰ حدیث۲۰۸۷)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं **:** ब-र-कत (मिट जाने) से मुराद आयन्दा कारोबार बन्द हो जाना हो या किये हुए ब्योपार में घाटा (या'नी नुक़्सान) पड़ जाना या'नी अगर तुम ने किसी को **झूटी क़सम** खा कर धोके से ख़राब माल दे दिया वोह एक बार तो धोका खा जाएगा मगर दोबारा न आएगा न किसी को आने देगा, या जो रक़म तुम ने उस से हासिल कर ली उस में ब-र-कत न होगी कि **हराम** में बे ब-र-कती है।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 4, स. 344)

ख़िन्ज़ीर नुमा मुर्दा : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का (32 सफ़हात) पर मुश्तमिल रिसाला "कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात" में है **: एक** बार ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक के पास एक शख़्स घबराया हुवा हाज़िर हुवा और कहने लगा **: आ़लीजाह !** मैं बेहद गुनहगार हूं और जानना चाहता हूं कि आया मेरे लिये मुआ़फ़ी है या नहीं ? **ख़लीफ़ा** ने कहा **:** क्या तेरा गुनाह ज़मीन व आस्मान से भी बड़ा है ? उस ने कहा **:** बड़ा है। **ख़लीफ़ा** ने पूछा **:** क्या तेरा गुनाह लौह व क़लम से भी बड़ा है ? जवाब दिया **:** बड़ा है। पूछा **:** क्या तेरा गुनाह अ़र्श व कुर्सी से भी बड़ा है ? जवाब दिया **:** बड़ा है। **ख़लीफ़ा** ने कहा **:** भाई यक़ीनन तेरा गुनाह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत से तो बड़ा नहीं हो सकता। येह सुन कर उस के सीने में थमा हुवा तूफ़ान आंखों के ज़रीए उमंड आया और वोह दहाड़ें मार मार कर रोने लगा। **ख़लीफ़ा** ने कहा **:** भई आख़िर पता भी तो चले कि तुम्हारा गुनाह क्या है ! इस पर उस ने कहा **: हुज़ूर !** मुझे आप को बताते हुए बेहद नदामत हो रही है ताहम अ़र्ज़ किये देता हूं, शायद मेरी **तौबा** की कोई सूरत निकल आए। येह कह कर उस ने अपनी **दास्ताने वहशत निशान** सुनानी शुरूअ़ की। कहने लगा **:** आ़लीजाह ! मैं एक **कफ़न चोर** हूं, आज रात मैं ने **पांच क़ब्रों** से इब्रत हासिल की और तौबा पर आमादा हुवा। फिर उस ने पांच क़ब्रों के इब्रत नाक अहवाल सुनाए, एक **क़ब्र** का हाल सुनाते हुए उस ने कहा **: कफ़न** चुराने की ग़रज़ से मैं ने जब **दूसरी क़ब्र** खोदी तो एक दिल हिला देने वाला मन्ज़र मेरी आंखों के सामने था ! क्या देखता हूं कि **मुर्दे का मुंह ख़िन्ज़ीर जैसा हो चुका**


है और वोह तौक़ व ज़न्जीर में जकड़ा हुवा है । ग़ैब से आवाज़ आई : येह झूटी क़समें खाता और हराम रोज़ी कमाता था । (ماخوذ اَز تنكرة الواعظين ص ٦١٢)

दिल पर सियाह नुक्ता : ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो शख़्स **क़सम** खाए और उस में मच्छर के पर के बराबर झूट मिला दे तो वोह "क़सम" ता यौमे क़ियामत उस के दिल पर (सियाह) **नुक्ता** बन जाएगी ।" (إتحاف السّادة للزّبيدى ج٩ ص٢٤٩)

क़सम सिर्फ़ सच्ची ही खाई जाए : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लरज़ जाइये ! कांप उठिये !! यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा अगर माज़ी में **झूटी क़समें** खाई हैं तो उन से फ़ौरन से पेशतर तौबा कर लीजिये और येह बात ख़ूब ज़ेहन नशीन फ़रमा लीजिये कि अगर ब वक़्ते ज़रूरत क़सम खानी ही पड़े तो सिर्फ़ व सिर्फ़ **सच्ची क़सम** खाइये ।

मुसल्मान की क़सम का यक़ीन कर लेना चाहिये : अगर कोई मुसल्मान हमारे सामने किसी बात की **क़सम** खाए तो हुस्ने ज़न रखते हुए हमें उस की बात का यक़ीन कर लेना चाहिये, इमाम श-रफ़ुद्दीन न-ववी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मुसल्मान भाई की **क़सम** का ए'तिबार करना और उस को पूरा करना **मुस्तह़ब** है बशर्ते कि उस में फ़ितने वग़ैरा का इम्कान न हो । (شرح مسلم لِلنّووى ج١٤ ص٣٢)

तूने चोरी नहीं की : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : (ह़ज़रते) **ईसा** इब्ने मरयम ने एक शख़्स को चोरी करते देखा तो उस से फ़रमाया : "तूने चोरी की," वोह बोला : "हरगिज़ नहीं उस की **क़सम** जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं" तो (ह़ज़रते) ईसा ने फ़रमाया : मैं **अल्लाह** पर ईमान लाया और मैं ने अपने को आप झुटलाया ।

(صَحيح مُسلِم ص١٢٨٨ حديث٢٣٦٨)




मोमिन अल्लाह तआला की झूटी क़सम कैसे खा सकता है ! : **अल्लाहु अक्बर !** देखा आप ने ! हज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **क़सम** खा लेने वाले के साथ कितना अ़ज़ीम बरताव किया। **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان उस क़सम खाने वाले को छोड़ देने के **मु-तअ़ल्लिक़** हज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुक़द्दस जज़्बात की अ़क्कासी करते हुए तह़रीर फ़रमाते हैं : या'नी इस **क़सम** की वजह से तुझे सच्चा समझता हूं कि मोमिन बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की "झूटी क़सम" नहीं खा सकता, (क्यूं कि) उस के दिल में **अल्लाह** के नाम की ता'ज़ीम होती है, अपने **मु-तअ़ल्लिक़** ग़लत़ फ़हमी का ख़याल कर लेता हूं कि मेरी आंखों ने देखने में ग़-लती की। (मिरआत, जि. 6, स. 623)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

कुरआन उठाना क़सम है या नहीं ? : **कुरआने करीम** की क़सम खाना, **क़सम** है, अलबत्ता सिर्फ़ कुरआने करीम उठा कर या बीच में रख कर या उस पर हाथ रख कर कोई बात करनी **क़सम** नहीं। "फ़तावा र-ज़विय्या" जिल्द 13 सफ़ह़ा 574 पर है : झूटी बात पर कुरआने मजीद की **क़सम** उठाना सख़्त अ़ज़ीम **गुनाहे कबीरा** है और सच्ची बात पर कुरआने अ़ज़ीम की क़सम खाने में ह़रज नहीं और ज़रूरत हो तो उठा भी सकता है मगर येह **क़सम** को बहुत सख़्त करता है, बिला ज़रूरते ख़ास्सा न चाहिये। नीज़ सफ़ह़ा 575 पर है : हां मुस्ह़फ़ (या'नी कुरआन) शरीफ़ हाथ में ले कर या उस पर हाथ रख कर कोई बात कहनी अगर लफ़्ज़न ह़ल्फ़ व क़सम के साथ न हो ह़ल्फ़े शर-ई न होगा (या'नी कुरआने करीम को सिर्फ़ उठाने या उस पर हाथ रखने या उसे बीच में रखने को शरअ़न क़सम क़रार न दिया जाएगा) म-सलन कहे कि मैं कुरआने मजीद पर हाथ रख कर कहता हूं कि ऐसा करूंगा और फिर न किया तो (चूंकि क़सम ही नहीं हुई थी इस लिये) **कफ़्फ़ारा** न आएगा। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم

दो इब्रत नाक फ़तावा

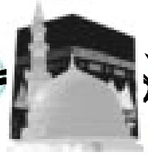
(1) शराबी ने कुरआन उठा कर क़सम खाई फिर तोड़ दी!!! :

फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 13 सफ़हा 609 पर एक शराबी के बारे में हुक्म दरयाफ़्त करते हुए कुछ इस तरह पूछा गया है कि उस ने चार गवाहों के सामने **कुरआने करीम** उठा कर **क़सम** खाई कि आयन्दा शराब न पियूंगा मगर फिर पी ली । उस के तफ़्सीली **जवाब** के आख़िर में आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर उस ने कुरआन उठा कर कुरआन के नाम से क़सम खाई या **अल्लाह** तआ़ला के नाम से क़सम खाई और ज़बान से अदा भी की हो फिर क़सम तोड़ दी है तो उस पर कफ़्फ़ारा लाज़िम है । और अगर उस ने कुरआने मजीद उठा कर **क़सम** खाई है और बहुत सख़्त मुआ-मला है कि कुरआन उठा कर उस ने इस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते हुए फिर से शराब नोशी की है जिस से कुरआने पाक की तौहीन तक मुआ-मला पहुंचा और (उस ने) कुरआन के अ़ज़ीम हक़ की पामाली की है तो इस सख़्त कारवाई (या'नी जब कि लफ़्ज़े क़सम न कहा हो सिर्फ़ कुरआने करीम उठाया हो इस) पर **कफ़्फ़ारा** नहीं है बल्कि इस के लिये उस पर लाज़िम है कि फ़ौरन **तौबा** करे और उस बुरे फ़े'ल (या'नी शराब नोशी) को आयन्दा न करने का पुख़्ता क़स्द (या'नी पक्की निय्यत) करे वरना फिर **अल्लाह** तआ़ला की तरफ़ से दर्दनाक अ़ज़ाब और जहन्नम की आग का इन्तिज़ार करे । وَالْعِيَاذُبِاللّٰهِ تَعَالٰى (या'नी और इस से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह) । और अगर ज़बान से **क़सम** अदा नहीं की बल्कि उसी कुरआन उठाने को क़सम क़रार दिया तो इस **क़सम** का वोही हुक्म है कि इस पर **कफ़्फ़ारा** नहीं बल्कि अ़ज़ाबे अलीम का इन्तिज़ार करे ।

(2) झूटी क़सम खाने वाला जहन्नम के खौलते दरिया में ग़ोते दिया जाएगा :

सुवाल : ख़ुदा की झूटी **क़सम** खाने पर क्या कफ़्फ़ारा देना चाहिये ? अगर एक ही वक़्त में कई मर्तबा **झूटी क़सम** ख़ुदा की खाए तो एक **कफ़्फ़ारा** दे या हर एक **क़सम** का अ़ला-हृदा अ़ला-हृदा ?






जवाब : झूटी क़सम गुज़श्ता बात पर दानिस्ता (या'नी जान बूझ कर खाई तो), उस का कोई **कफ़्फ़ारा** नहीं, इस (झूटी क़सम) की सज़ा येह है कि जहन्नम के खौलते दरिया में ग़ोते दिया जाएगा। और आयन्दा (की) किसी बात पर **क़सम** खाई और वोह न हो सकी तो उस का **कफ़्फ़ारा** है, एक **क़सम** खाई हो तो एक और दस (खाई हों) तो दस। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم (या'नी और **अल्लाह** तआ़ला सब से ज़ियादा जानने वाला है)

ब कसरत क़सम खाने की मुमा-न-अ़त

रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ का पारह 2 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत 224 में फ़रमाने अ़ज़ीम है :

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** को अपनी क़समों का निशाना न बना लो।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی इस आयत के तह़्त लिखते हैं : बा'ज़ मुफ़स्सिरीन (رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِیْن) ने येह भी कहा है कि इस आयत से ब कसरत क़सम खाने की मुमा-न-अ़त साबित होती है। (حاشیةُ الصّاوی ج۱ص۱۹۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **न-ख़-ई** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जब हम छोटे छोटे थे तो हमारे बुज़ुर्ग **क़सम** खाने और वा'दा करने पर हमारी पिटाई करते थे। (صَحیح بُخاری ج۲ص۵۱٦حدیث۳٦۵۱)

तू झूटी क़समों से मुझ को सदा बचा या रब !
न बात बात पे खाऊं क़सम, ख़ुदा या रब !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد





"चुप रहो सलामत रहोगे" के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से क़सम के मु-तअ़ल्लिक़ 15 म-दनी फूल

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1182 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअ़त" जिल्द 2 सफ़्हा 298 ता 311 और 319 से **क़सम और कफ़्फ़ारे** से **मु-तअ़ल्लिक़** 15 म-दनी फूल पेश किये जाते हैं,

(ज़रूरतन कहीं कहीं तसर्रुफ़ किया गया है)

बात बात पर क़सम नहीं खानी चाहिये : ﴾1﴿ **क़सम** खाना जाइज़ है मगर जहां तक हो कमी बेहतर है और बात बात पर **क़सम** खानी न चाहिये और बा'ज़ लोगों ने **क़सम** को तक्या कलाम बना रखा है (या'नी दौराने गुफ़्त-गू बार बार क़सम खाने की आ़दत बना रखी है) कि क़स्द व बे क़स्द (या'नी इरादतन और बिग़ैर इरादे के) ज़बान से (क़सम) जारी होती है और इस का भी ख़याल नहीं रखते कि बात सच्ची है या झूटी ! येह सख़्त मा'यूब (या'नी बहुत बुरी बात) है और ग़ैरे ख़ुदा की **क़सम** मक्रूह है और येह शरअ़न **क़सम** भी नहीं या'नी इस के तोड़ने से **कफ़्फ़ारा** लाज़िम नहीं।

ग़-लती से क़सम खा ली तो ? : ﴾2﴿ **ग़-लती** से **क़सम** खा बैठा म-सलन कहना चाहता था क पानी लाओ या पानी पियूंगा और ज़बान से निकल गया कि "ख़ुदा की **क़सम** पानी नहीं पियूंगा" तो येह भी क़सम है अगर तोड़ेगा **कफ़्फ़ारा** देना होगा।

(बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 300)

﴾3﴿ **क़सम** तोड़ना इख़्तियार से हो या दूसरे के मजबूर करने से, क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) हो या भूलचूक से हर सूरत में **कफ़्फ़ारा** है बल्कि अगर बेहोशी या जुनून में **क़सम** तोड़ना हुवा जब भी **कफ़्फ़ारा** वाजिब है जब कि होश में **क़सम** खाई हो और अगर बेहोशी या जुनून (या'नी पागल पन) में **क़सम** खाई तो **क़सम** नहीं कि आ़क़िल होना शर्त़ है और येह आ़क़िल नहीं।

(تبیینُ الحقائق ج۳ ص ٤٢٣)

ऐसे अल्फ़ाज़ जिन से क़सम नहीं होती : ﴾4﴿ येह अल्फ़ाज़ **क़सम** नहीं अगर्चे इन के बोलने से **गुनहगार** होगा जब कि अपनी बात में झूटा है : अगर ऐसा करूं तो मुझ पर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का ग़ज़ब हो । उस की ला'नत हो । उस का अ़ज़ाब हो । ख़ुदा का क़हर टूटे । मुझ पर आस्मान फट पड़े । मुझे ज़मीन निगल जाए । मुझ पर ख़ुदा की मार हो । ख़ुदा की फिटकार हो । **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त न मिले । मुझे ख़ुदा का दीदार न नसीब हो । मरते वक़्त कलिमा न नसीब हो । (فتاوٰی عالمگیری ج ۲ ص ٥٤)

क़सम की चार अक़्साम : ﴾5﴿ बा'ज़ क़समें ऐसी हैं कि उन का पूरा करना ज़रूरी है, म-सलन किसी ऐसे काम के करने की **क़सम** खाई जिस का बिग़ैर **क़सम** (भी) करना ज़रूरी था या गुनाह से बचने की **क़सम** खाई (कि गुनाह से बचने की क़सम न भी खाएं तब भी गुनाह से बचना ज़रूरी ही है) तो इस सूरत में **क़सम** सच्ची करना ज़रूर है । म-सलन (कहा) ख़ुदा की **क़सम** ज़ोहर पढ़ूंगा या चोरी या ज़िना न करूंगा । (क़सम की) **दूसरी** (क़िस्म) वोह कि उस का तोड़ना ज़रूरी है म-सलन गुनाह करने या फ़राइज़ व वाजिबात (पूरे) न करने की **क़सम** खाई, जैसे **क़सम** खाई कि नमाज़ न पढ़ूंगा या चोरी करूंगा या मां बाप से कलाम (या'नी बातचीत) न करूंगा तो **क़सम** तोड़ दे । **तीसरी** वोह कि उस का तोड़ना मुस्तहब है म-सलन ऐसे अम्र (या'नी मुआ़-मले या काम) की क़सम खाई कि उस के ग़ैर (या'नी इलावा) में बेहतरी है तो ऐसी **क़सम** को तोड़ कर वोह करे जो बेहतर है । **चौथी** वोह कि मुबाह की **क़सम** खाई या'नी (जिस का) करना और न करना दोनों यक्सां है इस में **क़सम** का बाक़ी रखना अफ़्ज़ल है । (المبسوط للسرخسي ج٤ ص ١٣٣)

﴾6﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जितने नाम हैं उन में से जिस नाम के साथ **क़सम** खाएगा **क़सम** हो जाएगी ख़्वाह बोलचाल में उस नाम के साथ **क़सम** खाते हों या नहीं । म-सलन **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की **क़सम**, ख़ुदा की **क़सम**, रह़मान की **क़सम**, रह़ीम की **क़सम**, परवर दगार की **क़सम** । यूहीं ख़ुदा की जिस सिफ़त की **क़सम** खाई जाती हो उस की क़सम खाई, हो गई म-सलन ख़ुदा की इ़ज़्ज़तो जलाल की **क़सम**, उस की किब्रियाई (अ़-ज़मत, बड़ाई) की **क़सम**, उस की बुज़ुर्गी या बड़ाई की **क़सम**, उस की अ़-ज़मत की **क़सम**, उस की क़ुदरत व क़ुव्वत की **क़सम**, क़ुरआन की **क़सम**, **कलामुल्लाह** की **क़सम** । (فتاوٰی عالمگیری ج ۲ ص ٥٢)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (کنزالعمال)

﴾7﴿ इन अल्फ़ाज़ से भी **क़सम** हो जाती है : ह़ल्फ़ करता हूं। **क़सम** खाता हूं। मैं शहादत देता हूं। ख़ुदा को गवाह कर के कहता हूं। मुझ पर **क़सम** है। لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰه मैं येह काम न करूंगा। (اَیضاً)

ऐसी क़सम जिन के तोड़ने में कुफ़्र का अन्देशा है : ﴾8﴿ अगर येह काम करे या किया हो तो यहूदी है या नसरानी या काफ़िर या काफ़िरों का शरीक। मरते वक़्त ईमान नसीब न हो। बे ईमान मरे। काफ़िर हो कर मरे। और येह अल्फ़ाज़ बहुत सख़्त हैं कि अगर झूटी **क़सम** खाई या **क़सम** तोड़ दी तो बा'ज़ सूरत में **काफ़िर** हो जाएगा। जो शख़्स इस क़िस्म की झूटी **क़सम** खाए उस की निस्बत ह़दीस में फ़रमाया : "वोह वैसा ही है जैसा उस ने कहा।" या'नी यहूदी होने की **क़सम** खाई तो यहूदी हो गया। यूंही अगर कहा : "ख़ुदा जानता है कि मैं ने ऐसा नहीं किया है।" और येह बात उस ने झूट कही है तो अक्सर उ़-लमा के नज़्दीक **काफ़िर** है। (बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 301)

किसी चीज़ को अपने ऊपर ह़राम कर लेना : ﴾9﴿ जो शख़्स किसी चीज़ को अपने ऊपर ह़राम करे म-सलन कहे कि **फ़ुलां चीज़ मुझ पर ह़राम है** तो इस कह देने से वोह शै ह़राम नहीं होगी कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने जिस चीज़ को ह़लाल किया उसे कौन ह़राम कर सके ? मगर (जिस चीज़ को अपने ऊपर ह़राम किया) उस के बरतने (या'नी इस्ति'माल करने) से **कफ़्फ़ारा** लाज़िम आएगा या'नी येह भी **क़सम** है। (تَبیینُ الحقائق ج۳ ص٤٣٦) **तुझ से बात करना ह़राम है** येह (भी) यमीन (या'नी क़सम) है। बात करेगा तो **कफ़्फ़ारा** लाज़िम होगा। (فتاوٰی عالمگیری ج ۲ ص ۵۸)

ग़ैरे ख़ुदा की क़सम "क़सम" नहीं : ﴾10﴿ ग़ैरे ख़ुदा की क़सम, "क़सम" नहीं म-सलन तुम्हारी क़सम। अपनी क़सम। तुम्हारी जान की क़सम। अपनी जान की क़सम। तुम्हारे सर की क़सम। अपने सर की क़सम। आंखों की क़सम। जवानी की क़सम। मां बाप की क़सम। औलाद की क़सम। मज़हब की क़सम। दीन की क़सम। इ़ल्म की क़सम। का'बे की क़सम। अ़र्शे इलाही की क़सम। **रसूलुल्लाह** की क़सम। (ایضاًص۵۱)

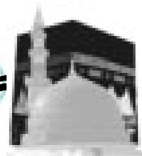
﴾11﴿ ख़ुदा व रसूल की क़सम येह काम न करूंगा येह क़सम नहीं। (ایضاًص۵۷،۵۸)

दूसरे के क़सम दिलाने से क़सम नहीं होती : ﴾12﴿ अगर येह काम करूं तो काफ़िरों से बदतर हो जाऊं (कहा) तो (येह) **क़सम** है और अगर कहा कि येह काम करे (या'नी करूं) तो काफ़िर को इस (या'नी मुझ) पर शरफ़ हो (या'नी फ़ज़ीलत हो) तो **क़सम** नहीं। (ایضاًص۵۸)

﴾13﴿ दूसरे के **क़सम** दिलाने से क़सम नहीं होती म-सलन कहा : तुम्हें ख़ुदा की क़सम येह काम कर दो। तो इस कहने से (जिस से कहा) उस पर क़सम न हुई या'नी न करने से कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं। एक शख़्स किसी के पास गया उस ने उठना चाहा उस ने कहा : ख़ुदा की **क़सम** न उठना और (जिस से कहा) वोह खड़ा हो गया तो उस क़सम खाने वाले पर कफ़्फ़ारा नहीं। (ایضاًص۵۹۔۶۰)

﴾14﴿ यहां एक क़ाइदा याद रखना चाहिये जिस का **क़सम** में हर जगह लिहाज़ ज़रूर है वोह येह कि **क़सम** के तमाम अल्फ़ाज़ से वोह मा'ने लिये जाएंगे जिन में अहले उ़र्फ़ इस्ति'माल करते हों म-सलन किसी ने **क़सम** खाई कि किसी मकान में नहीं जाएगा और मस्जिद में या का'बए मुअ़ज़्ज़मा में गया तो **क़सम** नहीं टूटी अगर्चे येह भी मकान हैं, यूं ही ह़म्माम में जाने से भी **क़सम** नहीं टूटेगी। (فتاوٰی عالمگیری ج ۲ ص ۶۸)

क़सम में निय्यत और ग़रज़ का ए'तिबार नहीं : ﴾15﴿ **क़सम** में अल्फ़ाज़ का लिह़ाज़ होगा, इस का लिह़ाज़ न होगा कि इस **क़सम** से ग़रज़ क्या है या'नी उन लफ़्ज़ों के बोलचाल में जो मा'ना हैं वोह मुराद लिये जाएंगे **क़सम** खाने वाले की **निय्यत** और **मक़्सद** का ए'तिबार न होगा म-सलन **क़सम** खाई कि "फ़ुलां के लिये एक पैसे की कोई चीज़ नहीं ख़रीदूंगा" और एक रुपै की ख़रीदी तो **क़सम** नहीं टूटी ह़ालां कि इस कलाम से मक़्सद येह हुवा करता है कि न पैसे की ख़रीदूंगा न रुपै की मगर चूंकि लफ़्ज़ से येह नहीं समझा जाता लिहाज़ा इस का ए'तिबार नहीं या **क़सम** खाई कि "दरवाज़े से बाहर न जाऊंगा" और दीवार कूद कर या सीढ़ी लगा कर बाहर चला गया तो **क़सम** नहीं टूटी अगर्चे इस से मुराद येह है कि घर से बाहर न जाऊंगा। (دُرِّمُختارو رَدُّالْمُحتارج۵ ص۵۰۰)


इस ज़िम्न में हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की एक **हिकायत** सुनिये और झूमिये चुनान्चे

अन्डा न खाने की क़सम खा ली : **एक** शख़्स ने **क़सम** खाई कि **अन्डा** न खाऊंगा और फिर येह **क़सम** खाई कि जो चीज़ फ़ुलां शख़्स की जेब में है वोह ज़रूर खाऊंगा। अब देखा तो उस की जेब में **अन्डा** ही था। करोड़ों ह-नफ़िय्यों के अ़ज़ीम पेशवा हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया तो फ़रमाया : उस अन्डे को किसी मुर्ग़ी के नीचे रख दे और जब चूज़ा निकल आए तो उसे भून कर खा ले या शोरबे में पका कर शोरबे समेत खा ले। (इस सूरत में **क़सम** पूरी हो जाएगी) (الخیرات الحسان ص۱۸۰) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

क़सम के बा'ज़ अल्फ़ाज़ : **अगर वल्लाह बिल्लाह तल्लाह** कहा तो तीन क़समें हुईं। बखु़दा। क़सम से। ब ह़ल्फ़े शर-ई कहता हूं। **अल्लाह** को हाज़िर नाज़िर जान कर कहता हूं। **अल्लाह** को समीअ़ बसीर जान कर कहता हूं। BY GOD येह सब क़सम के अल्फ़ाज़ हैं। "**अल्लाह** को हाज़िर नाज़िर जान कर कहता हूं" इस त़रह़ कहने से क़सम तो हो जाएगी मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को हाज़िर नाज़िर कहना मम्नूअ़ है।

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़सम के अल्फ़ाज़ : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर "وَمُقَلِّبِ الْقُلُوب" (या'नी क़सम है दिलों के बदलने वाले की) या "وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ" (या'नी क़सम उस की जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है) के अल्फ़ाज़ के साथ **क़सम** इर्शाद फ़रमाया करते थे जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُما) से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ज़ियादा तर जो क़सम इर्शाद फ़रमाते थे वोह येह थी : وَمُقَلِّبِ الْقُلُوب यानी क़सम है दिलों को बदलने वाले की।

(بُخاری ج٤ ص٢٧٨ حدیث٦٦١٧)



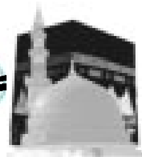

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की क़सम खाना : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 561 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब, **''मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत''** के सफ़्हा 528 पर है कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से अ़र्ज़ की गई : हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की **क़सम** खा कर ख़िलाफ़ करने से कफ़्फ़ारा लाज़िम आएगा या नहीं ? तो फ़रमाया : नहीं। (فتاوٰی عالمگیری ج۲ ص۵۱)

बाप की क़सम खाना कैसा ? : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को सुवारी पर चलते हुए मुला-ह़ज़ा फ़रमाया जब कि आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ अपने बाप की **क़सम** खा रहे थे। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम को **बाप की क़सम** खाने से मन्अ़ करता है, जो शख़्स क़सम खाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खाए या चुप रहे।''

(صَحیح بُخاری ج٤ ص٢٨٦ حدیث ٦٦٤٦)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी ग़ैरे ख़ुदा की **क़सम** खाने से मन्अ़ फ़रमाया गया। चूंकि अहले अ़रब उ़मूमन बाप दादों की **क़सम** खाते थे इस लिये इसी का ज़िक्र हुवा, ग़ैरे ख़ुदा की **क़सम** खाना मकरूह है, (مرقاة المفاتیح ج٦ ص ٥٧٩) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुराद रब तआ़ला के ज़ाती व सिफ़ाती नाम हैं लिहाज़ा क़ुरआन शरीफ़ की क़सम खाना जाइज़ है कि क़ुरआन शरीफ़ **कलामुल्लाह** का नाम है और **कलामुल्लाह** सि-फ़ते इलाही है, क़ुरआने मजीद में ज़माना, इन्जीर, ज़ैतून वग़ैरा की क़समें इर्शाद हुई वोह शर-ई क़समें नहीं नीज़ येह अह़काम हम पर जारी हैं न कि रब तआ़ला पर।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 5, स. 194, 195)


क़सम में اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **कहा तो क़सम होगी या नहीं ? :** फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السّلام फ़रमाते हैं : **क़सम** में اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कहा तो उस का पूरा करना वाजिब नहीं बशर्ते कि اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ का लफ़्ज़ इस कलाम से **मुत्तसिल** (या'नी मिला हुवा) हो और अगर फ़ासिला हो गया म-सलन **क़सम** खा कर चुप हो गया या दरमियान में कुछ और बात की फिर اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कहा तो **क़सम** बातिल न हुई । (دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج ٥ ص ٥٤٨) हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُما से रिवायत है कि रसूले अकरम, **नूरे मुजस्सम,** शाहे बनी आदम व बनी आदम صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स **क़सम** खाए और उस के साथ اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कह ले तो हानिस (या'नी क़सम तोड़ने वाला) न होगा ।" (ترمذی ج٣، ص١٨٣ حدیث ١٥٣٦)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الْحَنّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : या'नी क़सम से **मुत्तसिल** (या'नी फ़ौरन बा'द) कह दे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ । ख़ुलासा येह है कि अगर वा'दे या क़सम से **मुत्तसिल** اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कह दिया जाए तो उस के ख़िलाफ़ करने पर न गुनाह है न कफ़्फ़ारा । (मिरआतुल मनाजीह, जि. 5, स. 201)

बड़ी बड़ी मूंछों वाला बद मआ़श : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले इ़ल्मे दीन के लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त भी अहम ज़रीआ़ हैं, आप भी अपने शहर में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत कीजिये, इन इज्तिमाआ़त की ब-र-कत से कैसे कैसे बिगड़े हुए लोगों की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, इस की एक झलक इस म-दनी बहार में मुला-हज़ा कीजिये, चुनान्चे एक आ़लिम साहिब जो कि दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ हैं उन्हों ने बताया कि 1995 सि. ई. में एक शख़्स जिस पर कमो बेश 11 डकेतियों के केस थे जिन में एक क़त्ल का मुक़द्दमा भी शामिल है । एक साल जेल की सलाख़ों के पीछे भी रहा था । मह्-क-मए नह्र में मुला-ज़मत भी थी । तन-ख़्वाह 3000 थी मगर वोह ना जाइज़ ज़राएअ़ से म-सलन दरख़्त फ़रोख़्त कर के, चोरी का पानी वग़ैरा दे




कर माहाना 10000 तक कर लेता। उस ने बड़ी बड़ी मूंछें रखी थीं, देखने वाले को उस से वहशत होती। एक रोज़ मैं ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उसे दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की मगर उस ने मेरी दा'वत टाल दी, मैं ने हिम्मत नहीं हारी वक़्तन फ़ वक़्तन दा'वत पेश करता रहा। आख़िरे कार कमो बेश दो साल बा'द उस ने दा'वत क़बूल कर ली और वोह **"रिवोल्वर"** के साथ इज्तिमाअ़ में शरीक हो गया। इत्तिफ़ाक़ से उस दिन मेरा ही बयान था जो कि जहन्नम के अ़ज़ाब के **मु-तअ़ल्लिक़** था। **जहन्नम की तबाह कारियां** सुन कर सख़्त सर्दियों का मौसिम होने के बा वुजूद **बद मआ़श** पसीने से शराबोर हो गया। बा'दे इज्तिमाअ़ वोह रोता जाता और कहता जाता : हाए! मेरा क्या बनेगा! मैं ने बहुत सारे गुनाह किये हैं। फिर वोह तीन दिन बुख़ार के आ़लम में रहा। उसे अपने गुनाहों का शिद्दत से एहसास हो चुका था, उस ने तौबा कर ली और नमाज़ें भी पढ़ने लगा। **दूसरी** जुमा'रात उसे फिर इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत मिली और **जन्नत** के मौज़ूअ़ पर बयान सुन कर उस को ढारस मिली। आहिस्ता आहिस्ता उस पर **म-दनी रंग** चढ़ता चला गया। यहां तक कि वोह **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया। उस ने घर से T.V. निकाल बाहर किया। (क्यूं कि उस में सिर्फ़ गुनाहों भरे चेनल्ज़ ही देखे जाते थे, "म-दनी चेनल" शुरूअ़ न हुवा था) **दाढ़ी** और **सब्ज़ इमामा** सजाने की सआ़दत भी ह़ासिल कर ली। येह बयान देते वक़्त वोह दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में मश्ग़ूल तन्ज़ीमी त़ौर पर सूबाई सत़्ह पर मजलिसे **ख़ुद्दामुल मसाजिद** की ज़िम्मेदारी पर फ़ाइज़ है।

अगर चोर डाकू भी आ जाएंगे तो — सुधर जाएंगे गर मिला म-दनी माह़ोल
गुनहगारो आओ, सियह कारो आओ — गुनाहों को देगा छुड़ा म-दनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 203)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़सम की हिफ़ाज़त कीजिये : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल**

इरफ़ान'' सफ़्हा 516 ता 517 पर पारह 14 **सू-रतुन्नह़्ल** आयत नम्बर 91 में इर्शादे रब्बुल इबाद है :

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَیْمَانَ بَعْدَ تَوْكِیْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَیْكُمْ كَفِیْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۹۱﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** का अ़ह्द पूरा करो जब क़ौल बांधो और **क़समें** मज़्बूत़ कर के न तोड़ो और तुम **अल्लाह** को अपने ऊपर ज़ामिन कर चुके हो, बेशक **अल्लाह** तुम्हारे काम जानता है।

और पारह 7 **सू-रतुल माइदह** की आयत 89 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَاحْفَظُوْۤا اَیْمَانَكُمْ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपनी क़समों की हि़फ़ाज़त करो।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى तफ़्सीरे ''ख़ज़ाइनुल इरफ़ान'' में इस आयत के तह़्त लिखते हैं : या'नी इन्हें पूरा करो अगर इस में शरअ़न कोई ह़रज न हो और येह भी हि़फ़ाज़त है कि **क़सम** खाने की आ़दत तर्क की जाए।

बेहतर काम करने के लिये क़सम तोड़ना : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मेरे पास एक शख़्स 100 दिरहम मांगने आया, मैं ने नाराज़ होते हुए कहा : तुम मुझ से सिर्फ़ 100 दिरहम मांग रहे हो ह़ालां कि मैं ह़ातिम (त़ाई) का बेटा हूं, **अल्लाह** की **क़सम !** मैं तुम्हें नहीं दूंगा। फिर मैं ने कहा : अगर मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का येह इर्शादे पाक न सुना होता कि ''जिस शख़्स ने किसी काम की **क़सम** खाई फिर उस ने इस से बेहतर चीज़ का ख़याल किया तो वोह उस बेहतर काम को करे।'' चुनान्चे मैं तुम्हें 400 दिरहम दूंगा। (صَحِيح مُسلِم ص٨٩٩ حديث١٦٥١)

बेहतर काम के लिये क़सम तोड़ना जाइज़ है मगर कफ़्फ़ारा देना होगा :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेहतर काम के लिये **क़सम** तोड़ने की इजाज़त ज़रूर है मगर तोड़ने के बा'द **कफ़्फ़ारा** देना होता है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अबुल अह़्वस** औ़फ़ इब्ने मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا अपने वालिद से रिवायत फ़रमाते हैं : मैं

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

ने अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **!** फ़रमाइये कि मैं अपने चचाज़ाद भाई के पास कुछ मांगने जाता हूं तो वोह मुझे नहीं देता, न सिलए रेह़्मी करता है, फिर इसे (जब) मेरी ज़रूरत पड़ती है तो मेरे पास आता है, मुझ से कुछ मांगता है । मैं **क़सम** खा चुका हूं कि न इसे कुछ दूंगा न सिलए रेह़्मी करूंगा । तो मुझे हु़ज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हु़क्म दिया कि जो काम अच्छा है वोह करूं और अपनी क़सम का **कफ़्फ़ारा** दे दूं ।

(سُنَنِ نَسائی ص٦١٩ حدیث ٣٧٩٣)

ज़ुल्मन ईज़ा देने की क़सम खा ली तो क्या करे ? : अगर किसी को ज़ुल्मन ईज़ा देने की **क़सम** खाई तो इस क़सम का पूरा करना गुनाह है । इस क़सम के बदले **कफ़्फ़ारा** देना होगा । चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ में है, रह़मते आ़लम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है **:** अगर कोई शख़्स अपने अहल के **मु-तअ़ल्लिक़** उस को अज़िय्यत और ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचाने के लिये **क़सम** खाए पस बख़ुदा उस को ज़रर देना और क़सम को पूरा करना **इन्दल्लाह** (या'नी **अल्लाह** के नज़्दीक) ज़ियादा गुनाह है इस से कि वोह उस **क़सम** के बदले कफ़्फ़ारा दे जो **अल्लाह** तआ़ला ने उस पर मुक़र्रर फ़रमाया है । (بُخاری ج٤ ص ٢٨١ حدیث٦٦٢٥, फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 13, स. 549)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं **:** या'नी जो शख़्स अपने घर वालों में से किसी का ह़क़ फ़ौत (या'नी ह़क़ त-लफ़ी) करने पर **क़सम** खा ले म-सलन येह कि मैं अपनी मां की ख़िदमत न करूंगा या मां बाप से बातचीत न करूंगा, ऐसी **क़समों** का पूरा करना गुनाह है । इस पर वाजिब है कि ऐसी **क़समें** तोड़े और घर वालों के हु़क़ूक़ अदा करे, ख़याल रहे यहां येह मत़लब नहीं कि येह **क़सम** पूरी न करना भी गुनाह मगर पूरी करना ज़ियादा गुनाह है बल्कि मत़लब येह है कि ऐसी **क़सम** पूरी करना बहुत बड़ा गुनाह है, पूरी न करना सवाब, कि अगर्चे रब तआ़ला के नाम की बे अ-दबी **क़सम** तोड़ने में होती है इसी लिये इस पर **कफ़्फ़ारा** वाजिब होता है मगर यहां **क़सम** न तोड़ना ज़ियादा गुनाह का मूजिब है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 198 मुलख़्ख़सन)

त़लाक़ की क़सम खाना, खिलाना कैसा ? : **किसी** से त़लाक़ की **क़सम** लेना मुनाफ़िक़ का त़रीक़ा है म-सलन किसी से कहना : "**क़सम** खाओ कि फ़ुलां काम मैं ने किया हो तो मेरी बीवी को त़लाक़ ।" चुनान्चे मेरे आक़ा, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن "**फ़तावा र-ज़विय्या**" जिल्द 13 सफ़ह़ा 198 पर ह़दीसे पाक नक़्ल करते हैं : मोमिन त़लाक़ की **क़सम** नहीं खाता और त़लाक़ की **क़सम** नहीं लेता मगर मुनाफ़िक़ ।

(اِبنِ عَساکِر ج ۵۷ ص ۳۹۳)

क़सम का कफ़्फ़ारा : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा कुरआन, "**कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" सफ़ह़ा 235 पर पारह 7 **सू-रतुल माइदह** की आयत नम्बर 89 में इर्शादे रब्बुल इबाद है :

لَا یُؤَاخِذُکُمُ اللّٰہُ بِاللَّغْوِ فِیْۤ اَیْمَانِکُمْ وَلٰكِنْ یُّؤَاخِذُکُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَیْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗۤ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِیْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِیْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِیْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ یَجِدْ فَصِیَامُ ثَلٰثَةِ اَیَّامٍ ؕ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَیْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ وَاحْفَظُوْۤا اَیْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰیٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۸۹﴾

(پارہ ۷، المائدۃ آیت ۸۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** तुम्हें नहीं पकड़ता तुम्हारी ग़लत़ फ़हमी की क़समों पर हां उन क़समों पर गरिफ़्त फ़रमाता है जिन्हें तुम ने मज़बूत़ किया, तो ऐसी क़सम का बदला दस मिस्कीनों को खाना देना अपने घर वालों को जो खिलाते हो उस के औसत़ में से या इन्हें कपड़े देना या एक बरदह (गुलाम) आज़ाद करना, तो जो इन में से कुछ न पाए तो तीन दिन के रोज़े येह बदला है तुम्हारी क़समों का, जब क़सम खाओ और अपनी क़समों की ह़िफ़ाज़त करो । इसी त़रह़ **अल्लाह** तुम से अपनी आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम एह़सान मानो ।

"या रहमतल्लिल आ-लमीन" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से क़सम के कफ़्फ़ारे के 13 म-दनी फूल

कफ़्फ़ारे के लिये क़सम की शराइत् : ﴾1﴿ **क़सम** के लिये चन्द शर्तें हैं, कि अगर वोह न हों तो **कफ़्फ़ारा** नहीं। क़सम खाने वाला (1) मुसल्मान (2) आक़िल (3) बालिग़ हो। काफ़िर की **क़सम**, क़सम नहीं या'नी अगर ज़मानए कुफ़्र में **क़सम** खाई फिर मुसल्मान हुवा तो उस **क़सम** के तोड़ने पर **कफ़्फ़ारा** वाजिब न होगा। और مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ (या'नी **अल्लाह** की पनाह) **क़सम** खाने के बा'द मुरतद हो गया तो **क़सम** बातिल हो गई या'नी अगर फिर मुसल्मान हुवा और **क़सम** तोड़ दी तो **कफ़्फ़ारा** नहीं और (4) **क़सम** में येह भी शर्त् है कि वोह चीज़ जिस की क़सम खाई अक़्लन मुम्किन हो या'नी हो सकती हो, अगर्चे मुहाले आदी हो और (5) येह भी शर्त् है कि **क़सम** और जिस चीज़ की क़सम खाई दोनों को एक साथ कहा हो दरमियान में फ़ासिला होगा तो **क़सम** न होगी म-सलन किसी ने इस से कहलाया कि कह, ख़ुदा की **क़सम** ! इस ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! उस ने कहा : कह, फ़ुलां काम करूंगा, इस ने कहा तो येह **क़सम** न हुई।

(فتاوٰی عالمگیری ج ۲ ص ۵۱)

क़सम का कफ़्फ़ारा : ﴾2﴿ ग़ुलाम आज़ाद करना या दस मिस्कीनों को खाना खिलाना या उन को कपड़े पहनाना है या'नी येह इख़्तियार है कि इन तीन बातों में से जो चाहे करे। (تَبیینُ الحَقائق ج ۳ ص ۴۳۰) (याद रहे ! जहां कफ़्फ़ारा है भी तो वोह सिर्फ़ आयन्दा के लिये खाई गई **क़सम** पर है, गुज़श्ता या मौजूदा के **मु-तअ़ल्लिक़** खाई हुई क़सम पर **कफ़्फ़ारा** नहीं। म-सलन कहा : "**ख़ुदा की क़सम** ! मैं ने कल एक भी गिलास ठन्डा पानी नहीं पिया।" अगर पिया था और याद होने के बा वुजूद **झूटी क़सम** खाई थी तो गुनहगार हुवा तौबा करे, **कफ़्फ़ारा** नहीं)

कफ़्फ़ारा अदा करने का तरीक़ा : ﴾3﴿ (दस) मसाकीन को दोनों वक़्त पेट भर कर खिलाना होगा और जिन मसाकीन को सुब्ह़ के वक़्त खिलाया उन्हीं को शाम के वक़्त भी खिलाए, दूसरे दस मसाकीन को खिलाने से (कफ़्फ़ारा) अदा न होगा। और येह हो सकता है कि दसों को एक ही दिन (दोनों वक़्त) खिला दे या हर रोज़ एक एक को (दो वक़्त) या एक ही को दस दिन तक दोनों वक़्त खिलाए। और मसाकीन जिन को खिलाया उन में कोई बच्चा न हो और खिलाने में इबाह़त (खाने की इजाज़त दे देना) व तम्लीक (या'नी मालिक बना देना कि चाहे खाए चाहे ले जाए) दोनों सूरतें हो सकती हैं और येह भी हो सकता है कि खिलाने के इ़वज़ (या'नी बजाए) हर मिस्कीन को निस्फ़ (या'नी आधा) साअ़ गेहूं या एक साअ़ जव (एक साअ़ 4 किलो में से 160 ग्राम कम और निस्फ़ या'नी आधा साअ़ 2 किलो में से 80 ग्राम कम का होता है) या इन की क़ीमत का मालिक कर दे या दस रोज़ तक एक ही मिस्कीन को हर रोज़ ब क़-दरे **स-द-क़ए फ़ित्र** दे दिया करे या बा'ज़ को खिलाए और बा'ज़ को दे दे। ग़रज़ येह कि उस की (या'नी कफ़्फ़ारा अदा करने की) तमाम सूरतें वहीं से (या'नी **मक-त-बतुल मदीना** की मत़बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द 2 सफ़ह़ा 205 ता 217 पर दिये हुए (ज़िहार के) कफ़्फ़ारे के बयान से) मा'लूम करें फ़र्क़ इतना है कि वहां (या'नी ज़िहार के कफ़्फ़ारे में) साठ मिस्कीन थे (जब कि) यहां (या'नी क़सम के कफ़्फ़ारे में) दस हैं।

(دُرِّمُختارو رَدُّالْمُحتارج٥ ص ٥٢٣)

कफ़्फ़ारे के लिये निय्यत शर्त़ है : ﴾4﴿ **कफ़्फ़ारा** अदा होने के लिये **निय्यत** शर्त़ है बिग़ैर निय्यत अदा न होगा हां अगर वोह शै जो मिस्कीन को दी और देते वक़्त निय्यत न की मगर वोह चीज़ अभी मिस्कीन के पास मौजूद है और अब निय्यत कर ली तो अदा हो गया जैसा कि ज़कात में फ़क़ीर को देने के बा'द निय्यत करने में येही शर्त़ है कि हुनूज़ (या'नी अभी तक) वोह चीज़ फ़क़ीर के पास बाक़ी हो तो निय्यत काम करेगी वरना नहीं।

(حاشيةُ الطّحطاوى على الدّرالمختارج٢ ص ١٩٨)

《5》 र-मज़ान में अगर **कफ़्फ़ारे** का खाना खिलाना चाहता है तो शाम और स-ह़री दोनों वक़्त खिलाए या एक मिस्कीन को 20 दिन शाम का खाना खिलाए ।

(الجوهرة النيره ص ٢٠٣)

कफ़्फ़ारे में तीन रोज़ों की इजाज़त की सूरत : 《6》 अगर ग़ुलाम आज़ाद करने या 10 मिस्कीन को खाना या कपड़े देने पर क़ादिर न हो तो पै दर पै (या'नी लगातार) **तीन रोज़े** रखे । (اَیضاً)

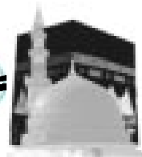
कफ़्फ़ारा अदा करते वक़्त की हैसिय्यत का ए'तिबार है कि रोज़े रखे या......: 《7》 आ़जिज़ (या'नी मजबूर) होना उस वक़्त का मो'तबर है जब **कफ़्फ़ारा** अदा करना चाहता है म-सलन जिस वक़्त **क़सम** तोड़ी थी उस वक़्त मालदार था मगर **कफ़्फ़ारा** अदा करने के वक़्त (माली ए'तिबार से) मोह़ताज है तो रोज़े से **कफ़्फ़ारा** अदा कर सकता है और अगर (क़सम) तोड़ने के वक़्त मुफ़्लिस (व मिस्कीन) था और अब (कफ़्फ़ारा अदा करने के वक़्त) मालदार है तो रोज़े से (कफ़्फ़ारा) नहीं अदा कर सकता ।

(الجوهرة النيره ص ٢٠٣وغيرها)

कफ़्फ़ारे के तीनों रोज़े पै दर पै होना ज़रूरी हैं : 《8》 एक साथ (अगर) तीन रोज़े न रखे या'नी दरमियान में फ़ासिला कर दिया तो **कफ़्फ़ारा** अदा न हुवा अगर्चे किसी मजबूरी के सबब नाग़ा हुवा हो, यहां तक कि औ़रत को अगर हैज़ आ गया तो पहले के रोज़े का ए'तिबार न होगा या'नी अब पाक होने के बा'द (नए सिरे से) **लगातार तीन रोज़े** रखे । (دُرِّمُختارج٥ص٥٢٦)

रोज़ों से कफ़्फ़ारे की एक ज़रूरी शर्त़ : 《9》 रोज़ों से **कफ़्फ़ारा** अदा होने के लिये






येह भी शर्त़ है कि ख़त्म तक (या'नी तीनों रोज़े मुकम्मल होने तक) माल पर क़ुदरत न हो म-सलन अगर दो रोज़े रखने के बा'द इतना माल मिल गया कि **कफ़्फ़ारा** अदा कर सकता है तो अब रोज़ों से (कफ़्फ़ारा अदा) नहीं हो सकता बल्कि अगर तीसरा रोज़ा भी रख लिया है और ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले माल पर क़ादिर हो गया तो **रोज़े नाकाफ़ी** हैं अगर्चे माल पर क़ादिर होना यूं हुवा कि उस के मूरिस (या'नी वारिस बनाने वाले) का इन्तिक़ाल हो गया और उस को तर्का (या'नी विर्सा) इतना मिलेगा जो **कफ़्फ़ारे** के लिये काफ़ी है । (دُرِّمُختار ج٥ ص٥٢٦)

कफ़्फ़ारे के रोज़े की निय्यत के दो अह़काम : ﴾10﴿ इन रोज़ों में **रात से निय्यत** शर्त़ है और येह भी ज़रूर है कि **कफ़्फ़ारे** की निय्यत से हों मुत़्लक़ रोज़े की निय्यत काफ़ी नहीं । (مبسوط ج٤ ص ١٦٦)

क़सम तोड़ने से पहले कफ़्फ़ारा दिया तो अदा न हुवा : ﴾11﴿ **क़सम** तोड़ने से पहले **कफ़्फ़ारा** नहीं, और (अगर दे भी) दिया तो अदा न हुवा या'नी अगर **कफ़्फ़ारा** देने के बा'द **क़सम** तोड़ी तो अब फिर दे कि जो पहले दिया है वोह **कफ़्फ़ारा** नहीं, मगर फ़क़ीर से दिये हुए को वापस नहीं ले सकता । (فتاوٰی عالمگیری ج ٢ ص ٦٤)

कफ़्फ़ारे का मुस्तह़िक़ कौन ? : ﴾12﴿ **कफ़्फ़ारा** उन्हीं मसाकीन को दे सकता है जिन को ज़कात दे सकता है या'नी अपने बाप, मां, औलाद वग़ैरहुम को जिन को ज़कात नहीं दे सकता **कफ़्फ़ारा** भी नहीं दे सकता । (دُرِّمُختار ج٥ ص٥٢٧) ﴾13﴿ **कफ़्फ़ारए क़सम** की क़ीमत मस्जिद में सर्फ़ (या'नी ख़र्च) नहीं कर सकता न मुर्दे के कफ़न में लगा सकता है या'नी जहां जहां ज़कात नहीं ख़र्च कर सकता वहां **कफ़्फ़ारे** की क़ीमत नहीं दी जा सकती । (عالمگیری ج ٢ ص ٦٢) (क़सम और कफ़्फ़ारे के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1182 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द **2** सफ़्ह़ा 298 ता 311 का मुत़ा-लआ़ ज़रूरी है)

दीनी या समाजी इदारे को कफ़्फ़ारे की रक़म देने का अहम मस्अला :





अगर किसी दीनी या मुसल्मानों के समाजी इदारे को **कफ़्फ़ारे** की रक़म देना चाहे तो दे सकता है मगर बताना होगा कि येह कफ़्फ़ारे की रक़म है ताकि वोह उस रक़म को अलग रख कर उसे बयान कर्दा त़रीक़े पर काम में लाएं या'नी एक ही मिस्कीन को दस दिन तक दोनों वक़्त खिलाना या दस मसाकीन को दोनों वक़्त खिलाना वग़ैरा । अगर दीनी इदारा दीनी कामों में सर्फ़ करना चाहे तो ह़ीला करने का त़रीक़ा येह है, म-सलन एक ही मिस्कीन को रोज़ाना एक स-द-क़ए फ़ित्र या दस मिस्कीनों को एक ही दिन में एक एक स-द-क़ए फ़ित्र का मालिक बनाया जाए और वोह अपनी त़रफ़ से दीनी कामों के लिये पेश करें ।

तू झूटी क़सम से बचा या इलाही !
मुझे सच का आ़दी बना या इलाही !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वाह क्या बात है म-दनी तरबिय्यती कोर्स की ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! झूटी क़समों से तौबा का जज़्बा पाने, बात बात पर क़सम खाने की ख़स्लत मिटाने, ज़रूरी दीनी मा'लूमात पाने और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत बनाने के लिये "दा'वते इस्लामी" के म-दनी माह़ोल में **63 दिन का म-दनी तरबिय्यती कोर्स** करवाया जाता है, जिस से बन पड़े वोह येह मुफ़ीद तरीन म-दनी तरबिय्यती कोर्स ज़रूर करे, आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** पेश की जाती है, चुनान्चे एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : हमारे अ़लाक़े का एक नौ जवान जो कि वालिदैन का इक्लौता (या'नी एक ही) बेटा था, ग़लत़ सोह़बत के सबब **चरस** का आ़दी बन गया, घर से बाहर रहना उस का मा'मूल था, वालिद साह़िब अक्सर उस को क़ब्रिस्तान जा कर चरसियों के दरमियान से उठा कर घर लाते । तमाम घर वाले उस के सबब परेशान थे । एक दिन एक इस्लामी भाई ने उस नौ जवान पर **इन्फ़िरादी कोशिश**

करते हुए उसे **म-दनी तरबिय्यती कोर्स** करने की तरग़ीब दी, ख़ुश क़िस्मती से उस ने हामी भर ली और तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में आ गया। घर में ख़ुशी की लहर दौड़ गई ! सभी घर वाले दुआ़ कर रहे थे कि येह नेक बन जाए मगर अब भी डरे हुए थे कि कहीं येह वापस न आ जाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ चन्द दिनों बा'द कुछ इस त़रह़ फ़ोन आया कि "तरबिय्यती कोर्स और **फ़ैज़ाने मदीना** में बहुत मज़ा आ रहा है, **फ़ैज़ाने मदीना** में ऐसा लगता है कि **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से बराहे रास्त फ़ैज़ आ रहा है, मैं ने अपने तमाम गुनाहों से तौबा कर ली है, अब मैं बा जमाअ़त नमाज़ें अदा कर रहा हूं, सुन्नतें सीख रहा हूं और मुझे बहुत सुकून मिल रहा है।" اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी तरबिय्यती कोर्स** से वापसी पर वोह वाक़ेई बिल्कुल बदल चुका था। उस की ह़ैरत अंगेज़ तब्दीली से सब घर वाले बल्कि सारा मह़ल्ला ह़ैरान था। चेहरे पर नूर बरसाती दाढ़ी और सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज जगमगा रहा था। उस ने आते ही घर वालों पर भी **इन्फ़िरादी कोशिश** शुरूअ़ कर दी जिस की ब-र-कत से वालिद साह़िब ने चेहरे पर **दाढ़ी** और सर पर **इमामा शरीफ़** का ताज सजा लिया और पाबन्दी से हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत फ़रमाने लगे। वालिदए मोह़तरमा "दर्से निज़ामी" और बहन "शरीअ़त कोर्स" करने के लिये कमर बस्ता हो गईं। उस नौ जवान के वालिद साह़िब ने मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी को कुछ इस त़रह़ बताया कि मैं दा'वते इस्लामी वालों के लिये ब-र-कत की दुआ़ करता हूं, ख़ुसूसन उन के लिये जिन्हों ने मेरे बेटे पर "इन्फ़िरादी कोशिश" की और **63 दिन के म-दनी तरबिय्यती कोर्स** में हाथों हाथ ले गए क्यूं कि हम इस की आ़दतों से बहुत परेशान थे, इस की वालिदा तो इतनी बेज़ार हो चुकी थी कि एक दिन जज़्बात से मग़लूब हो कर कीड़े मकोड़े मारने की दवाई उठा लाई कि या तो मैं खा कर मर जाऊंगी या इस को खिला कर मार दूंगी। अब इस की वालिदा रो रो कर दुआएं देती हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी वालों को सलामत रखे कि इन की कोशिशों से **मेरा बिगड़ा हुवा बेटा नेक बन गया।**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

अगर सुन्नतें सीखने का है जज़्बा तुम आ जाओ देगा सिखा म-दनी माहोल
तू दाढ़ी बढ़ा ले इमामा सजा ले नहीं है येह हरगिज़ बुरा म-दनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

घर वालों की इस्लाह़ की कोशिश करनी चाहिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! इन्फ़िरादी कोशिश की भी क्या ख़ूब बहारें हैं ! कि एक बिगड़ा हुवा नौ जवान **63 रोज़ा म-दनी तरबिय्यती कोर्स** में शरीक हो गया और इस की ब-र-कत से गुनाहों से ताइब हो कर घर वालों की इस्लाह़ में लग गया । वाक़ेई हम सभी को अपनी और साथ ही साथ अपने घर वालों की सुधार की भी कोशिश करनी चाहिये, आइये ! घर में **म-दनी माहोल** बनाने की कोशिश के लिये ''बाग़े सुन्नत'' से रह़मत के **म-दनी फूल** चुनते हैं ।

"या रब्बे करीम ! हमें मुत्तक़ी बना" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से घर में ''म-दनी माहोल'' बनाने के 19 म-दनी फूल

﴾1﴿ घर में आते जाते बुलन्द आवाज़ से सलाम कीजिये ।

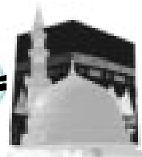
﴾2﴿ वालिदा या वालिद साहिब को आते देख कर ता'ज़ीमन खड़े हो जाइये ।

﴾3﴿ दिन में कम अज़ कम एक बार इस्लामी भाई वालिद साहिब के और इस्लामी बहनें मां के हाथ और पाउं चूमा करें ।

﴾4﴿ वालिदैन के सामने आवाज़ धीमी रखिये, उन से आंखें हरगिज़ न मिलाइये, नीची निगाहें रख कर ही बातचीत कीजिये ।

﴾5﴿ उन का सोंपा हुवा हर वोह काम जो ख़िलाफ़े शर-अ़ न हो फ़ौरन कर डालिये ।

﴾6﴿ सन्जी-दगी अपनाइये । घर में तू तुकार, अबे तबे और मज़ाक़ मस्ख़री करने, बात बात पर गुस्से हो जाने, खाने में ऐब निकालने, छोटे भाई बहनों को झाड़ने,


मारने, घर के बड़ों से उलझने, बह़सें करते रहने की अगर आप की आ़दतें हों तो अपना रवय्या यक्सर तब्दील कर दीजिये, हर एक से मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लीजिये ।

《7》 घर में और बाहर हर जगह आप सन्जीदा हो जाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर के अन्दर भी ज़रूर इस की ब-र-कतें ज़ाहिर होंगी ।

《8》 मां बल्कि बच्चों की अम्मी हो तो उसे नीज़ घर (और बाहर) के एक दिन के बच्चे को भी "आप" कह कर ही मुख़ात़िब हों ।

《9》 अपने मह़ल्ले की मस्जिद में इशा की जमाअ़त के वक़्त से ले कर दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये । काश ! तहज्जुद में आंख खुल जाए वरना कम अज़ कम नमाज़े फ़ज्र तो ब आसानी (मस्जिद की पहली सफ़ में बा जमाअ़त) **मुयस्सर** आए और फिर काम काज में भी सुस्ती न हो ।

《10》 घर के अफ़राद में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों का सिल्सिला हो और आप अगर सर परस्त नहीं हैं, नीज़ ज़न्ने ग़ालिब है कि आप की नहीं सुनी जाएगी तो बार बार टोका टोक के बजाए, सब को नरमी के साथ **मक-त-बतुल मदीना** से जारी शुदा सुन्नतों भरे बयानात की ऑडियो केसिटें, ऑडियो / विडियो सीडीज़ सुनाइये दिखाइये, म-दनी चेनल दिखाइये । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ "म-दनी नताइज" बर आमद होंगे ।

《11》 घर में कितनी ही डांट बल्कि मार भी पड़े, **सब्र सब्र** और **सब्र** कीजिये । अगर आप ज़बान चलाएंगे तो "म-दनी माह़ोल" बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मज़ीद बिगाड़ पैदा हो सकता है कि बे जा सख़्ती करने से बसा अवक़ात शैत़ान लोगों को ज़िद्दी बना देता है ।

《12》 म-दनी माह़ोल बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ येह भी है कि घर में रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स ज़रूर ज़रूर ज़रूर दीजिये या सुनिये ।

《13》 अपने घर वालों की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये दिलसोज़ी के साथ दुआ़ भी करते रहिये कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ या'नी दुआ़ मोमिन का हथियार है । (اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج٢ ص ١٦٢ حديث١٨٥٥)




﴾14﴿ सुसराल में रहने वालियां जहां घर का ज़िक्र है वहां सुसराल और जहां वालिदैन का ज़िक्र है वहां सास और सुसर के साथ वोही हुस्ने सुलूक बजा लाएं जब कि कोई मानेए़ शर-ई न हो। हां येह एह़तियात ज़रूरी है कि बहू सुसर के हाथ पाउं न चूमे, यूंही दामाद सास के।

﴾15﴿ **मसाइलुल क़ुरआन** सफ़ह़ा 290 पर है : हर नमाज़ के बा'द येह दुआ़ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में **म-दनी माह़ोल** क़ाइम होगा। (दुआ़ येह है :)

(اَللّٰھُمَّ) رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿۷۴﴾ [1] (پ ۱۹،الفرقان ۷۴)

("اَللّٰھُمَّ" आयते क़ुरआनी का ह़िस्सा नहीं)

﴾16﴿ ना फ़रमान बच्चा या बड़ा जब सोया हो तो 11 या 21 दिन तक उस के सिरहाने खड़े हो कर येह आयाते मुबा-रका सिर्फ़ एक बार इतनी आवाज़ से पढ़िये कि उस की आंख न खुले : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿۲۱﴾ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿۲۲﴾ [2] (پ ۳۰،البروج:۲۱،۲۲) (अव्वल, आख़िर, एक मर्तबा दुरूद शरीफ़) **याद रहे !** बड़ा ना फ़रमान हो तो सोते सोते सिरहाने वज़ीफ़ा पढ़ने में उस के जागने का अन्देशा है ख़ुसूसन जब कि उस की नींद गहरी न हो, येह पता चलना मुश्किल है कि सिर्फ़ आंखें बन्द हैं या सो रहा है लिहाज़ा जहां फ़ितने का ख़ौफ़ हो वहां येह अ़मल न किया जाए ख़ास कर बीवी अपने शोहर पर येह अ़मल न करे।

﴾17﴿ नीज़ ना फ़रमान औलाद को फ़रमां बरदार बनाने के लिये ता ह़ुसूले मुराद नमाज़े फ़ज्र के बा'द आस्मान की त़रफ़ रुख़ कर के "يَاشَهِيْدُ" 21 बार पढ़िये। (अव्वल व आख़िर, एक बार दुरूद शरीफ़)।

﴾18﴿ **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल की आ़दत बनाइये और घर के जिन अफ़राद

---

1 : **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेशवा बना।

2 : **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बल्कि वोह कमाल शरफ़ वाला क़ुरआन है लौहे़ मह़फ़ूज़ में।

के अन्दर नर्म गोशा पाएं उन में और आप अगर बाप हैं तो औलाद में नरमी और ह़िक्मते अ़-मली के साथ **म-दनी इन्आ़मात** का निफ़ाज़ कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से घर में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा।

﴾19﴿ पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के घर वालों के लिये भी दुआ़ कीजिये। म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से भी घरों में **म-दनी माह़ोल** बनने की "म-दनी बहारें" सुनने को मिलती हैं।

रवय्ये से तेरे हैं घर वाले बदज़न — तो कैसे बनेगा भला म-दनी माह़ोल
तू करना न घर में लड़ाई भिड़ाई — वगर्ना न बन पाएगा म-दनी माह़ोल
तू बक बक न कर, लब पे क़ुफ़्ले मदीना — लगा घर में बन जाएगा म-दनी माह़ोल
तू नरमी व ह़िक्मत को अपना ले भाई ! — तेरे घर में बन जाएगा म-दनी माह़ोल
न कर मस्ख़री ख़ूब सन्जीदा हो जा — तेरे घर में बन जाएगा म-दनी माह़ोल
जो अख़्लाक़ से तेरे मां बाप हैं ख़ुश — तेरे घर में बन जाएगा म-दनी माह़ोल
तू नज़रें झुका कर के कर बात सब से — तेरे घर में बन जाएगा म-दनी माह़ोल
तू घर में सभी को दिखा म-दनी चेनल — तेरे घर में बन जाएगा म-दनी माह़ोल
सदा घर में दे दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत — तेरे घर में बन जाएगा म-दनी माह़ोल
तू मां बाप की दस्त बोसी किया कर — तेरे घर में बन जाएगा म-दनी माह़ोल
तू छोटों पे शफ़्क़त बड़ों का अदब कर — तेरे घर में बन जाएगा म-दनी माह़ोल
पड़े डांट कैसी ही तू सह लिया कर — तेरे घर में बन जाएगा म-दनी माह़ोल
अगर हो पिटाई न कर लब कुशाई — तेरे घर में बन जाएगा म-दनी माह़ोल

दुआ़ कर येह शामो सह़र गिड़गिड़ा कर
बने मेरे घर में ख़ुदा म-दनी माह़ोल

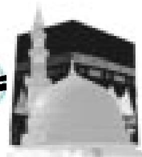
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वाक़िअ़ए इफ़्क : **सफ़्हा** 160 पर सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की हिकायत में जिस **वाक़िअ़ए इफ़्क** का इशारा दिया गया था वोह ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस तरह बयान किया गया है : 5 सि. हि. में ग़ज़्वए **बनिल मुस्तलिक़** से वापसी के वक़्त क़ाफ़िला क़रीबे मदीना एक पड़ाव पर ठहरा तो **उम्मुल मुअमिनीन** हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ज़रूरत के लिये किसी गोशे (या'नी कोने) में तशरीफ़ ले गईं, वहां आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) का **हार** टूट गया उस की तलाश में मसरूफ़ हो गईं, उधर क़ाफ़िले ने कूच किया और आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) का महमिल शरीफ़ (या'नी कजावा) **ऊंट** पर कस दिया और उन्हें येही ख़याल रहा कि **उम्मुल मुअमिनीन** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) इस (पर्दे वाले कजावे) में हैं, क़ाफ़िला चल दिया। आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) आ कर क़ाफ़िले की जगह बैठ गईं और आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ने ख़याल किया कि मेरी तलाश में क़ाफ़िला ज़रूर वापस होगा, क़ाफ़िले के पीछे पड़ी गिरी चीज़ उठाने के लिये एक साहिब रहा करते थे, इस मौक़अ़ पर हज़रते सफ़्वान (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) इस काम पर थे, जब वोह आए और उन्हों ने आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) को देखा तो बुलन्द आवाज़ से "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْن" पुकारा। आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ने कपड़े से पर्दा कर लिया, उन्हों ने अपनी ऊंटनी बिठाई आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) उस पर सुवार हो कर लश्कर में पहुंचीं। मुनाफ़िक़ीने सियाह बातिन ने अवहामे फ़ासिदा (या'नी फ़ितना अंगेज़ शुकूको शुबुहात) फैलाए और आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) की शान में बदगोई शुरूअ़ की, बा'ज़ मुसल्मान भी उन के फ़रेब (या'नी धोके) में आ गए और उन (साहिबान) की ज़बान से भी कोई कलिमए बे जा (या'नी ना मुनासिब जुम्ला) सरज़द हुवा, **उम्मुल मुअमिनीन** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) बीमार हो गईं और एक माह तक बीमार रहीं, इस ज़माने में उन्हें इत्तिलाअ़ न हुई कि उन की निस्बत मुनाफ़िक़ीन क्या बक रहे हैं। एक रोज़ **उम्मे मिस्तह** से उन्हें येह ख़बर मा'लूम हुई और इस (के सदमे) से आप (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) का मरज़ और बढ़ गया और इस सदमे में इस तरह रोईं कि आप का आंसू न थमता था और न एक लम्हे के लिये नींद आती थी, इस हाल में **सय्यिदे आलम** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर वह्य नाज़िल हुई और हज़रते **उम्मुल मुअमिनीन** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) की तहारत (या'नी पाक

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (طبرانی)

दामनी) में येह **आयतें** (या'नी सूरए नूर की कई आयात) उतरीं और आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) का शरफ़ व मर्तबा **अल्लाह** तआला ने इतना बढ़ाया कि क़ुरआने करीम की बहुत सी आयात में आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) की त़हारत (या'नी पाक दामनी) व फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई गई । इस दौरान में **सय्यिदे आ़लम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बर सरे मिम्बर ब क़सम फ़रमा दिया था **:** "मुझे अपने अहल की पाकी व ख़ूबी बिल यक़ीन मा'लूम है, तो जिस शख़्स ने इन के ह़क़ में बदगोई की है उस की त़रफ़ से मेरे पास कौन मा'ज़िरत पेश कर सकता है ।" **ह़ज़रते उ़मर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ीन बिल यक़ीन झूटे हैं, **उम्मुल मुअमिनीन** बिल यक़ीन पाक हैं, **अल्लाह** तआला ने (तो) सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे पाक को मख्खी के बैठने से (भी) मह़फ़ूज़ रखा (है क्यूं) कि वोह नजासतों पर बैठती है (फिर येह) कैसे हो सकता है कि वोह आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को बद औ़रत की सोह़बत से मह़फ़ूज़ न रखे ! **ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने भी इस त़रह़ आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की त़हारत (पाक दामनी) बयान की और फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का साया ज़मीन पर न पड़ने दिया ताकि इस साए पर किसी का क़दम न पड़े, तो जो परवर दगार (عَزَّوَجَلَّ) आप के साए को मह़फ़ूज़ रखता है किस त़रह़ मुम्किन है कि वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अहल (या'नी अज़्वाजे मुत़ह्हरात) को मह़फ़ूज़ न फ़रमाए ! **ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि एक जूं का ख़ून लगने से परवर दगारे आ़लम (عَزَّوَجَلَّ) ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ना'लैन उतार देने का हुक्म दिया, जो परवर दगार عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'लैन शरीफ़ की इतनी सी आलू-दगी को गवारा न फ़रमाए (उस के लिये) मुम्किन नहीं कि वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अहल (या'नी अज़्वाजे मुत़ह्हरात) की आलू-दगी गवारा करे । इस त़रह़ बहुत से **सह़ाबा** (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) और बहुत सी **सह़ाबिय्यात** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ) ने क़समें खाईं, आयत नाज़िल होने से क़ब्ल ही ह़ज़रते **उम्मुल मुअमिनीन** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) की त़रफ़ से क़ुलूब मुत़्मइन थे, आयत के नुज़ूल ने इन का इ़ज़्ज़ो शरफ़ और ज़ियादा कर दिया तो बदगोयों की बदगोई **अल्लाह** और उस के **रसूल** और **सह़ाबए किबार** (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم ورَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم اَجْمَعِین) के नज़्दीक बात़िल है और






बदगोई करने वालों के लिये सख़्त तरीन मुसीबत है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 562)

बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी उस ह़रीमे बराअत पे लाखों सलाम
या'नी है सूरए नूर जिन की गवाह
उन की पुरनूर सूरत पे लाखों सलाम

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : **ह़रीम** : ज़ौजा। **बराअत** : छुटकारा, नजात।

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दोनों अश्आ़र का बित्तरतीब ख़ुलासा येह है : (1) **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا जो कि **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की क़ाबिले एह़तिराम शहज़ादी हैं और हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक दिलो जान का आराम हैं, **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत वाली बारगाहे आ़ली से जिन की पाक दामनी बयान फ़रमाई गई, उन पर हमारे लाखों सलाम हों (2) हमारी प्यारी प्यारी अम्मीजान पर जब मुनाफ़िक़ीन ने तोहमत लगाई तो **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने सूरए नूर की आयाते मुबा-रका नाज़िल फ़रमा कर उन की पाकीज़गी और त़हारत का ए'लान फ़रमाया और ता क़ियामे क़ियामत उन की इफ़्फ़त व पारसाई पर मोहर सब्त फ़रमा दी। हमारी ऐसी अ़-ज़मत वाली पाक दामन अम्मीजान की पुरनूर सूरत पर लाखों सलाम हों।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इज्तिमाअ़ की ब-र-कत से जन्नत मिल गई : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 132 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "तौबा की रिवायात व ह़िकायात" सफ़्ह़ा 75 ता 77 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना **सालेह़ मुर्री** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने एक **इज्तिमाअ़** में अपने बयान के दौरान सामने बैठे हुए एक नौ जवान से फ़रमाया : "कोई आयत पढ़ो।" तो उस ने **सू-रतुल मुअमिन** की आयत नम्बर 18 तिलावत की :





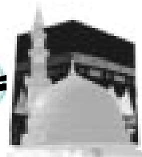
फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ۬ؕ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ؕ﴿۱۸﴾ (پ۲۴، المؤمن:۱۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें डराओ उस नज़्दीक आने वाली आफ़त के दिन से जब दिल गलों के पास आ जाएंगे ग़म में भरे। और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न कोई सिफ़ारिशी जिस का कहा माना जाए।

येह आयते मुबा-रका सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : कोई ज़ालिम का दोस्त या मददगार किस त़रह़ हो सकता है ? क्यूं कि वोह तो **अल्लाह** तआ़ला की गिरिफ़्त (या'नी पकड़) में होगा। बेशक तुम सरकशी करने वाले **गुनहगारों** को देखोगे कि उन्हें **ज़न्जीरों** में जकड़ कर **जहन्नम** की त़रफ़ ले जाया जा रहा होगा और वोह बरह्ना (या'नी नंगे) होंगे, उन के जिस्म बोझल, चेहरे सियाह (या'नी काले) और आंखें ख़ौफ़ से नीली होंगी। वोह **चिल्लाएंगे :** हम हलाक हो गए ! हम बरबाद हो गए ! हमें ज़न्जीरों में क्यूं जकड़ा गया है ? हमें कहां ले जाया जा रहा है ? और हमारे साथ येह सब क्या हो रहा है ? फ़िरिश्ते उन्हें **आग के कोड़ों** से मारते हुए हांकेंगे, कभी वोह मुंह के बल गिरेंगे और कभी उन्हें घसीट कर ले जाया जाएगा। जब रो रो कर उन के आंसू ख़त्म हो जाएंगे तो **ख़ून के आंसू** बहने लगेंगे, उन के दिल दहल जाएंगे और हैरान व परेशान होंगे अगर कोई उन्हें देख ले तो उन पर निगाह न जमा सके, न ही अपना दिल संभाल सके, येह होलनाक मन्ज़र देखने वाले के बदन पर लरज़ा त़ारी हो जाए।

येह फ़रमाने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना **सालेह़ मुर्री** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی बहुत रोए और एक आहे सर्द दिले पुरदर्द से खींच कर फ़रमाया : "अफ़्सोस ! कैसा दिल हिला देने वाला मन्ज़र होगा।" येह कह कर फिर रोने लगे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को रोता देख कर ह़ाज़िरीन भी रोने लगे। इतने में एक नौ जवान खड़ा हो गया और कहने लगा : "या सय्यिदी ! क्या येह सारा मन्ज़र बरोज़े क़ियामत होगा ?" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब दिया : "हां, येह मन्ज़र ज़ियादा त़वील नहीं होगा क्यूं कि जब उन्हें जहन्नम में डाल दिया जाएगा तो उन की आवाज़ें आना बन्द हो जाएंगी।" येह सुन कर नौ जवान ने एक चीख़ मारी और कहा : "अफ़्सोस !


मैं ने अपनी ज़िन्दगी ग़फ़्लत में गुज़ार दी, अफ़्सोस ! मैं कोताहियों का शिकार रहा, अफ़्सोस ! मैं खुदाए बारी عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त व फ़रमां बरदारी में सुस्ती करता रहा, आह ! मैं ने अपनी ज़िन्दगी बेकार ज़ाएअ़ कर दी।" येह कह कर वोह रोने लगा। कुछ देर बा'द उस ने रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बेकस पनाह में यूं मुनाजात की : "ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मैं गुनहगार तौबा के लिये हाज़िरे दरबार हूं, मुझे तेरे सिवा किसी से कोई सरोकार नहीं, गुनाहों से मुआ़फ़ी दे कर मुझे क़बूल फ़रमा ले, मुझ समेत तमाम हाज़िरीन पर अपना फ़ज़्लो करम फ़रमा और हमें जूदो नवाल (या'नी अ़ता व बख़्शिश) से मालामाल कर दे, **या अर-ह़मर्राह़िमीन !** (या'नी ऐ सब से बढ़ कर रह़म फ़रमाने वाले) मैं ने गुनाहों की गठड़ी तेरे सामने रख दी है और सच्चे दिल से तेरी बारगाह में हाज़िर हूं, अगर तू मुझे क़बूल नहीं फ़रमाएगा तो यक़ीनन मैं हलाक हो जाऊंगा।" इतना कह कर वोह नौ जवान ग़श खा कर गिर पड़ा। और चन्द रोज़ बिस्तरे अ़लालत पर गुज़ार कर (या'नी बीमार रह कर) मौत से हम-कनार हो गया। उस के जनाज़े में बे शुमार लोग शरीक हुए, रो रो कर उस के लिये दुआएं की गईं। ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی अक्सर उस का ज़िक्र अपने **बयान** में किया करते। एक दिन किसी ने उस नौ जवान को ख़्वाब में देखा तो पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ-मला फ़रमाया ? तो उस ने जवाब दिया : "मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना **सालेह़ मुर्री** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی के **इज्तिमाअ़** से ब-र-कतें मिलीं और मुझे **जन्नत** में दाख़िल कर दिया गया।" (كتاب التَّوَّابِين ص ٢٥٠.٢٥٢)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ख़्वाब में बारगाहे रिसालत में तिलावत की सआ़दत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! बा अ़मल **मुबल्लिग़ीन** का बयान किस क़दर पुर असर होता है, ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले मुबल्लिग़ का बयान तासीर का तीर बन कर गुनहगार के जिगर से आर पार हो जाता और बसा अवक़ात उस की दुन्या व आख़िरत संवार देता है। **सय्यिदुना सालेह़ मुर्री** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی बड़े ज़बर दस्त **क़ारी** भी थे, आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه की क़िराअत में सोज़ ही सोज़ होता था




आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बार मैं ने ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने कुरआने करीम की तिलावत की सआदत पाई, **ताजदारे रिसालत** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **ऐ सालेह़ !** येह तो क़िराअत हुई **रोना** कहां है ? (اِحیاءُ الْعُلوم ج ١ ص٣٦٨) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो ।**

तिलावत में रोना कारे सवाब है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुरआने करीम की तिलावत करते हुए **रोना** मुस्तह़ब है। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : कुरआने पाक की तिलावत करते हुए रोओ और अगर रो न सको तो रोने की सी शक्ल बनाओ।

(سُنَنِ اِبن ماجه ج٢ ص ١٢٩ حديث١٣٣٧)

अ़ता कर मुझे ऐसी रिक़्क़त ख़ुदाया
करूं रोते रोते तिलावत ख़ुदाया

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मरने से चन्द माह पहले इन्फ़िरादी कोशिश : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तिलावत करते या सुनते हुए रिक़्क़त त़ारी होना, आंखों से आंसू जारी होना यक़ीनन बड़ी सआ़दत की बात है मगर शैत़ान के वार से ख़बरदार ! रोना एक ऐसा अ़मल है कि इस में **रिया** का ख़त़रा बहुत ज़ियादा रहता है। लिहाज़ा दुआ़ वग़ैरा में बिल ख़ुसूस दूसरों के सामने रोने में **रिया** से बचना ज़रूरी है कि **रियाकार** अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार होता है। तिलावत व ना'त में इख़्लास के साथ रोने रुलाने का शौक़ बढ़ाने के लिये, तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये,






म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ **"फ़िक्रे मदीना"** कर के म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर करते रहिये और हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस म-दनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" के हुसूल की ख़ातिर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये । आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** सुनते हैं **: बाबुल मदीना** (कराची) के एक मुबल्लिग़ जो कि रोज़ाना पाबन्दी से **चौकदर्स** देते थे । एक शख़्स जो कि सुन्नतों भरी तह़रीक, "दा'वते इस्लामी" को पसन्द नहीं करता था, उस ने बर बिनाए तअ़स्सुब (या'नी तअ़स्सुब की वजह से) थाने में मुबल्लिग़ के ख़िलाफ़ झूटी रपट दर्ज करवाई कि येह अ़लाक़े में इन्तिशार फैला रहा है । पोलीस आई और उस **आ़शिक़े रसूल** को थाने ले गई । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का "मुबल्लिग़" हर जगह **मुबल्लिग़** ही होता है चुनान्चे एक "मुजरिम" से मुलाक़ात पर उन्हों ने "इन्फ़िरादी कोशिश" कर के उस को तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** में शिर्कत के लिये तय्यार कर लिया, उस ने कहा : मैं क़ैद से रिहा होउंगा तो ज़रूर ह़ाज़िरी दूंगा, क्या आप मुझे वहां मिलेंगे ? **मुबल्लिग़** ने कहा : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फिर उन्हों ने अपना ह़ल्क़ा नम्बर वग़ैरा बताया कि मैं इज्तिमाअ़ में वहां होता हूं । पोलीस ने उस का हुस्ने अख़्लाक़ वग़ैरा देख कर ह़क़ीक़ते ह़ाल जान ली और मा'ज़िरत त़लब करते हुए उस "आ़शिक़े रसूल" को बा इ़ज़्ज़त रुख़्सत कर दिया । चन्द माह बा'द वोह **मुजरिम** जब जेल से रिहा हुवा तो तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** बाबुल मदीना कराची के अन्दर हफ़्तावार सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** में पहुंचा, उस ने बयान सुना, ज़िक्र और दुआ़ में उस पर रिक़्क़त त़ारी हो गई उस ने रो रो कर अपने गुनाहों से तौबा की । दुआ़ के बा'द उस मुबल्लिग़ को जिन्हों ने थाने में नेकी की दा'वत दी थी तलाशते हुए जब उन के बताए हुए ह़ल्क़े में पहुंचा तो एक इस्लामी भाई ने बताया कि अभी **पिछले मंगल ही उन मुबल्लिग़ का इन्तिक़ाल हुवा है ।**





येह सुनना था कि वोह दहाड़ें मार मार कर रोने लगा कि ज़िन्दगी में किसी ने पहली बार **''नेकी की दा'वत''** दी और उस की वजह से मैं ने तौबा की, हाए अफ़्सोस ! मैं अपने उस मोह्‌सिन से दोबारा मिल भी न सका। एक आ़शिक़े रसूल ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन का ज़ेह्न बनाया कि अब आप उन से मिल तो नहीं सकते मगर उन को फ़ाएदा पहुंचा सकते हैं और इस का एक त़रीक़ा येह भी है कि उन के ईसाले सवाब के लिये आज सुब्ह़ ही हाथों हाथ सुन्नतों की तरबिय्यत के **30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर लीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह हाथों हाथ 30 दिन के लिये **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र पर रवाना हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज वोह ''मुजरिम'' **दा'वते इस्लामी** के मुबल्लिग़ हैं जब कि इस से पहले مَعَاذَ الله वोह **शराब के अड्डे** चलाते थे।

आप थाने में भी, जेलख़ाने में भी
हर जगह पर कहें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुबल्लिग़ हर जगह मुबल्लिग़ होता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मुबल्लिग़ हर जगह मुबल्लिग़ होता है, हर वक़्त हर जगह अपना लिबास और अपना अन्दाज़ सुन्नतों भरा रखता है, चाहे मह़ल्ले में हो या बाज़ार में, जनाज़े में हो या शादी की बारात में, दवाख़ाने में हो या अस्पताल में, बाग़ में हो या किसी की तदफ़ीन के लिये क़ब्रिस्तान में, जहां मौक़अ़ मिला झट **नेकी की दा'वत** के म-दनी फूल बरसाना शुरूअ़ कर देता और अपने लिये सवाब का ख़ूब ज़ख़ीरा कर लेता है। मज़्कूरा **म-दनी बहार** से मा'लूम हुवा कि मर्हूम आ़शिक़े रसूल मुबल्लिग़ का जज़्बा भी क्या ख़ूब था कि ज़ुल्मन किसी ने थाने में ला खड़ा किया तो वहां भी नेकी की दा'वत के म-दनी काम में लग गए और एक शराब का अड्डा चलाने वाले की तौबा और उस के मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी बनने का सबब बन कर ख़ुद सदा के लिये आंखें मूंद लीं। **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मर्हूम आ़शिक़े रसूल मुबल्लिग़**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह़ जब निकल कर
चले तू गले लगाना म-दनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 287)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का प्यारा बनाने वाले लोग : **बेचैन** दिलों के चैन, रह़मते दारैन, ताजदारे ह़-रमैन, सरवरे कौनैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क्या मैं तुम्हें ऐसे लोगों के बारे में ख़बर न दूं जो न अम्बिया (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) में से हैं न शु-हदा में से लेकिन बरोज़े क़ियामत अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और शु-हदा उन के मक़ाम को देख कर रश्क करेंगे, वोह लोग नूर के मिम्बरों पर बुलन्द होंगे, येह वोह लोग हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का मह़बूब** (या'नी प्यारा) बन्दा बना देते हैं और वोह ज़मीन पर (लोगों को) नसीह़तें करते चलते हैं ।" अ़र्ज़ की गई : वोह किस त़रह़ लोगों को **अल्लाह** तआ़ला का मह़बूब (या'नी प्यारा) बना देते हैं ? फ़रमाया : वोह लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मह़बूब (या'नी पसन्दीदा) बातों का हुक्म देते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना पसन्दीदा बातों से मन्अ़ करते हैं, पस जब लोग उन की इत़ाअ़त करेंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्हें अपना मह़बूब बना लेगा । (شُعَبُ الْاِيمان ج١ ص٣٦٧ حديث٤٠٩)

मुबल्लिग़ मह़बूब ही नहीं मह़बूब गर होता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने वालों की भी कैसी बुलन्दो बाला शानें हैं, बरोज़े क़ियामत उन पर रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ का इन्आ़मो इक्राम देख कर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और शु-हदाए उ़ज़्ज़ाम भी रश्क करेंगे । इस अ़-ज़-मतो शान का सबब क्या होगा ? येही कि वोह **नेकी की दा'वत** और बदी की मुमा-न-अ़त के ज़रीए़ लोगों को बा अ़मल बना कर उन्हें "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का मह़बूब**" बनाते होंगे । जब वोह दूसरों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब बनाते होंगे तो ख़ुद क्यूं न **मह़बूब** होंगे !

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

अल्लाह का महबूब बने जो तुम्हें चाहे
उस का तो बयां ही नहीं कुछ तुम जिसे चाहो

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना हसन बसरी और एक सरमाया दार : "नेकी की दा'वत" का सवाब कमाने में हमारे औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام बहुत पेश पेश हुवा करते थे और इस मुआ-मले में किसी से मरऊब भी नहीं होते (या'नी रो'ब में भी न आते) थे चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना **हसन** बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى अपने शागिर्दों के हमराह कहीं तशरीफ़ लिये जा रहे थे कि एक **रईस** (या'नी सरमाया दार) को निहायत सजधज के साथ अपने गुलामों के झुरमट में घोड़े पर सुवार गुज़रता देखा। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : कहां का इरादा है ? अ़र्ज़ की : **बादशाह** के दरबार में जा रहा हूं। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस पर "इन्फ़िरादी कोशिश" करते हुए फ़रमाया : **ऐ भाई !** आप ने ख़ूब उ़म्दा लिबास ज़ैबे तन फ़रमाया है फिर इसे ख़ुश्बूओं से भी बसाया है और हर त़रह़ से अपने **"ज़ाहिर"** को भी सजाया है, यक़ीनन येह मह़ज़ इस लिये है कि **शाही दरबार** में आप को शर्मसार न होना पड़े ह़ालां कि येह बादशाहे दारे ना पाएदार (या'नी कमज़ोर दुन्या का बादशाह) और उस के अहले दरबार आप जैसे ही इन्साने ग़ैर मुख़्तार (या'नी बे इख़्तियार) हैं। अब ज़रा ग़ौर फ़रमाइये ! कल बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरबारे शाही में जब ह़ाज़िरी होगी, वहां अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام भी होंगे, वहां के लिये आप ने **"बात़िन"** की आराइश व ज़ैबाइश का भी कुछ इन्तिज़ाम फ़रमाया है ? क्या वहां गुनाहों की गन्दगियों और बदकारियों की बदबूओं के साथ आप ह़ाज़िरी देंगे ? वोह **मालदार** शख़्स निहायत तवज्जोह के साथ आप के इर्शादात सुन रहा था, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से पूछा : क्या आप ने कभी अपने **घोड़े** पर उस की त़ाक़त से ज़ियादा

बोझ डाला है ? अ़र्ज़ की : जी नहीं। फ़रमाया : आप अपने घोड़े पर तो तर्स खाते हैं मगर अपने कमज़ोर वुजूद पर रह़म नहीं करते कि मुसल्सल उस पर गुनाहों का बोझ लादे चले जा रहे हैं, सोचिये तो सही ! इसी त़रह़ गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ारी तो मरने के बा'द क्या अन्जाम होगा ! मालदार आदमी आप की "इन्फ़िरादी कोशिश" और **नेकी की दा'वत** से बेह़द **मु-तअस्सिर** हुवा, घोड़े से उतर कर आप का मुरीद हुवा और **अल्लाह** वाला बन गया। (सच्ची ह़िकायात, जि. 5, स. 208 बि तसर्रुफ़) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تعالیٰ عليه واٰله وسلّم

नफ़्स येह क्या ज़ुल्म है जब देखो ताज़ा जुर्म है
ना तुवां के सर पे इतना बोझ भारी वाह वाह !

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस शे'र में फ़रमाते हैं : ऐ बदकार नफ़्स ! तेरे ज़ुल्मो सितम की भी अब ह़द हो गई ! तू हर लम्ह़ा मेरी ख़त़ाओं में बराबर इज़ाफ़ा करवाता और मुझ कमज़ोर तरीन बन्दे के सर गुनाहों का भारी बोझ लदवाता चला जा रहा है। (मा'लूम हुवा नफ़्से अम्मारा या'नी गुनाह व बुराई पर उभारने वाला नफ़्स हमारा दुश्मन है, हमें हर आन इस की चालों से चौकन्ना रहना ज़रूरी है)

आह ! हर लम्ह़ा गुनह की कसरतो भरमार है
ग़-ल-बए शैत़ान है और नफ़्से बद अ़त्वार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 128)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़ में कैसा लिबास होना चाहिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **औलियाउल्लाह** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی सरमाया दारों और मालदारों की ख़ुशामदों और चापलूसियों के बजाए उन को इस्लाह़ के **म-दनी फूलों** से नवाज़ते और उन्हें दो टोक नसीह़तें फ़रमाते थे। दौलत मन्दों की ख़ुशामद वोह करे जिस को उन से दुन्या

की ज़लील दौलत पाने की हवस हो, **अहलुल्लाह** क़नाअ़त की म–दनी दौलत से मालामाल होते हैं, इन की नज़र दौलत मन्दों के फ़ानी माल पर नहीं, रह़मते रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ पर होती है । याद रहे ! अहले माल व सरवत की ब स–बबे दौलत ता'ज़ीम की सख़्त मुमा–न–अ़त है चुनान्चे मन्क़ूल है : जो किसी ग़नी (या'नी मालदार) की इस के ग़िना (या'नी मालदारी) के सबब तवाज़ोअ़ करे उस का दो तिहाई दीन जाता रहा । (کَشْفُ الْخِفاء ج۲ ص۲۱۵رقم ۲٤٤۲) बयान कर्दा **हिकायत** में आख़िरत की फ़िक्र दिलाई गई है कि हुक्मरानों, वज़ीरों और अफ़्सरों के सामने जाते हुए तो लिबास वग़ैरा दुरुस्त किया जाता और ख़ूब टिपटॉप और ज़ीनत इख़्तियार की जाती है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुक़द्दस बारगाह में पेश होने के लिये एहतिमाम का कोई ज़ेहन ही नहीं । हम दुन्या के किसी ''बड़े आदमी'' के पास जाते हैं या ऐसी जगह जाना होता है जहां बहुत सारे लोग हमें देखने वाले हों तो सर के बाल, लिबास, इमामा, चादर वग़ैरा ख़ूब एहतियात के साथ दुरुस्त करते हैं मगर ''नमाज़'' जो कि परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के अ़–ज़मत वाले दरबार की हाज़िरी का मौक़अ़ है उस वक़्त ज़ीनत का कोई एहतिमाम नहीं करते ! कम अज़ कम इतना तो हो कि किसी ''बड़े आदमी'' के पास या दा'वते तआ़म में जाते हुए इन्सान जो लिबास पहनता है वोही मस्जिद की हाज़िरी में पहन लिया करे । मस्जिद की हाज़िरी के लिये ज़ीनत करने के **मु–तअ़ल्लिक़** क़ुरआने करीम पारह 8 **सू–रतुल आ'राफ़** आयत नम्बर 31 में इर्शाद होता है :

خُذُوْا زِیْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : अपनी ज़ीनत लो जब मस्जिद में जाओ ।

नमाज़ के लिये इत्र लगाना मुस्तह़ब है : सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी लिबासे ज़ीनत और एक क़ौल येह है कि कंघी करना, ख़ुश्बू लगाना दाख़िले ज़ीनत है और सुन्नत येह है कि आदमी बेहतर हैअत (या'नी उ़म्दा सूरत व ह़ालत) के साथ नमाज़ के लिये ह़ाज़िर हो क्यूं कि नमाज़ में रब से मुनाजात है तो इस के लिये ज़ीनत करना **इत्र लगाना मुस्तह़ब** है । मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में दिन में मर्द और औ़रतें रात में नंगे हो कर तवाफ़ करते थे । इस

आयत में सत्र छुपाने और कपड़े पहनने का हुक्म दिया गया और इस में दलील है कि सत्रे औ़रत नमाज़ व त़वाफ़ और हर ह़ाल में वाजिब है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 248)

"या अल्लाह नमाज़ी बना" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ में लिबास के अह़काम पर मब्नी 14 म-दनी फूल

दौराने नमाज़ लिबास पहनना : ﴾1﴿ दौराने नमाज़ कुरता या पाजामा पहनने या तहबन्द बांधने से **नमाज़ टूट** जाती है। (غُنْيَه ص۴۵۲ وغيرها)

﴾2﴿ दौराने नमाज़ सत्र खुल जाने और इसी ह़ालत में कोई रुक्न अदा करने या तीन बार سُبْحٰنَ الله कहने की मिक्दार वक़्फ़ा गुज़र जाने से भी नमाज़ **फ़ासिद** हो (या'नी टूट) जाती है। (دُرِّمُختار ج۲ص۴۶۷)

कन्धों पर चादर लटकाना : ﴾3﴿ नमाज़ में सदल या'नी कपड़ा लटकाना **मक्रूहे तह़रीमी** है। म-सलन सर या कन्धे पर इस त़रह़ से चादर या रुमाल वग़ैरा डालना कि दोनों कनारे लटकते हों। हां, अगर एक कनारा दूसरे कन्धे पर डाल दिया और दूसरा लटक रहा है तो ह़रज नहीं।

﴾4﴿ आज कल बा'ज़ लोग एक कन्धे पर इस त़रह़ रुमाल रखते हैं कि इस का एक सिरा पेट पर लटक रहा होता है और दूसरा पीठ पर। इस त़रह़ नमाज़ पढ़ना **मक्रूहे तह़रीमी** है (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 624) ﴾5﴿ दोनों आस्तीनों में से अगर एक आस्तीन भी आधी कलाई से ज़ियादा चढ़ी हुई हो तो नमाज़ **मक्रूहे तह़रीमी** होगी। (ايضاً،دُرِّمُختار ج۲ص۴۹۰)

﴾6﴿ दूसरा कपड़ा होने के बा वुजूद सिर्फ़ पाजामे या तहबन्द में नमाज़ पढ़ना **मक्रूहे तह़रीमी** है। (عالمگیری ج۱ص۱۰۶) ﴾7﴿ (नमाज़ में) कुरते वग़ैरा के बटन खुले होना जिस से सीना खुला रहे **मक्रूहे तह़रीमी** है हां अगर नीचे कोई और कपड़ा है जिस से सीना नहीं खुला तो मक्रूहे तन्ज़ीही है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 630)

《8》 जानदार की तस्वीर वाला लिबास पहन कर नमाज़ पढ़ना **मक्रूहे तह़रीमी** है नमाज़ के इलावा भी ऐसा कपड़ा पहनना जाइज़ नहीं। (ऐज़न, स. 627)

मक्रूहे तह़रीमी की ता'रीफ़ : येह वाजिब का मुक़ाबिल (या'नी उलट) है इस के करने से इबादत नाक़िस हो जाती है और करने वाला गुनहगार होता है अगर्चे इस का गुनाह ह़राम से कम है और चन्द बार इस का इरतिकाब (या'नी अ़मल में लाना) कबीरा (गुनाह) है। (बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 283) मक्रूहे तह़रीमी हो जाने वाली नमाज़ वाजिबुल इआ़दा होती है या'नी ऐसी नमाज़ को नए सिरे से पढ़ना वाजिब होता है। मक्रूहे तह़रीमी की ऐसी सूरतें भी हैं जिन में सज्दए सह्व कर लेने से नमाज़ दुरुस्त हो जाती है। इस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 496 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"नमाज़ के अह़काम"** का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

《9》 दूसरे कपड़े मुयस्सर होने के बा वुजूद कामकाज के लिबास में नमाज़ पढ़ना **मक्रूहे तन्ज़ीही** है। (شَرْحُ الْوِقَايَة ج۱ص۱۹۸)

《10》 उलटा कपड़ा पहन कर या ओढ़ कर नमाज़ **मक्रूहे तन्ज़ीही** है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 7, स. 358 ता 360)

《11》 सुस्ती से नंगे सर नमाज़ पढ़ना **मक्रूहे तन्ज़ीही** है। (دُرِّمُختار ج۲ص۴۹۱) नमाज़ में टोपी या इमामा शरीफ़ गिर पड़ा तो उठा लेना अफ़्ज़ल है जब कि **अ़-मले कसीर** की ह़ाजत न पड़े वरना नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी। और बार बार उठाना पड़े तो छोड़ दें और न उठाने से ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ मक़्सूद हो तो न उठाना अफ़्ज़ल है। (دُرِّمُختار ورَدُّالْمُحتار ج ۲ ص ۴۹۱)

《12》 अगर कोई नंगे सर नमाज़ पढ़ रहा हो या उस की टोपी गिर पड़ी हो तो उस को दूसरा शख़्स टोपी न पहनाए।

अ़-मले कसीर की ता'रीफ़ : **अ़-मले कसीर** नमाज़ को फ़ासिद कर (या'नी तोड़) देता है जब कि न नमाज़ के आ'माल से हो न ही इस्लाहे़ नमाज़ के लिये किया गया हो। जिस काम के करने वाले को दूर से देखने से ऐसा लगे कि

येह नमाज़ में नहीं है बल्कि अगर गुमाने ग़ालिब हो कि नमाज़ में नहीं तब भी **अ़-मले कसीर** है। और अगर दूर से देखने वाले को शक व शुबा है कि नमाज़ में है या नहीं तो **अ़-मले क़लील** है और नमाज़ फ़ासिद न होगी। (دُرِّمُختار ج۲ ص٤٦٤)

हाफ़ आस्तीन में नमाज़ पढ़ना कैसा ? : ﴾13﴿ आधी आस्तीन वाला कुरता या क़मीस पहन कर नमाज़ पढ़ना **मक्रूहे तन्ज़ीही** है जब कि उस के पास दूसरे कपड़े मौजूद हों। ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जिस के पास कपड़े मौजूद हों और सिर्फ़ नीम आस्तीन (या'नी आधी आस्तीन) या बनियान पहन कर नमाज़ पढ़ता है तो कराहते तन्ज़ीही है और कपड़े मौजूद नहीं तो कराहत भी नहीं।" (फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 1, स. 193)

﴾14﴿ मुफ़्तिये आ'ज़मे पाकिस्तान ह़ज़रते क़िब्ला मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : हाफ़ आस्तीन वाला कुरता, क़मीस या शर्ट कामकाज करने वाले लिबास (के हुक्म) में शामिल हैं (कि कामकाज वाला लिबास पहन कर इन्सान मुअ़ज़्ज़िज़ीन के सामने जाते हुए कतराता है) इस लिये जो हाफ़ आस्तीन वाला कुरता पहन कर दूसरे लोगों के सामने जाना गवारा नहीं करते, उन की नमाज़ **मक्रूहे तन्ज़ीही** है और जो लोग ऐसा लिबास पहन कर सब के सामने जाने में कोई बुराई मह़सूस नहीं करते, उन की नमाज़ मक्रूह नहीं। (वक़ारुल फ़तावा, जि. 2, स. 246)

मक्रूहे तन्ज़ीही की ता'रीफ़ : जिस का करना शर-अ़ को पसन्द नहीं मगर न इस ह़द तक (ना पसन्द) कि इस पर वईदे अ़ज़ाब फ़रमाए। येह सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा के मुक़ाबिल है। (बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 284) **मक्रूहे तन्ज़ीही** हो जाने वाली नमाज़ दोबारा पढ़ लेना बेहतर है अगर न पढ़ी तो गुनहगार नहीं।

मेरे दिल से दुन्या की चाहत मिटा कर
कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ وٰالہٖ وسلم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

म-दनी क़ाफ़िले ने मुझे बदल कर रख दिया ! : नेकी की दा'वत का बे अन्दाज़ा सवाब कमाने की अपने अन्दर ह़िर्स उजागर करने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये और पाबन्दी के साथ हर माह कम अज़ कम तीन दिन आ़शिक़ाने रसूल के साथ **म-दनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरा सफ़र करते रहिये । आइये ! आप का शौक़ बढ़ाने के लिये आप को एक **म-दनी बहार** सुनाता हूं चुनान्चे अ़लाक़ा अंधेरी (बम्बई, अल हिन्द) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं स्कूल की नवीं क्लास में ज़ेरे ता'लीम था, मोडर्न और बिगड़े हुए लड़कों से दोस्ती हो गई और मैं त़रह़ त़रह़ की बुराइयों में गरिफ़्तार हो गया जिन में **चरस, गांजा, शराब** और लड़कियों से इ़श्क़ लड़ाना वग़ैरा शामिल है । ह़त्ता कि एक बार घर की पेटी (या'नी नक़्दी रखने का सन्दूक़्चा) तोड़ कर रक़म निकाल कर "गोवा" (नामी शहर) भाग गया । बिल आख़िर वापस घर आ गया । स्कूल को ख़ैरबाद कह कर A.C. की रिपेरिंग का काम सीखना शुरूअ़ कर दिया । चन्द माह के बा'द **दा'वते इस्लामी** वाले एक आ़शिक़े रसूल ने मुझे हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत दी मगर मैं ने टाल दिया । उस बेचारे ने कई बार मुलाक़ातें कर के मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** की मगर मैं इज्तिमाअ़ में जाने के लिये राज़ी न हुवा । एक बार वोही इस्लामी भाई मेरे बड़े भाई पर "इन्फ़िरादी कोशिश" कर रहे थे कि मैं वहां पहुंच गया । भाईजान ने उस इस्लामी भाई से अपने लिये मा'ज़िरत चाहते हुए मेरी त़रफ़ रुख़ कर के कहा : तुम **म-दनी क़ाफ़िले** में चले जाओ । मैं "ना" कहने वाला था कि मुंह से बे साख़्ता "**हां**" निकल गई ह़ालां कि मैं येह तक नहीं जानता था कि **म-दनी क़ाफ़िला** होता क्या है ! बहर ह़ाल मैं ने तय्यारी कर ली और **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर रवाना हो गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले ने मुझे बदल कर रख दिया !** मेरी आंखें खुल गईं, गुनाहों से नफ़रत और नेकियों से प्यार हो गया, मैं ने गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा की, नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी, **म-दनी क़ाफ़िले** ने गुनाहों भरे माह़ोल में

पलने वाले मुझ सख़्त ना फ़रमान बन्दे को नमाज़ी और सुन्नतों का आदी बना दिया । येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं दुन्याए अहले सुन्नत की अ़ज़ीम तरीन दर्सगाह **जामिआ़ अशरफ़िय्या मुबारक पूर** (यूपी हिन्द) में **दर्से निज़ामी** करने की सआ़दत पा रहा हूं ।

छूट जाएं गुनाह, आप पाएं पनाह थोड़ी हिम्मत करें, क़ाफ़िले में चलो
तुम सुधर जाओगे गर इधर आओगे सीखने सुन्नतें, क़ाफ़िले में चलो
फ़ज़्ले मौला से जब आएंगे पाएंगे
जज़्बए इल्मे दीं क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल जामिअ़तुल अशरफ़िय्या और इस के बानी का मुख़्तसर तआ़रुफ़ :

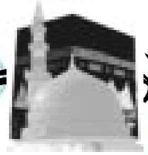
मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की **इन्फ़िरादी कोशिश** की इस्तिक़ामत की ब-र-कत से बिल आख़िर मुआ़-शरे का बिगड़ा हुवा, गुनाहों में लिथड़ा हुवा न-श-ई नौ जवान म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर जामिअ़तुल अशरफ़िय्या (मुबारक पूर अल हिन्द) में दाख़िला ले कर तालिबे इल्मे दीन बन गया । हुसूले ब-र-कत के लिये ब निय्यते सवाब माहनामा अशरफ़िय्या ''हाफ़िज़े मिल्लत नम्बर'' (र-जबुल मुरज्जब 1398 सि. हि. ब मुताबिक़ 1978 सि. ई.) की मदद से जामिअ़तुल अशरफ़िय्या और इस के बानी का ज़िक्रे ख़ैर करने की सआ़दत हासिल करता हूं । अल जामिअ़तुल अशरफ़िय्या (मुबारक पूर) दुन्याए अहले सुन्नत की अ़ज़ीमुश्शान दीनी दर्सगाह है । जो ''हिन्द'' के सूबा यूपी के ज़िल्अ़ आ'ज़म गढ़ के क़स्बे मुबारक पूर शरीफ़ में वाक़ेअ़ है । इस अ़ज़ीमुश्शान दीनी दर्सगाह के बानी **उस्ताज़ुल उ-लमा, जला-लतुल इल्म, हाफ़िज़े मिल्लत हज़रते अ़ल्लामा शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस मुरादआबादी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْہَادِی हैं । आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 29 शव्वालुल मुकर्रम 1352 सि. हि. ब मुताबिक़ 14 जनवरी 1934 सि. ई. में अपने उस्ताज़े मुकर्रम सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्तरीक़ह हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی के हुक्म पर तक्मीले दरसियात के बा'द मुबारक पूर तशरीफ़ लाए ।

उस वक़्त यहां एक मद्रसा "मिस्बाहुल उ़लूम" के नाम से क़ाइम था। **हज़रते हाफ़िज़े मिल्लत** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की अनथक कोशिशों के बाइस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसी छोटे से मद्रसे में ब-र-कत अ़ता फ़रमाई और बिल आख़िर येह मद्रसा एक क़द आवर फलदार दरख़्त की हैसिय्यत इख़्तियार कर गया और **जामिआ़ अशरफ़िय्या** के नाम से मु-तआ़रिफ़ हुवा। इस इदारे से फ़ारिगुत्तह़सील होने वाले (ह़ज़रात) इस के क़दीम नाम "मिस्बाहुल उ़लूम" की निस्बत से **मिस्बाही** कहलाते हैं।

सुन्नत की महब्बत : हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने हर अ़मल में **सुन्नत** का बहुत ज़ियादा ख़याल रखते थे। एक बार ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दाएं पाउं में ज़ख़्म हो गया, एक साह़िब दवा ले कर पहुंचे और कहा : ह़ज़रत ! दवा ह़ाज़िर है। जाड़े (या'नी सर्दियों) का ज़माना था ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मोज़ा पहने हुए थे, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पहले बाएं (या'नी उलटे) पाउं का मोज़ा उतारा, वोह साह़िब बोल पड़े : ह़ज़रत ! ज़ख़्म तो दाहिने (या'नी सीधे) पाउं में है ! आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : बाएं (या'नी उलटे) पाउं का पहले उतारना **सुन्नत** है।

हाफ़िज़े मिल्लत की करामत : अल जामिअ़तुल अशरफ़िय्या के बानी मबानी ह़ाफ़िज़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى बड़े पाए के बुज़ुर्ग थे। सवानेह़ निगारों ने आप की कई करामात बयान की हैं। इन में एक येह भी है, **जामेअ़ मस्जिद मुबारक शाह** भी पहले मुख़्तसर ही थी और बोसीदा भी हो गई थी, आबादी की वुस्अ़त के लिह़ाज़ से मस्जिद का वसीअ़ होना भी ज़रूरी था, बहर ह़ाल पुरानी मस्जिद शहीद कर के नई बुन्यादें भरी गईं और मस्जिद की तौसीअ़ का काम शुरूअ़ हुवा। मुबारक पूर के मुसल्मानों ने बड़ी दिलचस्पी और लगन के साथ इस ता'मीर में भी ह़िस्सा लिया, ह़ज़रते **हाफ़िज़े मिल्लत** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस काम के भी रहनुमा और सर बराह थे, ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जामेअ़ मस्जिद के लिये पूरी तवज्जोह और मेह़नत से चन्दे की फ़राहमी की, मुबारक पूर में काफ़ी जोशो ख़रोश था, ग़ुरबत के बा वुजूद मुसल्मान अपनी दीनी ह़मिय्यत का पूरा पूरा सुबूत दे रहे थे, मर्दों ने अपनी कमाई और औ़रतों ने अपने ज़ेवरात वग़ैरा से






इमदाद की । छत पड़ने के बा'द हाजी मुहम्मद उमर निहायत परेशानी के आलम में दौड़े हुए हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास आए और कहा : हाफ़िज़ साहिब ! जामेअ़ मस्जिद की छत नीचे आ रही है अब क्या होगा ! हाजी साहिब येह कहते कहते रो पड़े । हज़रते **हाफ़िज़े मिल्लत** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़ौरन उठे वुज़ू किया और हाजी साहिब के साथ घर से बाहर निकले, और अपने पड़ोसी ख़ान मुहम्मद साहिब को हमराह लिया, जामेअ़ मस्जिद पहुंच कर بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ पढ़ते हुए लकड़ी की चन्द बल्लियां लगा दीं (या'नी लम्बे बांस या लकड़ी के थम लगा दिये) । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कि छत न सिर्फ़ बराबर और दुरुस्त हो गई, बल्कि आज देखिये तो येह पता भी न लग सकेगा कि किस हिस्से की छत झुक रही थी !

हाफ़िज़े मिल्लत की बा'ज़ आदाते मुबा-रका : **वुज़ू** करने के लिये बैठना होता तो क़िब्ला रुख़ बैठते । हज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का पाजामा कभी इतना लम्बा न देखा गया कि टख़्ना छुप जाए । सच तो येह है कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वज़्अ़ और लिबास का अन्दाज़ देख कर लोगों को शर-ई वज़्अ़ समझ में आ जाती थी । सफ़र व हज़र में (या'नी सफ़र में होते या वतन के अन्दर हर जगह) हुज़ूर हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की प्यारी प्यारी अदाओं में से येह भी था कि खाने से पहले और बा'द दोनों हाथ गिट्टे तक धोते और लुक़्मा ख़ूब चबा कर खाते, खाना ख़्वाह मिज़ाज के मुवाफ़िक़ हो या ना मुवाफ़िक़, उस में ऐब न निकालते, खाने के बा'द फ़ौरन पानी न पीते बल्कि कुछ वक़्फ़े के बा'द पीते । इसी त़रह पानी जब भी पीते, चूस कर तीन सांस में पीते ।

सुरमा लगाने की ब-र-कत से बुढ़ापे में भी बीनाई तेज़ थी : हुज़ूर **हाफ़िज़े मिल्लत** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की उम्र शरीफ़ सत्तर साल से मु-तजाविज़ (या'नी ऊपर) हो चुकी थी, उस वक़्त का वाक़िआ है, ट्रेन से सफ़र कर रहे थे जिस बर्थ पर तशरीफ़ फ़रमा थे, इत्तिफ़ाक़ से उस पर एक डॉक्टर साहिब भी बैठे थे, डॉक्टर साहिब ने सिल्सिलए कलाम शुरूअ़ किया तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की जलालते इल्मी से बहुत **मु-तअस्सिर** हुए, और बार बार आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की त़रफ़ हैरत से देखते रहे,





दौराने गुफ़्त-गू डोक्टर साहिब ने **तअ़ज्जुब** का इज़्हार करते हुए कहा : मौलाना साहिब ! मैं आंखों का डोक्टर हूं, मैं देख रहा हूं कि इस उ़म्र में भी आप की बीनाई में कोई फ़र्क़ नहीं, बल्कि आप की आंखों में बच्चों की आंखों जैसी चमक है, मुझे बताइये कि इस के लिये आख़िर क्या चीज़ इस्ति'माल करते हैं ? फ़रमाया : डोक्टर साहिब ! मैं कोई ख़ास दवा वग़ैरा तो इस्ति'माल नहीं करता, हां एक अ़मल है जिसे मैं बिला नाग़ा करता हूं, **रात को सोने के वक़्त सुन्नत के मुत़ाबिक़ सुरमा इस्ति'माल करता हूं और मेरा यक़ीन है कि इस अ़मल से बेहतर आंखों के लिये दुन्या की कोई दवा नहीं हो सकती ।** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मस्लके आ'ला ह़ज़रत का इक गुलसितां इ़ल्मे सदरुश्शरीअ़ह का बह़्रे रवां
इ़ल्म से जिस के सैराब सारा जहां लह-लहाने लगा दीन का बूस्तां
जिस त़रफ़ देखिये इस क़दम के निशां
ह़ाफ़िज़े दीनो मिल्लत पे लाखों सलाम

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"इस्मिद" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से सुरमा लगाने के 4 म-दनी फूल :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत की सुन्नत से **मह़ब्बत** मरह़बा ! और सुन्नत की **मह़ब्बत** में सुन्नत के मुत़ाबिक़ सुरमा लगाने की ब-र-कत दुन्या में भी बीनाई की ह़िफ़ाज़त की सूरत में ज़ाहिर हुई, अगर कोई मजबूरी न हो तो आप भी रोज़ाना सुन्नत के मुत़ाबिक़ सुरमा लगाने की निय्यत कीजिये । आप की आसानी के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ रिसाले, **"101 म-दनी फूल"** सफ़ह़ा 27 ता 28 से सुरमे के बारे में 4 म-दनी फूल आप की

त़रफ़ बढ़ाता हूं क़बूल फ़रमा कर अपने दिल के म-दनी गुलदस्ते में सजा लीजिये : ﴾1﴿ "सु-नने इब्ने माजह" की रिवायत में है "तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा "इस्मिद" है कि येह निगाह को रोशन करता और पलकें उगाता है।" (ابن ماجه ج٤ص١١٥حديث٣٤٩٧) ﴾2﴿ पथ्थर का सुरमा इस्ति'माल करने में ह़रज नहीं और सियाह सुरमा या काजल ब क़स्दे ज़ीनत (या'नी ज़ीनत की निय्यत से) मर्द को लगाना मक्रूह है और ज़ीनत मक़्सूद न हो तो कराहत नहीं। (عالمگیری ج٥ص٣٥٩) ﴾3﴿ सुरमा सोते वक़्त इस्ति'माल करना सुन्नत है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 180) ﴾4﴿ सुरमा इस्ति'माल करने के तीन मन्क़ूल त़रीक़ों का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : (1) कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां (2) कभी दाईं (सीधी) आंख में तीन और बाईं (उलटी) में दो, (3) तो कभी दोनों आंखों में दो दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के उसी को बारी बारी दोनों आंखों में लगाइये। (اُنْظُر:شُعَبُ الْاِیمان،ج٥ص٢١٨۔٢١٩) इस त़रह़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ तीनों पर अ़मल होता रहेगा। **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** तक्रीम के जितने भी काम होते सब हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सीधी जानिब से शुरूअ़ किया करते, लिहाज़ा पहले सीधी आंख में सुरमा लगाइये फिर बाईं आंख में। **त़रह़** त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त हिस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नेकी की दा'वत लज़्ज़त वाली इ़बादत है : **नेकी की दा'वत** देने में कभी भी सुस्ती नहीं करनी चाहिये अगर येह म-दनी काम इख़्लास के साथ रिज़ाए इलाही के लिये किया जाए तो बेशक ख़ूब लज़्ज़त वाली इ़बादत है। चुनान्चे **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इर्शाद है : मैं ने इ़बादत की लज़्ज़त चार अश्या में

पाई : ﴾1﴿ **अल्लाह** तआ़ला के फ़राइज़ की अदाएगी में ﴾2﴿ **अल्लाह** तआ़ला की ह़राम की हुई चीज़ों से बचने में ﴾3﴿ **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के ह़ुसूल की ग़रज़ से नेकी का ह़ुक्म देने में ﴾4﴿ **अल्लाह** तआ़ला के ग़ज़ब से मह़फ़ूज़ रहने के लिये बुराई से मन्अ़ करने में । (اَلْمُنَبِّهات ص۳۷)

नेकी की दा'वत से मह़रूमी की सूरत में मौत की तमन्ना : **सह़ाबिये** रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबी **बकरह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक मौक़अ़ पर फ़रमाया : किसी जानदार की मौत के बजाए मुझे अपनी मौत पसन्द है, येह सुन कर ह़ाज़िरीन ने घबरा कर अ़र्ज़ की : ऐसा क्यूं ? फ़रमाया : मुझे डर है कि कहीं जीते जी ऐसा ज़माना न देखूं जिस में **नेकी का ह़ुक्म न कर सकूं और बुराई से मन्अ़ न कर सकूं** क्यूं कि ऐसे ज़माने में कोई ख़ैर (या'नी भलाई) नहीं । (شَرْحُ الصُّدُور ص۱۱، ابن عساكر ج۶۲ ص۲۱۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़ का भी क्या ख़ूब जज़्बा था ! कैसी म-दनी सोच हुवा करती थी और **नेकी की दा'वत** से कैसा वालिहाना लगाव था कि उन के यहां नेकी की दा'वत के बिग़ैर गोया जीने का तसव्वुर नहीं था और एक आज हमारी ह़ालत है कि नेकी की दा'वत के हज़ार मवाक़ेअ़ मिलते हैं फिर भी परवाह नहीं की जाती । ह़ालां कि कई मवाक़ेअ़ ऐसे भी आ जाते हैं जिन में نَہْیٌ عَنِ الْمُنْکَرِ या'नी बुराई से मन्अ़ करना **वाजिब** हो जाता है मगर अफ़्सोस इस की त़रफ़ भी हमारी कोई तवज्जोह नहीं होती ।

बद मज़्हबिय्यत से तौबा : **नेकी की दा'वत** का जज़्बा पाने, मिले हुए जज़्बे को ख़ूब बढ़ाने, बद अ़क़ी-दगी मिटाने की दिल में तड़प जगाने और बिगड़े हुए लोगों की इस्लाह़ का बाइस बन कर ख़ुद को जन्नत का ह़क़दार बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये,

म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ **''फ़िक्रे मदीना''** कर के म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करते रहिये और हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस म-दनी मक़्सद ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है'' के ह़ुसूल की ख़ात़िर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक **म-दनी बहार** सुनाऊं, **पंजाब** (पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है : दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल मेरा उठना बैठना बद अ़क़ीदा लोगों के साथ था। कमो बेश 13 बरस उन की सोह़बते सरापा ज़लालत में रह कर मेरे अ़क़ाइद भी مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ उन्ही जैसे हो चुके थे और अ़-मली ह़ालत भी कुछ अच्छी न थी, फ़िल्मों डिरामों और गानों बाजों का शैदाई था और मेरे चेहरे पर दाढ़ी भी सुन्नत के मुत़ाबिक़ नहीं बल्कि ख़श्ख़शी थी। मेरे जनरल स्टोर के क़रीब वाक़ेअ़ **मस्जिद** में एक दीनी त़ालिबे इ़ल्म इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स देने और मद्र-सतुल मदीना (बराए बालिग़ान) पढ़ाने आया करते थे। ग़ालिबन स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1420 सि. हि. ब मुत़ाबिक़ जून 1999 सि. ई. का वाक़िआ़ है कि शहर सत़ह़ पर दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की हमारे यहां धूम थी। उन्ही दिनों वोही दीनी त़ालिबे इ़ल्म एक दूसरे इस्लामी भाई के हमराह मेरी दुकान पर तशरीफ़ लाए, उन्हों ने मुझे सलाम किया मैं चूंकि दा'वते इस्लामी वालों को गुमराह समझने की वजह से उन्हें नफ़्रत की निगाह से देखता था, इस लिये उन के सलाम का जवाब न दिया और NO LIFT करवाते हुए दुकान के सामान की सफ़ाई में मश्ग़ूल हो गया। उन्हों ने थोड़ा सा तवक़्क़ुफ़ किया (या'नी कुछ रुके) फिर बड़े नर्म लहजे में मुस्कराते हुए शहर में होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की, जिसे क़बूल करने से मैं ने न सिर्फ़ इन्कार किया बल्कि उन्हें बुरा भला कहना शुरूअ़ कर दिया। मेरे इस रवय्ये की वजह

से उन के चेहरों पर उदासी छा गई मगर उन के सब्रो तह़म्मुल पे लाखों सलाम ! बेचारे ज़बान से कुछ न बोले। उन का येह अन्दाज़ ख़ासा **मु-तअस्सिर** कुन था। जब शाम को दुकान बन्द कर के घर गया और रात के खाने से फ़ारिग़ हुवा तो मुझे उन दोनों आ़शिक़ाने रसूल का दा'वत देना याद आ गया मैं ने सोचा कि चल के देखूं तो सही येह लोग अपने इज्तिमाअ़ में करते क्या हैं ! चुनान्चे मैं यूं ही देखने के लिये चला गया और मैं देखने तो क्या गया, मेरा सोया हुवा नसीब अंगड़ाई ले कर जाग उठा ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दौराने इज्तिमाअ़ मुझे जागती आंखों से मदीने के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर की रूह़ परवर सुनहरी जालियों की ज़ियारत हो गई ! उस इज्तिमाअ़ में सरदारआबाद (फ़ैसलआबाद) से तशरीफ़ लाए हुए मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने सुन्नतों भरा बयान फ़रमाया। इज्तिमाअ़ के बा'द उन्हों ने शफ़्क़त भरे अन्दाज़ में मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश की जिस के नतीजे में म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की मैं ने निय्यत कर ली और जल्द ही मुझे आ़शिक़ाने रसूल के साथ 3 दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत नसीब हो गई। हमारा म-दनी क़ाफ़िला एक मस्जिद में ठहरा। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ पहली ही रात मुझ गुनहगार पर करम बालाए करम हो गया। क्या देखता हूं कि **मस्जिदुन्-नबविय्यिशरीफ़** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का सेह़न है और मैं झाड़ू दे रहा हूं। इतने में **सुनहरी जालियां** खुलती हैं और उम्मत के ग़म ख़्वार, मक्की म-दनी सरकार, ग़ैबों पर ख़बरदार **बि इज़्ने** परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए और मेरा नाम ले कर इर्शाद फ़रमाया : **"अपना अन्दर** (बात़िन) **भी साफ़ करो।"** इस ख़्वाब से मेरे दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया ! ह़ालां कि क़ब्ल अज़ीं मैं مَعَاذَاللّٰه ह़यातुन्नबी का मुन्किर था और مَعَاذَاللّٰه मेरा येह भी अ़क़ीदा था कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमें देखते सुनते नहीं और न ही हमारी बात़िनी ह़ालत से आगाह हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मुझ पर ह़क़ आशकार (या'नी ज़ाहिर) हो गया कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे नाम तो क्या, दिलों की कैफ़िय्यत से भी ख़बरदार हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने अ़क़ाइदे बात़िला से सच्ची तौबा

कर ली । वोह दिन और आज का दिन मेरे चेहरे पर एक मुठ्ठी दाढ़ी है, सर पर इमामे का ताज और जिस्म पर सुन्नत के मुताबिक़ म-दनी लिबास रहता है और हमारा सारा घराना म-दनी रंग में रंग चुका है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान देखिये कि जिस आ़शिक़े रसूल ने मुझे दुकान पर आ कर दा'वत दी थी और जिन्हों ने बा'दे इज्तिमाअ़ मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश फ़रमाई थी वोह तरक़्क़ी करते करते दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न बन चुके हैं ! येह बयान देते वक़्त मैं तक़रीबन दस साल से **म-दनी माहोल** में हूं और तीन साल से मुसल्सल म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की सआ़दत मुयस्सर हो रही है । इस दौरान तहसील मुशा-रवत के निगरान की ज़िम्मेदारी और तीन बार **बंगलादेश** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र से मुशर्रफ़ हो चुका हूं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए, इख़्लास के साथ म-दनी काम करने की सआ़दत और ईमान व आ़फ़िय्यत के साथ मदीने की गली में शहादत नसीब करे ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

लाए हैं क़ाफ़िला आ़शिक़ाने रसूल सीखने सुन्नतें, मस्जिद आओ चलें
दामने मुस्तफ़ा आ़शिक़ाने रसूल याद रखना सभी छोड़ना मत कभी
काश ! दुन्या में तुम दो ब फ़ज़्ले ख़ुदा
दीं का डंका बजा आ़शिक़ाने रसूल

(वसाइले बख़्शिश, स. 489)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क्या ख़ूब निराली शान है ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की भी क्या ख़ूब निराली शान है ! जब किसी पर मेहरबान होता है तो अपनी रह़मत से उस की बिगड़ी हुई क़िस्मत संवार कर रख देता है, जो उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अ़-ज़मत निशान से बे ख़बर

होता है उस के दिल को बद अक़ी-दगियों की आलाइशों से पाक कर के अपने महबूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शान बयान करने वाला बना देता है, जैसा कि अभी आप ने म-दनी बहार में मुला-हज़ा फ़रमाया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की ख़ुफ़्या तदबीर** किस के बारे में क्या है कोई नहीं जानता, बे शुमार ऐसे अफ़राद जो **मक्के मदीने के ताजदार** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की अ-ज़मत का न सिर्फ़ इन्कार करते थे बल्कि आप से **मु-तनफ़्फ़िर** व बेज़ार हो कर बर सरे पैकार रहते थे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने उन को इस्लाम की दौलत से नवाज़ कर अपने प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का जां निसार बना दिया ! आइये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 274 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"सहाबए किराम का इश्क़े रसूल"** सफ़हा 78 ता 79 पर से इस तरह के बा'ज़ हज़रात के जज़्बात सुनते हैं :

ईमान लाने के बा'द सहाबए किराम के जज़्बात : ﴾1﴿ हज़रते सय्यिदुना सुमामा बिन उसाल यमामी जो अहले यमामा के सरदार थे, ईमान ला कर फ़रमाने लगे : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे नज़्दीक रूए ज़मीन पर कोई चेहरा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरे से ज़ियादा मबग़ूज़ (या'नी क़ाबिले नफ़रत) न था आज वोही चेहरा मुझे सब चेहरों से ज़ियादा महबूब (या'नी प्यारा) है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे नज़्दीक कोई दीन आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दीन से ज़ियादा बुरा न था, अब वोही दीन मेरे नज़्दीक सब दीनों से ज़ियादा महबूब (या'नी पसन्दीदा) है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे नज़्दीक कोई शहर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के शहर से ज़ियादा मबग़ूज़ (या'नी क़ाबिले नफ़रत) न था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब वोही शहर मेरे नज़्दीक सब शहरों से ज़ियादा महबूब (या'नी प्यारा) है।" **(بخاری ج۳ص۱۳۲ حدیث۴۳۷۲)** ﴾2﴿ हज़रते सय्यि-दतुना **हिन्द बिन्ते उ़त्बा** (ज़ौजए अबू सुफ़यान बिन हर्ब) जो हज़रते सय्यिदुना अमीर हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का कलेजा चबा गई थीं, ईमान ला कर कहने लगीं : **"या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! रूए ज़मीन पर कोई अहले ख़ैमा मेरी निगाह में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले ख़ैमा से ज़ियादा मबग़ूज़ (क़ाबिले नफ़रत) न थे लेकिन आज मेरी निगाह में

रूए ज़मीन पर कोई अहले ख़ैमा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले ख़ैमा से ज़ियादा मह़बूब (या'नी प्यारे) नहीं ।" (ایضاً ج۲ص۵٦۷ حدیث۳۸۲۵) ﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि (ग़ज़्वए) हुनैन के दिन **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे माल अ़ता फ़रमाया, ह़ालां कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी नज़र में मबग़ूज़ तरीन ख़ल्क़ (सारी मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा बुरे) थे । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे अ़ता फ़रमाते रहे यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी नज़र में मह़बूब तरीन ख़ल्क़ (या'नी जहान में सब से प्यारे) हो गए । (سُنَنِ تِرمذی ج۲،ص۱٤۷ حدیث٦٦٦)

शराबे इ़श्क़े अह़मद में कुछ ऐसी कैफ़ो मस्ती है
कि जां दे कर भी इक दो घूंट मिल जाए तो सस्ती है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुझे तीन दिन धोबी का काम करना पड़ा ! : हमारे औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السّلام ज़ाहिरी के साथ साथ बात़िनी त़ौर पर भी **नेकी की दा 'वत** की तरकीब फ़रमाया करते थे, चुनान्चे इमामुत्ताइफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی के एक मुरीद जो कि बसरा शरीफ़ में गोशा नशीन थे, उन के दिल में एक रोज़ किसी **गुनाह** का ख़याल आया, इस बुरे ख़याल की नुहूसत से उन का **चेहरा सियाह पड़ गया,** वोह बडे़ घबराए, तीन दिन के बा'द सियाही ख़त्म हो गई, उसी दिन उन के पीरो मुर्शिद का रुक्अ़ा मौसूल हुवा, उस में मरक़ूम (या'नी लिखा) था : अपने दिल को क़ाबू में रखो, चेहरे की सियाही (कालक) धोने के लिये तीन दिन तक मुझे **धोबी का काम** करना पड़ा है । (تَذْکِرَۃُ الْاَولیاء، الجزءُ الثّانی ص۱۸) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

पीरे कामिल की ब-र-कतें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस **ह़िकायत** से मा'लूम हुवा कि सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى पीरे रोशन ज़मीर थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को बहुत दूर की नज़र से नवाज़ा था जभी तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बसरा शरीफ़ में मौजूद मुरीद के दिल की कैफ़िय्यत मुला-ह़ज़ा फ़रमा ली, **सियाह चेहरा** भी देख लिया और दूर ही से बात़िनी तवज्जोह डाल कर मुरीद के चेहरे की सियाही भी धो डाली ! इस **ह़िकायत** से येह भी दर्स मिला कि कामिल पीर की बदौलत इन्सान गुनाहों से बचा रहता है और अगर कोई लग़्ज़िश वाक़ेअ़ हो भी जाए तो **बि इज़्निल्लाहि तआ़ला** पीरो मुर्शिद की तवज्जोह के सबब इस का तदारुक (या'नी इस्लाह़ का सामान) भी हो जाता है लिहाज़ा ज़रूर किसी कामिल पीर का मुरीद हो जाना चाहिये और येह भी मा'लूम हुवा कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की याद से मुंह पर एक ख़ास नूरानिय्यत का जल्वा नज़र आता है जब कि गुनाहों के इरतिकाब से दिल भी सियाह हो जाता और मुंह पर भी नुहूसत छा जाती है ।

तेरे हाथ में हाथ मैं ने दिया है तेरे हाथ है लाज या ग़ौसे आ'ज़म
मुरीदों को ख़त़रा नहीं बहरे ग़म से कि बेड़े के हैं नाख़ुदा ग़ौसे आ'ज़म
निकाला था पहले तो डूबे हुओं को
और अब डूबतों को बचा ग़ौसे आ'ज़म

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ऊंट जब चूहे का हो गया : किसी जामेए़ शराइत़ पीर का मुरीद हो जाने में और किसी के हो रहने में नफ़्अ़ ही नफ़्अ़ है चुनान्चे **मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन,** ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की सीरत पर मब्नी किताबे मुस्तत़ाब, **"अख़्बारुल अख़्यार"** में ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ हुसामुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن के ह़ालात में बयान कर्दा **दो दिलचस्प**

फ़र्ज़ी हिकायतों के ज़रीए पीरे कामिल के ज़रीए मुरीद को पहुंचने वाले फ़वाइद समझे जा सकते हैं। चुनान्चे फ़रमाते हैं : एक **ऊंट** को चूहे ने जंगल में चरते देख कर कहा : ऐ ऊंट तुम किसी के हो रहो। ऊंट ने जवाब दिया : "मैं तुम्हारा हो गया।" एक दिन ऊंट किसी दरख़्त के हरे हरे पत्ते खा रहा था कि उस की नकील (या'नी नाक की रस्सी) दरख़्त की शाख़ में बुरी त़रह़ अटक गई और ऊंट फंस कर आ़जिज़ हो गया। उस ने इस बुरे वक़्त में **चूहे** को पुकारा ! चुनान्चे वोह चूहा अपने दूसरे चूहों के साथ आया। सब ने मिल कर दरख़्त में फंसी हुई रस्सी कुतर दी, इस त़रह़ ऊंट ने नजात पाई।

(اخبارُ الاخیار ص۱۷۷)

मेंडक को देख कर भाग खड़ा हुवा ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस फ़र्ज़ी हिकायत में निहायत दिलचस्प पैराए में समझाया गया है कि "आज़ाद" रहने के बजाए "किसी के हो रहो।" तो जो कोई शख़्स किसी पीरे कामिल का "हो रहता है" तो आड़े वक़्त कामिल पीर की ब-र-कत से नजात का सामान हो जाता है। इस ज़िम्न में एक और **दिलचस्प हिकायत** समाअ़त फ़रमाइये : एक मजलिस में चन्द अश्ख़ास जम्अ़ थे, अचानक एक **मेंडक** फुदक्ता हुवा आ निकला, येह देख कर एक दाना शख़्स उस मजलिस से भाग खड़ा हुवा। लोग (उस को बुज़दिल समझ कर) हंसने लगे। जब उस से मेंडक से डरने का सबब दरयाफ़्त किया गया तो उस दाना ने कहा कि मैं मेंडक से नहीं डरता, अलबत्ता इस बात से डरता हूं कि इस के पीछे कहीं कोई **सांप** न आ रहा हो ! इसी त़रह़ अगर कोई दरवेश ख़ुद कमज़ोर हो मगर उस का सिल्सिला निहायत मज़्बूत़ हो तो उस से डरना चाहिये क्यूं कि उस को रन्जीदा करने से उस के सिल्सिले के तमाम मशाइख़ कबीदा ख़ाति़र और रन्जीदा दिल हो जाएंगे। (اخبارُ الاخیار ص۱۷۶)

मुरीद की "पीठ मज़्बूत़" होती है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मेंडक को सांप खा जाता है इसी लिये वोह दाना शख़्स मेंडक को देख कर भाग खड़ा हुवा कि कहीं ऐसा न हो कि इस का शिकार करने के लिये पीछे सांप लगा हो जो मुझे डस

ले । येह मिसाल दे कर हज़रते सय्यिदुना शैख़ हुस्सामुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِين ने कमज़ोर दरवेश और उस के क़वी मुर्शिदीन की मिसाल दी है तो वाक़ेई जो आदमी किसी पीरे कामिल का मुरीद हो जाता है उस की "पीठ मज़्बूत" हो जाती है कि अगर उस का अपना पीर "कमज़ोर" हुवा भी तो क्या हुवा ! अपने पीर का पीर या फिर उस का पीर तो मज़्बूत होगा और यूं दुन्या व आख़िरत की भलाइयां हाथ आएंगी । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ 561 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत"** सफ़हा 260 ता 263 पर से बा'ज़ दिलचस्प व मा'लूमाती **अ़र्ज़ व इर्शाद** पेश किये जाते हैं सुनिये और ईमान ताज़ा कीजिये :

बैअ़त के मा'ना : अ़र्ज़ : बैअ़त के क्या मा'ना हैं ?

इर्शाद : बैअ़त के मा'ना "बिक जाना ।"

सज़ाए मौत के मौक़अ़ पर एक मुरीद की अपने पीर से अ़क़ीदत :

(आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया) **सब्अ़ सनाबिल** शरीफ़ में है : एक साहिब को सज़ाए मौत का हुक्म बादशाह ने दिया । जल्लाद ने तलवार खींची, येह अपने शैख़ के मज़ार की त़रफ़ रुख़ कर के खड़े हो गए, जल्लाद ने कहा : इस वक़्त क़िब्ले को मुंह करते हैं । फ़रमाया : "तू अपना काम कर ! मैं ने क़िब्ले को मुंह कर लिया है ।" और है भी येही बात कि का'बा क़िब्ला है जिस्म का और शैख़ क़िब्ला है रूह़ का । इस का नाम **इरादत** (या'नी मुरीदी) है ! अगर इस त़रह़ सिद्क़े अ़क़ीदत के साथ एक दरवाज़ा पकड़ ले तो उस को फ़ैज़ ज़रूर आएगा । अगर इस का शैख़ ख़ाली है तो शैख़ का शैख़ तो ख़ाली न होगा और बिलफ़र्ज़ वोह भी न सही तो हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تعالٰى عَنْهُ तो मा'दिने फ़ैज़ (या'नी फ़ैज़ की कान) व मम्बए अन्वार (या'नी अन्वार का सर चश्मा) हैं उन से फ़ैज़ आएगा । (बस) सिल्सिला सह़ीह़ व मुत्तसिल (या'नी मिला हुवा) होना चाहिये ।

दुकान उलट दूंगा : **इस** ज़िम्न में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बयान फ़रमूदा एक ह़िकायत अपने अन्दाज़ में अ़र्ज़ करता हूं कि एक फ़क़ीर किसी दुकान पर आया और कहने लगा : एक रुपिया दे ! दुकान दार ने इन्कार किया । फ़क़ीर ने कहा : रुपिया देता है तो दे वरना तेरी दुकान उलट दूंगा, लोग इकट्ठे हो गए, इत्तिफ़ाक़न एक रोशन ज़मीर बुज़ुर्ग उधर आ निकले, उन्हों ने दुकान दार से फ़रमाया : इस को जल्द रुपिया दे दीजिये वरना दुकान उलट जाएगी, क्यूं कि मैं ने इस फ़क़ीर के बातिन पर नज़र डाली कि कुछ है भी ! मा'लूम हुवा बिल्कुल "ख़ाली" है, फिर इस के पीर को देखा, उसे भी ख़ाली पाया, इस के पीर के पीर या'नी दादापीर को देखा तो वोह **अहलुल्लाह** से हैं और देखा कि वोह मुन्तज़िर खड़े हैं कि कब इस की ज़बान से निकले और मैं दुकान उलट दूं । येह ह़िकायत बयान कर के आ'ला ह़ज़रत (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने फ़रमाया कि उस फ़क़ीर ने अपने पीर का दामन मज़्बूती से थामा हुवा था ।

क़ियामत तक आने वाले मुरीदीन : अइम्मए दीन (رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दफ़्तर (या'नी रजिस्टर) में क़ियामत तक के मुरीदीन के नाम दर्ज हैं जिस क़दर ग़ुलामी में हैं या आने वाले हैं । हुज़ूरे पुरनूर (ग़ौसे आ'ज़म) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे एक दफ़्तर अ़ता फ़रमाया कि मुन्तहाए नज़र (या'नी जहां तक नज़र जा सके वहां) तक वसीअ़ था और उस में क़ियामत तक के मेरे मुरीदीन के नाम थे और मुझ से फ़रमाया : "قَدْ وُھِبُوْا لَکَ (या'नी) येह सब तुम्हें बख़्श दिये (या'नी दे दिये) गए ।"

(بہجۃُ الاسرار ص۱۹۳)

एक इश्काल और उस का जवाब : अ़र्ज़ : हुज़ूर ! येह तो जब्रन रुपिया लेना हुवा । उन **वलिय्युल्लाह** ने अगर उस की दुकान बचाने को देने की ताकीद फ़रमाई, मुम्किन था

जैसे दफ़्ए ज़ुल्म के लिये रिश्वत देना मगर उस फ़क़ीर के दादापीर ने कि **अहलुल्लाह** से थे, इस ज़ुल्म की ताईद क्यूंकर रवा (या'नी जाइज़) रखी ?

इर्शाद : शरीअ़ते मुत़ह्हरा के दो हुक्म हैं : ज़ाहिर व बातिन, क़ाज़ी व आ़म्मए नास (या'नी आ़म लोग) उन की रसाई ज़ाहिर अह़वाल ही तक है, उन पर उस की पाबन्दी लाज़िम अगर्चे वाक़िफ़े ह़क़ीक़ते ह़ाल के नज़्दीक हुक्म बिल अ़क्स (या'नी उलट) हो ।

ह़ैरत अंगेज़ मुक़द्दमए क़त्ल : (मज़ीद फ़रमाया) इस की नज़ीर (या'नी मिसाल) ज़मानए सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में वाक़ेअ़ हो चुकी । एक फ़क़ीर मुफ़्लिस, बे नवा, नाने शबीना (या'नी रात की रोटी) को मोह़ताज, शब को दुआ़ किया करता कि "इलाही (عَزَّوَجَلَّ) रिज़्क़े ह़लाल अ़त़ा फ़रमा ।" इत्तिफ़ाक़न किसी शब एक गाय उस के घर में घुस आई, येह समझा कि मेरी दुआ़ क़बूल हुई, येह रिज़्क़े ह़लाल ग़ैब से मुझे अ़त़ा हुवा है, गाय पछाड़ कर ज़ब्ह़ की, उस का गोश्त पकाया और खाया । सुब्ह़ को मालिक को ख़बर हुई । वोह सरकारे नुबुव्वत (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) में नालिशी (या'नी फ़रियादी) हुवा । सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "जाने दे ! तू मालदार है उस मोह़ताज ने एक गाय ज़ब्ह़ कर ली तो क्या हुवा ?" वोह बिगड़ा और कहा : **या नबिय्यल्लाह !** मैं ह़क़ चाहता हूं । फ़रमाया : अगर ह़क़ चाहता है तो गाय उसी की थी । वोह और बरहम (या'नी ग़ुस्से) हुवा । फ़रमाया : न सिर्फ़ गाय (बल्कि) जितना माल तेरे पास है सब उसी का है । वोह और ज़ियादा फ़रियादी हुवा तो फ़रमाया : तू भी उसी की मिल्क है और उसी का ग़ुलाम है । अब तो उस की बेताबी की ह़द न थी । फ़रमाया : अगर तस्दीक़ चाहता है अभी हमारे साथ चल । उस फ़क़ीर और उस गाय वाले को हमराहे रिकाब (या'नी साथ) ले कर जंगल को तशरीफ़ ले गए । वाक़िआ़ अ़जीब था, ख़ल्क़ का हुजूम साथ हो लिया । एक दरख़्त के नीचे हुक्म दिया कि यहां खोदो । खोदने से **इन्सान का सर और एक ख़न्जर** जिस पर मक़्तूल का नाम **कन्दा** (या'नी लिखा) था, बर आमद हुवा । **नबिय्युल्लाह** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने उस दरख़्त से इर्शाद फ़रमाया : शहादत (या'नी गवाही) अदा कर तूने क्या देखा ? पेड़ ने अ़र्ज़ की : **या नबिय्यल्लाह !** (عَلَيْهِ السَّلَام) येह इस फ़क़ीर के बाप का सर है, येह गाय वाला उस का ग़ुलाम था । इस (या'नी गाय वाले) ने मौक़अ़ पा कर मेरे नीचे

अपने आक़ा (या'नी फ़क़ीर के वालिद) को उसी के ख़न्जर से ज़ब्ह़ किया और ज़मीन में मअ़ ख़न्जर (या'नी ख़न्जर के साथ) दबा दिया और उस के तमाम अम्वाल पर क़ाबिज़ हो गया। उस का येह बेटा बहुत सग़ीर सिन (या'नी कम उ़म्र) था, इस ने होश संभाला तो अपने आप को बेकस व बे ज़र (या'नी मुफ़्लिस व तंगदस्त) ही पाया और येह भी न जाना कि इस का बाप कौन था और उस का कुछ माल भी था या नहीं ? **हुक्मे बातिन** साबित हुवा, गु़लाम (या'नी गाय वाला चूंकि फ़क़ीर के बाप का क़ातिल था इस लिये) गरदन मारा गया (या'नी क़त्ल किया गया) और वोह तमाम अम्वाल (जो गाय वाले के थे) विरा-सतन फ़क़ीर को मिले। **(مثنوی شریف دفتر سوم ص۲۲٤ تا۲٤۲)**

(आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह ह़िकायत बयान कर के फ़रमाया) **वोही** यहां भी मुम्किन कि दुकान दार इस फ़क़ीर के मूरिस (या'नी जिस का येह फ़क़ीर वारिस है) का मदयून (या'नी क़र्ज़दार) हो, अगर्चे वोह फ़क़ीर भी उस से वाक़िफ़ न हो, न येह दुकान दार इसे पहचानता हो तो येह जब्रन दिलाना जब्र नहीं बल्कि حقّ بَحَقّ دارِ رَسانِیدَن (या'नी ह़क़दार को उस का ह़क़ पहुंचाना है)।

हर हर ज़र्रा हर क़त़रा शाहिद है हर हर लम्ह़ा
उस की क़ुदरतो सन्अ़त का यक्ताई व वह़्दत का

لا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ط اٰمنّا بِرَسُولِ اللّٰه

(सामाने बख़्शिश शरीफ़)

कौन नेकी करने वाले की त़रह़ है ? : सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِنَّ الدَّالَّ عَلَی الْخَیْرِ کَفَاعِلِہٖ या'नी बेशक नेकी की राह दिखाने वाला नेकी करने वाले की त़रह़ है। (ترمذی ج٤ ص۳۰۵ حدیث ۲٦۷۹)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी नेकी करने वाला, कराने वाला, बताने वाला (और) मश्वरा देने वाला सब सवाब के मुस्तह़िक़ (या'नी ह़क़दार) हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 194)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللّٰه ! **"नेकी की दा'वत"** के म-दनी काम में

अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ जाइज़ त़रीक़े पर तआ़वुन करने वाला भी अज्रो सवाब का ह़क़दार होता है। इस में इस हुक्मे कुरआनी पर अ़मल की भी निय्यत की जा सकती है जैसा कि पारह 6 **सू-रतुल माइदह** की आयत नम्बर 2 में इर्शाद है :

وَتَعَاوَنُوۡا عَلَى الۡبِرِّ وَالتَّقۡوٰى ۖ وَلَا تَعَاوَنُوۡا عَلَى الۡاِثۡمِ وَالۡعُدۡوَانِ ۖ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और नेकी और परहेज़ गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो।

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तमाम अ़मल करने वालों का सवाब : सय्यिदुल मुर-सलीन, ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जो हिदायत की त़रफ़ बुलाए उस को तमाम आ़मिलीन (या'नी अ़मल करने वालों) की त़रह़ सवाब मिलेगा और इस से उन (अ़मल करने वालों) के अपने सवाब से कुछ कम न होगा। और जो गुमराही की त़रफ़ बुलाए तो उस पर तमाम पैरवी करने वाले गुमराहों के बराबर गुनाह होगा और येह उन के गुनाहों से कुछ कम न करेगा। (مُسلِم ص١٤٣٨ حدیث ٢٦٧٤)

लाखों नेकियां और लाखों गुनाह : मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : येह हुक्म (आ़म है या'नी) नबी صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और इन के सदक़े से तमाम सह़ाबा, अइम्मए मुज्तहिदीन, उ़-लमाए मु-तक़द्दिमीन व मु-तअख़्ख़िरीन सब को शामिल है म-सलन अगर किसी की तब्लीग़ से एक लाख नमाज़ी बनें तो उस मुबल्लिग़ को हर वक़्त एक लाख नमाज़ों का सवाब होगा और उन नमाज़ियों को अपनी अपनी नमाज़ों का सवाब, इस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) का सवाब मख़्लूक़ के अन्दाज़े से वरा है। रब (عَزَّ وَجَلَّ) फ़रमाता है : وَاِنَّ لَكَ لَاَجۡرًا غَيۡرَ مَمۡنُوۡنٍ ۚ (پ٢٩ القلم ٣) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और ज़रूर तुम्हारे लिये बे इन्तिहा सवाब है) ऐसे ही वोह **मुसन्निफ़ीन** जिन की किताबों से लोग हिदायत पा रहे हैं क़ियामत तक लाखों का सवाब उन्हें पहुंचता रहेगा, येह

हदीस इस आयत के ख़िलाफ़ नहीं : لَیْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰی ﴿۳۹﴾ (پ۲۷ النجم ۳۹) (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश) क्यूं कि येह सवाबों की ज़ियादती इस के अ़-मले तब्लीग़ का नतीजा है। मज़ीद फ़रमाते हैं : इस में गुमराहियों के मूजिदीन **मुबल्लिग़ीन** (या'नी गुमराही ईजाद करने और गुमराही दूसरों को पहुंचाने वाले) सब शामिल हैं ता क़ियामत इन को हर वक़्त **लाखों गुनाह** पहुंचते रहेंगे। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 160)

''नेक'' बनाने की मशीन बन जाइये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकियों के ह़रीस बन जाइये, दूसरों को नमाज़ी बनाने की मुहिम तेज़ से तेज़ तर कर दीजिये, जब भी नमाज़े बा जमाअ़त के लिये सूए मस्जिद जाने लगें, दूसरों को तरग़ीब दे कर साथ लेते जाइये, जिन्हें नमाज़ नहीं आती उन्हें नमाज़ सिखाइये। अगर आप के सबब एक भी नमाज़ी बन गया तो जब तक वोह नमाज़ें पढ़ता रहेगा उस की हर हर नमाज़ का आप को भी सवाब मिलता रहेगा। उ़मूमन इशा के बा'द कमो बेश 40 मिनट चलने वाले दा'वते इस्लामी के **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ान) में दाख़िला ले लीजिये, इस में ख़ुद भी क़ुरआने करीम सीखिये और दूसरों को भी सिखाइये। आप से सीखने वाला जब जब तिलावत करेगा आप को भी उस की तिलावत का सवाब मिलता रहेगा। आप भी सुन्नतों पर अ़मल कीजिये और दूसरों को भी अ़मल पर आमादा कीजिये। अगर आप ने किसी को एक सुन्नत सिखा दी तो अब वोह जब जब उस सुन्नत पर अ़मल करेगा आप को भी उस सुन्नत पर अ़मल करने वाले की त़रह़ सवाब मिलता रहेगा। अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** और म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरे सफ़र के ज़रीए़ अपनी और दूसरों की इस्लाह़ की ज़ोरदार मुहिम चला कर मुसल्मानों को ''नेक'' बनाने की ''मशीन'' बन जाइये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब का अम्बार लग जाएगा और दोनों जहानों में बेड़ा पार हो जाएगा।

तेरे करम से ऐ करीम ! मुझे कौन सी शै मिली नहीं
झोली ही मेरी तंग है तेरे यहां कमी नहीं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हर कलिमे पर साल भर की इबादत का सवाब और : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब कोई मुसल्मान **नेकी की दा'वत** देता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रह़मत जोश में आती है । चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : **एक** बार ह़ज़रते सय्यिदुना **मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّ وَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! जो अपने भाई को नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके । उस की जज़ा क्या है ? **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** ने इर्शाद फ़रमाया : मैं उस के हर कलिमे के बदले **एक एक साल की इबादत का सवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है ।** (مُكَاشَفَةُ الْقُلُوْب ص٤٨)

नेकियों का अम्बार : سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! अगर आप किसी को **नेकी की दा'वत** देंगे तो एक एक कलिमे (लफ़्ज़, क़ौल या बात) के बदले एक एक साल की इ़बादत का सवाब पाएंगे, फ़र्ज़ कीजिये ! आप ने किसी दिन मस्जिद में सिर्फ़ एक इस्लामी भाई के सामने "फ़ैज़ाने सुन्नत" से दर्स दिया और उस में दो सफ़ह़ात पढ़ कर सुनाए, अब अगर उन में बीस बातें नेकी व भलाई की बयान हुईं तो दर्स सुनने वाला वोह इस्लामी भाई उन पर अ़मल करे या न करे आप के नामए आ'माल में اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ **बीस साल की इबादत का सवाब** लिखा जाएगा और अगर आप से दर्स सुन कर उस इस्लामी भाई ने अ़मल करना शुरूअ़ कर दिया तो वोह जब तक अ़मल करता रहेगा आप को भी बराबर उस अ़मल करने वाले जितना सवाब मिलता रहेगा और अगर उस ने आप के दर्स से सीखी हुई कोई सुन्नत किसी और तक पहुंचाई तो इस का सवाब उस पहुंचाने वाले को भी मिलेगा और आप को भी । इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ आप का सवाब बढ़ता ही चला जाएगा । **नेकी की दा'वत** का आख़िरत में मिलने वाला सवाब बन्दा अगर दुन्या ही में देख ले तो कोई लम्ह़ा बेकार न जाने दे, हर वक़्त ही **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाता रहे ।

मैं नेकी की दा'वत की धूमें मचाऊं
तू कर ऐसा जज़्बा अ़ता या इलाही

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दर्स देने का सवाब : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेशक **फ़ैज़ाने सुन्नत** से **दर्स** देना भी "नेकी की दा'वत" ही का एक ज़रीआ़ है। लिहाज़ा हिम्मत कीजिये, शैत़ान से पीछा छुड़ाइये, सुस्ती उड़ाइये और रोज़ाना कम अज़ कम "दो दर्स" ज़रूर दीजिये। **मस्जिद दर्स, चौकदर्स, बाज़ार दर्स** वग़ैरा में से कम अज़ कम किसी एक की तरकीब फ़रमाइये नीज़ वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना ज़रूर बिज़्ज़रूर **घर दर्स** के ज़रीए भी ख़ूब ख़ूब सुन्नतों के **म-दनी फूल** लुटाइये और ढेरों ढेर सवाब कमाइये। इस ज़िम्न में दो अह़ादीसे मुबा-रका सुनिये और झूमिये : **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم : जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से **सुन्नत** क़ाइम की जाए या उस से बद मज़्हबी दूर की जाए तो वोह **जन्नती** है। (حِلْیَۃُ الْاَولیاء ج۱۰ ص ٤٥ حدیث ١٤٤٦٦) **दुआ़ए मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم : "**अल्लाह** तआ़ला उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीस को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए।"

(سُنَنِ تِرمِذی ج٤ ص ٢٩٨ حدیث ٢٦٦٥)

दर्स की ब-र-कत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत का जज़्बा बढ़ाने के लिये आइये ! आप को एक म-दनी बहार सुनाता हूं चुनान्चे **बाबुल मदीना** (कराची) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : 1410 सि. हि. ब मुताबिक़ 1990 सि. ई. की बात है कि मैं मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) में एक जगह मुला-ज़मत करता था। इसी दौरान दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई भी वहीं मुलाज़िम हुए। एक बार मैं ने उन से कहा कि किसी ऐसी किताब की त़रफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमाइये जिसे पढ़ कर इस्लामी त़र्ज़ पर

ज़िन्दगी गुज़ारी जा सके। उन्हों ने कहा कि आप दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की "फ़ैज़ाने सुन्नत" ख़रीद फ़रमा लीजिये। बात आई गई हो गई। ज़िन्दगी का पहिय्या अपनी तेज़ रफ़्तारी से घूमता रहा, गर्दिशे लैलो नहार से बे ख़बर मैं मा'मूल के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता रहा और दुन्यावी मसरूफ़िय्यात की वजह से वोह किताब न ख़रीद सका। कुछ अ़र्से बा'द ख़ुदा का करना ऐसा हुवा कि मैं मुस्तक़िल त़ौर पर बाबुल मदीना (कराची) मुन्तक़िल हो गया। एक रोज़ नमाज़े मग़रिब के लिये एक मस्जिद में गया तो नमाज़ अदा करने के बा'द मैं ने देखा कि सफ़ेद लिबास ज़ैबे तन किये सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए एक इस्लामी भाई किसी किताब से दर्स दे रहे थे और कई इस्लामी भाई दर्स सुनने में मसरूफ़ थे। मैं भी उस दर्स में बैठ गया, जब मेरी नज़र उस किताब पर पड़ी जिस से वोह इस्लामी भाई दर्स दे रहे थे तो उस पर "फ़ैज़ाने सुन्नत" लिखा था, जिसे देख कर मेरा ज़ेह्न माज़ी के धुंदलकों में खो गया और मेरे ज़ेह्न के पर्दे पर येह बात उभरी कि येह तो वोही किताब है जिसे ख़रीदने का मुझे मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) में फ़ुलां इस्लामी भाई ने मश्वरा दिया था। दर्स के बा'द मैं ने इस्लामी भाइयों से मुलाक़ात की और उन से "फ़ैज़ाने सुन्नत" मुत़ा-लआ़ करने के लिये मांगी, उन्हों ने दे दी। इस का मुत़ा-लआ़ करने से मेरे अन्दर सुन्नतों पर अ़मल करने का जज़्बा पैदा हुवा और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ रफ़्ता रफ़्ता दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर सुन्नतों पर अ़मल के लिये कमर बस्ता हो गया। नीज़ मेरे साथ साथ मेरे तीन भाई भी اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए।

बना शाइक़े क़ाफ़िला या इलाही — न नेकी की दा'वत में सुस्ती हो मुझ से
की रोज़ाना दो मर्तबा या इलाही — सआ़दत मिले दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दीन का क़ुत़्बे आ'ज़म : **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना **दीन का क़ुत़्बे आ'ज़म** है, (या'नी ऐसा अहम रुक्न है कि इस से दीन की तमाम चीज़ें वाबस्ता हैं) इसी अहम काम के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मबऊ़स फ़रमाया (या'नी भेजा)।

(اِحیاءُ الْعُلوم ج۲ ص۳۷۷)

अ़र्श का साया मिलेगा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मैदाने मह़शर के होलनाक माह़ोल में कि जिस दिन **अ़र्शे इलाही** के साए के इ़लावा कोई साया न होगा, उस दिन **अल्लाह** तआ़ला अपने जिन मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार ख़ास बन्दों को अ़र्शे अ़ज़ीम के साए में जगह और जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला अ़त़ा फ़रमाएगा उन ख़ुश नसीबों में **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों का भी शुमूल होगा। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि जिस ने **भलाई** का हुक्म दिया और **बुराई** से मन्अ़ किया और लोगों को मेरी इत़ाअ़त (या'नी फ़रमां बरदारी) की त़रफ़ बुलाया, क़ियामत के दिन मेरे **अ़र्श के साए** में होगा। (حِلْیَةُ الْاَولیاء ج٦ ص٣٦ رقم٧٧١٦)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सूरज सवा मील पर होगा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब क़ियामत का दिन होगा और सूरज सवा मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, शिद्दते प्यास से ज़बानें बाहर निकल पड़ी होंगी, लोग पसीने में डुब्कियां खा रहे होंगे, **अ़र्श के साए** की सह़ीह़ मा'नों में उसी वक़्त **अहम्मिय्यत** पता चलेगी, इस की त़लब अपने दिल में पैदा कीजिये, गर्मियों की दोपहर हो और आप चिलचिलाती धूप में लक़ो दक़ सह़रा के अन्दर नंगे पाउं चल रहे हों अगर ऐसे में कोई साएबान या साए की जगह नज़र आ जाए उस वक़्त आप को किस क़दर ख़ुशी होगी इस का आप बख़ूबी

अन्दाज़ा कर सकते हैं ह़ालां कि क़ियामत की तमाज़त (या'नी गरमी) के मुक़ाबले में दुन्या की धूप कोई हैसिय्यत नहीं रखती। लिहाज़ा बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से "सायए अ़र्श" पाने के लिये आज दुन्या में ख़ूब ख़ूब **नेकी की दा'वत** की धूमें भी मचाइये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जनाब में **सायए अ़र्श** की भीक भी मांगते रहिये।

या इलाही गर्मिये मह़शर से जब भड़कें बदन — दामने मह़बूब की ठन्डी हवा का साथ हो
या इलाही जब ज़बानें बाहर आएं प्यास से — साह़िबे कौसर शहे जूदो अ़त़ा का साथ हो
या इलाही सर्द मेहरी पर हो जब ख़ुरशीदे ह़श्र
सय्यिदे बे साया के ज़िल्ले लिवा का साथ हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ की मुनाजात के तीनों अश्आ़र का नम्बर वार ख़ुलासा मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : (1) ऐ मेरे मा'बूद! जब मह़शर बपा होगा और वहां की होशरुबा गरमी से लोगों के बदन तप और जल रहे होंगे उस वक़्त हम गुलामाने मुस्त़फ़ा को अपने प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दामने करम की ठन्डी ठन्डी हवा नसीब करना (2) ऐ मेरे पाक परवर दगार! क़ियामत की ख़ौफ़नाक तपिश और जान लेवा प्यास की शिद्दत से जब ज़बानें सूख कर कांटा हो जाएं और बाहर निकल पड़ें! ऐसे दिल हिला देने वाले माह़ोल में साह़िबे जूदो सख़ावत, मालिके कौसरो जन्नत صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का साथ नसीब करना, काश! काश! काश! हम प्यास के मारों को साह़िबे कौसर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यारे प्यारे हाथों से कौसर के छलक्ते जाम नसीब हो जाएं (3) ऐ रब्बे करीम! क़ियामत के तपते हुए मैदान में कि जब सूरज ख़ूब बिफरा हुवा आग बरसा रहा हो, आह! ऐसी जान घुलाने वाली सख़्त कड़ी धूप में जब कि भेजे खौल रहे हों, हमारे उस सय्यिदो सरदार صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जिन का धूप में साया ज़मीन पर न पड़ता था के अ़ज़ीमुश्शान झन्डे का हमें साया अ़त़ा करना।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अच्छाई, बुराई का पेशवा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी को अपना क़ाइद, पेशवा और लीडर बनाने से पहले आख़िरत के नफ़्अ़ व नुक़्सान के तअ़ल्लुक़ से ख़ूब ग़ौर कर लेना चाहिये, जो ख़ुश नसीब किसी ख़ुदा रसीदा नेक बन्दे को अपना पेशवा बनाएगा उस की बातों पर अ़मल करेगा वोह बरोज़े क़ियामत उसी के साथ होगा और जो बद नसीब दुन्या की रंगीनियों में बद मस्त हो कर, दौलत व मन्सब की हवस के सबब बुरे पेशवा (लीडर) के फन्दे में फंस जाएगा और दुन्या में उस की बातों पर चलेगा तो मह़शर में उसी पेशवा (लीडर) के साथ होगा। हम सभी को क़ियामत की रुस्वाई से डरना चाहिये। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, "**कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" सफ़ह़ा 539 पर पारह 15 **सूरए बनी इस्राईल** आयत नम्बर 71 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन हम हर जमाअ़त को उस के इमाम के साथ बुलाएंगे।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی इस आयते करीमा के तह़त फ़रमाते हैं : (उस इमाम के साथ बुलाएंगे) जिस का वोह दुन्या में इत्तिबाअ़ (या'नी पैरवी) करता था। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : इस से वोह इमामे ज़मां (या'नी अपने दौर का पेशवा) मुराद है जिस की दा'वत पर दुन्या में लोग चले, ख़्वाह उस ने ह़क़ की दा'वत दी हो या बात़िल की। ह़ासिल येह है कि हर क़ौम अपने सरदार के पास जम्अ़ होगी जिस के हुक्म पर दुन्या में चलती रही और उन्हें उसी के नाम से पुकारा जाएगा कि फ़ुलां के **मुत्तबिईन** (या'नी इत्तिबाअ़ व पैरवी करने वाले) (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

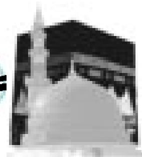
नेकी के इमाम का ख़ुश अन्जाम : जिन ख़ुश नसीबों को तब्लीग़ व इर्शाद और नेकी की दा'वत के ह़वाले से दुन्या में मन्सबे वजाहत मिला होगा और उन्हों ने बसद इख़्लास ख़ुश

उस्लूबी के साथ अपनी ज़िम्मेदारी निभाई होगी उन के और नेकी और भलाई के कामों में उन का तआ़वुन करने वाले मुख़्लिसीन के आख़िरत में ख़ूब वारे न्यारे होंगे । इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ रिवायत सुनिये और झूमिये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : **नेकी के इमाम** को क़ियामत में लाया जाएगा और उस से कहा जाएगा कि अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में ह़ाज़िरी दो तो वोह ह़ाज़िरी देगा कि दरमियान से हिजाबात (या'नी पर्दे) उठ जाएंगे, उस को **जन्नत** में जाने का हुक्म होगा, वोह **जन्नत** में जा कर अपनी मन्ज़िल (या'नी मक़ाम) और भलाई के कामों में तआ़वुन करने वाले दोस्तों की मनाज़िल (या'नी मक़ामात) देखेगा, उस से कहा जाएगा कि येह फ़ुलां की मन्ज़िल है और येह फ़ुलां की, तो वोह **जन्नत** में उन तमाम चीज़ों को देखेगा जो ख़ुद इस के लिये और इस के दोस्तों के वासिते तय्यार हैं और अपनी मन्ज़िल (या'नी मक़ाम) उन सब (दोस्तों की मन्ज़िलों) से अफ़्ज़ल पाएगा, फिर उसे **जन्नत** के हुल्लों (या'नी मल्बूसात) से एक **हुल्ला** (या'नी लिबास) पहनाया जाएगा और उस के सर पर **जन्नत** के ताजों में से एक **ताज** रखा जाएगा और उस का **चेहरा चमकना** शुरूअ़ होगा यहां तक कि **चांद** जैसा हो जाएगा, जो भी उसे देखेगा तो कहेगा : **या अल्लाह !** इसे हम में से बना दे यहां तक कि वोह अपने उन दोस्तों के पास आएगा जो ख़ैरो भलाई में उस का साथ दिया करते और नेकी के कामों में हाथ बटाते थे । उन्हें कहेगा : ऐ फ़ुलां ! ख़ुश हो जा जन्नत में **अल्लाह** तआ़ला ने तेरे लिये ऐसे ऐसे इन्आ़मात तय्यार कर रखे हैं, उन्हें इस त़रह़ की ख़ुश ख़बरियां सुनाता रहेगा यहां तक कि उस के अपने रोशन चेहरे ही की त़रह़ उन दोस्तों के चेहरे भी ख़ुशी से **चमक उठेंगे** और इस त़रह़ से लोग उन्हें **चमक्ते चेहरों** से पहचानेंगे । **(اَلْبُدُورُ السافِرةُ فی اُمُور الاٰخِرہ ص٢٤٥)**

पुर ज़िया कर मेरा चेहरा ह़श्र में ऐ किब्रिया
शह ज़ियाउद्दीन पीरे बा सफ़ा के वासिते़

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد


केसिट के "एक जुम्ले" ने दिल पर ऐसी चोट लगाई कि : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** "दा'वते इस्लामी" के महके महके "म-दनी माहोल" से हर दम वाबस्ता रहिये, इसी **म-दनी माहोल** की ब-र-कत से बे शुमार इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें गुनाहों से तौबा कर के **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने में मश्ग़ूल हो गए, आप की तरग़ीब व तहरीस के लिये एक **म-दनी बहार** गोश गुज़ार की जाती है, चुनान्चे पंजाब (पाकिस्तान) के शहर **चिश्तियां** शरीफ़ के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : नमाज़ों से जी चुराना, दाढ़ी मुंडाना, वालिदैन को सताना वग़ैरा वग़ैरा गुनाह मेरी ज़िन्दगी का हिस्सा बन चुके थे, गाने बाजे सुनने का तो मुझे जुनून (या'नी पागल पन) की ह़द तक शौक़ था, त़रह़ त़रह़ के गाने मेरे मोबाइल फ़ोन और कम्पयूटर में हर वक़्त मौजूद रहते। इन्टरनेट के ग़लत़ इस्ति'माल के गुनाह में भी मुलव्वस था। **जीन्ज़** (JEANS) के सिवा किसी और कपड़े की पतलून न पहनता ह़त्ता कि एक मर्तबा **ईद** के मौक़अ़ पर मेरे लिये वालिद साहि़ब ने सूट सिलवा लिया लेकिन मैं ने उसे पहनने से इन्कार कर दिया और नफ़्स की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ पेन्ट शर्ट ख़रीद कर ईद के पुर मसर्रत मौक़अ़ पर इसी लिबास में मल्बूस हुवा। **फ़ेशन** का दिलदादा होने की वजह से मैं ने इमामा और कुरते पाजामे के बारे में तो कभी सोचा भी न था। मेरे **सुधरने** के अस्बाब कुछ यूं हुए कि हमारी मस्जिद में जो नए **इमाम साहि़ब** तशरीफ़ लाए वोह ख़ुश क़िस्मती से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, "दा'वते इस्लामी" के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता थे। एक दिन उन्हों ने मुझ पर "इन्फ़िरादी कोशिश" करते हुए हफ़्तावार सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** में शिर्कत की रग़बत दिलाई, उन की "इन्फ़िरादी कोशिश" के सबब मैं ने दो एक बार हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत कर ही ली। एक दिन उन्हों ने मेरे वालिद साहि़ब को "दा'वते इस्लामी" के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयान की केसिट **"मुर्दे की बे बसी"** तोह़फ़तन दी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ




की रह़मत से एक रात मुझे येह केसिट सुनने की सआदत ह़ासिल हुई । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस बयान की ब-र-कत से मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर होने लगी, ख़ास कर इस "जुम्ले" : **"इन्सान को मरने के बा'द अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा, गाड़ी हुई तो वोह भी गेरेज में खड़ी रह जाएगी ।"** ने मेरे दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने हाथों हाथ अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली, अपना मोबाइल और कम्पयूटर भी गानों की नुहूसतों से पाक कर दिया और "दा'वते इस्लामी" के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गया । इस "म-दनी माह़ोल" ने मुझे यक्सर बदल कर रख दिया, मैं ने अपने चेहरे पर प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की **मह़ब्बत** की निशानी **दाढ़ी मुबारक** और सर पर इमामा शरीफ़ का ताज सजा लिया और सुन्नत के मुत़ाबिक़ म-दनी लिबास ज़ैबे तन कर लिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मैं यूनिवर्सिटी के होस्टल में **दा'वते इस्लामी** के शो'बए ता'लीम के ज़िम्मेदार की हैसिय्यत से म-दनी कामों की धूमें मचाने की कोशिशों में मसरूफ़ हूं ।

यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर जिसे ख़ैर से मिल गया म-दनी माह़ोल
यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा म-दनी माह़ोल
गुनहगारो आओ सियहकारो आओ
गुनह तुम से देगा छुड़ा म-दनी माह़ोल

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मस्जिद का इमाम गोया अ़लाक़े का बेताज बादशाह : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मस्जिद के पेश इमाम इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** ने एक मॉडर्न और फ़ेशन परस्त नौ जवान को सुन्नतों का पैकर बना दिया ! मसाजिद के इमाम साह़िबान आ़म इस्लामी भाइयों की निस्बत उ़मूमन ज़ियादा बा असर

होते हैं, ख़ुसूसन ख़ुश अख़्लाक़ और मिलन-सार इमामे मस्जिद उस अ़लाक़े का गोया "बेताज बादशाह" होता है, लोग उस का बेहद एह़तिराम करते और उस की बात दिलो जान से मानते और सर आंखों पर लेते हैं। अइम्मए किराम की ख़िदमत में मेरी "म-दनी इल्तिजा" है कि वोह सिर्फ़ जुमुअ़तुल मुबारक के बयान ही पर इक्तिफ़ा न फ़रमाएं, मौक़अ़ की मुना-सबत से रोज़ाना ही फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स की तरकीब बनाएं, और दर्स देने वाले "मुअ़ल्लिम" की ह़ौसला अफ़्ज़ाई के लिये उस में शिर्कत फ़रमाएं, ख़ूब "इन्फ़िरादी कोशिश" बढ़ाएं, अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में अपनी शिर्कत यक़ीनी बनाएं, हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत भी पाएं, वाक़ेई अगर इमाम साहि़ब ख़ुद सफ़र करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की देखा देखी उन के मुक़्तदी भी ब आसानी म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन जाएंगे। बहर ह़ाल हर इमामे मस्जिद को अपने इस मन्सबे वजाहत से "जाइज़ फ़ाएदा" उठाते हुए अपने अ़लाक़े में म-दनी कामों की धूमें मचा कर सुन्नतों की बहारों का म-दनी समां खड़ा कर देना चाहिये और अपने लिये सवाबे आख़िरत का ख़ूब ख़ूब ज़ख़ीरा इकठ्ठा कर लेना चाहिये। अपने मुक़्तदियों से ज़ियादा बे तकल्लुफ़ बन कर अपना वक़ार ख़राब करने के बजाए फ़ालतू बातों से बच कर उन्हें सुन्नतों भरे महके महके म-दनी फूल पेश करते रहने में दोनों जहानों की भलाई है। इस ज़िम्न में एक नसीह़त आमोज़ **ह़िकायत** समाअ़त कीजिये चुनान्चे

सात[7] के लिये सात[7] काफ़ी : **ह़ज़रते** सय्यिदुना ह़ातिम असम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم की ख़िदमते मुअ़ज़्ज़म में एक शख़्स ह़ाज़िर हो कर नसीह़त का त़ालिब हुवा। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : ﴾1﴿ अगर तू **रफ़ीक़** चाहता है तो **अल्लाह** तआ़ला (की याद) तेरा रफ़ीक़ (या'नी साथी) काफ़ी है ﴾2﴿ **हमराही** चाहता है तो "**किरामन कातिबीन**" (या'नी आ'माल लिखने वाले बुज़ुर्ग फ़िरिश्ते) तेरे लिये काफ़ी हैं ﴾3﴿ अगर **इ़ब्रत** चाहता है तो "दुन्या का फ़ानी होना" इ़ब्रत के लिये काफ़ी है ﴾4﴿ अगर **मूनिस** व ग़म ख़्वार दरकार है तो "क़ुरआने करीम" काफ़ी है ﴾5﴿ अगर **शग़्ल** (या'नी काम) चाहिये तो "इ़बादत" काफ़ी है ﴾6﴿ अगर **वाइ़ज़** (या'नी नसीह़त करने वाला) चाहता है तो

"मौत" काफ़ी है। येह **छ म-दनी फूल** इनायत करने के बा'द सातवें नम्बर पर इर्शाद फ़रमाया : येह बातें अगर तुझे पसन्द नहीं हैं तो **दोज़ख़** तेरे वासिते काफ़ी है। (تذکرۃ الاولیاء،الجزء الاوّل ص۲۲٤) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।** اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلَّم

छुप कर बे हयाई करने वाले की ग़लत फ़हमी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين **नेकी की दा'वत** का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने देते थे, अगर उन से कोई नसीहत का तालिब होता तो उस को आख़िरत में काम आने वाले "म-दनी फूल" इनायत फ़रमाया करते थे। वाक़ेई अगर सफ़र व हज़र हर जगह **यादे इलाही** عَزَّ وَجَلَّ का साथ हो, हर दम एहसास हो, **"अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **देख रहा है।"** जैसा कि पारह 30 **सू-रतुल अ़लक़** की 14वीं आयते करीमा में इर्शाद होता है :

اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ﴿۱۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या न जाना कि **अल्लाह** (عَزَّ وَجَلَّ) देख रहा है।

तो फिर इन्सान गुनाहों के मुआ़-मले में ख़ौफ़ज़दा और चौकन्ना रहता है और ज़ाहिरन और **ख़ुफ़्यतन** (या'नी पोशीदा तौर पर) **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلَّم की ना फ़रमानियों से बचता है। जो लोग अपने नाक़िस ख़याल में छुप कर बुराइयां करते हैं उन को येह बात ख़ूब ज़ेहन नशीन कर लेनी चाहिये कि जिन ख़ताओं को येह पोशीदा समझ बैठे हैं वोह सब की सब बुराइयां और बे हयाइयां बदियां लिखने वाला फ़िरिश्ता जानता है और लिख भी रहा है ! अगर किसी बन्दे को इस बात का कमा हक़्क़ुहू एहसास हो जाए तो उस को इस क़दर शरमिन्दगी और नदामत हो कि जी चाहे बस अभी ज़मीन फट जाए और मैं इस में समा जाऊं ! पारह 26 **सूरए** قٓ आयत नम्बर 18 में इर्शाद होता है :

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿۱۸﴾ (پ۲٦، ق:۱۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कोई बात वोह ज़बान से नहीं निकालता कि उस के पास एक मुहाफ़िज़ तय्यार न बैठा हो।

पारह 30 **सू-रतुल इन्फ़ितार** आयत नम्बर 10 ता 12 में है :

وَ اِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ۙ﴿۱۰﴾ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ۙ﴿۱۱﴾ يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۱۲﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम पर कुछ निगहबान हैं मुअ़ज़्ज़ज़ लिखने वाले, जानते हैं जो कुछ तुम करो।

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : पता लगा कि आ'माल नामा लिखने वाले फ़िरिश्ते हमारे छुपे और ज़ाहिर अ़मल को जानते हैं वरना तह़रीर कैसे करें। (इल्मुल क़ुरआन, स. 85) سُبْحٰنَ اللّٰه ! जब आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्ते हमारे छुपे हुए आ'माल जानते हैं तो फिर तमाम फ़िरिश्तों बल्कि जमीअ़ मख़्लूक़ात के सरदार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर अपने गुलामों के दिलों के ह़ालात क्यूं न आशकार (या'नी ज़ाहिर) होंगे! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ गुज़ार हैं :

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
म-लकूतो मुल्क में कोई शै, नहीं वोह जो तुझ पे इ़यां नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : सरे अ़र्श : अ़र्श के ऊपर। **म-लकूत :** फ़िरिश्तों के रहने की जगह। **इ़यां :** ज़ाहिर।

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अ़र्श के ऊपर और फ़र्श या'नी ज़मीन के अन्दर का सब कुछ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पेशे नज़र है। दुन्या जहान में कोई भी ऐसी शै नहीं जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर ज़ाहिर न हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़िरिश्ते को रफ़ीक़े सफ़र बनाने का अ़मल : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिसे दुन्या के बे वफ़ा होने का एह़सास हो, हर दम मौत का तसव्वुर बंधा हो, तिलावत व इ़बादत उस का मश्ग़ला हो ज़िक्रो दुरूद का सिल्सिला हो तो दोनों जहानों में उस का बेड़ा पार हो जाए। मुक़ीम हो या मुसाफ़िर हर एक को चाहिये कि वोह फ़ुज़ूल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللهُ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

बक बक के बजाए **ज़िक्रो दुरूद** और सुन्नतों भरी प्यारी प्यारी बातों में अपना वक़्त गुज़ारे । ख़ुसूसन सफ़र से **मु-तअ़ल्लिक़** एक **म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये । चुनान्चे मुस्तफ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत, मम्बए जूदो सख़ावत, सरापा फ़ज़्लो रह़मत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़िफ़ाज़त निशान है : जो शख़्स सफ़र के दौरान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ तवज्जोह रखे और उस के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक **फ़िरिश्ता** मुह़ाफ़िज़ (या'नी ह़िफ़ाज़त करने वाला) मुक़र्रर कर देता है और जो बेहूदा शे'रो शाइरी और फ़ुज़ूल बातों में मसरूफ़ रहे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के पीछे एक **शैत़ान** लगा देता है ।

(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر ج۱۷ص۳۲٤ حدیث ۸۹۵)

सरवरे दीं लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर
नफ़्सो शैत़ां सय्यिदा कब तक दबाते जाएंगे

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नेकी की दा'वत देना भी जिहाद है : **ह़ज़रते** मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि ह़ुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम,** शाहे आदम व बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम, शाफ़ेए उमम** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है : **जिहाद की चार क़िस्में हैं :** ﴾1﴿ नेकी का हुक्म देना और ﴾2﴿ बुराई से मन्अ़ करना और ﴾3﴿ **सब्र** के मक़ाम पर सच कहना और ﴾4﴿ फ़ासिक़ों से बुग़्ज़ रखना । जिस ने **नेकी का हुक्म** दिया उस ने मुअमिनीन के हाथ मज़्बूत़ किये और जिस ने बुराई से मन्अ़ किया उस ने फ़ासिक़ों की नाक ख़ाक आलूद की । (حِلْیَةُ الْاَولیاء ج۵ص۱۱ حدیث ٦١٣٠)

फ़ासिक़ के "फ़िस्क़" से नफ़रत होनी चाहिये : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दब्बाग़ عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : किसी फ़ासिक़ मुसल्मान से इस त़रह़ नफ़रत नहीं करनी चाहिये कि उस की ज़ात ही से नफ़रत हो जाए, हां ! उस के ग़लत़ अ़मल और ना जाइज़ काम को बुरा जानना चाहिये । क्यूं कि उस के येह गुनाह जो बाइ़से नफ़रत हैं आ़रिज़ी हैं लेकिन उस के दिल में मौजूद **ईमान** मुस्तक़िल है । येह ख़ुद एक मोमिन है और येह ऐसे उमूर हैं

जो **महब्बत** को लाज़िम करने वाले हैं लिहाज़ा इन पाकीज़ा ख़स्लतों की वजह से उस की ज़ात से **महब्बत** होनी चाहिये और उस के बुरे कामों और गुनाहों से नफ़रत होनी चाहिये। (ابریز ص٤٧٨ ملخصاً)

फ़ासिक़ की सोहबत सख़्त नुक़्सान देह है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह ज़ेहन में रहे कि फ़ासिक़ के फ़िस्क़ से नफ़रत रखनी है इस के मा'ना हरगिज़ येह नहीं कि फ़ासिक़ की सोहबत भी इख़्तियार करें। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 504 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब, **"ग़ीबत की तबाह कारियां"** सफ़्हा 172 पर है : बुरी सोहबतों से बचना बेहद ज़रूरी है वरना आख़िरत तबाह हो सकती है। मेरे आक़ा **आ'ला हज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "शरीअ़ते मुतहहरा ने नमाज़ में कोई ज़िक्र ऐसा नहीं रखा है जिस में "सिर्फ़ ज़बान" से लफ़्ज़ निकाले जाएं और मा'ना मुराद न हों।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 29, स. 567) तो (आ'ला हज़रत के इस फ़रमान की रोशनी में) आप की याद दिहानी के लिये अ़र्ज़ है कि **नमाज़े वित्र** में आप **दुआ़ए क़ुनूत** तो पढ़ते ही होंगे जिस में (येह भी) है : وَنَخْلَعُ وَنَتْرُکُ مَنْ یَّفْجُرُکَ या'नी "(**या अल्लाह**! हम) अलग करते हैं और छोड़ते हैं उस को जो तेरी ना फ़रमानी करे।" अगर आज से पहले मा'ना मा'लूम नहीं थे तो चलिये अब पता चल गया लिहाज़ा अपने रब عَزَّوَجَلَّ से किये जाने वाले रोज़ रोज़ के इस वा'दे को अब अ-मली जामा पहना ही दीजिये और नमाज़ न पढ़ने वालों, गालियों, बद गुमानियों, तोहमतों, **ग़ीबतों** चुग़लियों और त़रह़ त़रह़ से ना फ़रमानियों में मुलव्वस रहने वालों फ़ासिक़ों और फ़ाजिरों की बैठकों और उन की सोहबतों से तौबा कर लीजिये। और क़ुरआने करीम भी ऐसों की सोहबत से मन्अ़ फ़रमाता है, जैसा कि पारह 7 **सू-रतुल अन्आ़म** आयत नम्बर 68 में इर्शाद होता है :

وَ اِمَّا یُنۡسِیَنَّکَ الشَّیۡطٰنُ فَلَا تَقۡعُدۡ بَعۡدَ الذِّکۡرٰی مَعَ الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۶۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

तफ़्सीराते अह़मदिय्या में इस आयते मुबा-रका के तह़्त लिखा है : यहां ज़ालिमीन से मुराद काफ़िरीन, मुब्तदिईन या'नी गुमराह व बद दीन और फ़ासिक़ीन हैं। (تفسیرات احمدیہ ص۳۸۸) "ग़ीबत की तबाह कारियां" सफ़ह़ा 173 पर है :

नेकी की दा'वत देने के लिये फ़ासिक़ों के पास जाना जाइज़ है :

जो इस्लामी भाई **मुत्तक़ी** परहेज़ गार हो, वोह भी यारी दोस्ती में नहीं बल्कि सिर्फ़ नेकी की दा'वत की ह़द तक ना फ़रमानों और बिगड़े हुए लोगों के साथ बैठ सकता है चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, "कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" सफ़ह़ा 260 पर पारह 7 **सू-रतुल अन्आ़म** आयत नम्बर 69 में रब्बुल इ़बाद عَزَّ وَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۶۹﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और परहेज़ गारों पर उन के ह़िसाब से कुछ नहीं, हां नसीह़त देना शायद वोह बाज़ आएं।

ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस आयत से मा'लूम हुवा कि पन्दो नसीह़त और इज़्हारे ह़क़ के लिये उन के पास बैठना जाइज़ है।"

नेकी की दा'वत देना स-दक़ा है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हादिये राहे नजात, सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "अपने (दीनी) भाई से **मुस्करा** कर मिलना तुम्हारे लिये स-दक़ा है और नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना **स-दक़ा** है।" (سُنَنِ ترمذی ج ۳ ص ۳۸۴ حدیث۱۹۶۳)

बात करते हुए मुस्कराना सुन्नत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़दीसे मुबा-रका में **मुस्करा** कर मिलने, नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने को स-दक़ा कहा गया। سُبْحٰنَ اللہ ! **मुस्करा** कर मिलने की तो क्या बात है ! मुस्करा कर मिलना, मुस्करा कर किसी को समझाना उ़मूमन नेकी की दा'वत

के म-दनी काम को निहायत सहल व आसान बना देता और हैरत अंगेज़ नताइज का सबब बनता है। जी हां आप की मा'मूली सी **मुस्कराहट** किसी का दिल जीत कर उस की गुनाहों भरी ज़िन्दगी में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा कर सकती है और मिलते वक़्त बे रुख़ी और ला परवाही से इधर उधर देखते हुए हाथ मिलाना किसी का दिल तोड़ कर उस को مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ गुमराही के गहरे गढ़े में गिरा सकता है, लिहाज़ा जब भी किसी से मिलें, गुफ़्त-गू करें उस वक़्त हत्तल इम्कान **मुस्कराते** रहिये। अगर ख़ुश्क मिज़ाजी या बे तवज्जोही से मिलने की ख़स्लत है तो मिलन-सारी और **मुस्करा** कर मिलने की आ़दत बनाने के लिये ख़ूब कोशिश कीजिये, बल्कि **मुस्कराने** की आ़दत पक्की करने के लिये ज़रूरतन किसी की ज़िम्मेदारी भी लगाइये कि वोह दूसरों से बात करते हुए आप का मुंह फूला हुवा या सपाट महसूस करे तो गाहे ब गाहे याद दिहानी करवाते हुए कहता रहे या आप को इस त़रह की तह़रीर दिखा दिया करे : **''बात करते हुए मुस्कराना सुन्नत है।''** जी हां वाक़ेई येह सुन्नत है। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 73 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''हुस्ने अख़्लाक़''** सफ़्ह़ा 15 पर है : ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाती हैं कि वोह हर बात **मुस्करा** कर किया करते, जब मैं ने उन से इस बारे में पूछा तो उन्हों ने जवाब दिया : ''मैं ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मिलन-सारों के रहबर, ग़मज़दों के यावर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दौराने गुफ़्त-गू **मुस्कराते** रहते थे।'' (مکارمُ الاَخلاق لِلطَّبَرانی ص۳۱۹ رقم ۲۱)

जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें
उस तबस्सुम की आ़दत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़ में शामिल ''सलामे रज़ा'' के इस मिस्रए ''जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें'' का आख़िरी लफ़्ज़, **''पड़ें''** आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की म-दनी सोच का अ़ज़ीम शहपारा है। क्यूं कि अगर ''पड़ें'' के बजाए ''पड़े''

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

लिखते तो मा'नन किसी एक वाक़िए की त़रफ़ इशारा माना जाता ! मगर आ'ला ह़ज़रत ने "पड़ें" लिख कर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़ीम सिफ़त बयान फ़रमा दी। चुनान्चे इस मिस्रअ़ का मा'ना है : ह़याते ज़ाहिरी में तो तस्कीन देने से ग़मज़दा दिलों की कलियां खिल उठती थीं मगर आज भी सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब किसी दुखियारे को ख़्वाब में या किसी ग़ुलाम को क़ब्र में तसल्ली देते हैं तो वोह पुर सुकून हो जाता है। इस मिस्रए में येह भी इशारा है कि मह़शर में भी अपने गुनहगार उम्मतियों को ढारस बंधा कर चैन व क़रार बख़्शेंगे दूसरे मिस्रए के मा'ना हैं : उस तस्कीन बख़्श आ़दते करीमा पर लाखों सलाम हों। ह़ज़रत मौलाना सय्यिद अख़्तरुल ह़ामिदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने इस शे'र पर क्या ख़ूब तज़्मीन बांधी है :

रन्ज से जान खोते हुए हंस पड़ें — मुज़्तरिब ग़म से होते हुए हंस पड़ें
जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें — बख़्त जाग उठ्ठें सोते हुए हंस पड़ें
उस तबस्सुम की आ़दत पे लाखों सलाम

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हाथ मिलाने में मुस्कराना मग़्फ़िरत का बाइस है : एक रिवायत में है कि सय्यिदुना नुफ़ैअ़ आ'मा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझ से मुसा-फ़ह़ा फ़रमाया (या'नी हाथ मिलाए) और **मुस्कराने** लगे, फिर पूछा : जानते हो मैं ने ऐसा क्यूं किया ? मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं। तो फ़रमाने लगे कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने मुझे श-रफ़े मुलाक़ात बख़्शा तो मेरे साथ ऐसे ही किया फिर मुझ से पूछा : जानते हो मैं ने ऐसा क्यूं किया ? तो मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं। तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब दो मुसल्मान मुलाक़ात करते वक़्त मुसा-फ़ह़ा करते (या'नी हाथ मिलाते) हैं और दोनों एक दूसरे के सामने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये **मुस्कराते** हैं तो उन के जुदा होने से पहले ही उन की मग़्फ़िरत कर दी जाती है। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی ج ٥ ص٣٦٦ حديث٧٦٣٠)

बाग़े जन्नत में मुह़म्मद मुस्कराते जाएंगे

फूल रह़मत के झड़ेंगे हम उठाते जाएंगे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुस्कराने की अच्छी बुरी निय्यतें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा ह़दीसे पाक में लफ़्ज़ "**अल्लाह** के लिये" अच्छी निय्यत की सराह़त करता है । बहर ह़ाल किसी मुसल्मान से हाथ मिलाना और दौराने गुफ़्त-गू **मुस्कराना** सिर्फ़ इसी सूरत में बाइसे सवाबे आख़िरत व मग़्फ़िरत है जब कि येह हाथ मिलाना और मुस्कराना सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने की निय्यत से हो । अपनी मिलन-सारी का सिक्का जमाने, किसी मालदार या सियासी "शख़्सिय्यत" की ख़ुशनूदी पाने, दुन्यवी मज़्मूम मफ़ाद परस्ती वाली "ज़ाती दोस्ती" बढ़ाने और مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ अम्रद के हाथों के मसास (या'नी छूने) और उस की जवाबी मुस्कराहट के ज़रीए़ गुनाहों भरी लज़्ज़त पाने वग़ैरा बुरी निय्यतों के साथ न हो । वाक़ेई वोह इस्लामी भाई बड़े ख़ुश नसीब हैं जो रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने, अपनी मग़्फ़िरत करवाने, इत्तिबाए़ सुन्नत का सवाब कमाने, मुसल्मान के दिल में ख़ुशी दाख़िल फ़रमाने, **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए़ इस्लामी भाइयों को **म-दनी इन्आ़मात** का आ़मिल और सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनाने वग़ैरा ह़स्बे ह़ाल अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ मुलाक़ात व बात करते हुए **मुस्कराते** रहते हैं ।

क़हक़हा शैत़ान की त़रफ़ से है : खिलखिला कर हंसना मुनासिब नहीं क्यूं कि येह **सुन्नत** नहीं है बल्कि येह तो शैत़ान की जानिब से है । जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "اَلْقَهْقَهَةُ مِنَ الشَّيْطَانِ وَالتَّبَسُّمُ مِنَ اللهِ या'नी क़हक़हा शैत़ान की त़रफ़ से है और मुस्कराना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है ।"

(اَلْمُعْجَم الصَّغِير لِلطّبَرانی ج۲ ص ۱۰٤ حدیث ۱۰۵۳) ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : **क़ह्क़हे** से मुराद आवाज़ के साथ हंसना है, शैत़ान इसे पसन्द करता है और उस पर सुवार हो जाता है जब कि **तबस्सुम** से मुराद बिग़ैर आवाज़ के थोड़ी मिक़्दार में हंसना है। (فَيْضُ الْقَدِير لِلْمناوِی ج٤ ص ۷۰٦ تحت الحدیث ٦١٩٦) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **मुस्कराना** अच्छी चीज़ है (और) क़ह्क़हा बुरी चीज़, तबस्सुम हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दते करीमा थी (लिहाज़ा) जब किसी से मिलो मुस्करा कर मिलो।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 14)

क़ह्क़हा गुनाह नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रहे ! क़ह्क़हा लगाना अगर्चे शैत़ान की त़रफ़ से है, बुरा भी है और सुन्नत भी नहीं ताहम गुनाह नहीं है। बिलफ़र्ज़ किसी आ़लिम साहि़ब या बुज़ुर्ग को क़ह्क़हा लगाता पाएं तो उन की त़रफ़ से अपने दिल में हरगिज़ किसी क़िस्म का मैल न लाएं।

ख़ामोशी ज़ियादा हंसी कम : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ियादा ख़ामोशी इख़्तियार करने वाले और कम हंसने वाले थे। (مُسندِ إمام احمد ج ۷ ص٤٠٧ حدیث ۲۰۸۵۳) ह़ाफ़िज़ इब्ने **ह़जर** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : अह़ादीसे मुबा-रका को जम्अ़ करने से जो बात ज़ाहिर हुई वोह येह है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आ़म त़ौर पर तबस्सुम से ज़ियादा नहीं हंसते और कभी ज़ियादा हो जाता तो वोह हंसी होती और ज़ाहिर येही है कि क़ह्क़हा न होता।

(اَلْمَواهِبُ اللَّدُنِّيَّة ج۲ ص٥٤)

क्या सह़ाबा हंसते थे ? : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से पूछा गया कि क्या **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबा हंसते थे ? फ़रमाया : हां और उन के दिलों में ईमान पहाड़ से मज़्बूत़ था। (شرحُ السّنة للبغوی ج٦ ص٣٧٥)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : शायद साइल (या'नी पूछने वाले) ने वोह हदीस सुनी होगी, "ज़ियादा हंसना दिल मुर्दा करता है" तो उस ने सोचा होगा कि हज़राते सहाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) कभी न हंसते होंगे (क्यूं कि) वोह हज़रात (तो) ज़िन्दा दिल थे फिर उन्हें हंसी से क्या तअ़ल्लुक़! (सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के "हां" में) जवाब (देने) का मक़्सद येह है कि **हंसना** हराम नहीं ह़लाल है, वोह हज़रात (या'नी सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) वोह हंसी न हंसते थे जो दिल मुर्दा कर दे या'नी हर वक़्त हंसते रहना बल्कि वोह हंसी हंसते थे जो दिल को शिगुफ़्ता (या'नी तरो ताज़ा) रखे और सामने वाले को भी शिगुफ़्ता (या'नी तरो ताज़ा) बना दे।

(मिरआत, जि. 6, स. 404)

किसी को हंसता देख कर पढ़ने की दुआ़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब किसी को हंसता देखें तो "बुख़ारी शरीफ़" में वारिद येह दुआ़ पढ़ लेनी चाहिये : اَضْحَکَ اللّٰهُ سِنَّکَ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे हंसता रखे) (صَحيح بُخارى ج ٤ ص١٢٣حديث٦٠٨٥)

मुबल्लिग़ ए'लान के ज़रीए़ मस्जिद में हंसने की मुमा-न-अ़त करे :

मस्जिद में मौक़अ़ की मुना-सबत से मुस्कराने की तो इजाज़त है मगर हंसने या क़हक़हा लगाने की इजाज़त नहीं। लिहाज़ा मस्जिद में दौराने बयान कोई ऐसी बात आने लगे जिस में हाज़िरीन के हंसने का इम्कान हो तो मुबल्लिग़ को चाहिये कि वोह इस त़रह ए'लान करे :

तवज्जोह फ़रमाइये ! अभी हम मस्जिद में हैं और मस्जिद में ज़रूरतन सिर्फ़ मुस्कराहट की इजाज़त है या'नी फ़क़त ऐसी हंसी जिस की ख़ुद को भी आवाज़ न आए, आवाज़ से हरगिज़ न हंसिये। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **है : "मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा लाता है।"** (اَلْجامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطى ص٣٢٢حديث ٥٢٣١)

नमाज़ में हंसने के अह़काम : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 496 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"नमाज़ के अह़काम"** सफ़ह़ा





30 ता 31 पर है : ﴾1﴿ रुकूअ़ व सुजूद वाली नमाज़ में बालिग़ ने **क़ह्क़हा** लगा दिया या'नी इतनी आवाज़ से हंसा कि आस पास वालों ने सुना तो वुज़ू भी गया और नमाज़ भी गई, अगर इतनी आवाज़ से हंसा कि सिर्फ़ ख़ुद सुना तो नमाज़ गई वुज़ू बाक़ी है, **मुस्कराने** से न नमाज़ जाएगी न वुज़ू। (مراقی الفلاح ص۹۱) मुस्कराने में आवाज़ बिल्कुल नहीं होती सिर्फ़ दांत ज़ाहिर होते हैं ﴾2﴿ बालिग़ ने नमाज़े जनाज़ा में **क़ह्क़हा** लगाया तो नमाज़ टूट गई वुज़ू बाक़ी है। (اَیضاً) ﴾3﴿ नमाज़ के इलावा क़ह्क़हा लगाने से वुज़ू नहीं जाता मगर दोबारा कर लेना **मुस्तह़ब** है। (اَیضاً ص۸٤) हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी भी **क़ह्क़हा** नहीं लगाया लिहाज़ा हमें भी कोशिश करनी चाहिये कि येह (क़ह्क़हा न लगाने की) **सुन्नत** भी ज़िन्दा हो और हम ज़ोर ज़ोर से न हंसें।

मुसल्मान भाई के लिये मुस्कराना स-दक़ा है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : तुम्हारा अपने भाई के लिये **मुस्कराना** भी ''स-दक़ा'' है, **नेकी का हुक्म** देना भी स-दक़ा है, **बुराई से मन्अ़ करना** भी स-दक़ा है, भटके हुए की राहनुमाई करना भी स-दक़ा है, कमज़ोर निगाह वाले की मदद करना भी स-दक़ा है, रास्ते से पथ्थर, कांटा और हड्डी का हटा देना भी स-दक़ा है, अपने डोल से अपने भाई के डोल में पानी डाल देना भी स-दक़ा है। (ترمذی ج۳ ص۳۸٤ حدیث۱۹٦۳) नीज़ एक रिवायत में **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : हर **क़र्ज़** स-दक़ा है।

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۲۸٤ حدیث۳۵٦۳)

माली स-दक़े की ता'रीफ़ : **उ़मूमन** जब लफ़्ज़ ''**स-दक़ा**'' बोला जाता है तो ज़ेह्न ''ख़ैरात'' की त़रफ़ जाता है। बेशक ख़ैरात को भी स-दक़ा बोलते हैं, आइये ! लगे हाथों ''माली स-दक़े'' की ता'रीफ़ मा'लूम करते हैं। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 415 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''ज़ियाए स-दक़ात''** सफ़्ह़ा 32 ता 33 पर है : लुग़त में **स-दक़ा** से मुराद (المنجد) **عَطِيَّةٌ يُّرَادُبِهَا الْمَثُوْبَةُلَا الْمَكْرَمَةُ**




या'नी, "स-दक़ा" वोह अ़तिय्या (GIFT) है जिस के ज़रीए अपनी इ़ज़्ज़त बढ़ाने के बजाए सवाब का इरादा किया जाए। (मत़लब येह है कि वोह अ़तिय्या (या'नी इन्आ़म) स-दक़ा कहलाता है, जिस के देने का मक़्सद अपनी इ़ज़्ज़त बढ़ाना और वाह वाह चाहना न हो सिर्फ़ सवाब की निय्यत से दिया गया हो) अ़ल्लामा सय्यिद शरीफ़ जुरजानी ह़-नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने **स-दक़ा** की ता'रीफ़ इन अल्फ़ाज़ में बयान की : هِيَ الْعَطِيَّةُ تَبْتَغِيْ بِهَا الْمَثُوْبَةَ مِنَ اللهِ تَعَالٰى. या'नी, स-दक़ा वोह अ़तिय्या (GIFT) है जो **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह से सवाब की उम्मीद पर दिया जाए।

(كتابُ التّعريفات ص٩٥)

सदक़े इस इन्आ़म के क़ुरबान इस इक्राम के
हो रही है दोनों आ़लम में तुम्हारी वाह वाह

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ना'तिया शे'र में फ़रमाते हैं : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! रब्बे बारी عَزَّوَجَلَّ के इस इन्आ़मो इक्राम पर मैं वारी जाऊं कि उस ने आप को तमाम मख़्लूक़ात में सब से बुलन्द शान का मालिक किया है और येह उसी का करम है कि दोनों जहानों में आप की अ़-ज़-मतों और रिफ़्अ़तों के डंके बज रहे हैं।

सब से औला व आ'ला हमारा नबी
सब से बाला व वाला हमारा नबी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अन्दरूनी अमराज़ एक दम ग़ाइब हो गए ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, नेक बनने के नुस्ख़े पर मब्नी म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ार कर अपने आप को सुन्नतों के

सांचे में ढालने की कोशिश करते रहिये, सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आशिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से एक अन्दरूनी अमराज़ से दो चार मरीज़ की शिफ़ायाबी की एक **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है कि मैं एक अ़र्से से बा'ज़ **अन्दरूनी अमराज़** का शिकार था। मरज़ की शिद्दत का येह आ़लम था कि जब भी सोता आज़्माइश हो जाती। इलाज पर कसीर रक़म ख़र्च करने के बा वुजूद इफ़ाक़ा न हुवा, मैं इस मरज़ से तंग आ चुका था। मैं ने जब सुना कि **म-दनी क़ाफ़िलों** में दुआ़एं क़बूल होती हैं तो हिम्मत कर के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के दौरान मैं ने दुआ़ की और इस की ब-र-कत से मेरा मरज़ ऐसा **ख़त्म** हुवा कि गोया कभी था ही नहीं !

क़ल्ब पर ज़ंग हो, क़ाफ़िले में चलो *नफ़्स से जंग हो, क़ाफ़िले में चलो*
पाउं में लंग हो, क़ाफ़िले में चलो *दर्द से तंग हो, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुआ़ की क़बूलिय्यत में ताख़ीर से न घबराइये : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरा सफ़र शिफ़ा का सबब बन गया और क्यूं न बनता कि दौराने सफ़र और वोह भी **आशिक़ाने रसूल** के क़ुर्ब में दुआ़एं जो मांगी थीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों के क़ुर्ब में मांगी जाने वाली **दुआ़** रद नहीं की जाती। अगर कभी क़बूलिय्यते दुआ़ में ताख़ीर हो तो घबराना और जल्दी मचाना न चाहिये। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 318 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"फ़ज़ाइले दुआ़"** सफ़ह़ा 97 पर है : दुआ़ के क़बूल में जल्दी न करे ह़दीसे शरीफ़ में है कि ख़ुदाए तआ़ला तीन आदमियों की दुआ़ क़बूल नहीं करता। **एक** वोह कि गुनाह की दुआ़ मांगे, **दूसरा** वोह कि ऐसी बात चाहे कि क़त़्ए रेह़्म (या'नी रिश्ता काटना) हो, **तीसरा** वोह कि क़बूल में जल्दी करे, कि मैं ने दुआ़ मांगी अब तक

क़बूल न हुई। ऐसा शख़्स घबरा कर दुआ़ छोड़ देता है और मत़लब से मह़रूम रहता है।

दुआ़ की क़बूलिय्यत का नुस्ख़ा : **किसी** मरीज़ को शिफ़ा न होती हो तो पहले कुछ ख़ैरात कर दीजिये फिर ग़ैर मक्रूह वक़्त में दो रक्अ़त नफ़्ल अदा कर के गिड़गिड़ा कर दुआ़ मांगिये اِنْ شَآءَاللہ दुआ़ क़बूल होगी। **"फ़ज़ाइले दुआ़"** **सफ़ह़ा** 59 ता 60 पर है **:** (क़बूलिय्यते दुआ़ के आदाब में से) **: अदब 5 :** दुआ़ से पहले कोई अ़-मले सालेह़ (या'नी नेक अ़मल) करे कि ख़ुदाए करीम की रह़मत उस (दुआ़ करने वाले) की त़रफ़ **मु-तवज्जेह** हो। स-दक़ा, ख़ुसूसन पोशीदा, इस अम्र में अ-सरे तमाम रखता है (या'नी बिल ख़ुसूस छुपा कर ख़ैरात करना दुआ़ की क़बूलिय्यत में बहुत **मुअस्सिर** है) (पारह 28 **सू-रतुल मुजा-दलह** आयत नम्बर 12 में है **:**)

فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अपनी अ़र्ज़ से पहले कुछ स-दक़ा दे लो।

(दुआ़ से क़ब्ल स-दक़ा देना वाजिब नहीं मुस्तह़ब है) **सफ़ह़ा** 61 पर है **: अदब 9 :** वक़्ते कराहत न हो तो दो रक्अ़त नमाज़ ख़ुलूसे क़ल्ब से पढ़े कि जालिबे रह़मत (या'नी रह़मत का सबब) है और रह़मत, मूजिबे ने'मत। (12 वक़्तों में नवाफ़िल पढ़ना मन्अ़ है इन 12 अवक़ात की तफ़्सील मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब, **फ़ज़ाइले दुआ़ सफ़ह़ा** 61 ता 62 पर ह़ाशिये में देख लीजिये)

नाकारा गुर्दों का इलाज हो गया : **बाबुल मदीना** कराची की एक "शख़्सिय्यत" को यरक़ान (पीलिया) हो गया, पेट में पानी भर गया, गुर्दे भी फ़ेल हो गए, और बेहोशी छा गई, बहुत बड़ा आदमी था और मां बाप का इक्लौता (या'नी एक ही बेटा) और इन के बुढ़ापे का सहारा भी येही था, कोहराम मच गया 18 डॉक्टर देख कर चले गए, सभी ने ला इ़लाज क़रार दिया, 19वां डॉक्टर आया, उस ने उस के वालिदैन को बताया कि त़रीक़ए इ़लाज में एक कमी है और वोह आप ही पूरी कर सकते हैं, मुझे उम्मीद है **अल्लाह** की रह़मत हो जाएगी। ह़स्बे तौफ़ीक़ कुछ स-दक़ा यानी ख़ैरात कर दीजिये फिर दो रक्अ़त नफ़्ल अदा कर के गिड़गिड़ा कर दुआ़ मांगिये। ख़ैरात, नवाफ़िल और दुआ़ की तरकीब शुरूअ़ कर दी गई,

वालिदैन तीन दिन तक गिड़गिड़ा कर अपने बेटे की सिह़ह़त की बारगाहे इलाही में भीक मांगते रहे, तीसरे दिन اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ गुर्दों ने काम करना शुरूअ़ कर दिया, यरक़ान और पेट के पानी में कमी आनी शुरूअ़ हुई और एक हफ़्ते के अन्दर अन्दर ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर मरीज़ बिल्कुल सिह़ह़त याब हो गया ।

शिफ़ा दे इलाही शिफ़ा दे इलाही
गुनह के मरज़ को मिटा दे इलाही

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दो[2] नशे : **ह़ज़रते** सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْه से रिवायत है कि **अल्लाह** के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْها के गुलशन के महक्ते फूल صَلَّی اللّٰه تعالٰی علَیهِ وَ اٰلهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक तुम लोग अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ से दलील (या'नी हिदायत) पर हो जब तक तुम में **दो नशे** ज़ाहिर न हों, एक **जहालत** का नशा दूसरा **दुन्यवी ज़िन्दगी** से **मह़ब्बत** का नशा । पस तुम लोग (अभी तो) **नेकी का हुक्म** देते हो और बुराइयों से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करते हो (लेकिन) जब तुम में **दुन्या की मह़ब्बत** पैदा हो जाएगी तो तुम न तो **नेकी का हुक्म** दोगे और न बुराइयों से मन्अ़ करोगे और न **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करोगे । पस उस वक़्त **क़ुरआन व सुन्नत** की बात कहने वाला मुहाजिरीन और अन्सार में सब से पहले ईमान लाने वालों की त़रह़ होगा ।

(مَجْمَعُ الزَّوائِد ج ۷ ص ۵۳۳ حدیث ۱۲۱۵۹)

पढ़े लिखों की जहालतें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना येह दोनों "मज़्मूम नशे" आ़म देखे जा रहे हैं । **जहालत** के **नशे** में आज हमारी ग़ालिब अक्सरिय्यत बद मस्त है । शायद आप समझें कि ता'लीम तो ख़ूब आ़म हो गई है और जगह ब जगह स्कूल और कॉलेज खुल चुके हैं अब जहालत कहां रही है ?

तो मुआफ़ कीजिये दुन्यवी ता'लीम "जहालत" का इलाज नहीं । सहीह येही है कि इस्लामी अह्काम पर मब्नी फ़र्ज़ उ़लूम हासिल करने ही से दीन से जहालत दूर हो सकती है । फ़ी ज़माना मुसल्मानों की भारी अक्सरिय्यत में ज़रूरी दीनी मा'लूमात का बेहद फ़ुक़्दान (या'नी न होना) है । आज दुन्या जिन लोगों को "ता'लीम याफ़्ता" कहती है उन की अक्सरिय्यत दुरुस्त मख़ारिज से **क़ुरआने करीम** नहीं पढ़ सकती ! येह जहालत नहीं तो क्या है ? "पढ़े लिखों" से **वुज़ू** और **ग़ुस्ल** का सहीह त़रीक़ा या **नमाज़** के अरकान पूछ लीजिये शायद ही कोई बता पाए, इन से **जनाज़े की दुआ** सुनाने की फ़रमाइश कर देखिये शायद बग़लें झांकने लगें ! अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल अक्सर मुसल्मानों की तवज्जोह सिर्फ़ व सिर्फ़ **दुन्यवी ता'लीम** की त़रफ़ है, इसी की हर त़रफ़ पज़ीराई (या'नी मक़्बूलिय्यत) है, सारी दौलत व क़ुव्वत इसी पर सर्फ़ की जा रही है जब कि दीनी ता'लीम के इदारे मुफ़्त पढ़ाने, मुफ़्त खिलाने और क़ियाम की मुफ़्त सहूलतें बहम पहुंचाने के बा वुजूद वीरान पड़े हैं । यक़ीनन येह सब "दुन्यावी ज़िन्दगी के नशे" के करिश्मे हैं ।

मुझे दर पे फिर बुलाना म-दनी मदीने वाले
मए इ़श्क़ भी पिलाना म-दनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अगलों की मिस्ल अज्र : **हुज़ूर** नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का इर्शादे अ़ज़ीम है : "बेशक मेरी उम्मत में से बा'ज़ लोग ऐसे भी होंगे । जो अपने अगलों (या'नी सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهُم) की मिस्ल अज्र दिये जाएंगे । يُنْكِرُوْنَ الْمُنْكَرَ वोह बुराई से मन्अ़ करते होंगे ।" (مُسندِ اِمام احمد ج ٥ ص ٥٧٦ حديث ١٦٥٩٢)

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी **अल्लाह** तआ़ला मुसल्मानों की उस क़ौम को जिन के ज़रीए दीन को तक़्विय्यत मिलेगी, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मिस्ल सवाब अ़ता फ़रमाएगा ।

(مُلَخَّص از فَیضُ القدیر ج ١ ص ٦٨٠ تحت الحديث ٢٤٨٥)

कोई मुबल्लिग़ किसी सह़ाबी के बराबर हो ही नहीं सकता : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा रिवायत से कोई येह न समझ ले कि बुराई से मन्अ़ करने वाले मुबल्लिग़ीन को सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से बराबरी ह़ासिल हो जाएगी हरगिज़ ऐसा नहीं, येह तै शुदा अम्र है कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को जो श-रफ़े सह़ाबिय्यत ह़ासिल है इस का मुक़ाबला ग़ैरे सह़ाबी उम्मती को मिलने वाली कोई भी फ़ज़ीलत नहीं कर सकती । सरवरे दो आ़लम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : لَاتَسُبُّوْا اَصْحَابِی فَلَوْ اَنَّ اَحَدَكُمْ اَنْفَقَ مِثْلَ اُحُدٍ ذَهَبًا مَابَلَغَ مُدَّ اَحَدِهِمْ وَلَانَصِيْفَهٗ या'नी मेरे किसी सह़ाबी को गाली न दो अगर तुम में से कोई उहुद पहाड़ के बराबर भी सोना ख़र्च करे तो वोह उन के एक या निस्फ़ **मुद** को नहीं पहुंचेगा । (بخاری ج۲ ص۵۲۲ حدیث ۳۶۷۳) **मुद** एक पैमाना है जो दो ह़िजाज़ी रत़ल का होता है और रत़ल तक़रीबन आधे सेर वज़्न का होता है और कोई ग़ैरे सह़ाबी करोड़ों नेकियां कर के भी किसी एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मर्तबे को नहीं पहुंच सकता जैसा कि **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ "बहारे शरीअ़त" जिल्द 1 **सफ़ह़ा** 253 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی लिखते हैं : "कोई वली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कितने ही बड़े मर्तबे का हो, किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के रुत्बे को नहीं पहुंचता ।" **सफ़ह़ा** 247 पर फ़रमाते हैं : ह़दीस में हम-राहियाने सय्यिदुना इमाम महदी (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) की निस्बत आया कि : "उन में एक के लिये पचास का **अज्र** है, सह़ाबा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ने अ़र्ज़ की : उन में के पचास का या हम में के ? फ़रमाया : बल्कि तुम में के।" तो **अज्र** उन (या'नी सय्यिदुना इमाम महदी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के साथियों) का ज़ाइद हुवा, मगर अफ़्ज़लिय्यत में वोह (लोग) सह़ाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के हमसर (या'नी बराबर) भी नहीं हो सकते, ज़ियादत (या'नी ज़ाइद होना) दर कनार, कहां इमाम महदी (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) की रफ़ाक़त (या'नी साथी होना) और कहां ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सह़ाबिय्यत ! इस की नज़ीर (या'नी मिसाल) बिला तश्बीह यूं समझिये कि सुल्त़ान (या'नी बादशाह) ने किसी मुहिम (या'नी जंग) पर वज़ीर और बा'ज़ दीगर अफ़्सरों को भेजा, उस (जंग) की फ़त्ह़ पर हर अफ़्सर को लाख लाख रुपै इन्आ़म दिये और वज़ीर को ख़ाली परवानए ख़ुशनूदिये मिज़ाज दिया तो इन्आ़म उन्हीं (अफ़्सरों) को ज़ाइद मिला, मगर कहां वोह (लाख लाख रुपै पाने

वाले अफ़्सरान) और कहां (बादशाह की ख़ुशनूदी की सनद पाने वाला) वज़ीरे आ'ज़म का ए'ज़ाज़ ! (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 247, 253)

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शाने अ़-ज़मत निशान को ह़ज़रते सय्यिदुना **अमीरे मुआ़विया** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के बारे में मन्क़ूल इन **दो ह़िकायतों** से समझिये : ﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना **मुआ़फ़ा** बिन इमरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان से पूछा गया : क्या ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَفِيظ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से बेहतर हैं ? तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को जलाल आ गया और फ़रमाने लगे कि **ह़ुज़ूरे अकरम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के **सह़ाबी** पर किसी (ग़ैरे सह़ाबी) को क़ियास न किया जाए, ह़ज़रते सय्यिदुना **अमीरे मुआ़विया** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ **रसूले अन्वर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के कातिबे वह़्य और वह़्य पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के **अमीन** हैं ।

(تاريخ بغداد ج١،ص ٢٢٤ وتاريخ دمشق ج٥٩ ص٢٠٨)

﴾2﴿ किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَق से पूछा : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَفِيظ में से कौन अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हमराही में ह़ज़रते सय्यिदुना **अमीरे मुआ़विया** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के घोड़े की नाक में दाख़िल होने वाला ग़ुबार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَفِيظ से हज़ार गुना बेहतर है ।" **(فتاوىٰ حديثيه ص٤٠١)** शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने **ह़जर हैतमी** शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ह़िकायत नम्बर 2 की वज़ाह़त करते हुए तह़रीर फ़रमाते हैं कि इस से ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَق की मुराद येह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अमीरे मुआ़विया** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने **ह़ुज़ूरे नबिय्ये करीम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत व सोह़बत का जो शरफ़ पाया है उस के बराबर कोई अ़मल या शरफ़ हो ही नहीं सकता । **(ايضاً)**

हम को अस्ह़ाबे मह़बूबे ख़ुदा से प्यार है
اِنْ شَآءَالله दो जहां में अपना बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लाम की हैबत दिलों से निकलने का सबब : अफ़्सोस ! आज उम्मत की अक्सरिय्यत दुन्या को बहुत ज़ियादा **अहम्मिय्यत** देने के सबब इस्लाम की ह़क़ीक़ी **मह़ब्बत** से मह़रूम होती जा रही है, इस के भयानक नताइज के ज़िम्न में एक ह़दीसे पाक मुला-ह़ज़ा हो चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि ताजदारे **मक्कए मुकर्रमा**, सुल्त़ाने **मदीनए मुनव्वरह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जब मेरी उम्मत **दुन्या** को बड़ी चीज़ समझने लगेगी तो **इस्लाम की हैबत** उस से निकल जाएगी और जब **नेकी का हुक्म देना** और बुराई से मन्अ़ करना छोड़ देगी तो **वह़्य की ब-र-कत** से मह़रूम हो जाएगी और जब आपस में **गाली गलोच** इख़्तियार करेगी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां मक़ामे इ़ज़्ज़त से गिर जाएगी ।

(نوادرُالاصول ج ۱ ص ۶۷۹ حدیث ۹۳۳)

दुन्या की मह़ब्बत से दिल पाक मेरा कर दो
बुलवा के शहन्शाहे अबरार मदीने में

(वसाइले बख़्शिश, स. 198)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुन्या के बारे में ख़ुसूसी मा'लूमात पर मब्नी म-दनी फूल

दुन्या खेलकूद है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत में बयान किया गया है कि जब उम्मत दुन्या को ख़ूब **अहम्मिय्यत** देने लगेगी तो इस्लाम की हैबत उस से निकल जाएगी । वाक़ेई दुन्या को "बड़ी चीज़" समझना बहुत बुरा है । सवाबे आख़िरत कमाने की निय्यत से दुन्या के बारे में ख़ुसूसी मा'लूमात पर मब्नी कुछ म-दनी फूल पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं, **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़ह़ा 252 पर पारह 7 **सू-रतुल अन्आ़म** आयत नम्बर 32 में फ़रमाने रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (کنزالعمال)

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۳۲﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और दुन्या की ज़िन्दगी नहीं मगर खेलकूद और बेशक पिछला घर भला उन के लिये जो डरते हैं तो क्या तुम्हें समझ नहीं ।

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबा-रका के तह़त फ़रमाते हैं : नेकियां और त़ाअ़तें (या'नी इ़बादतें) अगर्चे मुअमिनीन से दुन्या ही में वाक़ेअ़ हों लेकिन वोह उमूरे आख़िरत में से हैं । इस से साबित हुवा कि आ'माले मुत्तक़ीन (या'नी नेक बन्दों के आ'माल) के सिवा दुन्या में जो कुछ है सब लह्वो लइ़ब (या'नी खेलकूद) है ।

दुन्या के ग़मों की तुम लिल्लाह दवा दे दो
बुलवा के ग़म अपना दो सरकार मदीने में

(वसाइले बख़्शिश, स. 196)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 868 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"इस्लाहे़ आ'माल"** (जिल्द अव्वल) सफ़ह़ा 128 ता 129 पर है :

दुन्या का मा'ना : दुन्या के लु-ग़वी मा'ना है : "क़रीब" और दुन्या को दुन्या इस लिये कहते हैं कि येह आख़िरत की निस्बत इन्सान के ज़ियादा क़रीब है या इस वजह से कि येह अपनी ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात के सबब दिल के ज़ियादा क़रीब है ।

(اَلْحَدِيْقَةُ النَّدِيَّة ج١ ص١٧)

दुन्या क्या है ? : हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **बुख़ारी** शरीफ़ की शर्ह़ "उ़म्दतुल क़ारी" जिल्द 1 **सफ़ह़ा** 52 पर लिखते हैं : "दारे आख़िरत से

पहले तमाम मख़्लूक़ **दुन्या** है।" (عُمدةُ القاری ج١ص٥٢) पस इस ए'तिबार से सोना चांदी और इन से ख़रीदी जाने वाली तमाम ज़रूरी व ग़ैर ज़रूरी अश्या **दुन्या** में दाख़िल हैं।

(اَلْحَدِیقَةُ النَّدِیَّة ج١ ص١٧)

कौन सी दुन्या अच्छी कौन सी क़ाबिले मज़म्मत ? : दुन्यावी अश्या की तीन क़िस्में हैं : ﴾1﴿ वोह दुन्यावी अश्या जो आख़िरत में साथ देती हैं और उन का नफ़्अ़ मौत के बा'द भी मिलता है, ऐसी चीज़ें सिर्फ़ दो हैं : **इल्म** और **अ़मल**, अ़मल से मुराद है, इख़्लास के साथ **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत करना और दुन्या की येह क़िस्म मह़मूद (या'नी बहुत उ़म्दा) है ﴾2﴿ वोह चीज़ें जिन का फ़ाएदा सिर्फ़ दुन्या तक ही मह़दूद रहता है आख़िरत में उन का कोई फल नहीं मिलता जैसे गुनाहों से लज़्ज़त ह़ासिल करना, जाइज़ चीज़ों से ज़रूरत से ज़ियादा फ़ाएदा उठाना म-सलन ज़मीन, जाएदाद, सोना चांदी, उ़म्दा कपड़े और अच्छे अच्छे खाने खाना और येह दुन्या की मज़्मूम (या'नी क़ाबिले मज़म्मत) क़िस्म में शामिल हैं ﴾3﴿ वोह अश्या जो नेकियों पर मददगार हों जैसे ज़रूरी ग़िज़ा, कपड़े वग़ैरा। येह क़िस्म भी मह़मूद (अच्छी) है लेकिन अगर मह़्ज़ दुन्या का फ़ौरी फ़ाएदा और लज़्ज़त मक़्सूद हो तो अब येह दुन्या मज़्मूम (क़ाबिले मज़म्मत) कहलाएगी। (مُلَخَّص اَز اِحیاءُ الْعُلوم ج٣ص٢٧٠،٢٧١)

दुन्या के नज़ारों से भला क्या हो सरोकार
उ़श्शाक़ को बस इ़श्क़ है गुलज़ारे नबी से

(वसाइले बख़्शिश, स. 202)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुन्या का कौन सा काम अल्लाह तआ़ला के लिये है और कौन सा नहीं ?

दुन्यावी कामों की तीन अक़्साम हैं : ﴾1﴿ बा'ज़ काम वोह हैं जिन के बारे में येह तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता कि येह **अल्लाह** तआ़ला के लिये किये गए हैं म-सलन ना जाइज़ व ह़राम काम ﴾2﴿ बा'ज़ वोह हैं जो **अल्लाह** तआ़ला के लिये भी हो सकते हैं और उस के ग़ैर के लिये भी म-सलन ग़ौरो तफ़क्कुर करना और ख़्वाहिशात से रुकना

क्यूं कि अगर लोगों में अपनी मक़्बूलिय्यत बढ़ाने के लिये और बुज़ुर्गी के हुसूल की ख़ातिर ग़ौरो फ़िक्र किया या ख़्वाहिशात को सिर्फ़ इस लिये छोड़ा कि माल की बचत हो या सिह्हत अच्छी रहे तो अब येह काम रिज़ाए इलाही के लिये न होंगे ﴾3﴿ बा'ज़ काम वोह हैं जो ब ज़ाहिर नफ़्स के लिये हों मगर ह़क़ीक़त में **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा की **निय्यत** से किये गए हों जैसे ग़िज़ा खाना, निकाह़ करना वग़ैरा। (ایضاًص۲۷۳)

ताजे शाही उस के आगे हेच है
मुस्तफ़ा की जिस को उल्फ़त मिल गई

(वसाइले बख़्शिश, स. 209)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुन्यादार की ता'रीफ़ : जब बन्दा आख़िरत की बेहतरी की ग़रज़ से दुन्या में से कुछ लेगा तो उसे दुन्यादार नहीं कहेंगे बल्कि उस के ह़क़ में दुन्या आख़िरत की खेती होगी और अगर ज़ाती ख़्वाहिश और हुसूले लज़्ज़त के त़ौर पर येह चीज़ें ह़ासिल करता है तो वोह **दुन्यादार** है। (ایضاًص۲۷۲)

दुन्यावी अश्या की लज़्ज़तों की ह़ैरत अंगेज़ ह़क़ीक़त : दुन्या में ह़क़ीक़ी लज़्ज़त किसी शै में नहीं, अलबत्ता लोग तकालीफ़ का ख़ातिमा करने वाली चीज़ों को लज़्ज़त का नाम देते हैं म-सलन खाने में इस लिये लज़्ज़त है कि वोह भूक की तक्लीफ़ को ख़त्म करता है येही वजह है कि जब भूक ख़त्म हो जाए तो खाने में लज़्ज़त मह़सूस नहीं होती। इसी त़रह़ पानी इस लिये लज़ीज़ लगता है कि प्यास को ख़त्म करता है, जब प्यास बुझ गई तो लज़्ज़त भी जाती रही। **ह़क़ीक़ी लज़्ज़तें** तो जन्नत में नसीब होंगी क्यूं कि अहले जन्नत को जब कोई तक्लीफ़ ही न होगी तो इस से छुटकारा देने वाली अश्या का वुजूद कहां से होगा ? लिहाज़ा उन की लज़्ज़ात ह़क़ीक़ी होंगी म-सलन उन के खाने पीने की लज़्ज़तें अस्ली होंगी, मह़ज़ भूक और प्यास ख़त्म करने के लिये न होंगी। (اَلْحَدِیْقَۃُ النَّدِیَّۃ ج۱ ص۱۹ مُلَخَّصاً)

इब्लीस की बेटी : **हज़रते** सय्यिदुना अ़ली ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **दुन्या** इब्लीसे लईन (या'नी ला'नती शैतान) की बेटी है और इस (या'नी दुन्या) से **महब्बत** करने वाला हर शख़्स उस की बेटी का ख़ावन्द है, इब्लीस अपनी बेटी की वजह से उस दुन्यादार शख़्स के पास आता जाता रहता है, लिहाज़ा मेरे भाई ! अगर तुम शैतान से महफ़ूज़ रहना चाहते हो तो उस की बेटी (या'नी दुन्या) से रिश्ता क़ाइम न करो। (اَلْحَدِيقَةُ النَّدِيَّة ج ۱ ص ۱۹)

नीली आंखों वाली बद सूरत बुढ़िया : **हज़रते** सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं, हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : बरोज़े क़ियामत एक नीली आंखों वाली निहायत **बद सूरत बुढ़िया** जिस के दांत आगे की त़रफ़ निकले होंगे लोगों के सामने ज़ाहिर होगी और उन से पूछा जाएगा : इस को जानते हो ? लोग कहेंगे : हम इस की पहचान से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहते हैं। कहा जाएगा : येह वोही दुन्या है जिस पर तुम फ़ख़्र किया करते थे, इसी की वजह से **क़त्ए़ रेह़मी** करते या'नी रिश्तेदारियां काटते थे, इसी के सबब एक दूसरे से **ह़सद** और **दुश्मनी** करते थे। फिर उस (बुढ़िया नुमा दुन्या) को जहन्नम में डाला जाएगा तो पुकारेगी : ऐ मेरे परवर दगार ! मेरी पैरवी करने वाले और मेरी जमाअ़त कहां है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : उन को भी इस के साथ कर दो। (ذمُّ الدّنيا مع موسوعة الامام ابن ابى الدنيا ج ۵ ص ۷۲ رقم ۱۲۳)

दौलते दुन्या से बे रग़बत मुझे कर दीजिये
मेरी ह़ाजत से मुझे ज़ाइद न करना मालदार

(वसाइले बख़्शिश, स. 398)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुन्या मीठी सर सब्ज़ है : रह़मते आ़लम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : **दुन्या** मीठी सर सब्ज़ है, जो इस में ह़लाल त़रीक़े से माल कमाता है और सह़ीह़ हुक़ूक़ में ख़र्च करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को सवाब

अ़ता फ़रमाएगा और उस को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और जो इस में **हराम त़रीक़े** से माल कमाता है और उस को ग़ैरे ह़क़ में ख़र्च करता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को **दारुल हवान** (या'नी ज़िल्लत के घर) में दाख़िल फ़रमाएगा। **(شُعَبُ الْاِیمان ج٤ ص٣٩٦ حديث٥٠٢٧)** ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस ह़दीसे पाक के तह़्त **"फ़ैज़ुल क़दीर"** में तह़रीर फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि दुन्या फ़ी नफ़्सिही (या'नी दर अस्ल, फ़िल ह़क़ीक़त) मज़्मूम नहीं है चूंकि येह आख़िरत की खेती है, इस लिये जो शख़्स शरीअ़त की इजाज़त से दुन्या की कोई चीज़ ह़ासिल करे तो येह चीज़ आख़िरत में उस की मदद करती है।

(فيض القدير ج٣ ص٧٢٨ تحت الحديث ٤٢٧٣)

हुस्ने गुलशन में सरासर है फ़रेब ऐ दोस्तो !
देखना है हुस्न तो देखो अ़रब के रेगज़ार

(वसाइले बख़्शिश, स. 399)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुन्या के तीन बेहतरीन काम : सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दुन्या और जो कुछ इस में है मल्ऊ़न (या'नी ला'नती) है सिवाए नेकी का हुक्म देने या बुराई से मन्अ़ करने या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने के। **(اَلْجامِعُ الصَّغِير ص٢٦٠ حديث٤٢٨٢)** **ह़ज़रते** अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस ह़दीस के तह़्त "फ़ैज़ुल क़दीर" में तह़रीर फ़रमाते हैं : बिला शुबा येह काम (या'नी नेकी का हुक्म करना, बुराई से मन्अ़ करना और **ज़िक्रुल्लाह**) अगर्चे दुन्या ही में किये जाते हैं लेकिन येह दुन्यावी काम नहीं हैं बल्कि येह तो आ'माले आख़िरत हैं जो कि जन्नत की ने'मतों तक पहुंचने का वसीला हैं, लिहाज़ा हर वोह काम जिस से रिज़ाए इलाही मक़्सूद हो वोह इस ला'नत से **मुस्तस्ना** (या'नी अलग) है।

(فيض القدير ج٣ ص٧٣٥ تحت الحديث٤٢٨٢)

चार[4] चीज़ों के इलावा दुन्या मल्ऊन है : **सुल्ताने मदीना,** सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : होशियार रहो, दुन्या ला'नती चीज़ है और जो कुछ दुन्या में है वोह मल्ऊन है सिवाए **अल्लाह** तआ़ला के **ज़िक्र** और उस (चीज़) के जो **रब** तआ़ला **के क़रीब** कर दे और **आ़लिम** और **त़ालिबे इ़ल्म** के। (سُنَنِ تِرمِذی ج٤ ص١٤٤ حدیث٢٣٢٩)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : जो चीज़ **अल्लाह** व रसूल से ग़ाफ़िल कर दे वोह **दुन्या** है या जो **अल्लाह** व रसूल की नाराज़ी का सबब हो वोह **दुन्या** है। बाल बच्चों की परवरिश, गिज़ा, लिबास, घर वग़ैरा (शरीअ़त की ना फ़रमानी से बचते हुए) ह़ासिल करना सुन्नते अम्बियाए किराम है येह **दुन्या** नहीं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 17)

दुन्या मच्छर के पर से भी बढ़ कर ज़लील है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या बहुत ज़लील व ह़क़ीर है इस को अहम समझ बैठना अ़क़्ल मन्दी नहीं कि येह तो **मच्छर के पर** से भी बढ़ कर ज़लील है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत"** **सफ़ह़ा** 464 ता 465 पर मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दुन्या की मज़म्मत के **मु-तअ़ल्लिक़** फ़रमाते हैं : ह़दीस में है : "अगर दुन्या की क़द्र **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नज़्दीक एक **मच्छर के पर** के बराबर (भी) होती तो (पानी का) एक घूंट (भी) इस में से काफ़िर को न देता।" (ترمذی ج٤ ص١٤٤ حدیث٢٣٢٧) (दुन्या) ज़लील है (इसी लिये) ज़लीलों को दी गई, जब से इसे बनाया है कभी इस की त़रफ़ नज़र न फ़रमाई, दुन्या, आस्मान व ज़मीन के दरमियान जव्व (या'नी फ़ज़ा) में मुअ़ल्लक़ (या'नी लटकी हुई) है। फ़रियाद व ज़ारी करती (या'नी रोती धोती) है और कहती है : ऐ मेरे रब ! तू मुझ से क्यूं नाराज़ है ? मुद्दतों के बा'द इर्शाद होता है : "चुप **ख़बीसा !**" ﴿फिर फ़रमाया﴾ **सोना चांदी ख़ुदा के दुश्मन हैं।** वोह लोग जो दुन्या में सोने चांदी से **मह़ब्बत** रखते हैं क़ियामत के दिन पुकारे जाएंगे कहां हैं वोह

लोग जो ख़ुदा के दुश्मन से **मह़ब्बत** रखते थे। **अल्लाह** तआ़ला दुन्या को अपने मह़बूब (या'नी प्यारे बन्दों) से ऐसा दूर फ़रमाता है जैसे बिला तश्बीह **बीमार बच्चे** को उस से मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) चीज़ों से मां दूर रखती है। (पारह 15 **सूरए बनी इस्राईल** आयत नम्बर 11 में इर्शाद होता है)

وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ﴿١١﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और आदमी बुराई की दुआ़ करता है जैसे भलाई मांगता है और आदमी बड़ा जल्द बाज़ है।

आदमी अपने मुंह से बुराई मांगता है जिस त़रह़ कि अपने लिये भलाई मांगता है, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) जानता है कि (जो कुछ वोह मांग रहा है) इस में कितना ज़रर (या'नी नुक़्सान) है (लिहाज़ा) येह (बन्दा) दुआ़ मांगता है और वोह (परवर दगार عَزَّوَجَلَّ बन्दे को नुक़्सान से बचाने के लिये उस की मांगी हुई शै) नहीं देता।

(फिर फ़रमाया : पारह 4 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 196 और 197 में) इर्शाद होता है :

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम को धोके में न डाल दे काफ़िरों का अहले गहले[1] शहरों में फिरना, येह थोड़ी पूंजी है फिर इन का ठिकाना जहन्नम है और बुरा ठिकाना है।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 464 ता 465)

या रब ! ग़मे ह़बीब में रोना नसीब हो
आंसू न राएगां हों ग़मे रूज़गार में

(वसाइले बख़्शिश, स. 407)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 : या'नी इतराते हुए

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سُنّی)

ग़ैर मुस्लिमों की ख़ुशहाली आ़रिज़ी है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हरगिज़ इस वस्वसे को ज़ेहन में मत जमाइये कि हम मुसल्मान हो कर **दुन्या** की बहुत सारी ने'मतों से महरूम व बेहाल हैं जब कि ग़ैर मुस्लिम क़ौमें दुन्यवी तौर पर निहायत ख़ुशहाल व मालामाल हैं। यक़ीन रखिये कि मुसल्मानों के लिये **जन्नत** की अ-बदी या'नी हमेशा हमेशा रहने वाली ने'मतें हैं जब कि ग़ैर मुस्लिमों के लिय मरने के बा'द कोई राहत नहीं और इन के लिये आख़िरत में भड़क्ती आग और जहन्नम का दाइमी या'नी हमेशगी का अ़ज़ाब है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़हा 904 पर पारह 25 **सू-रतुज़्ज़ुख़रुफ़** आयत नम्बर 33 ता 35 में इर्शादे रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ है :

وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿۳۴﴾ وَزُخْرُفًا ؕ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर येह न होता कि सब लोग एक दीन पर हो जाएं[1] तो हम ज़रूर रहमान के मुन्किरों के लिये चांदी की छतें और सीढ़ियां बनाते जिन पर चढ़ते और इन के घरों के लिये चांदी के दरवाज़े और चांदी के तख़्त जिन पर तकिया लगाते और त़रह़ त़रह़ की आराइश और येह जो कुछ है जीती दुन्या ही का अस्बाब है और आख़िरत तुम्हारे रब के पास परहेज़ गारों के लिये है।

कर मग़्फ़िरत मेरी तेरी रह़मत के सामने
मेरे गुनाह या ख़ुदा हैं किस शुमार में

(वसाइले बख़्शिश, स. 408)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 : या'नी अगर इस का लिहाज़ न होता कि काफ़िरों को फ़राख़िये ऐ़श में देख कर सब लोग काफ़िर हो जाएंगे। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

मुर्दा बकरी : मज़्कूरा आयाते करीमा में **मुत्तक़ीन** या'नी "परहेज़ गार लोगों" की वज़ाहत करते हुए सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "(परहेज़ गार लोग वोह हैं) जिन्हें दुन्या की चाहत (या'नी ख़्वाहिश) नहीं।" तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि अगर **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक दुन्या **मच्छर** के पर के बराबर भी क़द्र रखती तो काफ़िर को उस से एक प्यास पानी न देता। (ترمذی ج ٤ ص ١٤٤ حدیث ٢٣٢٧) दूसरी ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नियाज़ मन्दों की एक जमाअ़त के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे, रास्ते में एक **मुर्दा बकरी** देखी, फ़रमाया : देखते हो ! इस के मालिकों ने इसे बहुत बे क़द्री से फेंक दिया ! **दुन्या** की **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक इतनी भी क़द्र नहीं जितनी बकरी वालों के नज़्दीक इस **मरी बकरी** की हो। (ایضاً حدیث ٢٣٢٨) **ह़दीस :** सय्यिदे आ़लम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि जब **अल्लाह** तआ़ला अपने किसी बन्दे पर करम फ़रमाता है तो उसे दुन्या से ऐसा बचाता है जैसा तुम अपने बीमार को पानी से बचाते हो। (ایضاً ص ٤ حدیث ٢٠٤٤) **ह़दीस :** दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत है। [ایضاً ص ١٤٠ حدیث ٢٣٣١] (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 904)

क्यूं करें न रश्क उस पे येह जहां के ताजदार
हाथ जिस के इ़श्क़े अह़मद का ख़ज़ीना आ गया

(वसाइले बख़्शिश, स. 318)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दो2 मछलियां पकड़ने वालों की ह़िकायत : ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल करते हैं : एक रिवायत में आया है कि गुज़श्ता ज़माने में एक **मोमिन** और एक **काफ़िर**, मछली का शिकार करने निकले, **काफ़िर** अपने झूटे मा'बूदों का नाम ले कर ख़ूब मछलियां पकड़ता रहा और मछलियों का ढेर लग गया। **मोमिन अल्लाह** का नाम ले कर जाल फेंकता रहा, लेकिन हाथ कुछ न आया। शाम को सिर्फ़ एक मछली फंसी, वोह

भी तड़पी, उछली और फुदक कर पानी में जा पड़ी। **मोमिन** पलटा तो ख़ाली था और **काफ़िर** टोकरी भर कर लौटा। **मोमिन** पर मामूर (या'नी मुक़र्रर कर्दा) फ़िरिश्ता अफ़्सोस करने लगा, **अल्लाह** तआला ने उस फ़िरिश्ते को **जन्नत** में **मोमिन** का महल (और आलीशान मक़ाम) दिखाया तो वोह फ़िरिश्ता बे इख़्तियार पुकार उठा : ख़ुदा की क़सम ! इस अज़ीमुश्शान महल में दाख़िले के बा'द इस मुसल्मान मछेरे को मछलियों के शिकार में नाकामी वाली **मुसीबत** की बिल्कुल ही परवाह न होगी और फ़िरिश्ते को जब **अल्लाह** तआला ने जहन्नम में **काफ़िर** का ठिकाना दिखाया तो वोह बोला : ख़ुदा की क़सम ! इस अज़ाब के मक़ाम पर जब येह पहुंचेगा तो इसे (ढेर सारी मछलियां हाथ आने वाली) दुन्या की (आरिज़ी) ख़ुशी कोई फ़ाएदा नहीं देगी। **(تَنبِیهُ الْغافِلین ص۱۳٦)**

ना फ़रमान को पसन्दीदा चीज़ें मिलना ख़तरे की घन्टी है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से दर्स मिला कि ग़ैर मुस्लिमों की दुन्यवी तरक़्क़ियां और दौलत की फ़रावानियां (या'नी माल की कसरत) क़ाबिले रश्क नहीं, ग़रीब व तंगदस्त और दुखियारे मुसल्मानों की महशर में **ईद** होगी नेक मुसल्मान को अपनी ख़्वाहिश की अश्या न मिलने पर दिल बरदाश्ता नहीं होना चाहिये कि बे नमाज़ों और गुनाहों में डूबे रहने वालों की हर दुन्यवी आरज़ू पूरी होती चली जाना भलाई की दलील नहीं, ख़तरे की घन्टी है। जैसा कि **हज़रते** सय्यिदुना उक़्बा बिन आमिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम, **नूरे मुजस्सम, रसूले मुहतशम,** शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जब तुम देखो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या में गुनाहगार बन्दे को वोह चीज़ें दे रहा है जो उसे पसन्द हैं तो **येह उस की तरफ़ से ढील है।** **(مُسندِ اِمام احمد ج ٦ ص۱۲۲ حدیث۱۷۳۱۳)**

हुकूमत की त़लब दिल में, न ख़्वाहिश ताजे शाही की
नज़र में आशिक़ों के बस मदीना ही समाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 312)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हाथों हाथ सज़ा की ह़िक्मत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के हर काम में ह़िक्मत होती है । ग़ुरबत बल्कि हर त़रह़ की दुन्यवी तक्लीफ़ व मुसीबत पर **सब्र** कर के अज्र ह़ासिल करना चाहिये क्यूं कि आफ़ात व बलिय्यात (या'नी बलाएं और आफ़तें), **कफ़्फ़ारए सय्यिआत** (या'नी गुनाहों के कफ़्फ़ारे) और बाइ़से तरक़्क़िये द-रजात होती हैं । चुनान्चे **ताजदारे रिसालत,** शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत व राफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **"अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा करता है तो उस के गुनाह की सज़ा फ़ोरी त़ौर पर उसे दुन्या ही में दे देता है ।"**

(مُسندِ إمام احمد ج ٥ ص ٦٣٠ حديث ١٦٨٠٦)

ह़ज़रते मौलना रूम عَلَیْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَیُّوم फ़रमाते हैं :

ہم خدا خواہی و ہم دُنیائے دُوں   ایں خیال است و مُحال است و جُنوں

(तू ख़ुदा को भी चाहता है और ज़लील दुन्या को भी । तेरा येह ख़याल, जुनून या'नी पागल पन और मुह़ाल या'नी ना मुम्किन बात है)

मुझ को दुन्या की दौलत न ज़र चाहिये
शाहे कौसर की मीठी नज़र चाहिये

(वसाइले बख़्शिश, स. 289)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुबल्लिग़ की भी बख़्शिश हो गई : ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैम बिन मन्सूर عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने वालिद मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? तो उन्हों ने बताया : **मेरे रब** عَزَّوَجَلَّ ने करम करने के बा'द मुझ से फ़रमाया : "ऐ **बद अ़मल बुढ्ढे** ! मा'लूम है कि मैं ने तुझे क्यूं बख़्श दिया ?" मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं ऐ मेरे मा'बूद عَزَّوَجَلَّ ! तो मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : तूने एक इज्तिमाअ़ में अपने **रिक़्क़त अंगेज़ बयान** से

हाज़िरीन को रुला दिया था और उस बयान में मेरा एक ऐसा बन्दा भी था जो कभी भी मेरे ख़ौफ़ से नहीं रोया था मगर तेरा बयान सुन कर वोह भी रोने लगा। तो मैं ने उस बन्दे की **गिर्या व ज़ारी** पर रहम फ़रमा कर उस को और तमाम शु-रकाए इज्तिमाअ़ को बख़्श दिया इसी लिये तेरी भी **मग़्फ़िरत** हो गई। **(شَرحُ الصُّدور ص۲۸۳)** **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तेरे ख़ौफ़ से या ख़ुदा या इलाही *मेरे अश्क बहते रहें काश हर दम*
मैं थरथर रहूं कांपता या इलाही *तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा*

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जो रोता है उस का काम होता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस में कोई शक नहीं कि उन **मुबल्लिग़ीन** का द-रजा बहुत ही बुलन्दो बाला और अ़-ज़मत वाला है जो अपने रिक़्क़त अंगेज़ सुन्नतों भरे बयान से लोगों के दिलों में रिक़्क़त पैदा करते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बेकस पनाह से बिछड़े हुए बन्दों को अपने पुरसोज़ बयान की कशिश से खींच खींच कर दरबारे इलाही عَزَّوَجَلَّ में लाते हैं। यक़ीनन **इख़्लास** के साथ अच्छी अच्छी निय्यतें कर के **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने वाले सआ़दत मन्द **इस्लामी भाई** दोनों जहानों में काम्याब हैं। इस **हिकायत** से येह भी मा'लूम हुवा कि **ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से जो रोता है उस का काम होता है।** ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से रोना निहायत सआ़दत की बात है बल्कि रोने वाले की ब-र-कत से न रोने वालों का भी बेड़ा पार हो जाता है लिहाज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करने और ऐसे इज्तिमाआ़त में मांगी जाने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ में हाज़िर रहने की बहुत ब-र-कतें होती हैं न जाने किस रोने वाले के सदक़े सब हाज़िरीन की मग़्फ़िरत के अस्बाब हो जाएं !

तड़पने फड़क्ने का दे दे सलीक़ा
तेरे डर से रोने का सिखला तरीक़ा

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

रोने के फ़ज़ाइल : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और इश्क़े मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में **रोना** एक अ़ज़ीमुश्शान "नेकी" है, इस लिये हुसूले सवाब की निय्यत से इस **नेकी** की तरग़ीब पर मब्नी **नेकी की दा'वत** पेश करते हुए **रोने के फ़ज़ाइल** बयान किये जाते हैं। काश ! कहीं हम भी सन्जी-दगी अपनाने और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व इश्क़े मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में **आंसू** बहाने वाले बनें।

रोने वाली आंखें मांगो रोना सब का काम नहीं
ज़िक्रे महब्बत आम है लेकिन सोज़े महब्बत आम नहीं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रोने वालों के सदक़े न रोने वालों की बख़्शिश : सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त, सीखने सिखाने के म-दनी ह़ल्क़ों और इज्तिमाआ़ते ज़िक्रो ना'त की भी क्या बात है ! कोशिश कर के अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा इन में शिर्कत करनी चाहिये, न जाने कब किसी का दिल चोट खा जाए, उस पर रिक़्क़त त़ारी हो और इख़्लासे क़ल्बी के साथ उस की आंखें छलक पड़ें और उस को रह़मत अपनी आग़ोश में ले ले और उस मुख़्लिस बन्दे के **इख़्लास** की ब-र-कत से वहां मौजूद हर मुसल्मान की **मग़्फ़िरत** कर दी जाए। इज्तिमाए ख़ैर में रोने वाले की ब-र-कत से अहले मग़्फ़िरत की कसरत का इस ह़दीसे मुबा-रका से अन्दाज़ा लगाइये। चुनान्चे **एक** मर्तबा सरवरे कौनैन, रह़मते दारैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **ख़ुत़्बा** दिया तो ह़ाज़िरीन में से **एक शख़्स रो पड़ा**। येह देख कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर आज तुम्हारे दरमियान वोह तमाम मोमिन मौजूद होते जिन के गुनाह पहाड़ों के बराबर हैं तो उन्हें इस एक शख़्स के रोने की वजह से बख़्श दिया जाता क्यूं कि फ़िरिश्ते भी इस के साथ रो रहे थे और दुआ़ कर रहे थे : اَللّٰهُمَّ شَفِّعِ الْبَكَّائِيْنَ فِيْمَنْ لَّمْ يَبْكِ या'नी

ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! न रोने वालों के हक़ में रोने वालों की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा ।

(شُعَبُ الْاِیمان ج۱ص٤۹٤حدیث ۸۱۰)

हज़रते मौलाना रूम عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْقَیُّوم फ़रमाते हैं :

ہر کجا آبِ رَواں غنچہ بُوَد ہر کجا اشکِ رَواں رَحمت بُوَد

(जब आस्मान से बारिश बरसती है तो ज़मीन पर गुन्चे और गुल खिलते हैं और जब ख़ौफ़े ख़ुदा से किसी के आंसू जारी होते हैं तो रह़मत के फूल खिलते हैं)

मख्खी के सर बराबर आंसू : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : जिस **मोमिम** की आंखों से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ख़ौफ़ से आंसू निकलते हैं अगर्चे मख्खी के सर के बराबर हों, फिर वोह आंसू उस के चेहरे के ज़ाहिरी हिस्से को पहुंचें तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे जहन्नम पर ह़राम कर देता है । **(ایضاًص٤۹۱حدیث ۸۰۲)**

क़ल्बे मुज़्त़र चश्मे तर सोज़े जिगर सीना तपां
त़ालिबे आहो फ़ुग़ां जाने जहां ! अ़त्त़ार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 222)

एक मील तक सीने की गड़-गड़ाहट की आवाज़ सुनाई देती ! : हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّ وَجَلَّ के सबब इस क़दर गिर्या व ज़ारी फ़रमाते (या'नी रोते) कि एक मील के फ़ासिले से उन के सीने में होने वाली **गड़-गड़ाहट** की आवाज़ सुनाई देती ।

(اِحیاءُ الْعُلوم ج ٤ ص ٢٢٤)

जी चाहता है फूट के रोऊं तेरे डर से
अल्लाह ! मगर दिल से क़सावत[1] नहीं जाती

1 : या'नी सख़्ती

सरकारे मदीना के बा'द किस का रुत्बा है ? : سُبْحٰنَ اللّٰہ ! जिस का मर्तबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जनाब में जितना बड़ा होता है वोह उसी क़दर ज़ियादा ख़ौफ़े ख़ुदा का ह़ामिल होता है जैसा कि अभी आप ने **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के गिर्या व ज़ारी का हाल सुना। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अ़ज़ीमुश्शान रुत्बे की भी क्या बात है ! जी हां, हमारे मक्की म-दनी आक़ा मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सारी मख़्लूक़ात में आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ही अफ़्ज़ल हैं ! चुनान्चे फ़क़ीहे मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती जलालुद्दीन अमजदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपनी सुवाल जवाब पर मब्नी किताब "इस्लामी ता'लीम" **सफ़ह़ा** 194 ता 195 पर फ़रमाते हैं : "हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब से बड़े मर्तबे वाले ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हैं। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام फिर **ह़ज़रते** सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और (फिर) ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ **नजिय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, इन ह़ज़रात को मुर-सलीने ऊलुल अ़ज़्म कहा जाता है।"

(इस्लामी ता'लीम, स. 195, बि तग़य्युर)

शजर व ह़जर भी रोने लगते : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 160 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**ख़ौफ़े ख़ुदा**" **सफ़ह़ा** 45 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना **यह़्या** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब **नमाज़** के लिये खड़े होते तो (ख़ौफ़े ख़ुदा से) इस क़दर **रोते** कि दरख़्त और मिट्टी के ढेले भी साथ रोने लगते ह़त्ता कि आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वालिदे मोह़्तरम ह़ज़रते सय्यिदुना ज़-करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी देख कर **रोने** लगते यहां तक कि बेहोश हो जाते। मुसल्सल बहने वाले आंसूओं के सबब ह़ज़रते सय्यिदुना **यह़्या** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रुख़्सारे मुबारक (या'नी बा ब-र-कत गालों) पर **ज़ख़्म** हो गए थे। वालिदा माजिदा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पाकीज़ा रुख़्सारों पर **पश्मीने** (या'नी ऊन) की **पट्टियां चिपटा** देती थीं। जब भी आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

नमाज़ के लिये खड़े होते तो **रोना** शुरूअ़ कर देते, जिस के नतीजे में वोह ऊनी **पट्टियां** भीग जातीं । वालिदए मोह़-त-रमा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا उन्हें ख़ुश्क करने के लिये जब निचोड़तीं और आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी आंखों से निकलने वाले पानी को अपनी मां के बाज़ू पर गिरता हुवा देखते तो बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ अ़र्ज़ करते : **"ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! येह मेरे आंसू हैं, येह मेरी मां है और मैं तेरा बन्दा हूं जब कि तू अर-ह़मुर्राह़िमीन या'नी सब से ज़ियादा रह़्म फ़रमाने वाला है ।"**

(اِحیاءُ الْعُلوم ج ٤ ص ٢٢٥)

शराबे मह़ब्बत कुछ ऐसी पिला दे
कभी भी नशा हो न कम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 81)

जन्नत व जहन्नम के दरमियान घाटी है : नबी इब्ने नबी, ह़ज़रते सय्यिदुना **यह़्या** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام एक मर्तबा कहीं खो गए । आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना ज़-करिय्या عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तीन दिन तक तलाशते रहे, आख़िरे कार एक मक़ाम पर इस ह़ाल में नज़र आए कि एक खुदी हुई **क़ब्र** में खड़े रो रहे हैं । फ़रमाया : ऐ मेरे लाल ! मैं तीन दिन से ढूंड रहा हूं और तुम यहां क़ब्र में खड़े **आंसू** बहा रहे हो ? अ़र्ज़ की : **बाबाजान !** क्या आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मुझे नहीं बताया था कि **जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान एक घाटी है जिसे वोही तै कर सकता है जो बहुत रोने वाला हो,** तो आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : मेरे बेटे ! **रोओ** और येह फ़रमा कर ख़ुद भी उन के साथ मिल कर **रोने** लगे ।

(شُعَبُ الْاِیمان ج١ ص٤٩٣ حدیث ٨٠٩)

सरफ़राज़ और सुर्ख़-रू मौला
मुझ को तू रोज़े आख़िरत फ़रमा

(वसाइले बख़्शिश, स. 113)

आंसू के हर क़त़रे से एक फ़िरिश्ते की पैदाइश : **सुल्त़ाने** अम्बियाए किराम, **शाहे ख़ैरुल अनाम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ फ़िरिश्ते ऐसे हैं जिन के पहलू उस (عَزَّوَجَلَّ) के **ख़ौफ़** से लरज़ते रहते हैं, उन की आंख से गिरने वाले हर आंसू के **क़त़रे** से एक **फ़िरिश्ता** पैदा होता है, जो खड़े हो कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान करना शुरूअ़ कर देता है।

(شُعَبُ الْإِيمان ج١ص٥٢١ حديث ٩١٤)

तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा
मैं थरथर रहूं कांपता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

रोने वाला हरगिज़ जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा : **रह़मते** आ़-लमियान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने वाला हरगिज़ **जहन्नम** में दख़िल नहीं होगा ह़त्ता कि दूध थन में वापस आ जाए।" (شُعَبُ الْإِيمان ج١ص٤٩٠ حديث ٨٠٠) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जैसे दोहे हुए दूध का थन में वापस होना ना मुम्किन है ऐसे ही उस शख़्स का दोज़ख़ में जाना ना मुम्किन है। जैसे रब तआ़ला फ़रमाता है :

حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ (پ٨ الاعراف ٤٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब तक सूई के नाके ऊंट न दाख़िल हो।

ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने के बड़े फ़ज़ाइल हैं **अल्लाह** तआ़ला नसीब फ़रमा दे।

(मिरआत, जि. 5, स. 436)

क़ल्बे मुज़्त़र की लाज रख मौला
येह सदा मेरी चश्मे नम की है

(वसाइले बख़्शिश, स. 125)

ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने वाला बख़्श दिया जाएगा : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे ख़ुश गवार है : जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस की बख़्शिश फ़रमा देगा। (ابنِ عدی ج٥ ص٣٩٦)

सोज़िशे सीना व जिगर दे दे
आरज़ू मुझ को चश्मे नम की है

(वसाइले बख़्शिश, स. 125)

अगर आप नजात चाहते हैं तो......: ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! **नजात** क्या है ? फ़रमाया : ﴾1﴿ **अपनी ज़बान** को रोक रखो (या'नी अपनी ज़बान वहां खोलो जहां फ़ाएदा हो, नुक़्सान न हो) और ﴾2﴿ तुम्हारा **घर** तुम्हें किफ़ायत करे (या'नी बिला ज़रूरत घर से न निकलो) और ﴾3﴿ **गुनाहों** पर **रोना** इख़्तियार करो।

(سُنَنِ ترمذی ج٤ ص١٨٢ حدیث٢٤١٤)

लाइक़े नार हैं मेरे आ'माल
इल्तिजा या ख़ुदा करम की है

(वसाइले बख़्शिश, स. 125)

मूसला धार बारिश शुरूअ़ हो गई : ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा में रोना मुक़द्दर वालों का ह़िस्सा है, रोने की सआ़दत पाने के लिये रोने वालों की सोह़बत निहायत मुफ़ीद होती है। तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में आप को ब कसरत रोने वाले मिलेंगे। आप भी आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत इख़्तियार कीजिये इन के साथ म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनिये, अगर रोना नहीं आता था तो आप को भी اِنْ شَآءَاللّٰہ **रोना** आ जाएगा। आप की तरग़ीब के लिये एक **म-दनी बहार** पेश की

जाती है चुनान्चे सुन्नतों की तरबिय्यत का एक म-दनी क़ाफ़िला 12 दिन के लिये बाबुल इस्लाम सिन्ध के ज़िल्अ़ "थर पारकर" के एक गाउं **इस्माईल की ढानी** पहुंचा। येह अ़लाक़ा कई सालों से बरसात की ब-रकात से महरूम था, और इस सबब से लोग बहुत परेशान थे। नमाज़ के बा'द लोगों ने म-दनी क़ाफ़िले वालों से **बारिश की दुआ़** के लिये कहा, आ़शिक़ाने रसूल ने हाथ उठा दिये, सारे नमाज़ी भी दुआ़ में शामिल थे, अभी दुआ़ जारी थी कि एक दम काले काले बादल उमंड आए, रह़मत की घन्घोर घटा छा गई और देखते ही देखते **मूसला धार बारिश** शुरूअ़ हो गई जब कि कुछ देर क़ब्ल मत़्लअ़ बिल्कुल साफ़ था और सूरज पूरी आबो ताब से चमक रहा था। सारे गाउं में **म-दनी क़ाफ़िले** की इस ब-र-कत की धूम मच गई। वहां के उ़-लमा व **अइम्माए** किराम ने इस बरसने वाली बारिश **को दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िले वाले **आ़शिक़ाने रसूल** की दुआ़ का समर (या'नी नतीजा) क़रार दिया।

ख़ूब हों बारिशें, दूर हों ख़ारिशें — क़ह़त़ के दिन टलें, क़ाफ़िले में चलो
बरसे बरसात जब, बाग़ो गुलज़ार सब — लह-लहाने लगें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बरसात के पानी से बीमारियों का इलाज : سُبْحٰنَ الله! म-दनी क़ाफ़िले की भी क्या ख़ूब ब-र-कतें हैं! वाक़ेई बारिश भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत है, क़ुरआने पाक पारह 26 **सूरए** قٓ आयत 9 में बारिश को "مَآءً مُّبٰرَكًا" **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "ब-र-कत वाला पानी" कहा गया है।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 40 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल"** सफ़ह़ा 30 पर है : ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने एक बार फ़रमाया : जब तुम में से कोई शख़्स **शिफ़ा** चाहे तो क़ुरआने अ़ज़ीम की कोई आयत रिकाबी में लिखे और **बारिश के पानी** से धोए और अपनी औ़रत से उस के **महर**

में से एक दिरहम उस की ख़ुशी से ले उस का **शहद** ख़रीद कर पिये कि बेशक **शिफ़ा** है ।

(اَلْمَواهِبُ اللَّدُنِّيَّة ج ٣ ص ٤٨, फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 155)

एक त़बीब का कहना है **:** मैं ने कई मरीज़ों को मुख़्तलिफ़ अमराज़ में **शहद** और **बारिश का पानी** दिया है इसे दीगर नुस्ख़ों से बढ़ कर नफ़्अ़ बख़्श पाया है ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ौफ़े ख़ुदा से रोना सुन्नत है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि जब येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई **:**

اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ﴿٦٠﴾ (پ٢٧، النجم ٥٩، ٦٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या इस बात से तुम **तअ़ज्जुब** करते हो, और हंसते हो और रोते नहीं ।

तो **अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم इस क़दर **रोए** कि उन के मुबारक रुख़्सार (या'नी पाकीज़ा गाल) आंसूओं से तर हो गए। उन्हें रोता देख कर **रह़मते आ़लम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم भी **रोने** लगे । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बहते हुए **आंसू** देख कर वोह साह़िबान और भी ज़ियादा **रोने** लगे । फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** वोह शख़्स जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा जो **अल्लाह** तआ़ला के डर से रोया हो ।

(شُعَبُ الْإِيمان ج١ ص٤٨٩ حديث ٧٩٨)

अल्लाह ! क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा ?
रो रो के मुस्त़फ़ा ने दरिया बहा दिये हैं

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : इस शे'र में **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार के दरबारे गुहर बार में अ़र्ज़ गुज़ार हैं **: या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** क्या जहन्नम की आग ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा के ह़क़ में अब भी

सर्द न होगी ! मेरे प्यारे प्यारे परवर दगार ! तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत की बख़्शिश के लिये दुआ़एं करते हुए इतना रोए हैं इतना रोए हैं गोया रो रो कर दरिया बहा दिये हैं ।

ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार बख़्श दे अब तू लाजे मह़बूब रख ही ले अब
हमारा ग़म ख़्वार फ़िक्रे उम्मत में देख आंसू बहा रहा है

(वसाइले बख़्शिश, स. 310)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रोने जैसी सूरत बना ले : **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "जो शख़्स **रो** सकता हो तो रोए और अगर रोना न आता हो तो रोने जैसी सूरत बना ले ।" (إحياءُ العُلوم ج ٤ ص ٢٠١) **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** यक़ीनन अच्छों की नक़्ल भी अच्छी होती है : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 318 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"फ़ज़ाइले दुआ़"** सफ़ह़ा 81 पर दुआ़ की क़बूलिय्यत के आदाब में **अदब नम्बर 33** है : (दुआ़ के दौरान) "आंसू टपक्ने में कोशिश करे अगर्चे एक ही क़त़रा हो कि दलीले इजाबत (या'नी क़बूलिय्यत की दलील) है । रोना न आए तो **रोने** का सा मुंह बनाए कि नेकों की सूरत भी नेक (या'नी अच्छी) है ।" दुआ़ के बयान कर्दा **अदब** की शर्ह़ में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : येह (रोनी) सूरत बनाना ब निय्यते **तशब्बोह** (या'नी रोने वालों की नक़्क़ाली) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़ुज़ूर (या'नी बारगाहे इलाही में) है न कि औरों के दिखाने को कि वोह (या'नी लोगों को दिखाने के लिये करना) **रिया** है और **ह़राम**, येह नुक्ता याद रहे ।

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता
मुझे रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

(वसाइले बख़्शिश, स. 238)

सर और दाढ़ी में आटा छिड़क्ने की अनोखी वसिय्यत : **अच्छों** की नक़्क़ाली के ज़िम्न में "मा'दने अख़्लाक़" हिस्सए अव्वल सफ़हा 54 पर दी हुई एक दिलचस्प **हिकायत** कुछ तब्दीली के साथ अ़र्ज़ करता हूं : एक मस्ख़रे ने मरते वक़्त अपने दोस्त को वसिय्यत की, कि जब मुझे दफ़्न करने लगो तो मेरी दाढ़ी और सर के बालों में "आटा छिड़क देना" दोस्त ने कहा : यार ! तुम ज़िन्दगी में तो मज़ाक़ मस्ख़री करते रहे हो अब आख़िरी वक़्त में तो इस से बाज़ हो ! उस ने कहा : अगर तुम वाक़ेई मेरे ख़ैर ख़्वाह हो तो मैं जो कहता हूं वोह कर देना । दोस्त हंस कर राज़ी हो गया और इन्तिक़ाल के बा'द उस ने दफ़्न करते वक़्त उस की दाढ़ी और सर के बालों पर **आटा** छिड़क दिया । चन्द रोज़ बा'द अपने मर्हूम दोस्त को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने तुम्हारे साथ क्या मुआ-मला फ़रमाया ? मर्हूम बोला : मुझ से सुवाल हुवा, तुम ने **आटा** छिड़क्ने की वसिय्यत क्यूं की थी ? मैं ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मैं ने तेरे महबूब **मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद सुना था : اِنَّ اللّٰهَ یَسْتَحِي عَنْ ذِی الشَّیْبَةِ الْمُسلِم[1] (या'नी बिला शुबा **अल्लाह** तआ़ला मुसल्मान के बुढ़ापे से ह़या फ़रमाता है) बूढ़ा होना मेरे इख़्तियार में न था इस लिये सोचा कि लाओ "बुढ़ापे की सूरत" ही बना लूं । तो **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : जाओ ! मैं ने तुझे बख़्श दिया ।

رحمتِ حق بہا، نہ مے جُوید
رحمتِ حق بہانہ مے جُوید

(**अल्लाह** की रह़मत क़ीमत नहीं मांगती । **अल्लाह** की रह़मत बहाना चाहती है)

सफ़ेद बाल क़ियामत में नूर होंगे : **आज** कल उ़मूमन सिन रसीदा इस्लामी भाई सफ़ेद बालों से कतराते हैं ह़ालां कि मुसल्मान होने की ह़ालत में बुढ़ापे की वजह से सफ़ेद बाल आना बड़ी सआ़दत की बात है चुनान्चे **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

1. (اَلْمُعْجَمُ الاوسط ج٤ ص٨٢ حديث ٥٢٨٦)

है : सफ़ेद बालों को न उखाड़ो क्यूं कि येह क़ियामत के दिन नूर होंगे। जिस का एक बाल सफ़ेद हुवा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक नेकी लिखेगा और उस का एक गुनाह मुआफ़ फ़रमाएगा और उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाएगा। (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج٣ ص٨٦ حديث٦)

आंसू न पोंछने की फ़ज़ीलत : **अमीरुल मुअमिनीन** हज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे खु़दा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "जब तुम में से किसी को ख़ौफ़े खु़दा عَزَّوَجَلَّ से **रोना** आए तो वोह आंसूओं को कपड़े से साफ़ न करे बल्कि रुख़्सारों पर बह जाने दे कि वोह इसी हालत में **रब** तआ़ला की बारगाह में हाज़िर होगा।" (شُعَبُ الْاِيمان ج١ ص٤٩٣ حديث٨٠٨)

रोता हुवा मैं आऊं दाग़े जिगर दिखाऊं
अफ़्साना भी सुनाऊं मैं अपनी बे कसी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 194)

घर में छुप कर रोना अच्छा है : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ख़ौफ़े खु़दा عَزَّوَجَلَّ और इश्के़ मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में बहने वाले **आंसू** बेशक नहीं पोंछने चाहिएं मगर दूसरों की मौजू-दगी में रोते हुए येह ग़ौर कर लेना ज़रूरी है कि न पोंछने से मक़्सूद कहीं येह तो नहीं कि लोग मेरे आंसू देख लें ताकि मुझ से **मु-तअस्सिर** हों कि वाह ! वाह ! बहुत नेक आदमी या बड़ा आ़शिके़ रसूल है ! अगर مَعَاذَالله عَزَّوَجَلَّ ऐसा है तो येह **रियाकारी** है अब आंसू न पोंछने की फ़ज़ीलत कैसी ! उलटा जहन्नम की ह़क़दारी है। जिस को सब के सामने रोने में "रियाकारी" का अन्देशा हो उसे चाहिये कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 74 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"अख़्लाकु़स्सालिह़ीन"** सफ़्ह़ा 30 पर दी हुई इस ह़िकायत को पेशे नज़र रखे चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने एक शख़्स को देखा कि वोह सज्दे में रो रहा है, फ़रमाया : نِعْمَ هٰذَا لَوْ كَانَ فِي بَيْتِكَ حَيْثُ لَا يَرَاكَ النَّاس या'नी येह (रोना) अच्छा काम है अगर घर में होता, जहां लोग न देखते। (تَنبِيهُ الْمُغتَرّين ص ٣٢)

मेरे चेहरे पर कफ़न ढक दीजिये — साथियो रुस्वा मुझे मत कीजिये
बढ़ते जाते हैं गुनह अ़त्तार आह ! — कुछ तो इज़्हारे नदामत कीजिये

(वसाइले बख़्शिश, स. 219)

आंसूओं को दाढ़ी से साफ़ करते : **हज़रते** सय्यिदुना मुहम्मद बिन **मुन्कदिर** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَادِر जब रोते तो अपने चेहरे और दाढ़ी पर आंसू मल लेते और फ़रमाते कि मुझे मा'लूम हुवा है कि **आग उस जगह को न छूएगी जहां ख़ौफ़े ख़ुदा से निकलने वाले आंसू लगे हों ।** (اِحیاءُ العُلوم ج ٤ ص ٢٠١) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالى عليه واٰله وسلَّم

या ख़ुदा बहरे रज़ा अ़त्तार को वोह आंख दे
हो ग़मे मह़बूब में आंसू बहाना जिस का काम

(वसाइले बख़्शिश, स. 154)

रोना न आए तो ब कोशिश रोएं : **हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन **अ़म्र** बिन आ़स رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : "**रोया** करो ! अगर रोना न आए तो **रोने की कोशिश** करो, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम में से किसी को इ़ल्म होता तो वोह इस क़दर चीख़ता कि उस की आवाज़ फट जाती और इस त़रह़ नमाज़ पढ़ता कि उस की पीठ टूट जाती ।" (الزهد لابن المبارك ص٣٥٦ رقم١٠٠٧) येह नक़्ल करने के बा'द **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي **एह़याउल उ़लूम** जिल्द 4 **सफ़ह़ा** 230 पर फ़रमाते हैं : गोया उन्हों ने **नबिय्ये करीम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस ह़दीसे मुबारक की त़रफ़ इशारा किया जिस में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर तुम वोह बात जानते जो मैं जानता हूं तो तुम हंसते कम और रोते ज़ियादा ।"

(بُخاری ج ٤ ص ٢٤٣ حديث ٦٤٨٥)

सोज़िशे इ़श्क़ में जलता ही रहूं मैं हर दम
आंख से ग़म में तेरे ख़ून बरसता देखूं

(वसाइले बख़्शिश, स. 121)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक क़त़रए आंसू से आग के कई समुन्दर बुझा देगा :

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِى फ़रमाते हैं : (ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के बाइस) जो आंखें डब-डबाएंगी (या'नी आंसूओं से भर जाएंगी), उस चेहरे पर क़ियामत के दिन सियाही **और ज़िल्लत** नहीं चढ़ेगी और अगर उन डब-डबाने वाली आंखों से **आंसू** जारी हो जाएंगे तो **अल्लाह** तआ़ला उन **आंसूओं** के पहले क़त़रे के साथ ही आग के कई समुन्दर बुझा देगा और जिस क़ौम में से कोई शख़्स (ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से) रोता है, उस क़ौम पर रह़्म किया जाता है ।

(إحياءُ العُلوم ج ٤ ص ٢٠١)

आग दोज़ख़ की जला ही नहीं सकती उन को
इ़श्क़ की आग में दिल जिन के जला करते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 143)

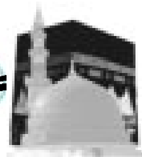
एक हज़ार दीनार स-दक़ा करने से बेहतर एक क़त़रए अश्क :

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन **अ़म्र** बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से **आंसू का एक क़त़रा बहना** मेरे नज़्दीक एक हज़ार दीनार **स-दक़ा** करने से बेहतर है ।" (شُعَبُ الإيمان ج١ص٥٠٢حديث ٨٤٢)

दुर्रे नायाब बिलाशक हैं वोह हीरे अनमोल
अश्क आक़ा की जो यादों में बहा करते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 143)

ज़मीन पर गिरने वाले आंसू के क़त़रे की फ़ज़ीलत : **हज़रते** सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से **आंसू** बहाना मुझे अपने **वज़्न के बराबर सोना** स-दक़ा करने से भी ज़ियादा पसन्दीदा है क्यूं कि जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के डर से रोए और उस के **आंसूओं** का एक क़त़रा भी ज़मीन पर गिर जाए तो **आग उस** (रोने वाले) **को न छूएगी ।** (دُرّةُ النّاصحين ص٢٠٣)


या रब बचा ले तू मुझे नारे जहीम से
औलाद पे भी बल्कि जहन्नम ह़राम हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 189)

ख़ौफ़े ख़ुदा से निकले हुए आंसू का क़त़रा हूर ने चेहरे पर मल लिया :

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अबुल ह़वारी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में एक **हूर** को देखा जिस के चेहरे पर नूर की चमक थी मैं ने पूछा : तुम्हारे चेहरे की येह चमक दमक किस वजह से है ? वोह बोली : तुम्हें वोह रात याद है जिस में तुम रोए थे ? मैं ने कहा : हां । उस ने कहा : तुम्हारे आंसू मुझे ला कर दिये गए तो मैं ने उन को अपने चेहरे पर मल लिया चुनान्चे **मेरे चेहरे की येह चमक दमक आप के उसी आंसू की वजह से है ।** (رسالہ قشیریہ ص ٤٢٢) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

गुनाह के बा वुजूद ख़ुश रहना जहन्नम में गिरा सकता है ! : एक इबादत गुज़ार का क़ौल है : अगर कोई शख़्स गुनाह करे और हंसे तो यक़ीन जानो कि **अल्लाह** तआला उस बेबाक को जहन्नम में डाल देगा और वहां वोह **रोएगा** और अगर कोई शख़्स त़ाअ़त व बन्दगी बजा लाए फिर भी ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के बाइस रोए तो बिल यक़ीन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और वोह वहां ख़ुशी से रहेगा ।

(المنبهات على الاستعداد ليوم المعاد ص ٥ مُلَخَّصا)

उ़म्र बदियों में सारी गुज़ारी — हाए फिर भी नहीं शर्मसारी
बख़्श महबूब का वासित़ा है — या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 134)




बेबाकी से गुनाह करना बहुत सख़्त बात है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यूं तो हर गुनाह बुरा और जहन्नम में ले जाने वाला काम है मगर हंस हंस कर और बेबाकी (या'नी बे ख़ौफ़ी) के साथ गुनाह करना येह बहुत ज़ियादा तबाह कुन होता है, बे धड़क गुनाह कर डालने वालों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब से डर जाना चाहिये, ख़ुदा की क़सम ! जहन्नम की गरमी कोई बरदाश्त नहीं कर सकेगा। **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला पारह 10 **सू-रतुत्तौबह** की आयत नम्बर 81 ता 82 में जहन्नम की ह़ालत के बारे में इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ۝ فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ जहन्नम की आग सब से सख़्त गर्म है किसी त़रह उन्हें समझ होती तो उन्हें चाहिये कि थोड़ा हंसें और बहुत रोएं।

...... तो थोड़ा हंसते और ज़ियादा रोते : सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی मज़्कूरा आयाते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : दुन्या में ख़ुश होना और **हंसना** चाहे कितनी ही दराज़ मुद्दत के लिये हो मगर वोह आख़िरत के **रोने** के मुक़ाबिल थोड़ा है क्यूं कि दुन्या फ़ानी (या'नी फ़ना होने वाली) है और आख़िरत दाइम (या'नी हमेशा रहने वाली) है और बाक़ी है। या'नी **आख़िरत का रोना दुन्या में हंसने और ख़बीस अ़मल (या'नी गुनाह) करने का बदला है। ह़दीस** शरीफ़ में है : **सय्यिदे आ़लम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर तुम जानते वोह जो मैं जानता हूं तो थोड़ा हंसते और बहुत रोते। (صَحیح بُخاری ج ٤ ص٢٤٣ حدیث٦٤٨٥)

मेरे अश्क बहते रहें काश ! हर दम
तेरे ख़ौफ़ से या ख़ुदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

ऐ हंस हंस कर गुनाह करने वालो ! : ऐ हंस हंस कर गुनाह करने वाले नादानो ! इस से क़ब्ल कि मौत तुम्हारी ग़फ़्लत भरी हंसी का ख़ातिमा कर दे सच्ची तौबा कर लो ! ख़ुद को डराने, सन्जीदा बनाने और जहन्नम में रोते हुए जाने से बचाने के लिये इस रिवायत पर ग़ौर करो ! जिस में सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहन्शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है : ऐ लोगो ! रोया करो और अगर न हो सके तो रोने की कोशिश किया करो क्यूं कि जहन्नम में जहन्नमी रोएंगे यहां तक कि उन के आंसू उन के चेहरों पर ऐसे बहेंगे गोया वोह नालियां हैं, जब आंसू ख़त्म हो जाएंगे तो ख़ून बहने लगेगा और आंखें ज़ख़्मी हो जाएंगी कि उन में अगर कश्तियां डाली जाएं तो चलने लगें । (شرحُ السّنة للبغوی ج۷ ص٥٦٥ حدیث٤٣١٤) **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी जीते जी अपने गुनाहों के डर, रब (عَزَّوَجَلَّ) के ख़ौफ़, उस की रह़मत के शौक़, उस के ह़बीब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) के इश्क़ में जितना हो सके **रो** लो ऐसे रोने का अन्जाम (عَزَّوَجَلَّ) اِنْ شَآءَالله ख़ुशी व शादमानी है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 545)

मुझ ख़ताकार पर भी अ़ता कर — बे ह़िसाब बख़्श दे रब्बे अक्बर
मुझ को दोज़ख़ से डर लग रहा है — या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 132)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ की चोट ने कहां से कहां पहुंचा दिया ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैत़ान को भगाने, सोई हुई क़िस्मत जगाने, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में **रोने** का जज़्बा बढ़ाने सच्ची तौबा की सआ़दत पाने, ग़मे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में आंसू बहाने और अपना सीना मदीना बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये,

अपने ईमान की हि़फ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ **"फ़िक्रे मदीना"** कर के म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करते रहिये और हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस म-दनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" के हुसूल की ख़ात़िर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक **म-दनी बहार** सुनाऊं : तांदलिया नवाला (ज़िल्अ़ सरदारआबाद पंजाब पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने जब पहली बार (1426 सि. हि. ब मुत़ाबिक़ 2005 सि. ई.) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के बैनल अक़्वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (सह़राए मदीना, मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ पाकिस्तान) में शिर्कत की तो **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गया और इस क़दर जज़्बा मिला कि बाबुल मदीना कराची आ कर **दा'वते इस्लामी** के जामिअ़तुल मदीना में **दर्से निज़ामी** के अन्दर दाख़िला ले लिया और येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दौरए ह़दीस** कर रहा हूं। मेरा एक दोस्त पहले **म-दनी माह़ोल** में था मगर वोह शराबी दोस्तों की सोह़बत के सबब ख़राब हो गया और مَعَاذَاللّٰہ नमाज़ पढ़नी भी छोड़ दी। मुझे इस का बहुत क़लक़ (या'नी दुख) था। मैं जब भी अपने गाउं मसरीरा चक, तांदलिया नवाला जाता उस पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करता, वोह सुनी अनसुनी कर देता, मगर मैं ने हिम्मत न हारी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने (1427 सि. हि. ब मुत़ाबिक़ 2006 सि. ई.) में फिर उस को बैनल अक़्वामी तीन रोज़ा **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** (सह़राए मदीना, मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ पाकिस्तान) की दा'वत पेश की। इज्तिमाअ़ आया और गुज़र गया मेरी उन से मुलाक़ात न हो सकी। ईद के दिन मैं ने अपने घर में से झांका तो एक हलकी सी दाढ़ी वाले बा इमामा इस्लामी भाई दूर से हमारे घर की त़रफ़ बढ़े चले आ रहे थे, मैं उन को पहचान न सका, जब वोह क़रीब आए तो मैं ख़ुशी से उछल पड़ा क्यूं कि येह तो मेरे वोही बिछड़े हुए

दोस्त थे, मैं ने दौड़ कर जोशे **मह़ब्बत** में उन को सीने से चिमटा लिया । और म-दनी माह़ोल में वापसी पर मुबारक बाद पेश की । जब इस म-दनी इन्क़िलाब का सबब दरयाफ़्त किया तो कहने लगे : आप की दा'वत पर तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (सह़राए मदीना मुलतान शरीफ़ पाकिस्तान) में ह़ाज़िर हुवा था, वहां इख़्तितामी रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ में मेरे दिल पर म-दनी चोट लग गई, दुआ़ में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सबब **रोना धोना** मचा हुवा था, मेरे ज़मीर ने मुझे झंझोड़ा कि देख तो सही ! नेक परहेज़ गार आ़शिक़ाने रसूल तो गुनाहों से तौबा करते हुए अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में गिड़गिड़ा रहे और **आंसू** बहा रहे हैं जब कि तू तो यक़ीनी त़ौर पर सर ता पा गुनाहों में घिरा हुवा है मगर तुझे इस का कोई एह़सास नहीं ! बस भाई ! मेरा भी बन्द टूटा, मैं भी ख़ूब **रोया** और रो रो कर मैं ने अपने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और उसी वक़्त दाढ़ी शरीफ़ बढ़ाने और इमामए पाक सजाने की पक्की निय्यत कर ली । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने पुरजोश अन्दाज़ में "दा'वते इस्लामी" के म-दनी कामों की धूमें मचानी शुरूअ़ कर दीं । आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची ह़ाज़िर हो कर म-दनी क़ाफ़िला कोर्स करने की भी सआ़दत ह़ासिल की और तरक़्क़ी करते करते आठ नव माह में दा'वते इस्लामी की ज़ैली मुशा-वरत के निगरान बन गए ।

बुरी सोह़बतों से कनारा कशी कर — के अच्छों के पास आ के पा म-दनी माह़ोल
तनज़्ज़ुल के गहरे गढ़े में थे उन की — तरक़्क़ी का बाइ़स बना म-दनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कलेजा हिला देने वाली एक सच्ची दास्तान : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस म-दनी बहार से हमें येह दर्स मिला कि बिल ख़ुसूस अपने जानने पहचानने वालों की बद आ'मालियों पर दिल जलाते रहना और उन पर इन्फ़िरादी कोशिश का सिल्सिला जारी रखना चाहिये कि न जाने कब किसी का दिल चोट खा जाए ! नीज़ येह भी दर्स मिला कि **बुरी सोह़बत** से हमेशा बच कर रहना चाहिये कि येह अच्छे भले नेक इन्सान को भी शैत़ान के

क़दमों में ला पटख़्ती है। येह तो उन इस्लामी भाई की ख़ुश नसीबी कि अपने हमदर्द इस्लामी भाई की कुढ़न और इन्फ़िरादी कोशिश के सदक़े **शराबियों** की सोहबतों से बच निकलने में काम्याब हो गए, वरना बुरी सोहबत और बिल ख़ुसूस शराबियों और जूआरियों की संगत ऐसा तबाह करती है कि तबाही भी लरज़ उठती है! **जूआरियों** की सोहबत के भयानक अन्जाम की एक **सच्ची दास्तान** सुनाता हूं, **कलेजा थाम** कर सुनिये और बुरी सोहबत से हमेशा हमेशा के लिये **तौबा** कीजिये चुनान्चे पंजाब (पाकिस्तान) के एक महल्ले में एक अ़जीबो ग़रीब बदबू महसूस होने लगी, अ़लाक़े वालों की ख़ूब जुस्त-जू के बा'द कहीं जा कर बदबू का सुराग़ मिला, वोह बदबू एक बन्द घर से आ रही थी। चुनान्चे पोलीस को इत्तिलाअ़ दी गई। जब पोलीस वाले लोगों की मौजू-दगी में ताला तोड़ कर घर के अन्दर दाख़िल हुए **तो येह देख कर सब के रूंगटे खड़े हो गए कि वहां चारपाई पर एक जवान आदमी की लाश पड़ी थी और उस के बा'ज़ हिस्से गल सड़ चुके थे और उन में कीड़े रेंग रहे थे। येह मन्ज़र देख कर बच्चों समेत कई अफ़राद बेहोश हो गए।** तहक़ीक़ करने पर पता चला कि येह नौ जवान मेहनत मज़दूरी करने के लिये इस अ़लाक़े में आया था, किराए के मकान में रिहाइश पज़ीर था और बा'ज़ जूआरियों से इस की दोस्ती थी। एक दिन येह नौ जवान अपने दोस्तों से जूआ में बहुत सारी रक़म जीत गया, हारे हुए जूआरी दोस्तों ने हारी हुई रक़म लूटने के लिये इस के गले में फन्दा कसा और बिजली के करन्ट लगा लगा कर मौत के घाट उतार दिया, फिर इसे बे गोरो कफ़न छोड़ कर ताला लगा कर फ़िरार हो गए।

ऐ जूआरी तू जूए से बाज़ आ वरना फंस जाएगा जिस दिन तू मरा
तू नशे से बाज़ आ मत पी शराब दो जहां हो जाएंगे वरना ख़राब
हो गया तुझ से ख़ुदा नाराज़ अगर
क़ब्र सुन ले आग से जाएगी भर

(वसाइले बख़्शिश, स. 668, 669)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

ख़ुदा से न डरना सब से बड़ा गुनाह है : **हज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا (नेकी की दा'वत देते हुए गुनाहों से डराने के लिये) इर्शाद फ़रमाते हैं : **ऐ गुनाह करने वाले !** तू "बुरे ख़ातिमे" से बे ख़ौफ़ न हो और जब तू कोई गुनाह कर ले तो उस के बा'द उस से बड़ा गुनाह न कर, तेरा दाईं, बाईं जानिब के फ़िरिश्तों से ह़या में कमी करना उस गुनाह से बड़ा गुनाह है जो तूने किया, और तेरा गुनाह कर लेने पर ख़ुश होना इस से भी बड़ा गुनाह है हालां कि तू नहीं जानता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे साथ क्या सुलूक फ़रमाने वाला है, और तेरा किसी **गुनाह के छूटने पर ग़मगीन हो जाना** इस से भी बड़ा गुनाह है और तू (किस क़दर नादान है कि छुप कर) गुनाह (या बदकारी) करते हुए तेज़ हवा से **दरवाज़े का पर्दा उठ जाए** तो डर जाता है मगर तेरा दिल इस बात से नहीं डरता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **तुझे देख रहा है ।** तेरा (ख़ुदा से न डरने का) येह अ़मल इस से भी **बड़ा गुनाह** है ।

(ابن عساکر ج۱۰ص۶۰،جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطی ج۱۵ص۱۰۵حدیث۱۲۴۶۲)

सिल्सिला आह ! गुनाहों का बढ़ा जाता है
नित नया जुर्म हर इक आन हुवा जाता है
इम्तिहां के कहां क़ाबिल हूं मैं प्यारे अल्लाह
बे सबब बख़्श दे मौला तेरा क्या जाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 126)

गुनाह के बारे में नेक और बद की अपनी अपनी कैफ़िय्यत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने किस क़दर उ़म्दा अन्दाज़ में **नेकी की दा'वत** इर्शाद फ़रमाई है ! वाक़ेई गुनाह फिर गुनाह है इस से बाज़ ही रहना चाहिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे इस से बहुत ज़ियादा डरते हैं, मगर गुनाहों के आ़दी लोग इस की ज़रा भी परवाह नहीं करते जैसा कि "बुख़ारी शरीफ़" में **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : "मोमिन अपने गुनाहों को इस अन्दाज़ से देख रहा होता है गोया कि वोह किसी पहाड़ तले बैठा है और इसे डर है कि कहीं येह पहाड़ इस के ऊपर न आ गिरे जब कि फ़ासिक़ व फ़ाजिर के नज़्दीक गुनाहों का मुआ़-मला ऐसा है गोया कोई मख्खी इस की नाक पर बैठी और इस ने हाथ के इशारे से उड़ा दी ।" (بُخاری ج۴ ص ۱۹۰ حدیث۶۳۰۸)

रीछ बन्दर का तमाशा देखना ह़राम है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا की **नेकी की दा'वत** में गुनाह करने से रह जाने पर ग़मगीन होने के **मु-तअ़ल्लिक़** भी ज़िक्र है, इस ज़िम्न में दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत''** सफ़ह़ा 286 पर दिये हुए इब्रत के ''म-दनी फूल'' मुला-ह़ज़ा हों : चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ना जाइज़ बात का तमाशा देखना भी ना जाइज़ है, **बन्दर** नचाना ह़राम है, इस का तमाशा देखना भी ह़राम है। **दुर्रे मुख़्तार व ह़ाशियए अ़ल्लामा तह़त़ावी** में इन मसाइल की तसरीह़ (या'नी वाज़ेह़ बयान) है। आज कल लोग इन (अह़काम) से ग़ाफ़िल हैं। **मुत्तक़ी** लोग जिन को शरीअ़त की एह़तियात़ है, ना वाक़िफ़ी से **रीछ या बन्दर** का तमाशा या **मुर्ग़ों** की पाली (या'नी तरकीब से करवाई जाने वाली मुर्ग़ों की लड़ाई) देखते हैं और नहीं जानते कि इस से गुनहगार होते हैं। ह़दीस में इर्शाद है कि ''अगर कोई मज्मअ़ ख़ैर (या'नी भलाई का इज्तिमाअ़ वग़ैरा) का हो और वोह न जाने पाया और ख़बर मिलने पर इस ने अफ़्सोस किया तो उतना ही सवाब मिलेगा जितना ह़ाज़िरीन को और अगर मज्मए़ शर (या'नी बुराई का मज्मअ़ म-सलन म्यूज़ीकल प्रोग्राम) हो उस ने अपने न जाने पर अफ़्सोस किया तो जो गुनाह उन ह़ाज़िरीन पर होगा वोह इस पर भी (होगा)।''

मौला मुझ को नेक बना दे अपनी उल्फ़त दिल में बसा दे
बहरे सफ़ा और बहरे मर्वह या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 107)

लोगों के सामने ''नेक बनने'' वाले की क़ब्र का अह़वाल : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तैमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (इख़्लास के मु-तअ़ल्लिक़ नेकी की दा'वत देते हुए इर्शाद) फ़रमाते हैं : मैं मौत और अपने मिट जाने को याद करने के लिये कसरत से **क़ब्रिस्तान** आता जाता था, एक रात क़ब्रिस्तान में मुझे नींद ने घेर लिया

और मैं ने ख़्वाब में देखा कि एक **क़ब्र** फटी और आवाज़ आई : "येह ज़न्जीर पकड़ो और इस के मुंह में दाख़िल कर के इस की पिछली शर्मगाह से निकालो।" तो वोह मुर्दा (घबरा कर) कहने ला : "**या रब** عَزَّ وَجَلَّ ! क्या मैं **क़ुरआन** नहीं पढ़ा करता था ? क्या मैं **बैतुल्लाह** का **हज** नहीं करता था ?" इस त़रह़ यके बा'द दी-गरे वोह अपनी नेकियां गिनवाने लगा तो फिर आवाज़ गूंज उठी : बेशक तू लोगों के सामने तो येह आ'माल करता था मगर जब तन्हाई में होता तो ना फ़रमानियों के ज़रीए़ मुझ से ए'लाने जंग करता और मुझ से नहीं डरता था। **(اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْکَبائِر ج۱ ص۳۱)**

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते़ हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लरज़ उठिये ! घबरा कर तौबा कर लीजिये !! यहां वोह नेक नमाज़ी और ब ज़ाहिर सुन्नतों के आ़दी इस्लामी भाई भी इ़ब्रत ह़ासिल करें जो सब के सामने मह़ज़ दिखावे के लिये फ़र्ज़ तो फ़र्ज़ नफ़्ल भी अदा करते हैं मगर तन्हाई में अ़मल से ग़फ़्लत बरतते हैं, नेक नज़र आने के लिये अ़वाम में तो ख़ूब **ह़ुस्ने अख़्लाक़** के पैकर बनते हर एक को एह़तिराम से झुक कर सलाम करते और "जी जनाब" से मुख़ात़िब होते हैं मगर घर में "**शेरे बबर**" की त़रह़ दहाड़ते, ख़ूब तू तुकार और दिल आज़ार गुफ़्त-गू करते बल्कि मारधाड़ तक से भी नहीं चूकते हैं।

छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह
वोह ख़बरदार है क्या होना है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्ह़े कलामे रज़ा : इस शे'र में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नेकी की दा'वत देते हुए फ़रमाते हैं : ऐ गुनाह करने वाले ! तूने लोगों से तो अपने गुनाह छुपा लिये, मगर येह भूल गया कि जिस परवर दगार عَزَّ وَجَلَّ की ना फ़रमानियां की हैं वोह तेरे इन कारनामों से वाक़िफ़ है। आह ! अब मह़शर में तेरा क्या होगा !

दिखावे के आ'माल से तौबा कर लीजिये, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तौबा क़ुबूल करने वाला

मेहरबान है, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1012 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल'' (जिल्द 2) सफ़ह़ा 866 ता 867 पर है : ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : ''गुनाह पर नादिम होने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से रह़मत का इन्तिज़ार करता है और गुनाह पर इतराने (या'नी नादिम न होने) वाला नाराज़ी का इन्तिज़ार करता है और ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! याद रखो ! अ़न्क़रीब हर (अच्छा या बुरा) अ़मल करने वाला अपने अ़मल की बिना पर आगे बढ़ेगा और दुन्या से जाने से पहले अपने अच्छे और बुरे अ़मल का बदला देख लेगा और आ'माल का दारो मदार ख़ातिमों पर है और दिन और रात दो सुवारियां हैं लिहाज़ा इन के ज़रीए आख़िरत की त़रफ़ अच्छा सफ़र इख़्तियार करो और तौबा में ताख़ीर करने से बचो, क्यूं कि मौत अचानक आ जाती है और तुम में से कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़िल्म (या'नी नरमी) से हरगिज़ धोके में न रहे, बेशक आग तुम में से हर एक के जूते के तस्मे से भी ज़ियादा क़रीब है।'' फिर शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह (या'नी पारह 30 **सू-रतुज़्ज़िलज़ाल** सातवीं और आठवीं) आयाते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝۷
وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝۸

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

गुनाहों पर नदामत का नाम तौबा है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ या'नी (गुनाह पर) नादिम होना ही तौबा है। (سُنَنِ ابن ماجه ج٤ص٤٩٢حديث٤٢٥٢)

नदामत की वज़ाह़त : या'नी शरमिन्दगी व नदामत **तौबा** का एक बहुत बड़ा रुक्न है जैसा कि एक ह़दीसे पाक में है : ''ह़ज वुक़ूफ़े अ़-रफ़ा का नाम है।'' (تِرمِذی ج٢ص٢٠٤حديث٨٩٠) नदामत में येह भी ज़रूरी है कि वोह ना फ़रमानी, उस की क़बाह़त (या'नी बुरा होने) और आख़िरत के ख़ौफ़ की वजह से हो मह़्ज़ दुन्यवी

बे इज़्ज़ती या गुनाह में माल ज़ाएअ् होने की वजह से न हो।

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे के गुनाह पर नादिम (या'नी शरमिन्दा) होने को मुला-ह़ज़ा फ़रमा कर उस के **तौबा** करने से पहले ही उसे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।"

(اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج٥ص ٣٦٠ حديث ٧٧٢١)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सत्तर हज़ार कनीज़ों के झुरमट में चलने वाली हूर : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो ख़ुश नसीब अपनी नेकियों पर फूलेगा नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी को भूलेगा नहीं, नेकियां करने के बा वुजूद **इख़्लास** की कमी के ख़ौफ़ से लरज़ेगा और अश्कबारी करेगा वोह काम्याब है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से हंसता हुवा दाख़िले **जन्नत** होगा। जन्नत की आरज़ू में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र कीजिये। **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कीजिये और **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाते रहिये। **नेकी की दा'वत** देने वालों की भी क्या ख़ूब शान है कि **जन्नत** की अ़ज़ीमुश्शान हूर उस की मुन्तज़िर है चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى नक़्ल करते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : **जन्नत** में एक **हूर** जिसे "**ऐनाअ**" कहा जाता है, जब वोह चलती है तो उस की दाईं बाईं त़रफ़ 70 हज़ार कनीज़ें चलती हैं, वोह **हूर** कहती है : **नेकी का हुक्म देने वाले और बुराई से रोकने वाले कहां हैं ?**

(اِحياءُ الْعُلوم ج٥ص ٣١٠)

हूरों के मु-तअ़ल्लिक़ तीन[3] फ़रामीने मुस्त़फ़ा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मरह़बा ! नेकी की दा'वत देने वालों का रुत्बा कितना बुलन्दो बाला है कि **ऐ़ना** जैसी अ़ज़ीमुश्शान **हूर** जन्नत में उस की मुन्तज़िर है ! "हूर" भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क्या ख़ूब मख़्लूक़ है ! इस ज़िम्न में **तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم





मुला-हज़ा फ़रमाइये : ﴾1﴿ जन्नती औ़रतों के सर का दुपट्टा **दुन्या व मा फ़ीहा** (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर है (بُخاری ج۲ص۲۰۲حدیث ۲۷۹۶) ﴾2﴿ हर जन्नती को बड़ी बड़ी आंखों वाली **हूरों** में से दो बीवियां ऐसी मिलेंगी कि 70 जोड़े पहने होंगी फिर भी उन लिबासों और गोश्त के बाहर से उन की पिंडलियों का मग़ज़ दिखाई देगा जैसे सफ़ेद शीशे में सुर्ख़ शराब दिखाई देती है (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر ج۱۰ص۱۶۰حدیث ۱۰۳۲۱) ﴾3﴿ अदना जन्नती के पास दुन्या की बीवियों के इलावा 72 हूरें होंगी ।

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج۳ص۶۴۰حدیث۱۰۹۳۲)

मर्द को हूर मिलेगी जन्नती औ़रत को क्या मिलेगा ?

सुवाल : जन्नती मर्द को हूर मिलेगी, जन्नती औ़रत के लिये क्या तरकीब होगी ?

जवाब : जो मियां बीवी जन्नत में जाएंगे वोह वहां भी इकट्ठे रहेंगे और जिस औ़रत का शोहर مَعَاذَاللّٰہ जहन्नम में जाएगा उस का किसी जन्नती मर्द के साथ निकाह़ कर दिया जाएगा ।

कमसिन बच्चे का जन्नत में निकाह़

सुवाल : कमसिन बच्चा जन्नत में जाएगा तो क्या उस का भी निकाह़ होगा ?

जवाब : जी हां । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन **ह़जर मक्की शाफ़ेई** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : कमसिन बच्चा ह़श्र में दुन्यावी उ़म्र और जसामत पर उठाया जाएगा फिर जन्नत में दाख़िले के वक़्त उस की जसामत बढ़ा दी जाएगी और वोह बालिग़ की त़रह़ दाख़िले जन्नत होगा और दुन्यावी औ़रतों और हूरों के साथ उस का निकाह़ कर दिया जाएगा ।

(فتاوی حدیثیه ص۲۴۵)

कुंवारे फ़ौत होने वालों का निकाह़

सुवाल : जो मुसल्मान मर्द व औ़रत कुंवार पन में रुख़्सत हुए हों क्या उन के भी निकाह़ की कोई सूरत होगी ?




जवाब : जिन मर्दों या औरतों का सारी ज़िन्दगी निकाह नहीं होता उन का भी जन्नत में एक दूसरे से निकाह कर दिया जाएगा ।

जन्नती औरतें अफ़्ज़ल या हूरें ?

सुवाल : दुन्या की जन्नती औरतें अफ़्ज़ल हैं या हूरें ?

जवाब : दुन्या की जन्नती औरतें हूरों से अफ़्ज़ल हैं । चुनान्चे "त़-बरानी" की एक त़वील ह़दीसे पाक में येह भी है : **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुन्या की औरतें अफ़्ज़ल हैं या बड़ी आंखों वाली जन्नती हूरें ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "दुन्या की औरतें बड़ी आंखों वाली जन्नती हूरों से अफ़्ज़ल हैं ।" **उम्मुल मुअमिनीन** ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! किस वजह से ? तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "येह इन के नमाज़ और रोज़े और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने की वजह से है ।" (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرانی ج۲۳ ص ۳٦۷ حديث ۸۷۰) एक और ह़दीसे पाक में है : दुन्या की जन्नती औरतें हूरों से 70 हज़ार द-रजे अफ़्ज़ल हैं । (اَلتَّذْكِرة للقرطبی ص ٤٥٨) जलीलुल क़द्र ताबेई ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़िबान बिन अबू ज-बलह** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : दुन्या की वोह औरतें जो जन्नत में जाएंगी अपने नेक कामों की वजह से जन्नत की हूरों से अफ़्ज़ल होंगी ।

(تفسير قرطبی ج١٦ ص١١٣)

कई शोहरों वाली जन्नत में किस के साथ होगी ?

सुवाल : अगले शोहर की फ़ौतगी या त़लाक़ वग़ैरा की सूरत में जिस औरत ने एक से ज़ियादा शादियां की हों वोह जन्नत में कौन से शोहर के साथ रहेगी ?

जवाब : अगर कोई औरत यके बा'द दी-गरे एक से ज़ियादा मर्दों के निकाह में आई तो एक क़ौल के मुत़ाबिक़ जिस के निकाह में सब से आख़िर में थी जन्नत में उसी

के साथ होगी । जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दरदाअ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : "औ़रत जन्नत में अपने उस शोहर के निकाह़ में दी जाएगी जो दुन्या में उस का सब से आख़िरी शोहर था ।" (مسند الشامیین للطبرانی ج۲ ص۳۵۹ حدیث۱۴۹۶) दूसरा क़ौल येह है जिस का अख़्लाक़ ज़ियादा अच्छा होगा उसे मिलेगी जैसा कि **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! बा'ज़ औ़रतें दुन्या में दो, तीन या चार शोहरों से (यके बा'द दी-गरे) शादी करती हैं, फिर मरने के बा'द वोह जन्नत में इकठ्ठे हों तो वोह औ़रत किस शोहर के लिये होगी ? इर्शाद फ़रमाया : उसे इख़्तियार दिया जाएगा और जिस ख़ावन्द का अख़्लाक़ दुन्या में सब से अच्छा होगा वोह उस को इख़्तियार करेगी, वोह कहेगी : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरे इस ख़ावन्द का अख़्लाक़ सब से अच्छा था लिहाज़ा इस के साथ मेरा निकाह़ फ़रमा दे । (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر ج ۲۳ ص۳۶۷ حدیث ۸۷۰) इन दोनों अह़ादीस व अक़्वाल में कोई तआ़रुज़ (या'नी टकराव) नहीं । जैसा कि **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन **ह़जर मक्की शाफ़ेई** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जिस औ़रत ने यके बा'द दी-गरे कई निकाह़ किये हों तो एक सूरत येह है कि हर शोहर ने उस को त़लाक़ दे दी हो और जब वोह फ़ौत हुई तो किसी के निकाह़ में न थी तो सिर्फ़ इसी ह़ालत में इस को इख़्तियार दिया जाएगा और जिस ख़ावन्द का अख़्लाक़ दुन्या में सब से अच्छा होगा उसे मिलेगी । जैसा कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की ह़दीस में मज़्कूर है । और दूसरी सूरत येह है कि इस ने **मु-तअ़द्दिद** निकाह़ किये हों और आख़िरी ख़ावन्द ने इस को त़लाक़ न दी हो और वोह इस के निकाह़ में फ़ौत हुई इस सूरत में वोह जन्नत में आख़िरी ख़ावन्द के निकाह़ में होगी जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दरदाअ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ह़दीस में है ।

(مُلَخَّص ازفتاوی حدیثیه ص ۷۰، ۷۱)

अख़्लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो सुथरा
महबूब का सदक़ा तू मुझे नेक बना दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 103)

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

लोगों को नफ़्अ़ पहुंचाना : **हज़रते** सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा, ताजदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मन्फ़अ़त निशान है : **मोमिन** से उल्फ़त की जाती है और उस (शख़्स) में कोई भलाई नहीं जो न किसी से उल्फ़त (या'नी **महब्बत**) रखे न उस से उल्फ़त की जाए और लोगों में से बेहतर वोह है जो लोगों को **नफ़्अ़** पहुंचाए। (شُعَبُ الْاِیمان ج٦ ص١١٧ حدیث ٧٦٥٨)

डाकूओं ने सारी बस लूट ली मगर मुझे छोड़ दिया : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेक बन्दों से लोग **महब्बत** करते हैं यहां तक कि बसा अवक़ात डाकू भी नेक बन्दों का एह्तिराम करते हुए उन्हें लूटने से बाज़ रहते हैं चुनान्चे दाढ़ी, ज़ुल्फ़ों से मुज़य्यन सुन्नतों भरे लिबास में मल्बूस बा इमामा रहने वाले एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी जो कि "म-दनी इन्आ़मात" के आ़मिल होने के साथ साथ तन्ज़ीमी तौर पर इस के ज़िम्मेदार भी हैं। उन का कुछ इस त़रह़ बयान है कि एक बार मैं जेब में काफ़ी रक़म लिये हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध पाकिस्तान) से बाबुल मदीना कराची आने के लिये बस में सुवार हुवा। बस अभी ब मुश्किल आधा घन्टा चली होगी कि अचानक मुख़्तलिफ़ निशस्तों से चार पांच अफ़राद एक दम अस्लह़ा तान कर खड़े हो गए। उन में जो सब से क़द आवर था उस ने लपक कर ड्राइवर को एक ज़ोरदार त़मांचा जड़ दिया और उसे धकेल कर ड्राइविंग सीट पर क़ाबिज़ हो गया, बस एक कच्चे रास्ते में उतार दी गई, अब **डाकूओं** ने चलती बस में हर एक की जामा तलाशी लेनी और लूटना शुरूअ़ कर दिया। बस में शदीद ख़ौफ़ो हिरास था,

मैं भी एक दम सहमा हुवा था, मेरी अगली निशस्त पर मज़्बूत़ क़दो क़ामत के नौ जवान बैठे थे और मुझे अन्देशा था कि कहीं ऐसा न हो कि येह डाकूओं के ख़िलाफ़ मुज़ा-ह़मत करें और वोह गोली चला दें। बहर ह़ाल मैं ने एह़तियात़न तज्दीदे ईमान करने के बा'द आंखें बन्द कर लीं, मेरे बराबर जो साह़िब बैठे हुए थे एक **डाकू** ने उन की तलाशी ली और जो हाथ आया छीन लिया। मगर मुझे हाथ न लगाया, दूसरा **डाकू** आया उस ने भी उन्हीं साह़िब की तलाशी ली, मज़ीद उन की किसी जेब से 100 रुपै का नोट बरआमद हुवा वोह भी लूट लिया और मुझे छेड़े बिग़ैर जाने लगा, तीसरे **डाकू** ने मेरी त़रफ़ इशारा कर के आवाज़ दी **मौलाना साह़िब को मत लूटना** येह देख कर मेरे पीछे बैठे हुए किसी पेसेन्जर ने मौक़अ़ पा कर अपनी रक़म की गड्डी मेरी पीठ की त़रफ़ कुरते के अन्दर सरका दी, किसी ख़ातून ने पीछे से सोने का लॉकिट नीचे मेरे पाउं की त़रफ़ फेंक दिया (इस का इ़ल्म मुझे बा'द में हुवा) बहर ह़ाल **डाकू** लूटमार करने के बा'द बस से उतरे और फ़िरार हो गए। अब बस के लुटे हुए पेसेन्जरों की आवाज़ निकली, शोरो ग़ुल और वावेला शुरूअ़ हो गया, किसी ने मेरी त़रफ़ इशारा कर के चिल्ला कर कहा : इस मौलाना को पकड़ लो येह **डाकूओं का आदमी** मा'लूम होता है क्यूं कि हम सब को लूटा इस को नहीं लूटा, मैं डर गया कि अब गए ! येह लोग कहीं मुझे तोड़फोड़ न डालें, यकायक ग़ैबी मदद यूं आई कि उन्हीं मुसाफ़िरों में से किसी ने कुछ इस त़रह़ कहा : नहीं नहीं भाइयो ! येह शरीफ़ आदमी है, इस का लिबास और चेहरा नहीं देखते ! बस इस की नेकी आड़े आ गई और बच गया, हम लोग गुनहगार हैं, हमें गुनाहों की सज़ा मिली है।

डाकूओं से हि़फ़ाज़त का राज़ : **उन** इस्लामी भाई का मज़ीद बयान है : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पहले डाकूओं से हि़फ़ाज़त हुई और बा'द में लुटे हुए मुसाफ़िरों की त़रफ़ से आने वाली शामत दूर हुई। येह **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत की "म-दनी बहार" है कि मैं दाढ़ी, ज़ुल्फ़ों और इमामा शरीफ़ का ताज सजाए सुन्नतों भरे लिबास में मल्बूस रहता हूं वरना मुझे भी शायद बे दर्दी से लूट लिया जाता। म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं फ़ुल मॉडर्न रहता और स्टेज डिरामों में काम किया करता था। **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

का करम हुवा कि मुझ गुनहगार को दा'वते इस्लामी ने **तौबा** का रास्ता दिखाया, नमाज़ी बनाया, सुन्नतों का रंग चढ़ाया, ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सिलसिले में मुरीद बनने का शरफ़ दिलाया, नेक बनने के नुस्ख़े या'नी **म-दनी इन्आ़मात** का आ़मिल और अपने पीर साह़िब की त़रफ़ से मिलने वाले ''श-ज-रए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या'' के कुछ न कुछ अवराद पढ़ने वाला बनाया जिस में एक विर्द येह भी है : بِسْمِ اللهِ عَلٰى دِيْنِىْ بِسْمِ اللهِ عَلٰى نَفْسِىْ وَوُلْدِىْ وَاَهْلِىْ وَمَالِىْ या'नी **अल्लाह** तआ़ला के नाम की ब-र-कत से मेरे दीन, जान, औलाद और अह्ल व माल की ह़िफ़ाज़त हो। (तरजमा पढ़ना ज़रूरी नहीं, अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये) **फ़ज़ीलत :** येह दुआ़ जो रोज़ाना सुब्ह़ व शाम तीन तीन बार पढ़ ले उस के दीन, ईमान, जान, माल, बच्चे सब मह़फ़ूज़ रहें। (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं रोज़ाना सुब्ह़ व शाम येह विर्द पढ़ता हूं, मेरा ह़ुस्ने ज़न है कि डाकूओं से ह़िफ़ाज़त अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रह़मत से इसी **विर्द** की ब-र-कत से हुई है। जब दुन्या में इस का येह समर (या'नी फ़ाएदा) है तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मरते वक़्त ईमान भी सलामत रहेगा। मेरी तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से म-दनी इल्तिजा है कि दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहें और मक-त-बतुल मदीना से म-दनी इन्आ़मात का रिसाला ह़ासिल कर के उस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करें, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहानों में बेड़ा पार होगा।

सुब्ह़ व शाम की ता'रीफ़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की भी क्या ख़ूब **म-दनी बहारें** हैं ! मज़्कूरा विर्द करने के अवक़ात या'नी ''सुब्ह़ व शाम'' की ता'रीफ़ भी समझ लीजिये, चुनान्चे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ **श-ज-रए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या** सफ़ह़ा 10 पर है : आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक ''सुब्ह़'' है। इस सारे वक़्फ़े में जो कुछ पढ़ा जाए उसे सुब्ह़ में पढ़ना कहेंगे और दो पहर ढले (या'नी इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर) से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक ''शाम'' है। इस पूरे वक़्फ़े में जो कुछ पढ़ा जाए उसे शाम में पढ़ना कहेंगे।

ना फ़रमानों से लोग नफ़्रत करते हैं : **गुनाह** करना दोनों जहानों के लिये बाइसे नुक़्सान व ख़ुसरान है और गुनहगारों के लिये लोगों के दिलों से भी एह़तिराम निकल जाता है, इस ज़िम्न में **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 853 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल"** जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 66 ता 67 पर **"नेकी की दा'वत"** के म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से महकती 6 रिवायात मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ﴾1﴿ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهَا ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ को तह़रीर भिजवाई : **اَمَّـابَعد** (या'नी ह़म्दो सलात के बा'द) जब बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी का कोई अ़मल करता है तो उस की ता'रीफ़ करने वाले लोग उस की मज़म्मत करने लगते हैं (الزهدللامام احمد بن حنبل ص ١٨٦ حديث ٩١٧) ﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : इस बात से डरो कि मुअमिनीन के दिल तुम से नफ़्रत करने लगें और तुम्हें इस का शुऊ़र (पता) भी न हो (الزهدلابی داود ص ٢٠٥ رقم ٢٢٩) ﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना फुज़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : जो बन्दा तन्हाई में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुअमिनीन के दिलों में उस के लिये अपनी नाराज़ी इस त़रह़ डाल देता है कि उसे इस का शुऊ़र (पता) भी नहीं होता। ﴾4﴿ इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِين जब मक़रूज़ हुए और उन्हें क़र्ज़ के सबब शदीद ग़म लाह़िक़ हुवा तो फ़रमाया : मैं अपने इस ग़म का सबब चालीस साल पहले सरज़द होने वाले एक **गुनाह** को समझता हूं। (حِلْيَةُ الْاَولياء ج٢ ص٣٠٧ رقم ٢٣٣٤) ﴾5﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान **तैमी** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : आदमी पोशीदा त़ौर पर एक **गुनाह** करता है तो इस की वजह से उस पर ज़िल्लत त़ारी हो जाती है (كتـاب التّوبة مع موسوعة ابن اَبِی الدُّنيا ج٣ ص ٤٢٤ رقم ٩٥) ﴾6﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : मुझे उस आ़क़िल पर तअ़ज्जुब है जो अपनी दुआ़ में तो येह कहता है कि **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मुसीबत में मुब्तला कर के मेरे दुश्मनों को ख़ुश न करना, ह़ालां कि दुश्मन को अपनी मुसीबत पर ख़ुश करने के अस्बाब वोह ख़ुद ही पैदा करता है ! आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा गया :

वोह कैसे ? तो जवाबन फ़रमाया : वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है और इस त़रह़ क़ियामत के दिन अपने दुश्मनों को ख़ुश करेगा ।

(اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْكَبائِر ج١ ص٢٩، ٣٠)

यहां भी दे इ़ज़्ज़त, वहां भी दे इ़ज़्ज़त
इलाही ! पए मुस्त़फ़ा जाने रह़मत

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इन्सानिय्यत की सब से बड़ी ख़िदमत कौन सी है ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लोगों को **नेकी की दा'वत** देना और इन को गुनाहों से बचाना भी यक़ीनन बहुत बड़ा नफ़्अ़ पहुंचाने वाला काम है, बीमारी, बे रोज़गारी, क़र्ज़दारी वग़ैरा परेशानियों के मवाक़ेअ़ पर प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत की ह़ाजत बरआरी भी बेशक नेकोकारी है और उस में जन्नत की ह़क़दारी है **मगर इन्सानिय्यत की सब से बड़ी ख़िदमत येही है कि उस को जहन्नम से बचाने की तदबीर की जाए ।** येह इन्सान को पहुंचाया जाने वाला **सब से बड़ा नफ़्अ़ है । मन्क़ूल** है : दो ख़स्लतें ऐसी हैं कि उन से अफ़्ज़ल कोई ख़स्लत नहीं ﴾1﴿ **अल्लाह** तआ़ला पर ईमान लाना ﴾2﴿ मुसल्मानों को नफ़्अ़ पहुंचाना और दो ख़स्लतें ऐसी हैं कि उन से ज़ियादा बुरी कोई ख़स्लत नहीं ﴾1﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक ठहराना ﴾2﴿ मुसल्मानों को तक्लीफ़ देना ।

(اَلْمُنَبِّهات ص٣)

करूं या ख़ुदा मोमिनों की मैं ख़िदमत
न पहुंचे किसी को भी मुझ से अज़िय्यत

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुन्या भर से बेहतर : **हुज़ूर** ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم से इर्शाद फ़रमाया : ऐ अ़ली ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए किसी शख़्स को राहे रास्त पर ले आए तो येह तुम्हारे लिये उन तमाम चीज़ों से बेहतर है जिन पर सूरज तुलूअ़ होता है । (या'नी दुन्या की तमाम चीज़ों से बेहतर है) (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِیر لِلطَّبَرانی ج ۱ ص ۳۳۲ حدیث ۹۹۴)

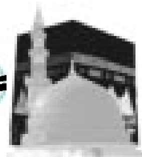
सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत की धूमें मचाते रहिये, आप की **नेकी की दा'वत** से अगर सिर्फ़ एक फ़र्द ही इश्क़े रसूल का जाम ग़टग़टा गया, राहे हिदायत पा गया, उसे **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माहोल भा गया, वोह सुन्नत की शाहराह पर आ गया, नमाज़ों की लज़्ज़तें पा गया, अपने आप को नेक बन्दों में खपा गया तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का भी बेड़ा पार हो जाएगा । एक और रिवायत में है : नबिय्ये हाशिर, रसूले साबिरो शाकिर, मह़बूबे रब्बे क़ादिर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए किसी एक शख़्स को हिदायत अ़ता फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास **सुर्ख़ ऊंट** हों ।

(صَحیح مُسلِم ص۱۳۱۱ حدیث ۲۴۰۶)

सुर्ख़ ऊंटों से क्या मुराद है ? : **ह़ज़रते** अ़ल्लामा यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस ह़दीसे न-बवी की शर्ह़ में लिखते हैं : **सुर्ख़ ऊंट** अहले अ़रब का बेश क़ीमत माल समझा जाता था, इस लिये ज़र्बुल मसल (या'नी कहावत) के तौर पर सुर्ख़ ऊंटों का ज़िक्र किया गया । उख़्रवी उमूर को दुन्यवी चीज़ों से तश्बीह (या'नी मिसाल) देना सिर्फ़ समझाने के लिये है, वरना ह़क़ीक़त येही है कि हमेशा बाक़ी रहने वाली आख़िरत (की ने'मत) का एक ज़र्रा भी दुन्या और इस जैसी जितनी दुन्याएं तसव्वुर की जा सकें, उन सब से बेहतर है । (شَرحِ مُسلِم لِلنَّوَوِی ج۱۵ ص۱۷۸)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी एक काफ़िर को मुसल्मान बनाना,






दुन्या की बड़ी (से बड़ी) दौलत से भी बेहतर है बल्कि काफ़िर को क़त्ल करने से बेहतर (येह) है कि उसे रग़बत दे कर मुसलमान कर लिया जावे कि (अल्लाह ने चाहा तो) इस से उस की (आयन्दा) सारी नस्ल मुसलमान होगी । (मिरआतुल मनाजीह, जि. 8, स. 416)

मुबल्लिग़ बनूं काश ! मैं सुन्नतों का
सदा दीं की ख़िदमत करूं येह दुआ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 332)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

12 माह म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की ब-र-कत से "केन्सर" चला गया ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत का जज़्बा पाने, सुन्नतों पर अ़मल करने, नेकियों का सवाब कमाने, दिल में इश्क़े रसूल की शम्अ़ जलाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, **म-दनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ "फ़िक्रे मदीना" कर के म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करते रहिये और हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस **म-दनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** के ह़ुसूल की ख़ातिर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये । आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक **म-दनी बहार** सुनाऊं, मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि तक़रीबन तीन साल से मेरी अम्मीजान **केन्सर** के मरज़ में मुब्तला थीं, हर दो माह बा'द उन के टेस्ट होते थे । अम्मीजान के बढ़ते हुए मरज़ और रोज़ रोज़ डॉक्टरों के पास चक्कर लगाने की परेशानी मुझ से देखी नहीं जाती थी । ऐसे में र-मज़ानुल मुबारक (1430 सि. हि.) की तशरीफ़ आ-वरी हुई और मैं ने आ़शिक़ाने रसूल





के साथ ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत ह़ासिल की, वहां अपनी अम्मीजान के लिये ख़ूब दुआ़ की और म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से आ़शिक़ाने रसूल के साथ 12 माह म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत कर ली। 21 र-मज़ानुल मुबारक को वालिदा के टेस्ट हुए और दो दिन बा'द जब रिपोर्टस मिलीं तो पढ़ कर मेरी ख़ुशी की इन्तिहा न रही क्यूं कि रिपोर्टस बिल्कुल नॉर्मल थीं और तीन साल से केन्सर का जो मरज़ अम्मीजान की जान नहीं छोड़ रहा था वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरा हुस्ने ज़न है कि म-दनी क़ाफ़िले में 12 माह सफ़र की निय्यत करने की ब-र-कत से ख़त्म हो चुका था।

केन्सर और बीमारी के लिये म-दनी नुस्ख़ा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! केन्सर जो कि डॉक्टरों के नज़दीक ला इलाज बीमारी मानी जाती है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में उस का इलाज हो गया। आइये ! केन्सर, शूगर, T.B., दिल और गुर्दे के अमराज़ बल्कि हर बीमारी के इलाज के लिये एक **म-दनी नुस्ख़ा** सुनते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की किताब में है कि सह़्‌र ज़दा (या'नी जिस पर किसी ने जादू करवाया हो वोह) शख़्स, बेरी (या'नी बेर के दरख़्त) के 7 सब्ज़ पत्ते ले कर उन्हें दो पथ्थरों के दरमियान (म-सलन पथ्थर की सिल पर रख कर दूसरे पथ्थर से) कूट ले, फिर उन्हें पानी में मिला कर आ-यतुल कुर्सी और **चार क़ुल** पढ़ कर दम करे, फिर उस पानी से 3 घूंट पी कर बक़िय्या से ग़ुस्ल करे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस से बीमारी दूर हो जाएगी। येह अ़मल उस शख़्स के लिये (भी) इन्तिहाई मुफ़ीद है जिसे (जादू के ज़रीए) बीवी से रोक दिया गया हो। (جامع معمر بن راشد مع مُصَنَّف عَبْد الرَّزّاق ج ۱۰ ص ۷۷ رقم ۱۹۹۳۳)

क़िस्मत में लाख पेच हों सो बल हज़ार कज
येह सारी गुथ्थी इक तेरी सीधी नज़र की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : इस शे'र में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क़िस्मत में चाहे कितनी ही उल्झनें और परेशानियां

लिखी हों, आप صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बस लुत्फ़ो करम की एक सीधी नज़र फ़रमा दीजिये اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तक्दीर की सारी गुथ्थियां खुल और पेचीदगियां हल हो जाएंगी।

ताजे शाही का मैं नहीं तालिब
कर दो रहमत की इक नज़र आक़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 350)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गुनाहों के 6 इलाज : हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الۡمُبِیۡن की ''नेकी की दा'वत'' देने का एक अपना अन्दाज़ हुवा करता था चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡاَکۡرَم की ख़िदमते सरापा अ-ज़मत में एक शख़्स हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! मुझ से बहुत गुनाह सरज़द होते हैं, बराए करम ! **गुनाहों का इलाज** तज्वीज़ फ़रमा दीजिये। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیۡہ ने **पहली नसीहत** करते हुए फ़रमाया : जब गुनाह करने का पक्का इरादा हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रिज़्क़ खाना छोड़ दो। उस शख़्स ने हैरत से अ़र्ज़ की : हज़रत ! आप कैसी नसीहत फ़रमा रहे हैं ! येह कैसे हो सकता है ? जब कि रज़्ज़ाक़ عَزَّوَجَلَّ वोही है, तो मैं उस की रोज़ी छोड़ कर भला किस की रोज़ी खाऊंगा ! फ़रमाया : देखो, कितनी बुरी बात है कि जिस परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की रोज़ी खाओ उसी की ना फ़रमानी भी करो ! फिर **दूसरी नसीहत** फ़रमाई : जब भी गुनाह का इरादा हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुल्क से बाहर निकल जाओ। अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! येह भी कैसे हो सकता है ! मश्रिक़, मग़रिब, शिमाल, जुनूब, दाएं, बाएं, ऊपर, नीचे अल ग़रज़ जिधर जाऊं उधर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही का मुल्क पाऊं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुल्क से बाहर किस तरह जाऊं ! फ़रमाया : देखो ! कितनी बुरी बात है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुल्क में भी रहो और फिर उस की ना फ़रमानी भी करो। **तीसरी नसीहत** येह इर्शाद फ़रमाई : जब पुख़्ता इरादा हो जाए कि बस अब गुनाह कर ही डालना है तो अपने आप को इतना छुपा लो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख न सके। अ़र्ज़ की : **हुज़ूर !** येह क्यूंकर मुम्किन है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे देख न सके, वोह तो दिलों के अह्वाल से भी बा ख़बर है।

फ़रमाया : देखो ! कितनी बुरी बात है कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को समीअ़ व बसीर (या'नी सुनने वाला और देखने वाला) भी तस्लीम करते हो और येह भी यक़ीन के साथ कह रहे हो कि हर लम्हे मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **देख रहा है** मगर फिर भी गुनाह किये जा रहे हो । **चौथी नसीहत** येह इर्शाद फ़रमाई : जब म-लकुल मौत सय्यिदुना इज़्राईल عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करने के लिये तशरीफ़ लाएं तो उन से कह देना, थोड़ी सी मोहलत दे दीजिये ताकि मैं तौबा कर लूं । अ़र्ज़ की : **हुज़ूर !** मेरी क्या औक़ात और मेरी सुने कौन ? मौत का वक़्त मुक़र्रर है और मुझे एक लम्हे भी मोहलत नहीं मिल सकेगी फ़ौरन मेरी रूह क़ब्ज़ कर ली जाएगी । फ़रमाया : जब तुम येह जानते हो कि मैं बे इख़्तियार हूं और तौबा की मोहलत ह़ासिल नहीं कर सकता तो फ़िलह़ाल मिले हुए लम्ह़ात को ग़नीमत जानते हुए **म-लकुल मौत** عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तशरीफ़ आ-वरी से पहले पहले तौबा क्यूं नहीं कर लेते ? फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने **पांचवीं नसीहत** येह फ़रमाई : जब तुम्हारी मौत वाक़ेअ़ हो जाए और क़ब्र में **मुन्कर नकीर** तशरीफ़ ले आएं तो उन को क़ब्र से हटा देना । अ़र्ज़ की : **सरकार !** येह क्या फ़रमा रहे हैं ! मैं उन्हें कैसे हटा सकूंगा ! मुझ में इतनी त़ाक़त कहां ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम **नकीरैन** को हटा नहीं सकते तो उन के सुवालात के जवाबात की तय्यारी अभी से क्यूं नहीं कर लेते ? छटी और **आख़िरी नसीह़त** करते हुए फ़रमाया : अगर क़ियामत के दिन तुम्हें जहन्नम का हुक्म सुनाया जाए तो कह देना : "नहीं जाता ।" अ़र्ज़ की : **हुज़ूर !** वहां तो गुनहगारों को घसीट कर दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा । फ़रमाया : जब तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रोज़ी खाने से भी बाज़ नहीं आ सकते उस के मुल्क से बाहर भी नहीं निकल सकते, उस से नज़र भी नहीं बचा सकते, **मुन्कर नकीर** को भी नहीं हटा सकते और अगर जहन्नम का हुक्म सुना दिया जाए तो उसे भी नहीं टाल सकते तो फिर गुनाह करना ही क्यूं नहीं छोड़ देते ! उस शख़्स पर **सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के तज्वीज़ कर्दा **गुनाहों के इलाज** के इन छ नसीह़त आमोज़ **म-दनी फूलों** की ख़ुश्बूओं ने बहुत असर किया, ज़ारो क़ित़ार रोते हुए उस ने अपने तमाम गुनाहों से सच्ची **तौबा** कर ली और मरते दम तक तौबा पर क़ाइम रहा । (مُلَخَّص از تذکرۃالاولیاء ص ۱۰۰)

अल्लाह देख रहा है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा **हिकायत** में तज्वीज़ कर्दा **गुनाहों के 6 इलाज** निहायत मुअस्सिर हैं, गुनाह का इरादा होने पर अगर इन को पेशे नज़र रख लिया जाए तो गुनाहों से बचने का बड़ा ज़बर दस्त सामान हो सकता है। यक़ीनन सिर्फ़ येही बात अगर ज़ेहन में रासिख़ (या'नी पक्की) हो जाए कि **''अल्लाह देख रहा है''** तो बन्दा गुनाहों के क़रीब भी न फटके। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ़ रिसाले, **''गुनाहों का इलाज''** सफ़हा 12 ता 14 पर है : वाक़ेई अगर कोई अपने अन्दर येह एह़सास उजागर कर ले कि गुनाह करते वक़्त मेरा पालने वाला **''परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मुझे देख रहा है''** झूट बोलते वक़्त फ़ौरन ख़याल आ जाए कि मैं झूट बोल कर बन्दे को तो धोका दे रहा हूं और येह बेचारा मुझे सच्चा भी जान रहा है मगर **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे देख रहा है**, जी हां, **अल्लाह** तआ़ला पर हर एक की निय्यत आशकार (या'नी ज़ाहिर) है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा कुरआन, **''कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान''** सफ़हा 866 पर पारह 24 **सू-रतुल मुअमिन** आयत नम्बर 19 में है :

يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ ﴿۱۹﴾ (پ۲۴، المؤمن:۱۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह जानता है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी निगाहों की ख़ियानत और चोरी ना महरम को देखना और मम्नूआ़त पर नज़र डालना। **अल्लाह** तआ़ला के इल्म में हैं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान स. 866) ज़बान से गाली निकालते वक़्त येह बात ज़ेहन में रच बस जाए कि मेरा रब عَزَّوَجَلَّ समीअ़ व बसीर है और वोह सुन और **देख रहा है,** या बद निगाही करते वक़्त भी येह तसव्वुर बंध जाए कि मैं जिस के साथ बद निगाही कर रहा हूं अगर्चे उस को नहीं मा'लूम मगर **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे देख रहा है** और उस عَزَّوَجَلَّ पर मेरी निय्यत भी ज़ाहिर व आशकार है। बा'ज़ लोग **अम्रद** (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) से बद निगाही करते और अपनी आंखों को ह़राम से पुर करते हैं और **अम्रद** या वहां मौजूद अफ़राद को इस का पता

नहीं लगता बल्कि वोह बद नज़री करने वाले को नेक बन्दा समझ रहे होते हैं लेकिन रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ दिलों के ह़ालात जानता है। काश ! **अम्रद** के साथ बद निगाही करते वक़्त, बुरी निय्यत के साथ उस से अपना जिस्म टकराते वक़्त, गन्दी ज़ेहनिय्यत के साथ उस के सामने हंस कर उस की जवाबी मुस्कराहट से लुत्फ़ अन्दोज़ हो कर, उस से लज़्ज़त के साथ बातें करते वक़्त, शह्वत के बा वुजूद उस के साथ आगे या पीछे स्कूटर या साइकिल पर बैठते या बिठाते वक़्त येह एह़सास हो जाए कि मैं भी कितना बे ग़ैरत व कमीना हूं कि मेरा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **मुझे देख रहा है** और फिर भी मैं बे ह़याई का काम कर रहा हूं, अगर कल क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से पूछ लिया तो मेरे पास क्या जवाब होगा ? और मैं किस त़रह़ अपने आप को उस के क़हरो ग़ज़ब से बचा सकूंगा ? याद रहे ! मवेशियों, जानवरों और परिन्दों की शर्मगाहों और उन के "मिलापों" बल्कि मख्खियों और कीड़े मकोड़ों के "मिलन" के मनाज़िर भी गन्दी लज़्ज़तों के साथ देखना ना जाइज़ व गुनाह है, ऐसे मवाक़ेअ़ पर फ़ौरन नज़र हटा ले बल्कि जूं ही इस के "आसार" मह़सूस हों फ़ौरन वहां से हट जाए। जो लोग मवेशी या परिन्दे और मुर्ग़ियां बेचते या पालते हैं उन को इस ह़वाले से बहुत मोह़तात़ रहने की ज़रूरत है।

ख़बरदार भाई ! ख़ुदा देखता है
भलाई बुराई ख़ुदा देखता है

अम्रद के फ़ितने से बचो : **अम्रद** या'नी बे रीश लड़का, मर्द के लिये उ़मूमन पुर कशिश होता है, इस में बज़ाते ख़ुद अम्रद बे क़ुसूर है इस ह़वाले से इस की दिल आज़ारी गुनाह है बस मर्द को चाहिये कि वोह इस से मोह़तात़ रहे। इस लिये बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن ने अम्रद से दूर रहने की ताकीद फ़रमाई है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़बूआ़ 1012 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल"** (जिल्द 2) सफ़ह़ा 31 ता 32 पर है : इसी लिये सालिह़ीन ने अम्रदों (या'नी जिन्हें देख कर शह्वत आए उन) को

देखने, उन से ख़ल्त़ मल्त़ होने और उन के साथ बैठने से बचने के मु-तअ़ल्लिक़ मुबा-लग़ा फ़रमाया ।

अम्रद के साथ तन्हाई ख़त़रनाक : एक ताबेई फ़रमाते हैं : "मैं नौ जवान सालिक (या'नी आ़बिदो ज़ाहिद नौ जवान) के साथ बे रीश लड़के के बैठने को सात दरिन्दों से ज़ियादा ख़त़रनाक समझता हूं ।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "कोई शख़्स एक मकान में किसी **अम्रद** के साथ तन्हा रात न गुज़ारे ।" बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने औ़रत पर क़ियास करते हुए घर, दुकान या ह़माम में **अम्रद** के साथ ख़ल्वत (या'नी तन्हाई) को ह़राम क़रार दिया क्यूं कि, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : "जो शख़्स किसी औ़रत (अज्नबिय्या) के साथ तन्हा होता है तो वहां तीसरा शैत़ान होता है ।"

(سُنَنُ التِّرمِذی ج٤ ص٦٧ حدیث ٢١٧٢)

अम्रद औ़रत से भी ख़त़रनाक है : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने ह़जर मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی लिखते हैं : जो **अम्रद** औ़रतों से ज़ियादा ख़ूब सूरत होता है उस में फ़ितना भी ज़ियादा होता है, इस लिये कि उस से औ़रतों की निस्बत बुराई का ज़ियादा इम्कान होता है लिहाज़ा उस के साथ तन्हाई इख़्तियार करना ब द-र-जए औला ह़राम है ।

(مُلَخَّص ازالزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْكبائِرج٢ ص١٠)

अम्रद के साथ 17 शयात़ीन : ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی एक ह़माम में दाख़िल हुए । आप के पास अम्रद या'नी एक बे रीश लड़का आया तो इर्शाद फ़रमाया : इसे मुझ से दूर कर दो क्यूं कि मैं हर औ़रत के साथ एक शैत़ान जब कि हर **अम्रद के साथ 17 शयात़ीन** देखता हूं ।

(ایضاً)

अम्रद के साथ तन्हाई जाइज़ होने की सूरत : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 1197 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त** (जिल्द 3)" सफ़्हा 442 पर है : लड़का जब मुराहिक़ (या'नी बालिग़ होने के क़रीब) हो जाए और वोह ख़ूब सूरत न हो तो नज़र के बारे में इस का वोही हुक्म है जो मर्द का है और ख़ूब सूरत हो तो औ़रत का जो हुक्म है वोह उस के लिये है या'नी शह्वत के साथ उस की त़रफ़ नज़र करना ह़राम है और शह्वत न हो तो उस की त़रफ़ भी नज़र कर सकता है और उस के साथ तन्हाई भी जाइज़ है। शह्वत न होने का मत़लब येह है कि उसे यक़ीन हो कि नज़र करने से शह्वत न होगी और अगर इस का शुबा भी हो तो हरगिज़ नज़र न करे, बोसा की ख़्वाहिश पैदा होना भी शह्वत की ह़द में दाख़िल है। (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۰۲)

नफ़्सियाती असर : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा जाए तो इन्सान को इन्सान से बहुत डर लगता है। म-सलन वालिदैन या असातिज़ए किराम के सामने गाली देते हुए डरते हैं मगर अफ़्सोस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कमा ह़क़्क़ुहू (या'नी जैसा कि उस का ह़क़ है) नहीं डरते, अगर कोई रो'बदार शख़्स सामने मौजूद हो तो उस से इतना डरते हैं कि आवाज़ तक नहीं निकलती, उस से आ़जिज़ी के साथ बोलने सुनने की कोशिश करते हैं। ऐ काश ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ हमारे दिलों में जा गुज़ीं हो जाए, हर वक़्त उसी के ख़ौफ़ का ग़-लबा रहे और हम जिस त़रह़ लोगों के सामने बुरे काम करना पसन्द नहीं करते उसी त़रह़ तन्हाई में भी बचते रहें। ऐ काश ! सद करोड़ काश ! हमारे ज़ेह्न में हर वक़्त येह बात रासिख़ रहे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **देख रहा है** और यूं हम अपने **गुनाहों का इलाज** करने में काम्याब हो जाएं।

छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह   वोह ख़बरदार है क्या होना है
अरे ओ मुजरिमे बे परवाह देख   सर पे तलवार है क्या होना है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इन अश्आ़र के अन्दर एक मख़्सूस अन्दाज़ में **"नेकी की दा'वत"** इर्शाद फ़रमाई है चुनान्चे इन अश्आ़र का

मफ़्हूम है : ﴾1﴿ ऐ गुनाह करने वाले ! तूने लोगों से तो अपने गुनाह छुपा लिये मगर येह भूल गया कि जिस परवर दगार عَزَّ وَجَلَّ की ना फ़रमानियां की हैं वोह तेरे इन कारनामों से वाक़िफ़ है। अब ग़ौर कर मह़शर में तेरा क्या होगा ! ﴾2﴿ ऐ ग़फ़्लत शिआ़र मुजरिम ! होश कर ! तेरे सर पर हर वक़्त मौत की तलवार लटक रही है, ख़ुदा से डर ! गुनाहों से कनारा कर, अगर तू ला परवाही से गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार कर मर गया तो तेरा क्या बनेगा !

ज़िन्दगी की शाम ढलती जा रही है हाए नफ़्स ! गर्म रोज़ो शब गुनाहों का ही बस बाज़ार है
मुजरिमों के वासिते दोज़ख़ भी शो'लाबार है हर गुनह क़स्दन किया है इस का भी इक़रार है
बन्दए बदकार हूं बेह़द ज़लीलो ख़्वार हूं
मग़्फ़िरत फ़रमा इलाही ! तू बड़ा ग़फ़्फ़ार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 128, 129)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकी की दा'वत के ग्यारह म-दनी फूल : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ 54 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला, **"नसीह़तों के म-दनी फूल"** सफ़्ह़ा 5 ता 6 पर **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى नक़्ल करते हैं : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ﴾1﴿ ऐ आदमी ! तअ़ज्जुब है उस पर जो मौत पर यक़ीन रखने के बा वुजूद भी ख़ुश होता है ﴾2﴿ तअ़ज्जुब है उस पर जो (क़ियामत के) ह़िसाबो किताब पर यक़ीन रखता है फिर भी माल जम्अ़ करने में मसरूफ़ है ﴾3﴿ तअ़ज्जुब है उस पर जो क़ब्र (में दफ़्न होने) पर यक़ीन रखने के बा वुजूद हंसता है ﴾4﴿ तअ़ज्जुब है उस पर जिसे आख़िरत (की होल नाकियों) पर यक़ीन है फिर भी पुर सुकून है ﴾5﴿ तअ़ज्जुब है उस पर जो दुन्या (की ह़क़ीक़त को जानता) और उस के ज़वाल (या'नी ख़ातिमे) पर यक़ीन रखता है फिर भी उस पर मुत़्मइन है ﴾6﴿ तअ़ज्जुब है उस पर जो गुफ़्त-गू तो आ़लिमों जैसी करता है लेकिन उस का दिल जाहिलों जैसा है ﴾7﴿ तअ़ज्जुब है उस पर जो पानी के ज़रीए पाकी तो

हा़सिल करता है मगर उस का दिल (गुनाहों और गफ़्लतों की ग़लाज़तों से) आलूदा है ﴾8﴿ तअ़ज्जुब है उस पर जो लोगों के उ़यूब तलाश करने में तो मस्रूफ़ रहता है लेकिन अपने ऐबों से ग़ाफ़िल है ﴾9﴿ तअ़ज्जुब है उस पर जो जानता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे हर अ़मल से बा ख़बर है फिर भी उस की ना फ़रमानी करता है ﴾10﴿ तअ़ज्जुब है उस पर जो जानता है कि उसे अकेले मरना, अकेले क़ब्र में दाख़िल होना और अकेले ही हि़साब देना है फिर भी लोगों से उन्सिय्यत रखता है ﴾11﴿ (ऐ आदमी ! सुन !) मैं ही मा'बूदे ह़क़ीक़ी हूं और **मुह़म्मद** मेरे ख़ास बन्दे और रसूल हैं ।

रास्तों में बैठने के हुक़ूक़ : "**बुख़ारी** शरीफ़" में है, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (सहा़बए किराम से) इर्शाद फ़रमाया : तुम लोग रास्तों में बैठने से बचो ! **सह़ाबए किराम** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : हम इन मजलिसों में बैठ कर (ज़रूरी) गुफ़्त-गू करते हैं और येह हमारे लिये ज़रूरी हैं । फ़रमाया : जब तुम मजालिस में आया करो तो रास्ते को इस का ह़क़ दो । अ़र्ज़ की गई : रास्ते का ह़क़ क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : ﴾1﴿ निगाहें नीची रखना ﴾2﴿ तक्लीफ़ देह शै दूर करना ﴾3﴿ सलाम का जवाब देना ﴾4﴿ नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना ।

(صَحیح بُخاری ج۴ ص۱۶۵ حدیث ۶۲۲۹)

इधर उधर देखने का भी क़ियामत में हि़साब होगा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे पाक में रास्ते के "चार हुक़ूक़" बयान किये गए हैं : **रास्ते का ह़क़ (1) निगाहें नीची रखना :** वाके़ई इस की बेह़द अहम्मिय्यत है । लिहाज़ा हुसूले सवाबे आख़िरत की निय्यत से आंखों के मु-तअ़ल्लिक़ "**नेकी की दा'वत**" पेश करता हूं । **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : आंख को हर फ़ुज़ूल बात (या'नी जिस की ज़रूरत न हो उस) से बचाए, क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

जिस त़रह़ "फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू" के बारे में पूछेगा इसी त़रह़ बरोज़े क़ियामत बन्दे से "फ़ुज़ूल नज़र" (म-सलन बिला ज़रूरत इधर उधर देखने) के बारे में भी सुवाल करेगा। (اِحياءُ الْعُلوم ج ٥ص١٢٦) अज्नबिय्या (या'नी जिस से शादी हमेशा के लिये ह़राम हो उस) को देखने से ख़ुद को बचाना ज़रूरी है। ह़दीस शरीफ़ में इर्शाद हुवा : "اَلْعَيْنَانِ تَزْنِيَانِ" या'नी आंखें ज़िना करती हैं। (مُسندِ اِمام احمد ج٣ ص ٣٠٥ حديث ٨٨٥٢) अगर राह में निगाहें चारों त़रफ़ दौड़ाते रहें तो बद निगाही से बचना बेह़द दुश्वार हो जाता है, ख़ुदा की क़सम **बद निगाही का अ़ज़ाब** बरदाश्त नहीं हो सकेगा।

निगाहों की ह़िफ़ाज़त का क़ुरआनी हुक्म : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"पर्दे के बारे में सुवाल जवाब"** से बा'ज़ मुन-द-रजात मुला-ह़ज़ा हों : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मर्दों को निगाहों की ह़िफ़ाज़त की ताकीद करते हुए पारह 18 **सू-रतुन्नूर** की आयत नम्बर 30 में इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ
(پ ١٨، النّور ٣٠)

तर-जु-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें।

औ़रतों के लिये इर्शादे क़ुरआनी है :

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ
(پ ١٨، النّور ٣١)

तर-जु-मए कन्ज़ुल ईमान : और मुसल्मान औ़रतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें।

आंखों में आग भर दी जाएगी : **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى नक़्ल करते हैं : जो कोई अपनी आंखों को नज़रे ह़राम से पुर करेगा क़ियामत के रोज़ उस की **आंखों में आग भर दी जाएगी।** (مُكاشَفَةُ القُلُوب ص ١٠)

आग की सलाई : **हज़रते** अ़ल्लामा अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं : औ़रत के मह़ासिन (या'नी हुस्नो जमाल) को देखना इब्लीस के ज़हर में बुझे हुए तीरों में से एक तीर है, जिस ने ना महरम से आंख की ह़िफ़ाज़त न की उस की आंख में बरोज़े क़ियामत आग की सलाई फेरी जाएगी।

(بحرُ الدُّموع ص ۱۷۱)

"ज़ैनब" के चार हुरूफ़ की निस्बत से नज़र के बारे में 4 अह़ादीसे मुबा-रका

नज़र फैर लो : ﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत फ़रमाते हैं : मैं ने सरकारे दो आ़लम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़तशम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अचानक **नज़र** पड़ जाने के मु-तअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया : तो इर्शाद फ़रमाया : अपनी निगाह फैर लो। (صَحِیح مُسلِم ص ۱۱۹۰ حدیث ۲۱۵۹)

जान बूझ कर नज़र मत डालो : ﴾2﴿ सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से फ़रमाया : एक नज़र के बा'द दूसरी नज़र न करो (या'नी अगर अचानक बिला क़स्द किसी औ़रत पर नज़र पड़ी तो फ़ौरन नज़र हटा ले और दोबारा नज़र न करे) कि पहली **नज़र** जाइज़ है और दूसरी **नज़र** जाइज़ नहीं।

(سُنَنُ اَبی دَاوٗد ج ۲ ص ۳۵۸ حدیث ۲۱۴۹)

नज़र की ह़िफ़ाज़त की फ़ज़ीलत : ﴾3﴿ ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़रह़त निशान है : जो मुसल्मान किसी औ़रत की ख़ूबियों की त़रफ़ पहली बार नज़र करे (या'नी बे ख़याली में नज़र पड़ जाए) फिर अपनी आंख नीची कर ले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसी इ़बादत अ़त़ा फ़रमाएगा जिस की वोह लज़्ज़त पाएगा। (مُسنَد اِمام احمد بن حَنبل ج ۸ ص ۲۹۹ حدیث ۲۲۳۴۱)

इब्लीस का ज़हरीला तीर : ﴾4﴿ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़लावत निशान है कि ह़दीसे क़ुदसी (या'नी फ़रमाने ख़ुदाए रह़मान عَزَّ وَجَلَّ) है : **नज़र** इब्लीस के तीरों में से एक ज़हर में बुझा हुवा तीर है पस जो शख़्स मेरे ख़ौफ़ से इसे तर्क कर दे तो मैं उसे ऐसा **ईमान** अ़त़ा करूंगा जिस की ह़लावत (या'नी मिठास) वोह अपने दिल में पाएगा ।

(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرانی ج۱۰ ص۱۷۳ حدیث۱۰۳۶۲)

औ़रत की चादर भी मत देखो : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन ज़ियाद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْجَوَاد फ़रमाते हैं : अपनी नज़र को औ़रत की चादर पर भी न डालो क्यूं कि **नज़र** दिल में शह्वत पैदा करती है । (حلیۃ الاولیاء ج۲ ص ۲۷۷)

गुफ़्त-गू में निगाह कहां हो ?

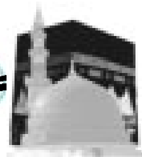
सुवाल : क्या गुफ़्त-गू करते हुए नज़र नीची रखनी ज़रूरी है ?

जवाब : इस की सूरतें हैं म-सलन मर्द का मुख़ात़ब (या'नी जिस से बात कर रहे हैं वोह) **अम्रद** हो और उस को देखने से शह्वत आती हो (या इजाज़ते शर-ई से मर्द किसी अज्नबिय्या से या औ़रत किसी अजनबी मर्द से बात कर रही हो) तो नज़र इस त़रह नीची रख कर गुफ़्त-गू करे कि उस के चेहरे बल्कि बदन के किसी उ़ज़्व ह़त्ता कि लिबास पर भी न पड़े । अगर कोई मानेए शर-ई (या'नी शर-ई रुकावट) न हो तो मुख़ात़ब (या'नी जिस से बात कर रहे हैं उस) के चेहरे की त़रफ़ देख कर भी गुफ़्त-गू करने में शरअ़न कोई ह़रज नहीं । अगर निगाहों की ह़िफ़ाज़त की आ़दत बनाने की निय्यत से हर एक से नीची नज़र किये बात करने का मा'मूल बनाए तो बहुत ही अच्छी बात है क्यूं कि मुशा-हदा येही है कि फ़ी ज़माना जिस की नीची निगाहें रख कर गुफ़्त-गू करने की आ़दत नहीं होती उसे जब अम्रद या अज्नबिय्या से बात करने की नौबत आती है उस वक़्त नीची निगाहें रखना उस के लिये सख़्त दुश्वार होता है ।

म-दनी चेनल से मु-तअस्सिर हो कर 12 अफ़राद का क़बूले इस्लाम[1] :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! निगाहें नीची रखने की ब-र-कतें मरह़बा ! आइये ! इस ज़िम्न में एक अनोखी **म-दनी बहार** सुनते हैं चुनान्चे बाबुल मदीना (कराची) के एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी के बयान का ख़ुलासा है कि मदीनतुल मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक (2 जुमादल उख़्रा 1432 सि. हि. ब मुत़ाबिक़ 6 मई 2011 सि. ई.) कमो बेश 4 बजे दिन सब्ज़ इमामे वाले एक नौ जवान से मुलाक़ात हुई दौराने गुफ़्त-गू उन्हों ने इन्किशाफ़ किया : मैं बम्बई (हिन्द) का रहने वाला हूं मुझ समेत हमारे घर के तमाम या'नी 12 अफ़राद ने (बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक 5 ज़ुल हि़ज्जतिल ह़राम 1431 सि. हि. ब मुत़ाबिक़ (12-11-2010)) इस्लाम क़बूल किया। क़बूले इस्लाम की वुजूहात बताते हुए उन्हों ने कुछ यूं कहा : हमारे घर वाले कुछ अ़र्से से दा'वते इस्लामी का **म-दनी चेनल** देखने लगे थे। इस के सिल्सिलों में मुसल्मानों का इस्लामी हुल्या, उन के मुस्कराते चेहरे और बयान की सा-दगी हमें बहुत अच्छी लगती थी। ह़ालां कि इस से पहले हम लोग बे अ़मल मुसल्मानों की ह़-र-कतें देख कर इन्तिहाई बदज़न थे मगर अब "म-दनी चेनल" पर इस्लाम की ह़क़ीक़ी तस्वीर देख कर हम इस्लाम से मु-तअस्सिर होने लगे। बिल ख़ुसूस दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन का बार बार निगाहें झुकाने की तरग़ीब देना हमें बहुत भाता और **आंखों के क़ुफ़्ले मदीना** के फ़वाइद का तज़्किरा सुन कर हम बहुत ख़ुश होते, मेरी वालिदा सब से कहतीं : इस गए गुज़रे ज़माने में भी येह लोग निगाहें नीची रखने का दर्स देते हैं, वाक़ेई निगाहें झुका कर ही रखनी चाहिएं। म-दनी चेनल के सिल्सिले देखते देखते हमारे दिल में इस्लाम की मह़ब्बत इतनी बढ़ गई कि घर में इस्लाम क़बूल करने की बातें होने लगीं मगर हम ख़ौफ़ज़दा थे कि **लोग क्या कहेंगे ?** इस सुवाल का जवाब भी हमें म-दनी चेनल से ही मिला, हुवा यूं कि निगराने शूरा व मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी ह़ाजी अबू ह़ामिद मुह़म्मद इमरान अ़त्त़ारी سَلَّمَهُ الْبَارِى ने जब **"लोग क्या कहेंगे ?"** के मौज़ूअ़ पर सुन्नतों भरा बयान

1. येह म-दनी बहार "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" में नहीं है, अलग से शामिल की गई है।


फ़रमाया तो सब घर वालों का ज़ेहन बन गया कि अब हमें लोगों की परवा नहीं करनी चाहिये और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हम कलिमा पढ़ कर इस्लाम के दामन में आ गए। मैं गवर्नमेन्ट मुलाज़िम हूं, क़बूले इस्लाम के बा'द मेरा नाम मुहम्मद इब्राहीम रखा गया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْه के सिल्सिले में मुरीद भी बन चुका हूं। मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का मज़ीद बयान है कि जब उस नौ मुस्लिम नौ जवान ने हमारे साथ सुनहरी जालियों के रू बरू हाज़िरी दी तो उन पर अजीब रिक़्क़त तारी हो गई और रो रो कर इस अर्ज़ की तकरार करने लगे : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे आंखों का क़ुफ़्ले मदीना अ़ता कर दीजिये।" फिर उन्हों ने गुम्बदे ख़ज़रा के साए में अपने अ़ज़्म का इज़्हार किया कि اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अब मैं दीगर ग़ैर मुस्लिमों को भी दामने इस्लाम से वाबस्ता करने की भरपूर कोशिश करूंगा। **अल्लाह** तआ़ला उन्हें और उन के तुफ़ैल हम सभी को इस्लाम और दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए। 12 अफ़राद की इस्लाम आ-वरी का सबब बनने वाले सुन्नतों भरे बयान **"लोग क्या कहेंगे"** की V.C.D. मक-त-बतुल मदीना से हासिल की जा सकती है नीज़ दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net पर भी देखी और सुनी जा सकती है।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 193)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰله وسلّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

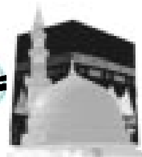
निगाहे मुस्तफ़ा की अदाएं

सुवाल : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के नज़र फ़रमाने के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ बता दीजिये।

जवाब : ﴾1﴿ किसी के चेहरे पर नज़रें न गाड़ते थे ﴾2﴿ किसी चीज़ की त़रफ़ न देखने की








हालत में निगाहें नीची रखते ﴾3﴿ आप की नज़रें आस्मान की निस्बत ज़मीन की त़रफ़ अक्सर रहती थीं। मुराद येह है कि अक्सर ख़ामोशी के वक़्त मुबारक निगाहें झुकी होतीं ﴾4﴿ अक्सर गोशए चश्म (या'नी आंखों के वोह कनारे जो कनपट्टी से मिले होते हैं) से देखते। मत़लब येह है कि ह़द द-रजा शर्मो ह़या की वजह से पूरी आंख भर कर न देखते थे। ﴾5﴿ जब किसी त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाते तो पूरे मु-तवज्जेह होते, या'नी नज़र चुराते नहीं थे और बा'ज़ ने येह फ़रमाया कि सिर्फ़ गरदन फैर कर किसी की त़रफ़ मु-तवज्जेह न होते बल्कि पूरे बदन मुबारक से फिर कर मु-तवज्जेह होते।

(مُلَخَّص از جمع الوسائل فی شرح الشمائل للقاری ص ۵۲،۵۳،احیاء العلوم ج ۲ ص ۴۴۲)

जिस त़रफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इ़नायत पे लाखों सलाम

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा[1] : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ इस शे'र में फ़रमाते हैं : हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे करम दुन्या व आख़िरत में जिस त़रफ़ उठी मुर्दा जिस्मों में जान और रूहों में ताज़गी आ गई, हमारे मक्की म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रह़मतों और इ़नायतों भरी पाकीज़ा नज़र पर लाखों सलाम हों। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ के शे'र पर ह़ज़रत मौलाना अख़्तरुल ह़ामिदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने क्या ख़ूब तज़्मीन बांधी है :

पड़ गई जिस पे मह़शर में बख़्शा गया   देखा जिस सम्त अब्रे करम छा गया
रुख़ जिधर हो गया ज़िन्दगी पा गया   जिस त़रफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इ़नायत पे लाखों सलाम

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1. शर्हे कलामे रज़ा "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" में शामिल नहीं है, इस को अलग से शामिल किया है।




पिघला हुवा सीसा आंखों में डाला जाएगा : मन्क़ूल है : **"जो शख़्स शहवत से किसी अज्नबिय्या के हुस्नो जमाल को देखेगा क़ियामत के दिन उस की आंखों में सीसा पिघला कर डाला जाएगा।"** (هدایہ ج۲ ص۳۶۸) यक़ीनन **भाभी** भी अज्नबिय्या ही है। जो **देवर व जेठ** अपनी **भाभी** को क़स्दन देखते रहे हों, बे तकल्लुफ़ बने रहे हों, मज़ाक़ मस्ख़री करते रहे हों, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से डर कर फ़ौरन से पेशतर सच्ची तौबा कर लें। **भाभी** अगर **देवर** को छोटा भाई और **जेठ** को बड़ा भाई कह दे इस से बे पर्दगी और बे तकल्लुफ़ी जाइज़ नहीं हो जाती और **देवर** व भाभी बद निगाही, आपसी बे तकल्लुफ़ी व हंसी मज़ाक़ वग़ैरा गुनाहों की दलदल में मज़ीद धंसते चले जाते हैं। याद रखिये ! जेठ और देवर व भाभी का आपस में बिला ज़रूरत व बे तकल्लुफ़ी से गुफ़्त-गू करना भी मुसल्सल ख़त़रे की घन्टी बजाता रहता है ! भलाई इसी में है कि न एक दूसरे को देखें और न ही आपस में बिला ज़रूरत और बे तकल्लुफ़ी से बातचीत करें।

देखना है तो मदीना देखिये
क़स्रे शाही का नज़ारा कुछ नहीं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मैं T.B. का मरीज़ था : **शर्मो** ह़या का जज़्बा पाने, बद निगाही की आफ़तों से ख़ुद को डराने, निगाहों की ह़िफ़ाज़त की तड़प बढ़ाने, बात करते हुए नीची निगाहें रखने की आ़दत बनाने की ख़ात़िर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये और अपने इस म-दनी मक़्सद, **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** के ह़ुसूल की ख़ात़िर अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये

फ़िक्र मन्द रहिये, **नमाज़ों** की पाबन्दी जारी रखिये, **सुन्नतों** पर अ़मल करते रहिये, **म-दनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ "फ़िक्रे मदीना" कर के म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करते रहिये और हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। आइये! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** सुनाऊं, ज़िल्अ़ नन्काना (पंजाब पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान को अपने अन्दाज़ में पेश करने की सअ़्य करता हूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ (येह बयान देते वक़्त) मैं तक़रीबन 12 साल से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हूं। वाबस्तगी का सबब बैनल अक़्वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (सह़राए मदीना मदीनतुल औलिया मुल्तान शरीफ़) में ह़ाज़िरी है। इज्तिमाअ़ के तक़रीबन साढ़े सात माह बा'द सख़्त बीमार हो गया, डॉक्टरों ने मेरे मरज़ को T.B. क़रार दिया। बीमारी भुगतते हुए लगभग साढ़े चार माह गुज़र गए और एक बार फिर तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ का मौसिमे बहार आ पहुंचा। मैं जाने के लिये बे क़रार हुवा मगर घर वाले मानेअ़ (या'नी रुकावट) हुए। मैं ने अम्मीजान का ज़ेह्न बनाया कि वहां कसीर ता'दाद में **आ़शिक़ाने रसूल** तशरीफ़ लाते हैं, मुझे जाने दीजिये, नेक बन्दों की सोह़बत और वहां होने वाली **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़** की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं सिह़ह़त की ने'मत ले कर पलटूंगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे इजाज़त मिल गई। दवाएं वग़ैरा साथ ले कर **इज्तिमाअ़** में शरीक हुवा। इख़्तितामी **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़** ख़त्म होने वाली थी। मेरे दिल में ह़सरत पैदा हुई दुआ़एं तो बहुत हुईं मगर मेरे मरज़ T.B. के लिये सरा-ह़तन (या'नी साफ़ साफ़ अल्फ़ाज़ में) दुआ़ नहीं मांगी गई, काश! T.B. के मरीज़ों के लिये भी दुआ़ हो जाती। अभी येह बात ज़ेह्न में आई थी कि कमाल हो गया! दुआ़ करवाने वाले की कुछ इस त़रह़ आवाज़ माइक पर गूंज उठी : **या अल्लाह**! जो केन्सर के मरीज़ हैं, जो T.B. के मरीज़ हैं उन को भी शिफ़ाए कामिला अ़त़ा फ़रमा। दुआ़ में दो एक और बीमारियों के भी नाम

लिये गए जो मैं भूल गया हूं। ख़ैर T.B. से शिफ़ा की दुआ़ सुनते ही मेरे दिल ने गोया पुकार कर कहा : "बस अब तू ठीक हो गया।" इज्तिमाअ़ से वापसी के दूसरे ही दिन "चेकअप" करवाने के लिये पंजाब के शहर "शैख़ूपूरा" गया, एक्सरे वग़ैरा करवाए, X.RAY देख कर स्पेशलिस्ट डॉक्टर हैरत ज़दा हो गया और कहने लगा : मुबारक हो आप की T.B. ख़त्म हो चुकी है !

अगर्चे हो टीबी न घबराओ फिर भी शिफ़ा ह़क़ से दिलवाएगा म-दनी माह़ोल
तुम्हें सिह़्ह़तो आ़फ़िय्यत होगी ह़ासिल तुम अपना के देखो ज़रा म-दनी माह़ोल

बीमारी की अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रह़मत से सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करने वाले इस्लामी भाई की T.B. की बीमारी जाती रही। हम **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से इबादत पर कुव्वत ह़ासिल करने के लिये सिह़्ह़त के त़लब गार हैं, ताहम अगर कोई बीमारी हो भी जाए तो हिम्मत न हारिये, सब्र करते हुए बीमारी पर मिलने वाले सवाबे आख़िरत पर नज़र रखिये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब मुसल्मान किसी जिस्मानी बीमारी में मुब्तला होता है तो फ़िरिश्ते को हुक्म होता है : "तू इस की वोही नेकियां लिख जो येह पहले किया करता था।" अगर उसे शिफ़ा देता है तो धो देता और पाक कर देता है और अगर उसे मौत देता है तो बख़्श देता है और रह़्म फ़रमाता है।

(شرحُ السّنة للبغوی ج۳ ص۱۸۷ حدیث ۱۴۲۴)

आ़रिज़ी आफ़ते दुन्या से तो दिल डरता है हाए बे ख़ौफ़ अ़ज़ाबों से हुवा जाता है
येह तेरा जिस्म जो बीमार है तश्वीश न कर येह मरज़ तेरे गुनाहों को मिटा जाता है
अस्ल बरबाद कुन अमराज़ गुनाहों के हैं
भाई ! क्यूं इस को फ़रामोश किया जाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 126)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रास्ते का हक़ नम्बर (2) तक्लीफ़ देह चीज़ दूर करना

कांटेदार शाख़ हटाने वाले की मग़्फ़िरत हो गई : **इसी** किताब के सफ़हा नम्बर 314 पर दी हुई बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक "रास्तों में बैठने के हुक़ूक़" में मज़्कूरा हक़ नम्बर (1) "निगाहें नीची रखना" के मु-तअ़ल्लिक़ **"नेकी की दा'वत"** के ढेरों म-दनी फूल ह़ाज़िर किये गए, अब उसी रिवायत में बयान कर्दा **रास्ते का ह़क़ नम्बर (2)** **"तक्लीफ़ देह शै दूर करना"** के ज़िम्न में नेकी की दा'वत के कुछ म-दनी फूल पेश किये जाते हैं, समाअ़त फ़रमाइये : यक़ीनन मुसल्मानों की राहों से तक्लीफ़ देह चीज़ें दूर करने की बड़ी फ़ज़ीलत है चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 743 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"** सफ़हा 623 पर **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : "एक शख़्स किसी रास्ते से गुज़र रहा था, उस ने उस रास्ते पर एक **कांटेदार शाख़** पाई तो उसे रास्ते से हटा दिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को उस शख़्स का येह अ़मल पसन्द आया और उस बन्दे की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।" (صَحیح مُسلِم ص ۱۰۶۰ حدیث ۱۹۱۴)

तू ने जब से सुना दिया या रब — *سَبَقَتْ رَحْمَتِی عَلٰی غَضَبِیْ*[1]
और मज़बूत़ हो गया या रब — *आसरा हम गुनाह गारों का*

(ज़ौक़े ना'त)

रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ हटाने का सवाब : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : जिस ने मुसल्मानों के रास्ते से ईज़ा पहुंचाने वाली चीज़ हटा दी उस के लिये एक **नेकी** लिखी जाएगी और जिस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास एक नेकी लिखी जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस नेकी के सबब उसे **जन्नत** में दाख़िल फ़रमा देगा। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج ۱ ص ۱۹ رقم ۳۲)

---
1. या'नी मेरी रह़मत मेरे ग़ज़ब से बढ़ कर है।

रास्ते की तक्लीफ़ देह चीज़ों की निशान देही : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मानों की राह में ऐसा रोड़ा, पथ्थर वग़ैरा हो जिस से ठोकर लग सकती हो या टूटे हुए कांच पड़े हों जिस से किसी का पाऊं ज़ख़्मी हो सकता हो, या सड़क पर केले, पपीते या आम वग़ैरा के छिलके किसी ने फेंके हों जिस से आदमी फिसल कर गिर सकता हो येह और इसी त़रह़ की ऐसी चीज़ें रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की निय्यत से हटा देना कारे सवाब है । इसी त़रह़ सरे राह गढ़ा हो या **गटर** का ढक्कन खुला हो तो मुम्किना सूरत में उस का भी मुनासिब बन्दो बस्त कर देना चाहिये । खुले गटर तो इस क़दर ख़त़रनाक होते हैं कि बा'ज़ अवक़ात बच्चे वग़ैरा इस में गिर कर मर जाते हैं, जहां लोहे के ढक्कन चोरी होने का ख़त़रा हो वहां सिमेन्ट के ढक्कन लगाना मुनासिब है । हर शख़्स को चाहिये कि जो चीज़ें दूसरों के लिये तक्लीफ़ देह हों म-सलन छिलके, गन्दगी वग़ैरा रास्ते में न फेंके । अगर अपने घर का गटर भर गया, गन्दा पानी गली में आ गया, या गन्दे पानी का बाहरी पाइप टूट गया, इस त़रह़ के मसाइल फ़ौरन ह़ल कर लेने चाहिएं, नीज़ कपड़े वग़ैरा भी धो कर घरों के बर आमदे में इस त़रह़ न सुखाए जाएं कि राहगीरों पर पानी टपके । किसी के घर के आगे इस त़रह़ कचरा डालना कि उसे तक्लीफ़ पहुंचे येह गुनाह है । ह़ुक़ूक़े आ़म्मा तलफ़ करना म-सलन इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त, चौक इज्तिमाअ़ या किसी त़रह़ की दीनी या दुन्यवी तक़्रीब के लिये आ़म गुज़र गाहों का रास्ता बन्द कर देना ना जाइज़ व गुनाह है । इसी त़रह़ चीज़ें बेचने के लिये ठेला या बस्ता (STALL) लगा कर या क़स्दन गाड़ी पार्क कर के किसी के घर, दुकान या राहगीरों का रास्ता तंग कर देना भी शरअ़न जाइज़ नहीं । हां किसी नमाज़ में मस्जिद भर गई और बाहर सफ़ें बना दी गईं या जनाज़े के जुलूस की वजह से रास्ता घिर गया येह गुनाह नहीं । इसी त़रह़ ह़ाजियों की रुख़्सत व इस्तिक़्बाल के जुलूस और जुलूसे मीलाद में भी ह़रज नहीं ।

मुसल्मां की राह़त का सामान कीजे
यूं ख़ुद पर रहे ख़ुल्द आसान कीजे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रास्ते का हक़ नम्बर (3) "सलाम का जवाब देना"

100 में से 90 रहमतें उसे मिलती हैं जो.....: **इसी** किताब के सफ़हा नम्बर 314 पर दी हुई बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक "रास्तों में बैठने के हुक़ूक़" में रास्ते का ह़क़ नम्बर (3) "सलाम का जवाब देना" के मु-तअ़ल्लिक़ नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल म-दनी फूल क़बूल फ़रमाइये : **जब कोई मुसल्मान सलाम करे तो उस का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना वाजिब है कि सलाम करने वाला सुन ले।** सलाम व मुलाक़ात की बड़ी फ़ज़ीलत है। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जब दो मुसल्मान मुलाक़ात करते हैं और उन में से एक अपने साथी को **सलाम** करता है तो उन में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ज़ियादा मह़बूब (या'नी प्यारा) वोह होता है जो अपने साथी से ज़ियादा गर्म जोशी से मुलाक़ात करता है, फिर जब वोह मुसा-फ़ह़ा करते (या'नी हाथ मिलाते) हैं तो उन पर सो रह़मतें नाज़िल होती हैं उन में से नव्वे रह़मतें (सलाम में) पहल करने वाले के लिये और दस मुसा-फ़ह़ा (या'नी हाथ मिलाने) में पहल करने वाले के लिये हैं। (مُسنَد البزار ج۱ ص۴۳۷ حدیث۳۰۸) **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जब दो मुसल्मान मुलाक़ात के वक़्त आपस में मुसा-फ़ह़ा करते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले ही उन की मग़्फ़िरत हो जाती है। (ترمذی ج٤ ص٣٣٣ حدیث٢٧٣٦) ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ "जब दो मुसल्मान मुलाक़ात के वक़्त आपस में मुसा-फ़ह़ा करते (या'नी हाथ मिलाते) हैं" के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी मर्द मर्द से या औ़रत औ़रत से (हाथ मिलाते हैं)।

(فَیضُ القدیر شرح الجامع الصغیر ج٥ ص٦٣٧ تحت الحدیث ٨١٠٩)

तेरी रह़मतों पे मैं क़ुरबान या रब
मेरे बाल बच्चे मेरी जान या रब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर मुसल्मान को उ़मूमन सलाम व जवाबे सलाम और मुसा-फ़ह़ा करने या'नी हाथ मिलाने की सआ़दत मिलती रहती है । आइये ! "नेकी की दा'वत" का मज़ीद सवाब लूटने के लिये इस बारे में दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले, "101 म-दनी फूल" से कुछ महके महके म-दनी फूल चुनने का शरफ़ ह़ासिल करते हैं : पेश कर्दा हर म-दनी फूल को सुन्नते रसूले मक़्बूल عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर मह़मूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इ़लावा हो सकता है बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن से मन्क़ूल **म-दनी फूल** का भी शुमूल हो । जब तक यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को "सुन्नते रसूल" नहीं कह सकते ।

"اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से सलाम के 11 म-दनी फूल

﴾1﴿ मुसल्मान से मुलाक़ात करते वक़्त उसे **सलाम** करना सुन्नत है । (इस्लामी बहनें भी इस्लामी बहनों नीज़ मह़ारिम को सलाम करें) ﴾2﴿ **मक-त-बतुल मदीना** की मत़बूआ़ 1332 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त (जिल्द 3) सफ़ह़ा 459 पर लिखे हुए जुज़्इय्ये का ख़ुलासा है : "**सलाम** करते वक़्त दिल में येह **निय्यत** हो कि जिस को **सलाम** करने लगा हूं इस का माल और इ़ज़्ज़त व आबरू सब कुछ मेरी ह़िफ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना ह़राम जानता हूं" ﴾3﴿ दिन में कितनी ही बार मुलाक़ात हो, एक कमरे से दूसरे कमरे में बार बार आना जाना हो वहां मौजूद मुसल्मानों को **सलाम** करना कारे सवाब है ﴾4﴿ **सलाम** में पहल करना **सुन्नत** है ﴾5﴿ **सलाम** में पहल करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब (या'नी नज़्दीकी पाने वाला बन्दा) है ﴾6﴿ **सलाम** में पहल करने वाला **तकब्बुर** से भी बरी (या'नी आज़ाद) है । जैसा कि मेरे मक्की म-दनी आक़ा

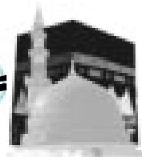
मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा सफ़ा है : पहले **सलाम** कहने वाला **तकब्बुर** से बरी है। (شُعَبُ الایمان ج٦ ص ٤٣٣ حدیث٨٧٨٦) 《7》 **सलाम** (में पहल) करने वाले पर 90 रह़मतें और जवाब देने वाले पर 10 रह़मतें नाज़िल होती हैं। (کیمیائے سعادت ج١ ص٣٩٤) 《8》 اَلسَّلَامُ عَلَیْکُم (या'नी तुम पर सलामती हो) कहने से 10 नेकियां मिलती हैं। साथ में وَرَحمَۃُ اللہ (और अल्लाह की रह़मत हो) भी कहेंगे तो 20 नेकियां हो जाएंगी। और وَبَرَکَاتُہٗ (और उस की ब-र-कतें हों) शामिल करेंगे तो 30 नेकियां हो जाएंगी। बा'ज़ लोग सलाम के साथ "जन्नतुल मक़ाम और दोज़ख़ुल ह़राम" के अल्फ़ाज़ बढ़ा देते हैं येह ग़लत़ त़रीक़ा है। बल्कि बा'ज़ मन चले तो مَعَاذَ اللہ यहां तक बक जाते हैं : "आप के बच्चे हमारे ग़ुलाम।" मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 22 सफ़ह़ा 409 पर फ़रमाते हैं : कम अज़ कम اَلسَّلَامُ عَلَیْکُم और इस से बेहतर وَرَحمَۃُ اللہ मिलाना और सब से बेहतर وَبَرَکَاتُہٗ शामिल करना और इस पर ज़ियादत (या'नी ज़ियादा) नहीं। उस ने اَلسَّلَامُ عَلَیْکُم कहा तो येह وَعَلَیْکُمُ السَّلَامُ وَرَحمَۃُ اللہ कहे। और अगर उस ने اَلسَّلَامُ عَلَیْکُم وَرَحمَۃُ اللہ कहा तो येह وَعَلَیْکُمُ السَّلَامُ وَرَحمَۃُ اللہِ وَبَرَکَاتُہٗ कहे और अगर उस ने وَبَرَکَاتُہٗ तक कहा तो येह भी इतना ही कहे कि इस से ज़ियादत नहीं। وَاللہُ تَعَالٰی اَعلَم 《9》 इसी त़रह़ जवाब में وَعَلَیْکُمُ السَّلَامُ وَرَحمَۃُ اللہِ وَبَرَکَاتُہٗ कह कर 30 नेकियां ह़ासिल की जा सकती हैं 《10》 **सलाम** का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना **वाजिब** है कि **सलाम** करने वाला सुन ले 《11》 **सलाम** और जवाबे सलाम का दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ याद फ़रमा लीजिये। पहले मैं कहता हूं आप सुन कर दोहराइये : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ (اَس۔سَلا۔مُ۔عَلَے۔کُمْ) अब पहले मैं जवाब सुनाता हूं फिर आप इस को दोहराइये : وَعَلَیْکُمُ السَّلَام (وَ۔عَ۔لَیکُ۔مُسْ۔سَلام)۔

रिज़ाए ह़क़ के लिये तुम सलाम आ़म करो
सलामती के त़लब गार हो सलाम करो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"हाथ मिलाना सुन्नत है" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से हाथ मिलाने के 14 म-दनी फूल

《1》 दो मुसल्मानों का ब वक़्ते मुलाक़ात दोनों हाथों से मुसा-फ़हा करना या'नी दोनों **हाथ मिलाना** सुन्नत है 《2》 हाथ मिलाने से पहले **सलाम** कीजिये 《3》 रुख़सत होते वक़्त भी सलाम कीजिये और (साथ में) हाथ भी मिला सकते हैं 《4》 नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है : "जब दो मुसल्मान मुलाक़ात करते हुए मुसा-फ़हा करते हैं और एक दूसरे से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दरमियान सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है जिन में से निन्नानवे रहमतें ज़ियादा पुर तपाक त़रीक़े से मिलने वाले और अच्छे त़रीक़े से अपने भाई से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करने वाले के लिये होती हैं।" (اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط ج٥ ص ٣٨٠ حديث ٧٦٧٢) 《5》 हाथ मिलाने के दौरान दुरूद शरीफ़ पढ़िये हाथ जुदा होने से पहले اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे 《6》 हाथ मिलाते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ कर हो सके तो येह दुआ़ भी पढ़ लीजिये : "يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُم" (या'नी **अल्लाह** तआ़ला हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए) 《7》 दो मुसल्मान हाथ मिलाने के दौरान जो दुआ़ मांगेंगे اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ **क़बूल** होगी और हाथ जुदा होने से पहले पहले दोनों की मग़्फ़िरत हो जाएगी اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ 《8》 आपस में हाथ मिलाने से दुश्मनी दूर होती है 《9》 मुसल्मान को **सलाम** करने, **हाथ मिलाने** बल्कि महब्बत के साथ उस का **दीदार** करने से भी सवाब मिलता है। ह़दीसे पाक में है : जो कोई अपने मुसल्मान भाई की त़रफ़ महब्बत भरी नज़र से देखे और उस के दिल में अ़दावत न हो तो निगाह लौटने से पहले दोनों के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे। (اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط ج٦ ص١٣١ حديث ٨٢٥١) 《10》 जितनी बार


मुलाक़ात हो हर बार हाथ मिला सकते हैं ﴾11﴿ आज कल बा'ज़ लोग दोनों त़रफ़ से एक हाथ मिलाते बल्कि सिर्फ़ उंगलियां ही आपस में टकरा देते हैं येह सब ख़िलाफ़े सुन्नत है ﴾12﴿ हाथ मिलाने के बा'द ख़ुद अपना ही हाथ **चूम** लेना मक्रूह है। (बहारे शरीअ़त जि. 3 स. 472) (हाथ मिलाने के बा'द अपनी हथेली चूम लेने वाले इस्लामी भाई अपनी आ़दत निकालें) हां अगर किसी बुज़ुर्ग से हाथ मिलाने के बा'द हुसूले ब-र-कत के लिये अपना हाथ चूम लिया तो कराहत नहीं, जैसा कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अगर किसी से मुसा-फ़ह़ा किया फिर ब-र-कत के लिये अपना हाथ चूम लिया तो मुमा-न-अ़त की कोई वजह नहीं जब कि जिस से हाथ मिलाए वोह उन हस्तियों में से हो जिन से ब-र-कत ह़ासिल की जाती हो। (جَدُّ الْمُمتار، کتابُ الحظر وَالإباحة، باب الاستبراء وغیرہ مقولہ ٤٥٥١، غیر مطبوعہ) ﴾13﴿ अगर **अम्रद** (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) से (या किसी भी मर्द से) हाथ मिलाने में शह्वत आती हो तो उस से हाथ मिलाना जाइज़ नहीं बल्कि अगर देखने से शह्वत आती हो तो अब देखना भी गुनाह है (دُرِّمُختارج٢ ص٩٨) ﴾14﴿ मुसा-फ़ह़ा करते (या'नी हाथ मिलाते) वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रूमाल वग़ैरा ह़ाइल न हो, दोनों हथेलियां ख़ाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये। (बहारे शरीअ़त जि. 3 स. 471)

ग़ैर औ़रत से हाथ मिलाने का अ़ज़ाब : **एक** त़वील ह़दीसे पाक में येह भी है : जिस ने किसी अज्नबिय्या (या'नी ऐसी औ़रत जिस से निकाह़ हमेशा के लिये ह़राम न हो) औ़रत से मुसा-फ़ह़ा किया (या'नी हाथ मिलाया) तो वोह बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में आएगा कि उस का हाथ आग की ज़न्जीर से गरदन के साथ बंधा हुवा होगा। (قُرَّةُ الْعُیُون ص٣٨٩)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"** (जिल्द 3) सफ़ह़ा 446 पर है : (अज्नबिय्या) से मुसा-फ़ह़ा (या'नी हाथ मिलाना) जाइज़ नहीं इसी लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ब वक़्ते बैअ़त भी औ़रतों से मुसा-फ़ह़ा न फ़रमाते सिर्फ़ ज़बान से बैअ़त लेते। हां अगर वोह बहुत ज़ियादा बूढ़ी हो कि मह़ल्ले शह्वत न हो तो उस से मुसा-फ़ह़ा में ह़रज नहीं। यूहीं




अगर मर्द बहुत ज़ियादा बूढ़ा हो कि फ़ितने का अन्देशा ही न हो तो मुसा-फ़ह़ा कर सकता है। (बहारे शरीअ़त जि. 3 स. 446)

ज़नाने ग़ैर से भाई मुसा-फ़ह़ा मत कर
हुवा है जुर्म येह गर कर ले तौबा ह़क़ से डर

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रास्ते का ह़क़ नम्बर (4) नेकी का हुक्म करना और बुराई से मन्अ़ करना

इसी किताब के सफ़ह़ा नम्बर 314 पर दी हुई बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक "रास्तों में बैठने के हुक़ूक़" में से रास्ते का ह़क़ नम्बर (4) "नेकी का हुक्म करना और बुराई से मन्अ़ करना" के मु-तअ़ल्लिक़ नेकी की दा'वत के म-दनी फूल ह़ाज़िर हैं : नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने के सवाब की तो कोई इन्तिहा नहीं, रास्ते में अक्सर इस का बहुत मौक़अ़ मिलता है। म-सलन आप बैठे थे, कोई मुलाक़ात के लिये आया बिग़ैर सलाम किये हाथ मिलाने लगा तो उस को इस त़रह़ नेकी का दा'वत दी जा सकती है कि भाईजान ! मुलाक़ात के लिये आने वाले के लिये हाथ मिलाने से क़ब्ल सलाम करना सुन्नत है। बा'ज़ लोग सलाम करने वक़्त झुक जाते हैं उन को भी मौक़अ़ की मुना-सबत से और उन के ज़र्फ़ (या'नी ह़ौसले) के मुत़ाबिक़ समझाया जा सकता है, म-सलन उन से कहा जाए : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"** (जिल्द 3) सफ़ह़ा 464 पर मस्अला लम्बर 31 है : "बा'ज़ लोग सलाम करते वक़्त झुक भी जाते हैं, येह झुकना अगर ह़द्दे रुकूअ़ तक हो तो **ह़राम** है और इस से कम हो तो **मक्रूह** है।" (बहारे शरीअ़त जि. 3 स. 464) हां दस्त बोसी के लिये झुकने में ह़रज नहीं बल्कि बिग़ैर झुके हाथ चूमना ही दुश्वार है। इस की नेकी की दा'वत का अह़सन त़रीक़ा येह हो सकता है कि आप के पास "म-दनी बेग" और उस में **मक-त-बतुल मदीना** के मत़बूआ़ दीगर रिसालों के साथ साथ **101 म-दनी फूल** नामी चन्द रसाइल भी मौजूद हों और आप उसी रिसाले में से निकाल कर येह "म-दनी फूल" दिखा दें। ज़हे नसीब ! दिखाने के बा'द अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ वोह रिसाला ही उस मुलाक़ाती को तोह़फ़े में पेश कर दें। जी हां ! **अच्छी**

अच्छी निय्यतें तो हर काम से क़ब्ल करनी ही होंगी अगर एक भी अच्छी निय्यत न हुई तो सवाब नहीं मिलेगा । म-सलन रिसाला देते वक़्त येही **निय्यत** कर लीजिये कि "रिज़ाए इलाही के लिये तोहफ़ा पेश कर के एक मुसल्मान का दिल ख़ुश कर रहा हूं" अगर बिग़ैर अच्छी निय्यत के नेकी की दा'वत देंगे, "इन्फ़िरादी कोशिश" करेंगे, सुन्नतें बताएंगे, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ और म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की दा'वत देंगे, म-दनी इन्आ़मात की तरग़ीब दिलाएंगे **सवाब** नहीं मिलेगा ।

इन्फ़िरादी कोशिश "नेकी की दा'वत" की रूह़ है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत की रूह़ "इन्फ़िरादी कोशिश" है । जिस मुसल्मान पर नेकी की दा'वत पेश करने के लिये इन्फ़िरादी कोशिश करनी हो उस के लिये येह ज़ेह्न बनाना चाहिये कि मैं जिस से मिलने लगा हूं वोह एक **मुसल्मान** है, मुसल्मान चाहे कितना ही गुनहगार हो मगर दौलते ईमान से मुशर्रफ़ होने की वजह से उस का अपना एक मक़ाम है और मैं ने मिलना भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन की सर बुलन्दी और आख़िरत की बेहतरी के लिये है, इस निय्यत से मेरा मिलना इबादत का द-रजा रखता है, अगर इन निय्यतों के साथ मुलाक़ात करेंगे तो इस मौक़अ़ पर اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ रह़मतों का नुज़ूल होगा और ब-र-कतें मिलेंगी । एक ख़ास म-दनी फूल येह भी ज़ेह्न में रहे कि उस के उ़यूब की टटोल में मत पड़िये, उस की अ़क़्ल से मा वरा (या'नी उस की समझ में न आए ऐसी) बात मत कीजिये और गहरे मसाइल मत छेड़िये ।

"या ख़ुदा मुझे नरमी दे" के पन्दरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से इन्फ़िरादी कोशिश की 15 निय्यतें

इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए ह़स्बे ह़ाल या'नी मौक़अ़ की मुना-सबत से बे शुमार **निय्यतें** की जा सकती हैं, उन में से 15 पेश की जाती हैं :

《1》 **अल्लाह** की रिज़ा के लिये नेकी की दा'वत देने के लिये इन्फ़िरादी कोशिश करता हूं 《2》 सलाम व जवाबे सलाम के बा'द गर्म जोशी से हाथ मिलाऊंगा 《3》 صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! कह कर दुरूद शरीफ़ पढ़ाऊंगा और पढ़ूंगा 《4》 चूंकि सामने वाले के चेहरे पर नज़रें गाड़ कर गुफ़्त-गू करना सुन्नत नहीं लिहाज़ा हत्तल इम्कान नीची निगाहें किये बातचीत करूंगा (नीची निगाहें कर के इन्फ़िरादी कोशिश करने से नेकी की दा'वत का फ़ाएदा اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ कई गुना बढ़ जाएगा) 《5》 **सुन्नत** पर अ़मल की निय्यत से मुस्करा कर बात करूंगा 《6》 त़न्ज़ बाज़ी और ग़ैर सन्जीदा गुफ़्त-गू से बचूंगा 《7》 सामने वाले की नफ़्सिय्यात के मुत़ाबिक़ गुफ़्त-गू की कोशिश करूंगा 《8》 गहरे मसाइल छेड़ कर उस को तश्वीश में नहीं डालूंगा 《9》 बिला ज़रूरत मौजूदा सियासत और दहशत गर्दी वग़ैरा के तज़्किरे नहीं करूंगा 《10 ता 12》 सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत, म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र और म-दनी इन्आमात पर अ़मल का ज़ेहन देने की सअ्य करूंगा 《13》 नए इस्लामी भाई को एक दम से दाढ़ी रखने और इमामा शरीफ़ पहनने की तल्क़ीन के बजाए नमाज़ की फ़ज़ीलत वग़ैरा बताऊंगा। (हां जिस से बात कर रहे हैं वोह "शेव्ड" है और ज़न्ने ग़ालिब है कि इस को दाढ़ी बढ़ाने का कहेंगे तो मान जाएगा तब तो उस को दाढ़ी मुंडाने से मन्अ़ करना वाजिब हो जाएगा, मगर उ़मूमन नए इस्लामी भाई पर "ज़न्ने ग़ालिब" होना दुश्वार होता है, अ़मल के जज़्बे की कमी का दौर है, नए इस्लामी भाई को दाढ़ी रखने का इसरार करने पर हो सकता है आयन्दा आप के सामने आने ही से कतराए) 《14》 सामने वाले का लहजा अगर ना गवार या त़न्ज़ भरा हुवा तो समझ जाने के बा वुजूद इस का उस पर इज़्हार किये बिग़ैर सब्र और नरमी के साथ आ़जिज़ाना अन्दाज़ में बात जारी रखूंगा। 《15》 अगर इन्फ़िरादी कोशिश का अच्छा नतीजा सामने आया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम समझूंगा और शुक्रे इलाही बजा लाऊंगा, और अगर कोई ना खुश गवार बात पेश आई तो सामने वाले को सख़्त दिल वग़ैरा समझने के बजाए इसे अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर करूंगा।

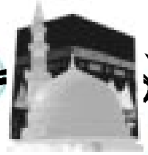
मुबल्लिग़ के लिये अहम तरीन म-दनी फूल : **हौसला** बड़ा रखना चाहिये, नाकामी की तो कोई वजह ही नहीं क्यूं कि **अच्छी निय्यत** की सूरत में नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल इन्फ़िरादी कोशिश करने वाला सवाबे आख़िरत का हक़दार तो हो ही गया। **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى नक़्ल फ़रमाते हैं : किसी बुज़ुर्ग ने अपने फ़रज़न्द को नसीहत का म-दनी फूल इनायत करते हुए फ़रमाया : "नेकी की दा'वत" देने वाले को चाहिये कि अपने आप को सब्र का ख़ूगर (या'नी आदी) बनाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से नेकी की दा'वत के मिलने वाले सवाब पर यक़ीन रखे। जिस को सवाब का कामिल यक़ीन हो उस को इस मुबारक काम में तक्लीफ़ महसूस नहीं होती। (إحياءُ العُلوم ج٢ ص ٤١٠)

मैं नेकी की दा'वत की धूमें मचाऊं
बदी से बचूं और सब को बचाऊं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुसल्सल इन्फ़िरादी कोशिश का फल : **ज़ियाकोट** (सियाल कोट पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ इस तरह है : नेकी की राह पर गामज़न होने से क़ब्ल मेरी हालत ना गुफ़्ता बेह थी, मेरा वुजूद सर ता पा गुनाहों से आलूद था। लोगों से झगड़ा वग़ैरा करने के लिये मैं ने अपना एक अला-हदा ग्रूप बना रखा था, मेरी बद कलामी और फ़ोहूश गोई से मेरे स्कूल के त-लबा, असातिज़ा और हेड मास्टर वग़ैरा सभी तंग थे, राह चलते बद निगाही करना मेरा मा'मूल था, न सिर्फ़ इश्क़े मजाज़ी में गरिफ़्तार था बल्कि مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ ऐसी ना ज़ैबा ह-रकात का मुर-तकिब था जिन को बयान करने की अब हिम्मत नहीं पाता। शर-ई मा'लूमात से ना बलद (या'नी ना वाक़िफ़) होने की वजह से मैं इतना भी न जानता था कि फ़र्ज़ ग़ुस्ल किस तरह उतरता है और र-मज़ानुल मुबारक में बड़े बड़े गुनहगार भी अपने गुनाहों का सिल्सिला ख़त्म कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मसरूफ़ हो जाते हैं मगर अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! मैं र-मज़ानुल मुबारक में भी






बाज़ारों की ज़ीनत बना रहता और बद निगाही के ज़रीए अपने क़ल्बे सियाह की तस्कीन का सामान करता, मेरी ईदें पार्कों में और 12 रबीउ़न्नूर शरीफ़ का मुबारक दिन बाज़ारों और मुख़्तलिफ़ तफ़्रीह़ गाहों में गुज़रता, जब बसंत आती तो सारी सारी रात अपने ग्रूप के साथ बसंत मनाने वालों की त़रह़ ज़र्द लिबास में मल्बूस नाच रंग की महाफ़िल में मश्ग़ूल रहता । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़फ़्लत का येह आ़लम था कि महीनों मस्जिद का रुख़ न करता । मेरे वालिद साहि़ब एक नमाज़ी और परहेज़ गार शख़्स थे, वोह लाख पन्दो नसीह़त करते मगर मेरे कान पर जूं तक न रेंगती, मेरे गुनाहों की नुहूसत इतनी ज़ियादा थी कि जो कोई मेरी सोहबत इख़्तियार करता वोह भी पैकरे गुनाह बन जाता । अपने इन्हीं काले करतूतों के सबब मैं सब की नज़रों में क़ाबिले नफ़रत बन कर रह गया था । आख़िर कार मेरी काया कुछ इस त़रह़ पल्टी कि एक रोज़ मस्जिद के क़रीब से गुज़रते हुए एक आ़शिक़े रसूल ने मुझे **नमाज़** की दा'वत दी, मेरे इन्कार करने पर उस ने इसरार किया और मेरा हाथ पकड़ कर मुझे **मह़ब्बत** से मस्जिद में ले गया । जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो एक इस्लामी भाई ने दर्स शुरूअ़ किया, मैं भी उस में शरीक हो गया, दर्स के दौरान मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत व मग़्फ़िरत के मु-तअ़ल्लिक़ ह़िकायात सुनीं तो मुझे कुछ ह़ौसला मिला, दर्स के बा'द जब इस्लामी भाइयों ने इन्तिहाई मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में मुझे नेकी की दा'वत दी तो मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई, क्यूं कि अ़क़्ल व शुऊ़र की देहलीज़ पर क़दम रखने के बा'द मेरी ज़िन्दगी का येह पहला मौक़अ़ था कि मुझ जैसे क़ाबिले नफ़रत शख़्स को किसी ने इस क़दर मह़ब्बत से नवाज़ा था । मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश करने वाले अपने हम उ़म्र मुबल्लिग़ से मैं ने अपने गुनाहों का फ़साना बयान किया तो उस ने रह़मतों भरी बातों के ज़रीए कुछ इस अन्दाज़ में ढारस बंधाई कि मेरा दिल मुत़्मइन हो गया, कि नहीं नहीं मेरे लिये **तौबा** का दरवाज़ा बन्द नहीं हुवा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बख़्शने वाला मेहरबान है चुनान्चे मैं ने अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से **तौबा** कर ली । मेरी ज़िन्दगी का पहला दिन था कि जिस में मैं ने पहली बार पांचों नमाज़ें अदा कीं । फिर जब सालाना इम्तिह़ान के बा'द छुट्टियां हुईं तो मेरा येह मा'मूल बन गया कि उस आ़शिक़े रसूल के साथ सुब्ह़ मस्जिद में जाता तो तक़रीबन बारह बजे तक मसाइले नमाज़ और सुन्नतें सीखने





सिखाने का सिल्सिला जारी रहता। कुछ अ़र्से बा'द शैत़ान ने एक चाल चली और मुझे कुछ ऐसे नादानों की सोह़बत मुयस्सर आई कि जिन्हों ने मुझे उस मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी से बदज़न कर दिया आह! मैं अपने उस मोह़सिन और ख़ैर ख़्वाह को अपना दुश्मन और बद ख़्वाह समझ बैठा और एक आ़शिक़े रसूल की ग़ीबतें सुनने के बाइ़स अच्छी सोह़बतें छोड़ कर तक़रीबन एक साल तक फिर बुरे लोगों की संगत में गरिफ़्तार रहा और इस दौरान मैं ने फिर वोही "ह़-र-कतें" शुरूअ़ कर दीं। मगर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की ग़ुलामी मुक़द्दर में लिख दी गई थी, लिहाज़ा क़िस्मत ने एक बार फिर या-वरी की, वोह यूं कि एक दिन मैं फ़ेक्टरी से छुट्टी कर के वापस आ रहा था और ह़स्बे आ़दत परेशान नज़री का शिकार, बद निगाही की आफ़्ते बद में गरिफ़्तार राह चलते लोगों से छेड़छाड़ करता जा रहा था कि अचानक मेरी नज़र सफ़ेद लिबास में मल्बूस, सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए, ह़या से अपनी निगाहों को झुकाए, अपनी त़रफ़ आते हुए एक आ़शिक़े रसूल पर पड़ी, उन के चेहरे पर तक़्वे का नूर देख कर मुझे अपने गुनाहों पर नदामत सी होने लगी, मैं ने उन से मुलाक़ात की, वोह निहायत गर्म जोशी से मिले, उन से तआ़रुफ़ हुवा और फिर रफ़्ता रफ़्ता मैं उन की सोह़बत में रहने लगा, उन इस्लामी भाई की नमाज़ों में इस्तिक़ामत क़ाबिले रश्क थी। दा'वते इस्लामी के बारे में मेरा ह़ुस्ने ज़न अज़ सरे नौ क़ाइम हो गया, वोह इस्लामी भाई मुझे बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में भी अपने हमराह ले गए, इज्तिमाअ़ से वापसी पर मेरे सर पर सफ़ेद टोपी थी, बा'द में इमामा शरीफ़ भी सजा लिया और येह लिखते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में क़ाफ़िला कोर्स कर रहा हूं।

मो'तरिफ़ हूं गुनाह करने में — कोई छोड़ी नहीं कसर आक़ा
फंस गया हूं गुनह की दलदल में — हो करम शाहे बह़रो बर आक़ा
मैं गुनहगार हूं मगर क़ुरबां
तेरी रह़मत की है नज़र आक़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 350, 351)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! बार बार गुनाहों में पड़ने वाला बिल आख़िर दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की ब-र-कत से राहे रास्त पर आ ही गया। यक़ीनन सारे ही **गुनाह** क़ाबिले तर्क हैं, इन में किसी क़िस्म की भलाई नहीं। गुनाहों से बचने वालों की पज़ीराई और अपनी इबादतों की ता'रीफ़ से बचने की तल्क़ीन पर मब्नी क़ुरआनी "नेकी की दा'वत" मुला-हज़ा हो। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़्हा 973 पर पारह 27 **सू-रतुन्नज्म** आयत नम्बर 32 में इर्शाद होता है :

اَلَّذِیْنَ یَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓىٕرَ الْاِثْمِ وَ الْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَ اِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِیْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْۚ فَلَا تُزَكُّوْۤا اَنْفُسَكُمْؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى۠ ﴿۳۲﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो बड़े गुनाहों और बे हयाइयों से बचते हैं मगर इतना कि गुनाह के पास गए और रुक गए बेशक तुम्हारे रब की मग़्फ़िरत वसीअ़ है वोह तुम्हें ख़ूब जानता है तुम्हें मिट्टी से पैदा किया और जब तुम अपनी मांओं के पेट में ह़म्ल थे तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ। वोह ख़ूब जानता है जो परहेज़ गार हैं।

आयते मुबा-रका की तफ़्सीर : सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی फ़रमाते हैं : **गुनाह** वोह अ़मल है जिस का करने वाला अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ हो। बहर ह़ाल **गुनाह की दो क़िस्में** हैं सग़ीरा और कबीरा। **कबीरा** जिस का अ़ज़ाब सख़्त हो और बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया कि **सग़ीरा** जिस पर वईद न हो **कबीरा** वोह जिस पर वईद हो और **फ़वाह़िश** वोह जिन पर ह़द हो। आयते मुबा-रका के इस ह़िस्से "मगर इतना कि गुनाह के पास गए और रुक गए" के तह़त फ़रमाते हैं : कि इतना तो कबाइर से बचने की ब-र-कत से मुआ़फ़ हो जाता है। इस ह़िस्सए आयत : "बेशक तुम्हारे रब की मग़्फ़िरत वसीअ़ है वोह तुम्हें ख़ूब जानता है" के तह़त फ़रमाते हैं : **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन लोगों के ह़क़ में नाज़िल हुई जो नेकियां करते थे और अपने अ़-मलों की ता'रीफ़ करते थे और कहते थे हमारी नमाज़ें, हमारे रोज़े, हमारे ह़ज। इस

हिस्सए आयत "तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ" के तहत फ़रमाते हैं : या'नी तफ़ाखुरन (बतौरे फ़ख्र) अपनी नेकियों की ता'रीफ़ न करो क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों के ह़ालात का खुद जानने वाला है। वोह इन की इब्तिदाए हस्ती से आख़िरे अय्याम (या'नी शुरूअ़ से ले कर मौत तक) के जुम्ला अह़वाल जानता है। इस आयत में **रिया** और **खुद नुमाई** और **खुद सराई** की मुमा-न-अ़त फ़रमाई गई लेकिन अगर ने'मते इलाही के ए'तिराफ़ और इत़ाअ़त व इबादत पर मसर्रत और उस के अदाए शुक्र के लिये नेकियों का ज़िक्र किया जाए तो जाइज़ है। इस हिस्सए आयत, "वोह ख़ूब जानता है जो परहेज़ गार हैं" के तहत फ़रमाते हैं : और उसी का जानना काफ़ी, वोही जज़ा देने वाला है, दूसरों पर इज़्हार और नामो नुमूद से क्या फ़ाएदा ! (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान स. 973)

सब से प्यारे आ'माल : क़बीलए ख़स्अ़म का एक आदमी बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर हुवा, कहने लगा : "वोह आप ही हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم होने का दा'वा रखते हैं ?" फ़रमाया : "हां।" पूछा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के यहां सब से ज़ियादा प्यारा अ़मल क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ईमान** लाना। अ़र्ज़ की : फिर कौन सा ? इर्शाद हुवा, **सिलए रेह़्मी** (या'नी रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक) करना। अ़र्ज़ की, फिर कौन सा ? इर्शाद फ़रमाया : **नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना।**

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج ٨ ص٢٧٧ حديث ١٣٤٠٤، مُسْنَدُ اَبِيْ يَعْلٰى ج٦ ص٥٥ حديث ٦٨٠٤)

ऐ का'बा ! तेरी फ़ज़ा कितनी अच्छी है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेशक अफ़्ज़ल व अहम तरीन अ़मल **ईमान** है और तमाम नेक आ'माल के उख़्रवी फ़वाइद भी **ईमान** पर ख़ातिमे के साथ ही मश्रूत़ हैं जैसा कि "बुख़ारी शरीफ़" में है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيْم या'नी आ'माल का दारो मदार ख़ातिमे पर है। **(بُخاری ج ٤ حديث٦٦٠٧)** यक़ीनन जो मुसल्मान है वोह बड़ा ही खुश क़िस्मत है। **मुसल्मान** की फ़ज़ीलत के भी क्या कहने ! शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने का'बए मुअ़ज़्ज़मा को मुख़ात़ब कर के इर्शाद फ़रमाया : "तू खुद और तेरी फ़ज़ा कितनी अच्छी है, तू किस क़दर अ़-ज़मत वाला है और तेरी हुरमत (या'नी इ़ज़्ज़त) कैसी अ़ज़ीम है, उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के

क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुहम्मद صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जान है ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक मोमिन की जान व माल और उस से अच्छा गुमान रखने की हुरमत तेरी हुरमत से भी ज़ियादा है।" (اِبنِ ماجه ج ٤ ص ٣١٩ حديث ٣٩٣٢) जो बद क़िस्मत ईमान की दौलत से महरूम है उस को आख़िरत में किसी क़िस्म की भलाई और राहत नहीं मिलेगी वोह हमेशा हमेशा जहन्नम में अ़ज़ाब पाता रहेगा। जहन्नम की कैफ़िय्यत पढ़िये और लरज़िये चुनान्चे

जहन्नम की दिल हिला देने वाली कैफ़िय्यत : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ 853 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल"** जिल्द अव्वल सफ़हा 97 ता 98 पर है : अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना **उमर** बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ (मशहूर ताबेई बुज़ुर्ग) से इर्शाद फ़रमाया : **ऐ का'ब** (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ) ! हमें डर वाली कुछ बातें सुनाइये ! हज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने ता'मीले इर्शाद करते हुए अ़र्ज़ की : या अमीरल मुअमिनीन ! अगर आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ क़ियामत के दिन सत्तर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के आ'माल ले कर आएं तब भी महशर के अह़वाल देख कर उन्हें बहुत ही कम जानने लगेंगे। येह सुन कर **अमीरुल मुअमिनीन** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुछ देर के लिये सर झुका लिया फिर जब (रिक़्क़त में) इफ़ाक़ा हुवा (या'नी कमी आई) तो इर्शाद फ़रमाया : **ऐ का'ब** (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ) ! मज़ीद सुनाइये। अ़र्ज़ की : **या अमीरल मुअमिनीन** ! अगर जहन्नम में से **बैल** के नथने (या'नी बैल की नाक के सूराख़) जितना हिस्सा मश्रिक़ में खोल दिया जाए तो मग़रिब में मौजूद शख़्स का दिमाग़ उस की गर्मी की वजह से उबल कर बह जाए। इस पर अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने (रिक़्क़त के सबब) कुछ देर के लिये सर झुका लिया फिर जब इफ़ाक़ा हुवा (या'नी कमी हुई) तो इर्शाद फ़रमाया : **ऐ का'ब** (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ) ! और सुनाइये। अ़र्ज़ की : **या अमीरल मुअमिनीन** ! क़ियामत के दिन जहन्नम इस त़रह़ गरजेगी कि कोई मुक़र्रब फ़िरिश्ता या नबिय्ये मुरसल ऐसा न होगा जो घुटनों के बल गिर कर येह न कहे : رَبِّ! نَفْسِیْ! نَفْسِیْ! (या'नी ऐ मेरे रब عَزَّ وَجَلَّ ! मैं तुझ से अपने लिये सुवाल करता हूं) हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ

ने मजी़द बताया : जब क़ियामत का दिन आएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अव्वलीन व आख़िरीन (या'नी सब अगलों पिछलों) को एक मैदान में जम्अ़ फ़रमाएगा, फिर फ़िरिश्ते नाज़िल हो कर सफ़ें बनाएंगे। इस के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : ऐ जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ! जहन्नम को ले आओ। तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام जहन्नम को इस त़रह़ ले कर आएंगे कि उस की सत्तर हज़ार लगामों को खींचा जा रहा होगा, फिर जब जहन्नम मख़्लूक़ से **सो बरस की राह** के फ़ासिले पर रह जाएगी तो इस ज़ोर से गरजेगी कि जिस से मख़्लूक़ के दिल दहल जाएंगे, फिर जब दोबारा गरजेगी तो हर मुक़र्रब फ़िरिश्ता और नबिय्ये मुरसल घुटनों के बल गिर जाएगा, फिर जब तीसरी मरतबा गरजेगी तो लोगों के दिल गले तक पहुंच जाएंगे और अ़क़्लें घबरा जाएंगी, यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अ़र्ज़ करेंगे : या इलाही ! मैं तेरे ख़लील होने के सदक़े से सिर्फ़ अपने लिये सुवाल करता हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अ़र्ज़ गुज़ार होंगे : **या इलाही** عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपनी मुनाजात के सदक़े सिर्फ़ अपने लिये सुवाल करता हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अ़र्ज़ करेंगे : **या इलाही** عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मुझे जो इ़ज़्ज़त दी है उस के सदक़े मैं सिर्फ़ अपने लिये सुवाल करता हूं, उस मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के लिये (भी) सुवाल नहीं करता जिस ने मुझे जना है। (اَلزَّوَاجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْکَبَائِر ج ۱ ص ۴۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से जहन्नम की होल नाकियों का बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। इस रिवायत में अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मक़ामे ख़ौफ़ का भी बयान है, मगर याद रहे कि येह ह़ज़रात मा'सूम हैं और रिवायत में बयान कर्दा सूरते ह़ाल क़ियामत के बा'ज़ अवक़ात में होगी वरना उन्हें मह़शर में किसी क़िस्म की कोई तक्लीफ़ न होगी बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़नायत से लोगों की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे और ख़ुद बुलन्द तरीन मक़ामात पर जल्वा फ़रमा होंगे।

मुझे नारे दोज़ख़ से डर लग रहा है — हो मुझ ना तुवां पर करम या इलाही
जला दे न मुझ को कहीं नारे दोज़ख़ — करम बहरे शाहे उमम या इलाही
तू अ़त्तार को बे सबब बख़्श मौला
करम कर करम कर करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82, 83)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकी की दा'वत देना ख़ामोश रहने से बेहतर है : **ज़बान** की आफ़तें बे शुमार हैं और इन से बचने का बेहतरीन त़रीक़ा येही है कि ज़बान पर **कुफ़्ले मदीना** लगा लिया जाए, या'नी आदमी ख़ामोशी की आदत बना ले, अलबत्ता जो ज़बान की लग़्ज़िशों से बचना जानता हो और शरीअ़त के ऐन तक़ाज़े के मुत़ाबिक़ बोलने पर क़ुदरत रखता हो उस के लिये **नेकी की दा'वत** देना ख़ामोशी से अफ़्ज़ल तरीन अ़मल है । जैसा कि **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : अगर तुम اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना) करो तो येह ख़ामोश रहने से ज़ियादा बेहतर है । (شُعَبُ الْاِيمان ج٦ ص٩٢ حديث٧٥٧٨)

सवाब मिलने की उम्मीद : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबुद्दरदाअ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं दूसरों को नेकी का हुक्म देता हूं और ख़ुद अगर्चे वोह काम नहीं करता लेकिन फिर भी मुझे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से अज्र मिलने की उम्मीद है । (كَنْزُ الْعُمّال ج٣ ص٢٧٠ رقم٨٤٣٨) या'नी जब किसी को नेक काम करने का हुक्म दिया तो मुझे अज्र मिल गया अगर्चे मैं वोह काम ख़ुद न भी करता हूं ।

क़ब्र की रोशनी का सामान : **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : "भलाई की बातें ख़ुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की क़ब्रों को रोशन फ़रमाऊंगा ताकि उन को किसी क़िस्म की वह़्शत न हो ।"

(حِلْيَةُ الْاَولياء ج٦ ص٥ رقم ٧٦٢٢)

मुबल्लिग़ीन की क़ब्रें اِنْ شَآءَ اللّٰه **जग-मगाएंगी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस रिवायत से नेकी की बात सीखने सिखाने का अज्रो सवाब मा'लूम हुवा । सुन्नतों भरा बयान करने या दर्स देने और सुनने वालों के तो वारे ही न्यारे हो जाएंगे, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की क़ब्रें अन्दर से जगमग जगमग कर रही होंगी और उन्हें

किसी क़िस्म का ख़ौफ़ महसूस नहीं होगा। इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए नेकी की दा'वत देने वालों, सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र और फ़िक्रे मदीना कर के **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला रोज़ाना पुर करने की तरग़ीब देने वालों और सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश करने वालों नीज़ मुबल्लिग़ीन की नेकी की दा'वत सुनने वालों की क़ुबूर भी اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हुज़ूर मुफ़ीज़ुन्नूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर के सदक़े नूरुन अ़ला नूर होंगी।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : **त़ल्अ़त :** या'नी चेहरा। सूरत। नज़ारा

शर्हे कलामे रज़ा : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! झूम उठो ! जब मह़बूबे रब, ताजदारे अ़रब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपना नूरानी चेहरा चमकाते हुए मोमिन की क़ब्र में जल्वा फ़रमा होंगे, तो रोशनी ही रोशनी हो जाएगी और ता क़ियामे क़ियामत क़ब्र में नूर के चश्मे लहराते रहेंगे।

अंधेरा घुप अंधेरा है शहा वह़्शत का डेरा है
करम से क़ब्र में तुम आओगे तो रोशनी होगी

(वसाइले बख़्शिश, स. 280)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मरीज़ त़बीब बन गया : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى एक मरतबा बीमार हो गए। लोगों ने शिफ़ाख़ाने में दाख़िल करवा दिया। आप के अ़क़ीदत मन्द वज़ीर अ़ली बिन ईसा की दर-ख़्वास्त पर ख़लीफ़ए बग़दाद ने दरबारे शाही के नसरानी (क्रिस्चेन) **रईसुल अति़ब्बा** (या'नी डॉक्टरों के सरदार) को आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इलाज के लिये भेज दिया। उस ने बड़ी तवज्जोह से इलाज किया मगर कोई फ़ाएदा

नहीं हुवा । एक दिन **रईसुल अतिब्बा** ने कहा : ऐ शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ! अगर मुझे येह मा'लूम हो जाए कि मेरे बदन के किसी टुकड़े में आप का इलाज है तो मुझे आप के लिये अपना उ़ज़्व काट देने में भी कोई तरद्दुद (या'नी इन्कार) नहीं होगा । **हज़रते** सय्यिदुना शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : "मेरा इलाज आप के एक उ़ज़्व काटने के मुक़ाबले में बहुत ही आसान चीज़ में है ।" उस ने पूछा : वोह क्या है ? । फ़रमाया कि तुम अपना ज़ुन्नार काट डालो और इस्लाम क़बूल कर लो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ मारे ख़ुशी के मेरा मरज़ जाता रहेगा । त़बीब ने फ़ौरन ज़ुन्नार काटा, कुफ़्र से तौबा की, **कलिमा** पढ़ा और मुसल्मान हो गया उसी वक़्त **हज़रते** सय्यिदुना शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى तन्दुरुस्त हो कर बिस्तरे बीमारी से उठ खड़े हुए । ख़लीफ़ए बग़दाद को जब येह ख़बर पहुंची तो उस ने तअ़ज्जुब से कहा कि मैं ने तो **त़बीब को मरीज़** के पास भेजा था, मुझे क्या ख़बर थी कि **मरीज़ को त़बीब** के पास भेज रहा हूं । (رُوحُ البَیان ج ۲ ص ٤٦١) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ज़ुन्नार किसे कहते हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! एक धागा हिन्दू अपने गले और बग़ल के दरमियान डाले रहते हैं उसे **ज़ुन्नार** या **जनीव** कहते हैं इसी त़रह़ वोह धागा या ज़न्जीर जो क्रिस्चेन, मजूसी (या'नी आतश परस्त) और यहूदी अपनी कमर में बांधते हैं **ज़ुन्नार** कहलाता है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि हमारे औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام नेकी की दा'वत, ख़ल्क़े ख़ुदा की हिदायत और इस्लाम की इशाअ़त के निहायत ही शैदाई थे, किसी ग़ैर मुस्लिम के इस्लाम क़बूल कर लेने से उन्हें इतनी अ़ज़ीम मसर्रत ह़ासिल होती थी कि ख़ुशी के मारे बसा अवक़ात उन की ख़त़रनाक बीमारियां दूर हो जाती थीं ।

मुझे तुम ऐसी दो हिम्मत आक़ा दूं सब को नेकी की दा'वत आक़ा
बना दो मुझ को भी नेक ख़स्लत नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत

(वसाइले बख़्शिश, स. 191)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़लीफ़ा सुलैमान रो पड़ा : **ख़लीफ़ए** दिमश्क़ सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक उ-मवी बड़े कर्रो फ़र (या'नी शानो शौकत) का बादशाह था । उस ने एक मरतबा मश्हूर मुहद्दिस सय्यिदुना इमाम त़ाऊस عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقُدُّوْس को दरबार में बुलाया, आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मौक़अ़ पा कर "नेकी की दा'वत" देते हुए इस्तिफ़्सार फ़रमाया (या'नी पूछा) : **ऐ अमीरुल मुअमिनीन !** क्या आप को मा'लूम है कि **सब से ज़ियादा अ़ज़ाब किस को होगा ?** ख़लीफ़ा ने कहा : आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ही इर्शाद फ़रमाइये ! तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह ह़दीसे पाक पढ़ कर सुनाई : "जिस को **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी सल्त़नत में बादशाही अ़ता फ़रमाई फिर उस ने ज़ुल्म किया तो उस शख़्स को क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा अ़ज़ाब दिया जाएगा ।" येह सुन कर ख़लीफ़ा ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ से लरज़ उठा और दहाड़ें मार कर रोने लगा यहां तक कि रोते रोते तख़्त पर चित लैट गया । उस के तमाम दरबारी उस को इसी ह़ालत में छोड़ कर चले गए । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۱۶۹)

मा तह़्तों के बारे में सभी से पूछा जाएगा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से मा'लूम हुवा कि बयान की तासीर के लिये जहां सुनने वालों को दिलो दिमाग़ ह़ाज़िर रखते हुए सुनना ज़रूरी है वहां मुबल्लिग़ का भी **बा अ़मल**, इख़्लास का पैकर और हर क़िस्म की ह़िर्स और ज़ाती ग़रज़ से पाक होना लाज़िमी है । जहां येह दोनों चीज़ें जम्अ़ होंगी, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वहां बयान का ख़ूब असर ज़ाहिर होगा और अगर इन दोनों में से कोई एक चीज़ मफ़्क़ूद (या'नी ग़ाइब) होगी तो बयान के स-मरात (या'नी फ़वाइद) मिलना दुश्वार होंगे । इस **ह़िकायत** से येह भी मा'लूम हुवा कि **बादशाह** अगर ज़ुल्म करेगा तो अ़ज़ाबे नार का सब से ज़ियादा ह़क़दार बनेगा । जो लोग इक्तिदार के त़लब गार रहते हैं वोह एक त़रह़ से अपने आप को बहुत बड़े पुर ख़त़र ग़ार में धकेलने के दर पै होते हैं । इस ज़िम्न में **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा हों : ﴿1﴾ जिस को रिआ़या का ज़िम्मेदार बनाया गया फिर उस ने रिआ़या की ख़ैर ख़्वाही न की तो वोह जन्नत की ख़ुश्बू तक न पा सकेगा । (بخاری ج ٤ ص ٤٥٦ حدیث ٧١٥٠) ﴿2﴾ तुम सब **निगहबान** हो और हर एक से उस की रिआ़या

(या'नी मा तह्तों और मह्कूम लोगों) के बारे में पूछा जाएगा। जिसे लोगों पर **अमीर** बनाया गया वोह **निगह्बान** है, उस से उन के बारे में पूछा जाएगा। **मर्द** अपने अहले ख़ाना पर **निगह्बान** है, उस से अहले ख़ाना के बारे में सुवाल किया जाएगा, **औ़रत** अपने शोहर के घर और उस की औलाद पर **निगह्बान** है, वोह उन के बारे में जवाब देह होगी, ग़ुलाम अपने आक़ा के माल पर **निगह्बान** है, उस से इस बारे में पूछगछ होगी। सुन लो ! **तुम में से हर एक निगह्बान है** और हर एक से उस की रिआ़या (मा तह्तों और मह्कूम लोगों) के बारे में पुरसिश (या'नी पूछगछ) होगी। (صَحیح بُخاری ج ۲ ص ۱۵۹ حدیث ۲۰۰٤)

इक़्तिदार मिलने पर रोना : **अब** एक **ह़िकायत** मुला-ह़ज़ा हो जो कि अरबाबे इक़्तिदार के लिये निहायत इब्रत खे़ज़ है चुनान्चे तारीखु़ल ख़ु-लफ़ा में है : अ़ता बिन अबी रबाह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ की ज़ौजए मोह़तरमा फ़ाति़मा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہا ने मुझ से फ़रमाया कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ को ख़िलाफ़त तफ़्वीज़ की गई (या'नी मिली) तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ घर में आए और मुसल्ले पर बैठ कर गिर्या व ज़ारी करने लगे और इतना रोए कि **दाढ़ी मुबारक आसूंओं से तर हो गई।** मैं ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मुअमिनीन ! आप क्यूं रो रहे हैं ? फ़रमाया : ऐ फ़ाति़मा ! मुसल्मानों की निगह दाश्त (या'नी निगरानी) और उन की फ़लाह़ व बेहबूद (या'नी भलाई और खै़र ख़्वाही) का सारा बोझ मेरी गरदन पर डाल दिया गया है। मैं नंगे, भूकों, फ़क़ीरों, मरीज़ों, मज़्लूम क़ैदियों, मुसाफ़िरों, ज़ईफ़ों, बच्चों और इयाल दारों (या'नी बाल बच्चे दारों) ग़रज़ कि अपनी रिआ़या के तमाम मुसीबत ज़दों की ख़बर गीरी के बारे में ग़ौर करता हूं और सोचता हूं कि कहीं इन में से किसी एक के बारे में भी **अल्लाह** तआ़ला ने मुझ से बाज़पुर्स (या'नी पूछगछ) फ़रमा ली और मुझ से जवाब न बन पड़ा तो मेरा क्या बनेगा ! मैं इसी फ़िक्र में **रो** रहा हूं। (تاریخ الخلفاء ص ۱۸۹)

अंगूर खाने से भी ख़ौफ़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! आज कल उ़मूमन इक़्तिदार के ज़रीए़ माल व मनाल (या'नी जाएदाद व माल) ह़ासिल किया जाता है मगर रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों का ह़ाल इस से मुख़्तलिफ़

होता है, **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ से मालामाल होने के सबब वोह ऐसे मौक़अ़ पर रो रो कर निढाल हो जाते हैं। वोह ह़ज़रात फूंक फूंक कर क़दम रखते और बात बात पर डरते हैं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **औ़न** बिन **मुअ़म्मर** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है कि एक रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ अपनी ज़ौजए मोह़तरमा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا से फ़रमाने लगे : फ़ाति़मा ! तुम्हारे पास एक दिरहम हो तो दे दो आज **अंगूर** खाने को जी चाहता है, उन्हों ने अ़र्ज़ की : मेरे पास दिरहम कहां ! क्या आप अमीरुल मुअमिनीन हो कर एक दिरहम की भी हैसिय्यत नहीं रखते ? (बे क़रार हो कर) फ़रमाया : **अंगूर** न खाना इस से कहीं ज़ियादा आसान है कि कल मैं जहन्नम की ज़न्जीरें पहनूं। (تاريخ الخلفاء ص ٤٧١) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

अंगूर के ह़िसाबे आख़िरत का डर : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ का ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ मरह़बा ! **अंगूर** बेशक ह़लाल व त़य्यिब हैं लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **ने'मत** हैं और बरोज़े क़ियामत हर **ने'मत** का ह़िसाब देना होगा, आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ख़ौफ़े आख़िरत के सबब अंगूर खाने से बाज़ रहे। आह ! आज हम एक से एक लज़ीज़ ने'मतें खाते और बरतते (या'नी इस्ति'माल करते) हैं और मज़ीद बेहतर से बेहतरीन की जुस्त-जू (या'नी तलाश) में रहते हैं, उ़म्दा से उ़म्दा तरीन कोठी भी नाकाफ़ी मह़सूस होती है, बड़े से बड़ा बंगला (VILLA) ह़ासिल करने के दर पै रहते हैं जब कि पारह 30 **सू-रतुत्तकासुर** की आख़िरी आयत ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों को बे क़रार किये देती है। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़्ह़ा 1118 पर इर्शाद होता है :

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۟ ﴿٨﴾
(پ ٣٠، التكاثر ٨)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

आयते मुबा-रका की तफ़्सीर में तीन अह़ादीस : ﴾1﴿ इक्रिमा ने कहा : जब येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम कौन सी ने'मतों में हैं ! हमें तो जव की रोटी और वोह भी सिर्फ़ आधा पेट नसीब होती है ! वह़्य आई : क्या तुम जूते नहीं पहनते ? **ठन्डा पानी** नहीं पीते ? येह भी **ने'मतें** हैं (تفسیر دُرِّ مَنثور ج۸ ص۶۱۳) ﴾2﴿ ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने मज़्कूरा आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया : जिस ने गन्दुम (या'नी कनक, गेहूं) की रोटी खाई और फ़ुरात का ठन्डा पानी पिया नीज़ रहने के लिये मकान भी हो, येह वोह **ने'मतें** हैं जिन के **मु-तअ़ल्लिक़** सुवाल होगा (اَیضاً ص۶۱۲) ﴾3﴿ **जलीलुल** क़द्र ताबेई ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस आयते मुबा-रका के बारे में फ़रमाया कि इस से दुन्या की हर लज़्ज़त वाली शै मुराद है। (اَیضاً)

सू-रतुत्तकासुर की मज़्कूरा आख़िरी आयते मुबा-रका के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : जो **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें अ़त़ा फ़रमाई थीं सिह़ह़त व फ़राग़ (या'नी ख़ुश ह़ाली) व अम्न व ऐ़श व माल वग़ैरा जिन से दुन्या में लज़्ज़तें उठाते थे, पूछा जाएगा : येह चीज़ें किस काम में ख़र्च कीं ? इन का क्या शुक्र अदा किया ? और तर्के शुक्र पर अ़ज़ाब किया जाएगा।

दो अक़्सामे ने'मत और सुवालाते आख़िरत : मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان की सूरए तकासुर की मज़्कूरा आख़िरी आयत के तह़त बयान कर्दा तफ़्सीर में येह भी है : कस्बी **ने'मत** (या'नी अपनी कोशिश से ह़ासिल कर्दा ने'मत म-सलन मिठाइयां, लज़ीज़ ग़िज़ाएं, ठन्डे मश्रूबात, उ़म्दा मल्बूसात, दौलत, सल्त़नत वग़ैरा) के बारे में तीन सुवालात होंगे (1) कहां से ह़ासिल की ? (2) कहां ख़र्च की ? (3) इस का क्या शुक्रिया अदा किया ? **वह्बी ने'मत** (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इनायत की हुई वोह ने'मत जिस

में बन्दे की अपनी कोशिश का दख़्ल न हो। जैसा कि चांद, सूरज, हाथ, पाउं, आंख, कान वग़ैरा) के बारे में **दो सुवालात** होंगे : (1) कहां ख़र्च की ? (2) इस का क्या शुक्रिया अदा किया ? (नूरुल इरफ़ान स. 966)

आह ! उ़म्दा उ़म्दा गि़ज़ाएं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई बड़े ख़ौफ़ की बात है, आज हम उ़म्दा से उ़म्दा तरीन गि़ज़ाओं और ने'मतों के ह़रीस बने हुए हैं मगर क़ब्र में कीड़ों की गि़ज़ा बनने और हि़साबे आख़िरत में फंसने के अन्देशे को भूले हुए हैं। हमें अच्छे में अच्छा और लज़ीज़ तरीन खाना चाहिये और वोह भी गर्म हो, एक तो "उ़म्दा गि़ज़ा" बज़ाते ख़ुद ने'मत और उस का गर्म होना ने'मत दर ने'मत, सादा चाय से भी गुज़ारा नहीं, दूध पत्ती हो और वोह भी मीठी मीठी और गरमा गर्म हो, यूं हमारी एक चाय भी कई ने'मतों का मज्मूआ़ बन जाती है ! इसी त़रह़ ह़ल्वा पूरी, पिज़्ज़े, पराठे, अन्वाओ़ अक़्साम की मिठाइयां, त़रह़ त़रह़ के ताज़ा फल और ख़ुश्क मेवे (या'नी ड्राई फ़्रूट), ख़ुश ज़ाएक़ा फ़ालूदे, ठन्डे मीठे मज़ेदार शरबत, बादाम पिस्ते वाला शीर ख़ुर्मा, ठन्डी बोतलें (COLD DRINKS), आइसक्रीमें, मख्खन, मलाई, कस्टर्ड, कबाब समोसे, गरमा गर्म पकोड़े, तली हुई मछली, तली हुई चांपें, तन्दूरी रान, चिकन तिक्का, सीख़ कबाब, बर्गर और न जाने क्या क्या हमारा लालची नफ़्स त़लब करता और खाता पीता है। अगर्चे मज़्कूरा तमाम गि़ज़ाएं खाना ह़लाल हैं मगर इन पर और तमाम ने'मतों पर बरोज़े आख़िरत सुवालात किये जाएंगे। काश ! हमारा खाऊ पियू नफ़्स क़ाबू में आ जाए। काश ! अच्छी अच्छी निय्यतों के न होने की सूरत में फ़क़त़ तफ़्रीह़न और मह़ज़ ह़ुसूले लज़्ज़त के लिये खाने पीने की आ़दत से हमारी जान छूट जाए।

माल खाने के शाइक़ीन ग़ौर फ़रमाएं : हम चन्द मिनट की लज़्ज़त की ख़ातिर कितना बड़ा ख़त़रा मोल ले रहे हैं इस बात को इस रिवायत से समझने की कोशिश कीजिये चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 504 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"मिन्हाजुल आ़बिदीन"** सफ़ह़ा 141 पर **हुज्जतुल इस्लाम**

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : मन्कूल है : "बेशक सकराते मौत की शिद्दत दुन्या की लज़्ज़तों के मुताबिक़ है।" तो जिस ने ज़ियादा लज़्ज़तें उठाईं उसे नज़्अ़ की तक्लीफ़ भी ज़ियादा होगी।

(مِنہاجُ العابدین ص۹٤)

नज़्अ़ की सख़्तियों की झलक : नज़्अ़ की सख़्तियों की झलक मुला-हज़ा हो चुनान्चे हज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक्ल करते हैं : मौत दुन्या व आख़िरत की होल नाकियों में सब से ज़ाइद होलनाक है, येह आरों के चीरने से, कैंचियों के काटने से, हांडियों के उबालने से ज़ाइद है। अगर मुर्दा ज़िन्दा हो कर शदाइदे मौत (या'नी मौत की सख़्तियां) लोगों को बता देता तो उन का ऐश और नींद सब कुछ ख़त्म हो जाता।

(شَرْحُ الصُّدُور ص ۳۳)

काश ! कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता — क़ब्रो हश्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता
जां कनी की तक्लीफ़ें ज़ब्ह से हैं बढ़ कर काश ! — मुर्ग़ बन के तयबा में ज़ब्ह हो गया होता
आह ! कस्रते इस्यां हाए ! ख़ौफ़ दोज़ख़ का — काश ! इस जहां का मैं न बशर बना होता
शोर उठा येह महशर में ख़ुल्द में गया अत्तार
गर न वोह बचाते तो नार में गया होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 256, 258)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिसाबे ने'मत के बारे में लरज़ा ख़ैज़ 9 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** **फ़ानी** लज़्ज़तों से अपने आप को बचाने का जज़्बा बढ़ाने और दुन्यवी ने'मतों के सबब होने वाले हिसाबे आख़िरत से ख़ुद को डराने के लिये दिल हिला देने वाले 9 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-हज़ा हों : ﴾1﴿ जब क़ियामत का दिन होगा तो **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों में से एक बन्दे को बुला कर अपने सामने खड़ा कर

देगा और उस से उस के जाह व मर्तबे के मु-तअ़ल्लिक़ इसी त़रह़ सुवाल करेगा जिस त़रह़ उस के माल के बारे में सुवाल फ़रमाएगा। (المعجم الاوسط ج١ ص١٤٠ حديث٤٤٨) ﴾2﴿ बन्दा कोई भी क़दम उठाता है तो क़ियामत में उस से सुवाल होगा कि वोह क़दम किस लिये उठाया था ? (تاريخ دمشق ج٦ ص ٥٤) ﴾3﴿ क़ियामत के दिन सब से पहले बन्दे से येह सुवाल होगा कि क्या मैं ने तेरा जिस्म तन्दुरुस्त नहीं रखा था ? क्या मैं ने तुझे ठन्डे पानी से सैराब न किया था ? (तूने इन के हुक़ूक़ अदा किये या नहीं ?) (المستدرك ج٥ ص١٩١ حديث ٧٢٨٥) ﴾4﴿ मालिक और मम्लूक (या'नी गुलाम) को और ज़ौज (या'नी शोहर) और ज़ौजा को लाया जाएगा फिर उन से ह़िसाब होगा, यहां तक कि मर्द से कहा जाएगा तूने फुलां फुलां दिन लज़्ज़त के साथ पानी पिया और शोहर से कहा जाएगा कि फुलां औ़रत से निकाह़ के और भी त़लब गार थे लेकिन तूने उस का निकाह़ चाहा तो मैं ने उन सब को छोड़ कर उस का निकाह़ तेरे साथ कर दिया। (क्या तू ने इन ने'मतों का ह़क़ अदा किया ?) (مجمع الزوائد ج١٠ ص٦٣٣ حديث١٨٣٩٠) ﴾5﴿ क़ियामत में मोमिन से हर अ़मल का सुवाल होगा यहां तक कि उस से अपनी आंखों में सुरमा डालने के मु-तअ़ल्लिक़ भी सुवाल किया जाएगा। (حلية الاولياء ج١٠ ص٣١) ﴾6﴿ बन्दा जो ख़ुत़्बा पढ़ता (या'नी वा'ज़ और बयान करता) है इस के बारे में भी उस से सुवाल होगा कि इस से तेरा क्या इरादा था ? (الصمت مع موسوعة ابن اَبِى الدُّنيا ج٧ ص٢٩٤ حديث ٥١٤) (मुबल्लिग़ीन व मुक़र्रिरीन ग़ौर फ़रमाएं कि बयान का मक़्सूद नेकी की दा'वत थी या बयान की ता'रीफ़ और वाह वाह की त़लब या हुसूले शोहरत या दौलत ?) ﴾7﴿ जो शख़्स किसी शै की जानिब बुलाएगा क़ियामत के दिन उसे उस की दा'वत (या'नी बुलाने) के साथ खड़ा किया जाएगा, ख़्वाह एक ही आदमी को दा'वत क्यूं न दी हो। (ابن ماجه ج١ ص١٣٧ حديث٢٠٨) (इस रिवायत में ख़ुलूस की त़रफ़ इशारा है म-सलन नेकी की दा'वत मह़ज़ रिज़ाए इलाही के लिये दी थी या कोई और मक़्सद था ! इन्फ़िरादी कोशिश करने वाले मुबल्लिग़ीन भी ग़ौर फ़रमाएं) ﴾8﴿ क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, तुम जिस ने'मत के **मु-तअ़ल्लिक़** क़ियामत में सुवाल किये जाओगे वोह ठन्डा साया और उ़म्दा खजूर और ठन्डा पानी है। (ترمذی ج٤ ص١٦٣ حديث٢٣٧٦)

﴾8﴿ क़ियामत में हर ग़नी व फ़क़ीर (या'नी हर अमीर व ग़रीब) आरज़ू करेगा कि काश ! दुन्या में इस के पास सिर्फ़ क़ूत होता (ابن ماجه ج٤ ص٤٤٢ حديث٤١٤٠) (क़ूत या'नी सिर्फ़ इतना खाना होता जिस से ज़िन्दगी बच सके और बस)

माल ज़ियादा वबाल ज़ियादा : ﴾1﴿ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन **अ़मीरह** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : जितना माल ज़ियादा होगा उतना हिसाब ज़ियादा होगा । (البـدور السـافرة فی امور الآخرة ص ٢٦٤) ﴾2﴿ हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : क़ियामत में एक दिरहम वाले के मुक़ाबले में दो दिरहम वाले का हिसाब ज़ियादा सख़्त होगा । (الـزهـد للامام احمد بن حنبل ص ١٧٠ حديث٧٩٧) ﴾3﴿ **जलीलुल** क़द्र ताबेई सय्यिदुना मुआ़विया बिन **क़ुर्रह** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : क़ियामत में सब से सख़्त हिसाब तन्दुरुस्त फ़ारिग़ुल बाल (या'नी ख़ुशहाल) शख़्स से होगा । (تاريخ مدينه دمشق ج٥٩ ص ٢٧١)

सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से हिसाब
बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : **सदक़ा :** वसीला । **बे पूछे :** बे हिसाब । **लजाए :** शरमिन्दा । **लजाना :** शरमिन्दा करना ।

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस शे'र के अन्दर बारगाहे ख़ुदा वन्दी में अ़र्ज़ कर रहे हैं : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शर्मो ह़या का वासित़ा ! मुझे मह़शर में पूछगछ किये बिग़ैर ही बख़्श दे, मैं तो अपने गुनाहों पर पहले ही शरमिन्दा हूं मेरे आ'माल का हिसाब ले कर मज़ीद शरमिन्दा न फ़रमा ।

इम्तिह़ां के कहां क़ाबिल हूं मैं प्यारे अल्लाह
बे सबब बख़्श दे मौला तेरा क्या जाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 126)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

12 साल तक ह़िसाबो किताब : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आख़िरत के ह़िसाब का मुआ़-मला निहायत संगीन है । इब्रत के लिये एक **ह़िकायत** पेश की जाती है, सुनिये और ख़ूब कुढ़िये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन **अ़म्र** बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عنہما फ़रमाते हैं : नाज़िमे निज़ामे उम्मत, साह़िबे ख़ौफ़ो ख़शिय्यत, सरदारे साकिनाने जन्नत अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के विसाले पुर मलाल के बा'द मुझे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के उख़रवी मुआ़-मलात जानने की शदीद ख़्वाहिश थी । एक दिन मैं ने ख़्वाब में एक मह़ल देखा तो पूछा : येह किस का है ? फ़िरिश्ते ने बताया : "ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ।" इतने में वज़ीरे हु़ज़ूरे अन्वर, साकिनाने जन्नत के सरवर, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस मह़ल से बाहर इस ह़ाल में तशरीफ़ लाए कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर एक चादर थी गोया अभी अभी ग़ुस्ल फ़रमाया है । मैं ने अ़र्ज़ की : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? जवाब दिया : अच्छा मुआ़-मला फ़रमाया । फिर मुझ से पूछने लगे : मुझे तुम से जुदा हुए कितना अ़र्सा गुज़रा है ? मैं ने अ़र्ज़ की : 12 साल । फ़रमाने लगे : अब जा कर ह़िसाबो किताब से फ़ारिग हुवा हूं । (تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر ج٤٤ص٤٨٣) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म
देता हूं वासित़ा तुझे शाहे ह़िजाज़ का

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सहाबा में सब से मालदार सहाबी के हिसाबे क़ियामत का अहवाल :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अद्लो इन्साफ़ के पैकर, परहेज़ गारों के अफ़्सर, मुत्तक़ियों के रहबर हज़रते सय्यिदुना उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की येह हिकायत हमें बहुत कुछ समझा रही है । अ-श-रए मुबश्शरा के रोशन सितारे हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में सब से ज़ियादा मालदार थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का सारा ही माल यक़ीनी तौर पर हलाल था और कस्रते माल ग़फ़्लत शिआरी के बजाए आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये ख़शिय्यते इलाही का सबब बन गई थी । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हिसाबे क़ियामत की हिकायत भी सरापा इब्रत है, मुला-हज़ा फ़रमाइये चुनान्चे एक बार सरकारे आली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के पास तशरीफ़ ला कर फ़रमाया : "ऐ अस्हाबे मुहम्मद ! आज रात **अल्लाह** तआला ने जन्नत में तुम्हारे मकान और मन्ज़िलें नीज़ मेरे मकान से किस का कितना दूर मकान है सब मुझे दिखाए ।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जलीलुल क़द्र अस्हाबे किराम की मन्ज़िलें फ़र्दन फ़र्दन बयान करने के बा'द हज़रते अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया : "ऐ अब्दुर्रहमान (मैं ने देखा) कि तुम मुझ से बहुत दूर हो गए यहां तक कि मुझे तुम्हारी हलाकत का ख़दशा होने लगा फिर कुछ देर बा'द तुम पसीने में शराबोर मुझ तक पहुंचे तो मेरे पूछने पर तुम ने बताया : "मुझे हिसाब के लिये रोक लेने के बा'द मुझ से पूछगछ शुरूअ हो गई कि माल कहां से कमाया और कहां ख़र्च किया ? रावी कहते हैं, हज़रते अब्दुर्रहमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह सुन कर रो पड़े और अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह सो ऊंट जो आज ही रात मिस्र से माले तिजारत समेत आए हैं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को गवाह बना कर इन्हें मदीनए पाक के ग़रीबों और यतीमों पर स-दक़ा करता हूं । (تاريخ دمشق ج٣٥ ص٢٦٦) हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में अर्ज़ की : मुझे अन्देशा है कि कस्रते माल कहीं (आख़िरत में) मुझे हलाकत में न डाल दे ! उन्हों ने फ़रमाया : अपना माल राहे ख़ुदा में ख़र्च करते रहा करो । (استيعاب فى معرفة الاصحاب ج٢ ص٣٨٩)

मालदारों के लिये लम्हृए फ़िक्रिय्या : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनी क़त़ई ह़लाल माल रखने वाले अपना माले ह़लाल दोनों हाथों से राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में लुटाने वाले के ह़िसाबे क़ियामत की इस लरज़ा ख़ैज़ ह़िकायत पर नज़र रखते हुए मालदारों को ग़ौर करना और क़ियामत के होशरुबा अहवाल (या'नी दह्शतों और घबराहटों) से डरना चाहिये और जो लोग मह्ज़ दुन्यवी ह़िर्स के सबब माल इकठ्ठा किये जाते, इस के लिये दर बदर भटकते फिरते और माल बढ़ाने के निज़ाम को बेहतर से बेहतरीन बनाते चले जाते हैं उन्हें अपनी इस रविश पर नज़्रे सानी कर लेनी चाहिये और जो सूरत दुन्या व आख़िरत दोनों के लिये बेहतर हो वोह इख़्तियार करनी चाहिये ।

मालो दौलत के मु-तअ़ल्लिक़ अच्छी अच्छी निय्यतें : ह़लाल माल जम्अ़ करना फ़ी नफ़्सिही मुबाह़ है (या'नी न इस में सवाब है न गुनाह) । अगर कोई इ़ल्मे निय्यत रखने वाला इस की **अच्छी अच्छी निय्यतें** कर ले तो ख़्वाह माले ह़लाल के ज़रीए़ अरबों पती बन जाए उस का माल उस की आख़िरत के लिये नुक़्सान देह नहीं । मगर याद रहे ! रस्मी त़ौर पर सिर्फ़ ज़बान से निय्यत के अल्फ़ाज़ अदा कर लेने को निय्यत नहीं कहते, **निय्यत** दिल के उभार और पक्के इरादे का नाम है या'नी जो निय्यत कर रहा है वोह उस के दिल में इस त़रह़ मौजूद हो कि मैं ने 100 फ़ी सदी ऐसा करना ही करना है । मालो दौलत के बारे में **निय्यत** की रग़बत दिलाते हुए **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : माल लेने, छोड़ने, ख़र्च करने और रोकने में निय्यत सह़ीह़ होनी चाहिये । माल इस लिये ह़ासिल करे कि **इ़बादत** पर मदद ह़ासिल हो और माल छोड़ना हो तो **ज़ोह्द** (या'नी दुन्या से बे रग़बती) की निय्यत से और उसे ह़क़ीर समझते हुए छोड़े । जब येह त़रीक़ा इख़्तियार करेगा तो माल का मौजूद होना उसे नुक़्सान नहीं पहुंचाएगा, इसी लिये अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "अगर कोई शख़्स तमाम रूए ज़मीन का माल ह़ासिल करे और उस का इरादा

रिज़ाए इलाही का हुसूल हो तो वोह **ज़ाहिद** (या'नी दुन्या से बे रग़बत) है और अगर तमाम माल छोड़ दे लेकिन रिज़ाए ख़ुदा वन्दी मक़्सूद न हो तो वोह **ज़ाहिद** नहीं है।" पस आप की तमाम ह़-रकात व स-कनात **अल्लाह** तआ़ला के लिये हों और **इबादत** से बाहर न हों या इबादत पर मददगार हों। जो चीज़ें इबादत से ज़ियादा दूर हैं वोह खाना खाना और क़ज़ाए ह़ाजत (या'नी इस्तिन्जा) है लेकिन येह दोनों भी इबादत पर मददगार हैं जब इन से आप का मक़्सूद येह होगा या'नी इबादत पर क़ुव्वत और दिल जम्ई ह़ासिल करने की **निय्यत** होगी तो येह काम भी आप के ह़क़ में **इबादत** होंगे। इसी त़रह़ जो चीज़ें आप की ह़िफ़ाज़त करती हैं म-सलन क़मीस, इज़ार (या'नी पाजामा), बिछोना और बरतन वग़ैरा तो इन सब में भी **अच्छी निय्यत** होनी चाहिये क्यूं कि दीन के सिल्सिले में इन तमाम चीज़ों की ज़रूरत होती है और जो कुछ ज़रूरत से ज़ाइद हो उस से बन्दगाने ख़ुदा को नफ़्अ़ पहुंचाने की निय्यत होनी चाहिये और जब किसी शख़्स को उस की ज़रूरत हो तो इन्कार न करे जो शख़्स इस त़रह़ का अ़मल करेगा उस ने माल के सांप (यहां माल को "सांप" से तश्बीह दी गई है) से उस का (मुफ़ीद ह़िस्सा या'नी) जौहर और तिरयाक़ (ज़हर मोहरा या'नी ज़हर की दवा जो ज़हर का उतार करती है) भी ले लिया और (ख़ुद सांप के) ज़हर से मह़फ़ूज़ (भी) रहा, ऐसे आदमी को माल की कसरत नुक़्सान नहीं पहुंचाती लेकिन येह काम वोही शख़्स कर सकता है जिस के क़दम दीन में मज़्बूत़ हों और उस के पास कसीर इल्मे दीन हो। इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی आगे चल कर मालो दौलत से बच कर रहने की तल्क़ीन करते हुए फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ नाबीना का **बीना** (या'नी आंख वाले) की त़रह़ पहाड़ों की चोटियों और दरियाओं के कनारों तक पहुंचना और कांटेदार रास्तों से गुज़रना मुम्किन नहीं इसी त़रह़ आ़म आदमी का मालो दौलत की आफ़तों से बचना भी ना मुम्किन है। (احیاءُ العلوم ج۳ ص ۳۲۰) मालो दौलत परहेज़ गार और ब कसरत इल्मे दीन रखने वाला ही चाहे तो ले सकता है कि शरीअ़त के मुत़ाबिक़ इसे ह़ासिल और शरीअ़त ही के मुत़ाबिक़ इसे इस्ति'माल कर सकता है और माल की आफ़तों से ख़ुद को बचा सकता है।

ज़ख़्मी दिल वाले बुज़ुर्ग : **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی नक़्ल करते हैं : एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रो रहे थे, लोग उन के गिर्द इकठ्ठे हो गए और तर्स

खाते हुए कहने लगे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए, क्या मस्अला हो गया है, क्यूं रो रहे हैं ? **फ़रमाया :** मेरे दिल में एक **ज़ख़्म** है जिसे ख़ाइफ़ीन (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाले लोग) अपने दिलों में पाते हैं, लोगों ने अ़र्ज़ की : वोह **ज़ख़्म** किस त़रह़ का होता है ? फ़रमाया : उस पेशी के ख़ौफ़ का **ज़ख़्म** जब बरोज़े क़ियामत बारगाहे इलाही में ह़िसाब किताब के लिये पेश होने के लिये ए'लान होगा । (إحياء العلوم ج٤ ص ٢٣٠) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ عليه واٰلہٖ وسلَّم

ऐब दुन्या में तू ने छुपाए ह़श्र में भी न अब आंच आए
आह ! नामा मेरा खुल रहा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 134)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

नफ़रत मह़ब्बत में बदल गई : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूमात बढ़ाने, दुरुस्त इस्लामी अ़क़ाइद ज़ेहन में बिठाने, शैत़ान को दूर भगाने, ईमानिय्यात के बारे में आने वाले वसाविस से जान छुड़ाने, ग़फ़्लत की नींद उड़ाने, रूह़ानी कैफ़ो सुरूर पाने और अपने आप को बा किरदार मुसल्मान बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये और अपने इस म-दनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" के ह़ुसूल की ख़ात़िर अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये फ़िक्र मन्द रहिये, **नमाज़ों** की पाबन्दी जारी रखिये, **सुन्नतों** पर अ़मल करते रहिये, **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ **"फ़िक्रे मदीना"** कर के म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करते रहिये और हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये ।

आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक **म-दनी बहार** सुनाऊं **चीचा वत़नी** (ज़िल्अ़ साहेवाल, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई ने ग़फ़्लतों की वादी में गुज़रे हुए अपने लम्ह़ाते ज़िन्दगी के बारे में कुछ इस त़रह़ बयान किया : मेरी ज़िन्दगी भरपूर ग़फ़्लत में गुज़र रही थी, मेरे उजड़े हुए गुलज़ार में रुश्दो हिदायत की बादे बहार **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता एक आ़शिक़े रसूल की बा ब-र-कत सोह़बत की बदौलत चली । उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** ने मुझे दा'वते इस्लामी के क़रीब तर कर दिया और मैं म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया । जब मैं पहली बार हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हुवा तो मैं ने अव्वल ता आख़िर बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल की, येह सब कुछ मुझे बहुत अच्छा लगा लेकिन जब इज्तिमाअ़ में शरीक इस्लामी भाई ब-यक आवाज़ दीवाना वार ज़िक्रुल्लाह में मसरूफ़ हुए तो मुझे बे इख़्तियार हंसी आ गई कि येह लोग क्या पागलों की त़रह़ शुरूअ़ हो गए हैं ! (اَلْعِیَاذُ بِاللّٰہ) मैं इसी त़रह़ के अह़मक़ाना वस्वसों में मगन था कि यकायक रूह़निय्यत का एक ऐसा झोंका आया कि मैं ख़ुद बख़ुद ज़िक्रुल्लाह में लग गया और ऐसा मस्त हुवा कि अपने गिर्दो पेश की ख़बर ही न रही, दिल पर अ़जीब कैफ़ो सुरूर त़ारी हो गया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस ज़िक्र व दुआ़ की ब-र-कत से मेरी त़बीअ़त में सन्जी-दगी पैदा हो गई और साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर के मैं सलातो सुन्नत की राह पर गामज़न हो गया । मैं ने चेहरे पर दाढ़ी मुबारक और सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजा लिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ र-मज़ानुल मुबारक में इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की ब-र-कतें ह़ासिल करने की सआ़दत भी मुयस्सर आई, अब मेरे वालिदे मोह़तरम ने भी दाढ़ी शरीफ़ सजा ली है और तमाम घर वाले सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो चुके हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मैं **म-दनी इन्आ़मात** के ख़ादिम की हैसिय्यत से म-दनी काम करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं ।

इसी माह़ोल ने अदना को आ'ला कर दिया देखो
अंधेरा ही अंधेरा था उजाला कर दिया देखो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

एक बन्दए नेक के सबब पड़ोस के 100 घरों से बलाएं दूर हों : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह बात हमेशा याद रखिये ! अगर आप मज़्हबी वज़्अ़ क़त़्अ़ के मालिक हैं तो सन्जीदा रहिये और ख़ूब मिलन सार बन जाइये, आप का मन्सब ऐसा है कि आप की एक मुस्कराहट किसी की आयन्दा नस्लों की तक़्दीर बदल सकती है और एक बार की बे रुख़ी या झिड़क किसी की आने वाली नस्लों को भी مَعَاذَاللّٰہ गुमराही के गढ़े में झोंक सकती है लिहाज़ा हमेशा हर मिलने जुलने वाले के साथ **नरमी** नरमी और नरमी से पेश आइये और उन को **नेकी की दा'वत** देने में सुस्ती न फ़रमाइये। क्या पता आप की एक पर **इन्फ़िरादी कोशिश** किसी के ख़ानदान भर की इस्लाह़ का बाइ़स बन जाए ! जैसा कि अभी आप ने **म-दनी बहार** में मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि जब एक फ़र्द पर इन्फ़िरादी कोशिश कारगर हुई तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर भर को इस का फ़ैज़ान पहुंचा। अच्छों की ब-र-कतों के भी क्या कहने ! **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 853 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल''** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 809 पर है : ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नेक मुसल्मान की वजह से उस के पड़ोस के 100 घरों से बला दूर फ़रमा देता है।'' फिर आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ (پ۲، البقرۃ:۲۵۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर **अल्लाह** लोगों में बा'ज़ से बा'ज़ को दफ़्अ़ न करे तो ज़रूर ज़मीन तबाह हो जाए।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی ج۳ ص ۱۲۹ حدیث ۴۰۸۰)

तू नेकों का फ़ैज़ान मौला अ़त़ा कर
मुआ़फ़ फ़ज़्ल से मेरी हर इक ख़त़ा कर

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीन म-दनी फ़ूलें : **अल्लाह** वालों के नेकी की दा'वत देने का अन्दाज़ भी निराला होता है । इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़्रोज़ हिकायत सुनिये और इब्रत से सर धुनिये : हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم को एक मालदार शख़्स ने ब इसरार दा'वते तआम दी, फ़रमाया : मेरी येह **तीन शर्तें** मानो तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आऊंगा, (1) मैं जहां चाहूंगा बैठूंगा (2) जो चाहूंगा खाऊंगा (3) जो कहूंगा वोह तुम्हें करना पड़ेगा । उस मालदार ने वोह तीनों शर्तें मन्ज़ूर कर लीं । **वलिय्युल्लाह** की ज़ियारत के लिये बहुत सारे लोग जम्अ हो गए, पुर तकल्लुफ़ तआम का एहतिमाम था । वक़्ते मुक़र्ररा पर **हज़रते** सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم भी तशरीफ़ ले आए और आते ही जहां लोगों के **जूते** पड़े थे वहीं तशरीफ़ फ़रमा हो गए । चूंकि शर्त थी, "जहां चाहूंगा बैठूंगा ।" लिहाज़ा मेज़बान ने कुछ न कहा । जब खाना शुरूअ हुवा, लोगों ने मुर्ग़े मुसल्लम पर हाथ साफ़ करने शुरूअ कर दिये लेकिन **वलिय्युल्लाह** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी झोली में हाथ डाल कर **सूखी रोटी** का टुकड़ा निकाला और तनावुल फ़रमाने लगे । जब सिल्सिलए तआम का इख़्तिताम हुवा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मेज़बान से फ़रमाया : "चूल्हा लाओ और उस पर तवा रखो," हुक्म की ता'मील हुई, जब आग की तपश से तवा सुर्ख़ अंगारा बन गया तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उस पर नंगे पाउं खड़े हो गए ! लोगों की आंखें हैरत के मारे फटी की फटी रह गईं !! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : **"मैं ने आज के खाने में सूखी रोटी खाई है ।"** येह फ़रमा कर तवे से नीचे उतर आए और हाज़िरीन से फ़रमाया : अब आप हज़रात भी बारी बारी इस **तवे** पर खड़े हो कर जो कुछ अभी खाया है उस का हिसाब दीजिये । येह सुन कर लोगों की चीख़ें निकल गईं, ब-यक ज़बान बोल उठे : "या सय्यिदी ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه तो **वलिय्युल्लाह** हैं और येह आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की **करामत** है, कहां येह **गर्म गर्म तवा** और कहां हमारे नाज़ुक क़दम ! हम तो गुनहगार दुन्यादार लोग हैं ।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : **ऐ लोगो !** उस वक़्त को याद कीजिये जब सूरज सिर्फ़ सवा मील दूर होगा, आज सूरज हम से करोड़ों मील दूर है और उस का पिछला रुख़ हमारी तरफ़ है जब कि उस वक़्त सूरज का अगला रुख़

हमारी जानिब होगा, ज़मीन भी आग की होगी, उस दहक्ती हुई ज़मीन पर ग़ौर फ़रमाइये और इस गर्म तवे के बारे में सोचिये ! येह तवा जो कि दुन्यवी आग में गर्म हुवा है इस की तपिश ख़ुदा की क़सम ! मैदाने क़ियामत की आग की ज़मीन के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं, उस आग की ज़मीन पर खड़ा होना पड़ेगा, पारह 30 **सू-रतुत्तकासुर** की आख़िरी आयत में रब्बुल इबाद جَلَّ جَلَالُہٗ इर्शाद फ़रमाता है :

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝٨
(پ۳۰،التکاثر ۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी ।

जब इस दुन्यवी गर्म तवे पर खड़े हो कर सिर्फ़ एक वक़्त के खाने का ह़िसाब नहीं दे सकते तो कल बरोजे़ क़ियामत आप ह़ज़रात के अन्दर ऐसी कौन सी करामत पैदा हो जाएगी कि दहक्ती हुई ज़मीन पर खड़े हो कर ज़िन्दगी भर की ने'मतों का ह़िसाब चुकाएंगे ! येह रिक़्क़त अंगेज़ बयान सुन कर लोग दहाड़ें मार मार कर रोने और गुनाहों से तौबा तौबा पुकारने लगे । (تذکرۃ الاولیاء الجزء الاوّل ص۲۲۲)

या इलाही ! जब ह़िसाबे ख़न्दए बे जा रुलाए   *चश्मे गिर्याने शफ़ीए़ मुर्तजा का साथ हो*

या इलाही ! जब बहें आंखें ह़िसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रैज़ होंटों की दुआ़ का साथ हो

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : तबस्सुम रैज़ : मुस्कराने वाले । **ख़न्दए बे जा :** फ़ुज़ूल हंसी । **चश्मे गिर्यां :** रोने वाली आंखें । **शफ़ीए़ मुर्तजा :** शफ़ाअ़त करने वाला जिस से उम्मीदें वाबस्ता की जाएं ।

शर्हे कलामे रज़ा : "ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़" की मुनाजात के मज़्कूरा **दूसरे शे'र** में येह अ़र्ज़ की गई है : **या अल्लाह** बरोजे़ मह़शर जब मेरी ना फ़रमानियों का ह़िसाब मुझे ख़ौफ़ज़दा करे और आंखों से सैले अश्क रवां हो जाए, ऐ काश ! उस वक़्त दुखिया दिलों के चैन, सरवरे कौनैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुस्कराते होंटों की दुआ़ मेरे

शामिले ह़ाल हो जाए। **पहले शे'र** में अ़र्ज़ की गई है **: या अल्लाह** जब यौमे आख़िरत मेरी फ़ुज़ूल हंसी का ह़िसाब किताब मुझे रुलाए! काश! उस वक़्त शफ़ाअ़ते कुब्रा का ताज पहनने वाले मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कि जिन की त़रफ़ उम्मीदें वाबस्ता की जाती हैं वोह तशरीफ़ ला कर मेरी शफ़ाअ़त फरमाएं। **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم !

हाए ! फिर ख़न्दए बे जा मेरे लब पर आया
हाए ! फिर भूल गया रातों का रोना तेरा

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

महशर की होलनाक मन्ज़र कशी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने! वलिय्ये कामिल ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने किस क़दर अछूते अन्दाज़ में ह़िसाबे आख़िरत के मु-तअ़ल्लिक़ **"नेकी की दा'वत"** इनायत फ़रमाई! वाक़ेई **ह़श्र व नश्र** के मुआ़-मलात इन्तिहाई तश्वीश नाक हैं, इन का नक़्शा खींचते हुए **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى **कीमियाए सआ़दत** में फ़रमाते हैं : (इन्सान) मरने के बा'द ऐसा बदबूदार मुर्दार हो जाएगा कि सब उस को देख कर अपनी नाक बन्द करेंगे और वोह क़ब्र में कीड़े मकोड़ों की ख़ूराक बनेगा और फिर रफ़्ता रफ़्ता ख़ाक हो जाएगा जो कि बिल्कुल ह़क़ीर व ज़लील चीज़ है अलबत्ता मरने के बा'द वोह जानवरों की त़रह ख़ाक ही रहता तो ग़नीमत था मगर अफ़्सोस कि ऐसा न होगा और येह ख़ाक रहने वाली दौलत उसे **मुयस्सर** न होगी बल्कि क़ियामत में उस को **क़ब्र** से उठाया जाएगा, हैबत व दहशत के मक़ाम पर रखा जाएगा, उस वक़्त वोह आस्मानों को देखेगा कि फटे हुए हैं, सितारे गिर पड़े हैं, चांद व सूरज बे नूर हो चुके हैं और पहाड़ रूई की गालों (या'नी रूई के गोलों) की त़रह परागन्दा (या'नी मुन्तशिर) हैं, ज़मीन बदली हुई है, दोज़ख़ के फ़िरिश्ते कमन्दें (या'नी फन्दे) फेंक रहे हैं, दोज़ख़ गरज रहा है, फ़िरिश्ते हर एक के हाथ में **आ'माल नामा** दे रहे हैं, वोह तमाम उ़म्र में जो बुरे काम किये

होंगे उन को देखता होगा, हर एक अपने अपने गुनाहों को पढ़ कर परेशान हो रहा होगा, उस से कहा जाएगा कि आ और जवाब दे कि तू ने ऐसा क्यूं किया ? वैसा क्यूं कहा ? क्यूं बैठा और क्यूं उठा ? क्यूं देखा और क्यूं सोचा ? अगर مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जवाब न दे सकेगा तो उस को दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा ! उस वक़्त कहेगा : काश ! मैं ख़ूक (या'नी सुअर) या सग (या'नी कुत्ता) पैदा हुवा होता तो ख़ाक हो जाता क्यूं कि वोह (जानवर) इस अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ और आज़ाद हैं। पस जो शख़्स (बे अ़मल होने की सूरत में) सुअर और कुत्ते से बदतर हो उस को **तकब्बुर** और **फ़ख़्र** करना किस त़रह ज़ैबा है !

(کیمیائے سعادت ج۲ص۷۱۷)

याद रख हर आन आख़िर मौत है   मत तू बन अन्जान आख़िर मौत है
पेशतर मरने के करना चाहिये   मौत का सामान आख़िर मौत है
बारहा इ़ल्मी तुझे समझा चुके
मान या मत मान आख़िर मौत है

पैदा न होने वाला क़ाबिले रश्क है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब तो हम पैदा हो ही चुके हैं, वापसी ना मुम्किन है। जो अभी दुन्या में नहीं आए उन का इन्तिज़ार करने वालों या'नी बे औलादों के लिये ग़ौर करने का मक़ाम है कि इन्तिज़ार में उन की क्या निय्यत है ! **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़ह़ा 5 ता 6 पर दिया हुवा मज़्मून अपने अन्दर बहुत कुछ इ़ब्रत रखता है चुनान्चे लिखा है : आज दुन्या में जो बे औलाद होता है वोह उ़मूमन ख़ूब दिल जलाता है और बच्चा पाने के लिये न जाने कैसे कैसे जतन करता है। अगर इस का **मत़्मह़े** नज़र (या'नी मक़्सदे अस्ली) फ़क़त़ घर की ज़ीनत और दुन्या की राह़त है, ह़ुसूले औलाद से मक़्सूद आख़िरत की मन्फ़अ़त की कोई अच्छी निय्यत नहीं, तो ऐसा बे औलाद आदमी ना दानिस्ता त़ौर पर गोया "किसी" के दुन्या में पैदा होने और फिर बहुत बड़े इम्तिह़ान में मुब्तला होने की आरज़ू कर रहा है ! मेरी येह बात

शायद वोही शख़्स समझ सकता है जो "बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़" में मुब्तला हो । एक ख़ाइफ़ बुजु़र्ग ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुजै़ल बिन इयाज़ رَحْمَةُاللهِ تعالى عَلَيْه के फ़रमान का ख़ुलासा है : **मुझे बड़े से बड़े नेक बन्दे पर भी रश्क नहीं आता जो कि क़ियामत की होल नाकियों का मुशा-हदा करेगा, मुझे सिर्फ़ उस पर रश्क आता है जो "कुछ भी" न हो ।** (या'नी पैदा ही न हो) (حِلیَۃُ الاولیاء ج۸ ص ۹۳رقم ۱۱۴۷۰مُلَخَّصاً) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने **ग़-ल-बए ख़ौफ़** के वक़्त फ़रमाया : काश ! **मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता !** (الطَّبقاتُ الكُبرىٰ لابنِ سعد ج۳ ص ۲۷۴) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم

काश ! कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता

(नज़्अ़ की सख़्तियों, क़ब्र की होल नाकियों, मह़शर की दुश्वारियों और जहन्नम की ख़ौफ़नाक वादियों का तसव्वुर बांध कर ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ते हुए अश्कबार आंखों से इस कलाम को पढ़िये)

काश कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता — क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता
आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है — काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता
आ के न फंसा होता मैं बत़ौरे इन्सां काश ! — काश ! मैं मदीने का ऊंट बन गया होता
दो जहां की फ़िक्रों से यूं नजात मिल जाती — मैं मदीने का सचमुच कुत्ता बन गया होता
काश ! ऐसा हो जाता ख़ाक बन के त़यबा की — मुस्त़फ़ा के क़दमों से मैं लिपट गया होता
मैं बजाए इन्सां के कोई पौदा होता या — नख़्ल बन के त़यबा के बाग़ में खड़ा होता
गुलशने मदीना का काश ! होता मैं सब्ज़ा — या बत़ौरे तिन्का ही मैं वहां पड़ा होता
जां कनी की तक्लीफ़ें ज़ब्ह़ से हैं बढ़ कर काश ! — मुर्ग़ बन के त़यबा में ज़ब्ह़ हो गया होता

शोर उठा येह मह़शर में ख़ुल्द में गया अ़त्त़ार
गर न वोह बचाते तो नार में गया होता

अगर उल्टे हाथ में आ'माल नामा मिला तो क्या होगा ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मक़ामे इब्रत है हम सभी को गुनाहों से बाज़ रहना और क़ियामत के होशरुबा ह़ालात पर सन्जी-दगी से ग़ौर करना चाहिये जिस दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तमाम मख़्लूक़ के सामने गुनाहों भरा आ'माल नामा पढ़ने का हुक्म फ़रमाएगा, आह ! उस वक़्त ह़श्र की ख़ौफ़नाक सख़्तियां दरपेश होंगी, शिद्दते प्यास से ज़बान बाहर निकल पड़ी होगी, भूक से कमर टूट रही होगी । जन्नत में दाख़िले से रोक दिया गया होगा, हर क़िस्म की राह़त बन्द कर दी गई होगी, ऐसे तक्लीफ़ देह ह़ालात में **लाखों करोड़ों गुनाहों से पुर आ'माल नामा किस त़रह़ पढ़ कर सुनाया जा सकेगा !** आह ! हम येह भी नहीं जानते कि आ'माल नामा हमारे सीधे हाथ में दिया जाएगा या उल्टे हाथ में, जिस के उल्टे हाथ में आ'माल नामा दिया गया उस का क्या बनेगा ! पारह 29 **सू-रतुल ह़ाक़्क़ह** आयत नम्बर 19 ता 37 में आ'माल नामे दिये जाने की कैफ़िय्यत बयान करते हुए इर्शादे इलाही होता है, **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो वोह जो अपना नामए आ'माल दहने (या'नी सीधे) हाथ में दिया जाएगा, कहेगा : लो मेरे नामए आ'माल पढ़ो ★ मुझे यक़ीन था कि मैं अपने ह़िसाब को पहुंचूंगा ★ तो वोह मन मानते चैन में है ★ बुलन्द बाग़ में ★ जिस के ख़ोशे झुके हुए ★ खाओ और पियो रचता हुवा सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा ★ और वोह जो अपना नामए आ'माल बाएं (या'नी उल्टे) हाथ में दिया जाएगा, कहेगा : हाए ! किसी त़रह़ मुझे अपने नविश्ता (या'नी लिखा हुवा) न दिया जाता ★ और मैं न जानता कि मेरा ह़िसाब क्या है ★ हाए ! किसी त़रह़ मौत ही क़िस्सा चुका जाती ★ मेरे कुछ काम न आया मेरा माल ★ मेरा सब ज़ोर जाता रहा (फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जहन्नम के ख़ाज़िनों या'नी वहां मामूर फ़िरिश्तों को हुक्म देगा) ★ इसे पकड़ो फिर इसे त़ौक़ डालो ★ फिर इसे भड़कती आग में धंसाओ ★ फिर ऐसी ज़न्जीर में जिस का नाप सत्तर हाथ है इसे पिरो दो ★ बेशक वोह अ-ज़मत वाले **अल्लाह** पर ईमान न लाता था ★ और मिस्कीन को खाना देने की रग़बत न देता ★ तो आज यहां उस का कोई दोस्त नहीं ★ और न कुछ खाने को मगर दोज़ख़ियों का पीप ★ उसे न खाएंगे मगर ख़त़ाकार ।

मीज़ां पे सब खड़े हैं आ'माल तुल रहे हैं
रख लो भरम ख़ुदारा अ़त्तारे क़ादिरी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 195)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ारूक़ व मुश्ताक़ के मज़ार की म-दनी बहार : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या व आख़िरत की भलाइयां पाने और ख़ुद को क़ब्रो हश्र की होल नाकियों से बचाने की कोशिश का ज़ेह्न बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के ''म-दनी माहोल'' से हर दम वाबस्ता रहिये, **नेकी की दा'वत** के म-दनी कामों में भरपूर हिस्सा लीजिये, म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारिये, सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की तरकीब फ़रमाते रहिये। आइये ! इस की तरग़ीब के लिये ''एक म-दनी बहार'' सुनते हैं : चुनान्चे गुलज़ारे तयबा (सरगोधा, पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के हल्फ़िय्या (या'नी क़सम खा कर दिये हुए) बयान का लुब्बे लुबाब है, ग़ालिबन (1428 सि.हि. या'नी 2006 सि.ई.) में मुझे अपने एक अज़ीज़ के हमराह **सहराए मदीना** बाबुल मदीना (कराची) में दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मर्हूम निगरान, ख़ुश इल्हान ना'त ख़्वान, बुलबुले रौज़ए रसूल अलहाज क़ारी अबू उबैद **मुश्ताक़ अत्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى और मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** हज़रते अल्लामा मौलाना अल हाफ़िज़ अल क़ारी अलहाज अबू उमर **मुहम्मद फ़ारूक़ अत्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के मज़ाराते तय्यिबात पर हाज़िरी की सआदत हासिल हुई। दो पहर का वक़्त था, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ऐन बेदारी के आलम में हम दोनों को **हाजी मुश्ताक़** अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى के मज़ारे पुर अन्वार से **अज़ाने ज़ोहर** की आवाज़ साफ़ सुनाई दी। फिर कुछ देर बा'द **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِى की आवाज़ में **इक़ामत** सुनी फिर हाजी मुश्ताक़ साहिब की **तक्बीरे तहरीमा** और दीगर **तक्बीराते इन्तिक़ालात** की आवाज़ों से येही समझ आई कि वोह मज़ार शरीफ़ में **इमामत** फ़रमा रहे हैं। जमाअत ख़त्म होने के बा'द **दुआ** की आवाज़ भी साफ़ सुनाई दी, दुआ ख़त्म होने के बा'द हमें **ख़ुश्बू** की महक महसूस हुई। मैं ने हैरत व **इस्ति'जाब** के आलम में गुलज़ारे तयबा (सरगोधा) के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई से मोबाइल फ़ोन पर राबिता किया, और वाक़िआ बयान किया। इस पर उन्हों ने मुबारक बाद देते हुए इस ईमान अफ़रोज़ **''म-दनी बहार''** की रोशनी में **अल्लाह** तआला के मक़्बूल बन्दों औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى عَلَيْه के तसर्रुफ़ात व

इख़्तियारात और **दा'वते इस्लामी** की ब-रकात से आगाह किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह सुन कर मैं झूम उठा, **अल्लाह** तआला का करोड़हा करोड़ शुक्र कि उस ने मुझे इस नाज़ुक दौर में **दा'वते इस्लामी** का मुश्कबार **म-दनी माहोल** अता फ़रमाया। मैं दुआ गो हूं कि **अल्लाह** तआला मुझे **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों में शबो रोज़ मसरूफ़े अमल रहते हुए सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने और ईमान व आफ़िय्यत के साथ मरने की सआदत इनायत फ़रमाए।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰله وسلَّم

दा'वते इस्लामी ने दुन्या भर में धूम मचाई है
सारे जहां में इश्क़े मुहम्मद की ख़ुश्बू फैलाई है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

साबित बुनानी का मज़ार में नमाज़ पढ़ना : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस म-दनी बहार से मा'लूम हुवा कि दा'वते इस्लामी वालों पर परवर दगार عَزَّوَجَلَّ और म-दनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का बेहद व बे शुमार करम है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों का अपने मज़ार में नमाज़ पढ़ना कोई अचम्भे (या'नी हैरत) की बात नहीं। औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام से ऐसा साबित है चुनान्चे ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی ने दुआ मांगी : "ऐ **अल्लाह**! अगर तू किसी को क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त देता है तो मुझे भी इजाज़त देना।" वफ़ात के बा'द देखा गया कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ रहे थे।

(حِلْيَةُ الْاولياء ج۲ ص۳۶۲ رقم ۲۰۶۸)

अम्बिया क़ब्रों में नमाज़ें पढ़ते हैं : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी हयात हैं और अपनी क़ब्रों में नमाज़ें पढ़ते हैं चुनान्चे **अल्लाह** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **اَلْاَنبياءُ اَحْيَاءٌ فِيْ قُبُورِ هِمْ يُصَلُّون**

या'नी अम्बिया अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं, नमाज़ पढ़ते हैं। (ابو یعلٰی ج۳ ص۲۱٦ حدیث۳٤۱۲) हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم अपनी क़ब्रे अन्वर में ज़िन्दा हैं और अज़ान व इक़ामत के साथ नमाज़ अदा फ़रमाते हैं, ऐसे ही दीगर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام भी नमाज़ अदा फ़रमाते हैं।

(کَشْفُ الْغُمَّۃ عَنْ جَمِیعِ الْاُمَّۃ ، الجزءُ الثّانی ص٦۳)

चलो अच्छा हुवा काम आ गई दीवानगी अपनी वगर्ना हम ज़माने भर को समझाने कहां जाते
न जलती शम्अ़ मह़फ़िल में तो परवाने कहां जाते न होता दर नबी का तो येह दीवाने कहां जाते

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

रौज़ए अन्वर से अज़ान व इक़ामत की आवाज़ : 63 सने हिजरी में **वाक़िअ़ए ह़र्रा** पेश आया जिस में ज़ालिम यज़ीदियों ने मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا पर चढ़ाई की, 700 सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِین और मज़ीद आ़म मुसल्मान मिला कर दस हज़ार से ज़ाइद हज़रात शहीद किये गए, अहले मदीना को ख़ूब लूटा गया, हज़ारों बाकिरह (या'नी कुंवारी) लड़कियों के साथ مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ "ज़ियादती" की गई। मस्जिदुन्-नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के सुतूनों से घोड़े बांधे गए, तीन दिन तक मस्जिद शरीफ़ में लोग नमाज़ से मुशर्रफ़ न हो सके। इस मौक़अ़ पर सिर्फ़ मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना **सईद बिन मुसय्यब** رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْہُ अपने आप को दीवाना बना कर वहां ह़ाज़िर रहे, दीवाना समझ कर यज़ीदी लोग आप رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْہُ को शहीद करने से बाज़ रहे। आप رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : **ह़र्रा** के दिनों में लोगों के वापस आने तक मैं हमेशा नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم की क़ब्रे मुबारक से अज़ानो इक़ामत की आवाज़ सुनता था।

(دَلَائِلُ النُّبُوَّۃ لابی نُعیم ج۲ ص٥٦٧ وغیرہ)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़ में अ़र्ज़ करते हैं :

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले !

(या'नी या रसूलल्लाह ! **अल्लाह** की क़सम ! आप ह़यात हैं, ख़ुदा की क़सम ! आप ज़िन्दा हैं, ज़ाहिरी आंखों से मुझे ऐ मेरे नज़र न आने वाले !)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मोमिन की फ़िरासत से डरो : **इमामुत्ताइफ़ा** ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल क़ासिम जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى ने फ़रमाया : (मेरे पीरो मुर्शिद) **ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ सरी स-क़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى मुझ से फ़रमाया करते थे कि लोगों में वा'ज़ो नसीह़त किया करो मगर मैं ख़ुद को इस का अह्ल नहीं समझता था इस लिये हिम्मत न होती थी। एक शबे जुमुआ़ जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में नवाज़ कर मुझ से फ़रमाया : "लोगों को नसीह़त करो।" मैं बेदार हुवा और सुब्ह का इन्तिज़ार किये बिग़ैर (अपने पीर रोशन ज़मीर) ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सरी स-क़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया। (मेरे अ़र्ज़ करने से पहले ही) उन्हों ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया : "जब तक सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद न फ़रमाया तुम ने मेरे कहने का ए'तिबार नहीं किया।" ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى ने उसी सुब्ह से **जामेअ़ मस्जिद** में बयान शुरूअ़ कर दिया। लोगों में येह बात फ़ौरन फैल गई कि आज से जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى बयान फ़रमाने लगे हैं। एक दिन किसी नौ जवान ने इज्तिमाअ़ में खड़े हो कर सुवाल किया। **ऐ शैख़ !** बताइये हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस **इर्शादे मुबारक :** اِتَّقُوْا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ فَإِنَّهٗ يَنْظُرُ بِنُوْرِ اللّٰه या'नी "मुअमिन की फ़िरासत से डरो क्यूं कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर से देखा करता है।" (ترمذی ج٥ ص٨٨ حدیث٣١٣٨) का क्या मत़लब है ? उस का सुवाल सुन कर चन्द लम्ह़ों के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى ने सर झुका लिया फिर सरे मुबारक उठा कर (ग़ैब की ख़बर

देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : ऐ नौ जवान ! तू नसरानी (या'नी क्रिस्चेन) है और अब तेरे मुसल्मान होने का वक़्त आन पहुंचा है, ईमान ले आ। वोह जवान जो कि वाक़ेई क्रिस्चेन था। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ येह **करामत** देख कर उसी वक़्त मुसल्मान हो गया। (رَوْضُ الرَّياحِين ص١٥٧)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰله وسلَّم

निगाहे वली में वोह तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالیٰ علیٰ محمَّد

अल्लाह अपने औलिया को इल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से **मुबल्लिग़** का मक़ाम मा'लूम हुवा। سُبْحٰنَ اللّٰه ! सय्यिदुना शैख़ **जुनैद बग़दादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی बतौरे इन्किसारी अपने आप को बयान के लिये ना अहल तसव्वुर फ़रमाते थे, हालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ज़बर दस्त आ़लिम थे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर करम बालाए करम येह हुवा कि ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर रसूले अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **बयान** का हुक्म फ़रमाया। इस **हिकायत** से येह भी मा'लूम हुवा कि **मेरे मक्की म-दनी मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ब अ़ताए रब्बुल उ़ला **ग़ैब का इल्म** रखते हैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मा'लूम था कि जुनैदे बग़दादी को इन के पीरो मुर्शिद कह रहे हैं फिर भी येह **बयान** करने से झिजक्ते हैं, लिहाज़ा ब नफ़्से नफ़ीस ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर बयान का हुक्म सादिर फ़रमाया। येह भी जानने को मिला कि **फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से हज़राते औलिया को भी **इल्मे ग़ैब** होता है जभी तो हज़रते सय्यिदुना **सरी स-क़ती** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने अपने मुरीदे ख़ास का ख़्वाब जान लिया। नीज़ हज़रते सय्यिदुना शैख़ **जुनैदे बग़दादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی ने भी तो नसरानी या'नी क्रिस्चेन को मुअमिनाना फ़िरासत से पहचान

कर **गै़ब** की ख़बर से मालामाल अछूते अन्दाज़ में उसे नेकी की दा'वत इनायत फ़रमाई और वोह करामत भरी नेकी की दा'वत की ब-र-कत से हाथों हाथ इस्लाम के दामने रह़मत में आ गया।

फ़िरासत की ता'रीफ़ : ह़दीसे मुबा-रका में "फ़िरासत" का ज़िक्र है इस के मा'ना भी समझ लीजिये। **फ़िरासत** का मा'ना है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने औलिया के दिलों में वोह चीज़ डालता है जिस से उन्हें बा'ज़ लोगों के ह़ालात का इल्म हो जाता है। (النھایہ ج۳ص۳۸۳) सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने प्यारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की **इल्मे गै़ब** शरीफ़ से मालामाल निगाहे बे मिसाल का औज व कमाल बयान करते हुए क्या ख़ूब शे'र मोज़ूं किया है :

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
म-लकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इयां नहीं

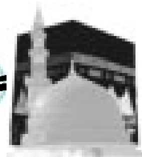
मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : **सरे अ़र्श :** अ़र्श के ऊपर। **म-लकूत :** फ़िरिश्तों के रहने की जगह। **इयां** ज़ाहिर।

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अ़र्श के ऊपर और फ़र्श या'नी ज़मीन के अन्दर का सब कुछ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पेशे नज़र है। दुन्या जहान में कोई भी ऐसी शै नहीं जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर ज़ाहिर न हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मेरे दोस्त का ख़्वाब : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मेरे मक्की म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم गै़ब की बातें जानते हैं। आइये इस ज़िम्न में क़ियामे दा'वते इस्लामी के क़ब्ल का सुना हुवा ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब समाअ़त फ़रमाइये : चुनान्चे एक इस्लामी भाई ने सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ को जो कुछ बताया उस का ख़ुलासा है : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे ख़्वाब में जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की सआ़दत







मिली, हिम्मत कर के अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप को **इल्मे ग़ैब** है ? इर्शाद फ़रमाया : हां । इस के बा'द सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक आयते कुरआनी सुनाई, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लबहाए मुबा-रका से तिलावत, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की खुश आवाज़ी और आदाएगिये हुरूफ़ का हुस्ने उस्लूब (या'नी हुरूफ़ की अपने मख़ारिज से अदाएगी की ख़ूब सूरती) **मरह़बा !** ऐसी उ़म्दा और शीरीं आवाज़ व क़िराअत मैं ने कभी नहीं सुनी थी, आयते शरीफ़ा मैं भूल गया हूं, हां इतना याद पड़ता है कि उस के आख़िर में लफ़्ज़ "**بِضَنِيْنٍ**" था इस पर मैं ने (या'नी सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ ने) पारह 30 **सू-रतुत्तक्वीर** की आयत नम्बर डबल बारह (24) सुनाई : "وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿۲۴﴾" वोह इस्लामी भाई बोल उठे : हां हां येही आयते करीमा थी । सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ ने उन को आयते करीमा का तरजमा बताया और अ़र्ज़ की, कि यक़ीनन सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रह़मत व इ़नायत से **इल्मे ग़ैब** है ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस **ह़िकायत** से कोई इस **वस्वसे** में न पड़े कि लो भई ! ख़्वाबों से **इल्मे ग़ैब** साबित किया जा रहा है ह़ालां कि ग़ैरे नबी का देखा हुवा ख़्वाब तो हुज्जत (या'नी दलील) ही नहीं । सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ इक़रार करता है कि वाक़ेई हर मस्अला ख़्वाब से ह़ल नहीं किया जाता, मगर यहां ख़्वाब से नहीं ख़्वाब में अ़त़ा कर्दा जवाब में बयान कर्दा कुरआनी आयत से **इल्मे ग़ैब** का सुबूत पेश किया जा रहा है और वोह आयते करीमा वाक़ेई इल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दाल्ल (या'नी दलील) है । लिहाज़ा मज़्कूरा आयत मअ़ तरजमा मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿۲۴﴾
(پ ۳۰ التکویر ۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और येह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं ।

इस आयते मुबा-रका से मा'लूम हुवा कि मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **ग़ैब** बताते हैं और ज़ाहिर (या'नी UNDERSTOOD) है कि बताएगा वोही जिस को इल्म होगा । तो बेशक, बिला शुबा रब्बुल आ़-लमीन عَزَّ وَجَلَّ की इनायत से





रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **इल्मे ग़ैब** की दौलत से मालामाल हैं । बारगाहे रिसालत में आशिक़े माहे रिसालत आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अर्ज़ करते हैं :

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

(हदाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप की शाने अ-ज़मत निशान के क्या कहने ! शबे मे'राज ऐन जागती हालत में आप ने अपने मुबारक सर की आंखों से अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का दीदार किया, तो यूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो कि ग़ैबुल ग़ैब है वोह भी अपने फ़ज़्लो करम से आप पर ज़ाहिर व आशकार हो गया तो अब कोई और ग़ैब आप से किस तरह निहां या'नी छुपा रह सकता है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक ठोकर में उहुद का ज़ल्ज़ला जाता रहा : "बुख़ारी शरीफ़" में है : हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, **हज़रते** सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, **हज़रते** सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म और **हज़रते** सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم उहुद पहाड़ पर तशरीफ़ ले गए तो वोह (खुशी के मारे) हिलने लगा । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे ठोकर मार कर फ़रमाया : اُثْبُتْ اُحُدُ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ نَبِىٌّ وَّصِدِّيْقٌ وَّشَهِيْدَانِ. उहुद ! ठहर जा क्यूं कि तेरे ऊपर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं ।

(صَحیح بُخاری ج ۲ ص ۵۲۴ حدیث ۳۶۷۵)

एक ठोकर में उहुद का ज़ल्ज़ला जाता रहा
रखती हैं कितना वक़ार अल्लाहु अक्बर एड़ियां

(हदाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

मज़्कूरा ह़दीस से इल्मे ग़ैब साबित होता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "बुख़ारी शरीफ़" की मज़्कूरा ह़दीसे पाक से اَظْهَرُ مِنَ الشَّمْسِ وَ اَبْيَنُ مِنَ الْاَ مْسِ (या'नी सूरज से ज़ियादा रोशन और रोज़े गुज़श्ता से ज़ियादा क़ाबिले यक़ीन) हुवा कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़त़ाए इलाही से **इल्मे ग़ैब** है जभी तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज-बले उहुद शरीफ़ से इर्शाद फ़रमा दिया कि तुझ पर "एक नबी" एक सिद्दीक़ और **दो शहीद** हैं । किसी के बारे में उस के जीते जी बता देना कि येह **शहीद** है, येह **ग़ैब** की ख़बर नहीं तो और क्या है । इस ह़दीसे पाक के तह़्त **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **मिरआत** जिल्द 8 सफ़ह़ा 408 ता 409 पर फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के मक़्बूल बन्दे सारी ख़ल्क़त (या'नी शजर व ह़जर दरिया व पहाड़ सभी) के मह़बूब (और प्यारे) होते हैं, इन की तशरीफ़ आ-वरी से सब ख़ुशियां मनाते हैं, उन्हें पथ्थर और पहाड़ भी जानते हैं । मज़ीद फ़रमाते हैं : येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) सब के **अन्जाम** (या'नी अच्छा या बुरा ख़ातिमा होने) से ख़बरदार हैं कि फ़रमाया : इन में से दो सहाबा **शहीद** हो कर वफ़ात पा जाएंगे ।

(मिरआत, जि. 8, स. 408)

रब की अ़त़ा से सब कुछ जाने देखे बईदो क़रीब
ग़ैब की ख़बरें देने वाला अल्लाह का वोह ह़बीब

اَللّٰــه اَللّٰــه، اَللّٰــه هُــو، لَا اِلٰـه اِلَّا هُو

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ैब की ता'रीफ़ : मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "तफ़्सीरे नईमी" में फ़रमाते हैं : **ग़ैब** के (लफ़्ज़ी) मा'ना ग़ाइब या'नी छुपी हुई चीज़ । इस्तिलाह (या'नी मख़्सूस । मुरादी मा'ना) में **ग़ैब**

वोह चीज़ कहलाती है जो कि ज़ाहिरी बातिनी ह़वास (या'नी मह़सूस करने की कुव्वतों) और अ़क्ल से छुपी हो या'नी न तो आंख, नाक, कान वग़ैरा से मा'लूम हो सके और न ग़ौरो फ़िक्र से अ़क्ल में आ सके। (तफ़्सीरे नईमी जि. 1 स. 121) म-सलन **जन्नत** हमारे लिये इस वक्त **ग़ैब** है क्यूं कि इस को हम ह़वास (या'नी आंख, नाक, कान वग़ैरा) से मा'लूम ही नहीं कर सकते। **ग़ैब** वोह है जो हम से पोशीदा हो और हम अपने **ह़वासे ख़म्सा** या'नी देखने, सुनने, सूंघने, चखने और छूने से जान न सकें और ग़ौरो फ़िक्र से अ़क्ल उसे मा'लूम न कर सके। (مُلَخّص ازتفسیرِ بیضاوی ج۱ص۱۱۶ وغیرہ)

इ़ल्मे ग़ैब के मु-तअ़ल्लिक़ अकाबिरीने उम्मत के अक़्वाल : **फ़ैज़ाने** अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلام को भी **इ़ल्मे ग़ैब** अ़ता किया जाता है चुनान्चे इस ज़िम्न में अकाबिरीने उम्मत के अक़्वाल मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : हमारा अ़क़ीदा है कि बन्दा तरक़्क़िये मक़ामात पा कर सि-फ़ते रूह़ानी तक पहुंचता है उस वक्त उसे **इ़ल्मे ग़ैब** ह़ासिल होता है। (مِرْقَاۃُ الْمَفَاتِیح ج۱ ص۱۲۸) मज़ीद एक और मक़ाम पर लिखते हैं : नूरे ईमान की कुव्वत बढ़ने से बन्दा ह़क़ाइक़े अश्या (या'नी चीज़ों की ह़क़ीक़तों) पर मुत्तलअ़ होता है और उस पर न सिर्फ़ **ग़ैब** बल्कि ग़ैबुल ग़ैब या'नी ग़ैब का ग़ैब भी रोशन हो जाता है।

(ایضاص۱۱۹)

इमाम इब्ने ह़जर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْبَر फ़रमाते हैं : औलिया को किसी वाक़िए या वक़ाएअ़ (या'नी वाक़िआ़त) में **इ़ल्मे ग़ैब** ह़ासिल होता है येह बिल्कुल दुरुस्त है, उन में से काफ़ी ह़ज़रात से ऐसा ज़ाहिर हो कर मुश्तहर (या'नी मश्हूर भी) हुवा।

(اعلام بقواطع الاسلام ص۳۵۹)

सिल्सिलए आ़लिया नक़्श बन्दिया के इमाम ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ज़ीज़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाया करते : "इस गुरौहे औलिया की नज़र में ज़मीन दस्तर ख़्वान की त़रह़ है।" (نَفَحَاتُ الانس ص۳۸۷) या'नी जिस त़रह़ दस्तर ख़्वान की हर चीज़ नज़र आ जाती है इसी त़रह़ ज़मीन की हर चीज़ इन को दिखाई देती है। ह़ज़रते ख़्वाजा **बहाउल ह़क़्क़े वद्दीन**

नक़्श बन्दी عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی येह क़ौल नक़्ल कर के फ़रमाते : "हम कहते हैं कि (ज़मीन उन के लिये) नाख़ुन की सत्ह़ की त़रह़ है, कोई चीज़ उन की नज़र से ग़ाइब नहीं ।"

(ایضاً ص۳۸۷-۳۸۸)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **तफ़्सीरे नईमी** जिल्द 4 सफ़ह़ा 371 पर "तफ़्सीरे रूहुल मआनी" के ह़वाले से लिखते हैं : "बा'ज़ अहले कश्फ़ औलियाउल्लाह भी ग़ुयूब (या'नी ग़ैबों) पर मुत्त़लअ़ किये जाते हैं मगर **नबी** के वासित़े से, बिला वासित़ा नहीं ।" (روح المعانی ج٤ ص٤٧٥)

हमारे **ग़ौसे आ'ज़म** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم "क़सीदए ग़ौसिया" में फ़रमाते हैं :

نَظَرْتُ إِلٰی بِلَادِ اللّٰهِ جَمْعًا　　كَخَرْدَلَةٍ عَلٰی حُكْمِ التِّصَالِیْ

(तरजमा : मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सारे शहरों को इस त़रह़ देख लिया जैसे राई के चन्द दाने मिले हुए हों)

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने **"अख़्बारुल अख़्यार"** सफ़ह़ा 15 पर ह़ुज़ूरे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم का येह इर्शादे मुअ़ज़्ज़म नक़्ल किया है : **"अगर शरीअ़त ने मेरे मुंह में लगाम न डाली होती तो मैं तुम्हें बता देता कि तुम ने घर में क्या खाया है और क्या रखा है, मैं तुम्हारे ज़ाहिर व बात़िन को जानता हूं क्यूं कि तुम मेरी नज़र में आर पार नज़र आने वाले शीशे (या'नी कांच) की त़रह़ हो ।"** ह़ज़रते मौलाना रूम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَیُّوْم **मस्नवी शरीफ़** में फ़रमाते हैं :

لَوحِ محفوظ اَست پیشِ اولیاء
اَزچہ محفوظ اَست محفوظ اَز خطا

(या'नी लौह़े मह़फ़ूज़ **औलियाउल्लाह** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के पेशे नज़र होती है जो कि हर ख़त़ा से मह़फ़ूज़ होती है)

शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी में **"सू-रतुल जिन्न"** की तफ़्सीर में लिखते हैं : "लौह़े मह़फ़ूज़ की ख़बर रखना और उस की तह़रीर देखना बा'ज़ औलियाउल्लाह से ब त़रीक़े तवातुर (या'नी तसल्सुल के साथ) मन्क़ूल है ।"

लौहे़ मह़फ़ूज़ के बारे में दिल चस्प मा'लूमात : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! होश संभालने के बा'द तक़रीबन हर मुसल्मान लौहे़ मह़फ़ूज़ का नाम सुन लेता है लेकिन सब को लौहे़ मह़फ़ूज़ के बारे में मा'लूमात भी हों येह ज़रूरी नहीं, आइये ! मा'लूम करते हैं कि लौहे़ मह़फ़ूज़ क्या है । लौहे़ मह़फ़ूज़ का तज़्किरा करते हुए **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला पारह 30 **सू-रतुल बुरूज** आयत नम्बर 21 और 22 में इर्शाद फ़रमाता है :

بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِیْدٌ ﴿۲۱﴾ فِیْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿۲۲﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बल्कि वोह कमाल शरफ़ वाला कुरआन है लौहे़ मह़फ़ूज़ में ।

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अह़मद अन्सारी कुरतुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **तफ़्सीरे कुर्तुबी** जिल्द 10 सफ़ह़ा 210 पर इन आयात के तह़त लिखते हैं : या'नी कुरआने करीम एक **लौह़** में लिखा गया है जो शयात़ीन की पहुंच से दूर, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास **मह़फ़ूज़** है । उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام लिखते हैं : **लौहे़ मह़फ़ूज़** में मख़्लूक़ की तमाम अक़्साम और इन के मु-तअ़ल्लिक़ तमाम उमूर म-सलन मौत, रिज़्क़, आ'माल और उस के नताइज और इन पर नाफ़िज़ होने वाले फ़ैसलों का बयान है ।

(تفسیرقُرطُبی ج۱۰ص۲۱۰)

लौहे़ मह़फ़ूज़ कहां है ? : ह़ज़रते सय्यिदुना मुक़ातिल رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : लौहे़ मह़फ़ूज़ अ़र्श की दाईं (या'नी सीधी) जानिब है । (تفسیرقرطبی ج۱۰ص۲۱۰)

लौहे़ मह़फ़ूज़ सफ़ेद मोती से बनी है : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, **दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : लौहे़ मह़फ़ूज़ सफ़ेद मोती से बनी है, उस का **क़लम** नूर और किताबत (या'नी लिखाई) भी नूर है ।

(ماخوذ ازحِلْيَةُ الْاَولياء ج٤ص٣٣٨ رقم ٥٧٦٧)

सब से पहले लौहे़ मह़फ़ूज़ में क्या लिखा गया ? : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सब से पहली चीज़ **लौहे़ मह़फ़ूज़** में येह लिखी कि मैं **अल्लाह** हूं मेरे सिवा कोई इबादत का मुस्तह़िक़ नहीं ! **मुह़म्मद** (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم)

मेरे रसूल हैं। जिस ने मेरे फ़ैसले को तस्लीम कर लिया और मेरी नाज़िल की हुई मुसीबत पर सब्र किया और मेरी ने'मतों का शुक्र अदा किया तो मैं ने उस को **सिद्दीक़** लिखा है और उस को सिद्दीक़ीन के साथ उठाऊंगा और जिस ने मेरे फ़ैसले को तस्लीम नहीं किया और मेरी नाज़िल की हुई मुसीबत पर **सब्र** नहीं किया और मेरी ने'मतों का शुक्र अदा नहीं किया वोह मेरे सिवा जिसे चाहे अपना मा'बूद बना ले।

(تفسیر قرطبی ج ١٠ ص ٢١٠)

तुम नफ़्स के पीछे लग गए हो : **हज्जाज** बिन युसूफ़ ने हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन हनफ़िया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को धमकी आमेज़ मक्तूब भेजा तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाब में लिखा : मुझ तक येह रिवायत पहुंची है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर रोज़ **लौहे महफ़ूज़** में तीन सो साठ मर्तबा नज़र फ़रमाता है, वोह इज़्ज़त और ज़िल्लत देता है, तंगी और फ़राख़ी (या'नी कुशा-दगी) फ़रमाता है और वोह जो चाहे करता है, शायद उन नज़रों में से एक नज़र ने तुम्हें तुम्हारे नफ़्स के साथ ऐसा मश्गूल कर दिया है कि तुम इस से फ़रागत ही नहीं पाते।

(تفسیر قرطبی ج ١٠ ص ٢١٠)

क़ियामत तक होने वाली हर बात लौहे महफ़ूज़ में लिखी हुई है : **हज़रते** सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **लौहे महफ़ूज़** को पैदा फ़रमाया, उस की लम्बाई एक सो साल की मसाफ़त (फ़ासिला, दूरी) थी फिर उस ने मख़्लूक़ को पैदा करने से पहले **क़लम** को फ़रमाया तू मेरी मख़्लूक़ के बारे में मेरा इल्म लिख दे पस उस ने क़ियामत तक होने वाला सब कुछ लिख दिया।

(العظمة لابی الشیخ ص٨٦رقم ٢٢٣)

“لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ” की गवाही देने वाला दाख़िले जन्नत होगा : हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, **दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **लौहे महफ़ूज़** में लिखा : “اِنِّیْ اَنَا اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا” बिला शुबा मैं **अल्लाह** हूं और मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं मैं ने तीन सो दस से कुछ ज़ाइद (क़िस्मों की) मख़्लूक़ पैदा फ़रमाई

उन में से जिस मख़्लूक़ ने भी येह शहादत दी "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ" वोह जन्नत में दाख़िल होगी।"

(تفسیر دُرِّمنثور ج٨ ص٤٧٢)

जन्नत का ह़क़दार कौन ? : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : "लौहे़ महफ़ूज़ पर लिखा है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, उस का दीन इस्लाम है और **मुह़म्मद** (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) उस के ख़ास बन्दे और रसूल हैं। जो उस पर ईमान लाया और उस का वा'दा सच्चा किया और उस के रसूलों की इत्तिबाअ़ (या'नी पैरवी) की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।" (تفسیر بغوی ج٤ ص٤٤١)

अ़जब नहीं कि लिखा लौह़ का नज़र आए
जो नक़्शे पा का लगाऊं ग़ुबार आंखों में

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

बेटा पैदा होने की बिशारत : ह़ज़रते शाह **वलिय्युल्लाह** मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे माजिद ह़ज़रते शाह अ़ब्दुर्रह़ीम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : मैं एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा **क़ुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَاقِی के मज़ारे मुनव्वर की ज़ियारत के लिये गया। उन की रूहे़ मुबारक ज़ाहिर हुई और फ़रमाया : **"तुम्हारे यहां फ़रज़न्द पैदा होगा उस का नाम क़ुत़्बुद्दीन अह़मद रखना।"** चूंकि ज़ौजा बुढ़ापे को पहुंच गई थीं इस लिये मैं ने ख़याल किया शायद इस इर्शाद से मुराद बेटे का बेटा या'नी पोता होगा। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा क़ुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَاقِی मेरे इस **दिली ख़याल** पर फ़ौरन मुत्तलअ़ हो गए और फ़रमाया : मेरी येह मुराद नहीं है बल्कि वोह फ़रज़न्द तुम्हारी सुल्ब (या'नी पीठ) से होगा।" शाह **वलिय्युल्लाह** साहि़ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ मज़ीद फ़रमाते हैं : वालिदे माजिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاجِد ने एक मुद्दत के बा'द दूसरी ख़ातून से अ़क़्द (या'नी निकाह़) फ़रमाया तो येह कातिबुल हुरूफ़ फ़क़ीर **वलिय्युल्लाह** पैदा हुवा। शुरूअ़ में येह वाक़िआ़ याद न रहा तो "**वलिय्युल्लाह**" नाम रख दिया और कुछ अ़र्से के बा'द याद आया तो दूसरा नाम (ह़ज़रते सय्यिदुना

ख़्वाजा क़ुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَیْهِ رَحْمَةُاللّٰهِ الْبَاقِی के फ़रमान के मुत़ाबिक़) क़ुत़्बुद्दीन अह़मद रखा । (اَنفاس العارفين ص ٧٩)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالیٰ عليه واٰله وسلَّم

पहले ख़याल पर क्यूं न निकले ? : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ **जुनैद बग़दादी** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی भी दिलों के ह़ाल जान लेते थे चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैरुन्नसाज रَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं अपने घर में था कि दिल में ख़याल आया कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ **जुनैद बग़दादी** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی दरवाज़े पर तशरीफ़ लाए हैं मगर मैं ने तवज्जोह हटा दी मगर फिर **दोबारा** और **सहबारा** (या'नी तीसरी बार) येही ख़याल आया, निकला तो वाक़ेई आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه दरवाज़े पर थे, मुझ से फ़रमाया : **पहले ख़याल पर क्यूं न निकले !**

(رسالهٔ قُشَيريه ص ٢٧٤)

سُبْحٰنَ اللّٰه ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ **जुनैद बग़दादी** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی ने **ग़ैब** की ख़बर इर्शाद फ़रमा दी कि "पहली बार ख़याल आते ही क्यूं न निकले !" जब औलिया के **इल्मे ग़ैब** का येह ह़ाल है तो **मीठे मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के **इल्मे ग़ैब** का क्या मक़ाम होगा ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बूसैरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی अपने मश्हूरे ज़माना "क़सीदए बुर्दा शरीफ़" में अ़र्ज़ करते हैं :

فَاِنَّ مِنْ جُودِكَ الدُّنْيَا وَضَرَّتَهَا   وَمِنْ عُلُوْمِكَ عِلْمَ اللَّوحِ وَالْقَلَمِ

(या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुन्या व आख़िरत दोनों हुज़ूर के जूदो बख़्शिश में से एक ह़िस्सा हैं और लौह़ो क़लम का इ़ल्म (जिस में तमाम مَاكَانَ وَمَا يَكُون या'नी जो हुवा और होगा सब लिखा है) आप के उ़लूम का एक ह़िस्सा हैं ।)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ गुज़ार हैं :

ख़ुदा ने किया तुझ को आगाह सब से दो आ़लम में जो कुछ ख़फ़ी व जली है
करूं अ़र्ज़ क्या तुझ से ऐ आ़लिमुस्सिर कि तुझ पर मेरी ह़ालते दिल खुली है

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इन अश्आ़र में फ़रमाते हैं (1) **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दोनों जहानों में जो कुछ ख़फ़ी व जली (या'नी छुपा और ज़ाहिर) है उस से **अल्लाह** तआ़ला ने आप को आगाह कर दिया है। (2) ऐ आ़लिमुस्सिर (या'नी ऐ छुपे हुए ह़ालात जानने वाले !) आप से क्या अ़र्ज़ करूं आप पर तो मेरे दिल की सारी ह़ालत ज़ाहिर है।

गिर्दाबे बला में फंस के कोई त़यबा की त़रफ़ जब तकता है
सुल्त़ाने मदीना ख़ुद आ कर बिगड़ी को बनाया करते हैं

(इ़ल्मे ग़ैब के मु-तअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात के लिये रिसालए ख़ालिसुल ए'तिक़ाद (फ़तावा र-ज़विय्या जि. 29 सफ़ह़ा 311 ता 384), अल कलि-मतुल उ़ल्या (अज़ : सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى) और **जाअल ह़क़** (अज़ : मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان का मुत़ा-लआ़ बेह़द मुफ़ीद है)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वफ़ात के बा'द भी नेकी की दा'वत : **सुलैमान** उ़मरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते **अबू जा'फ़र क़ारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में देखा, फ़रमा रहे थे : मेरे भाइयों को मेरा सलाम पहुंचा देना और कह देना कि मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ को **मक़ामे शु-हदा** अ़त़ा फ़रमाया है और अपनी त़रफ़ से रिज़्क़ इनायत किया है और **अबू ह़ाज़िम** को मेरी त़रफ़ से सलाम कह देना और कहना कि होश कर और समझ दारी से काम ले क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते तेरी रात की मजलिसों को देखते हैं।

(كتابُ المَنامات مع موسوعة الامام ابن ابى الدنيا ج٣ ص١٥٣ رقم ٣٢١)

एक हज़ार रक्अ़त नमाज़ से अफ़्ज़ल : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से मा'लूम हुवा कि हज़रते सय्यिदुना **अबू जा'फ़र क़ारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْبَارِی को अपनी वफ़ात के बा'द "अबू हाज़िम" की सोहबतों की भी मा'लूमात थीं और ब ज़ाहिर ऐसा लगता है कि "अबू हाज़िम" रात **बुरी सोहबतों** में बैठते होंगे इस लिये सलाम व पयाम के ज़रीए बुरी बैठकों से ख़बरदार करते हुए उन्हें "नेकी की दा'वत" पेश की। **बुरी सोहबत** से हम सभी को बचना चाहिये कि इस से अच्छा ख़ासा नेक इन्सान भी बिगड़ जाता है। हमेशा नेक बन्दों और **आ़शिक़ाने रसूल** की सोहबत इख़्तियार करनी चाहिये। **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی **कीमियाए सआ़दत** में फ़रमाते हैं : ऐसे इन्सान को तलाश करे जिस की सोहबत और बातों से दुन्या की रग़बत कम और आख़िरत की तरफ़ तबीअ़त माइल हो जिस आदमी की बातों में ऐसी तासीर न हो उस की सोहबत को "इल्मी मजलिस" नहीं कहा जाएगा, मन्क़ूल है : इल्मी मजालिस में हाज़िर होना एक हज़ार रक्अ़त नवाफ़िल पढ़ने से ज़ियादा अफ़्ज़ल है।

(کیمیائے سعادت ص ١٦١)

हज़रते मौलाना रूम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَيُّوْم **मस्नवी शरीफ़** में फ़रमाते हैं :

یک زمانہ صحبت باولیاء　　بہتر از صد سالہ طاعت بے ریا

(थोड़ी सी देर की औलिया की सोहबत सो सालह बे रिया या'नी ख़ालिस इबादत से बेहतर है)

चूहे और मेंडक की दोस्ती : आ़रिफ़ बिल्लाह हज़रते मौलाना रूम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَيُّوْم बुरी सोहबत का नुक़्सान समझाते हुए फ़रमाते हैं : इत्तिफ़ाक़न एक नदी के कनारे पर एक **चूहे** की **मेंडक** से मुलाक़ात हो गई और दोनों में दोस्ती हो गई, चूहे ने कहा कि कभी मिलने को दिल चाहे तो आप पानी की गहराई में होते हैं जहां आवाज़ भी नहीं पहुंच सकती तो फिर आप को इत्तिलाअ़ किस तरह हो ? आख़िर तै येह पाया कि एक तागा (धागा) चूहे के पाउं में और इस का दूसरा सिरा मेंडक के पाउं में बांध दिया जाए। वक़्ते

ज़रूरत इत्तिलाअ़ की तरकीब हो जाएगी, चुनान्चे ऐसा ही किया गया। एक दिन अचानक **कव्वे** ने **चूहे** पर झपटा मारा और उस को मुंह में ले कर उड़ा तो **मेंडक** भी धागे में बंधा होने के सबब इस के साथ खिंचा खिंचा हवा में चला जा रहा था, **मेंडक** ने कहा कि येह चूहे जैसे ना जिन्स (या'नी ना लाइक़) से दोस्ती की सज़ा है। मा'लूम हुवा, ना जिन्सों (ना लाइक़ों) और बुरी बुरी सोहबतों के सबब बहुत आफ़ात पहुंचती हैं।

اے فُغاں از یارِ ناجنس اے فُغاں

ہمنشینِ نیک جُوئید اے مِہاں

(फ़रियाद है! ना जिन्स (या'नी ना लाइक़) दोस्त से फ़रियाद है। ऐ दोस्तो! नेक साथी तलाश करो)

(مثنوی،دفترششم ۲۶۶،۲۶۷،۲۸۵ بتغیّر)

आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतों में बैठो कि उन की मह़ब्बत और सोह़बत से ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ासिल होता है। ह़दीसे क़ुदसी है :

وَجَبَتْ مَحَبَّتِیْ لِلْمُتَحَابِّیْنَ فِیَّ وَالْمُتَجَالِسِیْنَ فِیَّ وَالْمُتَزَاوِرِیْنَ فِیَّ وَالْمُتَبَاذِلِیْنَ فِیَّ ۔

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : जो लोग मेरी वजह से आपस में मह़ब्बत रखते हैं और मेरी वजह से एक दूसरे के पास बैठते हैं और आपस में मिलते जुलते हैं और माल ख़र्च करते हैं उन से मेरी **मह़ब्बत** वाजिब हो गई।

(موطّا امام مالك ج ۲ ص ۴۳۹ حديث ۱۸۲۸)

ह़दीसे पाक बयान करने वाले मुबल्लिग़ की ह़िकायत : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़बदान बिन मुह़म्मद मर्वज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ाफ़िज़ या'क़ूब बिन सुफ़्यान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان को ख़्वाब में देखा तो पूछा : مَا فَعَلَ اللہُ بِکَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत कर दी और फ़रमाया कि तुम जिस त़रह़ दुन्या में ह़दीस बयान करते थे, आस्मान पर भी बयान करो, **चुनान्चे** मैं ने चौथे आस्मान पर ह़दीसे पाक बयान

की और फ़िरिश्तों ने उस (ह़दीस शरीफ़) को **सुनहरी क़लमों** से लिखा, ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी लिखने वालों में शामिल थे। (شَرْحُ الصُّدُور ص٢٩٣)

वालिदे मर्हूम सब्ज़ लिबास में मल्बूस मुस्करा रहे थे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने उ़-लमाए दीन और ह़दीसों के **मुबल्लिग़ीन** का कितना बुलन्द रुत्बा है ! बा'दे वफ़ात मग़्फ़िरत की बिशारत भी इनायत हुई और चौथे आस्मान पर फ़िरिश्तों के दरमियान ह़दीसे पाक बयान करने की सआ़दत भी मिली, और फ़िरिश्तों ने ब शुमूल सरदारे मलाएका सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उस ह़दीसे मुबारक को सुनहरी क़लमों से तह़रीर फ़रमाया। आख़िरत में जन्नत की त़लब रखने वालो ! आप भी **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र के ज़रीए **इल्मे दीन** का ख़ज़ाना इकठ्ठा कीजिये और म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल, सुन्नतों भरे बयानात और रोज़ाना **फ़ैज़ाने सुन्नत** से कम अज़ कम दो दर्स दे कर जन्नतुल फ़िरदौस के ह़ुसूल की सआ़ये पैहम (या'नी मुसल्सल कोशिश) जारी रखिये। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** गोश गुज़ार की जाती है चुनान्चे निश्तर बस्ती (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई ने जो कुछ बयान किया वोह बित्तसर्रुफ़ अ़र्ज़ करता हूं : मैं ने अपने वालिदे मर्हूम को ख़्वाब में इन्तिहाई कमज़ोरी की ह़ालत में बरह्ना किसी के सहारे पर चलता हुवा देखा। मुझे तश्वीश हुई। मैं ने **ईसाले सवाब** की निय्यत से हर माह तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत कर ली और सफ़र शुरूअ़ भी कर दिया। तीसरे माह म-दनी क़ाफ़िले से वापसी के बा'द जब घर पर सोया तो मैं ने ख़्वाब में येह दिलकश मन्ज़र देखा कि वालिदे मर्हूम सब्ज़ सब्ज़ लिबास ज़ैबे तन किये बैठे मुस्कुरा रहे हैं और उन पर बारिश की हलकी फुल्की फुवार बरस रही है। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की **अहम्मिय्यत** मुझ पर ख़ूब उजागर हुई पक्की निय्यत है कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **हर माह तीन दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र जारी रखूंगा।

मांगो आ कर दुआ़, क़ाफ़िले में चलो *पाओगे मुद्दआ़, क़ाफ़िले में चलो*
ख़ूब होगा सवाब और टलेगा अ़ज़ाब *होगा फ़ज़्ले ख़ुदा, क़ाफ़िले में चलो*
फ़ौतगी हो गई, गुम गया है कोई
मांगने को दुआ़, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या ख़्वाब से यक़ीनी इल्म ह़ासिल हो जाता है ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अच्छे ख़्वाब बेशक अच्छे होते हैं। याद रखिये ! नबी का ख़्वाब वह्य पर मुश्तमिल होता है जब कि ग़ैरे नबी के ख़्वाब की येह ह़ैसिय्यत नहीं और उस का ख़्वाब **हुज्जत** या'नी दलील नहीं होता। म-सलन आप ने ख़्वाब में बारगाहे रिसालत से येह बिशारत सुनी है कि "आप जन्नती हैं।" इस से क़त्ई जन्नती होना मुराद नहीं लिया जाएगा क्यूं कि मुआ़-मला ख़्वाब का है। बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को जिस ने ख़्वाब में देखा उस ने ह़क़ देखा कि शैत़ान आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सूरते मुबा-रका में नहीं आ सकता। जो बात इर्शाद फ़रमाई वोह भी ह़क़ ह़क़ और ह़क़ के सिवा कुछ नहीं। ताहम ख़्वाब में चूंकि ह़वास **मुज़्महि़ल** (या'नी कमज़ोर) होते हैं इस लिये यक़ीन के साथ येह नहीं कहा जा सकता कि जो कुछ फ़रमाया गया वोह ख़्वाब देखने वाले ने ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ दुरुस्त सुना, सुनने और समझने में ग़लत़ फ़हमी का हर इम्कान मौजूद है, लिहाज़ा ख़्वाब में दिये हुए हुक्म पर अ़मल करने से पहले हुक्मे शरीअ़त को देखना होगा। अगर ख़्वाब वाली बात शरीअ़त से नहीं टकराती तो बेशक उस पर अ़मल किया जा सकता है ताहम ख़्वाब में मिले हुए हुक्म पर अ़मल करना शरअ़न वाजिब नहीं और अगर वोह बात ही ख़िलाफ़े शर-अ़ है तो अ़मल नहीं किया जाएगा। इस बात को इस मिसाल से समझिये जिस में

ख़्वाब में शराब नोशी का हुक्म दिया या मन्अ़ फ़रमाया ? : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त,

आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, एक शख़्स ने ख़्वाब देखा कि जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم (مَعَاذَالله) उसे शराब नोशी का हुक्म दे रहे हैं। सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में मुआ़-मला पेश किया गया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुझे शराब पीने से रोका है, तेरे सुनने में उलटा आया।" और येह भी याद रखा जाए कि इस मुआ़-मले में फ़ासिक़ व मुत्तक़ी बराबर हैं। चुनान्चे न तो मुत्तक़ी का ख़्वाब में किसी हुक्म का सुनना, उस हुक्म के सह़ीह़ होने की दलील है और न ही फ़ासिक़ का बयान यक़ीनी त़ौर पर झूटा। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5 स. 100)

मेरे तुम ख़्वाब में आओ मेरे घर रोशनी होगी
मेरी क़िस्मत जगा जाओ इनायत येह बड़ी होगी

(वसाइले बख़्शिश, स. 278)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जब एक नौ जवान को वुज़ू ग़लत़ करते देखा : **एक** बुज़ुर्ग बग़दाद शरीफ़ के किसी अ़लाक़े से गुज़र रहे थे, उन्हों ने एक नौ जवान को देखा जो अच्छे त़रीक़े से **वुज़ू** न कर रहा था तो बड़े प्यार भरे अन्दाज़ में उस से फ़रमाया : "ऐ नौ जवान ! वुज़ू ठीक से कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में आप पर एह़सान फ़रमाए।" येह फ़रमा कर वोह तशरीफ़ ले गए। वोह नौ जवान उन बुज़ुर्ग की **नेकी की दा'वत** देने के मीठे मीठे अन्दाज़ से बेह़द **मु-तअस्सिर** हुवा और वुज़ू के बा'द उन बुज़ुर्ग की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर नसीह़त का त़ालिब हुवा, उन्हों ने (नेकी की दा'वत देते हुए) **तीन म-दनी फूल** इर्शाद फ़रमाए : **(1)** जान लीजिये ! जिस ने रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की **मा'रिफ़त** पा ली (या'नी **अल्लाह** तआ़ला को पहचान लिया) वोह नजात पा गया **(2)** जिस ने अपने दीन के मुआ़-मले में **ख़ौफ़** किया (या'नी **अल्लाह** तआ़ला से डरा) वोह तबाही से बच गया **(3)** जिस ने दुन्या में **जोहद** (या'नी बे रग़बती को) इख़्तियार किया वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से जब कल या'नी बरोज़े

महशर इस का **सवाब** देखेगा तो उस की आंखें ठन्डी होंगी। (फिर फ़रमाया) क्या कुछ मज़ीद न बताऊं ? अ़र्ज़ की : ज़रूर इर्शाद हो। फ़रमाया : जिस में तीन ख़ूबियां जम्अ़ हो गईं उस का **ईमान** मुकम्मल हो गया :《1》 जो **नेकी का हुक्म** दे और ख़ुद भी उस पर अ़मल करे《2》 जो **बुराई से मन्अ़ करे** और ख़ुद भी उस से बाज़ रहे और《3》 जो **हुदूदे इलाही** عَزَّوَجَلَّ की हिफ़ाज़त करे। (या'नी शर-ई अह़कामात बजा लाए और शर-ई मम्नूआ़त से ख़ुद को बचाए) **फिर** फ़रमाया : क्या कुछ और भी बताऊं ? अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं, ज़रूर इर्शाद फ़रमाइये। फ़रमाया : **दुन्या से बे रग़बत** और आख़िरत का शौक़ रखने वाले हो जाइये और अपने हर काम में रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ से सच का मुआ़-मला कीजिये नजात पाने वालों के साथ **नजात** पा जाएंगे। येह फ़रमा कर वोह तशरीफ़ ले गए। उस नौ जवान ने उन बुज़ुर्ग के **मु-तअ़ल्लिक़** मा'लूमात की तो उसे बताया गया : येह ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम शाफ़ेई** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى थे। **(اِحیاءُ العُلوم ج۱ ص۴۰ بتغیّر)** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बे जा तन्क़ीद के बजाए इस्लाह़ करने वाले बनें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने करोड़ों शाफ़ेइय्यों के पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इदरीस, अल मा'रूफ़ **''इमाम शाफ़ेई''** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने कितनी **मह़ब्बत** व शफ़्क़त के साथ इन्फ़िरादी कोशिश फ़रमाई और अच्छे त़रीक़े से **वुज़ू** न करने वाले नौ जवान के वुज़ू की इस्लाह़ भी की और उसे **नेकी की दा'वत** भी दी। काश ! हम भी येही अन्दाज़ इख़्तियार करने में काम्याब हो जाएं, हमें भी येह तौफ़ीक़ नसीब हो जाए कि जब किसी की **वुज़ू** में ग़-लतियां और **नमाज़** में कोताहियां देखें, झूट, ग़ीबत व चुग़ली के गुनाहों में किसी को मुब्तला पाएं तो पीछे से उस पर बे जा तन्क़ीद और उस की बुराई कर के ख़ुद **ग़ीबत** की गहरी खाई में छलांग लगाने के बजाए उस को गुनाहों की दलदल से निकालने की सअ़्य करें, निहायत नरमी और प्यार से उस को समझाने और सवाबे आख़िरत के ख़ज़ाने समेटने वाले बनें। हम ख़ुलूसे निय्यत के साथ किसी को

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है । (ابویعلی)

समझाएंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस का ज़रूर फ़ाएदा होगा और फ़ाएदा क्यूं न हो कि समझाने से फ़ाएदा पहुंचने का ख़ुद रब्बुल अनाम جَلَّ جَلَالُہٗ अपने सच्चे कलाम में ए'लान फ़रमा चुका (या'नी ख़बर इर्शाद फ़रमा चुका है) चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़्हा 964 पर पारह 27 **सू-रतुज़्ज़ारियात** आयत नम्बर 55 में है **:**

وَذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है ।

जिसे नेकी की दा'वत दूं, सुने दिल से करम या रब !
ज़बां में दे असर कर दे, अ़ता ज़ोरे क़लम या रब

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

वुज़ू का तरीक़ा (ह़-नफ़ी) : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा हिकायत में ह़ज़रते **सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی के नौ जवान के वुज़ू की इस्लाह़ फ़रमाने का तज़्किरा है, जब उस दौर में भी लोग वुज़ू में ग़-लतियां कर जाते थे तो आज का दौर तो उस से भी नाज़ुक तर है बल्कि इस बात का मुशा-हदा है कि मुसल्मानों की अक्सरिय्यत दुरुस्त त़रीक़े पर वुज़ू करना नहीं जानती लिहाज़ा आइये ! हम भी **वुज़ू का त़रीक़ा** सीखते हैं । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 496 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"नमाज़ के अह़काम"** सफ़्ह़ा 7 ता 13 पर है **: का'बतुल्लाह** शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के ऊंची जगह बैठना मुस्तह़ब है । वुज़ू के लिये **निय्यत** करना सुन्नत है, निय्यत न हो तब भी वुज़ू हो जाएगा मगर सवाब नहीं मिलेगा । निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं, दिल में निय्यत होते हुए ज़बान से भी कह लेना अफ़्ज़ल है लिहाज़ा ज़बान से इस त़रह़ निय्यत कीजिये कि मैं **हुक्मे इलाही** عَزَّوَجَلَّ **बजा लाने और पाकी ह़ासिल करने के लिये वुज़ू कर रहा हूं ।** بِسْمِ اللہ कह लीजिये कि येह भी सुन्नत है बल्कि بِسْمِ اللہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہ कह लीजिये कि जब तक बा वुज़ू रहेंगे फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहेंगे । (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج۱ ص۵۱۳ حدیث۱۱۱۲)

अब दोनों हाथ तीन तीन बार पहुंचों तक धोइये, (नल बन्द कर के) **दोनों हाथों** की उंग्लियों का ख़िलाल भी कीजिये। कम अज़ कम तीन तीन बार दाएं बाएं ऊपर नीचे के दांतों में **मिस्वाक** कीजिये और हर बार मिस्वाक धो लीजिये। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "मिस्वाक करते वक़्त नमाज़ में क़ुरआने मजीद की क़िराअत और **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुंह पाक करने की निय्यत करनी चाहिये।" (اِحیاءُ العُلوم ج۱ ص۱۸۲) अब सीधे हाथ के तीन चुल्लू पानी से (हर बार नल बन्द कर के) इस त़रह़ **तीन कुल्लियां** कीजिये कि हर बार मुंह के हर पुर्ज़े पर (ह़ल्क़ के कनारे तक) पानी बह जाए, अगर रोज़ा न हो तो **ग़रग़रा** भी कर लीजिये। फिर सीधे ही हाथ के तीन चुल्लू (अब हर बार आधा चुल्लू पानी काफ़ी है) से (हर बार नल बन्द कर के) **तीन बार नाक** में नर्म गोश्त तक पानी चढ़ाइये और अगर रोज़ा न हो तो नाक की जड़ तक पानी पहुंचाइये, अब (नल बन्द कर के) उल्टे हाथ से नाक साफ़ कर लीजिये और छोटी उंगली नाक के सूराख़ों में डालिये। **तीन बार सारा चेहरा** इस त़रह़ धोइये कि जहां से आ़दतन सर के बाल उगना शुरूअ़ होते हैं वहां से ले कर ठोड़ी (ठड्डी) के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हर जगह पानी बह जाए। अगर **दाढ़ी** है और एह़राम बांधे हुए नहीं हैं तो (नल बन्द करने के बा'द) इस त़रह़ **ख़िलाल** कीजिये कि उंग्लियों को गले की त़रफ़ से दाख़िल कर के सामने की त़रफ़ निकालिये। फिर पहले **सीधा हाथ** उंग्लियों के सिरे से धोना शुरूअ़ कर के कोहनियों समेत तीन बार धोइये। इसी त़रह़ फिर **उल्टा हाथ** धो लीजिये। दोनों हाथ आधे बाज़ू तक धोना मुस्तह़ब है। **अक्सर लोग चुल्लू में पानी ले कर पहुंचे से तीन बार छोड़ देते हैं कि कोहनी तक बहता चला जाता है इस त़रह़ करने से कोहनी और कलाई की करवटों पर पानी न पहुंचने का अन्देशा है लिहाज़ा बयान कर्दा त़रीक़े पर हाथ धोइये। अब चुल्लू भर कर कोहनी तक पानी बहाने की ह़ाजत नहीं बल्कि (बिग़ैर इजाज़ते सह़ीह़ा ऐसा करना) इसराफ़ है।** अब (नल बन्द कर के) **सर का मस्ह़** इस त़रह़ कीजिये

कि दोनों अंगूठों और कलिमे की उंग्लियों को छोड़ कर दोनों हाथ की तीन तीन उंग्लियों के सिरे एक दूसरे से मिला लीजिये और पेशानी के बाल या खाल पर रख कर खींचते हुए गुद्दी तक इस त़रह़ ले जाइये कि हथेलियां सर से जुदा रहें, फिर गुद्दी से हथेलियां खींचते हुए पेशानी तक ले आइये, कलिमे की उंग्लियां और अंगूठे इस दौरान सर पर बिल्कुल मस नहीं होने चाहिएं, फिर कलिमे का उंग्लियों से कानों की अन्दरूनी सत़्ह़ का और अंगूठों से कानों का बाहरी सत़्ह़ का मस्ह़ कीजिये और छुंग्लियां (या'नी छोटी उंग्लियां) कानों के सूराख़ों में दाख़िल कीजिये और उंग्लियों की पुश्त से गरदन के पिछले ह़िस्से का मस्ह़ कीजिये। बा'ज़ लोग गले का और धुले हुए हाथों की कोहनियों और कलाइयों का मस्ह़ करते हैं येह सुन्नत नहीं है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 4 सफ़ह़ा 621 पर मस्ह़ का एक त़रीक़ा येह भी तह़रीर है : इस में बिल ख़ुसूस इस्लामी बहनों के लिये ज़ियादा सहूलत भी है चुनान्चे लिखा है : "मस्ह़े सर में अदाए सुन्नत को येह भी काफ़ी है कि उंग्लियां सर के अगले ह़िस्से पर रखे और हथेलियां सर की करवटों पर और हाथ जमा कर गुद्दी तक खींचता ले जाए।") **सर का मस्ह़ करने से क़ब्ल टोंटी अच्छी त़रह़ बन्द करने की आ़दत बना लीजिये** बिला वजह नल खुला छोड़ देना या अधूरा बन्द करना कि पानी टपक कर ज़ाएअ़ होता रहे इसराफ़ व गुनाह है। **पहले सीधा फिर उल्टा पाउं** हर बार उंग्लियों से शुरूअ़ कर के टख़्नों के ऊपर तक बल्कि मुस्तह़ब है कि आधी पिंडली तक तीन तीन बार धो लीजिये। दोनों पाउं की उंग्लियों का ख़िलाल करना सुन्नत है। (ख़िलाल के दौरान नल बन्द रखिये) इस का मुस्तह़ब त़रीक़ा येह है कि उल्टे हाथ की छुंग्लिया से सीधे पाउं की छुंग्लिया का ख़िलाल शुरूअ़ कर के अंगूठे पर ख़त्म कीजिये और उल्टे ही हाथ की छुंग्लिया से उल्टे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंग्लिया पर ख़त्म कर लीजिये। (आ़म्मए कुतुब)

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : हर उ़ज़्व धोते वक़्त येह उम्मीद करता रहे कि मेरे इस उ़ज़्व के गुनाह निकल रहे हैं। (اِحياءُ الْعُلوم ج١ ص١٨٣ مُلَخَّصاً)

वुज़ू के बचे हुए पानी में 70 बीमारियों से शिफ़ा : **लोटे** वग़ैरा से वुज़ू करने के बा'द बचा हुवा पानी खड़े हो कर पीना **सुन्नत** भी है और **शिफ़ा** भी चुनान्चे मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **"फ़तावा र-ज़विय्या"** मुख़र्रजा जिल्द 4 सफ़ह़ा 575 ता 576 पर फ़रमाते हैं : **बक़िय्यए वुज़ू** (या'नी वुज़ू के बचे हुए पानी) के लिये शरअ़न अ़-ज़मत व एह़तिराम है और नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित कि हुज़ूर ने वुज़ू फ़रमा कर बक़िय्या आब (या'नी बचे हुवे पानी) को खड़े हो कर नोश फ़रमाया और एक ह़दीस में रिवायत किया गया कि **इस का पीना सत्तर मरज़ से शिफ़ा है।** (اَلْفِرْدَوْس ج۲ ص۳٦۲ حديث۳٦۱۷) तो वोह इन उमूर में आबे ज़मज़म से मुशा-बहत रखता है ऐसे (या'नी वुज़ू के बचे हुए) पानी से इस्तिन्जा मुनासिब नहीं। "तन्वीर" के आदाबे वुज़ू में है : "वुज़ू के बा'द वुज़ू का पसमांदा (या'नी बचा हुवा पानी) क़िब्ला रुख़ खड़े हो कर पिये।" (تَنويرُ الابصار ج۱ ص۲۷۵) अ़ल्लामा **अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने तजरिबा किया है कि जब मैं बीमार होता हूं तो वुज़ू के **बक़िय्या** पानी से **शिफ़ा** ह़ासिल हो जाती है। नबिय्ये सादिक़ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस सह़ीह़ तिब्बे न-बवी में पाए जाने वाले इर्शादे गिरामी पर ए'तिमाद करते हुए मैं ने येह त़रीक़ा इख़्तियार किया है। (رَدُّالْمُحتار ج۱ ص۲۷۷) وَاللّٰهُ سُبحٰنَهٗ وَتعالٰی اَعلَم بِالصَّواب

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं : **ह़दीसे पाक** में है : जिस ने अच्छी त़रह़ वुज़ू किया और फिर आस्मान की त़रफ़ निगाह उठाई और कलिमए शहादत पढ़ा उस के लिये **जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं** जिस से चाहे अन्दर दाख़िल हो। (سُنَنِ دارمی ج ۱ ص ۱۹٦ حديث ۷۱٦)

नज़र कभी कमज़ोर न हो : जो वुज़ू के बा'द आस्मान की त़रफ़ देख कर सूरए اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की नज़र कभी कमज़ोर न होगी ।

(मसाइलुल क़ुरआन स. 291)

वुज़ू के बा'द तीन बार सूरए क़द्र पढ़ने के फ़ज़ाइल : ह़दीसे मुबारक में है : जो वुज़ू के बा'द एक मर्तबा सूरए क़द्र पढ़े तो वोह सिद्दीक़ीन में से है और जो दो मर्तबा पढ़े तो शु-हदा में शुमार किया जाए और जो **तीन** मर्तबा पढ़ेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैदाने मह़शर में उसे अपने अम्बिया के साथ रखेगा ।

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۷ ص۲۵۱ حديث ۲۲۸۱۷)

वुज़ू के बा'द पढ़ने की दुआ़ (अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़)

जो वुज़ू करने के बा'द येह कलिमात पढ़े :

سُبْحٰنَکَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِکَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰـهَ اِلَّااَنْـتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَيْکَ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** तू पाक है और तेरे लिये ही तमाम ख़ूबियां हैं मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं ।

तो उस पर मोहर लगा कर अ़र्श के नीचे रख दिया जाएगा और क़ियामत के दिन उस पढ़ने वाले को दे दिया जाएगा । (شُعَبُ الْاِيمان ج۳ ص۲۱ رقم ۲۷۵۴)

वुज़ू के बा'द येह दुआ़ भी पढ़ लीजिये (अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़)

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ

(سُنَنِ تِرمِذی ج۱ ص۱۲۱ حديث ۵۵)

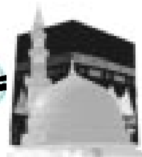
तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे कसरत से तौबा करने वालों में बना दे और मुझे पाकीज़ा रहने वालों में शामिल कर दे ।

40 म-दनी फूलों का र-ज़वी गुलदस्ता : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن के वुज़ू वग़ैरा के **मु-तअ़ल्लिक़** इनायत कर्दा मु-तफ़र्रक़ (या'नी जुदा जुदा) रंग बिरंगे ख़ुशनुमा 40 म-दनी फूलों का र-ज़वी गुलदस्ता क़बूल फ़रमाइये। आप की मा'लूमात को اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मदीने के 12 चांद लग जाएंगे। येह तमाम म-दनी फूल फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा (जिल्द 4) के आख़िर में दिये हुए "फ़वाइदे जलीला" सफ़ह़ा 613 ता 746 से लिये गए हैं।

۞ वुज़ू में आंखें ज़ोर से न बन्द करे मगर वुज़ू हो जाएगा (स. 613) ۞ अगर लब (या'नी होंट) ख़ूब ज़ोर से बन्द कर के **वुज़ू** किया और कुल्ली न की वुज़ू न होगा। (ऐज़न, स. 614) ۞ वुज़ू का पानी रोज़े क़ियामत **नेकियों के पल्ले** में रखा जाएगा। (ऐज़न) (मगर याद रहे ! ज़रूरत से ज़ियादा पानी गिराना इसराफ़ है) ۞ मिस्वाक मौजूद हो तो उंगली से दांत मांजना अदाए **सुन्नत** व ह़ुसूले सवाब के लिये काफ़ी नहीं, हां मिस्वाक न हो तो उंगली या खर-खरा (या'नी खुर्दरा) कपड़ा अदाए **सुन्नत** कर देगा और औ़रतों के लिये मिस्वाक मौजूद हो जब भी **मिस्सी** काफ़ी है (स. 615) ۞ अंगूठी ढीली हो तो **वुज़ू** में उसे फिरा कर पानी डालना **सुन्नत** है और तंग हो कि बे **जुम्बिश** दिये पानी न पहुंचे तो **फ़र्ज़**। येही हुक्म बाली (या'नी कान के ज़ेवर) वग़ैरा का है (स. 616) ۞ आ'ज़ा का मल मल कर धोना **वुज़ू** और **ग़ुस्ल** दोनों में **सुन्नत** है (ऐज़न) ۞ आ'ज़ाए वुज़ू धोने में ह़द्दे शर-ई से इतनी ख़फ़ीफ़ तह़रीर (या'नी हर त़रफ़ से मा'मूली सा) बढ़ाना जिस से ह़द्दे शर-ई तक इस्तीआ़ब (या'नी मुकम्मल होने) में शुबा न रहे **वाजिब** है (ऐज़न) ۞ वुज़ू में कुल्ली या नाक में पानी डालने का तर्क मक्रूह है और इस की आ़दत डाले तो गुनहगार होगा। येह मस्अला वोह लोग ख़ूब याद रखें जो कुल्लियां ऐसी नहीं करते कि ह़ल्क़ तक हर चीज़ को धोएं और वोह कि पानी जिन की नाक को (फ़क़त़) छू जाता है सूंघ कर ऊपर नहीं चढ़ाते येह सब लोग **गुनहगार** हैं और **ग़ुस्ल** में तो ऐसा न हो तो सिरे से न ग़ुस्ल होगा न **नमाज़** (ऐज़न) ۞ वुज़ू में हर उ़ज़्व का पूरा तीन बार धोना **सुन्नते मुअक्कदा** है, तर्क की आ़दत से गुनहगार होगा (माख़ूज़ अज़ ऐज़न)

۞ वुज़ू में जल्दी न चाहिये बल्कि दरंग (या'नी इत़्मीनान) व एह़तियात़ के साथ करे। अ़वाम में जो मश्हूर है कि "वुज़ू जवानों का सा, नमाज़ बूढ़ों की सी," येह वुज़ू के बारे में ग़लत़ है (ऐज़न, स. 617) ۞ मुंह धोने में न गालों पर डाले न नाक पर न ज़ोर से पेशानी पर, येह सब अफ़्आ़ल जुह्हाल (या'नी जाहिलों) के हैं बल्कि बा आहिस्तगी बालाए **पेशानी** (या'नी पेशानी के ऊपर) से डाले कि ठोड़ी से नीचे तक बहता आए (ऐज़न, स. 618) ۞ वुज़ू में मुंह से गिरता हुवा पानी म-सलन कलाई पर लिया और (कलाई पर) बहा लिया (या'नी धोने में मुंह से गिरने वाले पानी से हाथ की कलाई नहीं धो सकते कि) इस से **वुज़ू** न होगा और **ग़ुस्ल** में (मुआ़-मला जुदा है) म-सलन सर का पानी पाउं तक जहां जहां गुज़रेगा पाक करता जाएगा वहां नए पानी की ज़रूरत नहीं (ऐज़न) ۞ आदमी वुज़ू करने बैठा फिर किसी मानेअ़ (या'नी रुकावट) के सबब तमाम (या'नी मुकम्मल) न कर सका तो जितने अफ़्आ़ल किये उन पर सवाब पाएगा अगर्चे वुज़ू न हुवा (ऐज़न) ۞ जिस ने ख़ुद ही क़स्द (या'नी इरादा) किया कि आधा वुज़ू करेगा वोह इन अफ़्आ़ल पर सवाब न पाएगा, यूंही जो वुज़ू करने बैठा और बिला उ़ज़्र नाक़िस (या'नी अधूरा) छोड़ दिया वोह भी जितने अफ़्आ़ल बजा लाया उन पर मुस्तह़िक़्क़े सवाब न होना चाहिये (ऐज़न) ۞ अगर सर पर मींह (या'नी बारिश) की बूंदें इतनी गिरीं कि चहारुम (या'नी चौथाई) सर भीग गया मस्ह़ हो गया अगर्चे उस शख़्स ने हाथ लगाया न क़स्द (या'नी न निय्यत व इरादा) किया (ऐज़न, स. 619) ۞ ओस (या'नी शबनम) में सर बरह्ना (या'नी नंगे सर) बैठा और उस से चहारुम सर के क़दर भीग गया मस्ह़ हो गया (ऐज़न) ۞ इतने गर्म या इतने सर्द पानी से **वुज़ू** मक्रूह है जो बदन पर अच्छी त़रह़ न डाला जाए, तक्मीले **सुन्नत** न करने दे, और अगर कोई **फ़र्ज़** पूरा करने से मानेअ़ (या'नी रुकावट) हुवा तो वुज़ू ही न होगा (ऐज़न, स. 620) ۞ पानी बेकार सर्फ़ (या'नी ख़र्च) करना या फेंक देना **ह़राम** है। (ऐज़न, स. 621) (अपने या दूसरे के पीने के बा'द गिलास या जग का बचा हुवा पानी ख़्वाह म ख़्वाह फेंक देने वाले तौबा करें और आयन्दा इस से बचें) ۞ नाफ़ से ज़र्द पानी बह कर निकले वुज़ू जाता रहे (ऐज़न, स. 622) ۞ ख़ून या पीप आंख में बहा मगर आंख से बाहर न गया तो वुज़ू न जाएगा उसे कपड़े से पोंछ कर पानी में डाल दें तो (पानी) नापाक न होगा (ऐज़न, स. 424) ۞ ज़ख़्म पर पट्टी बंधी है उस में ख़ून वग़ैरा लग गया अगर इस क़ाबिल था कि बन्दिश न होती तो बह जाता तो वुज़ू गया वरना नहीं, न पट्टी नापाक (ऐज़न) ۞ क़त़रा उतर आया या ख़ून वग़ैरा






ज़कर (या'नी उ़ज़्वे तनासुल) के अन्दर बहा जब तक उस के सूराख़ से बाहर न आए वुज़ू न जाएगा और पेशाब का सिर्फ़ सूराख़ के मुंह पर चमकना (वुज़ू तोड़ने के लिये) काफ़ी है (ऐज़न) ۞ ना बालिग़ न कभी बे वुज़ू हो न **जुनुब** (या'नी बे ग़ुस्ला) । उन्हें (या'नी ना बालिग़ान को) वुज़ू व ग़ुस्ल का हुक्म आ़दत डालने और आदाब सिखाने के लिये है वरना किसी ह़दस (या'नी वुज़ू तोड़ने वाले अ़मल) से उन का वुज़ू नहीं जाता न जिमाअ़ से उन पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो (ऐज़न, स. 633) ۞ बा वुज़ू ने मां बाप के कपड़े या उन के खाने के लिये फल या मस्जिद का फ़र्श सवाब के लिये धोया पानी **मुस्ता'मल** न होगा अगरचें येह अफ़आ़ल कु़र्बत (या'नी रिज़ाए इलाही) के हैं (ऐज़न, स. 636) ۞ ना बालिग़ का पाक हाथ या बदन का कोई जुज़ अगर्चे बे वुज़ू हो पानी में डालने से क़ाबिले वुज़ू रहेगा (ऐज़न, स. 637) ۞ बदन सुथरा रखना, मैल दूर करना, शर-अ़ में मत़्लूब है कि इस्लाम की बिना (या'नी बुन्याद) सुथराई (या'नी पाकीज़गी व सफ़ाई) पर है । इस निय्यत से बा वुज़ू ने बदन धोया तो कु़र्बत (या'नी कारे सवाब) बेशक है मगर पानी मुस्ता'मल न हुवा (ऐज़न) ۞ **मुस्ता'मल** पानी पाक है इस से कपड़ा धो सकते हैं मगर इस से वुज़ू नहीं हो सकता और इस का पीना या इस से आटा गूंधना मक्रूहे (तन्ज़ीही) है (ऐज़न, स. 637) ۞ पराया पानी बे इजाज़त ले गया अगर्चे ज़बर दस्ती या चुरा कर उस से वुज़ू हो जाए मगर ह़राम है । अलबत्ता किसी के मम्लूक (या'नी मिल्किय्यत के) कूंएं से उस की मुमा-न-अ़त पर भी पानी भर लिया उस का इस्ति'माल जाइज़ है (ऐज़न, स. 650) ۞ जिस पानी में माए **मुस्ता'मल** की धार पहुंची या वाज़ेह़ क़त्ऱे गिरे उस से वुज़ू न करना बेहतर (ऐज़न) ۞ जाड़े में वुज़ू करने से सर्दी बहुत मा'लूम होगी इस की तक्लीफ़ होगी मगर किसी मरज़ का अन्देशा नहीं तो **तयम्मुम** की इजाज़त नहीं (ऐज़न, स. 662) ۞ शैत़ान के थूक और फूंक से नमाज़ में क़त्ऱे और रीह़ का शुबा हो जाता है, हुक्म है कि जब तक ऐसा यक़ीन न हो जिस पर क़सम खा सके इस (वस्वसे) पर लिहाज़ न करे, शैत़ान कहे कि तेरा वुज़ू जाता रहा तो दिल में जवाब दे ले कि ख़बीस तू झूटा है और अपनी नमाज़ में मश्ग़ूल रहे (ऐज़न, स. 697) ۞ मस्जिद को हर घिन की चीज़ से बचाना वाजिब है अगर्चे पाक हो जैसे लुआ़बे दहन (मुंह की राल, थूक, बल्ग़म) आबे बीनी (म-सलन रींठ या नाक से नज़्ले का बहने वाला पानी) आबे वुज़ू (ऐज़न, स. 706) ۞ **तम्बीह :** बा'ज़ लोग कि वुज़ू के बा'द अपने मुंह और हाथों से पानी पोंछ कर मस्जिद में हाथ





झाड़ते हैं (येह) मह्ज़ **ह़राम** और ना जाइज़ है। (ऐज़न) ۞ पानी में पेशाब करना मुत़लक़न मक्रूह है अगर्चे दरिया में हो (ऐज़न, स. 725) ۞ जहां कोई नजासत पड़ी हो तिलावत मक्रूह है (ऐज़न, स. 727) ۞ पानी ज़ाएअ् करना ह़राम है (ऐज़न, स. 728) ۞ माल ज़ाएअ् करना ह़राम है (ऐज़न, स. 728) ۞ ज़मज़म शरीफ़ से ग़ुस्ल व वुज़ू बिला कराहत जाइज़ है (और पेशाब वग़ैरा कर के) ढेले (से ख़ुश्क कर लेने) के बा'द (आबे ज़मज़म से) इस्तिन्जा मक्रूह और नजासत धोना (म-सलन पेशाब के बा'द टिश्यू पेपर वग़ैरा से सुखाए बिग़ैर) गुनाह (ऐज़न, स. 742) ۞ (वोह) इसराफ़ कि (जो) ना जाइज़ व गुनाह है (वोह) सिर्फ़ (इन) दो सूरतों में होता है, एक येह कि किसी गुनाह में सर्फ़ (या'नी ख़र्च) व इस्ति'माल करें, दूसरे बेकार मह्ज़ माल ज़ाएअ् करें (ऐज़न, स. 743) ۞ ग़ुस्ले मय्यित सिखाने के लिये मुर्दे को नहलाया और उसे ग़ुस्ल देने की निय्यत न की वोह भी पाक हो गया और ज़िन्दों पर से भी फ़र्ज़ उतर गया कि फ़े'ल बिल क़स्द काफ़ी है, हां बे निय्यत सवाब न मिलेगा। (ऐज़न, स. 707)

दीन की बातें रहूं सुनता सुनाता या ख़ुदा
और रहूं इस पर अ़मल करता कराता या ख़ुदा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वुज़ू के ज़रूरी अह़काम जानने के लिये **नमाज़ के अह़काम** में शामिल 63 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला **वुज़ू का त़रीक़ा** (ह़-नफ़ी) का ज़रूर मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये।

गुनाह से मन्अ़ करना कब फ़र्ज़ है ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेशक सुन्नतों भरा बयान करना कारे सवाब और बहुत बड़ी सआ़दत की बात है मगर येह ज़ेह्न में रहे कि वा'ज़ व नसीह़त पर मब्नी बयान करना मुस्तह़ब काम है, अगर नहीं किया तो कुछ गुनाह नहीं मगर किसी को गुनाह करते देखा और गुमान ग़ालिब है कि उस को बताएगा तो बाज़ आ जाएगा तो कई घन्टों के बयान के मुक़ाबले में उस को गुनाह से मन्अ़ करने में ज़ियादा सवाब है क्यूं कि अब

उस को मन्अ़ करना फ़र्ज़ है और मन्अ़ न करने वाला गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''बहारे शरीअ़त''** जिल्द 3 सफ़ह़ा 615 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती **मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''अगर ग़ालिब गुमान येह है कि येह उन (बुराई करने वालों) से कहेगा तो वोह इस की बात मान लेंगे और बुरी बात से बाज़ आ जाएंगे, तो اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف (या'नी अच्छाई का हुक्म करना) वाजिब है, इस (या'नी किसी को बुराई करता देखने वाले) को (बुराई से मन्अ़ करने से) बाज़ रहना जाइज़ नहीं।''

जो नेकी की दा'वत की धूमें मचाए
मैं देता हूं उस को दुआ़ए मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 152)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इमामे आ'ज़म को गुनाह नज़र आ जाते थे ! : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 308 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''इस्लामी बहनों की नमाज़''** सफ़ह़ा 12 पर है : ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : एक मर्तबा सय्यिदुना **इमामे आ'ज़म** अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ जामेअ़ मस्जिद कूफ़ा के वुज़ूख़ाने में तशरीफ़ ले गए तो एक नौ जवान को **वुज़ू** बनाते हुए देखा, उस से वुज़ू (में इस्ति'माल शुदा पानी) के क़त़रे टपक रहे थे। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ बेटे ! **मां बाप की ना फ़रमानी** से तौबा कर ले। उस ने फ़ौरन अ़र्ज़ की : ''मैं ने तौबा की।'' एक और शख़्स के वुज़ू (में इस्ति'माल में होने वाले पानी) के क़त़रे टपकते देखे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस शख़्स से इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मेरे भाई ! तू ज़िना से तौबा कर ले।'' उस ने अ़र्ज़ की : ''मैं ने तौबा की।'' एक और शख़्स के वुज़ू के क़त़रात टपकते देखे तो उसे फ़रमाया : ''शराब नोशी और गाने बाजे

सुनने से तौबा कर ले।" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं ने तौबा की।" सय्यिदुना **इमामे आ'ज़म** अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ पर कश्फ़ के बाइस चूंकि लोगों के उ़यूब ज़ाहिर हो जाते थे लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस कश्फ़ के ख़त्म हो जाने की दुआ़ मांगी : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुआ़ क़बूल फ़रमा ली जिस से आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ को वुज़ू करने वालों के गुनाह झड़ते नज़र आना बन्द हो गए।"

(المیزانُ الکبرٰی ج۱ ص۱۳۰)

जानबूझ कर किसी का ऐ़ब मा'लूम करना कैसा ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! करोड़ों ह़-नफ़िय्यों के पेश्वा इमामे आ'ज़म, **फ़क़ीहे अफ़्ख़म,** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ की चश्मे विलायत लोगों की वुज़ू के ज़रीए़ झड़ने वाली मा'सिय्यत या'नी ना फ़रमानियां देख लेती थी ! बेशक येह आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ की अ़ज़ीम **करामत** थी ताहम आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ को लोगों के उ़यूब पर मुत्तलअ़ होना गवारा न हुवा और दुआ़ के ज़रीए़ अपना येह कश्फ़ ख़त्म करवा दिया ! यहां वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो कि इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की महब्बत का दम तो भरते हैं मगर ज़बर दस्ती आड़े तिरछे सुवालात (CROSSE QUESTIONS) कर के लोगों के ऐ़बों की टटोल में भी रहते हैं, याद रखिये ! बिला मस्ल-ह़ते शर-ई इरादतन किसी मुसल्मान का ऐ़ब मा'लूम करना गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़्ह़ा 950 पर पारह 26 **सू-रतुल ह़ुजुरात** आयत नम्बर 12 में साफ़ वारिद है :

وَلَا تَجَسَّسُوْا **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ़ब न ढूंडो।

आ़लिम की ग़-लती़ बयान करना दो वजह से ह़राम है : और अगर उस **ऐ़ब** को दूसरे पर इस त़रह़ ज़ाहिर किया कि उस को पता हो कि येह फ़ुलां का **ऐ़ब** है तो येह एक और गुनाह हुवा, अगर वोह **ऐ़ब** किसी आ़लिमे दीन का था और उस को ज़ाहिर किया तो गुनाह में और भी बढ़ोतरी होगी। चुनान्चे **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन






मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی **कीमियाए सआदत** में फ़रमाते हैं : आलिम की ग़-लती बयान करना **दो वजह** से हराम है। **एक** तो इस लिये कि येह **ग़ीबत** है। **दूसरे** इस लिये कि लोगों में **जुरअत** पैदा होगी और वोह इसे दलील बना कर उस की पैरवी करेंगे (या'नी बेबाकी के साथ उसी तरह की ग़-लतियां करेंगे) और शैतान भी उस (ग़-लतियों में पैरवी करने वाले) की मदद के लिये उठ खड़ा होगा और (गुनाहों पर दीलेर बनाने के लिये) उस से कहेगा कि तू (भी यूं और यूं कर कि) फुलां आलिम से बढ़ कर परहेज़ गार तो नहीं है। (کیمیائے سعادت ج۱ ص ٤١٠) जितने ज़ियादा लोगों को उस ख़ता पर मुत्तलअ करेगा, गुनाहों में इज़ाफ़ा होता चला जाएगा। मुसल्मान को चाहिये कि अव्वल तो लोगों के उयूब जानने से बचे अगर कोई बताने लगे तब भी सुनने से ख़ुद को बचाए। बिलफ़र्ज़ किसी तरह किसी का **ऐब** नज़र आ गया या मा'लूम हो गया हो तो उस को दबा दे। बिला मस्ल-हते शर-ई हरगिज़ किसी पर ज़ाहिर न करे।

ऐब पोशी के मु-तअल्लिक़ 3 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم :

ऐब पोशी के हवाले से 3 **फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-हज़ा हों : ﴾1﴿ जो अपने मुस्लमान भाई की ऐब पोशी करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की ऐब पोशी फ़रमाएगा और जो अपने मुसल्मान भाई का ऐब ज़ाहिर करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का ऐब ज़ाहिर फ़रमाएगा यहां तक कि उसे उस के घर में रुस्वा कर देगा। (ابن ماجه ج٣ص٢١٩حديث٢٥٤٦) ﴾2﴿ जो किसी मुसल्मान की तक्लीफ़ दूर करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत की तक्लीफ़ों में से उस की तक्लीफ़ दूर फ़रमाएगा और जो किसी मुसल्मान की **ऐब पोशी** करे तो ख़ुदाए सत्तार عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के रोज़ उस की ऐब पोशी फ़रमाए (مُسلِم حديث ٦٥٨٠ ص ١٣٩٤) ﴾3﴿ जो शख़्स अपने भाई का ऐब देख कर उस की **पर्दा पोशी** कर दे तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। (مُسند عَبْد بن حُمَيْد ص ٢٧٩ حديث٨٨٥)

ऐब ढूंडने की 59 मिसालें : यहां जो मिसालें दी जा रही हैं उन में ऐबों की टटोल (या'नी ऐबों की तलाश) के साथ साथ ज़िम्नन ग़ीबतें, तोहमतें और बद गुमानियां वग़ैरा भी शामिल हैं। अक्सर ऐसी मिसालें हैं जिन में निय्यत के साथ अहकाम मुरत्तब होंगे





म-सलन नोकर रखने, शिराकत दारी (या'नी पार्टनर शिप करने) या कहीं शादी का इरादा है तो ह़स्बे ज़रूरत मा'लूमात करना गुनाह नहीं बल्कि इस त़रह़ के मुआ-मले में जिस से पूछा गया उस पर वाजिब है कि दुरुस्त बात बताए और अगर इस क़िस्म के मुआ-मलात की वजह से सुवाल न किया गया हो तो ग़ीबतों और तोह्मतों के ज़रीए अपने लिये जहन्नम में जाने का सामान करने के बजाए ऐ़ब पोशी से काम ले कर जन्नत का ह़क़दार बने । मगर उ़मूमन त़रह़ त़रह़ के सुवालात के ज़रीए **ऐ़बों की टटोल** (या'नी उ़यूब की मा'लूमात और कुरेद) में येह निय्यत नहीं होती, बस लोग पूछने की ख़ात़िर पूछते रहते हैं और बसा अवक़ात ख़ुद भी गुनाहों में पड़ते और बारहा जवाब देने वाले को भी गुनहगार कर देते हैं ।

❁ किसी ने मकान किराए पर लिया तो पूछना : मकान मालिक कैसा है ? येह सुवाल फ़ी नफ़्सिही गुनाह न सही मगर कई गुनाहों का सबब बन सकता है, म-सलन किराए दार ने जवाबन कहा : मुआ-मलात का साफ़ नहीं, बहुत बद अख़्लाक़ और कन्जूस है, इस त़रह़ **तीन ऐ़ब खोले** वोह भी अगर उस में मौजूद हों तो ही ऐ़ब कहलाएंगे और अब येह बताना तीन **ग़ीबतें** हुईं वरना **तोह्मतें** । और अगर सिर्फ़ इस लिये पूछा कि मकान मालिक के उ़यूब मा'लूम हों तो अब येह "ऐ़ब ढूंडना" हुवा जो कि गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।

❁ किसी ने मकान किराए पर दिया तो पूछना : किराए दार कैसा है ? येह सुवाल भी फ़ी नफ़्सिही गुनाह न सही मगर कई गुनाहों का सबब बन सकता है, म-सलन मालिके मकान ने जवाबन कहा : बड़ा ही चालबाज़ है, कभी वक़्त पर किराया नहीं देता, ख़्वाह म ख़्वाह की ठोका ठाकी कर के मेरे मकान का ह़ुल्या बिगाड़ कर रख दिया है । इस त़रह़ **तीन ऐ़ब** खोले वोह भी अगर उस में मौजूद हों तो ही ऐ़ब कहलाएंगे और अब येह बताना तीन **ग़ीबतें** हुईं वरना **तोह्मतें** ।

❁ आप का नया नोकर बराबर काम करता है या नहीं ? येह भी बिला इजाज़ते शर-ई पूछना ऐ़ब ढूंडना है और इस सुवाल के जवाब में पूरा ख़त़रा है कि जिस से पूछा गया वोह नोकर के बारे में कामचोर है, ह़राम ख़ोर है वग़ैरा कह कर गुनहगार हो जाए ।

❁ रात देर तक जागते रहते हो फ़ज्र भी पढ़ते हो या नहीं ?

❁ आप नमाज़ पढ़ते हैं या नहीं ? ❁ आप के वालिद साहिब नमाज़ी हैं या नहीं ?
❁ तुम ने अभी तक नए कपड़े नहीं पहने ! ईद की नमाज़ भी पढ़ी या नहीं ?
❁ र-मज़ान के महीने में किसी से पूछना ! वाह भई ! आज बड़े फ़्रेश (fresh या'नी ताज़ादम) लग रहे हो ! रोज़ा भी रखा है या नहीं ?
❁ इस बार र-मज़ानुल मुबारक में आप ने कितने रोज़े रखे ? ❁ कोई तरावीह़ छोड़ी तो नहीं ?
❁ तुम पूरी ज़कात निकालते हो या नहीं ?
❁ आप की बीवी शरीफ़ तो है ना ? ❁ लड़ती तो नहीं ? (येही सुवालात औ़रतों में ''शोहर'' के बारे में **ऐ़बों की टटोल** वाले हैं) ❁ शादी शुदा बेटी की मां से पूछना : आप की बेटी की सास अच्छी है या नहीं ? ❁ लड़ाकी तो नहीं ? ❁ रोटी देती है या नहीं ? ❁ बेटी को सताती तो नहीं ? ❁ अपने बेटे के कान तो नहीं भरती ? ❁ वोह जो उस की त़लाक़ड़ी नन्द घर में बैठी है वोह मसाइल तो नहीं खड़े करती ? ❁ बेटे की शादी के बा'द उस की मां से पूछना : अब बेटा आप का ख़याल रखता है या नहीं ? ❁ पहले की त़रह़ तन-ख़्वाह ला कर आप के हाथ में देता है या अपनी जोरू के ह़वाले कर देता है ? ❁ बहू ने काला इल्म करा के उसे अपनी त़रफ़ तो नहीं कर लिया ? बहू अच्छी है या नहीं ? ❁ ता'वीज़ गन्डे तो नहीं करती ? ❁ ज़बान दराज़ तो नहीं ? ❁ आप की इ़ज़्ज़त करती है या नहीं ?
❁ उस दिन फ़ुलां के घर से तेज़ गुफ़्त-गू की आवाज़ आ रही थी कौन कौन लड़ रहे थे ?
❁ हां भई ! उस का शोहर बड़ा ज़ालिम है कहीं बिचारी की बे क़ुसूर पिटाई तो नहीं लगाता ?
❁ दूल्हा से पूछना : सुसर साहिब ने जहेज़ देने में बुख़्ल से तो काम नहीं लिया ?
❁ उस दिन ख़ूब बन ठन कर सुसराल पहुंचे थे, सुसर साहिब ने लिफ़्ट भी कराई कि नहीं ?
❁ सह़ीह़ त़रीक़े पर आव भगत की या नहीं ? ❁ शादी शुदा इस्लामी भाई से सुवाल करना : आप के बच्चों की अम्मी पांच वक़्त की नमाज़ी है या नहीं ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

❁ आप के भाइयों से पर्दा करती है या नहीं ? ❁ बे पर्दा तो नहीं घूमती ? ❁ आप का बॉस (BOSS । सेठ) सहीह आदमी है या नहीं ? ❁ कन्जूस तो नहीं ? ❁ बद अख़्लाक़ तो नहीं ? ❁ मुलाज़िमों को गालियां तो नहीं निकालता ? ❁ त़-लबा से बिला ह़ाजत पूछना : आप के फ़ुलां उस्ताज़ साह़िब कैसा पढ़ाते हैं ? ❁ उन का पढ़ाना कुछ समझ में भी आता है या नहीं ? ❁ किसी का मेहमान बनने वाले से पूछना : हां भई ! उन की मेज़बानी का लुत़्फ़ आ रहा है या नहीं ? ❁ उन्हें मेहमान नवाज़ पाया या नहीं ? ❁ दा'वते इस्लामी के फ़ुलां ह़ल्क़े की मुशा-वरत का नया निगरान आप को कैसा लगा ? ❁ इस्लामी भाइयों को झाड़ता तो नहीं ? ❁ निगरान से पूछना : फ़ुलां मुबल्लिग़ आप की इत़ाअ़त करता है या अपनी चलाता है ?

❁ फ़ुलां को तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी से हटा दिया, क्या उस का किरदार कमज़ोर था ? ❁ फ़ुलां मुदर्रिस या नाज़िम को फ़ारिग़ कर दिया, उस ने क्या गड़बड़ की थी ? ❁ किसी मुबल्लिग़ से पूछना : सच सच बताइयेगा कि आप ने आज का बयान अपनी वाह वाह करवाने के लिये किया या रिज़ाए इलाही की ख़ात़िर ?

❁ किसी मह़फ़िले ना'त में ग़ैर ह़ाज़िर रहने वाले ना'त ख़्वां से पूछना : फ़ुलां जगह तुम ना'त ख़्वानी में इस लिये नहीं आए थे ना कि यहां "कुछ" मिलेगा नहीं ?

❁ आप सिर्फ़ म-दनी चेनल ही देखते हैं या दूसरे चेनल्ज़ पर गुनाहों भरे प्रोग्राम भी देख लेते हैं ? ❁ फ़िल्में डिरामे तो नहीं देखते ? ❁ फ़ुलां अफ़्सर ने आप का काम फ़्री (free या'नी मुफ़्त) में ही किया है ना ! पैसे वैसे तो नहीं मांगे ?

❁ फ़ुलां की गाड़ी से टकरा कर आप ज़ख़्मी हुए, क़ुसूर उस का था या आप का ?

❁ फ़ुलां डॉक्टर ने सहीह़ त़रह़ चेक भी किया या मुफ़्त में फ़ीस वुसूल कर ली ?

❁ त़लाक़ देने वाले दोस्त से पूछना : यार ! तुम ने उसे क्यूं त़लाक़ दे दी ? (इस सुवाल पर उ़मूमन ठीक ठाक गुनाहों का दरवाज़ा खुलता है)

❁ (ख़्वाह म ख़्वाह पूछना) वोह दुकानदार कैसा है ? ❁ ठग तो नहीं ? ❁ लूटता तो नहीं ? (या'नी बहुत महंगा माल तो नहीं बेचता ?)

❁ वोह देखने में तो बड़ा शरीफ़ लगता है, आप को मा'लूम होगा, कहीं फड्डेबाज़ तो नहीं ?
❁ आप का नया पड़ोसी कैसा है ? बच कर रहना मुझे तो सहीह आदमी नहीं लगता !

किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और
सुनें न कान भी ऐबों का तज़्किरा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 99)

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शीरीं मक़ाली ने दिल की दुन्या बदल डाली : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ुज़ूल सुवालों और लोगों के ऐबों की टटोल और मा'लूमात की मन्हूस आदात निकालने, कोई किसी के ऐब बयान करने लगे तो उस को हिक्मते अ़-मली से टालने और मुम्किना सूरत में उस की ऐब खोलने की बुरी ख़स्लत मिटाने का जज़्बा पाने, ग़ीबतों, चुग़लियों और बद गुमानियों से बचने और बचाने वग़ैरा की कुढ़न अपनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, **म-दनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ **"फ़िक्रे मदीना"** कर के म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करते रहिये और हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस म-दनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** के हुसूल की ख़ातिर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह **सुन्नतों भरा** सफ़र कीजिये। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक म-दनी बहार सुनाऊं चुनान्चे **बाबुल मदीना** (कराची) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : नेक सोह़बत से दूरी के सबब

मैं गाने बाजे सुनने और फ़िल्में डिरामे देखने जैसे गुनाहों में डूबा हुवा था, मेरी ज़िन्दगी के शबो रोज़ ना फ़रमानियों में गुज़र रहे थे । मेरी बेहतरी का सबब येह बना कि एक रोज़ अपने अ़लाक़े के एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी आ़शिके़ रसूल से मेरी मुलाक़ात हो गई, सलाम व मुसा-फ़ह़ा (या'नी हाथ मिलाने) के बा'द इन्तिहाई अह़सन (या'नी उ़म्दा) अन्दाज़ में उन्हों ने अपना तआ़रुफ़ पेश कर के मुझ से भी मेरा नाम वगै़रा दरयाफ़्त किया और अपने म-दनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** के तह़त **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए नेकियों की रग़बत और गुनाहों से नफ़रत का जे़हन देना शुरूअ़ किया और इस ज़िम्न में मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे बयानात की ब-र-कत से रूनुमा होने वाली ह़ैरत अंगेज़ "म-दनी बहारें" बत़ौरे तरग़ीब सुनाईं । **उन की शीरीं मक़ाली या'नी मीठी मीठी बातों ने मेरे दिल की दुन्या ही बदल डाली** और मैं दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से ज़िन्दगी भर के लिये वाबस्ता हो गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से गुनाहों से नफ़रत, नेकियों से मह़ब्बत और नमाज़ों की पाबन्दी की सआ़दत नसीब हो गई और हुक़ूक़ुल्लाह के साथ साथ हुक़ूक़ुल इ़बाद की अदाएगी का भी जे़हन बन गया ।

है फ़लाह़ो कामरानी नरमी व आसानी में हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में
डूब सकती ही नहीं मौजों की तुग़्यानी में जिस की कश्ती हो मुह़म्मद की निगहबानी में

नरमी की अहम्मिय्यत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाके़ई **"मीठे बोल"** में बड़ी तासीर होती है और इस से पथ्थर दिल भी पिघल कर मोम हो जाते हैं लिहाज़ा **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए हमेशा नरमी पेशे नज़र रखनी चाहिये । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द 3 सफ़ह़ा 572 पर ह़दीसे पाक है : जो नरमी से मह़रूम हुवा ख़ैर (भलाई) से मह़रूम हुवा ।

(صَحِيح مُسلِم ص١٣٩٨حديث٧٥.(٢٥٩٢))

इलाही हुस्ने अख़्लाक़ और नरमी की सआ़दत दे
गुनाहों पर नदामत दे, सदाक़त दे, शराफ़त दे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़िरऔ़न को नेकी की दा'वत के लिये भेजने पर नरमी का हुक्म : अगर म-दनी माहोल वाले या वाली के मिज़ाज में गुस्सा, चिड़चिड़ा पन और बद अख़्लाक़ी हुई तो काम्याबी मुश्किल है, लिहाज़ा अपने अख़्लाक़ दुरुस्त कीजिये और वैसे भी जिसे दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों की धुन हो उस के लिये ठन्डे मिज़ाज का होना ज़रूरी है कि बे जा सख़्ती करने से बारहा काम बनते बनते बिगड़ जाते हैं। नरमी की **अहम्मिय्यत** को इस हि़कायत से समझने की कोशिश कीजिये चुनान्चे मन्क़ूल है कि किसी शख़्स ने मामूनुर्रशीद पर एह़तिसाब किया (या'नी किसी ख़त़ा पर टोका) और उस से सख़्ती के साथ गुफ़्त-गू की तो मामूनुर्रशीद ने कहा : ऐ जवां मर्द ! ह़क़ तआ़ला ने तुझ से बेहतर अफ़राद को जब मुझ से बदतर फ़र्द के पास भेजा तो उन को हुक्म दिया कि उस से नरमी से बात करो, या'नी ह़ज़राते सय्यिदैना **मूसा और हारून** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को (जो तुझ से बेहतर थे) **फ़िरऔ़न** (जो मुझ से बदतर था) के पास जब भेजा तो फ़रमाया :

فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا (پ١٦ طٰه:٤٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो उस से नर्म बात कहना।

(اِتحافُ السّادَة للزّبيدى ج٨ ص١٠٤ مُلَخَّصاً)

शराबी को पोलिस के ह़वाले करना कैसा ? : **सह़ाबिये** रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के कातिब ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू हैसम** رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से अ़र्ज़ की : "मेरे पड़ोसी शराब नोशी करते हैं और मैं पोलीस को बुला कर उन्हें गरिफ़्तार करवाना चाहता हूं।" आप رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : ऐसा मत करो, उन्हें वा'ज़ व नसीह़त कर। अ़र्ज़ की : मैं ने उन्हें मन्अ़ किया है, लेकिन वोह बाज़

नहीं आते, (तो अब) मैं पोलीस के ज़रीए उन को पकड़वाना चाहता हूं। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ऐसा मत कर, बेशक मैं ने मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़–ज़्–मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : जिस ने किसी का ऐ़ब छुपाया गोया उस ने ज़िन्दा दरगोर (या'नी क़ब्र में डाली गई) बच्ची को उस की क़ब्र में ज़िन्दा किया (या'नी उस की जान बचाई)। (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ج۱ص۳۶۷حدیث۵۱۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शराब पीना बेशक बहुत बड़ा और बुरा गुनाह है मगर जो छुप कर ऐसा करता हो बेशक उसे नेकी की दा'वत दे कर तौबा के लिये आमादा किया जाए मगर उस की पर्दापोशी लाज़िमी है।

﴾1﴿ शराब ख़ुद ब ख़ुद सिर्का बन गई ! कैसे ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शराबी के लिये दुन्या व आख़िरत में ख़राबी है उसे तौबा कर लेनी चाहिये हुसूले इ़ब्रत के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक–त–बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 132 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"तौबा की रिवायात व हिकायात"** में वारिद दो ईमान अफ़रोज़ हिकायात ज़रूरतन रद्दो बदल के साथ पेशे ख़िदमत हैं : अमीरुल मुअमिनीन, इमामुल आ़दिलीन, मुतम्मिमुल अर–बई़न, **हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक बार मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا की एक पाकीज़ा गली से गुज़र रहे थे कि एक नौ जवान से आमना सामना हो गया, उस ने कपड़ों के नीचे एक बोतल छुपा रखी थी। हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा : "ऐ नौ जवान ! येह कपड़ों के नीचे क्या उठा रखा है ?" उस बोतल में शराब थी, नौ जवान को उसे शराब कहने की हिम्मत न पड़ी, उस ने दिल ही दिल में दुआ़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने शरमिन्दा और रुस्वा न फ़रमाना, इन के हां मेरी पर्दापोशी फ़रमा ले, मैं **तौबा** करता हूं, आयन्दा कभी शराब नहीं पियूंगा।" इस के बा'द नौ जवान ने अ़र्ज़ की : **"या अमीरल मुअमिनीन !** मैं सिर्का (की बोतल) उठाए हुए हूं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मुझे दिखाओ !" जब उस ने वोह बोतल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने की और हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उसे

देखा, तो वाक़ेई वोह **सिर्का** था । (مکاشفة القلوب ص ٢٧-٢٨) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

﴿2﴾ शराबी नौ जवान विलायत की मन्ज़िल पर : سُبْحٰنَ الله ! तौबा की भी क्या ख़ूब बहार है कि तौबा की ब-र-कत से शराब "सिर्के" में तब्दील हो गई ! एक और **शराबी नौ जवान** की हिकायत समाअ़त फ़रमाइये, जिस ने तैबा कर के बहुत बुलन्द मक़ाम हासिल किया । चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना **उ़त्बतुल ग़ुलाम** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام नौ जवान थे और (तौबा से पहले) फ़िस्क़ो फ़ुजूर और **शराब नोशी** में मश्हूर थे । एक दिन हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की मजलिस में आए । हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस आयते मुबा-रका की तफ़्सीर कर रहे थे :

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ (پ٢٧، الحديد:١٦)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं **अल्लाह** की याद (के लिये) ।

आप ने इस क़दर **मुअस्सिर** बयान फ़रमाया कि लोगों पर गिर्या (या'नी रोना) त़ारी हो गया । एक नौ जवान खड़ा हुवा और कहने लगा : या सय्यिदी ! क्या **अल्लाह** तआ़ला मुझ जैसे फ़ासिक़ व फ़ाजिर की **तौबा** क़बूल करेगा जब मैं तौबा करूं ? शैख़ رَحْمَةُ اللهِ تعالىٰ عَلَيْه ने फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** तआ़ला तेरी **तौबा** क़बूल करेगा । जब **उ़त्बतुल ग़ुलाम** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام ने येह बात सुनी तो उन का चेहरा ज़र्द पड़ गया, सारा बदन कांपने लगा, चिल्लाए और ग़श खा कर गिर पड़े । जब उन्हें होश आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने उन के क़रीब आ कर येह अश्आ़र पढ़े :

اَيَا شَابًّا لِّرَبِّ الْعَرْشِ عَاصِىْ
اَتَدْرِىْ مَاجَزَاءُ ذَوِى الْمَعَاصِىْ

(ऐ रब्बुल अ़र्श की ना फ़रमानी करने वाले नौ जवान ! क्या तू जानता है कि गुनहगारों की सज़ा क्या है ?)

سَعِیْرٌ لِّلْعُصَاةِ لَهَا زَفِیْرٌ
وَغَیْظٌ یَوْمَ یُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِیْ

(ना फ़रमानों के लिये गरजने वाला जहन्नम है जिस में गरज होगी और जिस दिन पेशानियों से पकड़े जाएंगे, उस दिन ग़ज़ब होगा)

فَاِنْ تَصْبِرْ عَلَى النِّیْرَانِ فَاعْصِهٗ
وَاِلَّا کُنْ عَنِ الْعِصْیَانِ قَاصِیْ

(पस अगर तू आग पर सब्र कर सके, तो ना फ़रमानी कर ले, वरना ना फ़रमानी से दूर हो जा)

وَفِیْمَا قَدْ کَسَبْتَ مِنَ الْخَطَایَا
رَهِنْتَ النَّفْسَ فَاجْهَدْفِی الْخَلَاصِیْ

(तू ने जो गुनाह किये हैं उन में तू ने अपने नफ़्स को फंसा दिया, तो अब नजात के लिये कोशिश कर)

उत्बतुल गुलाम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ السَّلَام पर रिक़्क़त तारी थी, जब इफ़ाक़ा हुवा, तो कहने लगे : "ऐ शैख़ ! क्या मुझ जैसे कमीने की **तौबा** भी रब्बे रहीम عَزَّوَجَلَّ क़बूल फ़रमाएगा ?" शैख़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "क्यूं नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने गुनहगार बन्दे की तौबा और मुआफ़ी क़बूल फ़रमाता है ।" फिर हज़रते सय्यिदुना **उत्बतुल गुलाम** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ السَّلَام ने तीन दुआएं कीं :

﴾1﴿ "ऐ मेरे **अल्लाह** ! अगर तूने मेरी तौबा क़बूल कर ली और मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा दिये हैं तो मुझे ऐसी फ़हम (या'नी समझदारी) व याद दाश्त इनायत कर, कि उ़लूमे दीन और क़ुरआने करीम से जो सुनूं हिफ़्ज़ (या'नी याद) हो जाए ﴾2﴿ ऐ **अल्लाह** ! मुझे पुरसोज़ आवाज़ के ए'ज़ाज़ से नवाज़ कि अगर कोई पथ्थर दिल भी मेरी क़िराअत सुने तो उस का दिल नर्म हो जाए ﴾3﴿ ऐ **अल्लाह** ! रिज़्क़े ह़लाल अ़ता फ़रमा और वहां से रोज़ी दे कि जिस का मुझे गुमान भी न हो ।" **अल्लाह** तआ़ला ने उन की तमाम दुआएं क़बूल फ़रमाईं । उन का हाफ़िज़ा ख़ूब मज़्बूत हो गया, जब वोह क़ुरआने करीम की तिलावत करते तो उन की तिलावत सुन कर गुनहगार ताइब हो

जाते, उन के घर में रोज़ाना सालन का एक पियाला और दो रोटियां रखी होतीं और पता नहीं चलता था कि कौन रख जाता है। इसी हालत में उन का इन्तिक़ाल हुवा। (مُکاشَفۃُ القُلوب ص۲۸،۲۹) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सोने की अंगूठी पहनने वाले की इस्लाह : हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين अपने मिलने जुलने वालों की इस्लाह कि लिये कोशां रहा करते थे चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 561 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब, **"मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत"** सफ़्हा 309 पर दिये हुए मज़्मून का खुलासा है : **अ़स्र** की नमाज़ के बा'द बड़ा ही पुरकैफ़ समां था। दूर व नज़्दीक से आए हुए लोग मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में हाज़िर हो कर एक सच्चे आ़शिक़े रसूल की **ज़ियारत व मुलाक़ात** से अपने दिलों को मुनव्वर कर रहे थे। इतने में एक साहिब तिलाई (या'नी सोने की) **अंगूठी** पहने हाज़िर हुए तो हामिये सुन्नत, आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने نَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी बुराई से रोकने) का फ़रीज़ा अन्जाम देते हुए कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : "मर्द को सोना पहनना **हराम है,** सिर्फ़ एक नग की चांदी की अंगूठी जो साढ़े चार माशे (या'नी चार ग्राम 374 मिली ग्राम) से कम की हो उस की इजाज़त है। जो कोई (मर्द) सोने, तांबे या पीतल वग़ैरा किसी भी धात (या'नी मेटल) की अंगूठी पहने या चांदी की साढ़े चार माशे या इस से ज़ियादा वज़्न की एक अंगूठी पहने या कई अंगूठियां पहने अगर्चे सब मिल कर साढ़े चार माशे से कम हों तो उस की नमाज़ **मक्रूहे तह़रीमी** है।" (माख़ूज़ अज़ मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत स. 309) या'नी जिस का **इआ़दा** करना (या'नी दोबारा पढ़ना) वाजिब है। फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जिस चीज़ का बन्दों को हुक्म है उस के बजा लाने में कोई ख़राबी पैदा हो जाए तो उस ख़राबी को दूर करने के लिये वोह अ़मल दोबारा बजा लाना **इआ़दा** कहलाता है। (دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج ۲ ص ۶۲۹)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ'ला हज़रत पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

काश ! हम भी गुनाहों से बचाने वाले बनें : काश ! हम सब गुलामाने आ'ला ह़ज़रत भी, **"नेकी की दा'वत"** देने और लोगों को गुनाहों से बाज़ रखने के मुआ-मले में चाक़ चौबन्द रहा करें, येह याद रखिये कि अगर किसी शख़्स ने ना जाइज़ अंगूठी या धात का छल्ला या गले में किसी भी धात की ज़न्जीर पहनी हो और देखने वाले को ज़न्ने ग़ालिब हो कि मन्अ़ करूंगा तो येह मान लेगा तो उस पर मन्अ़ करना वाजिब है, मन्अ़ नहीं करेगा तो गुनहगार होगा। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"** (जिल्द 3) सफ़हा 424 से पहले दो अहादीसे मुबा-रका मुला-ह़ज़ा हों, इस के बा'द अंगूठी के मु-तअ़ल्लिक़ नेकी की दा'वत के कुछ मज़ीद म-दनी फूल क़बूल फ़रमा लीजिये।

﴾1﴿ सोने की अंगूठी.... अंगारा : **सह़ीह़ मुस्लिम** में **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स के हाथ में **सोने की अंगूठी** देखी तो उस को उतार कर फेंक दिया और येह फ़रमाया कि क्या कोई अपने हाथ में **अंगारा** रखता है ! जब **हुज़ूर** (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) तशरीफ़ ले गए। किसी ने उन से कहा : अपनी अंगूठी उठा लो (और पहनने के बजाए) और किसी काम में लाना। उन्हों ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! मैं उसे कभी न लूंगा जब कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे फेंक दिया।

(صَحِیح مُسلِم ص۱۱۵۷حدیث۲۰۹۰)

﴾2﴿ बुतों और जहन्नमियों का ज़ेवर : **तिरमिज़ी** व अबू दावूद व नसाई ने बुरैदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की, कि एक शख़्स **पीतल की अंगूठी** पहने हुए थे, **हुज़ूर** (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "क्या बात है कि तुम से **बुत** की बू आती है ?" उन्हों ने वोह अंगूठी फेंक दी, फिर **लोहे की अंगूठी** पहन कर आए,

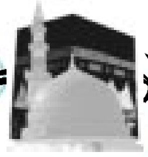
फ़रमाया : क्या बात है कि तुम **जहन्नमियों का ज़ेवर** पहने हुए हो ? उसे भी फेंका और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ! किस चीज़ की अंगूठी बनाऊं ? फ़रमाया : **चांदी** की बनाओ और एक मिस्क़ाल पूरा न करो। (या'नी साढ़े चार माशे से कम की हो)

(سُنَنِ ابوداؤد ج٤ ص ١٢٢ حديث٤٢٢٣)

"अंगूठी के ज़रूरी अह़काम" के उन्नीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से अंगूठी के 19 म-दनी फूल

❁ मर्द को **सोने** की अंगूठी पहनना **ह़राम** है। "सुल्ताने दो जहान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सोने की अंगूठी पहनने से मन्अ़ फ़रमाया" (بُخاری ج ٤ ص٦٧ حديث ٥٨٦٣) ❁ (ना बालिग़) लड़के को सोने चांदी का ज़ेवर पहनाना ह़राम है और जिस ने पहनाया वोह गुनहगार होगा। इसी त़रह़ बच्चों के हाथ पाउं में बिला ज़रूरत मेहंदी लगाना **ना जाइज़** है। औ़रत ख़ुद अपने हाथ पाउं में लगा सकती है, मगर लड़के को लगाएगी तो गुनहगार होगी। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 स. 428, دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج ٩ ص ٥٩٨) बच्चियों के हाथ पाउं में मेहंदी लगाने में ह़रज नहीं। ❁ **लोहे** की अंगूठी जहन्नमियों का ज़ेवर है (ترمذی ج ٣ ص ٣٠٥ حديث١٧٩٢) ❁ मर्द के लिये वोही अंगूठी जाइज़ है जो मर्दों की अंगूठी की त़रह़ हो या'नी सिर्फ़ एक नगीने की हो और अगर उस में (एक से ज़ियादा या) कई नगीने हों तो अगर्चे वोह चांदी ही की हो, मर्द के लिये **ना जाइज़** है (رَدُّالْمُحتار ج٩ ص ٥٩٧) ❁ बिग़ैर नगीने की अंगूठी पहनना **ना जाइज़** है कि येह अंगूठी नहीं छल्ला है ❁ ह़ुरूफ़े मुक़त्तआ़त की अंगूठी पहनना जाइज़ है मगर ह़ुरूफ़े मुक़त्तआ़त वाली अंगूठी बिग़ैर वुज़ू पहनना और छूना या मुसा-फ़ह़े के वक़्त हाथ मिलाने वाले का उस अंगूठी को बे वुज़ू छू जाना जाइज़ नहीं ❁ इसी त़रह़ मर्दों के लिये एक से ज़ियादा (जाइज़ वाली) अंगूठी पहनना या (एक या ज़ियादा) छल्ले पहनना भी **ना जाइज़** है कि येह (छल्ला) अंगूठी नहीं। औ़रतें छल्ले पहन सकती हैं (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 428)






❁ चांदी की एक अंगूठी एक नग (या'नी नगीने) की, कि वज़्न में साढ़े चार माशे (या'नी चार ग्राम 374 मिली ग्राम) से कम हो, पहनना जाइज़ है अगर्चे बे ह़ाजते मोहर, (मगर) इस का तर्क (या'नी जिस को स्टाम्प की ज़रूरत न हो उस के लिये जाइज़ अंगूठी भी न पहनना) अफ़्ज़ल है और (जिन को अंगूठी से स्टाम्प लगानी हो उन के लिये) मोहर की ग़रज़ से (पहनने में) ख़ाली जवाज़ (या'नी सिर्फ़ जाइज़ ही) नहीं बल्कि **सुन्नत** है, हां **तकब्बुर** या ज़नाना पन का सिंगार (या'नी लेडीज़ स्टाइल की टीप टॉप) या और कोई ग़-रज़े मज़्मूम (या'नी क़ाबिले मज़म्मत मक़्सद) निय्यत में हो तो एक अंगूठी (ही) क्या इस निय्यत से (तो) अच्छे कपड़े पहनने भी जाइज़ नहीं (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 141) ❁ ईदैन में अंगूठी पहनना मुस्तह़ब है । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 779, 780) मगर मर्द वोही जाइज़ वाली अंगूठी पहने ❁ अंगूठी उन्हीं के लिये **सुन्नत** है जिन को मोहर करने (या'नी स्टाम्प STAMP लगाने) की ह़ाजत होती है, जैसे सुल्त़ान व क़ाज़ी और उ़-लमा जो फ़त्वे पर (अंगूठी से) मोहर करते (या'नी स्टाम्प लगाते) हैं, उन के इ़लावा दूसरों के लिये जिन को मोहर करने की ह़ाजत न हो **सुन्नत** नहीं अलबत्ता पहनना जाइज़ है । (عالمگیری ج ٥ ص ٣٣٥) फ़ी ज़माना अंगूठी से मोहर करने का उ़र्फ़ (या'नी मा'मूल व रवाज) नहीं रहा, बल्कि इस काम के लिये "स्टाम्प" बनवाई जाती है, लिहाज़ा जिन को मोहर न लगानी हो उन क़ाज़ी वग़ैरा के लिये भी अंगूठी पहनना **सुन्नत** न रहा ❁ मर्द को चाहिये कि अंगूठी का नगीना हथेली की जानिब और औ़रत नगीना हाथ की पुश्त (या'नी हाथ की पीठ) की त़रफ़ रखे (الھدایۃ ج٤ ص ٣٦٧) ❁ चांदी का छल्ला ख़ास लिबासे ज़नान (या'नी औ़रतों का पहनावा) है मर्दों को मक्रूहे (तह़रीमी, ना जाइज़ व गुनाह है) (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 130) ❁ औ़रत सोने चांदी की जितना चाहे अंगूठियां और छल्ले पहन सकती है, इस में वज़्न और नगीने की ता'दाद की कोई क़ैद नहीं ❁ लोहे की अंगूठी पर चांदी का ख़ौल चढ़ा दिया कि लोहा बिल्कुल न दिखाई देता हो, उस अंगूठी के पहनने की (मर्द व औ़रत किसी को भी) मुमा-न-अ़त नहीं । (عالمگیری ج ٥ ص ٣٣٥) ❁ दोनों में से किसी भी एक हाथ में अंगूठी पहन सकते हैं और छुंग्लिया या'नी सब से छोटी उंगली में पहनी जाए (رَدُّالْمُحتار ج ٩ ص ٥٩٦) ❁ मन्नत का या दम किया हुवा धात (METAL) का कड़ा भी मर्द को पहनना ना जाइज़ व गुनाह है इसी त़रह़





❁ मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا या अजमेर शरीफ़ के चांदी या किसी भी धात के छल्ले और स्टील की अंगूठी भी जाइज़ नहीं ❁ बवासीर व दीगर बीमारियों के लिये दम किये हुए चांदी या किसी भी धात के छल्ले भी मर्दों के लिये जाइज़ नहीं ❁ अगर किसी इस्लामी भाई ने धात का कड़ा या धात का छल्ला, ना जाइज़ अंगूठी, या धात की ज़न्जीर (BRACELET-CHAIN) पहनी है तो शरअ़न लाज़िम है कि अभी अभी उतार कर तौबा कर लीजिये और आयन्दा न पहनने का अ़हद कीजिये । नीज़ किसी और इस्लामी भाई को भी पहनने के लिये मत दीजिये ।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 667)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जामिअ़तुल मदीना में दाख़िला ले लिया : **ना जाइज़** अंगूठियों वग़ैरा से बचने बचाने का जज़्बा पाने, गुनाहों की आ़दतों से पीछा छुड़ाने, नेक बनने बनाने और ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत की धूमें मचाने का शौक़ बढ़ाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की हि़फ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, **म-दनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ **''फ़िक्रे मदीना''** कर के म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करते रहिये और हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस म-दनी मक़्सद **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है''** के ह़ुसूल की ख़ात़िर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये । आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक **म-दनी बहार** सुनाऊं चुनान्चे **पिन्डी घेप**

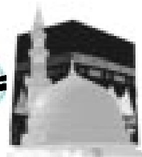
(पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल مَعَاذَاللّٰه मैं नमाज़ों से कोसों दूर गुनाहों के समुन्दर में डूबा हुवा था और बड़े जोश व ख़रोश से घर में T.V. पर फ़िल्में डिरामे देखने, गाने बाजे सुनने में अपना वक़्त बरबाद करता था। राहे तौबा पर मेरे सफ़र का आग़ाज़ कुछ इस त़रह़ हुवा कि **र-मज़ानुल मुबारक** 1429 सि.हि. (ब मुताबिक़ 2008 सि.ई.) के एक दिन केबल पर मुख़्तलिफ़ चेनल देखते हुए मेरी नज़र **म-दनी चेनल** पर पड़ गई। मैं ने देखा तो देखता रह गया ! म-दनी चेनल मुझे बहुत अच्छा लगा और बस मैं ने म-दनी चेनल देखने का मा'मूल बना लिया। म-दनी चेनल की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं आहिस्ता आहिस्ता म-दनी माहोल के क़रीब होने लगा। शव्वालुल मुकर्रम (1429 सि.हि.) के आख़िरी अ़-शरे में दा'वते इस्लामी का **बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ म-दनी चेनल पर बराहे रास्त (LIVE) दिखाया जा रहा था।** इज्तिमाअ़ के आख़िरी दिन ख़ुसूसी निशस्त में म-दनी चेनल पर मुबल्लिग़ का रिक़्क़त अंगेज़ बयान ब उ़न्वान **"ज़ुल्म का अन्जाम"** सुन कर हम सब घर वाले ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ उठे, सब ने घबरा कर **उसी वक़्त अपने गुनाहों से तौबा की** और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सब के सब हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के सिल्सिले में मुरीद हो कर क़ादिरी र-ज़वी बन गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से हमारे ख़ानदान में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और हमारे रिश्तेदार भी इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत से म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सिल्सिले में मुरीद हो गए। ता दमे तह़रीर मैं ने इ़ल्मे दीन के म-दनी फूल समेटने की ख़ातिर दा'वते इस्लामी के तह़त चलने वाले जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी के लिये दाख़िला भी ले लिया है।

ऐ गुनाहों के मरीज़ो ! चाहते हो गर शिफ़ा ऑन करते ही रहो तुम म-दनी चेनल को सदा
इस में इस्यां से ह़िफ़ाज़त का बहुत सामान है اِنْ شَآءَاللّٰه ख़ुल्द में भी दाख़िला आसान है
म-दनी चेनल में नबी की सुन्नतों की धूम है
इस लिये शैत़ां लई़ रन्जूर है मग़मूम है

(बि तसर्रुफ़ वसाइले बख़्शिश, स. 606)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد






हम दुन्या में किस लिये आए हैं ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतों भरा बयान **"ज़ुल्म का अन्जाम"** जिसे सुन कर सारा घराना गुनाहों से ताइब हो गया, इसे आप भी कम अज़ कम एक बार ज़रूर सुन लीजिये । इस की V.C.D. दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** से हदिय्यतन भी ले सकते हैं और दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net पर भी सुन सकते हैं । बयान का रिसाला **"ज़ुल्म का अन्जाम"** भी **मक-त-बतुल मदीना** से ह़ासिल कर के पढ़िये बल्कि ज़ियादा ता'दाद में हदिय्यतन अपने मर्हूम अ़ज़ीज़ों के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम फ़रमाइये । इस म-दनी बहार से मा'लूम हुवा कि जो काम एक मुबल्लिग़ नहीं कर पाता اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह काम **म-दनी चेनल** कर दिखाता है या'नी गुनाहों की दलदल में धंसे हुए मुआ़-शरे के वोह अफ़राद जो न मस्जिद का रुख़ करते हैं न कभी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक होते हैं न ही उ़-लमाए किराम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों और म-दनी हुल्ये वाले बा रीश व बा इमामा आ़शिक़ाने रसूल से मिलने जुलने की त़रफ़ रग़बत रखते हैं, **म-दनी चेनल** ऐसों के घरों में दाखि़ल हो कर इन्हें इन की ज़िन्दगी का ह़क़ीक़ी मक़्सद समझाता, सआ़दत मन्दों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर झुकाता और इश्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जाम पिलाता है । बेशक हम दुन्या में बेकार या'नी सिर्फ़ दुन्या की लज़्ज़तें पाने और यहां की आसाइशों से लुत्फ़ उठाने के लिये नहीं आए, हमें यहां इबादत के लिये भेजा गया है, फिर वक़्ते मक़र्ररा पर हमारे लाख न चाहने के बा वुजूद मौत हमें आ लेगी और अंधेरी क़ब्र में तने तन्हा उतार दिये जाएंगे, न जाने कितने हज़ार साल क़ब्र में गुज़ार कर फिर ह़श्र में उठना और बरोज़े क़ियामत ह़िसाब किताब का सामना होगा । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा कुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़ह़ा 647 पर पारह 18 **सू-रतुल मुअमिनून** आयत नम्बर 115 में **अल्लाह** तआ़ला का इर्शादे मुबारक है :





اَفَحَسِبۡتُمۡ اَنَّمَا خَلَقۡنٰكُمۡ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمۡ اِلَيۡنَا لَا تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۱۱۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं ।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : और (क्या तुम्हें) आख़िरत में जज़ा के लिये उठना नहीं ? बल्कि तुम्हें इ़बादत के लिये पैदा किया कि तुम पर इ़बादत लाज़िम करें और आख़िरत में तुम हमारी त़रफ़ लौट कर आओ तो तुम्हें तुम्हारे आ'माल की जज़ा दें । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम सभी को अपनी ज़िन्दगी के ह़क़ीक़ी मक़्सद के ह़ुसूल के लिये हर दम कोशां रहना चाहिये, गुनाहों से बचना और सवाब के कामों को करते रहना चाहिये । म-दनी चेनल देखते दिखाते रहिये कि अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ म-दनी चेनल के सिल्सिले देखना और दूसरों को देखने की दा'वत देना भी बाइसे रिज़ाए रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ और जन्नत में ले जाने वाला काम है । मौत की हर दम याद रखिये ! मौत दुल्हा को ऐन बारात से और दुल्हन को ह़-ज-लए अ़रूसी में बिस्तरे राह़त व मुसर्रत से यक दम उचक लेती है ।

बोली ख़ल्वत में अजल दूल्हा दुल्हन से वक़्ते ऐश
है तुम्हें भी क़ब्र के गोशे में सोना एक दिन

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जब मस्जिद में ज़ोर से क़दम रख कर चलना भी मन्अ़ है तो..... :

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का **नेकी की दा'वत** देने का जज़्बा मरह़बा ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नेकी की दा'वत का सवाब कमाने का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने देते चुनान्चे ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मलिकुल उ़-लमा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुफ़्ती ज़-फ़रुद्दीन बिहारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى लिखते हैं : एक साह़िब जिन्हें "नवाब साह़िब" कहा जाता

था मस्जिद में नमाज़ पढ़ने आए और खड़े खड़े **बे परवाई** से अपनी छड़ी (या'नी हाथ में रखने की लकड़ी **WALKING STICK**) **मस्जिद के फ़र्श** पर गिरा दी, जिस की आवाज़ हाज़िरीन ने सुनी । आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने (नेकी की दा'वत देते हुए) फ़रमाया : **"नवाब साहिब ! मस्जिद में ज़ोर से क़दम रख कर चलना भी मन्अ़ है, फिर कहां छड़ी को इतनी ज़ोर से डालना !"** नवाब साहिब ने मेरे सामने वा'दा किया कि اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आयन्दा ऐसा नहीं होगा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की आ'ला हज़रत पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالی علیه واٰلہٖ وسلَّم

मस्जिद में मोबाइल फ़ोन की घन्टी बन्द रखिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर मुसल्मान के लिये ज़रूरी है कि वोह **मस्जिद का एह़तिराम** करे, मस्जिद में चलते वक़्त **पाउं की धमक** पैदा न हो इस का ख़याल रखना ज़रूरी है नीज़ छड़ी (WALKING STICK) छतरी, हाथ का पंखा, चप्पल, थेला (BAG), बरतन वग़ैरा कोई चीज़ भी इस त़रह़ न डाले कि आवाज़ पैदा हो । अगर मोबाइल फ़ोन हो तो मस्जिद में उस की घन्टी बन्द रखी जाए, अफ़्सोस ! इस की एह़तियात़ कम की जाती है यहां तक कि मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ में और वोह भी ऐन ख़ानए का'बा के त़वाफ़ में लोगों के मोबाइल फ़ोन की घन्टियां बल्कि مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ म्यूज़ीकल ट्यून्ज़ गूंजती रहती हैं, ह़ालां कि म्यूज़ीकल ट्यून तो मस्जिद के इलावा भी **ना जाइज़** है ।

"بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से मस्जिद के मु-तअ़ल्लिक़ 19 म-दनी फूल

एह़तिरामे मस्जिद के ज़िम्न में **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल** मदीना की मत़्बूआ़ 1574 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **फ़ैज़ाने सुन्नत** (जिल्द अव्वल) सफ़ह़ा 1202 ता 1207 पर बयान कर्दा म-दनी फूल कहीं कहीं रद्दो बदल के साथ पेश किये जा रहे हैं इन्हें क़बूल फ़रमा कर अपने दिल के म-दनी गुलदस्ते में सजा लीजिये :

﴾1﴿ मरवी हुवा कि एक मस्जिद अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर शिकायत करने चली कि लोग मुझ में दुन्या का बातें करते हैं। मलाएका उसे आते हुए मिले और बोले : हम उन (मस्जिद में दुन्या की बातें करने वालों) के हलाक करने को भेजे गए हैं।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 16, स. 312)

﴾2﴿ रिवायत किया गया है कि "जो लोग ग़ीबत करते और जो लोग मस्जिद में दुन्या की बातें करते हैं उन के मुहं से गन्दी बदबू निकलती है जिस से फ़िरिश्ते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर उन की शिकायत करते हैं।" سُبْحٰنَ اللہ ! जब मुबाह़ व जाइज़ बात बिला ज़रूरते शरइय्या करने को मस्जिद में बैठने पर येह आफ़तें हैं तो (मस्जिद में) ह़राम व ना जाइज़ काम करने का क्या ह़ाल होगा ! (ऐज़न)

﴾3﴿ **दर्ज़ी** को इजाज़त नहीं कि मस्जिद में बैठ कर कपड़े सिये। हां अगर बच्चों को रोकने और मस्जिद की ह़िफ़ाज़त के लिये बैठा तो ह़रज नहीं। इसी त़रह़ कातिब को (मस्जिद में) उजरत पर किताबत करने की इजाज़त नहीं। **(عالمگیری ج۱ص۱۱۰)**

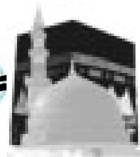
﴾4﴿ **मस्जिद** के अन्दर किसी क़िस्म का कूड़ा हरगिज़ न फेंकें। सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی **"जज़्बुल क़ुलूब"** में नक़्ल करते हैं कि मस्जिद में अगर ख़स (या'नी मा'मूली सा तिन्का या ज़र्रा) भी फेंका जाए तो इस से मस्जिद को इस क़दर तक्लीफ़ पहुंचती है जिस क़दर तक्लीफ़ इन्सान को अपनी आंख में ख़स (या'नी मा'मूली ज़र्रा) पड़ जाने से होती है। **(جذبُ القُلُوب ص۲۲۲)**

﴾5﴿ **मस्जिद** की दीवार, इस के फ़र्श, चटाई या दरी के ऊपर या उस के नीचे थूकना, नाक सिनक्ना, नाक या कान में से मैल निकाल कर लगाना, मस्जिद की दरी या चटाई से धागा या तिन्का वग़ैरा नोचना सब मम्नूअ़ है।

﴾6﴿ **ज़रूरतन** (मस्जिद के अन्दर) अपने रूमाल वग़ैरा से नाक पोंछनें में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं।

﴾7﴿ **मस्जिद** में झाड़ू देने में जो गर्द और कूड़ा वग़ैरा निकले वोह ऐसी जगह मत डालिये जहां बे अ-दबी हो।






《8》 **जूते** उतार कर मस्जिद में साथ ले जाना चाहें तो गर्द वग़ैरा बाहर झाड़ लीजिये। अगर पाउं के तल्वों में गर्द के ज़र्रात लगे हों तो अपने रूमाल वग़ैरा से पोंछ कर मस्जिद में दाख़िल हों। मस्जिद में गर्द का कोई ज़र्रा न गिरने पाए इस का ख़याल रखिये।

《9》 **मस्जिद** के वुज़ूख़ाने पर वुज़ू करने के बा'द पाउं वुज़ूख़ाने ही पर अच्छी त़रह़ ख़ुश्क कर लीजिये, गीले पाउं ले कर चलने से मस्जिद का फ़र्श गन्दा और दरियां मैली और बदनुमा हो जाती हैं।

अब मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के मल्फ़ूज़ाते शरीफ़ा से बा'ज़ आदाबे मस्जिद पेश किये जा रहे हैं :

《10》 **मस्जिद** में दौड़ना या ज़ोर से क़दम रखना, जिस से धमक पैदा हो मन्अ़ है।

《11》 वुज़ू करने के बा'द आ'ज़ाए वुज़ू से एक भी छींट पानी फ़र्शे मस्जिद पर न गिरे। (याद रखिये ! आ'ज़ाए वुज़ू से वुज़ू के पानी के क़त़रे फ़र्शे मस्जिद पर गिराना, ना जाइज़ व गुनाह है)

《12》 **मस्जिद** के एक द-रजे से दूसरे द-रजे के दाख़िले के वक़्त (म-सलन सेह़न में दाख़िल हों तब भी और सेह़न से अन्दरूनी ह़िस्से में जाएं जब भी) सीधा क़दम बढ़ाया जाए ह़त्ता कि अगर सफ़ बिछी हो उस पर भी सीधा क़दम रखें और जब वहां से हटें तब भी सीधा क़दम फ़र्शे मस्जिद पर रखें (या'नी आते जाते हर बिछी हुई सफ़ पर पहले सीधा क़दम रखें) या ख़त़ीब जब मिम्बर पर जाने का इरादा करे पहले सीधा क़दम रखे और जब उतरे तो (भी) सीधा क़दम उतारे।

(13) **मस्जिद** में अगर छींक आए तो कोशिश करें आहिस्ता आवाज़ निकले इसी त़रह़ खांसी। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में ज़ोर की छींक को ना पसन्द फ़रमाते। इसी त़रह़ डकार को ज़ब्त़ करना चाहिये और न हो तो ह़त्तल इम्कान आवाज़ दबाई जाए अगर्चे ग़ैरे मस्जिद में हो। ख़ुसूसन मजलिस में या किसी मुअ़ज़्ज़म (या'नी बुज़ुर्ग) के सामने बे तहज़ीबी है।





हदीस में है : एक शख़्स ने दरबारे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में डकार ली आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हम से अपनी डकार दूर रख कि दुन्या में जो ज़ियादा मुद्दत तक पेट भरते थे वोह क़ियामत के दिन ज़ियादा मुद्दत तक भूके रहेंगे।" (شَرحُ السُّنّة ج ٧ ص ٢٩٤ حديث ٢٩٤٤) और जमाही में आवाज़ कहीं भी नहीं निकालनी चाहिये। अगर्चे मस्जिद से बाहर तन्हा हो क्यूं कि येह शैतान का क़हक़हा है। जमाही जब आए हत्तल इम्कान मुंह बन्द रखें मुंह खोलने से शैतान मुंह में थूक देता है। अगर यूं न रुके तो ऊपर के दांतों से नीचे का होंट दबा लें और इस तरह भी न रुके तो हत्तल इम्कान मुंह कम खोलें और उल्टा हाथ उल्टी तरफ़ से मुंह पर रख लें। चूंकि जमाही शैतान की तरफ़ से है और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस से महफ़ूज़ हैं। लिहाज़ा जमाही आए तो येह तसव्वुर करें कि "अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जमाही नहीं आती।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ौरन रुक जाएगी। (رَدُّالْمُحتار ج ٢ ص ٤٩٨، ٤٩٩)

14 **तमस्ख़ुर** (मस्ख़रा पन) वैसे ही मम्नूअ़ है और मस्जिद में सख़्त ना जाइज़।

15 **मस्जिद** में हंसना मन्अ़ है कि क़ब्र में तारीकी (या'नी अंधेरा) लाता है। मौक़अ़ के लिहाज़ से तबस्सुम में हरज नहीं।

16 **मस्जिद** के फ़र्श पर कोई चीज़ फेंकी न जाए बल्कि आहिस्ता से रख दी जाए। मौसिमे गर्मा में लोग पंखा झलते झलते फेंक देते हैं (मस्जिद में टोपी, चादर वग़ैरा भी न फेंकें इसी तरह चादर या रूमाल से फ़र्श इस तरह न झाड़ें कि आवाज़ पैदा हो) या लकड़ी, छतरी वग़ैरा रखते वक़्त दूर से छोड़ दिया करते हैं। इस की मुमा-न-अ़त है। ग़रज़ मस्जिद का एहतिराम हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है।

17 **मस्जिद** में हदस (या'नी रीह ख़ारिज करना) मन्अ़ है ज़रूरत हो तो (जो ए'तिकाफ़ में नहीं हैं वोह) बाहर चले जाएं। लिहाज़ा **मो'तकिफ़** को चाहिये कि अय्यामे ए'तिकाफ़ में थोड़ा खाए, पेट हल्का रखे कि क़ज़ाए हाजत के वक़्त के सिवा किसी वक़्त इख़्राजे रीह की हाजत न हो। वोह इस के लिये बाहर न जा सकेगा। (अलबत्ता इहातए मस्जिद में मौजूद बैतुल ख़ला में रीह ख़ारिज करने के लिये जा सकता है)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

﴾18﴿ क़िब्ले की त़रफ़ पाउं फैलाना तो हर जगह मन्अ़ है। मस्जिद में किसी त़रफ़ न फैलाए कि येह ख़िलाफ़े आदाबे दरबार है। ह़ज़रते सरी स-क़त़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मस्जिद में तन्हा बैठे थे, पाउं फैला लिया, गोशए मस्जिद से हातिफ़ ने आवाज़ दी : "सरी ! बादशाहों के हुज़ूर में यूं ही बैठते हैं ?" मअ़न (या'नी फ़ौरन) पाउं समेटे और ऐसे समेटे कि वक़्ते इन्तिक़ाल ही फैले। (سبع سنابل ص۱۳۱) (छोटे बच्चों को भी प्यार करते, उठाते, लिटाते वक़्त एह़तियात़ करें कि उन के पाउं क़िब्ले की त़रफ़ न हों और मुताते (पोटी करवाते) वक़्त भी ज़रूरी है कि उस का रुख़ या पीठ क़िब्ले की त़रफ़ न हो)

﴾19﴿ **इस्ति'माल** शुदा जूता मस्जिद में पहन कर जाना गुस्ताख़ी व बे अ-दबी है।

(मुलख़्ख़स अज़ मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 317 ता 323)

इलाही करम बहरे शाहे अ़रब हो
हमें मस्जिदों का मुयस्सर अदब हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

केन्सर का मरीज़ ठीक हो गया : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का बेह़द करम है। बारहा सुनने में आया कि डॉक्टरों ने जिन मरीज़ों को ला इलाज क़रार दे दिया उन का म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र कर के दुआ़एं मांगने के सबब ख़ैर से इलाज हो गया चुनान्चे **माड़ीपूर** (बाबुल मदीना कराची) के किसी इस्लामी भाई ने एक ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़ लिख कर दिया जिस का मज़्मून कुछ यूं था : हॉक्स बे (बाबुल मदीना कराची) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई जो कि "केन्सर" के मरीज़ थे, उन्हों ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की। दौराने सफ़र बेचारे काफ़ी सहमे हुए और मायूस से थे। आ़शिक़ाने रसूल ढारस बंधाते और

उन के लिये दुआएं भी फ़रमाते। एक दिन सुब्ह के वक़्त बैठे बैठे अचानक उन्हें क़ै हुई और उस में एक गोश्त की बोटी ह़ल्क़ से निकल पड़ी ! क़ै के बा'द उन को काफ़ी सुकून मिल गया। म-दनी क़ाफ़िले से वापसी पर जब डॉक्टर से रुजूअ़ किया और दोबारा टेस्ट करवाए तो ह़ैरत बालाए ह़ैरत कि उन का म-रज़े सरत़ान या'नी **केन्सर** ख़त्म हो चुका था। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ

म-रज़े निस्यान हो चाहे सरत़ान हो, कोई सी हो बला, क़ाफ़िले में चलो
दूर बीमारियां और परेशानियां हों ब फ़ज़्ले ख़ुदा क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी क़ाफ़िले के मरीज़ मुसाफ़िरों के बारे में 5 म-दनी फूल : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **अल्लाह** तआ़ला ने म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से केन्सर के मरीज़ को सिह़्ह़त इनायत फ़रमा दी। म-दनी क़ाफ़िले के मरीज़ मुसाफ़िरों के बारे में 5 म-दनी फूल क़बूल फ़रमाइये : (1) **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ही ह़क़ीक़त में शाफ़िउल अमराज़ या'नी बीमारियों से शिफ़ा देने वाला है। सभी जानते हैं कि बा'ज़ अवक़ात बड़े बड़े **माहिर त़बीब** बेहतर से बेहतरीन दवाएं देते हैं मगर **''मरज़ बढ़ता गया जूं जूं दवा की''** के मिस्दाक़ मरज़ में मुसल्सल इज़ाफ़ा होता और बिल आख़िर मरीज़ दम तोड़ देता है। लिहाज़ा म-दनी क़ाफ़िले में किसी मरीज़ को अगर शिफ़ा न मिले तो शैत़ान के वस्वसों में न आएं (2) ऐसे मरीज़ों को म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र न करवाएं नीज़ ए'तिकाफ़ में भी न बिठाएं जिन से दूसरों को घिन आए या ईज़ा पहुंचे। एक बार दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** बाबुल मदीना कराची के अन्दर एक केन्सर के मरीज़ **मो'तकिफ़** हो गए, वहां हज़ारों **मो'तकिफ़ीन** होते हैं, ह़ल्क़े बनाए जाते हैं, एक ह़ल्क़े में वोह भी शामिल कर लिये गए। इस्लामी भाई जब स-ह़री और इफ़्तारी करते वोह उन के साथ बैठ भी जाते तो मुंह या गले का केन्सर होने के सबब बेचारे खा नहीं सकते थे, बेशक वोह ग़रीब बड़े क़ाबिले रह़्म थे मगर हर शख़्स येह बात समझ सकता है कि

उन के ह़ल्क़े वाले **मो'तकिफ़ीन** को उस मरीज़ के सबब किस क़दर कोफ़्त (या'नी तक्लीफ़) का सामना होता होगा ! वाक़ेई अगर कोई खाने से मा'ज़ूर मरीज़ जब बैठे बैठे किसी के निवाले ताड़ेगा तो उस खाने वाले पर जो कुछ गुज़रेगी वोह हर ज़ी शुऊ़र आदमी समझ सकता है (3) बा'ज़ मरीज़ों के ज़ख़्म ख़राब हो चुके होते हैं, उन से मवाद रिस्ता और बदबू उठ रही होती है गो वोह हर त़रह़ से हमदर्दी के लाइक़ और क़ाबिले रह़्म हैं मगर उन का मरज़ दूसरों के लिये तक्लीफ़ देह होता है इस लिये उन्हें ए'तिकाफ़ और म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र नहीं करना चाहिये इस ह़ालत में मस्जिद में दाख़िल होना भी शरअ़न ह़राम है कि बदबू से आ़म मुसल्मानों और फ़िरिश्तों को ईज़ा होती है (4) ऐसा आदमी जिस के मुंह से राल बहती हो, जिस ने URINE BAG या STOOL BAG लगाई हो नीज़ जुज़ामी (या'नी कोढ़ी) वग़ैरा भी म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र और ए'तिकाफ़ न करें। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** (जिल्द 24) सफ़ह़ा 220 पर नक़्ल करते हैं : एक जुज़ामी औ़रत का'बए मुअ़ज़्ज़मा का त़वाफ़ कर रही थी अमीरुल मुअमिनीन फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस से फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! लोगों को ईज़ा न दे, अच्छा हो कि तुम अपने घर में बैठी रहो, फिर वोह घर से न निकलीं (موطا امام مالك ج١ ص ٣٨٨ رقم ٩٨٨) (5) ऐसे नफ़्सियाती मरीज़ या आसेब ज़दा भी म-दनी क़ाफ़िले और मस्जिद से दूर रखे जाएं, जो दौरा पड़ने की सूरत में बेहोश हो जाते या चीख़ते या बे तह़ाशा हाथ पैर उछाल कर मस्जिद की बे अ-दबी और दूसरों के लिये परेशानी का सबब हों। इस त़रह़ के मरीज़ों को ए'तिकाफ़ में बिठाने या म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाने के बजाए उन के नुमायन्दे सफ़र करें या ए'तिकाफ़ कर के उन के लिये दुआ़ करें। येह भी हो सकता है कि ऐसा मरीज़ या उन के घर वाले एक इस्लामी भाई का या ह़स्बे तौफ़ीक़ जितनों का दे सकें इतनों का ख़र्च दे कर तीन दिन, 12 दिन, 30 दिन, 12 माह या 25 माह के म-दनी क़ाफ़िले में सवाब की निय्यत से सफ़र करवाएं। मरीज़ का नुमायन्दा दुआ़एं मांगता रहेगा **अल्लाह** ग़फ़ूरुर्रह़ीम अपनी रह़मत से शिफ़ा दे देगा। मगर याद रहे ! रक़म सिर्फ़ दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से नामज़द क़ाफ़िला ज़िम्मेदार को जम्अ़

करवाई जाए कि वोह अपनी तरकीब से सफ़र करवाएंगे, आप किसी को रक़म दे भी दें तो ज़रूरी नहीं कि वोह सफ़र करे या मुम्किन है अधूरे सफ़र से वापस लौट जाए। याद रहे ! मरीज़ की बे जा दिल आज़ारी न होने पाए, उस की इयादत की जाए, उस से मेल मिलाप भी रखा जाए बल्कि जहां म-दनी क़ाफ़िला बजाए मस्जिद के किसी के मकान वग़ैरा पर ठहरता हो और म-दनी क़ाफ़िले वाले मुत्तफ़िक़ा तौर पर किसी घिन लाने वाले **मरीज़** को अपने साथ रखना चाहें तब भी ह़रज नहीं । लेकिन इस में येह देख लिया जाए कि बाहर से आने वाले आ़म इस्लामी भाइयों के आने से कतराने या ईज़ा पाने का अन्देशा न हो ।

सदक़ा नबी दी आल दा बख़्शे ख़ुदा शिफ़ा
मंगो दुआ़वां मेरे जे बीमार वास्ते

हर बीमारी की दवा है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! केन्सर एक मोहलिक (या'नी हलाक करने वाला) मरज़ है, येह बीमारी डॉक्टरों के यहां ''ला इ़लाज'' समझी जाती है मगर ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं, जैसा कि **मुस्लिम** शरीफ़ में वारिद हुवा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है : ''हर बीमारी की दवा है, जब दवा बीमारी तक पहुंचा दी जाती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से मरीज़ अच्छा हो जाता है।'' (مُسلم ص۱۲۱۰حدیث ۲۲۰٤) यक़ीनन **बुढ़ापे** और **मौत** के सिवा हर बीमारी का इ़लाज है। हां येह बात अलग है कि कई अमराज़ का इ़लाज अति़ब्बा (या'नी डॉक्टर्ज़) अब तक दरयाफ़्त नहीं कर पाए। लिहाज़ा येह कहने के बजाए कि ''फ़ुलां मरज़ का इ़लाज नहीं है'' मुनासिब येह है कि यूं कहा जाए कि हमारे पास इस बीमारी का इ़लाज नहीं या डॉक्टर्ज़ अभी तक इस मरज़ का इ़लाज दरयाफ़्त नहीं कर सके। बहर ह़ाल **रब्बे ज़ुल जलाल** جَلَّ جَلَالُہٗ चाहे तो दवा **शिफ़ा** का ज़रीआ़ बने वरना ऐ़न मुम्किन है कि वोही दवा **मौत** का पैग़ाम साबित हो ! और येह भी देखा जाता है कि **माहिर डॉक्टर** की त़रफ़ से मिलने वाली दुरुस्त दवा के बा वुजूद किसी मरीज़ को मन्फ़ी असर (REACTION) हो जाता और वोह मज़ीद शदीद बीमार या मा'ज़ूर हो जाता या दम तोड़ देता है और फिर बा'ज़ लोगों की जहालत के बाइ़स बेचारे डॉक्टर की शामत आ जाती है। ह़ालां कि येह बात अ़क़्ल से बहुत बई़द (या'नी काफ़ी दूर) है कि

कोई डॉक्टर किसी मरीज़ को नुमायां जिस्मानी नुक़्सान पहुंचाए या मार डाले ! ज़ाहिर है अगर वोह ऐसा करेगा तो उस की अपनी बदनामी होगी और लोग उस के पास इलाज करवाने से कतराएंगे। हां दीनी तअ़स्सुब और इस्लाम दुश्मनी जुदा चीज़ है, इसी अन्देशे के पेशे नज़र मश्हूर उ़-लमा और दीनी पेशवाओं को ग़ैर मुस्लिमों से इलाज न करवाने ही में आ़फ़िय्यत है कि मबादा (या'नी ऐसा न हो) कोई शदीद जानी नुक़्सान पहुंच जाए। आ़म मुसल्मानों को ग़ैर मुस्लिम डॉक्टर से इस त़रह़ के मरज़ में इलाज करवाने की इजाज़त है जिस में ग़ैर मुस्लिम त़बीब की बद ख़्वाही (या'नी बुरा चाहना) चल न सके।

ग़ैर मुस्लिम से इलाज की इब्रत आमोज़ ह़िकायत : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **"फ़तावा र-ज़विय्या"** जिल्द 21 सफ़ह़ा 243 पर लिखते हैं : "इमाम मारज़ी رَحِمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰى अ़लील (या'नी बीमार) हुए (तो) एक यहूदी मुआ़लिज (या'नी त़बीब, आप का इलाज कर रहा) था, अच्छे हो जाते फिर मरज़ औ़द करता (या'नी दोबारा हो जाता), कई बार यूं ही हुवा, आख़िर उसे तन्हाई में बुला कर दरयाफ़्त फ़रमाया, उस ने कहा : अगर आप सच पूछते हैं तो हमारे नज़्दीक इस से ज़ियादा कोई कारे सवाब नहीं कि आप जैसे इमाम को मुसल्मानों के हाथ से खो (या'नी ज़ाएअ़ कर) दूं। इमाम رَحِمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने उसे दफ़्अ़ (या'नी दूर) फ़रमाया, मौला तआ़ला ने शिफ़ा बख़्शी, फिर इमाम رَحِمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने त़िब की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई और इस में तसानीफ़ कीं और त़-लबा को ह़ाज़िक़ अत़िब्बा (या'नी माहिर त़बीब) कर दिया और मुसल्मानों को मुमा-न-अ़त फ़रमा दी कि काफ़िर त़बीब से कभी इलाज न कराएं। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 243) (ग़ैर मुस्लिमों से इलाज करवाने के बारे में मज़ीद तफ़्सीलात फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 238 ता 243 पर मुला-ह़ज़ा कीजिये)

शिफ़ा मिलने न मिलने का राज़ : मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मज़्कूरा ह़दीसे पाक के तह़त **मिरआत शर्हे मिश्कात** (जिल्द 6) सफ़ह़ा 214 पर **साह़िबे मिरक़ात** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बीमार की शिफ़ा नहीं चाहता तो **दवा** और **मरज़** के दरमियान

एक **फ़िरिश्ते** के ज़रीए आड़ कर देता है जिस की वजह से दवा मरज़ पर वाक़ेअ़ (या'नी लागू) नहीं होती, जब शिफ़ा का इरादा होता है तो वोह पर्दा हटा दिया जाता है जिस से दवा मरज़ पर वाक़ेअ़ (या'नी लागू) होती है और **शिफ़ा** हो जाती है।"

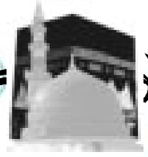
(مرقاۃ المفاتیح ج۸ص۲۸۹تحت الحدیث۴۵۱۰)

केन्सर का रूहानी इलाज : एक इस्लामी भाई ने सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को बताया कि मेरे मामूंजान को **पेट का केन्सर** हो गया, इलाज जारी था, एक बार अस्पताल में उन्हें किसी ने एक परचा दिया जिस में कुछ इस त़रह़ का मज़्मून था कि एक केन्सर के मरीज़ को डॉक्टरों ने ला इलाज क़रार दे दिया। बेचारे सख़्त अज़िय्यत में थे और ज़िन्दगी से मायूस। ऐसे में किसी ने उन्हें कुरआने करीम की मुख़्तलिफ़ सूरतों की चन्द **मुन्तख़ब** आयात पढ़ने के लिये दीं (जो आगे आ रही हैं) उन्हों ने ख़ुलूसे दिल से उन की रोज़ाना तिलावत शुरूअ़ कर दी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से उन की सिह़ह़त बह़ाल होने लगी और चन्द बरसों तक रोज़ाना पढ़ने की ब-र-कत से **केन्सर** की बीमारी जाती रही और वोह बिल्कुल सिह़ह़त मन्द हो गए। मामूंजान ने भी परचे में दी हुई हिदायत के मुत़ाबिक़ तिलावत शुरूअ़ कर दी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ (ता दमे बयान) ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर मामूंजान की सिह़ह़त बह़ाल होने लगी है। उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्रिया अदा किया और मुसल्मानों को नफ़अ़ पहुंचाने की निय्यत से मुफ़्त बांटने के लिये ख़ूब सूरत कार्ड की सूरत में उस परचे की 2000 कॉपियां छपवाईं। अगर मरीज़ इबादत पर कुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत से पक्की अ़क़ीदत के साथ इन आयात की तिलावत करेगा اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मायूस न होगा, (मुद्दत ता हुसूले शिफ़ा)

(अव्वल व आख़िर तीन बार दुरूद शरीफ़ के साथ रोज़ाना एक बार येह आयात पढ़िये)

اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ○






फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب و ترہیب)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

﴿ وَ نُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴾١ ﴿ وَ اِذَا
مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴾٢ ﴿ رَّبِّ اغْفِرْ وَ ارْحَمْ وَ اَنْتَ خَيْرُ
الرّٰحِمِيْنَ ﴾٣ ﴿ اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَ يَكْشِفُ
السُّوْٓءَ ﴾٤ ﴿ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴾٥ ﴿ اَنِّيْ مَسَّنِيَ
الضُّرُّ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴾٦ ﴿ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ﴾٧ ﴿ لَآ اِلٰهَ
اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۗ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۚ﴿٨٧﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ
وَ نَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ۭ وَ كَذٰلِكَ نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴾٨ ﴿ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴾٩ ﴿ حَسْبُنَا اللّٰهُ وَ نِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴾١٠ ﴿ وَ تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ وَ

مدینہ

١ (پ١٥، بنی اسرائیل :٨٢) ٢ (پ١٩، الشعراء :٨٠) ٣ (پ١٨، المؤمنون :١١٨) ٤ (پ٢٠، النمل :٦٢) ٥ (پ١٧،الانبیاء :٦٩)
٦ (پ١٧،الانبیاء :٨٣) ٧ (پ٢٧، القمر :١٠) ٨ (پ١٧، الانبیاء :٨٧-٨٨) ٩ (پ١٢، هود :٥٧) ١٠ (پ٤، ال عمرٰن :١٧٣)





كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۱۱﴾ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ﴿۱۲﴾ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ج

فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿۱۳﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۴﴾

نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿۱۵﴾ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ﴿۱۶﴾

لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

सीधे हाथ से पियें कि सुन्नत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेशक आ़लिमे बा अ़मल की सोह़बत में नफ़्ए़ आख़िरत के मु-तअ़ल्लिक़ म-दनी फूल मिलते रहते हैं, हुज़ूर मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان भी आ़लिमे बा अ़मल थे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की आ़दते करीमा थी कि जब भी किसी को सुन्नत तर्क करता मुला-ह़ज़ा करते तो उस की इस्लाह़ फ़रमाते चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ही के एक शागिर्दे रशीद बयान करते हैं : 1373 सि.हि. का वाक़िआ़ है कि एक दिन दर्से ह़दीस के दौरान जब कि **मुस्लिम शरीफ़** का दर्स शुरूअ़ था। एक साह़िब "दारुल ह़दीस" में त़-लबा के लिये चाय ले आए। दर्स ख़त्म होने पर ह़ज़रते शैख़ुल ह़दीस मौलाना सरदार अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَحَد के इशारे पर चाय तक़्सीम होने लगी। जब इस नाचीज़ की बारी आई तो बन्दे ने दाएं (या'नी सीधे) हाथ में कप पकड़ा, पिरच (या'नी प्लेट) में चाय डाली और बाएं (या'नी उल्टे) हाथ से प्लेट मुंह के क़रीब ले गया। ह़ज़रत मुह़द्दिसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की आवाज़ "दारुल ह़दीस" में गूंजी : मौलाना ! आप बाएं (या'नी उल्टे) हाथ से पी रहे हैं ! बन्दे ने कप नीचे रख कर दाएं

۱۱ (پ۵، النساء: ۸۱) ۱۲ (پ ۲۴، الزمر: ۳۶) ۱۳ (پ۱۷، الحج: ۷۸) ۱۴ (الفاتحه : ۱) ۱۵ (پ۹، الانفال: ۴۰) ۱۶ (پ۱۸، المؤمنون: ۱۴)

(या'नी सीधे) हाथ से प्लेट पकड़ी और पीने लगा। जब दोबारा कप से पिरच (या'नी प्लेट) में चाय डालने लगा तो फिर आवाज़ आई। मौलाना ! आप बाएं (या'नी उल्टे) हाथ से डाल रहे हैं। तो बन्दे ने प्लेट रख दी, दाएं (या'नी सीधे) हाथ में कप ले कर पीने लगा। तो हज़रत मुहद्दिसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم ने तबस्सुम फ़रमाया और ज़बाने मुबारक से येह अल्फ़ाज़ फ़रमाए : "طَیِّب طَیِّب या'नी अब ठीक है।" अब भी तन्हाई में बैठे हुए जब येह वाक़िआ याद आता है और طَیِّب طَیِّب के अल्फ़ाज़ की गूंज कानों में आती है तो आंखों में आंसू आ जाते हैं। (ह़याते मुहद्दिसे आ'ज़म, स. 157)

उल्टे हाथ से खाना, पीना लेना देना शैत़ान का त़रीक़ा है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस **हिकायत** से ह़ज़रत मुहद्दिसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم की सुन्नत से **महब्बत** का बख़ूबी अन्दाज़ा किया जा सकता है। काश ! हम सब भी नेकी की दा'वत का येही अन्दाज़ इख़्तियार करते हुए ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की धूम मचाते रहें। मज़्कूरा (या'नी बयान कर्दा) **हिकायत** में उल्टे हाथ से चाय पीने से मन्अ़ करने का तज़्किरा है और ह़दीसे पाक में उल्टे हाथ से खाने पीने की मुमा-न-अ़त मौजूद। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** (जिल्द अव्वल) सफ़्ह़ा 230 ता 232 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त़्त़र पसीना صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से हर एक **सीधे हाथ** से खाए और **सीधे हाथ** से पिये और **सीधे हाथ** से ले और **सीधे हाथ** से दे क्यूं कि शैत़ान उल्टे हाथ से खाता और उल्टे हाथ से पीता उल्टे हाथ से देता और उल्टे हाथ से लेता है।" (سُنَنِ اِبن ماجہ ج٤ ص١٢ حدیث ٣٢٦٦)

हर काम में उल्टा हाथ क्यूं...? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! आज कल हम दुन्या के चक्कर में इस क़दर घिर चुके हैं कि मह़बूबे बारी صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों की त़रफ़ हमारी तवज्जोह ही नहीं रहती। याद रखिये ! ह़दीसे मुबारक में है कि "बेशक शैत़ान इन्सान (के बदन)

में ख़ून की त़रह़ गर्दिश करता है।" (بُخاری ج ۱ ص۶۶۹حدیث۲۰۳۸) ज़ाहिर है कि येह हमें सुन्नतों की त़रफ़ कहां जाने देगा ? शैत़ान पीछे लगा ही रहता है अगर्चे सीधे हाथ से ही खाना खाते हैं लेकिन फिर भी उल्टे हाथ से कुछ न खुछ दाने फांक ही लिये जाते हैं, खाते हुए चूंकि सीधा हाथ आलूदा होता है लिहाज़ा अक्सर लोग पानी उल्टे ही हाथ से पीते हैं, चाय पीते वक़्त कप सीधे हाथ में और रिकाबी उल्टे हाथ में लिये चाय पीते हैं, किसी को पानी पिलाते वक़्त जग सीधे हाथ में होता है जब कि गिलास उल्टे में और उल्टे हाथ से गिलास दूसरों को देते हैं। "ह़याते मुह़द्दिसे आ'ज़म" सफ़्ह़ा 374 पर है मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद सरदार अह़मद क़ादिरी चिश्ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "लेने और देने में दाएं (या'नी सीधे) हाथ को इस्ति'माल करो, येह आ़दत ऐसी पुख़्ता (या'नी पक्की) हो जाए कि कल क़ियामत में जब नामए आ'माल पेश हो तो इसी आ़दत के मुवाफ़िक़ दायां (या'नी सीधा) हाथ आगे बढ़ जाए तब तो काम बन जाएगा।"

या इलाही ! नामए आ'माल जब खुलने लगें
ऐ़ब पोशे ख़ल्क़ सत्तारे ख़त़ा का साथ हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : **ऐ़ब पोशे ख़ल्क़ :** मख़्लूक़ के ऐ़ब छुपाने वाला। **सत्तारे ख़त़ा :** ग़-लत़ियां छुपाने वाला।

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुनाजात के इस शे'र के पहले मिस्रए़ में "नामए आ'माल जब खुलने लगें" लिखा है, आख़िरी लफ़्ज़ "लगे" न लिखने में भी अ़जीब ह़िक्मत है। "लगे" लिखते तो मा'ना येह होते हैं कि जब मेरा आ'माल नामा खुल रहा हो, और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه चाहते हैं कि काश ! अपना आ'माल नामा खोला ही न जाए बस यूं ही बे ह़िसाब बख़्शिश हो जाए लिहाज़ा "लगे" नहीं बल्कि "लगें" लिखा चुनान्चे इस शे'र के मा'ना येह बनेंगे : उस वक़्त मेरा आ'माल नामा खोला ही न जाए बल्कि प्यारे प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सिपुर्द कर दिया जाए जिन्हें तू ने अपने फ़ज़्लो करम से "सत्तारे ख़त़ा" या'नी "ख़त़ाएं छुपाने वाला" बनाया है अगर तू ने येह करम फ़रमा दिया तो फिर मेरी ना फ़रमानियां जानें और उन की करम नवाज़ियां जानें।

हज़रते सय्यिद दीदार अ़ली शाह साहिब رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते हैं :

वक़्ते नज़्अ़, वक़्ते मर्गों वक़्ते वह्शत, क़ब्र में *हश्र में उस शाफ़ेए रोज़े जज़ा का साथ हो*
या इलाही जब अ़मल तुलने लगें मीज़ान में *शाफ़ेए महशर शहे हर दो सरा का साथ हो*

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیه واٰله وسلّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वालिदैन का फ़रमां बरदार बन गया : **ना फ़रमानियों** पर नदामत के आंसू बहाने गुनाहों की बीमारियों से शिफ़ा पाने, ख़ुद को नेकियों का ह़रीस बनाने, अपने वुजूद को सुन्नतों से सजाने और अपने दिल में शम्ए इ़श्क़े रसूल जलाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ **"फ़िक्रे मदीना"** कर के म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करते रहिये और हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस म-दनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** के ह़ुसूल की ख़ात़िर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये । आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक **म-दनी बहार** सुनाऊं, बस्ती समुन्दरी हीरवाला (ज़िल्अ़ डेरा ग़ाज़ीख़ान, पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई (उ़म्र : तक़रीबन 20 साल) के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं ग़ालिबन 2009 सि.ई. में मिडल का इम्तिह़ान देने के बा'द छुट्टियां गुज़ारने घर आया हुवा था । एक रोज़ सब्ज़ी ख़रीदने निकला तो रास्ते में चन्द सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज पहने आ़शिक़ाने रसूल से आमना सामना हो गया, उन्हों ने पुर तपाक अन्दाज़ में मुलाक़ात फ़रमाई और **इन्फ़िरादी**

कोशिश करते हुए कुछ ऐसे दिलरुबा अन्दाज़ में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की, कि हां कहते ही बनी। जब तै शुदा वक़्त पर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में जाने के लिये मैं इस्लामी भाइयों के पास पहुंचा तो उन्हों ने बड़ी शफ़्क़त फ़रमाई और निहायत अ-दबो एह़तिराम से मुझे गाड़ी में बिठाया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ैज़ाने मदीना जामपूर (ज़िल्अ़ राजन पूर) में होने वाले दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में अपनी ज़िन्दगी की पहली ह़ाज़िरी से मुशर्रफ़ हुवा। वहां की पुरसोज़ ना'त शरीफ़, सुन्नतों भरे बयान, **ज़िक्रुल्लाह** और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने मेरी ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया बिल ख़ुसूस **दुआ़ के दौरान ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइ़स मेरी आंखों से आसूंओं के धारे बह निकले**, मैं ने गुनाहों से तौबा की और इज्तिमाअ़ से वापसी के बा'द से नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी, कुछ ही अ़र्से बा'द दाढ़ी शरीफ़ रख ली और सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया, **मैं जो कि इन्तिहाई बद ज़बान और बे अदब इन्सान था, मां बाप के सामने चीख़ता चिल्लाता और इन की तौहीन किया करता था अब वालिदैन का मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार बन चुका था और उन के हाथ पाउं चूमने लगा था।** मेरी इस मुस्बत तब्दीली पर न सिर्फ़ घर वाले बल्कि सारा ही ख़ानदान ह़ैरान था। **म-दनी माह़ोल** से वाबस्तगी से पहले मुझे एक बीमारी थी जिस के बाइ़स काफ़ी परेशानी रहती थी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इस मरज़ से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा दी, मेरा ह़ुस्ने ज़न है कि येह सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत की ब-र-कत थी। येह **म-दनी बहार** देख कर मेरी वालिदा ने मुझे हुक्म दिया कि तुम्हारे छोटे भाई को **गुर्दों की तक्लीफ़** है, तुम दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाले **''63 रोज़ा म-दनी तरबिय्यती कोर्स''** में शामिल हो कर अपने भाई की शिफ़ा के लिये दुआ़ करो। मैं हुक्म की ता'मील में म-दनी तरबिय्यती कोर्स के लिये तक़रीबन 2010 सि.ई. में फ़ैज़ाने मदीना साहीवाल जा पहुंचा और वहां न सिर्फ़ भाई के लिये ख़ुद दुआ़एं मांगता बल्कि दीगर आ़शिक़ाने रसूल को भी दुआ़ के लिये कहा करता। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अभी मुझे म-दनी तरबिय्यती कोर्स में दो ही हफ़्ते हुए थे कि **मेरे भाई की त़बीअ़त बह़ाल होने लगी ह़ालां कि इस के लिये डॉक्टर ऑपरेशन का कह चुके थे। जब दोबारा चेकअप हुवा तो डॉक्टर्ज़**

हैरान रह गए और कहने लगे कि अब ऑपरेशन की ज़रूरत नहीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरा भाई अब रू ब सिह्हत हो चुका है।

हैं इस्लामी भाई सभी भाई भाई   है बेहद महब्बत भरा म-दनी माहोल
ऐ बीमारे इस्यां तू आ जा यहां पर   गुनाहों की देगा दवा म-दनी माहोल
शिफ़ाएं मिलेंगी, बलाएं टलेंगी
यक़ीनन है ब-र-कत भरा म-दनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 602)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मज़्कूरा म-दनी बहार के ज़िम्न में नेकी की दा'वत के म-दनी फूल :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की ब-र-कत से वालिदैन का ना फ़रमान व गुस्ताख़ राहे रास्त पर आ गया। यक़ीनन बड़ा बख़्त बेदार है वोह इन्सान जिस के मां बाप उस से राज़ी रहें ख़ुदा की क़सम ! वोह शख़्स निहायत बद नसीब है जो अपने वालिदैन को बिला इजाज़ते शर-ई नाराज़ रखे और चूंकि आज हर तरफ़ मां बाप की ना फ़रमानियों और दिल आज़ारियों का तूफ़ान है लिहाज़ा पेश कर्दा **म-दनी बहार** के ज़िम्न में मां बाप की ख़ुशनूदी के स-मरात और नाराज़ी की वईदात के **मु-तअ़ल्लिक़** नेकी की दा'वत के कुछ **म-दनी फूल** पेश किये जाते हैं। सब से पहले अपने बेटे से **महब्बत** करने वाली मां की दुआ़ की ईमान अफ़रोज़ **हिकायत** सुनिये और झूमिये :

मां की दुआ़ से बेटे को कलिमा नसीब हो गया : एक डॉक्टर का बयान है : एक शख़्स को दिल का शदीद दौरा पड़ा, बचने की उम्मीद न थी, उस की मां बिछोने के पास बैठी दुआ़ कर रही थी जो हाज़िरीन ने सुनी : **"या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपने बेटे से राज़ी हूं तू भी राज़ी हो जा।" डॉक्टर्ज़ इलाज में मश्ग़ूल थे

और मोह्-त-रमा दुआ में लगी हुई थीं। जब आख़िरी वक़्त आया, मरीज़ ने **बुलन्द आवाज़ से कलिमा** पढ़ा, होंटों पर तबस्सुम फैल गया और रूह क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई।

मरते वक़्त कलिमा पढ़ने वाला जन्नती है : سُبْحٰنَ اللہ ! जिस मुसल्मान की मां आख़िरी वक़्त उस से ख़ुश हो उस की भी क्या शान है ! और जिस को आख़िरी वक़्त कलिमा नसीब हो जाए ख़ुदा की क़सम ! वोह बड़ा ही ख़ुश नसीब है। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **मह़बूब**, दानाए **ग़ुयूब**, **मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "مَنْ كَانَ آخِرُ كَلَامِهٖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ या'नी जिस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ हो, वोह जन्नत में दाख़िल होगा।"

(ابو داوٗد ج٣ص ٢٥٥ حديث ٣١١٦)

कलिमा पढ़ने वाले की ह़िकायत : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : म-लकुल मौत (عَلَيْهِ السَّلَام) एक मरने वाले शख़्स के पास आए तो इस के दिल को देखा लेकिन कोई अ़-मले ख़ैर (या'नी अच्छा अ़मल) न पाया, फिर उस के जबड़ों को खोला तो ज़बान के कनारे को तालू से मिला हुवा देखा और वोह لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कह रहा था तो इस कलिमे की वजह से उस की मग़्फ़िरत हो गई।

(المحتضرين مع موسوعة الامام ابن ابی الدنیاج٥ص ٣٠٤ رقم٩)

जब दमे वापसीं हो या अल्लाह — लब पे हो لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه
हैं मुह़म्मद मेरे रसूले ख़ुदा — मरह़बा मरह़बा रसूलुल्लाह

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मक़्बूल ह़ज का सवाब : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन मां बाप का द-रजा बहुत बुलन्दो बाला है, उन की दुआएं औलाद के ह़क़ में मक़्बूल होती हैं, बस उन्हें ख़ुश रखिये, ख़ूब ख़िदमत कर के उन की दुआएं लीजिये। उन की ख़ुशी ईमान की सलामती और उन की नाराज़ी ईमान की बरबादी का बाइस हो सकती है।

मां बाप का फ़रमां बरदार सदा फला फूला और शादो आबाद रहता है, दुन्या में जहां कहीं रहे अपने मां बाप की दुआओं का फ़ैज़ उठाता है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ 32 सफ़हात पर मब्नी रिसाले, **"समुन्दरी गुम्बद"** सफ़हा 6 ता 7 पर है : ख़ूब हमदर्दी और प्यार व **महब्बत** से **मां बाप** का दीदार कीजिये, **मां बाप** की त़रफ़ ब नज़रे रहमत देखने के भी क्या कहने! **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहमत निशान है : जब औलाद अपने मां बाप की त़रफ़ **रहमत** की नज़र करे तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये हर नज़र के बदले **हज्जे मबरूर** (या'नी मक़्बूल हज) का सवाब लिखता है। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : अगर्चे दिन में **सो मरतबा** नज़र करे! फ़रमाया : نَعَمْ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَاَطْيَبُ या'नी "हां, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है और अत़्यब (या'नी सब से ज़ियादा पाक) है।" (شُعَبُ الْاِيمان ج٦ ص١٨٦ حديث ٧٨٥٦) यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर शै पर क़ादिर है, वोह जिस क़दर चाहे दे सकता है, हरगिज़ आ़जिज़ नहीं लिहाज़ा अगर कोई अपने मां बाप की त़रफ़ रोज़ाना 100 तो क्या एक हज़ार बार भी **रहमत** की नज़र करे तो वोह उसे एक हज़ार **मक़्बूल हज** का सवाब इनायत फ़रमाएगा।

मश्ग़ूल जो रहता है, मां बाप की ख़िदमत में — अल्लाह की रहमत से, जाता है वोह जन्नत में
मां बाप को ईज़ा जो देता है शरारत से — जाता है वोह दोज़ख़ में आ'माल की शामत से

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मां को तन्हा छोड़ देने वाले की इब्रत नाक मौत : एक शख़्स की मां सख़्त बीमार, मौत के बिछोने पर पड़ी थी, इस के बा वुजूद ना लाइक़ बेटे ने उस के साथ बद तमीज़ी की और बेचारी को तन्हा छोड़ दिया और वोह ग़रीब इसी हालते तन्हाई में इन्तिक़ाल कर गई। वक़्त गुज़रता गया। 30 साल बा'द उस "ना लाइक़ बेटे" को दस्त लग गए और निहायत कमज़ोर हो गया। हाथों का किया यूं आड़े आया कि रो रो कर कहता सुना गया : "मेरे तीन बेटे हैं मगर मेरी बिल्कुल परवाह नहीं करते, मैं कई रोज़ से बीमार पड़ा हूं मगर एक बार भी मिलने नहीं आए।" आख़िर कार

वोह अपनी मां की त़रह़ रात को अकेला मर गया । सुब्ह़ मह़ल्ले वालों ने देखा कि अकेली लाश पर च्यूंटियां इकठ्ठी हो चुकी थीं और उस को काट रही थीं ।

दिल दुखाना छोड़ दें मां बाप का
वरना है इस में ख़सारा आप का

(वसाइले बख़्शिश, स. 668)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह ह़क़ीक़त है कि मां बाप को सताने वाला दुन्या में भी सज़ा पाता है । **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : सब गुनाहों की सज़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ चाहे तो क़ियामत के लिये उठा रखता है मगर मां बाप की ना फ़रमानी की सज़ा जीते जी पहुंचाता है । **(اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج٥ ص٢١٦ حديث ٧٣٤٥)**

वाक़ेई वोह शख़्स बड़ा ख़ुश नसीब है जो मां बाप को ख़ुश रखता है, जो बद नसीब मां बाप को नाराज़ करता है उस के लिये बरबादी है । **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला पारह 15 **सूरए बनी इस्राईल** आयत नम्बर 23 ता 25 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿۲۳﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿۲۴﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो, अगर तेरे सामने इन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो इन से "हूं" (उफ़ तक) न कहना और इन्हें न झिड़कना और इन से ता'ज़ीम की बात कहना और इन के लिये आ़जिज़ी का बाज़ू बिछा नर्म दिली से और अ़र्ज़ कर कि ऐ मेरे रब ! तू इन दोनों पर रह़्म कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन (छोटी उ़म्र) में पाला । तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है ।

बचपन में मां भी तो औलाद की गन्दगी बरदाश्त करती है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **मुन-द-र-जए** बाला आयते करीमा में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया है और ख़ुसूसन उन के बुढ़ापे में ज़ियादा ख़िदमत की ताकीद फ़रमाई है। यक़ीनन मां बाप का बुढ़ापा इन्सान को इम्तिहान में डाल देता है, बसा अवक़ात सख़्त बुढ़ापे में अक्सर बिस्तर ही पर बोल व बराज़ (या'नी गन्दगी) की तरकीब होती है जिस की वजह से उ़मूमन औलाद बेज़ार हो जाती है। मगर याद रखिये ! ऐसे ह़ालात में भी मां बाप की ख़िदमत लाज़िमी है। बचपन में मां भी तो बच्चे की गन्दगी बरदाश्त करती है। बुढ़ापे और बीमारियों के बाइ़स मां बाप के अन्दर ख़्वाह कितना ही चिड़चिड़ा पन आ जाए, सठिया जाएं, बिला वजह लड़ें, चाहे कितना ही झगड़ें और परेशान करें, **सब्र, सब्र** और **सब्र** ही करना और उन की ता'ज़ीम बजा लाना ज़रूरी है। उन से बद तमीज़ी करना, उन को झाड़ना वग़ैरा दर कनार उन के आगे "उफ़" तक नहीं करना है, वरना बाज़ी हाथ से निकल सकती और दोनों जहानों की तबाही मुक़द्दर बन सकती है कि वालिदैन का दिल दुखाने वाला इस दुन्या में भी ज़लीलो ख़्वार होता है और आख़िरत में भी अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है।

दिल दुखाना छोड़ दें मां बाप का
वरना है इस में ख़सारा आप का

(वसाइले बख़्शिश, स. 668)

नज़्अ़ में ख़ौफ़नाक चीख़ें मारने वाला नौ जवान : एक नौ जवान के गुर्दे फेल हो गए, अस्पताल में दाख़िल कर दिया गया, ह़ालत निहायत ख़राब थी, नज़्अ़ (या'नी रूह़ निकलने का अ़मल) त़ारी हुवा, उस के मुंह और नाक से दर्दनाक आवाज़ें निकलती थीं, चेहरा नीला हो जाता और आंखें बाहर उबल पड़ती थीं, इस कैफ़िय्यत में दो दिन गुज़र गए। इन दर्दनाक आवाज़ों ने ख़ौफ़नाक चीख़ों का रूप धार लिया था, वॉर्ड (ward) के मरीज़ भागने शुरूअ़ हो गए, लिहाज़ा उसे वॉर्ड से दूर एक कमरे में मुन्तक़िल कर दिया गया, उस के बाप ने डॉक्टर से कहा :

इसे ज़ह्र का टीका लगा दो ताकि येह मर जाए, हम से इस की हालत देखी नहीं जाती। जब पूछा गया कि आख़िर इस की येह अजीबो ग़रीब हालत क्यूं है ? बाप बेज़ारी के साथ बोल उठा : येह शख़्स अपनी बीवी को ख़ुश करने के लिये मां को मारता था और मैं इस को रोका करता था, ऐसा लगता है अब इस की सज़ा मिल रही है ! कुल तीन दिन नज़्अ़ की शदीद तक्लीफ़ों में मुब्तला रहने के बा'द उस ने दम तोड़ा।

मां को जवाब न देने वाला गूंगा हो गया : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम **अल्लाहु तव्वाब** عَزَّوَجَلَّ की जनाब में तौबा करते और उस से आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं। आह ! मां बाप की दिल आज़ारी किस क़दर रुस्वाई और दर्दनाक अ़ज़ाब का बाइस है। मां बाप का बहुत ख़याल रखना चाहिये कि जैसे ही पुकारें सारे काम छोड़ कर जी अम्मी, जी अब्बू कहते हुए उन की ख़िदमत में हाज़िर हो जाना चाहिये, मन्क़ूल है : एक शख़्स को उस की मां ने आवाज़ दी लेकिन उस ने जवाब न दिया इस पर उस की मां ने उसे बद दुआ़ दी तो वोह **गूंगा** हो गया।

(بِرُّ الوالدین لِلطَّرطُوشی ص۷۹)

मां बाप के ना फ़रमान की इबादतें ना मक़्बूल : अपने बाप के ना फ़रमान के **मु-तअ़ल्लिक़** किये गए एक सुवाल के जवाब में मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बाप की ना फ़रमानी **अल्लाहु** जब्बार व क़हहार की ना फ़रमानी है और बाप की नाराज़ी **अल्लाहु** जब्बार व क़हहार की नाराज़ी है, आदमी मां बाप को राज़ी करे तो वोह उस के **जन्नत** हैं और नाराज़ करे तो वोही उस के **दोज़ख़** हैं। जब तक बाप को राज़ी न करेगा, उस का कोई फ़र्ज़, कोई नफ़्ल, कोई नेक अ़मल अस्लन (या'नी हरगिज़) क़बूल नहीं, अ़ज़ाबे आख़िरत के इलावा दुन्या में ही जीते जी सख़्त बला (या'नी शदीद आफ़त) नाज़िल होगी, मरते वक़्त مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ **कलिमा** नसीब न होने का ख़ौफ़ है।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 384, 385)

गधा नुमा इन्सान का मुर्दा : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़व्वाम बिन हौ़शब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّب (जो कि तब्ए़ ताबेई बुज़ुर्ग गुज़रे हैं और उन्हों ने 148 सि.हि. में वफ़ात पाई) फ़रमाते हैं : मैं एक मर्तबा किसी मह़ल्ले से गुज़रा, उस के कनारे पर क़ब्रिस्तान था, बा'दे अ़स्र एक **क़ब्र** शक़ हुई (या'नी फटी) और उस में से एक ऐसा आदमी निकला जिस का **सर गधे जैसा और बाक़ी जिस्म इन्सान** का था, वोह तीन बार गधे की त़रह़ रेंका (या'नी चीख़ा), फिर **क़ब्र** में चला गया और **क़ब्र** बन्द हो गई। एक **बड़ी बी** बैठी (सूत) कात रही थीं, एक ख़ातून ने मुझ से कहा : बड़ी बी को देख रहे हो ? मैं ने कहा : इस का क्या मुआ़-मला है ? कहा : येह **क़ब्र** वाले की मां है, वोह **शराबी** था, जब शाम को घर आता, मां नसीह़त करती कि ऐ बेटे ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर, आख़िर कब तक इस नापाक को पियेगा ! येह जवाब देता : तू **गधे** की त़रह़ रेंकती है। इस शख़्स का अ़स्र के बा'द इन्तिक़ाल हुवा, जब से फ़ौत हुवा है हर रोज़ बा'दे अ़स्र इस की **क़ब्र** शक़ होती है और यूं तीन बार **गधे** की त़रह़ चिल्ला कर फिर **क़ब्र** में समा जाता है और **क़ब्र** बन्द हो जाती है। (اَلتَّرغِیب وَالتَّرہِیب للمنذری ج۳ ص۲۶۷ حدیث۳۸۳۳)

दिल न तू मां बाप का हरगिज़ दुखा
हो कहीं न ख़ातिमा तेरा बुरा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मां के गुस्ताख़ को ज़मीन ज़िन्दा निगल गई ! : **किसी** गाउं मे एक किसान के घर के अन्दर सास बहू के दरमियान हमेशा ठनी रहती थी, कई बार किसान की बीवी रूठ कर मयके चली गई और वोह मिन्नत समाजत कर के उस को ले आया। आख़िरी बार बीवी ने किसान से कह दिया कि अब इस घर के अन्दर मैं रहूंगी

या तुम्हारी मां । किसान अपनी बीवी पर लट्टू था, इस नादान ने दिल ही दिल में तै कर लिया कि रोज़ रोज़ के झगड़े का हल येही है कि मां को रास्ते से हटा दिया जाए। चुनान्चे एक बार वोह किसी हीले से मां को अपने गन्ने के खेत में ले गया, गन्ने काटते काटते मौक़अ़ पा कर मां का रुख़ कर के जूं ही उस पर कुल्हाड़ी का वार करना चाहा एक दम ज़मीन ने उस किसान के पाउं पकड़ लिये, कुल्हाड़ी हाथ से छूट कर दूर जा पड़ी और मां घबरा कर चिल्लाती हुई गाउं की तरफ़ भाग निकली । ज़मीन ने आहिस्ता आहिस्ता किसान को निगलना शुरूअ़ कर दिया, वोह घबरा कर चीख़ता रहा और अपनी मां को पुकार पुकार कर मुआफ़ी मांगता रहा लेकिन मां बहुत दूर जा चुकी थी, कुछ देर बा'द जब लोग वहां पहुंचे तो वोह छाती तक ज़मीन में धंस चुका था, लोग उसे निकलने की नाकाम कोशिशें करते रहे मगर ज़मीन उसे निगलती ही रही यहां तक कि वोह ज़मीन के अन्दर समा गया ।

जहां में हैं इब्रत के हर सू नुमूने मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने जो आबाद थे वोह महल अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

तौबा ! तौबा !! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तौबा ! तौबा !! लरज़ उठो !!! और अगर मां बाप को कभी नाराज़ किया है तो जल्दी जल्दी उन के क़दमों में गिर कर रो रो कर उन से मुआफ़ी की भीक मांग लो, येह तो दुन्या की सज़ा थी जो उस मां के ना फ़रमान नादान किसान की देखी गई अगर वोह किसान मुसल्मान था तो हम ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ से उस के लिये रह़्मो करम की दर-ख़्वास्त करते हैं । दुन्या की सज़ा जब ना क़ाबिले बरदाश्त हुवा करती है तो आख़िरत की सज़ा कैसे सही जा सकेगी ! ख़ुदा की क़सम ! मां बाप के ना फ़रमानों को मरने के बा'द मिलने वाली सज़ा दुन्यवी सज़ा के मुक़ाबले में करोड़हा करोड़ गुना ज़ियादा ख़ौफ़नाक होगी । चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ 32 सफ़्हात पर मब्नी रिसाले,

"समुन्दरी गुम्बद" सफ़्हा 20 ता 21 से तीन रिवायात मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

आग की शाख़ों से लटकने वाले : **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन **ह़जर मक्की शाफ़ेई** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं : सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **मे'राज** की रात मैं ने कुछ लोग देखे जो आग की शाख़ों से लटके हुए थे तो मैं ने पूछा : **ऐ जिब्रईल !** येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की : اَلَّذِیْنَ یَشْتُمُوْنَ اٰبَاءَھُمْ وَاُمَّھَاتِھِمْ فِی الدُّنْیَا या'नी **येह वोह लोग हैं जो दुन्या में अपने बापों और मांओं को बुरा भला कहते थे ।**

(اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْکَبائِر ج۲ ص۱۳۹)

बारिश के क़त़रों जितने अंगारे : मन्क़ूल है : जिस ने अपने वालिदैन को गाली दी उस की **क़ब्र** में आग के इतने **अंगारे** उतरते हैं जितने (बारिश के) क़त़रे आस्मान से ज़मीन पर आते हैं । (اَیضاً ص۱٤۰)

क़ब्र पस्लियां तोड़ देती है : मन्क़ूल है : जब मां बाप के ना फ़रमान को दफ़्न किया जाता है तो **क़ब्र** उसे दबाती है यहां तक कि उस की पस्लियां (टूट फूट कर) एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं । (اَیضاً)

पाउं पकड़ कर मां बाप से मुआ़फ़ी मांग लीजिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आप के मां बाप या इन में से कोई एक नाराज़ है तो फ़ौरन से पेशतर हाथ जोड़ कर, पाउं पकड़ कर और रो रो कर मुआ़फ़ी तलाफ़ी की तरकीब फ़रमा लीजिये, उन के जाइज़ मुत़ा-लबात पूरे कर दीजिये और **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला की जनाब में भी गिड़गिड़ा कर तौबा कर लीजिये कि इसी में दोनों जहानों की भलाई है । वालिदैन के हुक़ूक़ की मज़ीद मा'लूमात के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की जारी कर्दा दो अ़दद V.C.Ds (1) "मां बाप के हुक़ूक़" और

(2) ए'तिकाफ़े **र-मज़ानुल मुबारक** (1430 सि.हि.) में होने वाले "म-दनी मुज़ाकरे" की वी.सी.डी बनाम **"वालिदैन के ना फ़रमानों का अन्जाम"** मुला-हज़ा कीजिये।

मां की बद दुआ से टांग कट गई : वाक़ेई मां बाप के हुक़ूक़ से ओहदा बर आ होना निहायत दुश्वार है, इस के लिये उ़म्र भर कोशां रहना होगा और **मां बाप** की नाराज़ी से हमेशा बचना होगा। जो लोग **मां बाप** को सताते हैं उन का दुन्या में भी भयानक अन्जाम होता है चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा कमालुद्दीन दमैरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं : **"ज़मख़्शरी"** (जो कि मो'तज़िली फ़िर्क़े का एक मश्हूर आ़लिम गुज़रा है उस) की एक **टांग कटी हुई** थी, लोगों के पूछने पर उस ने इन्किशाफ़ किया कि येह मेरी **मां की बद दुआ** का नतीजा है, क़िस्सा यूं हुवा कि मैं ने बचपन में एक **चिड़िया** पकड़ी और उस की टांग में डोरी बांध दी, इत्तिफ़ाक़ से वोह मेरे हाथ से छूट कर उड़ते उड़ते एक दीवार की दराड़ में घुस गई, मगर डोरी बाहर ही लटक रही थी, मैं ने डोरी पकड़ कर बे दर्दी से खींची तो **चिड़िया** फड़कती हुई बाहर निकल पड़ी, मगर बेचारी की **टांग** डोरी से कट चुकी थी, **मेरी मां** ने येह दर्दनाक मन्ज़र देखा तो सदमे से तड़प उठी और उस के मुंह से मेरे लिये येह **बद दुआ** निकल गई : "जिस त़रह़ तू ने इस बे ज़बान की टांग काट डाली, **अल्लाह** तआ़ला तेरी टांग काटे।" बात आई गई हो गई, कुछ अ़र्से के बा'द तह़सीले इ़ल्म के लिये मैं ने "बुख़ारा" का सफ़र इख़्तियार किया, इस्नाए राह (या'नी रास्ते में) सुवारी से गिर पड़ा, **टांग** पर शदीद चोट लगी, "बुख़ारा" पहुंच कर काफ़ी इलाज किया मगर तक्लीफ़ न गई बिल आख़िर टांग **कटवानी पड़ी**। (और यूं मां की बद दुआ रंग लाई)

(حیاۃ الحیوان الکبرٰی ج۲ ص ۱۶۳)

मां बाप की मह़ब्बत के औलाद पर त़िब्बी अ-सरात : **वालिदैन** की **अहम्मिय्यत** को कौन नहीं जानता, इस्लाम ने हमें मां बाप को ख़ुश रखने और उन की नाराज़ी से बाज़ रहने का हुक्म दिया है यक़ीनन इस में हमारे लिये दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां हैं। ग़ैर मुस्लिम साइन्स दानों ने भी मां बाप के तअ़ल्लुक़ से

अ़जीबो ग़रीब तह़क़ीक़ात की हैं : चुनान्चे डॉक्टर निकल्सन डेवीज़ (DR. NICHOLSON DEVIS) और प्रोफ़ेसर मिस्लन केम (PROF. MISLON CAM) की रपोर्ट का ख़ुलासा है : मां बाप को जूं जूं बुढ़ापा आता है उन को औलाद से **मह़ब्बत** बढ़ती चली जाती है और इस **मह़ब्बत** के सबब वालिदैन की आंखों के अन्दर रोशनी की एक मख़्सूस शक्ल पैदा होती है जो कि औलाद के ह़क़ में सिह़्ह़त का सबब बनती है ! मां बाप चाहे हज़ारों मील दूर हों (मगर औलाद से ख़ुश हों तो) उन की हमदर्दियों और भली तमन्नाओं के ज़रीए ग़ैर मर-ई (या'नी नज़र न आने वाली) शुआ़ओं का सिल्सिला औलाद तक पहुंचता रहता है, वालिदैन बीमार हों तब भी उन की ग़ैर मर-ई शुआ़एं कमज़ोर नहीं होतीं उन की क़ुव्वत बराबर बढ़ती रहती है । मां बाप अगर क़रीब हों तो उन की **मह़ब्बतों** भरी ग़ैर मर-ई शुआ़एं जिस्म और आ'साब (या'नी वोह बारीक सफ़ेद रेशे जो दिमाग़ और ह़राम मग़्ज़ से निकल कर तमाम बदन में फैले हुए हैं उन) को तक़्विय्यत पहुंचाते और उन को लचक दार या'नी नर्म व मुलायम रखते हैं । वालिदैन का छूना नफ़्सियाती बीमारियों और ज़ेह्नी उल्झनों को दूर करता है । एक साइन्स दान अपना तजरिबा बयान करते हुए लिखता है : "मैं जब भी अपनी मां से **मह़ब्बत** भरी निगाहें मिलाता हूं मेरे अन्दर सुकून की लहर दौड़ जाती है ।" ख़ैर येह ग़ैर मुस्लिमों की तह़क़ीक़ात हैं, हमें दुन्यवी मफ़ादात के लिये नहीं **ख़ुदा व मुस्तफ़ा** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم के अह़कामात की बजा आ-वरी की निय्यत से वालिदैन की इत़ाअ़त करनी चाहिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुसल्मान तो फिर भी मां बाप की ख़िदमत करते हैं ग़ैर मुस्लिमों के यहां तो बूढ़े मां बाप की बहुत ज़ियादा ना क़दरी है, इसे इस वाक़िए से समझने की सई़ कीजिये :

ओल्ड हाउस और एक लाचार बुढ़िया : इंग्लेन्ड के एक जरीदे में कुछ इस त़रह का सनसनी ख़ैज़ क़िस्सा लिखा था, एक मां की एक ही इक्लौती बेटी "मैरी" MARY के इलावा कोई औलाद नहीं थी, "मैरी" जब जवान हुई तो मां ने एक खाते पीते और समाजी त़ौर पर मुअ़ज़्ज़ज़ नौ जवान से उस की शादी कर दी । और ख़ुद भी उन्हीं के साथ मुक़ीम हो गई । उन के यहां एक चांद सी मुन्नी पैदा हुई, उस का नाम

एलीज़ा बेथ (ELIZABETH) रखा गया, नानी को गोया एक खिलोना मिल गया, नवासी **एलीज़ा बेथ** उस के साथ खूब हिल गई, वक़्त गुज़रता गया इधर **एलीज़ा बेथ** बड़ी होती जा रही थी तो उधर नानी बुढ़ापे की त़रफ़ रवां दवां थी । अब नन्ही **एलीज़ा बेथ** इतनी संभल गई थी कि अपने कपड़े वग़ैरा ख़ुद तब्दील कर लेती थी । ''मैरी'' ने सोचा मां अब बूढ़ी हो चुकी है, मेहमान वग़ैरा आते हैं तो उन में येह जचती नहीं है, लिहाज़ा उस ने मां को बूढ़ों के ख़ुसूसी घर या'नी ओल्ड हाउस (OLD HOUSE) में दाख़िल करवा दिया, मां ने बहुत एह़तिजाज किया, घर में अपनी ज़रूरत का एह़सास दिलाया, नवासी **एलीज़ा बेथ** की परवरिश का उ़ज़्र किया, मगर उस की एक न चली । **एलीज़ा बेथ** को भी नानी से प्यार हो गया था, उस ने भी नानी की बहुत ह़िमायत की मगर उस की भी शिनवाई न हुई । ''मैरी'' ह़ीले बहाने करती रही कि मकान में तंगी हो रही है, आप बे फ़िक्र रहें हम वक़्तन फ़ वक़्तन ओल्ड हाउस मिलने आया करेंगे, हफ़्ता इतवार (दो दिन) घर पर भी लाया करेंगे, भला ओल्ड हाउस में जाने से कोई रिश्ते भी टूटते हैं ! शुरूअ़ शुरूअ़ में ''मैरी'' ने मां से मुलाक़ातें भी कीं मगर रफ़्ता रफ़्ता इस में फ़ासिले बढ़ते गए । और बिल आख़िर ''इन्तिज़ार'' बुढ़िया का मुक़द्दर बन गया । वोह **मह़ब्बत** भरे लम्बे लम्बे ख़त़ तय्यार करती, नवासी **एलीज़ा बेथ** को प्यार लिखती मगर कोई ख़ास फ़र्क़ न पड़ा । एक बार ख़त़ में बेटी ने लिखा कि अब की बार क्रिस्मस (CHRISTMAS) की अगली रात मैं आप को लेने आऊंगी, घर चलेंगे । बुढ़िया की ख़ुशी की इन्तिहा न रही, उस ने ऊन (WOOL) से अपनी प्यारी नवासी के लिये स्वेटर वग़ैरा बुना ताकि उसे तोह़फ़े में दे । 24 दिसम्बर को रात सख़्त बर्फ़बारी थी ''मैरी'' ने लेने के लिये आना था इस लिये वोह अपना ''तोह़फ़ए मह़ब्बत'' लिये इन्तिज़ार में बिल्डिंग की बालकुनी में बैठी बे क़रारी के साथ सड़क पर आने जाने वाली हर गाड़ी को ग़ौर से देख रही थी, कि देखो ''मैरी'' की गाड़ी कब आती है ! ओल्ड हाउस की एक ख़ादिमा लड़की ''नेन्सी'' (NENSI) को बुढ़िया की बे क़रारी देख कर बड़ा तर्स आ रहा था उस ने हीटर वाले कमरे में चलने के लिये बहुत इसरार किया मगर बुढ़िया न मानी । नेन्सी ने एक गर्म शाल ला कर उसे उढ़ा दी और हमदर्दी के साथ बार बार गर्मा गर्म चाय पेश करती रही, बुढ़िया ने सख़्त सर्दी के अन्दर ठिठरते ठिठरते इन्तिज़ार में सारी रात

जाग कर गुज़ार दी मगर बेटी ने न आना था न आई। शदीद सर्दी की वजह से बुढ़िया को सख़्त **नमोनिया** हो गया, जो कि सर्दी लगने, खांसी हो जाने और गला ख़राब होने से लाहिक़ होता है, इस में फेफड़े के किसी हिस्से में सूजन हो जाती है, जिस से वहां हवा नहीं जा सकती और मरीज़ को सांस लेने में सख़्त तक्लीफ़ होती है और इस का द-र-जए ह़रारत (या'नी बुख़ार) 105 डिग्री तक बढ़ जाता है। इस बीमारी की ताब न लाते हुए बुढ़िया ने दम तोड़ दिया। कुछ दिन बा'द "मैरी" अपनी मां का सामान लेने ओल्ड हाउस आई, उस ने वहां की ख़ादिमा नेन्सी का बहुत शुक्रिया अदा किया क्यूं कि वोह आख़िरी वक़्त तक उस की बूढ़ी मां की ख़िदमत करती रही थी, चूंकि नेन्सी अभी जवान थी और काफ़ी ख़िदमत गुज़ार भी, इस लिये "मैरी" ने बेहतर तन-ख़्वाह का लालच दे कर उसे अपने घर ख़िदमत गारी के काम के लिये चलने की ऑफ़र की। "नेन्सी" ने चोट करते हुए कहा : आप के घर ज़रूर आऊंगी, मगर अभी नहीं, जिस दिन आप की बेटी "**एलीज़ा बेथ**" आप को यहां ओल्ड हाउस में छोड़ जाएगी, मैं उस के साथ उस की ख़िदमत के लिये चली जाऊंगी।

ओल्ड हाउस के मुक़ीम दो पाकिस्तानी बुज़ुर्गों की फ़रियाद : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह तो एक ग़ैर मुस्लिम ख़ानदान का वाक़िआ़ था, इसे सुन कर आप को शायद कुछ अ़जीब सा मह़सूस हो रहा होगा। ग़ैर इस्लामी मुमालिक में ब कसरत ओल्ड हाउस हैं और अफ़्सोस अब उन की देखा देखी इस्लामी मुल्कों ह़त्ता कि पाकिस्तान में भी इस का आग़ाज़ हो चुका है ! दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में 16 रबीउ़न्नूर शरीफ़ 1432 सि.हि. (19.2.2011) को मुअ़म्मर ह़ज़रात (या'नी बूढ़ों) का म-दनी मुज़ाकरा हुवा था जिस में मुल्क भर से हज़ारों सिन रसीदा बुज़ुर्गों ने शिर्कत की थी और येह म-दनी मुज़ाकरा "म-दनी चेनल" पर बराहे रास्त टेली कास्ट (TELECAST) किया गया था। किसी पाकिस्तानी ओल्ड हाउस में मुक़ीम दो निहायत कमज़ोर बुज़ुर्गों ने इस्लामी भाइयों से **निहायत ग़मगीन** लहजे में अपना दर्द बयान किया और ओल्ड हाउस में छोड़ कर **चले जाने** पर अपने अ़ज़ीज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ निहायत **तअस्सुफ़** व ह़सरत का इज़्हार किया और कहा कि हमारी आरज़ू है कि हमारे ख़ानदान वाले हमें घर

वापस ले चलें हम यहां काफ़ी दुखी हैं। हाए! हाए! वोह औलाद कितनी एह्सान फ़रामोश और ना ख़लफ़ व ना लाइक़ है जो बचपन में मां बाप की तरफ़ से किये जाने वाले तमाम एह्सानात को फ़रामोश कर के बुढ़ापे में उन्हें ठुकरा देती है। हालां कि बुढ़ापे में तो बेचारों को हमदर्दियों की ज़ियादा हाजत होती है। इस्लामी भाइयो! आप अह्द कीजिये कि चाहे कुछ भी हो जाए मां बाप को उ़म्र भर निभाएंगे और उन की ख़िदमत कर के ख़ुद को जन्नत का हक़दार बनाएंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ। यक़ीन मानिये **वालिदैन** के हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा हैं और उन से सुबुक दोश (या'नी बरिय्युज़्ज़िम्मा) होना मुम्किन ही नहीं चुनान्चे

मां को कन्धों पर उठाए गर्म पथ्थरों पर छ मील......: एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने बारगाहे न-बवी علٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام में अ़र्ज़ की : एक राह में ऐसे **गर्म पथ्थर** थे कि अगर गोश्त का टुकड़ा उन पर डाला जाता तो कबाब हो जाता! मैं अपनी मां को गरदन पर सुवार कर के **छ मील** तक ले गया हूं, क्या मैं मां के हुक़ूक़ से फ़ारिग़ हो गया हूं? **सरकारे नामदार** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तेरे पैदा होने में दर्द के जिस क़दर झटके उस ने उठाए हैं शायद येह उन में से एक झटके का बदला हो सके।

(اَلْمُعْجَم الصَّغِیر لِلطَّبَرانی، الجزءُ الاوّل ص۹۲ حدیث۲۵۷)

ह़म्ल की तकालीफ़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! वाक़ेई मां ने अपने बच्चे के लिये सख़्त तक्लीफ़ें उठाई होती हैं, दर्दे ज़िह या'नी बच्चे की विलादत (DELIVERY) के वक़्त होने वाले दर्द को मां ही समझ सकती है, मर्द के लिये किस क़दर आसानी है कि उसे डिलिवरी नहीं होती। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** (जिल्द 27) सफ़हा 101 पर फ़रमाते हैं : मर्द का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ लज़्ज़त का है और औ़रत को सदहा मसाइब का सामना है, नव महीने पेट में रखती है कि चलना फिरना, उठना, बैठना दुश्वार होता है, फिर पैदा होते वक़्त तो हर झटके पर मौत का पूरा सामना होता है, फिर अक़्साम अक़्साम के दर्द में निफ़ास

वाली (या'नी विलादत के बा'द आने वाले ख़ून की तक्लीफ़ में मुब्तला होने वाली) की नींद उड़ जाती है। इसी लिये (**अल्लाह** तबा-र-क व तआला) फ़रमाता है :

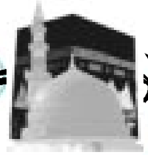
حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ
(پ٢٦ الاحقاف:١٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उस की मां ने उसे पेट में रखा तक्लीफ़ से और जनी उस को तक्लीफ़ से और उसे उठाए फिरना और उस का दूध छुड़ाना तीस महीने में है।

तो हर बच्चे की पैदाइश में औ़रत को कम अज़ कम तीन बरस बा मशक़्क़त जेलख़ाना है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 27, स. 101)

ड्राइवर की जान बच गई : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतें सीखने सिखाने, इन पर अ़मल बढ़ाने, अपने आप को सुन्नतों का पैकर बनाने और नेकी की दा'वत की ख़ूब धूमें मचाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ **"फ़िक्रे मदीना"** कर के म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करते रहिये और हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस म-दनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** के ह़ुसूल की ख़ात़िर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक **म-दनी बहार** सुनाऊं चुनान्चे **बाबुल मदीना** (कराची) के अ़लाक़े नयाआबाद की एक इस्लामी बहन के ह़ल्फ़िय्या बयान का ख़ुलासा है कि मेरे एक भाई जो कि अ़रब शरीफ़ के शहर "रियाज़" में ब हैसिय्यत ड्राइवर मुला-ज़मत कर रहे हैं। एक दिन ड्राइविंग के दौरान ख़त़रनाक ह़ादिसा हुवा और वोह बेहोश हो गए। **दिमाग़ी चोटें** इतनी ज़ियादा थीं






कि बचने की उम्मीद न रही। हम लोग मजबूर थे उन को देखने भी न जा सकते थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत किया करती थी। मैं ने भाईजान वाली परेशानी अपने अ़लाक़े की एक इस्लामी बहन को बताई। उन्हों ने मुझे दिलासा दिया और मश्वरा दिया कि इसी त़रह पाबन्दी से इज्तिमाअ़ में शिर्कत कर के ख़ूब **दुआ़** किया करो। चुनान्चे मैं ने ऐसा ही किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ़ में की जाने वाली **दुआ़ओं** की ब-र-कत से तीन माह के अन्दर अन्दर भाईजान ने बातचीत शुरूअ़ कर दी। डॉक्टर भी हैरान रह गए क्यूंकि **दिमाग़ी चोटें** बहुत ज़ियादा थीं और ब ज़ाहिर बचने की उम्मीद बहुत कम थी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाआ़त की ब-रकात पर मेरी अ़क़ीदत और ज़ियादा मज़्बूत् हुई।

ऐ इस्लामी बहनो ! न मायूस होना   तुम्हें ख़ैर देगा दिला म-दनी माह़ोल
तू पर्दे के साथ इज्तिमाआ़त में आ   तेरी देगा बिगड़ी बना म-दनी माह़ोल

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

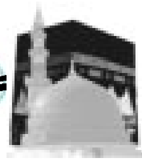
सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रह़मतों का नुज़ूल होता है : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में मांगी जाने वाली दुआ़एं ज़रूर रंग लाती हैं, **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम **सुफ्यान बिन उ़यैना** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : عِنْدَ ذِكْرِ الصّٰلِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मते इलाही उतरती है। (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء ج۷ ص۳۳۵ رقم ۱۰۷۵۰)

जब नेक बन्दों के तज़्किरों पर रह़मतों का नुज़ूल होता है तो जिस इज्तिमाअ़ में **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم का ज़िक्रे ख़ैर होता हो वहां रह़मतें क्यूं नाज़िल न होंगी और जहां छमाछम रह़मतें बरस रही हों वहां दुआ़एं क्यूं क़बूल न होंगी। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 743 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"**










सफ़हा 422 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللہ تعالٰی عنہما फ़रमाते हैं कि हम दोनों मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल, साह़िबे जूदो नवाल, शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, सुल्ताने शीरीं मक़ाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर थे कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो क़ौम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने के लिये बैठती है फ़िरिश्ते उन्हें घेर लेते हैं और रह़मत उन्हें ढांप लेती है और उन पर सकीना (या'नी सुकून) नाज़िल होता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों के सामने उन का चरचा फ़रमाता है।"

(صَحیح مُسلِم ص١٤٤٨ حدیث ٢٧٠٠)

ज़िक्र किसे कहते हैं ? : "**अल्लाह हू**" और "**ह़क़ हू**" की ज़र्बें लगाना बेशक ज़िक्र ही है। ताहम तिलावते क़ुरआन, ह़म्दो सना, मुनाजात व दुआ़, दुरूदो सलाम, ना'त व मन्क़बत, ख़ुत़्बा, दर्स, सुन्नतों भरा बयान वग़ैरा भी "**ज़िक्रुल्लाह**" में शामिल हैं। लिहाज़ा **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त भी ज़िक्र के ह़ल्क़े हैं।

सारे आ़लम को है तेरी ही जुस्त-जू जिन्नो इन्सो मलक को तेरी आरज़ू
याद में तेरी हर एक है सू ब सू बन में वह़्शी लगाते हैं ज़र्बातें हू
अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाह

(सामाने बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा, हमें अपनी और अपने प्यारे ह़बीब की मह़ब्बत पर ज़िन्दा रख, जब तक जियें सुन्नतों पर अ़मल करते रहें और मरें तो मदीने की सर ज़मीन, गुम्बदे ख़ज़रा का साया, निगाहों के सामने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का जल्वा और लब पर येह कलिमए त़य्यिबा हो لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللہِ (صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم)। **जन्नतुल बक़ीअ़** में तदफ़ीन हो और **जन्नतुल फ़िरदौस** में हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस मिले।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم





या ख़ुदा जिस्म में जब तक कि मेरी जान रहे तुझ पे सदक़े तेरे महबूब पे क़ुरबान रहे

कुछ रहे या न रहे पर येह दुआ़ है कि अमीर नज़्अ़ के वक़्त सलामत मेरा ईमान रहे

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इसराफ़ की ता'रीफ़

ग़ैरे ह़क़ में सर्फ़ (या'नी ख़र्च) करना। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 690) म-सलन ना फ़रमानी की जगहों पर ख़र्च करना।

बुख़्ल की ता'रीफ़

जिस चीज़ का ख़र्च करना शरअ़न या मुरुव्वतन ज़रूरी हो वहां ख़र्च न करना।

(حديقه نديه شرح طريقه محمديه ج ٢ ص ٢٧)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۭ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۭ

नेकी की दा'वत तर्क करने के नुक़्सानात

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत की हिकायत : हज़रते सय्यिदुना अबुल मुवाहिब शाज़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे ख़्वाब में अपने दीदारे फ़ैज़ आसार से मुशर्रफ़ किया और फ़रमाया : "तुम बरोज़े क़ियामत मेरे एक लाख उम्मतियों की शफ़ाअ़त करोगे।" मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझ पर इस क़दर इन्आ़मो इक्राम कैसे हुवा ? इर्शाद फ़रमाया : इस लिये कि तुम मुझ पर **दुरूद का हदिय्या** पेश करते रहते हो।

(الطبقاتُ الكُبرىٰ لِلشّعرانى،الجزءُ الثّانى ص١٠١)

पढ़ते रहो दुरूदो सलाम भाइयो ! मुदाम
फ़ज़्ले ख़ुदा से दोनों जहां के बनेंगे काम

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायते दुरूद के ज़िम्न में "शफ़ाअ़त" के मु-तअ़ल्लिक़ म-दनी फूल

उ़-लमाए किराम शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللّٰه ! दुरूदे पाक पढ़ने की भी क्या ख़ूब ब-र-कतें हैं ! इस **हिकायते दुरूद** से येह भी मा'लूम हुवा कि बरोज़े क़ियामत **अहलुल्लाह** (या'नी **अल्लाह** वाले)

गुनहगारों की **शफ़ाअ़त** फ़रमाएंगे । याद रहे ! मुत़्लक़न **शफ़ाअ़त** का इन्कार हुक्मे क़ुरआनी का इन्कार और कुफ़्र है । मौक़अ़ की मुना-सबत से **शफ़ाअ़त** के बारे में **नेकी की दा'वत** के कुछ **म-दनी फूल** आप की त़रफ़ बढ़ाता हूं, क़बूल फ़रमा कर अपने **दिल के म-दनी गुलदस्ते** में सजाते जाइये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ईमान को ताज़गी मिलने के साथ साथ कई वस्वसों की काट भी हो जाएगी । **शफ़ाअ़त** के मा'ना हैं : "गुनाहों से मुआ़फ़ी की **सिफ़ारिश** ।" सब से पहले उ़-लमाए किराम के **शफ़ाअ़त** करने के **मु-तअ़ल्लिक़** एक ईमान अफ़्रोज़ रिवायत समाअ़त फ़रमाइये चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन** صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे दिल नशीन है : (मैदाने क़ियामत में) आ़लिम और आ़बिद लाए जाएंगे, **आ़बिद** (या'नी इ़बादत गुज़ार) से कहा जाएगा : जन्नत में दाख़िल हो जाओ और **आ़लिम** से कहा जाएगा : तुम अभी ठहरो ताकि लोगों की **शफ़ाअ़त** करो, इस सिले में कि तुम ने उन को अदब सिखाया ।

(شُعَبُ الْاِیْمَان ج ۲ ص ۲٦۸ حدیث ۱۷۱۷)

मुझ को ऐ अ़त्तार सुन्नी आ़लिमों से प्यार है
اِنْ شَآءَاللہ दो जहां में मेरा बेड़ा पार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 646)

जिन आयात में शफ़ाअ़त का इन्कार है उन की वज़ाह़त : क़ुरआने करीम की जिन आयतों में **शफ़ाअ़त** की नफ़ी (या'नी इन्कार) है वहां मुराद है **अल्लाह** तआ़ला के हां कोई भी जब्रन **शफ़ाअ़त** नहीं कर सकता या ग़ैर मुस्लिमों की **शफ़ाअ़त** नहीं या बुत शफ़ीअ़ (या'नी शफ़ाअ़त करने वाले) नहीं हैं । म-सलन पारह 3 **सू-रतुल ब-क़रह** आयत नम्बर 254 में है :

یَوۡمٌ لَّا بَیۡعٌ فِیۡہِ وَلَا خُلَّۃٌ وَّلَا شَفَاعَۃٌ ؕ
(پ۳،البقرۃ:۲۵۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह दिन जिस में न ख़रीद फ़रोख़्त है न काफ़िरों के लिये दोस्ती और न **शफ़ाअ़त** ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

पारह 29 **सू-रतुल मुद्दस्सिर** आयत नम्बर 48 में इर्शाद होता है :

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ﴿٤٨﴾

(پ۲۹،المدثر:۴۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो उन्हें सिफ़ारिशों की सिफ़ारिश काम न देगी ।

क़ुरआन से शफ़ाअ़त का सुबूत : जहां क़ुरआन शरीफ़ में शफ़ाअ़त का सुबूत है वहां **अल्लाह** के प्यारों की मोमिनों के लिये "शफ़ाअ़त बिल इज़्न" मुराद है या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे बन्दे अपनी **महबूबिय्यत** और वजाहत व मर्तबे की बिना पर **अल्लाह** तआ़ला की इजाज़त से मोमिनों को बख़्शवाएंगे । म-सलन पारह 3 **सू-रतुल ब-क़रह** आयत 255 में इर्शादे रब्बुल इबाद है :

مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ

(پ۳،البقرۃ:۲۵۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह कौन है जो उस के यहां **सिफ़ारिश** करे बे उस के हुक्म के ।

पारह 16 **सूरए मरयम** आयत नम्बर 87 में है :

لَا یَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾

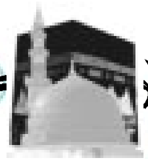
तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : लोग शफ़ाअ़त के मालिक नहीं मगर वोह जिन्हों ने रह्मान के पास क़रार कर रखा है ।

नेकियां बिल्कुल नहीं हैं नामए आ'माल में
कीजिये अ़त्तार की आ कर शफ़ाअ़त या रसूल

(वसाइले बख़्शिश, स. 142)

कौन कौन शफ़ाअ़त करेगा ? : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 1250 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल" सफ़्हा 139 ता 141 पर क़ियामत की मन्ज़र कशी में **शफ़ाअ़त** के **मु-तअ़ल्लिक़** तफ़्सीली मज़्मून में येह भी है : अब तमाम अम्बिया अपनी उम्मत की **शफ़ाअ़त** फ़रमाएंगे,






औलियाए किराम, शु-हदा, उ़-लमा, हुफ़्फ़ाज़, हुज्जाज बल्कि हर वोह शख़्स जिस को कोई मन्सबे दीनी इनायत हुवा अपने अपने **मु-तअ़ल्लिक़ीन** की **शफ़ाअ़त** करेगा। ना बालिग़ बच्चे जो मर गए हैं (वोह) अपने मां बाप की **शफ़ाअ़त** करेंगे, यहां तक कि **उ़-लमा** के पास कुछ लोग आ कर अ़र्ज़ करेंगे : हम ने आप के वुज़ू के लिये फ़ुलां वक़्त में पानी भर दिया था, कोई कहेगा कि मैं ने आप को इस्तिन्जे के लिये ढेला दिया था, उ़-लमा उन तक की **शफ़ाअ़त** करेंगे।

हिर्ज़े जां ज़िक्रे शफ़ाअ़त कीजिये
नार से बचने की सूरत कीजिये

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : इस शे'र में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! **शफ़ाअ़ते मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ूब तज़्किरा करते रहिये गोया अपने लिये इसे मिस्ले पनाह गाह बना लीजिये कि "ज़िक्रे शफ़ाअ़त" आख़िरत की भलाई और अ़ज़ाबे जहन्नम से नजात का वसीला बन जाए।

तुझ सा सियाह कार कौन उन सा शफ़ीअ़ है कहां !
फिर वोह तुझी को भूल जाएं दिल येह तेरा गुमान है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : इस शे'र में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने आप से तवाज़ुअ़न (या'नी बतौ़रे इन्किसारी) फ़रमा रहे हैं : तू सब से बड़ा गुनहगार ही सही मगर तू जिस **प्यारे मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ग़ुलाम है उन से बड़ा **शफ़ाअ़त** करने वाला भी तो कोई नहीं। इस लिये ऐ मेरे ग़मगीन दिल ! तसल्ली रख ! बरोज़े ह़श्र शफ़ीए़ मह़शर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तुझे हरगिज़ नहीं भूलेंगे।

या रसूलल्लाह ! मुजरिम ह़ाज़िरे दरबार है नेकियां पल्ले नहीं सर पर गुनह का बार है
तुम शहे अबरार येह सब से बड़ा इस्यां शिआ़र यूं शफ़ाअ़त का येही सब से बड़ा ह़क़दार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 222)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد





शफ़ाअ़त की 8 अक़्साम : **मुह़क़्क़िक़ अ़लल इ़त्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन,** ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی शफ़ाअ़त की क़िस्में बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ﴾1﴿ **शफ़ाअ़त** की पहली क़िस्म **शफ़ाअ़ते उ़ज़्मा** है जिस का तमाम मख़्लूक़ात को नफ़्अ़ मिलेगा और येह हमारे मोह़तरम नबी, मक्की म-दनी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही के साथ ख़ास है या'नी अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में से किसी और नबी को इस पर **जुरअत** और पेश क़दमी की मजाल न होगी और येह **शफ़ाअ़त** लोगों को आराम पहुंचाने, मैदाने ह़श्र में देर तक ठहरने से छुटकारा दिलाने, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ैसले और ह़िसाब के जल्दी करने और क़ियामत के दिन की सख़्ती व परेशानी से निकालने के लिये होगी ﴾2﴿ दूसरी क़िस्म की **शफ़ाअ़त** एक क़ौम को बे ह़िसाब **जन्नत** में दाख़िल करवाने के लिये होगी और येह **शफ़ाअ़त** भी हमारे **नबिय्ये पाक** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये साबित है और बा'ज़ उ़-लमाए किराम के नज़्दीक येह **शफ़ाअ़त** ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही के साथ ख़ास है ﴾3﴿ तीसरी क़िस्म की **शफ़ाअ़त** उन लोगों के बारे में होगी कि जिन की नेकियां और बुराइयां बराबर बराबर होंगी और **शफ़ाअ़त** की मदद से **जन्नत** में दाख़िल होंगे ﴾4﴿ चौथी क़िस्म की **शफ़ाअ़त** उन लोगों के लिये होगी जो कि दोज़ख़ के ह़क़दार हो चुके होंगे तो ह़ुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم शफ़ाअ़त फ़रमा कर उन को **जन्नत** में लाएंगे ﴾5﴿ पांचवीं क़िस्म की **शफ़ाअ़त** मर्तबे की बुलन्दी और बुज़ुर्गी की ज़ियादती के लिये होगी ﴾6﴿ छटी क़िस्म की **शफ़ाअ़त** उन गुनहगारों के बारे में होगी जो कि जहन्नम में पहुंच चुके होंगे और **शफ़ाअ़त** की वजह से निकल आएंगे और इस त़रह़ की शफ़ाअ़त दीगर अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़िरिश्ते, उ़-लमा और शु-हदा भी फ़रमाएंगे ﴾7﴿ सातवीं क़िस्म की **शफ़ाअ़त जन्नत** खोलने के बारे में होगी ﴾8﴿ आठवीं क़िस्म की **शफ़ाअ़त** ख़ास कर मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا वालों और मदीने के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर की ज़ियारत करने वालों के लिये ख़ुसूसी त़रीक़े पर होगी। **(مُلَخَّص از اَشِعَّةُ اللَّمْعَات ج ٤ ص ٤٠٤)**

ह़श्र में हम भी सैर देखेंगे
मुन्किर आज उन से इल्तिजा न करे

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस शे'र में फ़रमाते हैं : जो लोग आज दुन्या में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारों को "बे इख़्तियार" समझते हैं, बरोज़े मह़शर हम भी उन का ख़ूब तमाशा देखेंगे कि किस त़रह़ बे बसी और बेचैनी के साथ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पाक दरबारों में शफ़ाअ़त की भीक लेने के लिये धक्के खा रहे होंगे ! मगर नाकामी का मुंह देखेंगे। जभी तो कहा जा रहा है :

आज ले उन की पनाह आज मदद मांग उन से
फिर न मानेंगे क़ियामत में अगर मान गया

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : या'नी आज इख़्तियाराते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ए'तिराफ़ कर ले और इन के दामने करम की पनाह में आ जा और इन से मदद मांग। अगर तूने येह ज़ेह्न बना लिया कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से भी मदद नहीं कर सकते तो याद रख ! कल बरोज़े क़ियामत जब **अल्लाह** तआ़ला के प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने मह़बूबी ज़ाहिर होगी और तू इख़्तियारात तस्लीम कर लेगा और **शफ़ाअ़त** की सूरत में मदद की भीक लेने दौड़ेगा तो उस वक़्त सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नहीं "मानेंगे" कि दुन्या "दारुल अ़मल" (या'नी अ़मल की जगह) थी अगर वहीं "मान लेता" तो काम हो जाता, अब "मानना" काम न देगा क्यूं कि आख़िरत दारुल अ़मल नहीं "दारुल जज़ा" (या'नी दुन्या में जो अ़मल किया उस का बदला मिलने की जगह) है।

शफ़ाअ़त की उम्मीद पर गुनाह करने वाला कैसा है ? : **शफ़ाअ़त** की उम्मीद पर गुनाह करने वाला ऐसा ही है जैसे अच्छा डॉक्टर मिल जाने की उम्मीद पर कोई ज़हर खा ले या हड्डियों के माहिर डॉक्टर के मिलने की उम्मीद पर गाड़ी के नीचे ख़ुद को गिरा कर सारे बदन की हड्डियां तुड़वा ले। और यक़ीनन कोई भी

ऐसा नहीं कर सकता। लिहाज़ा हर दम गुनाहों से बचते रहना ज़रूरी है। **शफ़ाअ़त** की उम्मीद पर **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानियां कर के ख़ुद को जहन्नम के अ़ज़ाब के लिये पेश करते रहना निहायत ख़त़रनाक है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की ख़ुफ़्या तदबीर** से हर वक़्त डरते रहना चाहिये अगर गुनाहों की नुहूसत से **ईमान** ही बरबाद हो गया तो **शफ़ाअ़त** कैसी ! ख़ुदा की क़सम ! हमेशा हमेशा के लिये दोज़ख़ की भड़क्ती आग और गूना गूं अ़ज़ाबों का सामना होगा। **وَالعِيَاذُ بِالله** (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह) हां बचने की लाख कोशिश के बा वुजूद न चाहते हुए भी बसा अवक़ात जो आदमी गुनाहों में फंस जाता है, उसे चाहिये कि तौबा इस्तिग़्फ़ार भी करता रहे और शफ़ीए़ रोज़े महशर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से **शफ़ाअ़त** की ख़ैरात भी मांगता रहे।

ऐ शाफ़ेए़ उमम शहे ज़ी जाह ले ख़बर लिल्लाह ले ख़बर मेरी लिल्लाह ले ख़बर
मुजरिम को बारगाहे अ़दालत में लाए हैं तक्ता है बे कसी में तेरी राह ले ख़बर
अहले अ़मल को उन के अ़मल काम आएंगे
मेरा है कौन तेरे सिवा आह ले ख़बर

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : ऐ तमाम उम्मतों की शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले इ़ज़्ज़त वाले शहन्शाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुदारा ! मुझ गुनहगार की ख़बर लीजिये ! ऐ प्यारे आक़ा ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुजरिम की अ़दालत में पेशी हो चुकी है, गुनहगार ग़ुलाम निहायत बे कसी के आ़लम में **शफ़ाअ़त** की उम्मीद लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आ-वरी का मुन्तज़िर है। **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बेशक नेक बन्दों के लिये उन की नेकियां कार आमद होंगी, आह ! मुझ नेकियों से तही दामन (या'नी बिल्कुल ख़ाली) और सर ता पा गुनाहों से लिथड़े हुए ग़ुलाम का आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सिवा कौन है जो **शफ़ाअ़त** कर के अ़ज़ाबे नार से बचा ले !

तसल्ली रख तसल्ली न घबरा ह़श्र से अ़त्तार
तेरा ह़ामी वहां पर आमिना का लाडला होगा

(वसाइले बख़्शिश, स. 188)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد





कश्ती के मुसाफ़िर : हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का **फ़रमाने मुश्कबार** है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुदूद में सुस्ती करने वाले और उन में मुब्तला होने वाले की मिसाल उन लोगों जैसी है जिन्हों ने कश्ती में कुर्आ़ अन्दाज़ी की, तो बा'ज़ के ह़िस्से में नीचे वाला ह़िस्सा आया और बा'ज़ के ह़िस्से में ऊपर वाला । पस नीचे वालों को पानी के लिये ऊपर वालों के पास जाना होता था, तो उन्हों ने इसे ज़ह़मत शुमार करते हुए एक कुल्हाड़ी ली और कश्ती के निचले ह़िस्से में एक शख़्स सूराख़ करने लगा, तो ऊपर वाले उस के पास आए और कहा कि तुझे क्या हो गया है ? कहा कि तुम्हें मेरी वजह से तक्लीफ़ होती थी और पानी के बिग़ैर गुज़ारा नहीं । अब अगर उन्हों ने उस का हाथ पकड़ लिया तो उसे बचा लिया और ख़ुद भी बच जाएंगे और अगर उसे छोड़े रखा तो उसे हलाक करेंगे और अपनी जानों को भी हलाक करेंगे ।

(صَحیح بُخاری ج ۲ ص ۲۰۸ حدیث ۲٦۸٦)

गुनाहों की नुहूसत दूसरों को भी अपनी लपेट में लेती है : इस ह़दीसे पाक के तह़्त **मिरआतुल मनाजीह़** में है : इस ह़दीस शरीफ़ में एक मिसाल के ज़रीए बुराई से रोकने और नेकी का हुक्म देने की **अहम्मिय्यत** को वाज़ेह़ किया गया और बताया गया कि अगर येह समझ कर اَمرٌ بِالْمَعرُوف وَ نَہْیٌ عَنِ الْمُنْکَر (या'नी नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने) का फ़रीज़ा तर्क कर दिया जाए कि बुराई करने वाला ख़ुद नुक़्सान उठाएगा हमारा क्या नुक़्सान है ! तो येह सोच ग़लत़ है, इस लिये कि उस के गुनाह के अ-सरात तमाम मुआ़-शरे को अपनी लपेट में ले लेते हैं और जिस त़रह़ कश्ती तोड़ने वाला अकेला ही नहीं डूबता बल्कि वोह सब लोग डूबते हैं जो कश्ती में सुवार हैं इसी त़रह़ बुराई करने वाले चन्द अफ़राद का येह जुर्म तमाम मुआ़-शरे में नासूर बन कर फैलता है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 504)




या शैख़ ! अपनी अपनी देख ! : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "या शैख़ ! अपनी अपनी देख !"** के तह़त सिर्फ़ अपनी इस्लाह़ की फ़िक्र में लगे रहने के बजाए दूसरों की दुरुस्ती की त़रफ़ भी तवज्जोह देनी चाहिये, क्यूं कि कसीर गुनाह ऐसे हैं कि जिन का नुक़्सान दूसरों को भी पहुंचता है म-सलन अगर कोई शख़्स चोरी का गुनाह करे तो उस शख़्स को भी नुक़्सान होगा जिस की चीज़ चुराई गई बिल्कुल येही मुआ-मला डाका डालने, अमानत में ख़ियानत करने, गाली देने, तोहमत लगाने, ग़ीबत करने, चुग़ली खाने, किसी के ऐब उछालने, नाह़क़ किसी का माल खाने, ख़ून बहाने, किसी को बिला इजाज़ते शर-ई तक्लीफ़ पहुंचाने, क़र्ज़ दबा लेने, किसी की चीज़ उसे ना गवार गुज़रने के बा वुजूद बिला इजाज़त इस्ति'माल करने, मां बाप को सताने और बद निगाही करने वग़ैरा का है। अब अगर हर एक को इन गुनाहों के इरतिकाब की खुली छूट दे दी जाए फिर न तो किसी का माल सलामत रहेगा और न ही इ़ज़्ज़त ! बल्कि यूं कहना चाहिये कि हमारा मुआ-शरा **"दरिन्दों के जंगल"** का मन्ज़र पेश करने लगेगा। बा'ज़ गुनाह ऐसे हैं जिन के इरतिकाब से इन्सान की इ़ज़्ज़त को भी नुक़्सान पहुंचता है म-सलन जो शख़्स चुग़ुल ख़ोर या ज़ानी या शराबी के त़ौर पर मश्हूर हो जाए तो सब पर इ़यां (या'नी ज़ाहिर) है कि मुआ-शरे में उस का क्या मक़ाम होता है ? और बा'ज़ गुनाह ऐसे हैं जो इन्सान के माल को नुक़्सान पहुंचाते हैं म-सलन जूआ खेलने की लत पड़ जाना, सूद पर क़र्ज़ लेना, काम काज करने के बजाए फ़िल्में डिरामे देखने में मश्ग़ूल रहना, मज़्कूरा कामों में मुलव्वस अफ़राद माली त़ौर पर जिस त़रह़ "दिन दुगनी रात चौगुनी" उलटी तरक़्क़ी करते हैं येह किसी साह़िबे अ़क़्ल से मख़्फ़ी (या'नी छुपा) नहीं। इन तमाम दुन्यावी नुक़्सानात के साथ साथ ऐसे शख़्स को उख़रवी त़ौर पर भी ख़सारे (या'नी नुक़्सान) का सामना है, जो जहन्नम के भयानक और होलनाक अ़ज़ाब की सूरत में पेश आ सकता है। وَالعِيَاذُبِاللهِ عَزَّوَجَلَّ

गुनाहों के पांच दुन्यवी नुक़्सानात : **गुनाहों** के दुन्यावी नुक़्सानात के ज़िम्न में **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 148 सफ़ह़ात पर

मुश्तमिल किताब, **"नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं"** सफ़्हा 51 पर है : हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **ऐ लोगो !** पांच बातों से बचने के लिये पांच बातों से बचो (1) जो क़ौम **कम तोलती** है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उन्हें महंगाई और फलों की कमी में मुब्तला कर देता है (2) जो क़ौम **बद अ़हदी** (या'नी वा'दा ख़िलाफ़ी) करती है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उन के दुश्मनों को उन पर मुसल्लत़ कर देता है (3) जो क़ौम **ज़कात** अदा नहीं करती **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उन से बारिश का पानी रोक लेता है और अगर चौपाए न होते तो उन को पानी का एक क़त्रा भी न दिया जाता (4) जिस क़ौम में **फ़ह़्ह़ाशी** और **बे ह़याई** फैल जाती है **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला उन को ताऊ़न[1] के मरज़ में मुब्तला कर देता है और (5) जो क़ौम **क़ुरआने पाक** के बिग़ैर फ़ैसला करती है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उन को ज़ियादती (या'नी ग़लत़ फ़ैसले) का मज़ा चखाता है और उन्हें एक दूसरे के डर में मुब्तला कर देता है । **(قُرَّةُ العُيُون ص ٣٩٢)**

दुआ़ क़बूल न होगी : अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल मुसल्मानों में नेकियों का ज़ेह्न बहुत कम हो गया है बस हर त़रफ़ गुनाहों का दौर दौरा है, **नेकी की दा'वत** की त़रफ़ भी कोई ख़ास रग़बत नहीं रही, आइये ! एक **इब्रत नाक रिवायत** सुनिये और अपने आप को अ़ज़ाबे इलाही से डराइये चुनान्चे सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : क़सम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है, या तो तुम अच्छी बात का हुक्म करोगे और बुरी बात से मन्अ़ करोगे या **अल्लाह** तआ़ला तुम पर जल्द अपना अ़ज़ाब भेजेगा फिर दुआ़ करोगे और तुम्हारी दुआ़ क़बूल न होगी । **(ترمذی ج٤ ص ٦٩ حديث ٢١٧٦)**

इस ह़दीसे पाक के तह़्त **मिरआतुल मनाजीह़** में है : **اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر** (या'नी नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने) की ज़िम्मेदारी से पहलू तही (या'नी टालम टोल) कितना बड़ा जुर्म है इस ह़दीस में निहायत वज़ाह़त के साथ इस का बयान किया गया । रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : या तो तुम्हें येह फ़रीज़ा

1 : ताऊ़न को इंग्लिश में (PLAGUE) बोलते हैं, येह चूहे के पिस्सूओं के काटने से लाह़िक़ होने वाला मोहलिक मरज़ है, इस में छाती, बग़ल या ख़ुस्ये के नीचे गिल्टियां (या'नी गांठें) निकलती हैं और तेज़ बुख़ार हो जाता है ।

अन्जाम देना होगा या **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब का सामना करना पड़ेगा और इस के बा'द अगर दुआ़ भी करोगे तो क़बूल न होगी, येह निहायत सख़्त क़िस्म की वईद (या'नी सज़ा देने की धमकी) है या'नी जब तक तुम अपनी कोताही का इज़ाला (या'नी इसे दूर) नहीं करोगे और **अल्लाह** तआ़ला से मुआ़फ़ी नहीं मांगोगे तुम्हारी कोई दुआ़ क़बूल न होगी।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 505)

दे धुन मुझ को नेकी की दा'वत की मौला
मचा दूं मैं धूम उन की सुन्नत की मौला

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मैं गुनाहों की तारिकियों में गुम था : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेक बनने और गुनाहों से बचने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये फ़ी ज़माना दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल किसी ने'मते ग़ैर मु-तरक़्क़बा (या'नी वोह दौलत जिस के ह़ुसूल का गुमान न हो) से कम नहीं, आज के गुनाहों भरे माह़ोल में पलने वाले बड़े बड़े मुजरिम म-दनी माह़ोल में आ कर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों के सांचे में ढल गए। आइये ! इस ज़िम्न में एक "म-दनी बहार" सुनते हैं चुनान्चे **गुजरात** (पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का खुलासा पेशे ख़िदमत है : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल मैं गुनाहों की तारीकियों में गुम था। ग़फ़्लत के अंधेरों ने मुझे दीन से अ़-मलन इस क़दर दूर कर रखा था कि नमाज़, रोज़े की कुछ परवाह न थी। एक रोज़ जब ह़स्बे मा'मूल मेरे क़ारी साह़िब घर में मुझे क़ुरआने पाक पढ़ाने के लिये आए तो उस वक़्त मैं T.V. पर डिरामा देखने में मसरूफ़ था, मैं ने कहा : **"क़ारी साह़िब ! आप तशरीफ़ रखिये मैं डिरामा देख कर अभी आ रहा हूं बस थोड़ा ही रह गया है।"** क़ारी साह़िब का ह़ौसला भी कमाल का था, डांट डपट के बजाए निहायत ही शफ़्क़त से **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हों ने मुझे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का

मत्बूआ रिसाला "टीवी की तबाह कारियां" पढ़ कर सुनाया। रिसाला सुन कर बे इख़्तियार नदामत व शरमिन्दगी मुझ पर ग़ालिब आई और मैं ख़ौफ़े ख़ुदा से सर ता पा लरज़ उठा ! क़ारी साहिब की नसीहत पर अमल करते हुए मैं ने जब अपनी गुज़श्ता ज़िन्दगी का एह़तिसाब किया तो मेरा दिल रोने लगा कि आह ! सद हज़ार आह ! मैं ने ज़िन्दगी का इतना बड़ा हिस्सा फ़ुज़ूलिय्यात व लग़्वियात में सर्फ़ कर दिया और मुझे इस का एह़सास तक न हुवा ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने सिद्क़े दिल से तौबा की और अ़ज़्मे **मुसम्मम** कर लिया कि आयन्दा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ गुनाहों से बचता रहूंगा, नमाज़ की पाबन्दी करते हुए सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करता रहूंगा और **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ना फ़रमानी, झूट, ग़ीबत, चुग़ली और वा'दा ख़िलाफ़ी वग़ैरा वग़ैरा से बचता रहूंगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल ने मेरी काया पलट दी और मुझ सा बिगड़ा हुवा इन्सान भी सुधरने पर कमर बस्ता हो गया।** **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से दुआ़ है कि हमें म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तू नरमी को अपनाना झगड़े मिटाना रहेगा सदा ख़ुशनुमा म-दनी माह़ोल
तू ग़ुस्से झिड़क्ने से बचना वगर्ना येह बदनाम होगा तेरा म-दनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इन्फ़िरादी कोशिश करना सुन्नत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस म-दनी बहार में इन्फ़िरादी कोशिश और **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत्बूआ़ रिसाला **"टीवी की तबाह कारियां"** पढ़ कर सुनाने की ब-र-कत का बयान है, हम सभी को चाहिये कि मौक़अ़ ब मौक़अ़ **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए **नेकी की दा'वत** की तरकीब किया करें। यक़ीनन इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए **नेकी की दा'वत** देना हमारे **मीठे मीठे आक़ा** صَلَّى اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी **सुन्नत** है और बे शुमार अहादीसे मुबा-रका कि इस पर दाल्ल (या'नी दलील) हैं।

म-दनी बेग और लंगरे रसाइल : **बयान** कर्दा **म-दनी बहार** में **"टीवी की तबाह कारियां"** रिसाले का भी ज़िक्र मौजूद है कि जब क़ारी साहिब ने अपने शागिर्द को मज़्कूरा रिसाला पढ़ कर सुनाया तो उन को **तौबा** की सआदत नसीब हुई, वोह नमाज़ी बने और दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हुए । जिन जिन इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से बन पड़े एक **"म-दनी बेग"** ख़रीद लें और उस में हस्बे तौफ़ीक़ **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ रसाइल, सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें वग़ैरा रखें । बेशक सारा दिन न सही सिर्फ़ हस्बे मौक़अ़ वोह म-दनी बेग अपने साथ हो और रसाइल वग़ैरा दूसरों को तोहफ़तन पेश किये जाएं । मौक़अ़ की मुना-सबत से येह भी हो सकता है कि बा'ज़ को सिर्फ़ पढ़ने के लिये दें, जब वोह पढ़ कर लौटा दें तो दूसरा रिसाला पेश करें इसी त़रह केसिटों और बड़ी किताबों की भी तरकीब की जा सकती है । यूं करने से आप बे अन्दाज़ा सवाब कमा सकते हैं मगर येह सब कुछ अपनी जेबे ख़ास से हो इस के लिये चन्दा न किया जाए । नीज़ **जश्ने विलादत** के मौक़अ़ पर या अपने मर्हूम अ़ज़ीज़ों के ईसाले सवाब के लिये मुख़्तलिफ़ अवक़ात में **लंगरे रसाइल** की तरकीब भी फ़रमाइये । दर्स व इज्तिमाआ़त और म-दनी मश्वरों में और ईसाले सवाब की मजालिस में **मक-त-बतुल मदीना** के **म-दनी रसाइल** वग़ैरा तक़्सीम फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत आ़म करने का सवाब कमाइये ।

बांटिये म-दनी रसाइल म-दनी बेग अपनाइये
और हक़दारे सवाबे आख़िरत बन जाइये

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़ज़ाब नाज़िल होने का सबब : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा कुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़्हा 339 पर पारह 9 **सू-रतुल अन्फ़ाल** की आयत नम्बर 25 में **अल्लाहु रब्बुल इबाद** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲۵﴾

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस फ़ितने से डरते रहो जो हरगिज़ तुम में ख़ास ज़ालिमों ही को न पहुंचेगा और जान लो कि **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस के तह़त फ़रमाते हैं : बल्कि अगर तुम उस से न डरे और उस के अस्बाब या'नी मम्नूआ़त को तर्क न किया और वोह फ़ितना नाज़िल हुवा तो येह न होगा कि उस में ख़ास ज़ालिम और बदकार ही मुब्तला हों बल्कि वोह (फ़ितना) नेक और बद सब को पहुंच जाएगा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुअमिनीन को हुक्म फ़रमाया कि वोह अपने दरमियान मम्नूआ़त न होने दें या'नी अपने मक्दूर तक (या'नी अपने बस और इख़्तियार के मुताबिक़) बुराइयों को रोकें और गुनाह करने वालों को गुनाह से मन्अ़ करें अगर उन्हों ने ऐसा न किया तो अ़ज़ाब उन सब को आ़म होगा, ख़ताकार और ग़ैर ख़ताकार सब को पहुंचेगा। (تفسیرِ طَبَری ج٦ ص٢١٧ رقم ١٥٩٢٣) ह़दीस शरीफ़ में है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला मख़्सूस लोगों के अ़मल पर अ़ज़ाब आ़म नहीं करता जब तक कि आ़म त़ौर पर लोग ऐसा न करें कि मम्नूआ़त को अपने दरमियान होता देखते रहें और उस के रोकने और मन्अ़ करने पर क़ादिर हों बा वुजूद इस के न रोकें, न मन्अ़ करें जब ऐसा होता है तो **अल्लाह** तआ़ला अ़ज़ाब में आ़म व ख़ास सब को मुब्तला करता है। (شرحُ السّنة للبغوی ج٧ ص٣٥٨ حدیث ٤٠٥٠) "अबू दावूद" की ह़दीस में है कि जो शख़्स किसी क़ौम में सरगर्मे मआ़सी (या'नी ना फ़रमानियों में मुब्तला) हो और वोह लोग बा वुजूद क़ुदरत के उस को न रोकें तो **अल्लाह** तआ़ला मरने से पहले उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तला करता है। (ابوداؤد ج٤ ص١٦٤ حدیث ٤٣٣٩) इस से मा'लूम हुवा कि जो क़ौम نَہْیٌ عَنِ الْمُنْکَر (या'नी बुराई से मन्अ़ करना) तर्क करती है और लोगों को गुनाहों से नहीं रोकती वोह अपने इस तर्के फ़र्ज़ की शामत में मुब्तलाए अ़ज़ाब होती है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (طبرانی)

नेक शख़्स भी अ़ज़ाब में : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना मुसल्मानों की एक भारी ता'दाद रूह़ानी व जिस्मानी और समाजी व मआ़शी वग़ैरा त़रह़ त़रह़ की परेशानियों का शिकार है, कहीं **नेकी की दा'वत** के तर्क के सबब तो येह ह़ाल नहीं ? आप ख़ुद परहेज़ गार और नेकोकार ही सही मगर दूसरों को **नेकी की दा'वत** नहीं देते और बा वुजूदे क़ुदरत गुनाहों से नहीं रोकते, आ़म मुसल्मानों बल्कि अपने घर वालों को बुराइयों में मुब्तला देख कर जी में कुढ़ते तक नहीं तो इस ह़दीसे मुबा-रका को बार बार पढ़िये, सुनिये और ख़ुद को अ़ज़ाबे इलाही से डरा कर **नेकी की दा'वत** पर कमर बस्ता हो जाइये चुनान्चे सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने ह़ज़रते जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) को हुक्म फ़रमाया : फ़ुलां शहर को उस के रहने वालों समेत ज़ेरो ज़बर कर दो, ह़ज़रते जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने अ़र्ज़ की : ऐ रब عَزَّ وَجَلَّ ! उन लोगों में तेरा एक फ़ुलां **नेक बन्दा** भी है जिस ने पलक झपकने की मिक़्दार भी तेरी ना फ़रमानी नहीं की । **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने फ़रमाया : اَقْلِبْهَا عَلَيْهِمْ فَاِنَّ وَجْهَهٗ لَمْ يَتَمَعَّرْ فِيَّ سَاعَةً قَطُّ ـ या'नी शहर उन पर उलट दो क्यूं कि उस का चेहरा मेरी ना फ़रमानियां देख कर कभी मु-तग़य्यर (या'नी तब्दील) नहीं हुवा ।

(شُعَبُ الْاِيمان ج٦ ص٩٧ حديث٧٥٩٥)

मुआ़-श-रती बुराइयों के सबब परेशान होना ईमान का तक़ाज़ा है : इस ह़दीसे पाक के तह़्त **मिरआतुल मनाजीह़** में है : इस ह़दीस शरीफ़ से वाज़ेह़ होता है कि जहां आ'माले सालिह़ा (या'नी नेकियों) से तअ़ल्लुक़ और बुराइयों से इज्तिनाब (या'नी परहेज़) ज़रूरी है वहां दीनो मिल्लत के ख़िलाफ़ साज़िशों और मुसल्मानों पर ज़ुल्मो सितम नीज़ मुआ़-श-रती बिगाड़ की वजह से **परेशान** होना भी ईमान का तक़ाज़ा है । जो लोग **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा जूई की ख़ात़िर मुआ़-श-रती बुराइयों के इज़ाले (या'नी ख़ातिमे) के लिये कोशां नहीं रहते और अ़-दमे त़ाक़त (या'नी क़ुव्वत न होने) की सूरत में इस पर परेशान भी नहीं होते उन का **तक़्वा** किस काम का ! लिहाज़ा अपनी इस्लाह़ और इबादते ख़ुदा वन्दी में मशग़ूलिय्यत के साथ साथ मुल्क व मिल्लत और मुसल्मानाने आ़लम की ज़बूं ह़ाली के ख़ातिमे और

मुआ़-शरे को ग़ैर शर-ई ह़-रकात व स-कनात से पाक करने के लिये कोशां रहना हम सब की ज़िम्मेदारी है । (मिरआतुल मनाजीह़ जि. 6 स. 516)

नेक लोगों की हलाकत की वजह : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो खु़द नेकियों के ह़रीस होते हैं, पाबन्दिये वक़्त के साथ बा जमाअ़त नमाजे़ं भी पढ़ते हैं, मगर दाढ़ी मुन्डे, मॉर्डन दोस्तों की सोह़बतों से कनारा कशी करने के बजाए मह़ज़ ह़ज़्ज़े नफ़्स की ख़ातिर (या'नी मजे़ लेने के लिये) उन की बैठकों की रौनक़ बनते उन की ग़ैर मोह़तात़ और गुनाहों भरी बातों में अगर्चे चुप रहते मगर दिल ही दिल में लुत़्फ़ अन्दोज़ होते हैं कि ज़ाहिर है नफ़्स को मज़ा न आता होता तो ऐसों के साथ क्यूं दोस्तियां निभाते ! अब जो रिवायत पेश की जा रही है वोह ऐसे लोगों के लिये ताज़ियानए इ़ब्रत (या'नी नसीह़त व इ़ब्रत का चाबुक) है चुनान्चे मन्क़ूल है : **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना यूशअ़ बिन नून عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर वह़्य भेजी कि आप की क़ौम के **एक लाख** आदमी अ़ज़ाब से हलाक किये जाएंगे जिन में **चालीस हज़ार** नेक हैं और साठ हज़ार बद । आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : **या रब** عَزَّ وَجَلَّ ! बद किरदारों की हलाकत की वजह तो ज़ाहिर है लेकिन **नेक** लोगों को क्यूं हलाक किया जा रहा है ? इर्शाद फ़रमाया : "येह नेक लोग भी उन बद किरदारों के साथ खाते और पीते हैं, मेरी ना फ़रमानियां और गुनाह देख कर कभी उन के चेहरों पर ना गवारी का असर तक नहीं आता ।"

(شُعَبُ الْإِيمان ج٧ص٥٣ رقم٩٤٢٨)

अपने दिल में बुरा जाने : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 743 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"** सफ़ह़ा 595 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : तुम में से कोई जब किसी बुराई को देखे तो उसे चाहिये कि बुराई

को अपने **हाथ** से बदल दे और जो अपने हाथ से बदलने की इस्तिताअ़त (या'नी कुव्वत) न रखे उसे चाहिये कि अपनी **ज़बान** से बदल दे और जो अपनी **ज़बान** से बदलने की भी इस्तिताअ़त न रखे उसे चाहिये कि अपने **दिल** में बुरा जाने और येह कमज़ोर तरीन ईमान की अ़लामत है।

(صَحیح مُسلِم ص٤٤ حدیث٤٩، سُنَنِ نَسائی ص٨٠٢ حدیث٥٠١٨)

क्या हम दिल में बुरा जानते हैं ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने ज़मीर से सुवाल कीजिये कि किसी को गुनाह करता देख कर हाथ या ज़बान से रोकने में ख़ुद को लाचार पाने की सूरत में आया आप ने दिल में बुरा जाना ? सद करोड़ अफ़्सोस ! बच्चों की अम्मी खाना पकाने में ताख़ीर कर दे, खाने में नमक तेज़ हो जाए, बेटा स्कूल की छुट्टी कर ले तो ज़रूर ना गवार गुज़रे लेकिन घर वालों की रोज़ाना पांचों नमाज़ें क़ज़ा हो रही हों तो माथे पर बल तक न आए, उन्हें समझाने की कोशिश तक न की जाए, हालां कि अगर बच्चा दस बरस का हो जाए और नमाज़ न पढ़े तो बाप पर **वाजिब** है कि मार कर भी पढ़ाए। वरना गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का हक़दार होगा। आप ही कहिये ! क्या आप की येह रविश दुरुस्त है ? म-सलन महकूम औलाद की बुराई देख कर हाकिम (या'नी वालिद) **हाथ से** बदले, आ़लिम **ज़बान** से बदले, जिस को येह दोनों कुदरतें हासिल नहीं वोह कम से कम **दिल** में तो बुरा जाने, मगर अब ऐसा ज़ेहन किस का रहा है ! आप सोचिये ! म-सलन **म्यूज़िक** बज रहा है, बेशक रोकने पर कुदरत नहीं मगर क्या येह आप के दिल में खटक रहा है ? क्या आप इसे बुरा महसूस कर रहे हैं ? जी नहीं, इस लिये कि ख़ुद अपने मोबाइल में भी तो مَعَاذَالله "म्यूज़ीकल ट्यून" मौजूद है ! दो अफ़राद गली में **गालम गलोच** कर रहे हैं, बुरा लगा ? जी नहीं, क्यूं ? इस लिये कि कभी कभी अपने मुंह से भी مَعَاذَالله **गाली** निकल ही जाती है। फुलां ने झूट, बोला, आप को ना गवार गुज़रा ? जी हां क्यूं ? इस लिये कि मेरा ज़ाती नुक़्सान हुवा, बाक़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये बुरा कहां से लगेगा कि ख़ुद अपनी ज़बान से भी مَعَاذَالله **झूट** निकल ही जाता है। येह मिसालें सिर्फ़ चोट करने के लिये हैं, वरना बहुत सारों की

हालत येह है कि अपने फ़ोन में म्यूज़ीकल ट्यून नहीं। गाली और झूट की आदत नहीं, फिर भी **"दिल में बुरा जानने"** का जेह्न नहीं। अगर रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये हक़ीक़ी मा'नों में बुराई को दिल में बुरा जानने की सोच बन जाए, कुढ़ने की आदत पड़ जाए तब तो मुआ-शरे में इस्लाह का दौर दौरा हो जाए क्यूं कि जब हम बुराइयों को दिल से बुरा समझने में ख़ुद पक्के हो जाएंगे, तो दूसरों को समझाना भी शुरूअ़ कर देंगे और اِنْ شَآءَاللّٰه हर तरफ़ **सुन्नतों की बहार** आ जाएगी और **"नेकी की दा'वत"** की धूम मच जाएगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे हाल पर रह्म फ़रमाए और हमें अ़क़्ले सलीम दे कि हम भी ख़ूब ख़ूब **नेकी की दा'वत** और आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत की धूम मचाने वाले बन जाएं। आइये ! सुन्नतें आ़म करने का जज़्बा बढ़ाने के लिये एक **म-दनी बहार** सुनते हैं।

तीन शराबी भाई म-दनी माहोल में आ गए ! : ज़िलअ़ **ओकाड़ा** की तह्सील दीपाल पूर (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : दीपाल पूर में हमारे ख़ानदान का शुमार वहां के अमीर तरीन घरानों में होता था मगर अफ़्सोस ! कि मेरे होश संभालने से पहले ही मेरे बड़े भाई बुरे दोस्तों की सोह्बत की वजह से **शराब** के आ़दी बन चुके थे। बुरी सोह्बत और शराब नोशी की वजह से भाई ने हमारी ता'लीम व तरबिय्यत पर कोई तवज्जोह न दी, नशे के इलावा उन्हें किसी चीज़ से कोई सरोकार ही न था। आहिस्ता आहिस्ता नशे की लत ने उन्हें घर का सामान फ़रोख़्त करने पर मजबूर कर दिया हत्ता कि उन्हों ने कपड़े की दुकान, फ़ेक्टरी और एक पूरी मार्केट जिस में कई दुकानें थीं नशे की आग में झोंक दीं, घर में लगी आग से भला घर वाले कैसे बच सकते थे ! आख़िर वोही हुवा जिस का डर था या'नी उन से छोटा और मुझ से बड़ा भाई भी **मुनश्शिय्यात** का आ़दी हो गया, इस आग ने और ज़ोर पकड़ा तो मैं भी इस की लपेट में आ ही गया और मुझे भी नशे की आ़दत पड़ गई। वालिदए मोह्-त-रमा जो कि पहले

ही बड़े भाई के नशई होने की वजह से सदमे से निढाल थीं, हम ग़म में मज़ीद इज़ाफ़े का बाइस बन गए। आख़िरे कार हमारे नसीब कुछ यूं जागे कि हमारा मंझला (या'नी दरमियाना) भाई जो कि नशे की आफ़त से महफ़ूज़ था वोह तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके मुश्कबार म-दनी माहोल में आने जाने लगा, म-दनी माहोल से वाबस्तगी की ब-र-कत से कभी कभार हमें भी **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए इज्तिमाअ़ में ले जाने में काम्याब हो जाता, लेकिन वहां हमारा दिल नहीं लगता था मगर मेरे भाई ने इन्फ़िरादी कोशिश जारी रखी और हमें **महब्बत** के साथ इज्तिमाअ़ में ले जाता रहा। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ अपने भाई की इन्फ़िरादी कोशिशों की ब-र-कत से आज **हम सब भाई जो कि कुछ अ़र्सा क़ब्ल नशे के आ़दी थे तौबा कर के दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो चुके हैं।** मुझे जब कभी अपना साबिक़ा दौर याद आता है तो दिल कांप जाता है कि अगर दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल न मिलता तो हमारा क्या बनता ? शायद येही होता कि हम आज दर दर की ठोकरें खा रहे होते और हमारे अपने भी हमें धुत्कार रहे होते, मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी माहोल के तुफ़ैल हमारे ख़ज़ां रसीद गुलज़ार में फिर से ख़ुशियों की म-दनी बहार आ गई ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करोड़हा करोड़ एह़सान कि मैं ता दमे तह़रीर 63 दिन का म-दनी तरबिय्यती कोर्स कर रहा हूं और सब से बड़े भाईजान कमो बेश 17 माह से **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर हैं।

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम दोनों जहां में मच जाए धूम
इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 109)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस म-दनी बहार के ज़िम्न में नेकी की दा'वत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की ब-र-कत से तीन शराबी भाई दा'वते इस्लामी के **म-दनी माहोल** से वाबस्ता हो गए। शराबी की ख़राबी आप ने मुला-हज़ा फ़रमाई कि उस ने कारख़ाना, कपड़े की दुकान और अपनी मार्केट सब कुछ "नशे" की आग में झोंक दिया ! वाक़ेई **शराब** बड़ी ख़राब शै है और इस से दुन्या व आख़िरत दोनों ही दाव पर लग जाते हैं। शराब इस क़दर बुरी बला है कि येह दवाअन भी नहीं पी जा सकती चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन सुवैद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने **शराब** के **मु-तअ़ल्लिक़** सुवाल किया, **हुज़ूरे पुरनूर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया : उन्हों ने अ़र्ज़ की : हम तो उसे **दवा** के लिये बनाते हैं। फ़रमाया : "येह दवा नहीं है, येह तो ख़ुद बीमारी है।" (مُسلِم ص١٠٩٧حديث ١٩٨٤) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, हुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम,** शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "तीन शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे। शराब की मुदा-वमत करने (या'नी हमेशा पीने) वाला और क़ात़ेए़ रेह़्म (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने वाला) और जादू की तस्दीक़ करने वाला।"

(مُسندِ إمام احمد بن حنبل ج٧ص١٣٩حديث١٩٥٨٦)

जादू के बारे में : ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى इस ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "और जादू की तस्दीक़ करने वाला" के तह़्त फ़रमाते हैं : इस से मुराद वोह शख़्स है जो **जादू** की तासीर बि ज़ातिही (या'नी इस में **अल्लाह** के दिये बिग़ैर ख़ुद ब ख़ुद तासीर होने) का क़ाइल हो। (مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيح ج٧ ص٢٤٢ تحتَ الحديث ٣٦٥٦)

जादू और जिन्न के वुजूद का इन्कार कुफ़्र है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "**जादू**" का वुजूद क़ुरआने करीम से साबित है लिहाज़ा इस त़रह़ का ए'तिक़ाद रखना कि "जादू" का वुजूद ही नहीं बस यूं ही लोगों की बातें हैं, येह कुफ़्र है। इसी त़रह़ **जिन्न** के वुजूद का इन्कार भी कुफ़्र है।

मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار **की तश्वीश : हज़रते** सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : हम ने दुन्या की **महब्बत** पर आपस में सुल्ह कर ली, लिहाज़ा अब हम आपस में **नेकी का हुक्म** देते हैं और न ही एक दूसरे को बुराइयों से मन्अ़ करते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस हाल पर न रखे वरना न जाने हम पर कौन सा अ़ज़ाब नाज़िल किया जाए ! (شُعَبُ الْاِیمان ج٦ ص٩٧ حدیث ٧٥٩٦)

आतश परस्त पड़ोसी मुसल्मान हो गया : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار सदियों पुराने बुज़ुर्ग हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने दौर की ह़ालत बयान कर के अ़ज़ाब की तश्वीश का इज़्हार फ़रमाया जब कि अब तो ह़ालात बे इन्तिहा **अब्तर** हो चुके हैं। सद करोड़ अफ़्सोस ! अब तो मुसल्मानों की भारी अक्सरिय्यत एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर दुन्या की शैदाई हो चुकी है और ह़ालात इतने ख़राब हो चुके हैं कि किसी को **नेकी की दा'वत** देना कुजा ! नेकी की दा'वत देने वाले की बा ज़ाबिता मुख़ा-लफ़त की जाने लगी है और बुराई से किसी को मन्अ़ करना तो बहुत दूर रहा ! अब तो ख़ूब ख़ूब बुराई की दा'वत पेश की जाती है। आह ! न अपनी इस्लाह़ की फ़िक्र है न घरबार की सुधार की परवाह है और न ही पड़ोसियों की आख़िरत बेहतर बनाने की सोच है। बहर ह़ाल हमें चाहिये कि हम ख़ुद सुधरने की सअ्य के साथ साथ दीगर इस्लामी भाइयों को भी **नेकी की दा'वत** पेश करें नीज़ अपने पड़ोसियों पर भी इन्फ़िरादी कोशिश किया करें। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के अपने पड़ोसियों पर **इन्फ़िरादी कोशिश** के कई वाक़िआ़त हैं, चुनान्चे शम्ऊ़न नामी एक आतश परस्त ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का पड़ोसी था। जब उस के इन्तिक़ाल का वक़्त क़रीब आया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उस के पास तशरीफ़ ले गए, क्या देखते हैं कि उस का सारा जिस्म आग के धुवें की वजह से सियाह पड़ गया है ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उसे इस्लाम क़बूल करने की **दा'वत** पेश की और रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ की उम्मीद दिलाई। उस ने अ़र्ज़ की, कि मैं तीन चीज़ों की वजह से इस्लाम

से दूर हूं : ﴾1﴿ जब इस्लाम के नज़्दीक "दुन्या" बहुत बुरी शै है तो फिर तुम लोग इस के हुसूल की **जुस्त-जू** क्यूं करते हो ? ﴾2﴿ मौत को यक़ीनी तसव्वुर करने के बा वुजूद उस के लिये **तय्यारी** क्यूं नहीं करते ? ﴾3﴿ तुम्हारे कहने के मुताबिक़ दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ बहुत बड़ी ने'मत है तो फिर तुम दुन्या में उस की **मरज़ी के ख़िलाफ़** काम क्यूं करते हो ? हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने इर्शाद फ़रमाया : "इन सब चीज़ों का तअ़ल्लुक़ तो आ'माल से है अ़क़ाइद से नहीं, तुम येह तो ग़ौर करो कि आतश परस्ती में वक़्त **ज़ाएअ़** कर के तुम्हें ह़ासिल क्या हुवा ? मोमिन ख़्वाह जैसा भी हो कम अज़ कम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वह़दानिय्यत (या'नी एक होने) को तो तस्लीम करता है। देखो ! तुम ने 70 साल तक इस आग को पूजा है इस के बा वुजूद हम दोनों अगर आग में कूदें तो येह हम दोनों को यक्सां या'नी बराबर जलाएगी यक़ीनन तुम्हारा इस की इबादत करना तुम्हें नहीं बचा सकेगा, हां मेरे मालिक व मौला عَزَّوَجَلَّ में ज़रूर येह **ताक़त** है कि अगर वोह चाहे तो येह आग मुझे ज़र्रा बराबर नुक़्सान न पहुंचा सके।" येह फ़रमा कर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने हाथ में आग उठा ली लेकिन उस ने आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को कोई नुक़्सान न पहुंचाया। येह देख कर शम्ऊ़न बड़ा **मु-तअस्सिर** हुवा मगर उदास हो कर कहने लगा : "मैं सत्तर साल आतश परस्ती में मुब्तला रहा, अब आख़िरी वक़्त में क्या मुसल्मान होउंगा।" आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस पर इन्फ़िरादी कोशिश जारी रखी, आख़िरे कार उस ने अ़र्ज़ की : "मैं इस शर्त़ पर मुसल्मान हो सकता हूं कि आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुझे येह अ़हद नामा लिख कर दें कि मेरे मुसल्मान हो जाने के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे तमाम गुनाहों की बख़्शिश फ़रमा देगा।" आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसी मज़्मून का अ़हद नामा लिख कर उस के ह़वाले कर दिया, लेकिन उस ने कहा : "इस पर आ़दिल लोगों की गवाही भी दर्ज करवाइये।" आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस का येह मुत़ा-लबा भी पूरा कर दिया। इस के बा'द वोह मुसल्मान हो गया और **वसिय्यत** की, कि मेरे मरने के बा'द मुझे आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ुद गुस्ल दे कर येह "अ़हद नामा" मेरे हाथ में थमा दीजियेगा ताकि **मैदाने मह़शर** में मेरे मोमिन होने का सुबूत बन सके। येह वसिय्यत करने के बा'द उस ने कलिमए शहादत पढ़ा और उस की रूह़ **क़-फ़से उ़न्सुरी** से परवाज़ कर गई। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस की

वसिय्यत पूरी फ़रमाई । **उसी** शब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़्वाब में देखा कि वोह बहुत क़ीमती लिबास और नक़्शो निगार से मुज़य्यन **ताज** पहने जन्नत की सैर में मसरूफ़ है । आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूछा : तुझ पर क्या गुज़री ? उस ने अ़र्ज़ की "**ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़िफ़रत फ़रमा दी और मुझे ऐसे ऐसे **इन्आ़मात** से नवाज़ा कि मैं बता नहीं सकता, लिहाज़ा ! अब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर कोई बार (या'नी बोझ) नहीं और येह "अ़ह्द नामा" वापस ले लीजिये क्यूं कि अब मुझे इस की ह़ाजत नहीं ।" जब बेदार हुए तो वोह अ़ह्द नामा आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हाथ में मौजूद था । आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस काम्याबी पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया । **(تذکرۃ الاولیاء ج ۱ ص ۴۱)** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़िफ़रत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم

ज़माने भर में मचा देंगे धूम सुन्नत की
अगर करम ने तेरे साथ दे दिया या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 95)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मैं आग के अन्दर पूरे 20 मिनट खड़ा रहा ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** वालों की भी क्या ख़ूब बुलन्दो बाला शानें हुवा करती हैं कि वोह **नेकी की दा'वत** भी देते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इनायत से **करामात** भी दिखाते हैं और ईमान की ने'मत दिला कर **जन्नत** में दाख़िले की सूरत भी बना देते हैं । बहर ह़ाल **पड़ोसी** की भी फ़िक्र रखनी चाहिये और उसे **नेकी की दा'वत** से मह़रूम नहीं करना चाहिये । हां ग़ैर मुस्लिम से दोस्ती रखने की इजाज़त नहीं कि एक आ़म आदमी येह ज़ेहन बनाए कि मैं इस ह़ीले से उस को मुसल्मान कर लूंगा । अलबत्ता जो आ़लिमे दीन उस ग़ैर मुस्लिम के मज़हब और बात़िल अ़क़ीदों के रद पर क़ुदरत रखता हो वोह बेशक शरीअ़त के दाएरे में रह कर उसे इस्लाम में लाने के लिये अपने क़रीब करे और उस को इस्लाम की त़रफ़ रग़बत दिलाए और उस के ए'तिराज़ात के जवाबात दे । **करामत**

की ब-र-कत से सेंकड़ों आग के पुजारियों को दाख़िले इस्लाम करने से मु-तअ़ल्लिक़ **हयाते** **आ'ला हज़रत** जिल्द अव्वल सफ़हा 183 ता 184 पर वारिद एक **ईमान अफ़्रोज़ हिकायत** समाअ़त फ़रमाइये, जिस में मेरे आक़ा आ'ला हज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ के बे मिसाल तक़्वे का भी तज़्किरा है, हिकायत को क़दरे आसान कर के पेश करने की कोशिश करता हूं चुनान्चे हज़रते मौलाना हुसैन मेरठी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : हज़रत **पीर अ़ब्दुल हमीद साहिब बग़दादी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی हिन्द के सूबे गुजरात के एक शहर बड़ोदा में तशरीफ़ लाए और जामेअ़ मस्जिद में एक दिन मग़रिब की नमाज़ पढ़ाई, मैं ने ऐसा असर कभी कुरआन शरीफ़ पढ़ने का नहीं देखा, मा'लूमात कर के इन से मिलने इन की क़ियाम गाह पर गया । **ए'जाज़े कुरआनी** के सिल्सिले में पीर साहिब ने अपना एक ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़ सुनाते हुए फ़रमाया : मैं एक मर्तबा "ईरान" गया, वहां के एक पुराने आतश कदे से तअ़ल्लुक़ रखने वाले आतश परस्तों से मुना-ज़रे की मेरी तरकीब बनी । मैं ने कह दिया कि जिस आग की तुम लोग पूजा करते हो उसी के अन्दर जा कर पूछ लिया जाए कि आया वोह अपने पूजने वालों की कोई रिआ़यत भी करती है या उस को भी जला मारती है ! मेरी इस बात को वोह लोग मज़ाक़ समझे, मगर एक वक़्त तै कर लिया गया । वक़्ते मुक़र्ररा पर सारा शहर येह "अनोखा मुना-ज़रा" देखने के लिये उमंड आया । मैं ने उन के पुजारी से कहा : चलिये आग के अन्दर ! वोह घबरा गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ **मैं आतश कदे के अन्दर दाख़िल हो गया और शो'ले मारती आग के अन्दर पूरे 20 मिनट खड़ा रहा, फिर बख़ैरो आ़फ़िय्यत बाहर निकल आया ।** येह मन्ज़र देख कर اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ बहुत सारे आतश परस्त तौबा कर के मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए । हज़रत मौलाना **हुसैन मेरठी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने पूछा : आप ने इतनी हिम्मत कैसे की ? फ़रमाया : आग में दाख़िल होते वक़्त मैं ने **कुरआने करीम** हाथ में उठा रखा था और मेरा येह ज़ेहन बना हुवा था कि जब कुरआने पाक हमें जहन्नम की आग से बचा सकता है तो दुन्या की मा'मूली आग से क्यूं नहीं बचा सकता ! उन बुज़ुर्ग से मैं ने **सरकारे आ'ला हज़रत** رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی علیہ की नमाज़ के **मु-तअ़ल्लिक़** एक मख़्सूस एहतियात का तज़्किरा किया तो वोह बेहद **मु-तअस्सिर** हुए, दूसरे दिन

मेरी उन से फिर मुलाक़ात हुई तो फ़रमाया : आज सारी रात रोते गुज़री येही कहता रहा कि खुदा वन्दा ! तेरे ऐसे बन्दे भी हैं जो इस क़दर एह़तियात़ से नमाज़ पढ़ते हैं।

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, स. 183, 184, बि तग़य्युर)

अल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा
रो रो के मुस्त़फ़ा ने दरिया बहा दिये हैं

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : इस शे'र में **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن खुदाए ग़फ़्फ़ार के दरबारे गोहर बार में अ़र्ज़ गुज़ार हैं : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! क्या जहन्नम की आग ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा के ह़क़ में अब भी सर्द न होगी ! मेरे प्यारे प्यारे परवर दगार तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत की बख़्शिश के लिये दुआ़एं करते हुए इतना रोए हैं इतना रोए हैं गोया रो रो कर दरिया बहा दिये हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मशामे जां मुअ़त्तर हो गए : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने दिल के अन्दर मह़ब्बते औलियाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام की शम्अ़ जलाने, फ़ैज़ाने औलिया पाने और दुन्या व आख़िरत बेहतर बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, आप का जज़्बए शौक़ बढ़ाने के लिये एक **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे **डेरा मुराद जमाली** (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) में मुक़ीम इस्लामी भाई के तह़रीरी बयान का खुलासा पेशे ख़िदमत है : दा'वते इस्लामी के महके महके मुश्कबार **म-दनी माह़ोल** से वाबस्तगी से क़ब्ल गुनाहों भरी ज़िन्दगी बसर हो रही थी, मेरी ज़िन्दगी के ख़ज़ां रसीदा चमन में नसीमे बहार कुछ इस त़रह़ चली कि एक दिन ह़स्बे मा'मूल मैं अपने मेडीकल स्टोर पर मौजूद था, एक इस्लामी भाई मेरे पास तशरीफ़ लाए और **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हों ने मुझे **बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत पेश की मगर मैं ने उन की बात सुनी अनसुनी कर दी। इस्लाहे़ उम्मत के जज़्बे से सरशार, उस

आशिक़े रसूल के हौसले पस्त होने के बजाए गोया मज़ीद बुलन्द हो गए ! उन्हों ने मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** बराबर जारी रखी, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं उन की **महब्बत** और मुस्तक़िल **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत के लिये तय्यार हो गया। जब मैं इज्तिमाअ़ गाह की पुरनूर फ़ज़ाओं में पहुंचा तो आशिक़ाने रसूल का ठाठें मारता समुन्दर देख कर बेहद **मु-तअस्सिर** हुवा। **तिलावते क़ुरआने पाक, सुन्नतों भरे बयानात, पुरसोज़ ना'तें और ज़िक्रुल्लाह की कैफ़ आवर सदाएं मशामे जां को मुअ़त्तर और जिस्म व रूह़ को मुसल्मल ताज़गी बख़्श रही थीं,** मैं ने गुज़श्ता गुनाहों से तौबा की और हाथों हाथ दाढ़ी सजाने की निय्यत कर ली और दा'वते इस्लामी के तहत राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र करने वाले **आशिक़ाने रसूल** के म-दनी क़ाफ़िले के हमराह सफ़र करने का ज़ेहन भी बना लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के महके महके मुश्कबार म-दनी माहोल से वाबस्तगी की ब-र-कत से मुझ गुनहगार को नेकियों से **महब्बत** और गुनाहों से नफ़रत का अ़ज़ीम जज़्बा नसीब हो गया।

हैं इस्लामी भाई सभी भाई भाई   है बेहद महब्बत भरा म-दनी माहोल
यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर   जिसे ख़ैर से मिल गया म-दनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 602)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी बहार के ज़िम्न में "नेकी" के मु-तअ़ल्लिक़ नेकी की दा'वत :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! इस्लामी भाई की इन्फ़िरादी कोशिश पर इस्तिक़ामत आख़िरे कार रंग लाई और गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने वाला नौ जवान सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में आ गया और **आशिक़ाने रसूल** की सोहबत व ब-र-कत ने गुनहगार को नेकूकार बना दिया, उसे दाढ़ी बढ़ाने, **नेकियां** अपनाने और गुनाहों से पीछा छुड़ाने का जज़्बा मिल गया। वाक़ेई "**नेकियां**" करना बड़ी सआदत की बात है। **नेकी** गुनाह मिटाती अ़ज़ाबे क़ब्र व जहन्नम से बचाती और जन्नत दिलाती है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती

इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा कुरआन, "**कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" सफ़हा 438 पर पारह 12 **सूरए हूद** आयत नम्बर 114 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे बिशारत बुन्याद है :

اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं।

दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** ﴿1﴾ जहां भी रहो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो और गुनाह के बा'द **नेकी** कर लिया करो कि वोह नेकी उस गुनाह को मिटा देगी और लोगों के साथ हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आओ। (ترمذی ج۳ص۳۹۷حدیث۱۹۹٤) ﴿2﴾ बेशक गुनाह के बा'द **नेकी** करने वाले की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जिस की तंग ज़िरह ने उस का गला घोंट दिया हो फिर वोह **नेक** अ़मल करे तो उस ज़िरह का एक ह़ल्क़ा खुल जाए फिर जब वोह दूसरी **नेकी** करे तो उस का दूसरा ह़ल्क़ा भी खुल जाए यहां तक कि वोह ज़िरह ज़मीन पर गिर जाए।

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج٦ ص١٢١ حدیث١٧٣٠٩)

गुनाह मिटाने का नुस्ख़ा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आयते मुबा-रका और 2 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मा'लूम हुवा कि जब भी गुनाह सरज़द हो जाए तो कोई **नेकी** कर लेनी चाहिये म-सलन दुरूद शरीफ़, कलिमए त़य्यिबा वग़ैरा पढ़ ले। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू ज़र गिफ़ारी** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मुझे नसीह़त करते हुए **सुल्त़ाने दो जहान,** मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब भी तुझ से कोई बुरा अ़मल सरज़द हो जाए, तो उस के बा'द कोई नेक काम कर ले कि येह **नेकी** उस बुराई को मिटा देगी। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहना नेकियों में से है ? फ़रमाया : येह तो अफ़्ज़ल तरीन नेकी है। (مُسنَد اِمام احمد ج٨ص١١٣حدیث٢١٥٤٣)

तौबा के इरादे से गुनाह करना कुफ़्र है : **येह** ह़दीसे पाक पढ़ कर مَعَاذَاللّٰه कोई येह न समझे कि बहुत ज़बर दस्त नुस्ख़ा हाथ आ गया ! अब तो ख़ूब गुनाह करते रहेंगे और لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कह लिया करेंगे तो गुनाह मिट जाएंगे। ख़ुदा की क़सम ! येह शैत़ान का बहुत बड़ा और बुरा वार है। इस इरादे से गुनाह करना कि बा'द में तौबा कर लूंगा येह अशद कबीरा या'नी सख़्त तरीन **कबीरा गुनाह** है। बल्कि **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **नूरुल इरफ़ान** सफ़ह़ा 376 पर **सूरए यूसुफ़** की आयत नम्बर 9 के तह़्त फ़रमाते हैं : **''तौबा के इरादे से गुनाह करना कुफ़्र है।''**

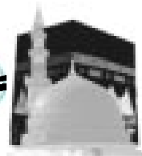
ब वक़्ते नज़्अ़ सलामत रहे मेरा ईमां — मुझे नसीब हो कलिमा है इल्तिजा या रब
जो ''म-दनी काम'' करें दिल लगा के या अल्लाह — उन्हें हो ख़्वाब में दीदारे मुस्त़फ़ा या रब
तेरी मह़ब्बत उतर जाए मेरी नस नस में
पए रज़ा हो अ़त़ा इश्क़े मुस्त़फ़ा या रब

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पड़ोसी को बुराई से न रोकने का वबाल : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पड़ोसियों के बहुत सारे ह़ुक़ूक़ हैं, इन की बजा आ-वरी के लिये हमें हर दम कोशां रहना चाहिये। पड़ोसियों को सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत और म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र वग़ैरा की दा'वत देने में भी ग़फ़्लत नहीं बरतनी चाहिये नीज़ उन को مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ गुनाहों में मुब्तला देखें तो उन्हें उन से बाज़ रखने के लिये भी भरपूर सअ़्य करनी चाहिये। **ह़ज़रते** सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : मैं ने **तौरात शरीफ़** में पढ़ा कि जिस का **पड़ोसी** ना फ़रमानी में मुब्तला हो और वोह उसे न रोके तो वोह भी इस गुनाह में शरीक है।

(اَلزُّهد لِلامام اَحمد ص١٣٤رقم٥٢٧)






पड़ोसी क़ियामत के दिन दा'वा करेगा : **पड़ोसी** को नेकी की दा'वत देने और गुनाहों से मुमा-न-अ़त करने की **अहम्मिय्यत** बहुत ज़ियादा है जैसा कि अब जो रिवायत पेश की जा रही है उस से ज़ाहिर है चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : हम ने येह बात सुनी है कि **क़ियामत के दिन** एक शख़्स दूसरे के ख़िलाफ़ **दा'वा** करेगा हालां कि वोह उस को जानता न होगा । **मुद्दआ़ अ़लैह** (या'नी जिस पर दा'वा किया गया) कहेगा : तेरा मुझ पर क्या ह़क़ है ? मैं तो तुझ को (सह़ीह़ से) जानता तक भी नहीं । **मुद्दई** (या'नी दा'वा करने वाला) कहेगा : तू मुझ को गुनाह करते देखता था और मुझे मन्अ़ नहीं करता था ।

(اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج٣ص١٨٦حديث٣٥٤٦)

बे नमाज़ी पड़ोसी को नमाज़ की दा'वत दीजिये : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बयान कर्दा दोनों रिवायतों से मा'लूम हुवा कि **पड़ोसियों** को भी ज़रूर नेकी की दा'वत देनी और बुराई मे मुमा-न-अ़त करनी चाहिये, आप का **पड़ोसी** अगर बे नमाज़ी है तो उसे नमाज़ की दा'वत दीजिये, अगर वोह नमाज़ी है और जमाअ़त में सुस्ती करता है तो उसे जमाअ़त की तल्क़ीन कीजिये ह़त्ता कि अगर आप का ज़न्ने ग़ालिब है कि समझाएंगे तो जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर देगा तो अब उसे समझाना **वाजिब** हो गया, नहीं समझाएंगे तो गुनहगार होंगे चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल" सफ़ह़ा 582 पर है : आ़क़िल, बालिग़, हुर (या'नी आज़ाद), क़ादिर (या'नी कुदरत रखने वाले) पर जमाअ़त वाजिब है, बिला उ़ज़्र एक बार भी छोड़ने वाला गुनहगार और मुस्तह़िक़े सज़ा है और कई बार तर्क करे तो फ़ासिक़ मरदूदुश्शहादह (या'नी उस की गवाही क़ाबिले रद है) और उस को सख़्त सज़ा दी जाएगी, अगर पड़ोसियों ने सुकूत किया (या'नी ख़ामोशी इख़्तियार की) तो वोह भी गुनहगार हुए ।

(دُرِّمُختارو رَدُّالْمُحتارج٢ ص٣٤٠،غُنيه ص٥٠٨)



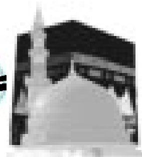


इमाम को चाहिये कि मुक़्तदी की निगरानी करे : मस्जिदों के पेश इमामों की ख़िदमतों में मश्व-रतन अ़र्ज़ है वोह अपने मुक़्तदियों की निगरानी किया करें कि उन में से कौन जमाअ़त से नमाज़ पढ़ता है और कौन नहीं, अगर कोई नमाज़ी किसी नमाज़ में ग़ैर ह़ाज़िर हो तो उस के घर जा कर या फ़ोन कर के उस की ख़बर निकालें, बीमार हो गया हो तो इ़यादत करें और सुस्ती की वजह से न आया हो तो **नेकी की दा'वत** दें और येह सिर्फ़ इमाम साह़िबान ही कि लिये नहीं है तमाम इस्लामी भाइयों को येह अन्दाज़ इख़्तियार करना चाहिये ।

फ़ारूक़े आ'ज़म ने फ़ज्र में ग़ैर ह़ाज़िर रहने वाले की मा'लूमात की : अमीरुल मुअमिनीन, इमामुल आ़दिलीन, **मुतम्मिमुल अर-बईन,** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के नमाज़ियों की ख़बर गीरी करने की एक रिवायत मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और इस के मुत़ाबिक़ अ़मल का ज़ेह्न बनाइये चुनान्चे **अमीरुल मुअमिनीन** फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने सुब्ह़ की नमाज़ में ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन अबी **ह़स्मा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को नहीं देखा । बाज़ार तशरीफ़ ले गए, रास्ते में सय्यिदुना **सुलैमान** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का घर था उन की मां ह़ज़रते सय्यि-दतुना **शिफ़ा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि सुब्ह़ की नमाज़ में, मैं ने सुलैमान को नहीं पाया ! उन्हों ने कहा : रात में नमाज़ (या'नी नफ़्लें) पढ़ते रहे फिर नींद आ गई, सय्यिदुना **उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : सुब्ह़ की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ूं येह मेरे नज़्दीक इस से बेहतर है कि रात में क़ियाम करूं । (या'नी रात भर नफ़्लें पढ़ूं) (موطّا امام مالك ج١ص١٣٤ حديث٣٠٠)

इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त वग़ैरा के सबब जमाअ़त नहीं जानी चाहिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने घर जा कर ख़बर निकाली, इस रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि शब भर नवाफ़िल पढ़ने या इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त में रात गए तक शिर्कत करने के सबब सुब्ह़ की नमाज़ क़ज़ा हो जाना कुजा अगर फ़ज्र की जमाअ़त भी चली जाती हो तो लाज़िम है कि इस त़रह़ के मुस्तह़ब्बात छोड़ कर रात आराम कर ले और बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र अदा करे ।






नमाज़ के वक़्त सो जाने वाले के लिये सर कुचलने का अ़ज़ाब :

जो लोग रातों को बैठकें जमाते और ख़ूब मह़फ़िलें चमकाते हैं और फ़ज्र की नमाज़ से क़ब्ल सो जाते और नमाज़ से ख़ुद को मह़रूम कर देते हैं उन के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है । चुनान्चे **सरकारे मदीनए मुनव्वरह,** सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : आज रात दो शख़्स (या'नी जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام और मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام) मेरे पास आए और मुझे अर्ज़े मुक़द्दसा में ले आए । मैं ने देखा कि **एक शख़्स** लैटा है और उस के सिरहाने एक शख़्स **पथ्थर** उठाए खड़ा है और पै दर पै **पथ्थर** से उस का सर कुचल रहा है, हर बार **कुचलने** के बा'द सर फिर ठीक हो जाता है । मैं ने फ़िरिश्तों से कहा : سُبْحٰنَ الله येह कौन है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : आगे तशरीफ़ ले चलिये (मज़ीद मनाज़िर दिखाने के बा'द) फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की, की पहला शख़्स जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने देखा **येह वोह था जिस ने क़ुरआन पढ़ा फिर उस को छोड़ दिया था और फ़र्ज़ नमाज़ों के वक़्त सो जाता था इस के साथ येह बरताव क़ियामत तक होगा ।**

(مُلَخَّص اَز صَحِيح بُخارى ج٤ ص٤٢٥ حديث٧٠٤٧)

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त
हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़िल्मों की 2000 V.C.Ds तोड़ दीं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ों की आ़दत बनाने, सुन्नतें अपनाने, नेकियों की ख़स्लत पाने और गुनाहों की नुहूसत से पीछा छुड़ाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये ! आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** सुनाऊं चुनान्चे एशिया की सब से बड़ी कच्ची आबादी **ओरंगी टाऊन** (बाबुल मदीना, कराची) में मुक़ीम





इस्लामी भाई के मक्तूब का ख़ुलासा है : दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में आने से क़ब्ल, मैं नेकियों से कोसों दूर गुनाहों की वादियों में महसूर (या'नी क़ैद) था, ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की तक्मील गोया मेरा मक़्सदे हयात बन चुका था। फ़ोहूश फ़िल्में डिरामे देखने के साथ साथ त़रह त़रह की दीगर बुराइयों की नुहूसतों का भी शिकार था। मेरी नेकियों से हद द-रजा ग़फ़्लत और फ़िल्मों डिरामों से जुनून की हद तक **महब्बत** का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि घर से मुझे जो माहाना एक हज़ार रुपै जेब ख़र्च मिलता था उन से नित नई फ़िल्मों और डिरामों की V.C.Ds ख़रीद कर लाता हत्ता कि मेरे पास दो हज़ार (2000) से ज़ाइद वीसीडीज़ जम्अ़ हो चुकी थीं! اَلْحَمْدُ لِلّٰه मेरी क़िस्मत में नेक हिदायत लिखी थी जिस की सूरत कुछ यूं बनी कि एक दिन एक आ़शिक़े रसूल सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए मेरे पास तशरीफ़ लाए और इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे फ़िक्रे आख़िरत से **मु-तअ़ल्लिक़** कुछ इस त़रह नेकी की दा'वत दी कि ख़ौफ़े ख़ुदा मेरे रगो पै में सरायत करता चला गया, बुरी आ़दात व मुफ़्सिद ख़यालात की इमारत **मु-तज़ल्ज़ल** हो गई, उस आ़शिक़े रसूल के हुस्ने अख़्लाक़ और इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत से मैं दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में हाज़िर हो गया। वहां होने वाले सुन्नतों भरे बयान ने मेरे इस्यां शिआ़र दिल को तब्दील कर के रख दिया और आख़िर में मांगी जाने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ का दिल पर ऐसा असर हुवा कि घर आ कर मैं ने फ़िल्मों की तमाम V.C.Ds तोड़ फोड़ डालीं। दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्तगी की ब-र-कत से मैं ने दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें घर ला कर ख़ुद भी सुनीं और घर वालों को भी सुनने के लिये दीं तो इन की ब-र-कतों से اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ हमारा सारा घराना म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर क़ादिरी र-ज़वी सिल्सिले में दाख़िल हो गया।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेक बन्दों की शानें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ब-र-कतों के क्या कहने ! इस में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतें, कुर्बतें और ब-र-कतें नसीब होती हैं, इन में कई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दे होते हैं जो अगर्चे पहचाने नहीं जाते मगर उन की ब-र-कतों से बेड़ा पार हो जाता है। उ़-लमा फ़रमाते हैं : जहां चालीस मुसल्मान सालेह़ (या'नी नेक मुसल्मान) जम्अ़ होते हैं उन में से एक **वलिय्युल्लाह** ज़रूर होता है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 184, تیسیر شرح جامع صغیر تحت الحدیث ٧١٤ ج١ ص ٣١٢) **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : बहुत से बिखरे हुए बालों, गु़बार आलूदा बदन वाले और दो पुराने कपड़ों वाले ऐसे होते हैं कि जिन की परवा नहीं की जाती अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खा लें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की क़सम को पूरी फ़रमा देता है और **बराअ बिन मालिक** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) उन्हीं लोगों में से हैं।

(سُنَنِ تِرمِذی ج٥ ص ٤٦٠ حدیث ٣٨٨٠)

अपने अच्छे अच्छे बन्दों के तुफ़ैल ऐ किब्रिया
मुझ निकम्मे और बुरे बन्दे को भी अच्छा बना

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हज़रते बराअ बिन मालिक की क़बूलिय्यते दुआ़ की हिकायत :

मज़्कूरा ह़दीसे पाक के रावी ने **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान के नतीजे में **एक ईमान अफ़्रोज़ हिकायत** बयान फ़रमाई है, आप भी सुनिये और ईमान ताज़ा कीजिये चुनान्चे रावी कहते हैं : एक मर्तबा मुसल्मानों का कुफ़्फ़ार से आमना सामना हुवा तो कुफ़्फ़ार ने मुसल्मानों को सख़्त नुक़्सान पहुंचाया। तो मुसल्मानों ने जम्अ़ हो कर इन से गुज़ारिश की : **ऐ बराअ** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! अपने रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम दे कर फ़त्ह़ की दुआ़ मांगिये ! उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

मैं तुझ को तेरी ही क़सम दे कर दुआ़ करता हूं कि हमें कुफ़्फ़ार पर ग़-लबा अ़त़ा फ़रमा और मुझे अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास पहुंचा दे (या'नी शहादत अ़त़ा फ़रमा दे) । फ़ौरन ही आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की दुआ़ मक़्बूल हो गई और मुसल्मानों को फ़त्ह़ नसीब हुई और उसी लड़ाई में ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ **शहीद** हो गए । (اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج ٤ ص ٣٤٠ حديث ٥٣٢٥) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के स-दक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

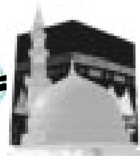
اٰمين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

चाहें तो इशारों से अपने काया ही पलट दें दुन्या की
येह शान है ख़िदमत गारों की सरकार का आ़लम क्या होगा !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गवय्या, मुह़द्दिस कैसे बना ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे अस्लाफ़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم किसी को बुराई में मुब्तला देख कर हमदर्दी से लबरेज़ दिल के साथ उस की इस्लाह़ के लिये कोशां होते, इस ज़िम्न में मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की इन्फ़िरादी कोशिश की **अछूती ह़िकायत** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और देखिये किस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने एक **गवय्ये** को अपनी नज़रे करामत से अपने वक़्त का अ़ज़ीम मुह़द्दिस व इमाम बना दिया ! चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ एक रोज़ कूफ़े के क़रीब किसी मक़ाम से गुज़र रहे थे, एक घर के पास **ज़ाज़ान** नामी मश्हूर गवय्या (या'नी गुलूकार) निहायत ही सुरीली आवाज़ में गा रहा था और कुछ औबाश लोग शराब के नशे में मस्त गाने बाजे की धुनों पर झूम रहे थे । ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : कितनी प्यारी आवाज़ है ! अगर येह आवाज़ क़िराअते क़ुरआने करीम के लिये इस्ति'माल होती तो कुछ और बात होती ! येह फ़रमा कर अपनी मुबारक चादर उस गवय्ये (SINGER) के सर पर डाली और तशरीफ़ ले गए । **ज़ाज़ान** ने लोगों से पूछा :






येह कौन साहिब थे ? लोगों ने बताया : मश्हूर सहाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ । पूछा : उन्हों ने क्या फ़रमाया ? कहा : फ़रमा रहे थे : कितनी प्यारी आवाज़ है ! अगर येह आवाज़ क़िराअते कुरआने करीम के लिये इस्ति'माल होती तो कुछ और बात होती ! येह सुन कर उस पर रिक़्क़त त़ारी हो गई वोह उठा और उठ कर उस ने अपना **बाजा** ज़ोर से ज़मीन पर दे मारा, बाजे के परख़्चे उड़ गए, फिर रोता हुवा ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस को गले से लगा लिया और ख़ुद भी रोने लगे, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से **मह़ब्बत** की मैं उस से क्यूं **मह़ब्बत** न करूं ! **ज़ाज़ान** ने गाने बाजे से तौबा कर के ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सोह़बत इख़्तियार कर ली और कुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल की और उ़लूमे इस्लामिय्या में ऐसा कमाल ह़ासिल किया कि बहुत बड़े **इमाम** बन गए । (مرقاة المفاتيح ج٤ ص٧٠٠ تحت الحديث٢١٩٩، غنية الطّالبين ج١ ص٢٦٣) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

निगाहे सह़ाबी में तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे प्यारे सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नज़र एक अनपढ़ गवय्ये (SINGER) पर पड़ गई तो उस को द-र-जए इमामत पर सरफ़राज़ कर दिया ! जब सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की नज़र का येह असर है तो निगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का क्या आ़लम होगा !

चाहें तो इशारों से अपने काया ही पलट दें दुन्या की
येह शान है ख़िदमत गारों की सरकार का आ़लम क्या होगा

नीज़ इस ईमान अफ़्रोज ह़िकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि गाने बाजे बहुत बुरी चीज़ हैं अगर येह अच्छी चीज़ होते या مَعَاذَاللّٰه **रूह़ की ग़िज़ा** होते तो सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह**





इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ज़ाज़ान पर "करामाती इन्फ़िरादी कोशिश" करने के बजाए उस की हौसला अफ़्ज़ाई करते। مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

गाने बाजे की मज़म्मत पर चार रिवायात : **नेकी की दा'वत** का सवाब कमाने की निय्यत के साथ मूसीक़ी की मज़म्मत पर वारिद कुछ **म-दनी फूल** पेश करता हूं इस से सआ़दत मन्दों की समझ में आ जाएगा कि हरगिज़ येह रूह़ की ग़िज़ा नहीं बल्कि इस से रूहा़निय्यत तबाह होती है : ﴾1﴿ दो आवाज़ों पर दुन्या व आख़िरत में ला'नत है (1) ने'मत के वक़्त बाजा (2) मुसीबत के वक़्त चिल्लाना। (اَلْکَامِل فِی ضُعَفَاءِ الرِّجَال لابن عدی ج۷ص۲۹۹) ﴾2﴿ ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती़ शाफ़ेई़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : गाने बाजे से अपने आप को बचाओ क्यूं कि येह शह्वत को उभारते और ग़ैरत को बरबाद करते हैं और येह शराब के क़ाइम मक़ाम हैं, इस में नशे की सी तासीर है। (تفسیر دُرِّمَنْثور ج۶ ص ۵۰۶، شُعَبُ الْاِیمان ج۴ص۲۸۰ حدیث۵۱۰۸) ﴾3﴿ जो गाने वाली के पास बैठे, कान लगा कर ध्यान से सुने ते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस के कानों में सीसा उंडेलेगा। (ابنِ عساکر ج۵۱ ص۲۶۳) ﴾4﴿ गाना और लह्व दिल में इस त़रह़ निफ़ाक़ उगाते हैं जिस त़रह़ पानी सब्ज़ा उगाता है। क़सम है उस ज़ाते मुक़द्दसा की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है! बेशक क़ुरआन और **ज़िक्रुल्लाह** ज़रूर दिल में इस त़रह़ ईमान उगाते हैं जिस त़रह़ पानी सब्ज़ घास उगाता है। (اَلْفِردَوس بمأثور الْخطّاب ج۳ص۱۱۵ حدیث۴۳۱۹)

गाने के रसिया का इ़ब्रत नाक अन्जाम

अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल मूसीक़ी अक्सर मुसल्मानों की नस नस में उतर चुकी है, तक़्रीबन हर हर चीज़ में मूसीक़ी मुसल्लत़ है। कार हो या हवाई जहाज़, ट्रक हो या बस, टेक्सी हो या सूज़ूकी, गधागाड़ी हो या बैलगाड़ी, मकान हो या दुकान, कारख़ाना होया गोदाम, होटल हो या पान की हट्टी, धोबी की पाट हो या ह़ज्जाम की हाट, तक़्रीबन हर जगह मूसीक़ी की धुनें सुनी जाती हैं। बच्चा आंख ही मूसीक़ी के सुरों में खोल रहा है, बेचारे के पिंघोड़े के ऊपर खिलोना लटका देते हैं जो उस को मूसीक़ी सुनाता और सुलाता है,

(शायद येही सबब हो कि कई बद नसीब सिरहाने गाने चलाते हैं जभी उन्हें नींद आती है) खिलोनों में गुड़िया हो या भालू, रेलगाड़ी हो या हवाई जहाज़ सब में मूसीक़ी यहां तक कि बच्चे की जूतियां भी मूसीक़ी बजाती हैं ! फिर येह बच्चा अगर ज़िन्दा बच गया तो बड़ा हो कर मूसीक़ी से कैसे बच सकेगा ? आइये ! एक "बड़े बच्चे" का इब्रत नाक क़िस्सा सुनते हैं : म-दनी चेनल पर "मूसीक़ी" के उ़न्वान पर होने वाले "मुका-लमे" में सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ ने सुना कि हिन्द से आई हुई एक मेल (Mail) में बताया गया कि एक नौ जवान कानों मे इयर फ़ोन (EAR PHONE) लगाए मूसीक़ी की धुनों और गाने की सुरों में मस्त बढ़ता चला जा रहा था, इस को होश ही न रहा कि जाना कहां है ! चलते चलते वोह रेल की **पटरी** पर चढ़ गया, एक दम रेलगाड़ी आई और उस को कुचल कर गुज़र गई।

जहां में हैं इब्रत के हर सू नुमूने मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने जो आबाद थे वोह मह़ल अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

लाशों के अम्बार : **दुन्याए** इस्लाम के मशहूरो मा'रूफ़ ह़-नफ़ी बुज़ुर्ग, आ़रिफ़ **बिल्लाह,** ह़ज़रते सय्यिदुना दाता अ़ली हिजवेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से मन्क़ूल एक रिवायत का खुलासा है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते **सय्यिदुना दावूद** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बेह़द सुरीली आवाज़ अ़त़ा फ़रमाई थी, आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की खुश इल्ह़ानी से पहाड़ वज्द में आ जाते थे, परन्दे उड़ते उड़ते गिर पड़ते, चरिन्दे और दरिन्दे आवाज़ सुन कर जंगलों से निकल आते, दरख़्त झूमने लगते, बहता पानी थम जाता, जंगली जानवर वग़ैरा एक एक माह तक खाना पीना छोड़ देते, छोटे बच्चे रोना और दूध मांगना तर्क कर देते, आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पुरसोज़ आवाज़ के असर से बा'ज़ अवक़ात इन्सानों की रूहें परवाज़ कर जातीं। एक बार आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पुरसोज़ आवाज़ सुन कर 100 औ़रतें वफ़ात

पा गई । शैत़ान आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के **नेकी की दा'वत** के इस अन्दाज़ से बहुत परेशान था । आख़िरे कार इस ने बन्सरी और **त़म्बूरा** बनाया और ख़ूब गाया बजाया । अब लोग दो गुरौहों में तक़्सीम हो गए जो सआ़दत मन्द थे वोह ह़ज़रते **सय्यिदुना दावूद** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की पुरसोज़ आवाज़ के शैदाई हुए और जो गुमराह थे वोह **शैत़ान** के साज़ों और गानों की त़रफ़ माइल हो गए । (كَشْفُ الْمَحْجُوب ص٤٠٧ بِتَغَيُّر) वाक़ेई गाना शैत़ान ही की ईजाद है जैसा कि "**तफ़्सीराते अह़मदिय्या**" की इस रिवायत से भी इस की ताईद होती है कि सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : शैत़ान ने सब से पहले **नौह़ा** किया और **गाना** गाया । (تفسیراتِ احمدیه ص٦٠١، اَلْفِرْدَوس بمأثور الْخطّاب ج١ ص٢٧ حديث٤٢)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि गाने बाजों का मूजिद शैत़ान मल्ऊ़न है और गाने बाजे सुनना सुनाना शैत़ान के नक़्शे क़दम पर चलना चलाना है और मुसल्मानों को शैत़ान के नक़्शे क़दम पर चलने की मुमा-न-अ़त की गई है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, "**कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" सफ़ह़ा 69 पर **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला पारह 2 **सू-रतुल ब-क़रह** आयत 208 में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِى السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۲۰۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! इस्लाम में पूरे दाख़िल हो और शैत़ान के क़दमों पर न चलो बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है ।

फ़िल्म बीं की आंख में मह़शर में आग आह ! भर जाएगी तू फ़िल्मों से भाग
बेंड बाजों से तू कोसों दूर भाग वरना दोज़ख़ की तुझे खाएगी आग
कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 667, 669)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या वाक़ेई मूसीक़ी रूह़ की गिज़ा है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुख़्तलिफ़ रिवायात व हिकायात से ज़ाहिर हुवा कि गाने बाजे और मूसीक़ी हरगिज़ रूह़ की गिज़ा नहीं बल्कि इस से रूहा़निय्यत तबाह होती है। रूह़ की गिज़ा तो **ज़िक्रुल्लाह** है जैसा कि पारह 13 **सू-रतुर्रा'द** आयत 28 में इर्शाद होता है :

اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُ ﴿۲۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो **अल्लाह** की याद ही में दिलों का चैन है।

रूह़ की गिज़ा नमाज़ है जो कि ज़िक्र ही है चुनान्चे पारह 16 **सूरए ताहा** आयत नम्बर 14 में फ़रमाने खुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ है :

وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ ﴿۱۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ाइम रख।

गाने बाजे और मूसीक़ी येह तो रूह़ में बिगाड़ पैदा करते हैं, नमाज़ों और इ़बादतों की लज़्ज़तें तबाह करते हैं, शर्मो ह़या का ख़ून करते हैं, मुसल्मान ख़वातीन को बे पर्दगी पर उभारते हैं, यक़ीनन इसे "रूह़ की गिज़ा" कहना शैतानी और साज़िशी ना'रा है। अब गाने बाजे वालों और भंगड़ा डालने और नाच नख़रे दिखाने वालों को नादान मुसल्मानों में इ़ज़्ज़त का मक़ाम दिया जाने लगा और इन्हें फ़नकार, मूसीक़ार, गुलूकार, पोप सिंगर और कॉमेडियन वग़ैरा कहा जाने लगा है वरना इन के अस्ली अल्क़ाब गवय्या, मीरासी, डोम वग़ैरा हैं। आज कल मन-चले लोग जिस को "कॉमेडियन" कहते और مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ज़्ज़त की नज़र से देखते हैं, उस का अस्ल नाम नक़्क़ाल, मस्ख़रा, सवांगिया बहरूपिया और भांड भगतिया है !

गुलूकारों और कॉमेडियनों की ख़िदमत में म-दनी इल्तिजा : तमाम मुसल्मान गुलूकारों और कॉमेडियनों की ख़िदमत में निहायत दर्द भरी म-दनी इल्तिजा करता हूं कि इन ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले कामों से सच्ची तौबा कर लीजिये। अगर इन कामों पर कुछ कमाया भी तो याद रखिये ! येह ह़राम रोज़ी है, आप उतना ही खाएंगे जितना पेट है, उतना ही पहनेंगे जितना बदन का साइज़ है बाक़ी घर के दीगर अफ़राद इस्ति'माल करेंगे और आख़िरत में जवाब देह आप होंगे। दिल बड़ा कीजिये और गाने बाजे

या कॉमेडी करने की वजह से जिन जिन से जो जो रक़्म मिली है उन को लौटा दीजिये, वोह न रहे हों तो उन के वारिसों को दे दीजिये, जो ग़ाइब हो चुके हैं या जिन जिन का याद नहीं उन की रक़्में किसी फ़क़ीरे शर-ई को पेश कर दीजिये। अगर्चे ऐसा करना नफ़्स पर सख़्त दुश्वार है मगर येह क्यूं भूलते हैं कि हर ह़ाल में मरना और क़ब्र में उतरना और अपनी करनी का फल भुगतना है, ह़राम से ह़ासिल की हुई रक़्में न लौटाईं और येह क़ब्र में सांप बिच्छू बन कर लिपट गईं तो क्या करेंगे !

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 667)

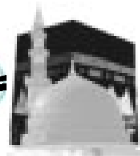
(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बयानाते अ़त्तारिया हिस्सए अव्वल में शामिल रिसाला "गाने बाजे की तबाह कारियां" और हिस्सए दुवुम में से "**गानों के 35 कुफ़्रिय्या अश्आर**" का मुता-लआ़ फ़रमाइये)

डान्स डाएरेक्टर की तौबा : **कोरंगी** (बाबुल मदीना कराची) में मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : ग़ालिबन 1992 सि.ई. की बात है, हम उन दिनों गुलिस्ताने जौहर (बाबुल मदीना) में रहते थे। छोटी सी उ़म्र में T.V. पर फ़िल्में डिरामे देखने के मन्हूस शौक़ ने मुझे **नाचने** का शौक़ीन बना दिया यहां तक कि मैं ने डान्स के मुक़ाबलों में भी ह़िस्सा लिया और इन्आ़मात भी ह़ासिल किये। जब मेरी तस्वीरें अख़्बारात में छपीं तो ख़ानदान में ख़ूब पज़ीराई मिली, मैं "फूल कर कुप्पा" हो गया और डान्स सीखने की एकेडमी के अन्दर दाख़िला ले लिया और इस **मन्हूस फ़न** में इतनी महारत ह़ासिल की, कि "डान्स डाएरेक्टर" (या'नी डान्स सिखाने वाला) बन गया। मैं ने फ़्रान्स, थाईलेन्ड वग़ैरा का सफ़र किया और हिन्द से "क्लासिकल कथक डान्स" भी सीखा। अब मैं ऐसे मक़ाम पर पहुंच चुका था कि मश्हूर अदाकाराएं और अदाकार मुझ से डान्स सीखा करते थे। इस बे ह़याई के माह़ोल में मुझे ऐसी जवान लड़कियां भी मिलीं जो अच्छे से अच्छा डान्स सीखने के लालच में "कुछ भी" करने को तय्यार थीं।

मुझे दुरूदो सलाम से महब्बत थी : इसी दौरान मेरी वालिदा का इन्तिक़ाल भी हुवा मगर मेरी आंखें न खुलीं । लेकिन वालिदा की हिदायत की बदौलत दुरूदे पाक से **महब्बत** थी । ग़ालिबन अप्रेल 2005 सि.ई. में एक डान्स प्रोग्राम के सिल्सिले में मर्कज़ुल औलिया लाहोर जाना हुवा, **हुज़ूर दाता गन्ज बख़्श** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार के सामने से गुज़रते हुए मैं ने उन्हें **दुरूदे पाक** पढ़ कर ईसाले सवाब किया ।

मर्हूम वालिदैन आग की लपेट में थे : नाच नाच कर थक हार कर जब सोया तो ख़्वाब के अन्दर क्या देखता हूं के मेरे मर्हूम वालिदैन भड़क्ती आग के घेरे में हैं और मुझे देख कर चिल्ला चिल्ला कर कुछ यूं कह रह हैं : "हम तेरी इस्लामी तरबिय्यत करने में कोताही कर गए, हाए हमारी ख़राबी ! तू डान्सर और शराबी बन गया ! अब तेरी वजह से आग हमें जला रही है, तू तौबा कर ले ताकि तू भी अ़ज़ाब से बचे और हम भी छुटें ।" मैं ख़्वाब में रोने लगा और मेरी आंख खुल गई और मैं काफ़ी देर तक रोता रहा ।

दाता दरबार में करम बालाए करम : फिर मैं **हुज़ूर दाता गन्ज बख़्श** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार पर हाज़िर हुवा, क़दमों की तरफ़ बैठ कर रो रो कर मैं ने दाता साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से फ़रियाद की : "**या दाता !** अब आप ही मुझे संभालिये !" इतने में किसी ने मेरे कन्धे पर हाथ रखा, सर उठा कर देखा तो सफ़ेद लिबास और सर पर सब्ज़ इमामे में मल्बूस एक साहिब थे, जो कि मुशफ़िक़ाना लहजे में फ़रमा रहे थे : बेटा ! मौत किसी भी वक़्त आ सकती है, जल्द गुनाहों से तौबा कर लो । मैं ने पूछा : मैं कहां जाऊं ? मुस्करा कर फ़रमाने लगे : "बाबुल मदीना कराची आ जाओ ।" येह कह कर वोह एक दम मेरी नज़रों से ओझल हो गए ! येह मेरी बेदारी का वाक़िआ है ।


जब मैं ने म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया.......: मैं बाबुल मदीना कराची पहुंचा और एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी से मुलाक़ात हुई तो उन की इन्फ़िरादी कोशिश से मैं ने सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार किया । जब अमीरे क़ाफ़िला ने सीखने सिखाने के ह़ल्क़े में **ग़ुस्ल का त़रीक़ा** बताया तो मेरा दिल उछल कर ह़ल्क़ में आ गया कि **या ख़ुदा !** मैं तो नापाकी की ह़ालत में हूं, फ़ौरन मस्जिद से बाहर निकला और उसी वक़्त ग़ुस्ल किया । म-दनी क़ाफ़िले में बताए जाने वाले त़रीक़े के मुत़ाबिक़ मैं ने रात **सलातुत्तौबा** पढ़ी और सो गया ।

मैं ने ईमान अफ़्रोज़ ख़्वाब देखा : मैं ने ख़्वाब में देखा कि वालिदए मर्ह़ूमा चांद सा चेहरा चमकाए **मस्जिदुन्-नबविय्यिशरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में नमाज़ अदा कर रही हैं, सलाम फेरने के बा'द उन्हों ने मुझे गले लगा लिया । मैं रोने लगा, अम्मीजान ने कहा : अब मैं बहुत ख़ुश हूं, आओ ! नमाज़ पढ़ते हैं, फ़ारिग़ हो कर मैं ने अब्बूजान के बारे में पूछा तो उन्हों ने एक त़रफ़ इशारा किया । मैं उस त़रफ़ चल दिया, चलते चलते एक बहुत बड़े मैदान में पहुंच गया, दरमियान में शीशे का एक कमरा था, बहुत से लोग उस के अन्दर जाने की नाकाम कोशिशें कर रहे थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं बड़े आराम से अन्दर चला गया, वहां **पांच बुज़ुर्ग** थे, एक बुज़ुर्ग जो दरमियान में क़दरे ऊंचाई पर तशरीफ़ फ़रमा थे, उन के चेहरे पर इतना नूर था कि निगाह नहीं ठहर रही थी । मैं ने उन बुज़ुर्गों से पूछा : मेरे अब्बूजान कहां हैं ? तो एक बुज़ुर्ग ने कमरे के पिछले ह़िस्से की त़रफ़ इशारा किया । वहां गया तो वालिद साह़िब अंधेरे में बैठे ज़ारो क़ित़ार रो रहे थे । मैं ने रोने का सबब पूछा : जवाब दिया : हर एक उन बुज़ुर्गों को तोह़फ़े पेश कर रहा है मगर मैं क्या पेश करूं, तुम मुझे कुछ भिजवाते ही नहीं ! यकायक एक नूर का त़श्त मेरे हाथ में आ गया, मैं ने वालिदे मर्ह़ूम को दे दिया, वालिद साह़िब मुझे साथ लिये कमरे में दाख़िल हो गए और नूरानी




चेहरे वाले बुज़ुर्ग की ख़िदमत में वोह नूरानी थाल पेश कर दिया। फिर हम वहां से बाहर निकल आए, **उस वक़्त मेरे दिल में ख़याल आया कि हो न हो येह नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग मेरे नूर वाले आक़ा मुहम्मदे मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **थे**। फिर मेरी आंख खुल गई। देखा तो मेरा जिस्म ख़ुश्बू से महक रहा था। येह ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब देखने के बा'द मैं ने तमाम गुनाहों से सच्ची पक्की तौबा की और अमीरे क़ाफ़िला के हाथों **अपने सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजा लिया और दाढ़ी शरीफ़ बढ़ाने की भी निय्यत कर ली।**

लोहे की सलाख़ मेरे बाज़ू के आर पार कर दी : चूंकि म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र से पहले मैं एक मेडम के लिये काम करता था जो डान्स शोज़ की बहुत बड़ी ऑर्गेनाइज़र (या'नी मुन्तज़िमा) थी, उस ने मुझे क़ियाम व त़आ़म और सुवारी वग़ैरा की बहुत सी आसाइशें दे रखी थीं, उस को पता चला तो वोह मेरे घर पहुंची और मुझे बुरा भला कहने लगी और मेरा इमामा तक सर से उतार कर फेंक दिया ! जब मैं उस के रो'ब में नहीं आया तो दूसरी मर्तबा वोह साथ में गुन्डे लाई जिन्हों ने मुझ पर बे तहाशा तशद्दुद किया यहां तक कि लोहे की एक सलाख़ मेरे बाज़ू के आर पार कर के मुझे शदीद ज़ख़्मी कर दिया, मैं जान बचा कर वहां से भाग निकला और एक इस्लामी भाई के हां पनाह ली, उन्हों ने मेरा इलाज करवाने के साथ और भी बहुत कुछ तआ़वुन किया। **अल्लाह** तआ़ला उन्हें जज़ाए ख़ैर दे।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मैं ने म-दनी मर्कज़ में मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ किये : कुछ ही दिनों बा'द मैं ने **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में 63 रोज़ा **म-दनी तरबिय्यती कोर्स** और 41 दिन का म-दनी क़ाफ़िला कोर्स करने की सआ़दत पाई। फिर मैं ने **इमामत कोर्स** में भी दाख़िला लिया, चन्द ही दिन गुज़रे थे कि मैं ने 12 माह के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये ख़ुद को पेश कर दिया।

मेरी पेन्ट शर्ट वाली मोॅडर्न बीवी : मेरा अक्सर ख़ानदान इंग्लेन्ड में मुक़ीम था, **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता होने से पहले ही ख़ानदान की एक पेन्ट शर्ट पहनने वाली इन्तिहाई मोॅडर्न लड़की से मेरा निकाह़ हो चुका था । जब उसे मेरी **तौबा** का इ़ल्म हुवा तो बिदक गई, दाढ़ी कटवाने का मुत़ा-लबा किया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं तौबा पर क़ाइम रहा जिस के सबब उस ने कोर्ट के ज़रीए़ मुझ से त़लाक़ ले ली । इस क़िस्से की वजह से मेरे अपने बहन भाई भी मुझ से रूठ गए । मेरे वालिदैन तो दुन्या में थे नहीं यूं मैं तने तन्हा रह गया । अब दा'वते इस्लामी वाले ही मेरे रिश्तेदार और सब कुछ थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस्लामी भाइयों ने इतनी **मह़ब्बत** दी कि मैं अपनों की जुदाई का ग़म भूल गया ।

म-दनी मर्कज़ में ए'तिकाफ़ किया तो रोज़गार मिल गया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ र-मज़ानुल मुबारक (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** के अन्दर होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में शिर्कत की सआ़दत मिली, एक दिन बयान में मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने मेरे **मु-तअ़ल्लिक़ म-दनी बहार** सुनाई तो एक इस्लामी भाई को मुझ से बहुत हमदर्दी हो गई और उन्हों ने **ई़दुल फ़ित्र** के तक़्रीबन एक हफ़्ते बा'द मुझे सिटी गवर्नमेन्ट में मुला-ज़मत पर लगवा दिया, फिर मेरी म-दनी माह़ोल में शादी भी हो गई, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! ता दमे तह़रीर डिवीज़न सत़ह़ पर "मजलिसे डोॅक्टर्ज़" और "मजलिसे खेल" के रुक्न के त़ौर पर अपनी सुन्नतों भरी तह़रीक, **"दा'वते इस्लामी"** की तरक़्क़ी के लिये कोशां हूं । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इसी साल (या'नी 2011 सि.ई. में) दोबारा 12 माह के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की पक्की निय्यत है ।

म-दनी बहार के ज़रीए म-दनी बहार : **मेरी** येही म-दनी बहार दुन्या के वाहिद हक़ीक़ी इस्लामी चेनल "**म-दनी चेनल**" पर भी दिखाई और सुनाई गई तो मुझे हैदरआबाद के इस्लामी भाई का फ़ोन आया कि यहां पर एक बद मज़हब आप की **म-दनी बहार** देख कर बहुत **मु-तअस्सिर** हुवा है और आप से मिलना चाहता है, अगर आप समझाएंगे तो उम्मीद है वोह तौबा कर लेगा, मैं **इन्फ़िरादी कोशिश** की निय्यत से हैदरआबाद पहुंच गया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! उस बद मज़हब ने न सिर्फ़ ख़ुद बुरे अक़ाइद से तौबा की बल्कि उस के अक्सर घर वाले भी ताइब हो गए और दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर सरकारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मुरीद बन गए। **अल्लाह** तआला मुझे और मेरे कुम्बे को दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیه واٰله وسلَّم

गिर पड़ के यहां पहुंचा, मर मर के इसे पाया
छूटे न इलाही ! अब संगे दरे जाना न

(सामाने बख़्शिश, स. 153)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस मज़्कूरा म-दनी बहार के मु-तअ़ल्लिक़ म-दनी फूल : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस "म-दनी बहार" से हमें बे शुमार **म-दनी फूल** चुनने को मिलते हैं। मसलन ﴾1﴿ घर के अन्दर अगर T.V. पर फ़िल्में डिरामे गाने बाजे चलते हों तो अपनी और औलाद के किरदार की तबाही का सामान होता है जैसा कि "बच्चा" फ़िल्में देख देख कर "डान्स डाएरेक्टर" बन गया ! ﴾2﴿ **दुरूद शरीफ़** से **महब्बत** भी गुनाहों भरी ज़िन्दगी से छुटकारे का सबब बनती है जैसा कि साबिक़ा डान्स डाएरेक्टर का हुवा ﴾3﴿ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِیْن को ईसाले सवाब करना हिदायत का ज़रीआ बन सकता है जैसा कि साहिबे म-दनी बहार ने दुरूद शरीफ़ पढ़ कर **हुज़ूर दाता साहिब** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को **ईसाले सवाब** किया तो

हिदायत की सबील बननी शुरूअ़ हुई ﴾4﴿ औलाद की इस्लामी तरबिय्यत न करना और बा वुजूदे कुदरत उन को गुनाहों से बाज़ न रखना भी अ़ज़ाब का बाइस बनता है जैसा कि "साहि़बे म-दनी बहार" ने अपने फ़ौत शुदा वालिदैन को ख़्वाब में आग की लपेट में देखा और वालिदैन ने अपने अ़ज़ाब का सबब बेटे का **डान्सर** और **शराबी** होना बताया। **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला पारह 28 **सू-रत्तुह़रीम** की आयत 6 में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ
(پ۲۸،التحریم:٦)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

अहले ख़ाना को दोज़ख़ से कैसे बचाएं ? : **इस** आयते करीमा के तह़त **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में है, **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर के, इबादतें बजा ला कर, गुनाहों से बाज़ रह कर घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मुमा-न-अ़त कर के और उन्हें इ़ल्म व अदब सिखा कर (अपनी जानों और अपने घर वालों को जहन्नम की आग से बचाओ) ﴾5﴿ औलाद गुनाहों से तौबा कर के, नेकियों में लगे तो फ़ौत शुदा वालिदैन को **क़ब्र** में इस की ब-र-कतें पहुंचती हैं जैसा कि साहि़बे म-दनी बहार ने अपने वालिदैने मर्ह़ूमैन को ख़्वाब के अन्दर अ़ज़ाब में पाया, जब **तौबा** की और राहे रास्त अपनाई तो वोही वालिदैन ख़्वाब में अच्छी ह़ालत में दिखाए गए। लिहाज़ा गुनाह करने वाली औलाद को चाहिये कि इस लिये भी तौबा कर ले कि उस के वालिदैने मर्ह़ूमैन क़ब्रों में रन्जीदा न हों, इस ज़िम्न में एक रिवायत मुला-ह़ज़ा हो चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : "पीर और जुमा'रात के दिन आ'माल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर पेश किये जाते हैं और **जुमुआ़** के दिन अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) और आबाअ और उम्महात (या'नी बापों और मांओं) के सामने पेश किये

जाते हैं वोह इन की नेकियां देख कर ख़ुश होते हैं और उन के चेहरों की सफ़ेदी और चमक में इज़ाफ़ा होता है पस तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो और अपने मुर्दों को तक्लीफ़ न पहुंचाओ।"

(نوادرُالاصول ج۱ص۱۷۶حدیث۹۲۵)

मर्हूम वालिदैन पर औलाद के आ'माल की पेशी : **बेटे** के आ'माल वालिदे मर्हूम को पेश किये जाने के ज़िम्न में **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 413 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "उ़यूनुल ह़िकायात जिल्द 2" सफ़ह़ा 343 पर दी हुई एक ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत चन्द अल्फ़ाज़ की तब्दीली के साथ पेश की जाती है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना स-दक़ा बिन सुलैमान जा'फ़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मेरा उ़न्फ़ुवाने शबाब था (या'नी जवानी के इब्तिदाई दिन थे) और मैं बुरी आ़दतों और दुन्या की रंगीनियों में मगन था, मगर जब मेरे वालिद साहि़ब का इन्तिक़ाल हुवा तो मेरा दिल चोट खा गया। मैं ने अपनी साबिक़ा ख़ताओं पर शरमिन्दा होते हुए बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में **तौबा** कर ली और आ'माले सालिहा (या'नी नेकियों) की त़रफ़ राग़िब हो गया। शामते नफ़्स से एक दिन फिर किसी बुरे काम का मुर-तकिब हो गया तो उसी रात वालिदे मर्हूम ख़्वाब में आए और फ़रमाया : "मेरे बेटे ! तेरे आ'माल मेरे सामने पेश किये जाते हैं तो मुझे बहुत ज़ियादा ख़ुशी होती है क्यूं कि वोह नेक लोगों के आ'माल जैसे होते हैं, लेकिन इस मर्तबा जब तेरे आ'माल पेश किये गए तो मुझे बहुत शरमिन्दगी का सामना करना पड़ा। ख़ुदारा ! मुझे मेरे फ़ौत शुदा दोस्तों के सामने रुस्वा न किया करो।" बस इस ख़्वाब के बा'द मेरी ज़िन्दगी में इन्क़िलाब आ गया, मैं डर गया और तौबा पर इस्तिक़ामत इख़्तियार कर ली। इस ह़िकायत के रावी कहते हैं : तहज्जुद की नमाज़ में हम ह़ज़रते सय्यिदुना स-दक़ा बिन सुलैमान जा'फ़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को इस त़रह़ मुनाजात करते हुए सुनते थे : ऐ सालिह़ीन की इस्लाह़ करने वाले ! ऐ भटके हुवों को सीधी राह चलाने वाले ! ऐ गुनाहगारों पर रह़्म फ़रमाने वाले ! मैं तुझ से ऐसी **तौबा** का सुवाल करता हूं जिस के बा'द कभी गुनाह की त़रफ़ न जाऊं, कभी बुराई व ज़ुल्म की त़रफ़ नज़र उठा कर भी न देखूं, ऐ ख़ालिक़ व मालिक عَزَّوَجَلَّ ! मुझे **सच्ची तौबा** की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **(عُیونُ الحِکایات ص۴۰۱)**

नफ़्सो शैत़ान हो गए ग़ालिब इन के चुंगल से तू छुड़ा या रब
कर के तौबा मैं फिर गुनाहों में हो ही जाता हूं मुब्तला या रब
नीम जां कर दिया गुनाहों ने
मर्ज़े इस्यां से दे शिफ़ा या रब

डान्स को जाइज़ कहना कैसा ? : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़ह़ा 403 ता 404 से एक निहायत मुफ़ीद सुवाल व जवाब मुला-ह़ज़ा कीजिये : **सुवाल :** "मुरव्वजा डान्स को जाइज़ कहना" कैसा है ? **जवाब :** फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जो **रक़्स** करने को जाइज़ समझे उस पर **हुक्मे कुफ़्र** है। (دُرِّمُختار ج٦ ص٣٩٦) यहां **रक़्स** से मुराद लचके तोड़े के साथ किया जाने वाला वोह नाच (डान्स) है जो कि शरअ़न **ना जाइज़** है। इश्क़े ह़क़ीक़ी के बाइस बे ख़ुदी में झूमना, **वज्द** त़ारी होना या **तवाजुद** या'नी आ़शिक़ाने ख़ुदा व रसूल के वज्दे सादिक़ की मुख़्लिसाना नक़्क़ाली مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कुफ़्र नहीं बल्कि ऐ़न सआ़दत है।

मुझे नाच गाने से नफ़रत अ़त़ा हो
मेरी मग़्फ़िरत बे ह़िसाब ऐ ख़ुदा हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नेकी की दा'वत का तारिक हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के त़रीक़े पर नहीं : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद है : لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَرْحَمْ صَغِيْرَنَا وَيُوَقِّرْ كَبِيْرَنَا وَيَأْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ

या'नी वोह हम में से नहीं जो हमारे **छोटों** पर रह़्म न करे और **बड़ों** की इ़ज़्ज़त न करे और **नेकी का हुक्म** न दे और बुराई से मन्अ़ न करे । (سُنَنِ تِرمِذی ج۳ص ۳۷۰ حدیث۱۹۲۸)

नेकी की दा'वत सिर्फ़ उ़-लमा पर नहीं अ़वाम पर भी लाज़िम है :

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ **"नेकी का हुक्म** न दे और बुराई से मन्अ़ न करे" के तह़त फ़रमाते हैं : हर शख़्स अपनी त़ाक़त और अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़ दीनी अह़काम लोगों में जारी करे । येह सिर्फ़ उ़-लमा का ही फ़र्ज़ नहीं सब पर लाज़िम है, ह़ाकिम हाथ से बुराइयां रोके, आ़लिम आ़म ज़बानी तब्लीग़ से येह फ़र्ज़ अन्जाम दे । फ़ी ज़माना इस से बहुत ग़फ़्लत है । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 416)

मैं नेकी की दा'वत की धूमें मचाऊं
तू कर ऐसा जज़्बा अ़ता या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ'राबी ने जब मस्जिद में पेशाब कर दिया.....: **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हम नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मस्जिद में मौजूद थे कि एक आ'राबी (या'नी देहाती) आया और मस्जिद में खड़े हो कर पेशाब करना शुरूअ़ कर दिया । जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने उसे पुकारा : "ठहरो !" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि इसे न रोको छोड़ दो । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ख़ामोश हो गए ह़त्ता कि उस ने पेशाब कर लिया । फिर **मुबल्लिग़े आ'ज़म** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे बुला कर (नरमी व शफ़्क़त) से फ़रमाया : **"येह मसाजिद पेशाब और गन्दगी के लिये नहीं"** येह तो सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ज़िक्र, नमाज़ और तिलावते क़ुरआन के लिये हैं । फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

ने किसी को पानी लाने का हुक्म दिया, वोह पानी का डोल लाया और उस (या'नी पेशाब की जगह) पर बहा दिया।

(صَحيح مُسلِم ص١٦٤ حديث ٢٨٥)

नेकी की दा'वत में नरमी ज़रूरी है : मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे मुबा-रका के तह़्त फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि (**नजिस** या'नी नापाक) ज़मीन अगर्चे सूख कर पाक हो जाती है (जब कि उस से नजासत के अ-सरात ज़ाइल हो जाएं) लेकिन ज़मीन का धोना बहुत ही बेहतर है कि इस से गन्दगी का रंग व बू भी जल्दी जाता रहता है और इस से **तयम्मुम** भी जाइज़ हो जाता है। इस ह़दीस (में पानी का डोल बहाने के तज़्किरे) से येह लाज़िम नहीं आता कि नापाक ज़मीन बिग़ैर धोए पाक नहीं हो सकती नीज़ मस्जिद में पाकी के इलावा सफ़ाई भी चाहिये और येह धुलने से ही ह़ासिल होती है। मज़ीद फ़रमाते हैं : इस में मुबल्लिग़ीन को त़रीक़ए तब्लीग़ की ता'लीम है कि तब्लीग़ अख़्लाक़ और नरमी से होनी चाहिये।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 326)

पेशाब करते करते अचानक रुक जाने के तिब्बी नुक़्सानात : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब कोई पेशाब कर रहा हो उस को चौंका देने वाली आवाज़ लगाने और डराने से बचना चाहिये क्यूं कि पेशाब करते करते किसी ख़ौफ़ वग़ैरा के सबब अधूरा पेशाब फ़ौरन रोक देने से तिब्बी तौर पर इतने सख़्त नुक़्सानात पहुंच सकते हैं जितने सांप के डसने से भी नहीं हो सकते ! पेशाब अधूरा छोड़ देने की वजह से जुनून (या'नी पागल पन और बेहोशी के दौरे पड़ने) और गुर्दों की मोहलिक बीमारियां हो सकती हैं।

खड़े खड़े पेशाब करना सुन्नत नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायत में खड़े खड़े पेशाब करने का तज़्किरा है, इस ज़िम्न में अ़र्ज़ है कि खड़े खड़े पेशाब करना सुन्नत नहीं है चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द अव्वल सफ़हा 407 पर है : **उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना** आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : जो शख़्स तुम से येह कहे कि नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم खड़े हो कर पेशाब करते थे तो तुम उसे सच्चा न जानो, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नहीं पेशाब फ़रमाते मगर बैठ कर ।

(سُنَنِ تِرمِذی ج۱ ص۹۰ حدیث ۱۲)

खड़े खड़े पेशाब करने के नुक़्सानात : अफ़्सोस ! आज कल खड़े खड़े पेशाब करने का आ़म रवाज हो चुका है बिल ख़ुसूस मत़ार (AIR PORT) और दीगर ख़ास ख़ास मक़ामात पर खड़े हो कर पेशाब करने का मख़्सूस इन्तिज़ाम होता है । इस त़रह पेशाब करने से जहां **सुन्नत** फ़ौत होती है वहां इस के त़िब्बी नुक़्सानात भी हैं चुनान्चे त़िब्बी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ खड़े खड़े पेशाब करने से मसाने का ग़ुदूद मु-तवर्रिम हो कर (या'नी सूज कर) बढ़ जाता है जिस के बाइ़स पेशाब तक्लीफ़ से आने, धार पतली होने, क़त़रा क़त़रा आने बल्कि पेशाब बन्द हो जाने के अमराज़ पैदा हो सकते हैं । खड़े खड़े पेशाब करने वाले बा'ज़ लोग बिग़ैर धोए या बे ख़ुश्क किये पेन्ट का बटन या ज़न्जीर बन्द कर लेते हैं जिस से उन की रानों वग़ैरा पर पेशाब के छींटे गिरते हैं, इस त़रह बिला उ़ज़्र बदन को नापाक करने वाले गुनाहगार होने के साथ साथ त़िब्बन भी नुक़्सान में पड़ सकते हैं एक **मुस्तशरिक़** (या'नी ऐसा फ़िरंगी (युरोपियन फ़र्द) जो मशरिक़ी ज़बानों म-सलन उर्दू वग़ैरा का माहिर हो) डोक्टर जोंट मिलन (Dr. Jaunt Milen) कहता है : सुरीनों (या'नी बदन का वोह ह़िस्सा जो बैठने में ज़मीन पर लगता है वोह) और उस

के अत्राफ़ की एलर्जी, रानों की खुजली और फुड़ियों, **पेड़ू** (या'नी नाफ़ के नीचे के हिस्से) की खाल उधड़ने की बीमारी, पर्दे की मख़्सूस जगह के ज़ख़्म के मरीज़ जब मेरे पास आते हैं तो उन में अक्सर वोही होते हैं जो पेशाब के छींटों से नहीं बचते ।

पेशाब के छींटों से न बचने का अ़ज़ाब : **हज़रते** सय्यिदुना अबी **बकरह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم के साथ चल रहा था और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ थामा हुवा था । एक आदमी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बाईं त़रफ़ था । दरीं अस्ना हम ने अपने सामने **दो क़ब्रें** पाईं तो मह़बूबे ख़ुदाए तव्वाब, नुबुव्वत के आफ़्ताब, जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इन दोनों को **अ़ज़ाब** हो रहा है और किसी बड़े अम्र की वजह से नहीं हो रहा, तुम में से कौन है जो मुझे एक टहनी ला दे । हम ने एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश की तो मैं सब्क़त ले गया और **एक टहनी** (या'नी शाख़) ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हो गया । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के दो टुकड़े कर दिये और दोनों क़ब्रों पर एक एक रख दिया फिर इर्शाद फ़रमाया : येह जब तक तर रहेंगे इन पर अ़ज़ाब में कमी रहेगी और इन दोनों को **ग़ीबत** और **पेशाब** की वजह से अ़ज़ाब हो रहा है ।

(مُسند اِمام احمد ج۷ص۳۰٤حدیث۲۰۳۹۵)

आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इ़ल्मे ग़ैब है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **ग़ीबतों** और पेशाब के छींटों से न बचना **क़ब्र** के अ़ज़ाब के अस्बाब में से है । आह ! हमारा वोह नाज़ुक बदन जो कि मा'मूली कांटे की चुभन, दो पहर की धूप की तपिश व जलन और बुख़ार की मा'मूली सी अगन बरदाश्त नहीं कर सकता वोह **क़ब्र** का होलनाक अ़ज़ाब कैसे सह सकेगा । **या अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! हम पेशाब की आलू-दगियों के जुर्मों, ग़ीबतों, चुग़लियों और छोटे बड़े तमाम गुनाहों से तौबा करते हैं, **प्यारे प्यारे मालिक** عَزَّ وَجَلَّ ! हम से हमेशा हमेशा कि लिये राज़ी हो जा और हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बयान कर्दा रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को **इल्मे ग़ैब** है जभी तो ब अ़त़ाए ख़ुदाए वहहाब عَزَّوَجَلَّ क़ब्र का अ़ज़ाब मुला-ह़ज़ा फ़रमा लिया जैसा कि बयान कर्दा ह़दीसे पाक से ज़ाहिर है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **ह़दाइके़ बख़्शिश** **शरीफ़** में फ़रमाते हैं :

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
म-लकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इयां नहीं

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : **सरे अ़र्श :** अ़र्श के ऊपर । **म-लकूत :** फ़िरिश्तों के रहने की जगह । **इयां :** ज़ाहिर ।

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अ़र्श के ऊपर और फ़र्श या'नी ज़मीन के अन्दर का सब कुछ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पेशे नज़र है। दुन्या जहान में कोई भी ऐसी शै नहीं जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर ज़ाहिर न हो ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शराबी पर इन्फ़िरादी कोशिश का नतीजा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "नरमी" से जो काम होता है वोह "गरमी" से नहीं हुवा करता और मुबल्लिग़ को तो "मोम" से ज़ियादा नर्म और बर्फ़ से ज़ियादा ठन्डा रहना चाहिये, डांट डपट और झाड़ झपट करने से किसी की इस्लाह़ होनी मुश्किल है। **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی "एह़याउल उ़लूम" में नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना **मुह़म्मद बिन ज़-करिय्या** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكِبْرِيَا फ़रमाते हैं : एक बार मैं ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुह़म्मद बिन आ़इशा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास ह़ाज़िर हुवा, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नमाज़े मग़रिब के बा'द मस्जिद से घर की जानिब रवाना हुए, रास्ते में एक क़ुरैशी नौ जवान नशे में धुत नज़र

आया, उस ने एक औ़रत को पकड़ लिया, औ़रत चिल्लाई, लोग लपके और उस नौ जवान पर टूट पड़े, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने आ़इशा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उसे पहचाना और लोगों से छुड़ा कर शफ़्क़त के साथ सीने से लगा लिया, अपने घर लाए और उसे सुला दिया। जब वोह जागा तो उस का नशा उतर चुका था। उसे नशे के दौरान होने वाले बे ह़याई के क़िस्से और पिटाई का मा'लूम हुवा ते मारे शर्म के रो पड़ा और जाने लगा। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने आ़इशा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस को रोका और निहायत नरमी के साथ **नेकी की दा'वत** दी और एह़सास दिलाया कि बेटा ! आप तो क़ुरैशी हैं ! आप की ख़ानदानी शराफ़त मरह़बा ! येह तो ग़ौर फ़रमाइये कि आप किस अ़ज़ीम हस्ती की औलाद हैं ! बेटा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरिये और हमेशा के लिये शराब नोशी और दीगर गुनाहों से तौबा कर लीजिये। वोह नौ जवान इस प्यार भरी **नेकी की दा'वत** से पानी पानी हो गया और उस ने रो रो कर तौबा की। शराब और दीगर गुनाहों के क़रीब न जाने का अ़ह्द किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने शफ़्क़त से उस का माथा चूमा और ख़ूब ह़ौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई। वोह बेह़द **मु-तअस्सिर** हुवा और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सोह़बत में रहने लगा और अह़ादीसे मुबा-रका लिखने पर मामूर हुवा। **(ماخوذاز:إحياءُ العلوم ج٢ص ٤١١)**

है फ़लाह़ो कामरानी नरमी व आसानी में — हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में
*डूब सकती ही नहीं मौजों की तुग़यानी में — जिस की कश्ती हो **मुह़म्मद** की निगहबानी में*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मैं ने उसे क़त्ल कर के ख़ुदकुशी कर लेनी थी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों से पीछा छुड़ाने, नमाज़ की पाबन्दी का ज़ेह्न बनाने, मक्की म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें अपनाने, दिल में **इ़श्क़े रसूल** की शम्अ़ जलाने, जन्नतुल फ़िरदौस में जगह पाने और अ़ज़ाबे नार से ख़ुद को बचाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। सुन्नतों भरे **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र का मा'मूल बनाइये और **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारिये। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक

म-दनी बहार पेश की जाती है। **एक** मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के बयान का ख़ुलासा है : मुझे **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के दौरान एक मस्जिद में नमाज़े जुमुआ़ से क़ब्ल सुन्नतों भरा बयान करने की सआ़दत ह़ासिल हुई, बयान के इख़्तिताम पर मस्जिद में मौजूद इस्लामी भाइयों को उन की पेश आ-मदा परेशानियों के रूह़ानी इलाज के लिये "ता'वीज़ाते अ़त्तारिया" ह़ासिल करने की तरग़ीब दी। एक साहि़ब नमाज़े अ़स्र के वक़्त मेरे पास तशरीफ़ लाए और अपना मस्अला कुछ इन अल्फ़ाज़ में बयान किया : **कुछ अ़र्से क़ब्ल मैं रूज़गार के सिल्सिले में पाकिस्तान से बाहर गया तो वहां जा कर चोरी, डाका ज़नी जैसे जराइम और दूसरे ग़ैर क़ानूनी कामों में मुलव्वस हो गया** जब कि पाकिस्तान में मेरी ग़ैर मौजू-दगी में घर पर येह क़ियामत टूटी कि किसी ने मेरे बच्चों की अम्मी पर ग़लत़ व बे बुन्याद इल्ज़ामात आइद कर दिये जिस का नतीजा उस की ख़ुदकुशी की सूरत में ज़ाहिर हुवा। जब मुझे इस सानिहे की ख़बर दी गई तो मैं सदमे से पागल हो गया और फ़ौरी तौर पर पाकिस्तान अपने गाउं आ पहुंचा। **नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर मैं ने अपनी अहलिया पर ग़लत़ तोहमत लगाने वाले को क़त्ल कर के ख़ुद भी ख़ुदकुशी कर लेने का इरादा कर लिया।** मैं ने इस वारिदात के लवाज़िमात भी मुकम्मल कर लिये थे लेकिन इस मस्जिद में नमाज़े जुमुआ़ अदा करने के साथ साथ मुझे आप का बयान सुनने की सआ़दत भी नसीब हुई, बयान के इख़्तिताम पर आप ने मुश्किलात के ह़ल के लिये "ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या" ह़ासिल करने की जो तरग़ीब दी उस से ढारस बंधी। आप का बयान सुन कर मेरे गुनाहों भरे इरादे **मु-तज़ल्ज़ल** हो गए और मैं ने येह फ़ैसला किया है कि आप से अपना मस्अला बयान कर के कोई ऐसी सूरत इख़्तियार की जाए कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। उस की बातें सुन कर पहले तो मैं घबराया लेकिन फिर **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم को याद कर के मौक़अ़ की मुना-सबत से मुआ़-मले को ह़ल करने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के सुन्नतों भरे तह़रीरी बयानात के तीन रसाइल "**ग़ुस्से का इलाज, अ़फ़्वो दर गुज़र की फ़ज़ीलत और ख़ुदकुशी का इलाज**" से रहनुमाई लेते हुए तक़रीबन एक घन्टे तक उन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करता रहा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ आख़िरे कार वोह इस्लामी भाई अपने ख़त़रनाक इरादे से बाज़ आ गए और यूं **दो क़ीमती जानें ज़ाएअ़ होने से मह़फ़ूज़ हो गईं** उन्हों ने अश्कबार आंखों से तौबा की और मअ़ ना बालिग़ बच्चों के ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के मुरीद हो गए, घर की ह़िफ़ाज़त और कारोबार में ब-र-कत के लिये "ता'वीज़ाते अ़त्त़ारिय्या" भी ह़ासिल किये। जब मैं ने उन्हें **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की रग़बत दिलाई तो पुरनम आंखों के साथ भर्राई हुई आवाज़ में कहा : "اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **अब तो मेरी तमाम ज़िन्दगी दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों ही में गुज़रेगी।**"

ऐ इस्लामी भाई न करना लड़ाई   कि हो जाएगा बदनुमा म-दनी माह़ोल
संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَاللّٰه   तुम अपनाए रख्खो सदा म-दनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुबल्लिग़ीन जुमुआ़ को बयान किया करें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस **म-दनी बहार** से **जुमुआ़** के सुन्नतों भरे बयान की ब-र-कतें मा'लूम हुईं, दा'वते इस्लामी के तमाम ज़िम्मेदारान को चाहिये कि जहां जहां मुम्किन हो जुमुआ़ में बदल बदल कर **मुबल्लिग़ीन** के सुन्नतों भरे बयानात की तरकीब फ़रमाया करें क्यूं कि नमाज़े जुमुआ़ में आने वाले कई अफ़राद ऐसे होते हैं जो उ़मूमन किसी भी इज्तिमाअ़ में शिर्कत नहीं करते, इस त़रह़ ऐसों तक भी दा'वते इस्लामी का **म-दनी पैग़ाम** पहुंच जाएगा और कई ख़ुश नसीबों का दिल चोट खा जाएगा और اِنْ شَآءَاللّٰه वोह गुनाहों से ताइब हो कर पांच वक़्त के नमाज़ी बन जाएंगे और उन पर आप की मज़ीद **इन्फ़िरादी कोशिश** اِنْ شَآءَاللّٰه उन्हें म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बना कर दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता कर के सुन्नतों के सांचे में ढाल देगी। जैसा कि अभी आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि मुआ़-शरे का बिगड़ा हुवा ज़िन्दगी से बेज़ार शख़्स मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे बयान और **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से क़त्ले मुस्लिम से बाज़ रह कर और **ख़ुदकुशी** का इरादा तर्क कर के ताइब हो गया।

हर दो मिनट में तीन ख़ुद कुशियां : अफ़्सोस ! आज कल "ख़ुदकुशी" कुछ ज़ियादा ही आ़म हो गई है, इस का एक बहुत बड़ा सबब इल्मे दीन से दूरी है, दाढ़ी मुन्डों, या जज़्बाती मॉडर्न बे रीश लड़कों, स्कूल व कॉलेज के त़ालिबे इल्मों, दुन्यवी ता'लीम याफ़्तों या बे पर्दा व फ़ेशन एबल औ़रतों में ही ख़ुदकुशी का मैलान देखा जा रहा है । आप ने कभी नहीं सुना होगा कि फ़ुलां दीनी त़ालिबे इल्म या आ़लिमे दीन या मुफ़्ती साहि़ब या शरीअ़त की पाबन्द पर्दा नशीन नेक बीबी ने ख़ुदकुशी कर ली । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 472 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"बयानाते अ़त्तारिया (हि़स्सए दुवुम)"** सफ़ह़ा 404 ता 406 पर है : **गुनाहों** की कसरत और अह़वाले आख़िरत के मुआ़-मले में जहालत के सबब अफ़्सोस ! हमारे वत़ने अ़ज़ीज़ पाकिस्तान में **ख़ुदकुशी** का रूज्ह़ान बढ़ता ही चला जा रहा है । एक अख़्बारी रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ अगस्त 2004 सि.ई. में पाकिस्तान में **ख़ुदकुशी** की 68 वारिदातें हुईं जिन में बाबुल मदीना **कराची** का पहला नम्बर रहा जब कि दूसरा नम्बर **मदीनतुल औलिया मुल्तान** वालों का आया । उसी अख़्बार के मुत़ाबिक़ **दुन्या में हर 40 सेकन्ड में ख़ुदकुशी की एक वारिदात होती है !**

क्या ख़ुदकुशी से जान छूट जाती है ? : ख़ुदकुशी करने वाले शायद येह समझते हैं कि हमारी जान छूट जाएगी ! ह़ालां कि इस से जान छूटने के बजाए ना राज़िये रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की सूरत में निहायत बुरी त़रह़ फंस जाती है । ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **ख़ुदकुशी** का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा ।

आग में अ़ज़ाब : ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स जिस चीज़ के साथ **ख़ुदकुशी** करेगा वोह जहन्नम की आग में उसी चीज़ के साथ **अ़ज़ाब** दिया जाएगा ।

(صَحیح بُخاری ج ٤ ص ٢٨٩ حدیث ٦٦٥٢)

उसी हथियार से अ़ज़ाब : **ह़ज़रते** सय्यिदुना साबित बिन ज़ह्ह़ाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि राह़ते क़ल्बे नाशाद, मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है : जिस ने लोहे के हथियार से **ख़ुदकुशी** की तो उसे जहन्नम की आग में उसी हथियार से अ़ज़ाब दिया जाएगा।

(صَحیح بُخاری ج۱ ص ۴۵۹ حدیث ۱۳۶۳)

गला घोंटने का अ़ज़ाब : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी, सरकारे दो आ़लम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जिस ने अपना गला घोंटा तो वोह जहन्नम की **आग में अपना गला घोंटता रहेगा** और जिस ने ख़ुद को नेज़ा मारा वोह जहन्नम की आग में ख़ुद को नेज़ा मारता रहेगा। (ایضاً ص ۴۶۰ حدیث ۱۳۶۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ाली थैला : **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : जो दिल अच्छाई को अच्छाई न समझे और बुराई को बुराई तस्लीम न करे तो उस के ऊपर वाले हिस्से को ऐसे नीचे कर दिया जाएगा जैसे थैले को उल्टा किया जाता है और फिर थैले के अन्दर की चीज़ें बिखर जाती हैं।

(مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبه ج۸ ص۶۶۷ رقم۱۲۴)

दिल के "अन्धे" और "औंधे" होने के मा'ना : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वाक़ेई इस में बरबादी ही बरबादी है कि आदमी का दिल अच्छाई को अच्छाई और बुराई को बुराई मानने ही से इन्कार कर दे। हमें गुनाहों से हमेशा बचना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से क़ल्बे सलीम (या'नी सह़ीह़ व सलामत दिल) त़लब करना चाहिये, वरना अभी आप ने दिल की तबाही के **मु-तअ़ल्लिक़** मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم का इर्शाद मुला-ह़ज़ा फ़रमाया। याद रखिये ! गुनाहों की कसरत के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (طبرانی)

सबब पहले दिल "अन्धा" होता और फिर "औंधा" या'नी उल्टा हो जाता है जो कि आख़िरत के लिये इन्तिहाई तबाह कुन है चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 561 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत"** सफ़ह़ा 405 पर है : तीन चीजें अ़ला-ह़दा अ़ला-ह़दा हैं, नफ़्स, रूह़, क़ल्ब (या'नी दिल) । **रूह़** ब मन्ज़िला बादशाह के है और **नफ़्स व क़ल्ब** इस के दो वज़ीर हैं । **नफ़्स** इस को हमेशा शर की त़रफ़ ले जाता है और क़ल्ब जब तक साफ़ है ख़ैर की त़रफ़ बुलाता है और (مَعَاذَاللہ (عَزَّوَجَلَّ कस्रते मआ़सी (या'नी गुनाहों की ज़ियादती) और ख़ुसूसन कस्रते बिदआ़त से "अन्धा" कर दिया जाता है । अब उस में ह़क़ के देखने, समझने ग़ौर करने की क़ाबिलिय्यत नहीं रहती मगर अभी ह़क़ सुनने की इस्ति'दाद (या'नी क़ाबिलिय्यत) बाक़ी रहती है और फिर (مَعَاذَاللہ (عَزَّوَجَلَّ "औंधा" कर दिया जाता है । अब वोह न ह़क़ सुन सकता है और न देख सकता है, बिल्कुल चौपट (या'नी वीरान) हो कर रह जाता है । (फिर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया :) **क़ल्ब** (या'नी दिल) ह़क़ीक़तन उस **मुज़्ग़ए** गोश्त (या'नी गोश्त के लोथड़े) का नाम नहीं बल्कि वोह एक **"लत़ीफ़ए ग़ैबिय्या"** है जिस का मर्कज़ येह **मुज़्ग़ए** गोश्त (या'नी दिल) है सीने के बाईं (या'नी उल्टी) जानिब और नफ़्स का मर्कज़ ज़ेरे नाफ़ (या'नी नाफ़ के नीचे) है इसी वासित़े शाफ़ेइय्या (या'नी शाफ़ेई ह़ज़रात) सीने पर हाथ बांधते हैं कि "नफ़्स" से जो वसाविस उठें वोह "क़ल्ब" तक न पहुंचने पाएं और **ह़-नफ़िय्या** (या'नी ह़-नफ़ी ह़ज़रात) ज़ेरे नाफ़ बांधते हैं ।

तौफ़ीक़ नेकियों की ऐ रब्बे करीम दे
बदियों से बचने वाला तू क़ल्बे सलीम दे

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुआ़फ़ी नहीं मिलेगी ? : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबुद्दर्दाअ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि तुम **नेकी का हुक्म** देते रहना और बुराई से रोकते रहना वरना तुम पर **ज़ालिम बादशाह**

मुसल्लत़ कर दिया जाएगा जो तुम्हारे छोटे पर रह़्म नहीं करेगा और तुम्हारे नेक लोग दुआ़ करेंगे मगर उन की दुआ़एं क़बूल नहीं होंगी, वोह मुआ़फ़ी मांगेंगे मगर उन को मुआ़फ़ी नहीं मिलेगी । (اِحیاءُ العُلوم ج۲ ص۳۸۳)

बुरी बातों से रोको वरना.......! : ख़ली-फ़तुल मुस्लिमीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम इस आयत को पढ़ते हो :

يَاۤ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ (پ۷، المآئدۃ:۱۰۵)

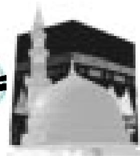
तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी फ़िक्र रखो, तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो ।

(या'नी तुम इस आयत से येह समझते होगे कि जब हम ख़ुद हिदायत पर हैं तो गुमराह की गुमराही हमारे लिये मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) नहीं, हम को किसी गुमराह को गुमराही से मन्अ़ करने की ज़रूरत नहीं) मैं ने **मीठे म-दनी आक़ा** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि लोग अगर बुरी बात देखें और उस को न बदलें तो क़रीब है कि **अल्लाह** तआ़ला उन सब को अपने अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा दे ।

(سُنَن اِبن ماجه ج٤ ص٣٥٩ حديث ٤٠٠٥)

इस ह़दीसे पाक के तह़त "मिरआतुल मनाजीह़" में है : क़ुरआने करीम की इस आयत "يَاۤ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी फ़िक्र रखो, तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो ।" के ह़वाले से बा'ज़ लोग समझते थे कि اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَ نَہْیٌ عَنِ الْمُنْکَر (नेकी का हुक्म करने और बुराई से मन्अ़ करने) की ज़रूरत नहीं बल्कि आदमी को अपनी इस्लाह़ करनी चाहिये दूसरों के गुनाह या कोताहियां इस का कुछ बिगाड़ नहीं सकतीं, ह़ज़रते **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस मुग़ा-लते़ को दूर करते हुए **रसूलुल्लाह** (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم)






के इस इर्शादे गिरामी के ह़वाले से बताया कि जब लोग बुराई को देख कर उसे बदलने की कोशिश न करें तो वोह सब अ़ज़ाब में मुब्तला होते हैं। दूसरी रिवायात से येह बात वाज़ेह़ होती है कि इस तब्दीली का तअ़ल्लुक़ त़ाक़त से है या'नी बुराई को बदलने वाले लोग इस बात की त़ाक़त रखने के बा वुजूद न बदलें तो वोह भी अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ होंगे।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 507)

मज़्कूरा आयते मुक़द्दसा के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : मुसल्मान कुफ़्फ़ार की मह़रूमी पर अफ़्सोस करते थे और उन्हें रन्ज होता था कि कुफ़्फ़ार इनाद (या'नी अ़दावत) में मुब्तला हो कर दौलते इस्लाम से मह़रूम रहे। **अल्लाह** तआ़ला ने उन (मुसल्मानों) की तसल्ली फ़रमा दी कि इस में तुम्हारा कुछ ज़रर (या'नी नुक़्सान) नहीं اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी भलाई का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने) का फ़र्ज़ अदा कर के तुम **बरिय्युज़्ज़िम्मा** हो चुके तुम अपनी नेकी की जज़ा पाओगे। **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ने फ़रमाया : इस आयत में اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر के वुजूब की बहुत ताकीद की है क्यूं कि अपनी फ़िक्र रखने के मा'ना येह हैं कि एक दूसरे की ख़बर गीरी करे, नेकियों की रग़बत दिलाए, बदियों से रोके।

ज़ौजा की इन्फ़िरादी कोशिश से म-दनी माह़ोल मिल गया : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हमारा म-दनी मक़्सद है : **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ। इस म-दनी मक़्सद के हुसूल के लिये हमें अपनी इस्लाह़ के साथ साथ दूसरों की इस्लाह़ की भी फ़िक्र करनी होगी लिहाज़ा ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र बढ़ाने, हर दिले मुस्लिम में शम्ए इश्क़े रसूल जलाने, हर त़रफ़ सुन्नतों की धूम मचाने और नेक बनने का म-दनी जज़्बा पाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, हर माह कम





अज़ कम तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र और म-दनी इन्आमात पर अ़मल की तरकीब रखिये ! आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक "म-दनी बहार" सुनाऊं चुनान्चे **मस्क़त** (उ़मान) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा कुछ इस त़रह़ है : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल **मैं एक फ़ेशन परस्त दाढ़ी मुन्डा नौ जवान था, मेरा पसन्दीदा लिबास पेन्ट शर्ट** था और مَعَاذَاللّٰه दीन की त़रफ़ अ-मलन कोई ख़ास मैलान न था, बस हर वक़्त दुन्या की लगन में मगन रहता था, आख़िरत संवारने वाले आ'माल बजा लाने की तौफ़ीक़ ह़ासिल थी न ही मौत की तय्यारी का कुछ ज़ेह्न । आख़िरे कार मुझ गुनहगार पर भी परवर दगार की रह़मत छमाछम बरसी और मेरे गुनाहों से आलूदा वुजूद के पाक होने के अस्बाब हो ही गए, हुवा कुछ यूं कि मेरे दिल में शौक़ पैदा हुवा कि मुझे कोई ऐसी सोह़बत **मुयस्सर** आ जाए जिस की बदौलत मैं अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त का सामान कर सकूं चुनान्चे अच्छी सोह़बत के ह़ुसूल की ख़ात़िर मैं वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ दीनी मह़ाफ़िल में शिर्कत करता रहा लेकिन कहीं भी ह़क़ीक़ी मा'नों में इत़्मीनाने क़ल्ब ह़ासिल न हुवा, ज़िन्दगी मख़्सूस डगर पर गुज़रती रही और फिर मैं इज़्दिवाजी ज़िन्दगी (या'नी शादी) के बन्धन में बंध गया । **ख़ुश क़िस्मती से मेरी रफ़ीक़ए ह़यात (या'नी बीवी) दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता थीं** और उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** दा'वते इस्लामी से मेरी वाबस्तगी का सबब बनी । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से न सिर्फ़ गुनाहों से तौबा की सआ़दत मिली बल्कि ता दमे तह़रीर शहर **मुशा-वरत** के ख़ादिम की हैसिय्यत से म-दनी कामों की धूमें मचाने की कोशिश करने वाला भी हूं ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नरमी और प्यार म-दनी हथियार हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस म-दनी बहार से येह भी दर्स मिला कि ज़ौजैन (या'नी मियां बीवी) में से अगर कोई एक म-दनी माहोल से वाबस्ता हो तो उस को चाहिये कि **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए दूसरे को भी म-दनी माहोल से वाबस्ता करने की भरपूर सअ्य करे । इस काम के लिये नरमी और प्यार बहुत ज़बर दस्त **म-दनी हथियार हैं,** अगर म-दनी माहोल वाले या वाली के मिज़ाज में गुस्सा, चिड़चिड़ा पन और बद अख़्लाक़ी हुई तो काम्याबी मुश्किल है, लिहाज़ा अपने अख़्लाक़ दुरुस्त कीजिये और वैसे भी जिसे **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों की धुन हो उस के लिये ठन्डे मिज़ाज का होना ज़रूरी है कि बे जा सख़्ती करने से बारहा काम बनते बनते बिगड़ जाते हैं ।

शादी के फ़ज़ाइल पर मब्नी 4 अहादीसे मुबा-रका : बयान कर्दा म-दनी बहार में मज़्कूरा इस्लामी भाई की म-दनी माहोल से वाबस्तगी का सबब اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शादी बनी, "निकाह व शादी" से हमारा हर हर फ़र्द मु-तआ़रिफ़ होता और ज़िन्दगी के एक मोड़ पर आ कर तक़रीबन सभी को "शादी" से साबिक़ा पड़ता है । इस ज़िम्न में **नेकी की दा'वत** पेश करते हुए चन्द **म-दनी फूल** आप की जानिब बढ़ाता हूं क़बूल फ़रमा कर इन्हें अपने दिल के **म-दनी गुलदस्ते** में सजा लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहानों में ब-र-कतें पाएंगे । अफ़्सोस ! आज कल अक्सर सिर्फ़ हुस्नो जमाल और मालो मनाल और दुन्यवी जाहो जलाल देख कर **शादी** कर दी जाती है और ऐसी शादी बारहा ख़ाना बरबादी का बाइस बनती है । लिहाज़ा शादी में सीरत व किरदार पर ख़ुसूसी नज़र रखनी चाहिये । आइये ! हुसूले सआ़दत के लिये शादी के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल **4 फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सुनते हैं :

﴾1﴿ जो मेरे त़रीक़े को महबूब रखे, वोह मेरी सुन्नत पर चले और मेरी सुन्नत से **निकाह** (भी) है । **(شُعَبُ الْاِیمان ج٤ ص٣٨١ حديث٥٤٧٨)** ﴾2﴿ औ़रत से **निकाह** चार बातों की वजह से किया जाता है (या'नी निकाह में इन का लिहाज़ होता है) : (1) माल व (2) हसब व (3) जमाल व (4) दीन और तू दीन वाली को तरजीह दे **(بُخاری ج٣ ص٤٢٩ حديث٥٠٩٠)** ﴾3﴿ जब तुम में कोई **निकाह** करता है तो शैतान कहता है : हाए अफ़्सोस ! इब्ने आदम ने मुझ

से अपना दो तिहाई (2/3) दीन बचा लिया (اَلْفِرْدَوْس بِمَاْثُورِ الْخَطَّاب ج١ ص٣٠٩ حديث١٢٢٢) ﴾4﴿ जो इतना माल रखता है कि **निकाह़** कर ले, फिर निकाह़ न करे, वोह हम में से नहीं।[1]

(مُصَنَّف ابن اَبی شَيْبه ج٣ ص٢٧٠)

निकाह़ के बारे में फ़रमाने सिद्दीक़ी : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने जो तुम्हें **निकाह़** का हुक्म फ़रमाया, तुम उस की इत़ाअ़त करो, उस ने जो ग़नी करने का वा'दा किया है पूरा फ़रमाएगा। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :

اِنْ یَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ یُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ

(پ١٨، النور:٣٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर वोह फ़क़ीर हों तो **अल्लाह** उन्हें ग़नी कर देगा अपने फ़ज़्ल के सबब। (تفسير ابن ابی حاتم ج٨ص٢٥٨٢)

रिवायत में मज़्कूरा आयते मुबा-रका के तह़्त **ह़ज़रते** सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिदुना मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में फ़रमाते हैं : "**ग़िना** से मुराद या क़नाअ़त है कि वोह बेहतरीन ग़िना है जो क़ानेअ़ को तरद्दुद (या'नी क़नाअ़त करने वाले को फ़िक्र व अन्देशे) से बे नियाज़ कर देता है या किफ़ायत कि एक

---

[1] ﴾1﴿ ए'तिदाल की ह़ालत में या'नी न शह्वत का बहुत ज़ियादा ग़-लबा हो न **इन्नीन** (या'नी ना मर्द) हो और महर व न-फ़क़ा (कपड़े खाने पीने वग़ैरा के इख़राजात) पर क़ुदरत भी हो तो निकाह़ **सुन्नते मुअक्कदा** है कि निकाह़ न करने पर अड़ा रहना गुनाह है और अगर ह़राम से बचना या इत्तिबाए़ सुन्नत व ता'मीले हुक्म या औलाद ह़ासिल होना मक़्सूद है तो सवाब भी पाएगा और अगर मह़ज़ लज़्ज़त या क़ज़ाए शह्वत (या'नी शह्वत को पूरा करना) मन्ज़ूर हो तो सवाब नहीं। (دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج٤ص٧٣) ﴾2﴿ शह्वत का ग़-लबा है कि निकाह़ न करे तो مَعَاذَالله अन्देशए ज़िना है और महर व न-फ़क़ा की क़ुदरत रखता हो तो निकाह़ **वाजिब** है। यूं ही जब कि अजनबी औ़रत की त़रफ़ निगाह उठने से रोक नहीं सकता या مَعَاذَالله हाथ से काम लेना पड़ेगा या'नी मुश्त ज़नी करनी पड़ेगी। तो निकाह़ **वाजिब** है। (आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 22 सफ़ह़ा 202 पर फ़रमाते हैं : येह फे'ल नापाक ह़राम व ना जाइज़ है ह़दीस शरीफ़ में है : जलक़ लगाने वाले (या'नी मुश्त ज़नी करने वाले) पर **अल्लाह** तआ़ला की ला'नत है (اَمالی ابن بشران ج٢ص٥ رقم ٤٧٧، حاشيةُ الطَّحطاوی علی مَراقی الْفَلاح ٩٦) आ'ला ह़ज़रत सफ़ह़ा 244 पर फ़रमाते हैं : ह़श्र में ऐसों की हथेलियां गाभन (या'नी ह़ामिला) उठेंगी जिस से मज्मए़ आ'ज़म में उन की रुस्वाई होगी।) ﴾3﴿ येह यक़ीन हो कि निकाह़ न करने में ज़िना वाक़ेअ़ हो जाएगा तो **फ़र्ज़** है कि निकाह़ करे। (دُرِّمُختار ج٤ ص٧٢)

का खाना दो के लिये **काफ़ी** हो जाए जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा है या ज़ौज (या'नी शोहर) व ज़ौजा के दो रिज़्क़ों का जम्अ़ हो जाना या फ़राख़ी ब ब-र-कते **निकाह़** (या'नी निकाह़ की ब-र-कत से ख़ुशह़ाली) जैसा कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है।"

सारा क़बीला मुसल्मान हो गया : ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन **उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना अस्अ़द बिन ज़ुरारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रफ़ाक़त में राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र पर रवाना हुए तो क़बीलए बनी ज़फ़र के बाग़ में "मरक़" नामी कूंएं पर जा कर बैठ गए। इन दोनों के पास क़बीलए बनू अस्लम के लोग जम्अ़ हो गए, उन के चोटी के सरदार सा'द बिन मुआ़ज़ और उसैद बिन हुज़ैर थे जो अभी दामने इस्लाम से वाबस्ता न हुए थे। ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अस्अ़द बिन ज़ुरारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ख़ालाज़ाद भाई थे, सा'द बिन मुआ़ज़ ने उसैद बिन हुज़ैर को भेजा कि जाओ उन दोनों **मुबल्लिग़ीन** को डांट कर रोक दो जो कि हमारे कमज़ोर लोगों को (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) बहकाने के लिये आए हैं। चुनान्चे उसैद बिन हुज़ैर ने अपना नेज़ा लिया और उन के पास पहुंच गए, आते ही उन को बुरा भला कहना शुरूअ़ कर दिया और धमकी दी कि अगर तुम्हें ज़िन्दगी प्यारी है तो यहां से चले जाओ। ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन **उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने (इन्फ़िरादी कोशिश का आग़ाज़ करते हुए निहायत) नरमी और मिठास से फ़रमाया : "ज़रा बैठ कर बात तो सुन लीजिये, समझ में आए तो मान लीजिये और अगर पसन्द न आए तो हम आप को मजबूर नहीं करेंगे।" **उसैद** बिन हुज़ैर पर **मीठे बोल** का असर हुवा और अपना नेज़ा ज़मीन पर गाड़ कर उन के पास बैठ गए। ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन **उ़मैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन को इस्लाम के बारे में **म-दनी फूल** दिये और क़ुरआने करीम पढ़ कर सुनाया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **उन के दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और वोह मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए।** मुसल्मान हो जाने के बा'द कहा : मेरे पीछे **सा'द** बिन मुआ़ज़ है, अगर उस ने तुम दोनों की बात मान ली तो मेरी सारी

क़ौम तुम्हारी बात मान लेगी, मैं उसे अभी तुम्हारे पास भेजता हूं। येह कह कर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ वहां से सीधे सा'द बिन मुआ़ज़ के पास पहुंचे और उन को इन **दोनों मुबल्लिग़ीन** के पास जाने पर राज़ी कर लिया। सा'द बिन मुआ़ज़ ने आते ही दोनों साहिबान को बुरा भला कहना शुरूअ़ कर दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन **उ़मैर** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने (इन्फ़िरादी कोशिश का आग़ाज़ करते हुए) उन्हें भी नरमी और मिठास के साथ नेकी की दा'वत सुनने के लिये आमादा कर लिया इस पर वोह अपना नेज़ा ज़मीन पर गाड़ कर उन के क़रीब बैठ गए। ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उन पर भी इस्लाम की ख़ूबियों से मालामाल **म-दनी फूल** पेश किये और **सू-रतुज़्ज़ुख़रुफ़** की इब्तिदाई आयात पढ़ कर सुनाईं। **आयाते क़ुरआनिया तासीर का तीर बन कर उन के दिल में पैवस्त हो गईं और वोह भी दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए।** इस्लाम आ-वरी के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपनी क़ौम की त़रफ़ लौटे और उन से फ़रमाया : "तुम मेरे बारे में क्या राय रखते हो ?" सब ने ब-यक ज़बान हो कर कहा : आप हमारे सरदार हैं और आप की राय दुरुस्त और दूर रस होती है। ह़ज़रते **सय्यिदुना सा'द** बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "बस फिर मुझ पर तुम्हारे मर्दों और औ़रतों से उस वक़्त तक बात करनी **ह़राम** है जब तक तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस उस के **रसूल** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान नहीं ले आते।" रावी फ़रमाते हैं : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! शाम नहीं होने पाई थी कि उस क़बीले के तमाम मर्द व औ़रत मुसल्मान हो चुके थे। (البداية والنهاية ج٢ ص٥٢٧ تا٥٢٩ مُلَخَّصاً) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

सारा क़बीला ईमां लाया मीठे बोल की ब-र-कत से
बनते काम बिगड़ जाते हैं सुन लो बे जा शिद्दत से

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शख़्सिय्यात पर इन्फ़िरादी कोशिश की अहम्मिय्यत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان किस तरह अपनी जान हथेली पर रख कर **नेकी की दा'वत** की तरकीबें फ़रमाते थे । इस हिकायत से येह भी दर्स मिला कि **शख़्सिय्यात** पर इन्फ़िरादी कोशिश के नताइज दूर रस निकल सकते हैं जैसा कि क़बीलए बनू अस्लम के दो सरदारों पर जब इन्फ़िरादी कोशिश की गई तो उन्हों ने "नेकी की दा'वत" क़बूल कर के इस्लाम के दामन से वाबस्तगी के बा'द अपने सारे क़बीले को मुसल्मान कर लिया । येह याद रहे ! "दुन्यवी शख़्सिय्यात" से मुलाक़ात कर के, उन का एह़तिराम बजा ला कर, उन में से बा'ज़ की "बड़ी बड़ी बातें और कारनामे" ख़ुद उन्हीं की ज़बानी सुन कर, वाह ! वाह ! कर के और हां में हां मिला कर लौट आना मुबल्लिग़ की मन्ज़िल नहीं, **काम्याब मुबल्लिग़** वोह है जो बड़ी से बड़ी दुन्यवी **शख़्सिय्यत** म-सलन वज़ीर, हुकूमती अफ़्सर, सरमाया दार वग़ैरा से मरऊ़ब न हो, उस की त़रफ़ से बिलफ़र्ज़ इधर उधर की या'नी दुन्या की बातें हों भी तो उस के मुक़ाबले में **नेकी की दा'वत** के म-दनी फूलों के ज़रीए़ उस पर ह़ावी रहे, ख़ुदा ना ख़्वास्ता अगर कोई शख़्सिय्यत "झूटी डींगें" मारने लगे तो हरगिज़ उस की हां में हां न मिलाए, हो सके तो उस की इस्लाह़ करे, अगर येह न बन पड़े तो दिल में बुरा जानते हुए बात बदलने की सअ्य करे, उसे नमाज़ की तल्क़ीन करे, सुन्नतों पर अ़मल का ज़ेह्न दे, उसे येह बावर करवाए कि इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत देने का इख़्तियार परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के पास है, आप अपने मन्सब से जाइज़ फ़ाएदा उठा कर इस्लाम की ख़िदमत कीजिये, क्यूं कि आ़म लोगों की बहुत सारी जिद्दो जहद से जो काम हो सकता है उस के मुक़ाबले में आप थोड़ी सी कोशिश से दीन का बहुत ज़ियादा काम कर सकते हैं, आप अगर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत और म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र के लिये तारीख़ इनायत करेंगे तो सिर्फ़ आप का नाम सुन कर हो सकता है कई इस्लामी भाई इज्तिमाअ़ की ह़ाज़िरी और म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र पर आमादा हो जाएं वग़ैरा । **मुबल्लिग़** को चाहिये कि जब एक बार किसी "शख़्सिय्यत" से मिल ले तो कम अज़ कम उतने अ़र्से तक उस से राबित़ा ज़रूर मरबूत़ (या'नी राबिते़ में) रहे जब तक उसे म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र का आ़दी बना कर दूसरों को म-दनी क़ाफ़िले का

मुसाफ़िर बनाने वाला न बना दे। हर नए इस्लामी भाई से भी राबिते़ का येही अन्दाज़ होना चाहिये, आ़रिज़ी तौ़र पर हाथ मिला कर, सिर्फ़ रस्मी गुफ़्त-गू कर लेने को काफ़ी न समझा जाए। ख़बरदार! किसी "शख़्सिय्यत" से अपने ज़ाती काम न निकलवाए, नोकरी या कारोबार या क़र्ज़ वग़ैरा की तरकीब न बनाए नीज़ इज्तिमाअ़ की ह़ाज़िरी और म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये इन्फ़िरादी कोशिश करते करते चन्दे की बात न छेड़ दे कि इस त़रह़ उस के बदज़न होने का अन्देशा है क्यूं कि उ़मूमन "बड़े लोग" चन्दा मांगने वालों से कतराते हैं।

सगे मदीना और शख़्सिय्यात : **एक** बार सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ बैरूने पाकिस्तान किसी के घर ह़ाज़िर हुवा, हिन्द के कई **मुबल्लिग़ीन** और बा'ज़ मक़ामी ज़िम्मेदारान जम्अ़ थे और कुछ शख़्सिय्यात से मुलाक़ात की भी तरकीब थी। बा'ज़ "ज़िम्मेदारान" ने ग़ैर ज़िम्मेदारी का सुबूत देते हुए शख़्सिय्यात से **मक-त-बतुल मदीना** की जारी कर्दा सुन्नतों भरी V.C.Ds ख़रीद कर मुफ़्त तक़्सीम करने के आ'दाद लेने शुरूअ़ कर दिये! मैं चौंका कि इस त़रह़ येह **मु-तमव्विल** (या'नी मालदार) त़बक़ा कहीं दा'वते इस्लमी से बदज़न न हो जाए कि हमें बुलवाया गया इल्यास की मुलाक़ात के नाम पर जब कि काम कुछ और ही शुरूअ़ हो गया! लिहाज़ा मैं ने म-दनी फूल पेश करने शुरूअ़ किये और V.C.Ds की तराकीब ख़त्म करवाते हुए शख़्सिय्यात से कुछ इस त़रह़ अ़र्ज़ किया कि येह इस्लामी भाइयों के जज़्बात हैं, वरना आप से मेरा मुत़ा-लबा आप की रक़म का नहीं, मुझे "चन्दा" नहीं "बन्दा" चाहिये, मैं तो आप से ख़ुद "आप" का त़लब गार हूं, आप सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाइये, **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ बहुत अच्छी तरकीब बन गई।

मौला दे हमें ह़िक्मते अ़-मली का ख़ज़ीना
हम आ़म करें सुन्नते सुल्त़ाने मदीना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शख़्सिय्यात के अन्दर नेकी की दा'वत के म-दनी काम के तअ़ल्लुक़ से सुवालन जवाबन कुछ म-दनी फूल पेश किये जाते हैं क़बूल फ़रमाइये और हिक्मते अ़-मली के साथ शख़्सिय्यात में म-दनी कामों की धूमें मचाइये।

शख़्सिय्यात से म-दनी क़ाफ़िलों के लिये ख़िदमात लेने का त़रीक़ा

सुवाल: जो शख़्सिय्यात म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र नहीं करतीं उन से म-दनी क़ाफ़िलों के लिये हम ख़िदमात किस त़रह ह़ासिल करें ?

जवाब: म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की तरग़ीब जारी रखिये। हर ज़िम्मेदार को चाहिये कि अपने अपने ह़ल्क़ों की **अहले मह़ब्बत शख़्सिय्यात** का इतना ज़ेह्न तो बना ही दें कि आप मेहरबानी फ़रमा कर **म-दनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िरों और इन के घर वालों की ह़ौसला अफ़्ज़ाई में हमारा तआ़वुन फ़रमा दिया करें। म-सलन कोई इस्लामी भाई 30 दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र पर है, उस के घर पर आप के अ़लाक़े के मश्हूर आ़लिम या D.S.P. या S.H.O. या M.P.A. या M.N.A., या वज़ीर या मेजर या कर्नल या किसी भी **अहले मह़ब्बत** बड़े अफ़्सर (न मिले तो छोटा अफ़्सर ही सही) को ले कर चले जाएं और वोह घर के अफ़्राद को मुबारक बाद पेश करे कि आप लोग बहुत ख़ुश नसीब हैं कि आप के भाई या फ़रज़न्द ने 30 दिन के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र इख़्तियार किया है, उन की ग़ैर ह़ाज़िरी की वजह से आप को अगर तकालीफ़ हो भी तो सब्र कर लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को इस का अज्र मिलेगा वग़ैरा। अगर शख़्सिय्यत साथ चलने के लिये वक़्त न निकाल सके तो कम अज़ कम उस के ज़रीए़ फ़ोन ही पर मज़्कूरा कलिमात कहलवा दें, ज़बानी अल्फ़ाज़ अदा करने में दुश्वारी हो तो लिख कर "शख़्सिय्यत" को दे दीजिये और वोह तरकीब बना ले। नीज़ मुम्किन हो तो शख़्सिय्यत ही के घर की कोई मुअ़म्मर इस्लामी बहन भी ख़ुद तशरीफ़ ले जा कर या फ़ोन पर **म-दनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर के घर की इस्लामी बहनों की इसी त़रह तरकीब करे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सब मदीना मदीना हो जाएगा।

ज़िम्मेदारान भी म-दनी क़ाफ़िले वालों की तरकीब बनाएं

सुवाल: क्या शख़्सिय्यात ही के ज़रीए तसल्ली दिलवाना ज़रूरी है ?

जवाब: शख़्सिय्यात का असर बहुत पड़ेगा। आप ख़ुद ग़ौर फ़रमाइये कि आप की ग़ैर मौजू-दगी में अगर कोई वज़ीर आप के घर इसी सिल्सिले में चला जाए। इस से आप के ख़ानदान, बल्कि पूरे मह़ल्ले में दा'वते इस्लामी की किस क़दर नेक नामी होगी ! अराकीने शूरा व दीगर ज़िम्मेदारान भी इस त़रह़ की तरकीब फ़रमाएं नीज़ येही ज़िम्मेदारान 30 दिन या इस से ज़ाइद वाले बिल ख़ुसूस दीगर मुमालिक के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र करने वालों के साथ हफ़्ते अ़-शरे में एक आध बार फ़ोन पर सलाम दुआ़ कर लिया करें और मौक़अ़ की मुना-सबत से मुद्दत बढ़ाने के लिये उन पर इन्फ़िरादी कोशिश भी करते रहें म-सलन 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर से कहें कि अगर किसी की ह़क़ त-लफ़ी न होती हो और बिग़ैर किसी गुनाह के रुकना मुम्किन हो तो 92 दिन से पहले मत आना कि राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर का तो गोया एक एक सांस इबादत में गुज़रता है।

म-दनी क़ाफ़िले से वापसी पर "इस्तिक़्बालिया इज्तिमाअ़"

सुवाल: जो आ़शिक़ाने रसूल म-दनी क़ाफ़िले से वापस तशरीफ़ लाएं, उन के साथ ऐसी क्या तरकीब की जाए जिस से दीन का मज़ीद फ़ाएदा हो ?

जवाब: अगर 12 या 30 दिन या इस से ज़ियादा अय्याम के सुन्नतों भरे सफ़र के बा'द आए हैं तो मुम्किन हो तो मह़ल्ले की मस्जिद में उन का "इस्तिक़्बालिया इज्तिमाअ़" हो, मुख़्तसर सा सुन्नतों भरा बयान हो जाए, इन आ़शिक़ाने रसूल को ख़ूब मुबारक बाद दी जाए और हो सके तो म-दनी रसाइल वग़ैरा का तोह़फ़ा भी पेश किया जाए और ख़ुसूसन उन में के नए इस्लामी भाई अपने **तअस्सुरात** बयान करें और वहां से हाथों हाथ मज़ीद म-दनी क़ाफ़िले तय्यार किये जाएं। फिर अगर किसी क़रीबी घर या

इमाम साहि़ब के हु़जरे में लंगरे र-ज़विय्या के ज़रीए़ ख़ैर ख़्वाही की तरकीब हो जाए तो मदीना मदीना । अगर मेरी इस म-दनी तज्वीज़ के मुत़ाबिक़ तरकीब फ़रमाएंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िरों की सारी थकन दूर हो जाएगी और अगर किसी को सफ़र में कोई ना गवार सूरत पेश आई थी तो उस का सदमा भी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जाता रहेगा और बार बार सुन्नतों भरा सफ़र करने का ह़ौसला मिलेगा और اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हर त़रफ़ म-दनी क़ाफ़िलों की बहारें आ जाएंगी । मगर इन कामों के लिये हरगिज़ चन्दे का दरवाज़ा न खोला जाए जो करना है अपनी जेब से किया जाए । अगर पैसे नहीं हैं तो बेशक सिर्फ़ पानी पिला दिया जाए हां अगर कोई मुख़य्यर इस्लामी भाई ख़ैर ख़्वाही के लिये अपने घर ले जाए या खाना पका कर ले आए तो ह़रज नहीं ।

म-दनी क़ाफ़िलों की ख़ैर ख़्वाही की ह़िक्मतें

सुवाल: आ़शिक़ाने रसूल की ख़ैर ख़्वाही की ह़िक्मतें बयान फ़रमाइये ।

जवाब: आप अ़लाक़े में तशरीफ़ लाए हुए म-दनी क़ाफ़िले की इख़्लासे निय्यत के साथ अगर ख़ैर ख़्वाही करेंगे या'नी खाना वग़ैरा पेश करेंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सवाब का अम्बार लग जाएगा, आ़शिक़ाने रसूल की दिलजूई होगी । ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی का क़ौल है : **किसी मुसल्मान का दिल ख़ुश करना 100 (नफ़्ली) ह़ज से बेहतर है ।** (ماخوذ ازکیمیائے سعادت ج۲ص۷۰۱) हो सकता है कि आप की बे लौस ख़ैर ख़्वाही से जिन का दिल न लग रहा हो बल्कि म-दनी क़ाफ़िला छोड़ कर घर जाने की सोच रहे हों उन का दिल लग जाए, किसी में ऐसा जज़्बा पैदा हो जाए कि वोह हाथों हाथ मज़ीद सफ़र के लिये आमादा हो जाए । इस त़रह़ करने से आप दीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ الِہٖ وَسَلَّم के मददगार क़रार पाएंगे । दीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ الِہٖ وَسَلَّم की मदद करने वालों के लिये हर जुमुआ़ और ई़दैन में न जाने कितने ही ख़ु-त़बा दुआ़एं देते हैं बल्कि येह दुआ़एं तो बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللہُ الْمُبِیْن

सदियों से देते चले आ रहे हैं। येह दुआ **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने भी "ख़ुत़्बाते र-ज़विय्या" में शामिल फ़रमाई है। वोह दुआ येह है :

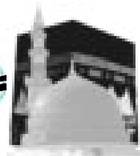
اَللّٰهُمَّ انْصُرْ مَنْ نَّصَرَ دِيْنَ سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَبَارِكْ وَسَلِّم

या'नी ऐ **अल्लाह** जो दीने मुह़म्मदे म-दनी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मदद करे तू भी उस की मदद फ़रमा।

سُبْحٰنَ الله ! **नेकी की दा'वत** देने वालों, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वालों, दर्स व बयान करने वालों, इन्फ़िरादी कोशिश करने वालों, आ़शिक़ाने रसूल की ख़ैर ख़्वाही करने वालों, म-दनी क़ाफ़िलों के ग़रीब मुसाफ़िरों के लिये माली तआ़वुन करने वालों और किसी भी त़रह़ से दीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मदद करने वालों को मुबारक हो कि उन के लिये सेंकड़ों साल से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नेक बन्दे दुआ़एं करते चले आ रहे हैं। ऐ दीने मुस्त़फ़ा के मददगारो ! यक़ीनन रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّ وَجَلَّ की मदद जिस के शामिले ह़ाल हो जाए उस का दोनों जहानों में बेड़ा पार है। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की मदद से बड़ी बड़ी मुसीबतें टल जाती होंगी और हमें इस की ख़बर तक नहीं पड़ती होगी। ख़ुत़्बे वाली दुआ़ के बा'द कुछ और भी है और वोह येह है : وَاخْذُلْ مَنْ خَذَلَ دِيْنَ سَيِّدِنا وَ مَوْلٰنا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَبَارِكْ وَسَلِّم۔ । या'नी ऐ **अल्लाह** ! जो दीने मुस्त़फ़ा को बे यार व मददगार छोड़े तू उसे बे यार व मददगार छोड़।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! डर जाने का मक़ाम है जहां जहां हम पर वाजिब है ख़ुदा ना ख़्वास्ता वहां भी हम दीने मुस्त़फ़ा की मदद करने वाले न बने तो कहीं बरबाद न हो जाएं। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जिस की मदद न फ़रमाएगा यक़ीनन वोह कहीं का न रहेगा। इसी दुआ़ में आगे येह भी है : رَبَّنَا يَا مَوْلٰينا وَلَا تَجْعَلْنَا مِنْهُم या'नी "ऐ हमारे परवर दगार ! ऐ हमारे मालिक व मौला عَزَّ وَجَلَّ ! हमें दीने मुस्त़फ़ा की मदद से मह़रूम रहने वालों में से न करना।" यक़ीनन नमाज़ और रोज़ा आ'ला द-रजे की इ़बादतें हैं लेकिन इन की अदाएगी दीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इमदाद के ज़ुमरे में नहीं आती। हम में से हर एक को चाहिये कि






ग़ौर करे कि वोह अपने लिये दुआ़ ले रहा है या बददुआ़ ! हर वोह काम दीने मुस्तफ़ा की मदद है जिस से श-जरे इस्लाम फले और फूले, कुफ़्फ़ार दाख़िले इस्लाम हों और बिगड़े हुए मुसल्मानों की इस्लाह़ हो । बस नेकी की दा'वत की ख़ूब धूमें मचाइये, म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र फ़रमाइये ख़ुद भी सुन्नतें सीखिये और दूसरें को भी सिखाइये और यूं दीने ख़ुदा व मुस्तफ़ा की ख़ूब ख़ूब मदद कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इमदाद की बिशारत पाइये कि ख़ुद उस का वा'दा है । चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़ह़ा 932 पर पारह 26 **सूरए मुह़म्मद** की सातवीं आयत में इर्शादे पाक है :

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَ يُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अगर तुम दीने ख़ुदा की मदद करोगे **अल्लाह** तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मदद फ़रमाने की तो क्या बात है ! **सदरुल अफ़ाज़िल** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते करीमा के तह़त फ़रमाते हैं : दुश्मन के मुक़ाबले में मदद होगी, जंग में, हुज्जते इस्लाम और पुल सिरात़ पर साबित क़-दमी नसीब होगी ।

(मुलख़्ख़स अज़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 932)

लोग हमारी नहीं मानते !

सुवाल: बा'ज़ मुबल्लिग़ीन म-दनी काम में सुस्त पड़ जाते और कहते सुनाई देते हैं कि हम ने बहुत कोशिश की काम्याब न हुए लोग हमारी मानते ही नहीं, अब हम किस त़रह़ काम करें ?

जवाब: हमारे यहां एक आ़म दस्तूर सा है कि जब किसी इज्तिमाअ़ में लोगों की कसरत देखी जाती है तो कह देते हैं, इज्तिमाअ़ बहुत काम्याब रहा और अगर लोग थोड़े हों तो कहेंगे, इज्तिमाअ़ फ़ेल या'नी नाकाम हो गया, या इस त़रह़ ए'लान किया जाता है, ज़ियादा से ज़ियादा शिर्कत फ़रमा कर मह़फ़िल को काम्याब बनाइये ह़ालां कि ह़क़ीक़ी काम्याबी या नाकामी का दारो मदार ह़ाज़िरीन की कसरत व





क़िल्लत (या'नी ज़ियादती व कमी) पर नहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर मौक़ूफ़ है । एक तरफ़ सिर्फ़ चन्द मुख़्लिस अफ़राद दिलसोज़ी के साथ ज़िक्रो ना'त और बयान करने सुनने में मश्ग़ूल हों जब कि दूसरी तरफ़ इसी तरह की किसी मज़्हबी तक़रीब में बड़ी बड़ी दुन्यवी शख़्सिय्यात जम्अ हुई हों, अख़्बारी नुमायन्दों और केमरा मेनों का हुजूम और दीगर सजावटों वग़ैरा के एहतिमाम की कशिश से लोगों का कसीर इज़्दिहाम हो, बेशक उर्फ़े आम में इस दूसरी तक़रीब को काम्याब कहा जाएगा मगर ठन्डे दिल से ग़ौर करें तो **अव्वलुज़्ज़िक्र** (या'नी जिस का पहले ज़िक्र हुवा) चन्द अफ़राद पर मुश्तमिल मजलिस की बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में काम्याबी के ब ज़ाहिर ज़ियादा इम्कानात हैं । अब मुबल्लिग़ीन जो ना काम्याबी का शिक्वा ले कर सुस्त पड़ गए उन की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि आप ने अव्वल तो काम्याबी का मत़लब ही नहीं समझा, अगर येह ज़ेह्न बन जाए कि काम्याबी भीड़भाड़ का नाम नहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ख़ुश करने का नाम है तो कभी दिल बरदाश्ता न होते । दूसरी भूल येह हुई कि उन के ज़ेह्न में येह बात बैठ गई कि "लोग हमारी बात नहीं मानते ।" तो अदब से अ़र्ज़ है कि आप को "मनवाने" का मन्सब किस ने सौंपा ? याद रखिये ! अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को भी मनवाने की नहीं "पहुंचाने" ही की ज़िम्मेदारी सौंपी गई । उन ह़ज़राते क़ुदसिय्या ने तब्लीग़ फ़रमाई और तब्लीग़ का मत़लब "पहुंचाना" है न कि "मनवाना" । **ह़ज़रते** सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उम्मत के मुबल्लिग़ीन का क़ौल नक़्ल करते हुए पारह 22 **सूरए यासीन** की आयत नम्बर 17 में इर्शाद होता है : وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۷﴾ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और हमारे ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना ।

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "बा'ज़ नबी वोह भी हैं जिन की बात किसी ने न मानी और बा'ज़ वोह कि जिन की एक या दो आदमियों ने ही इत़ाअ़त की ।" (मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 159) यक़ीनन इस के बा वुजूद हर नबी عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने तब्लीग़ की ज़िम्मेदारी

सो फ़ीसद मुकम्मल अन्जाम दी, किसी ने भी कोताही न की, लिहाज़ा मेरे भोले भाले मुबल्लिग़ो ! शैतान के दामे तज़्वीर में मत फंसिये, आप की और हम सब की काम्याबी के लिये येह शर्त ही नहीं कि लोग मान जाएं बल्कि हम में वोह इस्लामी भाई काम्याब है जो इख़्लास के साथ नेकी की दा'वत पहुंचाने में काम्याब हो जाए। हम नेकी की दा'वत देते हैं, "दा'वत" के मा'ना "लाना" नहीं सिर्फ़ "बुलाना" है। या'नी हम नेकी की त़रफ़ बुलाते हैं, हम लाने या मनवाने के मुकल्लफ़ व ज़िम्मेदार नहीं। येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि जिसे चाहे उसे हमारी दा'वत क़बूल करने की तौफ़ीक़ बख़्श दे। हां एक म-दनी फूल यहां ज़रूर क़ाबिले तवज्जोह है, वोह, येह कि जब हमारी कोशिश के बा वुजूद कोई मुसल्मान माइल न हो तो हमें उस को مَعَاذَاللّٰه सख़्त दिल, ढीट वग़ैरा कह कर ग़ीबत बल्कि बोहतान का इरतिकाब करने से बचना लाज़िमी है कहीं ऐसा न हो कि मुस्तहब काम करने निकलें और कबीरा गुनाहों का बोझ सर पर लाद कर पलटें ! وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰی (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह)। ऐसे मौक़अ़ पर हमें अपने इख़्लास ही की कमी और अन्दाज़े दा'वत की कोताही तस्लीम करनी चाहिये और ख़ूब तौबा व इस्तिग़फ़ार कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ब वसीलए मुस्त़फ़ा व अम्बिया व सहाबा व औलिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم وعَلَيْهِمُ السَّلَام लोगों की इस्लाह़ की दुआ़ करनी चाहिये।

मुख़ा-ल-फ़तों के ज़ोर में किस त़रह़ म-दनी काम करें ?

सुवाल: बा'ज़ अ़लाक़ों में म-दनी काम करने वाले बहुत थोड़े होते हैं, मुख़ा-लफ़त का ज़ोर, ता'नों का शोर, काम की हिम्मत नहीं पड़ती, कोई मुफ़ीद मश्वरा इनायत फ़रमाइये।

जवाब: सब्र व हिम्मत के साथ लगे रहिये, अपने आ'माल दुरुस्त कीजिये, नेक लोगों को तलाश कर के उन की ब-र-कतें ह़ासिल कीजिये, नेकोकारों की क़ुर्बत निहायत बा ब-र-कत होती है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, **सय्यिदुस्सालिह़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

एक सालेह् (या'नी नेक) मुसल्मान की ब-र-कत से उस के पड़ोस के सो घर वालों की बला दफ़्अ़ फ़रमाता है ।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی ج۳ص۱۲۹حدیث ۴۰۸۰)

ता़लूत जालूत की कु़रआनी हि़कायत : **मा'लूम** हुवा नेकों का कु़र्ब नफ़्अ़ पहुंचाता है । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उन की दुआ़ओं से आप के अ़लाके़ की काया पलट जाएगी । बाक़ी येह याद रखिये कि काम्याबी का इन्हि़सार क़िल्लत व कसरत (या'नी ता'दाद की कमी और ज़ियादती) पर नहीं खु़लूस व **लिल्लाहिय्यत** पर है, मुखा़-लफ़त से दिल बर्दाश्ता न हों कि इम्तिहा़न से घबराना मर्दों का काम नहीं, देखिये, जब ह़ज़रते सय्यिदुना **ता़लूत** رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ बनी इस्राईल के लश्कर को ले कर ज़ालिम बादशाह **जालूत** से मुक़ाबले के लिये बैतुल मुक़द्दस से रवाना हुए तो उन के लश्कर की इस त़रह़ आज़्माइश हुई :

قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِیْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَیْسَ مِنِّیْ ۚ وَمَنْ لَّمْ یَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّیْۤ اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِیَدِهٖ ۚ (پ۲،البقرۃ:۲۴۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : (ता़लूत) बोला बेशक **अल्लाह** तुम्हें एक नहर से आज़्माने वाला है, तो जो उस का पानी पिये वोह मेरा नहीं और जो न पिये वोह मेरा है मगर वोह जो एक चुल्लू अपने हाथ से ले ले ।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی इस आयते मुबा-रका के तह़्त ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में फ़रमाते हैं : सख़्त गरमी थी, सिर्फ़ 313 अफ़राद ने सब्र किया और सिर्फ़ एक चुल्लू पानी लिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह एक चुल्लू उन के लिये और उन के जानवरों के लिये काफ़ी हो गया और जिन्हों ने बे सब्री की और ख़ूब पानी पिया था उन के होंट सियाह हो गए, प्यास ख़ूब बढ़ गई और हिम्मत हार गए । जालूत के अ़ज़ीम लश्कर से 313 मुसल्मानों का मुक़ाबला था जो इता़अ़त गुज़ार थे उन के ह़ौसले मज़बूत थे, उन का नक़्शा इसी आयते करीमा में इस त़रह़ पेश किया गया है :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب وترہیب)

قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْیَوْمَ بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ؕ قَالَ الَّذِیْنَ یَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِیْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِیْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ ۝۲۴۹

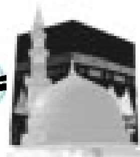
(پ۲،البقرة:۲۴۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : (बे सब्रे) बोले : हम में आज त़ाक़त नहीं जालूत और उस के लश्करों (के मुक़ाबले) की, बोले वोह जिन्हें **अल्लाह** से मिलने का यक़ीन था (या'नी सब्र करने वाले कहने लगे) कि बारहा कम जमाअ़त ग़ालिब आई है ज़ियादा गुरौह पर **अल्लाह** के हुक्म से और **अल्लाह** साबिरों के साथ है।

हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वालिद ईशा अपने तमाम फ़रज़न्दों के साथ सय्यिदुना **त़ालूत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه के लश्कर में शामिल थे। हज़रते सय्यिदुना **दावूद** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सब भाइयों में छोटे थे, रंग ज़र्द था और बीमार थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान देखिये कि हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام गोफन में पथ्थर रख कर **जालूत** बादशाह के सामने आ गए वोह अ़ज़ीमुलजुस्सा, शहज़ोर और क़द आवर था मगर जूं ही उस की नज़र दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर पड़ी उस पर ख़ौफ़ त़ारी हो गया मगर उस ने अपने आप को संभाला और **मु-तकब्बिराना** जुम्ले बकते हुए रो'ब डालने की कोशिश की। हज़रते सय्यिदुना **दावूद** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने गोफन में पथ्थर ले कर उस के सर का निशाना ले कर जो मारा तो वोह उस के सर से आर पार निकल गया और वोह गोश्त का पहाड़ धड़ाम से गिरा और तड़प तड़प कर मर गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने 313 अफ़राद के क़लील क़ाफ़िले को **जालूत** के लश्करे अ़ज़ीम पर शानदार फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई। सय्यिदुना त़ालूत رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه ने हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के निकाह़ में अपनी शहज़ादी दी और उन को आधी सल्त़नत सौंप दी फिर एक मुद्दत के बा'द जब हज़रते सय्यिदुना त़ालूत رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه का विसाल हुवा तो बाक़ी तमाम मुल्क पर हज़रते **दावूद** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सल्त़नत क़ाइम हुई।

(मुलख़्ख़स अज़ तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, 85, 86)






फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

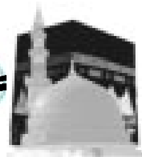
बादशाह के गुनाहों के बराबर दोज़ख़ में घुसा : **ज़ाती** मफ़ादात के लिये "शख़्सिय्यात" म-सलन सरमाया दारान, लीडरान, अफ़्सरान और हुकूमती अरकान वग़ैरा से मुरासिम रखने से अ़वाम व ख़वास सभी को बचना चाहिये और बिल ख़ुसूस उ़-लमाए किराम को तो बहुत एह़तियात़ की ज़रूरत है । ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : "जब किसी ने कुरआन पढ़ा और **तफ़क्क़ोह फ़िद्दीन** ह़ासिल किया (या'नी आ़लिम बना) फिर बादशाह के दरवाज़े पर उस की चापलूसी (ख़ुशामद) और माल के लालच में आया तो वोह बादशाह के गुनाहों के बराबर दोज़ख़ की आग में घुसा ।" (اَلْفِردَوس بمأثور الْخطّاب ج۱ص۲۸۹ حدیث۱۱۳٤)

ज़ालिम का चेहरा देखने से दिल काला होता है : **किताब** "मुफ़्तिये आ'ज़म की इस्तिक़ामत व करामत" सफ़्ह़ा 111 पर है : सब्अ़ सनाबिल शरीफ़ में है कि बादशाहे वक़्त हारून रशीद ने इमामुल अस्फ़िया ह़ज़रते दावूद त़ाई رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ से मुलाक़ात करनी चाही तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने इन्कार फ़रमा दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ के ह़वाले से येह रिवायत बयान की, कि **رُؤیَۃُ وَجہِ الظَّالِمِ تُسَوِّدُ الْقُلُوب** या'नी ज़ालिम का चेहरा देखना दिल को काला करता है । (سبع سنابل ص۹۰)

मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द हुक्मरानों से दूर रहते थे : **ताजदारे** अहले सुन्नत, शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़म ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان वु-ज़रा और हुकूमती अरकान से हमेशा दूर रहा करते थे चुनान्चे रईसुल क़लम ह़ज़रते अ़ल्लामा अरशदुल क़ादिरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی रक़म त़राज़ हैं : और येह भी दीनी ग़ैरत ही का एक बे मिसाल नमूना है कि (सरकार मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ) बानवे साल की त़वील ज़िन्दगी में कभी किसी सर बराहे मम्लकत के घर गए और न किसी बड़े से बड़े फ़रमां रवा (या'नी हुक्मरान) के बंगले में नज़र आए बल्कि ह़ैरत में डूब जाने की बात येह है कि मम्लकतों के कितने ही सर-बराहों और वक़्त के कितने ही सलात़ीन ने ख़ुद इन की मजलिस में बारयाब (ह़ाज़िर) होने की इजाज़त चाही और मुफ़्तिये आ'ज़म






(عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم) ने येह कह कर मिलने से इन्कार कर दिया कि एक दरवेश का बादशाहों और अरबाबे हुकूमत से सरोकार ही क्या है ? (मुफ़्तिये आ'ज़म की इस्तिक़ामत व करामत, स. 110)

करूं मदहे अहले दुवल रज़ा पड़े इस बला में मेरी बला
मैं गदा हूं अपने करीम का मेरा दीन पारए नां नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के कलाम के इस मक़्त़अ़ का मत़लब है, ऐ रज़ा मैं और दौलत मन्दों, दुन्या के नवाबों और हुक्मरानों की ता'रीफ़ व ख़ुशामद करूं ? नहीं नहीं इस बला या'नी मालदारों की ख़ुशामद नुमा आफ़त व बला में तो बस "मेरी बला" ही पड़े ! (या'नी मुझ से तो ऐसा हो ही नहीं सकता) बस मैं तो अपने रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे दुरबार का भिकारी हूं, मेरा दीन "रोटी का टुकड़ा" नहीं (कि जिधर "माल" देखा उधर लुढ़क गए !)

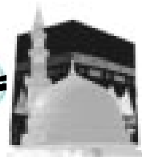
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वालिद साहिब की तरकीब बनी तो घर में म-दनी माहोल बन गया :

सिर्फ़ नौ जवान ही को **नेकी की दा'वत** देने का रुज्हान क्यूं ? घर के सर-कर्दा अफ़राद पर तवज्जोह की ज़ियादा ज़रूरत है अगर वोह तरकीब में आ गए तो घर के अन्दर तेज़ी से **म-दनी माहोल** बन सकता है और ख़ानदान भर में नमाज़ों और सुन्नतों की बहारें आ सकती हैं, इस बात की तौसीक़ (तस्दीक़) इस **म-दनी बहार** से हो सकती है जैसा कि पंजाब (पाकिस्तान) के ज़िलअ़ क़ुसूर की तह़सील **पतोकी** की एक इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि मुआ़-शरे के बहुत से घरों की त़रह़ हमारे घर में भी **T.V.** पर फ़िल्में डिरामे और ख़ूब गुनाहों भरे प्रोग्राम देखे जाते थे, अब ऐसी मन्हूस सूरते ह़ाल में घर में सुन्नतों भरा म-दनी माहोल क्यूंकर क़ाइम हो सकता था ! सब से पहले ख़ुश क़िस्मती से मेरे बड़े भाईजान **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हुए । वोह हमें बहुतेरा समझाते, बारहा **इन्फ़िरादी कोशिश** करते मगर हमारे कान पर जूं तक न रेंगती । घर में **T.V.** की मौजू-दगी पर भी भाईजान **तश्वीश** का शिकार रहते, क्यूं कि घर






के अन्दर सुन्नतों भरे माहोल की राह में येह बहुत बड़ी रुकावट था, वोह उसे निकालना चाहते थे मगर कुछ कर न पाते क्यूं कि घर में सिर्फ़ वालिद साहिब की चलती थी। एक दिन हम घर वाले रात को **T.V.** पर डिरामा देख कर अभी फ़ारिग़ ही हुए थे कि भाईजान आए और उन्हों ने टेप रिकोर्डर पर मक-त-बतुल मदीना की जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान की एक केसिट लगा दी। अन्दाज़े बयान बहुत दिलचस्प था लिहाज़ा हम उसे बड़ी तवज्जोह से सुनने लगे। उस बयान में मुबल्लिग़ ने जब **T.V. की तबाह कारियां** बयान कीं तो हम आख़िरत ख़राब होने के डर से घबरा गए, बिल ख़ुसूस अब्बूजान तो ख़ौफ़ के मारे **कांपने** लगे। जब बयान ख़त्म हुवा तो अब्बूजान ने बुलन्द आवाज़ में अपना फ़ैसला सुनाया **: अब इस घर में T.V. नहीं चलेगा।** सारे घर वाले उसी वक़्त छत पर गए और टीवी एन्टीना उखाड़ फेंका और **घर से T.V. निकाल दिया गया।** कुछ दिनों बा'द मेरे छोटे भाई ने अब्बू से **T.V.** दोबारा लाने का **मुता-लबा** किया तो अब्बूजान ने पुरजोश लहजे में फ़रमाया **: अब इस घर में T.V. रहेगा या मैं।** येह सुन कर भाई को "चुप" लग गई। यूं दा'वते इस्लामी की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारा घर फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों की नुहूसतों से पाक हो गया और सारा ही घराना **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया।

तेरा शुक्र मौला दिया म-दनी माहोल   न छूटे कभी भी ख़ुदा म-दनी माहोल
सलामत रहे या ख़ुदा म-दनी माहोल   बचे बद नज़र से सदा म-दनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 602)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد



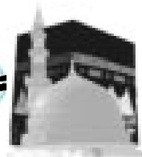
मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह **"म-दनी बहार"** ग़ालिबन उन दिनों की है जब आलमे इस्लाम का सो फ़ी सदी शर-ई चेनल या'नी "म-दनी चेनल" जारी नहीं हुवा था। टीवी की ग़ैर इस्लामी नश्रिय्यात जैसा कि फ़िल्मों डिरामों, गाने बाजों, औरतों की नुमाइशों, मूसीक़ियों की धुनों औरत और मूसीक़ी से आलूद ख़बरों नीज़ ग़ैर अख़्लाक़ी प्रोग्रामों से न मैं पहले राज़ी था न अब राज़ी हूं, हर बा शुऊर मुसलमान येह जानता है कि हमारे मुआ-शरे





की तबाही में **T.V.** का बहुत अहम किरदार है ! **मुबल्लिग़ीने** दा'वते इस्लामी ने **T.V.** की तबाह कारियों के ख़िलाफ़ अच्छी ख़ासी मुहिम चलाई, इन काविशों में कुछ न कुछ काम्याबी भी मिली, जिस का एक सुबूत मज़्कूरा **म-दनी बहार** भी है, मगर फ़ी ज़माना हज़ार में से शायद तक़रीबन नव सो निन्नान्वे **(999)** मुसल्मान **T.V.** के रसिया हो चुके हैं और ग़ालिब अक्सरिय्यत दुन्या व आख़िरत की भलाई बुराई की परवाह किये बिग़ैर **T.V.** की ग़ैर शर-ई व ग़ैर अख़्लाक़ी नशिरय्यात देखने में मश्ग़ूल है । **T.V.** बीनी में इन की **जुनून** की हृद तक दिलचस्पी की वजह से शैतान की उन के किरदार के साथ साथ इस्लामी अक़्दार पर भी यलग़ार है । इब्लीस की तह़रीक पर इस्लाम ही का लबादा ओढ़ कर बा'ज़ लोग इस्लाम को मॉडर्न अन्दाज़ में पेश करने की मज़्मूम सअ्य कर रहे हैं, इस्लाम की ह़क़ीक़ी रूह मुसल्मानों के दिलों से निकाली जा रही है । अब अगर हम मसाजिद वग़ैरा में **T.V.** की तबाह कारियां बयान करते भी हैं तो सुनने वालों की ता'दाद कितनी ? क्यूं कि ब मुश्किल **5** फ़ीसद मुसल्मान नमाज़ पढ़ते होंगे, उन में भी इक्का दुक्का ही मज़्हबी बयान सुनने में दिलचस्पी लेता है, नीज़ इस्लामी बहनों को मस्जिद का बयान कौन सुनाए ? अगर लिट्रेचर छापते हैं तो दीनी मुता-लआ करने वालों की ता'दाद मायूसी की ह़द तक कम है ! इन ना मुसाइद ह़ालात में इस बात का शिद्दत से एह़सास हुवा कि मुसल्मानों की इस इस्लाह़ का दाइरए कार अगर सिर्फ़ मसाजिद और इज्तिमाआ़त वग़ैरा की ह़द तक रखते हैं तो उम्मत की ग़ालिब अक्सरिय्यत तक हमारा दर्द भरा म-दनी पैग़ाम पहुंच ही नहीं पाता और त़ाग़ूती त़ाक़तें यक तरफ़ा तौर पर अपने मुख़ालिफ़ चेनल्ज़ के ज़रीए मुसल्मानों को गुमराह करती रहेंगी । अग़्लब गुमान येही है कि मुसल्मानों के घरों से अब **T.V.** निकलवाना मुश्किल ही नहीं क़रीब ब ना मुम्किन है, बस एक ही सूरत नज़र आई और वोह येह कि जिस त़रह़ दरिया में सैलाब आता है तो उस का रुख़ खेतों वग़ैरा की त़रफ़ मोड़ने की कोशिश की जाती है ताकि खेत भी सैराब हों और आबादियों को भी हलाकत से बचाया जा सके, ऐन इसी त़रह़ **T.V.** के ज़रीए आने वाले तूफ़ाने बद तमीज़ी के सैलाब की रोकथाम की कोशिश के लिये **T.V. ही के ज़रीए मुसल्मानों के घरों में दाख़िल हुवा जाए** और उन को ग़फ़्लत की नींद से बेदार किया जाए






और गुनाहों और गुमराहियों के सैलाब से उन्हें ख़बरदार किया जाए चुनान्चे जब मा'लूम हुवा कि अपना **T.V. चेनल** खोल कर फ़िल्मों डिरामों, गानों बाजों, मूसीक़ियों की धुनों और औ़रतों की नुमाइशों से बचते हुए **100 फ़ी सदी इस्लामी** मवाद फ़राहम करना मुम्किन है तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की **मर्कज़ी मजलिसे शूरा** ने ख़ूब जिद्दो जहद कर के **र-मज़ानुल मुबारक** 1429 सि.हि. ब मुताबिक़ 2008 सि.ई. में **म-दनी चेनल** के ज़रीए़ नेकियों और घर घर सुन्नतों का म-दनी पैग़ाम पेश करना शुरूअ़ कर दिया और देखते ही देखते ब शुमूल यूरोपियन ममालिक दुन्या के बे शुमार मुल्कों में **T.V.** पर म-दनी चेनल देखा जाने लगा और इन्टरनेट के ज़रीए़ ता दमे तह़रीर दुन्या के तक़रीबन 150 मुल्कों में **म-दनी चेनल** दाख़िल हो चुका है और यूं डेढ़ सो के क़रीब मुल्कों में दा'वते इस्लामी का म-दनी पैग़ाम पहुंच गया है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस के ह़ैरत अंगेज़ म-दनी नताइज आने लगे हैं। यक़ीनन इस की येह ब-र-कत तो बच्चा भी समझ सकता है कि जब तक **म-दनी चेनल** घर या दफ़्तर वग़ैरा में ऑन रहेगा कम अज़ कम उस वक़्त तक तो मुसल्मान दूसरे गुनाहों भरे चेनल्ज़ से बचे रहेंगे ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी चेनल** सो फ़ी सदी इस्लामी चेनल है, न इस में मूसीक़ी है न ही औ़रत की नुमाइश। इस पर कारोबारी इश्तिहारात (एडवर्टाइज़) भी नहीं दिये जाते, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस के अख़्राजात **मुख़य्यिर** मुसल्मानों के अ़तिय्यात (DONATIONS) से पूरे किये जाते हैं। **म-दनी चेनल** में क्या है ? इस में फ़ैज़ाने क़ुरआन, फ़ैज़ाने ह़दीस, फ़ैज़ाने अम्बिया, फ़ैज़ाने सह़ाबा और फ़ैज़ाने औलिया के मा'लूमाती रूह़ परवर सिल्सिले हैं, इस में तिलावतें, ना'तें, मन्क़बतें दा'वते इस्लामी की म-दनी ख़बरें और म-दनी ख़ाके हैं, दुआ़ व मुनाजात में इल्ह़ाह़ व ज़ारी के दिल हिला देने वाले और इश्क़े रसूल में रोने रुलाने और तड़पाने वाले रिक़्क़त अंगेज़ मनाज़िर हैं, दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, रूह़ानी इलाज, सुन्नतों भरे **म-दनी फूल** और आख़िरत बेहतर बनाने वाली ख़ूब **म-दनी बहारें** हैं। इस में सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त, म-दनी मुज़ा-करात, म-दनी मुका-लमात, सुब्ह़ के वक़्त "खुले आंख सल्ले अ़ला कहते कहते" वग़ैरा कई सिल्सिले बराहे रास्त (LIVE) भी दिखाए जाते हैं। अल ग़रज़ **म-दनी चेनल** एक ऐसा चेनल है कि इस के ज़रीए़ इन्सान

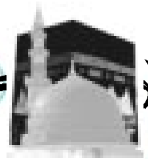




घर बैठे अच्छा ख़ासा इल्मे दीन सीख सकता है ! **म-दनी चेनल** की म-दनी बहारों के क्या कहने ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी चेनल** देख कर कई गै़र मुस्लिमों को ईमान की दौलत नसीब हो गई, नीज़ न जाने कितने ही "बे नमाज़ी" नमाज़ी बन गए, **मु-तअ़द्दिद** अफ़राद ने गुनाहों से तौबा कर के सुन्नतों भरी ज़िन्दगी का आग़ाज़ कर दिया। एक **म-दनी बहार** मुला-हज़ा हो।

जब मुझे म-दनी चेनल देखने की सआ़दत मिली : सरदारआबाद (फ़ैसलआबाद, पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे म-दनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले मैं एक आवारा और झगड़ालू नौ जवान था, अख़्लाक़ इतने गिरे हुए थे कि बद निगाही करते हुए कोई शर्म महसूस न होती, किसी को सलाम करना गवारा करता न किसी का एह़तिराम करना, **अल ग़रज़** राहे सुन्नत से दूर बहुत दूर गुनाहों की किचड़ में लत पत पड़ा था। आख़िरे कार रह़मतों भरी हवा ने मेरे आंगन का भी रुख़ कर ही लिया, हुवा यूं कि ख़ुश क़िस्मती से एक मर्तबा मुझे **म-दनी चेनल** देखने की सआ़दत मिल गई, ख़ुदा की शान कि मुझ गुनाहों से लिथड़े हुए गन्दे इन्सान को येह इतना पसन्द आया कि मैं रोज़ाना इस के मुख़्तलिफ़ म-दनी सिल्सिले देखने लगा। **म-दनी चेनल** देखने की सब से पहली ब-र-कत येह ज़ाहिर हुई कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिद जाने लगा। वहां एक दिन मेरी मुलाक़ात एक आ़शिक़े रसूल, सुन्नतों के पैकर, मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी से हुई, उन से मिल कर मेरे दिल को बहुत सुकून मिला। वोह इस्लामी भाई एक दिन मेरी दुकान पर तशरीफ़ लाए और उन्हों ने मुझे **"नेकी की दा'वत"** पेश की। उस "नेकी की दा'वत" के तुफ़ैल मैं ने ज़िन्दगी में पहली बार **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की। वहां पर होने वाली तिलावत, ना'त शरीफ़, सुन्नतों भरा बयान, **ज़िक्रुल्लाह** की सदाएं सुन कर मुझे इन्तिहाई लुत्फ़ आया, इज्तिमाअ़ के आख़िर में होने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ तो मुझे इतनी भली लगी कि मैं **दा'वते इस्लामी** को दिल दे बैठा, अब मेरी ह़ालत ऐसी हो गई कि






जहां कहीं सब्ज़ इमामे और सफ़ेद लिबास में मल्बूस **आ़शिक़ाने रसूल** नज़र आते मेरी आंखें ठन्डी हो जातीं। फिर म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपने चेहरे पर **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की **मह़ब्बत** की निशानी दाढ़ी शरीफ़ भी सजा ली। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से र-मज़ानुल मुबारक (1430 सि.हि.) में दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाले 30 दिन के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बैठने की सआ़दत पाई। अपने दो भतीजों को **मद्र-सतुल मदीना** में ह़िफ़्ज़े क़ुरआन के लिये दाख़िल करवाया है, मैं ने अपनी दुकान पर **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स भी शुरूअ़ कर दिया है। **अल्लाह** तआ़ला दा'वते इस्लामी को दिन 11वीं और रात 12वीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए जिस ने ऐसा प्यारा **"म-दनी चेनल"** खोला कि मुझ जैसे गुनाहों के पुलन्दे की इस्लाह़ का सामान हुवा। मेरे छोटे छोटे बच्चों को "म-दनी चेनल" देखने की ब-र-कत से शायद इतनी मा'लूमात हैं जो मुझे अब इस उ़म्र में आ कर मिली हैं। **"वाह ! क्या बात है म-दनी चेनल की।"**

म-दनी चेनल सुन्नतों की लाएगा घर घर बहार म-दनी चेनल से हमें क्यूं वालिहाना हो न प्यार
म-दनी चेनल की मुहिम है नफ़्सो शैतां के ख़िलाफ़ जो भी देखेगा करेगा اِنْ شَآءَ اللّٰہ ए'तिराफ़
राहे सुन्नत पर चला कर सब को जन्नत की त़रफ़
ले चले बस इक येही है म-दनी चेनल का हदफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 605)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बनी इस्राईल की तबाही के अस्बाब : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबियों के सरदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बि इज़्ने परवर दगार ग़ैबों पर ख़बरदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है : **बनी इस्राईल** में जो सब से पहला (दीन में) नुक़्सान आया वोह येह था कि एक शख़्स दूसरे से मिलता और (किसी गुनाह को देख कर) उसे कहता : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर और ऐसा न कर क्यूं कि येह तेरे लिये ह़लाल नहीं। अगले दिन उसे गुनाह





करता देखने के बा वुजूद वोह उस के साथ अपने तअ़ल्लुक़ात, खाने पीने और निशस्त व बरख़ास्त की वजह से मन्अ़ न करता, जब (आ़म तौ़र पर) उन्हों ने ऐसा किया तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन के दिल एक दूसरे के साथ ख़ल्त़ कर दिये। (या'नी ना फ़रमानों की नुहूसत से फ़रमां बरदारों के दिल भी वैसे ही हो गए) फिर **हुज़ूर सरवरे काएनात** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ताईद में कु़रआने करीम की येह आयात पढ़ीं :

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝ (پ ٦ المائدة:٧٨،٧٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ला'नत किये गए वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया बनी इस्राईल में **दावूद और ईसा बिन मरयम** की ज़बान पर, येह बदला उन की ना फ़रमानी और सरकशी का। जो बुरी बात करते आपस में एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे।

फिर सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम ज़रूर **नेकी का हुक्म** देते रहो और गुनाहों से मन्अ़ करते रहो और ज़ालिम को ज़ुल्म से रोकते रहो और उस को ह़क़ बात की त़रफ़ खींच कर लाते रहो, वरना **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे दिल भी ख़ल्त़ (या'नी ना फ़रमानों की नुहूसत से उन्हीं जैसे) कर देगा और तुम पर भी ला'नत फ़रमाएगा, जैसे उन पर ला'नत फ़रमाई।

(اَلسُّنَنُ الْكُبرى لِلْبَيْهَقِى ج١٠ ص١٥٩ حديث٢٠١٩٦، ابوداؤد ج٤ ص١٦٢، ١٦٣ حديث٤٣٣٦، ٤٣٣٧)

बयान कर्दा ह़दीसे पाक के तह़्त "मिरआतुल मनाजीह़" में है : सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत के अरबाबे इख़्तियार और उ़-लमा को **मु-तनब्बेह** (या'नी ख़बरदार) किया कि तुम्हें इस त़रीक़ए कार से बचना होगा और बुराई का इरतिकाब करने वालों का हाथ रोकना होगा, मुना-फ़क़त व मुदा-हनत (बुराई मिटाने पर कु़दरत के बा वुजूद बे **ह़मिय्यती**, लालच या जानिब दारी की वजह से ख़ामोश रहने) से काम लेने के बजाए ग़ैरते ईमानी का मुज़ा-हरा करना और اَمْرٌ بِالْمَعْرُوف وَ نَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر

से **मु-तअ़ल्लिक़** अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करना होगा, ज़ालिम का हाथ रोक कर उसे राहे ह़क़ पर लाना होगा वरना तुम भी बनी इस्राईल का त़रह़ ला'नत के मुस्तह़िक़ हो जाओगे। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 513)

या ख़ुदा ! नेकों से उल्फ़त नेकियों से प्यार दे
जो करे बदियों से नफ़रत वोह दिल ऐ ग़फ़्फ़ार दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दीन के दो ह़िस्से ज़ाइल कर दिये : अमीरुल मुअमिनीन, इमामुल आ़दिलीन, मुतम्मिमुल अर-बईन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़िदमते बा ब-र-कत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : मैं दो के सिवा भलाई के तमाम काम करता हूं। फ़रमाया : वोह **दो काम** कौन से हैं ? अ़र्ज़ की : ﴾1﴿ मैं किसी को नेकी का हुक्म नहीं देता और ﴾2﴿ किसी को बुराई से नहीं रोकता। इर्शाद फ़रमाया : तू ने **दीन के दो ह़िस्से ज़ाइल** किये, अब **अल्लाह** तआ़ला चाहे तो तेरी मग़फ़िरत फ़रमा दे या तुझे अ़ज़ाब में मुब्तला कर दे। (أحكام القران للجصاص ج٢ ص٦١٢)

अल्लाह मैं देता ही रहूं नेकी की दा'वत
ऐसा मुझे जज़्बा दे पए शाहे रिसालत

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बेचारा मुसल्मान ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि नेकी की दा'वत से बाज़ रहने वाला और दूसरों को बुराई से मन्अ़ न करने वाला बहुत ज़ियादा नुक़्सान में है। आज मुसल्मानाने आ़लम की अक्सरिय्यत की जो ह़ालत है वोह किसी से **मख़्फ़ी** (या'नी ढकी छुपी) नहीं हर त़रफ़ बे अ़-मली का दौर दौरा है, उ़मूमन कोई किसी को ख़त़ाओं पर टोकने के लिये तय्यार नहीं, मुसल्मान अ़-मली त़ौर पर तनज़्ज़ुल के अ़मीक़ (या'नी गहरे) गढ़े में तेज़ी से गिरता चला जा रहा है,

पाक व हिन्द के मुसल्मानों की ह़ालत तो शायद अब भी ग़नीमत है दूसरे **इस्लामी ममालिक** में जा कर देखें तो मुसल्मानों का ह़ाल देख कर खून रोएं तब भी कम है ।

औलाद को सुन्नतें सिखाइये वरना पछताएंगे : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **र-जबुल मुरज्जब** 1406 सि.हि में सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को करबलाए मुअ़ल्ला व बग़दाद शरीफ़ वग़ैरा मुक़द्दस शहरों में ह़ाज़िरी की सआ़दत नसीब हुई, मगर आह ! वहां के मुसल्मानों की ह़ालते ज़ार बयान करने से ज़बान व क़लम क़ासिर हैं, ताहम चन्द बातें अ़र्ज़ करता हूं ताकि हम लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब से डरें और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे **नेकी की दा'वत** आ़म करने के लिये कमर बस्ता हों, वरना क्या अ़जब हमारी आयन्दा नस्लें ऐसी तबाह व बरबाद हों कि तबाही व बरबादी भी उन को देख कर थर्रा उठे ! क्यूं कि ह़ालात ही ऐसे हैं । मौजूदा ता'लीमी इदारे और उन का माह़ोल, वालिदैन की सिर्फ़ और सिर्फ़ येह धुन कि बच्चा पढ़ लिख कर पूरा मॉडर्न बने और खूब धन दौलत कमा कर लाए, अगर्चे मग़रिबी तहज़ीब का दिलदादा बच्चा जवान हो कर मां बाप से पीठ ही फैर ले, या क़ब्ल अज़् जवानी ही मौत बच्चे को आ संभाले और वालिदैन उस की कमाई खाने के सुहाने सपने शर्मिन्दए ता'बीर होते न देख सकें, नीज़ हमारे यहां के ज़रा-इए इब्लाग़ (MEDIA) भी इस्लाम के ज़र्रीं उसूलों पर मुसल्सल कारी ज़र्बें लगा रहे हैं, अगर येही ह़ालत रही तो हमारी आयन्दा नस्लों की **हलाकत** से बचने की बज़ाहिर कोई सूरत नज़र नहीं आती ।

ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ़ है — उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है
जो दीन बड़ी शान से निकला था वत़न से — परदेस में वोह आज ग़रीबुल ग़ु-रबा है
वोह दीन हुई बज़्मे जहां जिस से फ़रोज़ां — अब उस की मजालिस में न बत्ती न दिया है
डर है कहीं येह नाम भी मिट जाए न आख़िर — मुद्दत से इसे दौरे ज़मां मैट रहा है
फ़रियाद है ऐ कश्तिये उम्मत के निगहबां
बेड़ा येह तबाही के क़रीब आन लगा है

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

मुसल्मानाने इराक़ की दिल ख़राश दास्तान : **अब** इराक़ शरीफ़ के चन्द रोज़ा सफ़र से **मु-तअल्लिक़** बा'ज़ वोह बातें बयान करता हूं कि जिन से इस्लाम का दर्द रखने वालों का जिगर पाश पाश हो जाता है । चुनान्चे हम **तीन इस्लामी भाई,** इराक़ी त़य्यारे में बाबुल मदीना (कराची) के **बैनल अक़्वामी** हवाई अड्डे से सुवार हुए, परवाज़ में दो घन्टे ताख़ीर हुई, दौराने परवाज़ नमाज़े मग़रिब का वक़्त आ गया, त़य्यारे ही में अज़ान दे कर हम तीनों ने जमाअ़त क़ाइम की, नमाज़ से फ़राग़त के बा'द जब हम अपनी निशस्तों की त़रफ़ चले तो इराक़ी मुसाफ़िरीन हमें बड़ी ह़ैरत से देख रहे थे और नमाज़ पढ़ने पर दुआ़ए क़बूलिय्यत व ब-र-कत से नवाज़ रहे थे, जैसे हम ने कोई बहुत बड़ा कमाल कर डाला हो ! इस से हम पर येह **तअस्सुर** क़ाइम हुवा कि ग़ालिबन येह लोग नमाज़ नहीं पढ़ते मगर नमाज़ को पसन्द ज़रूर करते हैं और इराक़ शरीफ़ जा कर भी मसाजिद ख़ाली देख कर येही अन्दाज़ा हुवा कि शायद हज़ार इराक़ी मुसल्मानों में इक्का दुक्का मुसल्मान ही नमाज़ पढ़ता होगा !!

जाए नमाज़ में गाने बाजे ! : हम जब **अ़रूसुल बिलाद** बग़दाद शरीफ़ के **बैनल अक़्वामी** मत़ार पर उतरे और इशा की नमाज़ के लिये मत़ार (AIR PORT) ही की एक **जाए नमाज़** में दाख़िल हुए तो आप मानें या न मानें उस जाए नमाज़ की अन्दरूनी छत में स्पीकर लगा हुवा था और बा क़ाइदा **मूसीक़ी** के साथ गाने जब रहे थे !! **जी हां,** वोह जगह नमाज़ ही के लिये मख़्सूस थी और उस के बाहर जली हुरूफ़ में लिखा हुवा था : هٰذَابَيْتُ اللّٰه या'नी "येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का घर है ।" हम ह़ैरान रह गए हम अजनबी मुसाफ़िर थे दिल में बुरा जानने के सिवा कर भी क्या सकते थे ! ऐसे मौक़ए़ पर बुराई को रोकने पर जो क़ादिर न हो उसे चाहिये कि उस बुराई को कम अज़ कम दिल में ज़रूर बुरा जाने । जैसा कि ह़दीसे पाक में है : "**जब** ज़मीन में गुनाह किया जाए तो जो वहां मौजूद है मगर उसे बुरा जानता है वोह उस की **मिस्ल** है जो वहां नहीं है और जो वहां नहीं है मगर उस पर राज़ी है वोह उस की **मिस्ल** है जो वहां ह़ाज़िर है ।" (سُنَنِ ابوداوٗد ج٤ ص١٦٦ حديث٤٣٤٥)

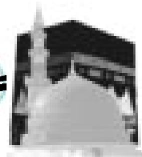
क्या तमाशा है कि अब नाक़ा सुवाराने अ़रब पैरवी करते हैं योरप के हुदी ख़्वानों की

कूफ़े की जामेअ़ मस्जिद में जुमुआ़ नहीं होता ! : आह ! कूफ़े की वोह **जामेअ़ मस्जिद** जिस से मुत्तसिल ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार है। वहां ज़ियारत के लिये हम जुमुआ़ की नमाज़ के वक़्त ह़ाज़िर हुए, ज़ाइरीन का बे पनाह हुजूम था। मा'लूम करने पर पता चला कि **यहां कोई नमाज़ नहीं पढ़ाई जाती** ह़त्ता कि जुमुआ़ की नमाज़ भी क़ाइम नहीं की जाती.......!!

सभी दाढ़ी मुन्डे : बग़दादे मुअ़ल्ला में हमें इस बात का शिद्दत से एह़सास हुवा कि यहां के मुसल्मान **मुसल्मानी शआ़इर** से बिल्कुल ना बलद हो चुके हैं क्यूं कि उ़मूमन कोई मक़ामी बाशिन्दा दाढ़ी रखता ही नहीं, ह़त्ता कि **आइम्मा व मुअज़्ज़िनीन** वग़ैरा सब के सब दाढ़ी मुन्डे ! चूंकि हम तीनों बा रीश और बा इमामा थे, बग़दादे मुअ़ल्ला की गलियों में जब हम निकलते तो लोग हमें इन्तिहाई ह़ैरत से तकते रहते और कभी कभी तो नौबत यहां तक आती कि हमें घेर कर **मु-तअ़ज्जिबाना** सुवाल किया जाता : ''هَلْ اَنْتُمْ مُسْلِمُوْن؟'' क्या तुम लोग मुसल्मान हो ? जब हम इक़रार करते कि ''اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ نَحْنُ مُسْلِمُوْن'' या'नी ''اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हम मुसल्मान हैं'' तो वोह ख़ुश हो कर आगे गुज़र जाते।

शहादत की ख़ुशी में ख़वातीन का रक़्स : एक बार **''बाबुश्शैख़''** या'नी शहन्शाहे बग़दाद, **ह़ुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के **मज़ारे पुर अन्वार** वाली गली में एक निहायत ही बेहूदा और शर्मनाक मन्ज़र था, ख़ूब त़बले पर थाप पड़ रही थी, शहनाइयां बज रही थीं और काफ़ी लोगों का हुजूम था और बीच में बे पर्दा औ़रतें रक़्स कर रही थीं, कुछ लोगों ने जनाज़ा उठा रखा था। इस मन्ज़र से हम लोगों को बड़ी ह़ैरत हुई। दरयाफ़्त करने पर पता चला कि यहां येह दस्तूर है कि जब कोई मुसल्मान इराक़ व ईरान की ह़ालिया जंग (जो उन दिनों जारी थी) में शहीद होता है, उस के अइ़ज़्ज़ा उस शहीद की लाश को **ह़ुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के रौज़ए पाक पर ह़ाज़िरी के लिये लाते हैं और उस मर्दे मुजाहिद की **''शहादत की ख़ुशी में''** उस के ख़ानदान की औ़रतें इस त़रह़






सड़कों पर रक़्स करती हुई जनाज़े के साथ साथ जाती हैं । !!

दर्से क़ुरआन अगर हम ने न भुलाया होता   येह ज़माना न ज़माने ने दिखाया होता

क़ुरतुबा की जामेअ़ मस्जिद में नमाज़ पर पाबन्दी है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इराक़ी मुसल्मानों का ह़ाल देख कर कलेजा मुंह को आता है, काश ! वहां कोई ऐसी म-दनी तह़रीक उठ खड़ी हो जो **नेकी की दा'वत** आ़म करे और एक बार फिर उधर **सुन्नतों** का दौर दौरा हो और मुसल्मानों को इन की खोई हुई शानो शौकत वापस मिल जाए । **क़ुरतुबा** में आज जिस जगह जामेअ़ मस्जिद वाक़ेअ़ है, यहां बुत परस्तों के ज़माने में उन की इ़बादत गाह थी । जब स्पेन में ईसाई मज़हब फैला तो उन्हों ने उस इ़बादत गाह को गिरा कर यहां **कलीसा** (या'नी गिर्जा) ता'मीर कर लिया । जब मुसल्मानों ने **क़ुरतुबा** फ़त्ह़ किया तो कलीसा को सुल्ह़ की शराइत़ के मुत़ाबिक़ दो ह़िस्सों में बांट दिया गया एक ह़िस्से में मुसल्मानों ने ब दस्तूर "कलीसा" रहने दिया और दूसरा ह़िस्सा "मस्जिद" बना दिया । लेकिन जब क़ुरतुबा मुसल्मानों का दारुस्सल्तनत (CAPITAL) क़रार पाया और यहां की आबादी तेज़ी से बढ़ी तो मस्जिद का ह़िस्सा नमाज़ों के लिये तंग पड़ गया यहां तक कि जब **अ़ब्दुर्रह़मान अद्दाख़िल** की हुकूमत आई तो उन के सामने जामेए क़ुरतुबा की तौसीअ़ का सुवाल आया, कलीसा को मस्जिद में शामिल किये बिग़ैर तौसीअ़ मुम्किन न थी बिना बरीं (या'नी इस लिये) अ़ब्दुर्रह़मान अद्दाख़िल ने ईसाइयों से ज़मीन ख़रीद ली । वसीअ़ ज़मीन ह़ासिल करने के बा'द उन्हों ने जामेअ़ मस्जिद क़ुरतुबा की ता'मीर अज़ सरे नौ शुरूअ़ की, मस्जिद का नक़्शा बड़ा अ़ज़ीमुश्शान था । इसे पायए तक्मील तक पहुंचाने के लिये त़वील मुद्दत दरकार थी । लेकिन अ़ब्दुर्रह़मान अद्दाख़िल ता'मीर शुरूअ़ होने के बा'द दो साल ही में (172 सि.हि.) में फ़ौत हो गए उन के बा'द उन के बेटे **हश्शाम** ने ता'मीर जारी रखी । बा'द में **ख़ु-लफ़ाए बनी उमय्या** इस मस्जिद में मज़ीद तौसीआ़त करते रहे यहां तक कि ता'मीरी काम का इख़्तिताम तक़्रीबन 392 सि.हि. ब मुताबिक़ 1002 सि.ई. में हुवा । इस त़रह़ क़ुरतुबा की तारीख़ी जामेअ़ मस्जिद की ता'मीरात में कमो बेश **दो**





सो साल का अ़र्सा लगा। **कु़र्तुबा की अ़ज़ीमुश्शान शोहरए आफ़ाक़ जामेअ़ मस्जिद को अगर्चे तारीख़ी आसार की हैसिय्यत से बाक़ी रखा गया है मगर सद करोड़ अफ़्सोस ! मुसल्मानों की बद आ'मालियों के सबब वहां नमाज़ पढ़ने पर पाबन्दी है। हां सय्याह़ (TOURIST) सिर्फ़ देखने के लिये आ सकते हैं।**

18 साल से कम उ़म्र नौ जवानों का मस्जिद में दाख़िला बन्द : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! हमारे गुनाहों की नुहूसत बढ़ती चली जा रही है, दुन्या के एक ऐसे मुल्क में जहां मुसल्मानों की आबादी 90 फ़ीसद बताई जाती है, वहां बे अ़-मली का ऐसा ज़बर दस्त सैलाब आ गया कि अब **र-जबुल मुरज्जब** 1432 सि.हि. जून 2011 सि.ई. की एक अख़्बारी रपोर्ट के मुताबिक़ 18 साल से कम उ़म्र के नौ जवानों के लिये मस्जिद में नमाज़ पढ़ने पर क़ानूनी तौ़र पर पाबन्दी आ़इद कर दी गई है !!!

आह ! इस्लाम तेरे चाहने वाले न रहे जिन का तू चांद था अफ़्सोस वोह हाले न रहे

मसाजिद का वुजूद ख़त्म किया जा रहा है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! नमाज़ों से हमारी दूरी की वजह से मस्जिदें ख़ाली देख कर और हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत से बे रग़बत पा कर दुश्मनाने इस्लाम एक दम ख़बासत पर उतर आए हैं और हमें इस्लामी अक़्दार से दूर करने की नित नई साज़िशें कर रहे हैं। येह नहीं चाहते कि हम नमाज़ें पढ़ें और बा अ़मल रहें, इस लिये हमारे दीनी मराकिज़ या'नी मसाजिद को हदफ़ (या'नी निशाने) पर ले लिया है और हम हैं कि दुन्या की दौलत इकठ्ठी करने ही से फ़ुरसत नहीं पाते ! बा'ज़ रूह़ फ़रसा ख़बरें सुनिये और अगर दिल ज़िन्दा है तो सदमे से सर धुनिये : ❁ एक मुल्क में ग़ैर मुस्लिमों ने **157 मसाजिद** को ताले लगा दिये और मसाजिद को तिजारती और रिहाइशी मक़ासिद के लिये ग़ैर मुस्लिमों के ह़वाले कर दिया गया ❁ सरकारी तह़वील के बहाने 324 मसाजिद को नमज़ियों के लिये बन्द कर दिया गया ❁ एक मुल्क के एक शहर में 92 मसाजिद को रिहाइश गाहों और मवेशियों के बाड़ों में तब्दील कर दिया गया ❁ इसी त़रह़ एक मुल्क के एक क़स्बे में मस्जिद पर ना जाइज़ क़ब्ज़ा कर के उस में अपने बाति़ल मा'बूदों के

मुजस्समे रख दिये गए ۞ इसी तरह एक अख़्बार में ख़बर शाएअ़ हुई कि एक मुल्क के एक शहर में तुर्क मुसल्मानों की एक मस्जिद को आग लगा कर शहीद कर दिया गया ۞ किसी मुल्क के एक मुफ़्ती साहिब ने बताया कि "कम्यूनिस्ट इन्क़िलाब" से पहले हमारे मुल्क में 1200 मसाजिद मौजूद थीं जिन में से अक्सर ग़ैर मुस्लिमों की इबादत गाह, स्टोर और अ़जाइब घर में तब्दील कर दी गईं ।

"मस्जिद भरो तहरीक" चलाइये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मस्जिदों की वीरानी पर ख़ूब दिल जलाइये, ज़ोर शोर से **"मस्जिद भरो तहरीक"** चलाइये, और एक एक बे नमाज़ी पर **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के उसे नमाज़ी बनाइये और यूं अपनी मसाजिद का तह़फ़्फ़ुज़ भी फ़रमाइये कि जो मकान अपने मकीनों (या'नी रहने वालों) से आबाद हो उस पर कोई क़ब्ज़ा नहीं जमा सकता, वरना ख़ाली मकान पर कोई भी क़ाबिज़ हो सकता है जैसा कि फ़ारसी मक़ूला है : خانۂ خالی را دیو می گیرد या'नी "ख़ाली घर पर जिन्न भूत क़ब्ज़ा कर लेते हैं।" बहरह़ाल जो मस्जिद नमाज़ियों से आबाद होगी उस की त़रफ़ नापाक इरादे से आंख उठाने से पहले दुश्मने इस्लाम 420 बार सोचेगा । यहां एक मस्अला ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये कि जिस जगह एक बार शरअ़न मस्जिद बन गई अब वोह ता क़ियामत मस्जिद ही रहेगी । **तह़्तस्सरा** (या'नी सातवीं ज़मीन के नीचे) से ले कर अ़र्शे मुअ़ल्ला जो कि सातवें आस्मान के भी ऊपर है वहां तक उस की सारी फ़ज़ा भी मस्जिद है । अब चाहे مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस पर सड़क ता'मीर हो जाए या मार्केट बना दी जाए, वोह जगह क़ियामत तक मस्जिद ही के हुक्म में रहेगी और उस का एह़तिराम भी बर क़रार रहेगा । चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن "**तन्वीरुल अब्सार** और **दुर्रे मुख़्तार**" के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं :

وَلَوْخَرِبَ مَا حَوْلَهٗ وَاسْتُغْنِىَ عَنْهُ يَبْقٰى مَسْجِداً عِنْدَ الْاِمَامِ وَالثَّانِىْ اَبَداً اِلٰى قِيَامِ السَّاعَةِ وَبِهٖ يُفْتٰى

और अगर उस (या'नी मस्जिद) का इर्द गिर्द वीरान हो गया और उस की ज़रूरत न रही तो भी मस्जिद बाक़ी रहेगी इमाम साहिब (या'नी इमाम अबू ह़नीफ़ा) और

इमामे सानी (या'नी इमाम अबू यूसुफ़) के नज़्दीक हमेशा क़ियामत तक, और इसी पर फ़तवा है। (تنویرُ الابصار و دُرِّمُختار ج٦ ص٥٥٠, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 471) वक़ारुल मिल्लत हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद वक़ारुद्दीन क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जिस जगह एक मर्तबा मस्जिद बन जाती है वोह इस त़रह़ क़ियामत तक मस्जिद हो जाती है कि ऊपर अ़र्श तक और नीचे **तहतस्सरा** तक मस्जिद है उस में एक इंच (भी) जगह कम नहीं की जा सकती।" (वक़ारुल फ़तावा, जि. 2, स. 297)

कर मस्जिदें आबाद तेरी क़ब्र हो आबाद
फ़िरदौस अ़त़ा कर के ख़ुदा तुझ को करे शाद

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी मस्जिदें आबाद करती है, आप भी मस्जिद आबाद कर के अपने क़ल्बे नाशाद को शाद करने, पांचों वक़्त मस्जिद में ह़ाज़िर हो कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ को याद करने, इ़श्क़े रसूल से अपने दिल की उजड़ी बस्ती आबाद करने के लिये **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल अपनाए रहिये, ख़ूब ख़ूब **म-दनी क़ाफ़िलों** में सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए रोज़ाना **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये, आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक **म-दनी बहार** सुनाता हूं : **बाबुल मदीना** (कराची) में मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं बह़रे इस्यां में **मुस्तग़रक़** अपनी ज़िन्दगी के "अनमोल हीरे" ग़फ़्लत की नज़्र किये जा रहा था, **रात गए तक दोस्तों के साथ ख़ुश गप्पियों में मस्रूफ़ रहना मेरा मा'मूल था** । 18 **र-मज़ानुल मुबारक** 1429 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 19 सितम्बर 2008 सि.ई. को ह़स्बे मा'मूल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

हम दोस्त मिल कर बैठे मज़ाक़ मस्ख़रियों में मश्ग़ूल थे और **इस के सबब मजलिस से क़हक़हों के फ़व्वारे उबल रहे थे,** दरीं अस्ना दा'वते इस्लामी से वाबस्ता एक आ़शिक़े रसूल हमारे पास तशरीफ़ लाए, उन्हों ने सलाम किया और बैठ गए, उन की आमद से हमारी महफ़िल में कुछ सन्जी-दगी आई, उन्हों ने हमें निहायत उ़म्दा म-दनी फूलों से नवाज़ा, **उन के हुस्ने आवाज़ और म-दनी अन्दाज़ से हमें इतना सुरूर मिला कि हम उन के मीठे बोलों में खो गए ।** कुछ देर बा'द वोह जाने लगे तो हम ने अ़र्ज़ की : भाई ! मज़ीद कुछ देर तशरीफ़ रखिये ! और हमें अच्छी अच्छी बातें बताइये, नेकी की दा'वत का जज़्बा रखने वाले इस्लामी भाई ने हमारी दर-ख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा ली । दौराने गुफ़्त-गू फ़िक्रे आख़िरत व इस्लाहे़ उम्मत का मौज़ूअ़ भी ज़ेरे बह़स रहा, उस आ़शिक़े रसूल की पुर तासीर **इन्फ़िरादी कोशिश** ने हमारे दिलों पर गहरे नुक़ूश छोड़े । दूसरी रात हम फिर उसी जगह महफ़िल सजाए उन इस्लामी भाई के मुन्तज़िर थे कि ह़स्बे उम्मीद वोह तशरीफ़ लाए और हमें **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** चलने की दा'वत पेश की, उन के किरदार व गुफ़्तार को देख कर कम अज़ कम मैं तो इन्कार न कर सका और उन के साथ **फ़ैज़ाने मदीना** की पाकीज़ा फ़ज़ाओं में पहुंच गया । ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का जज़्बा दिल में उजागर करने वाले रूह़ परवर म-दनी माह़ोल ने मेरे दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया और यूं उस आ़शिक़े रसूल की "इन्फ़िरादी कोशिश" की ब-र-कत से मुझे दा'वते इस्लामी का **म-दनी माह़ोल** नसीब हो गया ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान की इन्फ़िरादी कोशिश : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! इन्फ़िरादी कोशिश के कितने ज़बर दस्त नताइज निकलते हैं ! सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ का अपना तजरिबा येही है कि इज्तिमाई त़ौर पर होने वाले बयानात बारहा सुनने के बा वुजूद जिन में तब्दीली नहीं आती, थोड़ी सी **इन्फ़िरादी कोशिश** उन को बदल कर रख देती है । नेकी की दा'वत के म-दनी काम में इन्फ़िरादी कोशिश का एक

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (کنزالعمال)

मुन्फ़रिद मक़ाम है । अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने तब्लीग़े दीन के लिये जहां इज्तिमाई कोशिशें फ़रमाई हैं वहां इन्फ़िरादी कोशिश भी की है और एक एक के पास जा कर भी उन्हें इस्लाम का पैग़ाम दिया है । बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن ने भी **नेकी की दा'वत** के लिये ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिशें फ़रमाई हैं चुनान्चे मुहद्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सरदार अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ الصَّمَد मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में थे । इस दौरान तीन नौ जवान आप से बैअ़त हुए । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उन्हें मस्लके अहले सुन्नत पर क़ाइम दाइम रहने, इस की तब्लीग़ करने, नमाज़–हाए पंजगाना पाबन्दी से पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमाई । फिर उन्हें **दाढ़ी** रखने और मूंछें काटने का बड़े प्यारे अन्दाज़ में हुक्म दिया और फ़रमाया कि जिस त़रह़ वित्रों की नमाज़ को वाजिब समझते हो इसी त़रह़ दाढ़ी बढ़ाने को भी वाजिब समझो । एक मुश्त दाढ़ी रखना वाजिब है, इस के ख़िलाफ़ करने या'नी कम करने पर गुनाह और अ़ज़ाब होगा । हज़रते मुहद्दिसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की हसीन तल्क़ीन का उन पर गहरा असर पड़ा उन्हों ने दाढ़ियां रख लीं । अब वोह بِحَمْدِهٖ تَعَالٰی शरीअ़त के पाबन्द हैं और बड़ी वजाहत (या'नी इ़ज़्ज़त) रखते हैं । (ह़याते मुह़द्दिसे आ'ज़म, स. 89)

सरकार का आ़शिक़ भी क्या दाढ़ी मुंडाता है !
क्यूं इ़श्क़ का चेहरे से इज़्हार नहीं होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 234)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मरने से क़ब्ल नौ जवान की दाढ़ी घर वालों ने काट डाली ! : सद करोड़ अफ़्सोस ! ह़ालात दिन ब दिन बिगड़ते चले जा रहे हैं, एक त़रफ़ मग़रिबी तहज़ीब की यलग़ार, फ़ेशन की तूमार, फ़िल्म बीनी के लिये घर घर टीवी, इन्टरनेट और वी सी आर है तो बद क़िस्मती से दूसरी त़रफ़ मुसल्मान कहलाने वाले अ़–मलन सुन्नतों से बेज़ार नज़र आ रहे हैं ! दा'वते इस्लामी से वाबस्ता ओरंगी टाउन, बाबुल मदीना कराची का एक **नौ जवान आ़शिक़े रसूल** जिस की उ़म्र ब मुश्किल 20 साल होगी, दाढ़ी जब से आई रख ली थी, बेचारा ख़ून के सरत़ान (या'नी ब्लड केन्सर ।

BLOOD CANCER) में मुब्तला हो गया। मैं (या'नी सगे मदीना عُفِىَ عَنْهُ) उस की इ़यादत के लिये अस्पताल पहुंचा, बेचारा ज़िन्दगी और मौत की कश्मकश में था......ज़बान साथ नहीं दे रही थी.....दाढ़ी चेहरे से उतार ली गई थी, मैं चौंका.......उस मज़्लूम ने चेहरे की त़रफ़ ब मुश्किल तमाम हाथ उठाया और इशारे से फ़रियाद की.......मैं इतना समझ सका गोया वोह कह रहा था **"मैं ने مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नहीं मुंडवाई"** मेरे घर वालों ने नींद या बेहोशी की ह़ालत में मेरी दाढ़ी साफ़ कर डाली है। आह ! चन्द ही दिनों के बा'द वोह दुखियारा दुन्या से चल बसा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मर्ह़ूम की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमाए और उस की दाढ़ी साफ़ कर डालने वाले को तौबा की सआ़दत बख़्शे।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

रूह़ में सोज़ नहीं, क़ल्ब में एह़सास नहीं
कुछ भी पैग़ामे मुह़म्मद का तुम्हें पास नहीं

मुसलमान कहलाने वालों की सुन्नतों से दूरी : **अफ़्सोस** सद करोड़ अफ़्सोस ! कैसा नाज़ुक दौर आ पहुंचा है कि आज मुसल्मान कहलाने वाले अपनी औलाद को बिलजब्र **सुन्नतों** से दूर रखते हैं बल्कि **सुन्नतों** पर अ़मल करने पर बसा अवक़ात त़रह़ त़रह़ की सज़ाएं देते हैं, ऐसे ऐसे **दिल ख़राश वाक़िआ़त** देखे गए कि बस ख़ुदा की पनाह। कई **नौ जवान इस्लामी भाइयों** ने म-दनी माह़ोल से **मु-तअस्सिर** हो कर दाढ़ी रख ली तो ख़ानदान भर में गोया **ज़ल्ज़ला** आ गया ! अगर धोंस धमकी और मारपीट से बाज़ न आए तो दाढ़ी रखने के सबब बेचारे घरों से निकाल दिये गए, नींद की ह़ालत में आ़शिक़ाने रसूल की दाढ़ियों पर क़ैंचियां चला दी गईं। दा'वते इस्लामी के म-दनी काम के आग़ाज़ से पहले का वाक़िआ़ है, एक नौ जवान सगे मदीना عُفِىَ عَنْهُ के पास आने जाने, उठने बैठने लगा, उस पर माह़ोल का असर पड़ने लगा। उस ने घर पर आते जाते "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم" कहना शुरूअ़ कर दिया, बा'ज़ अवक़ात दौराने गुफ़्त-गू उस ने "اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ" कह दिया ! मुसल्मान कहलाने वाले वालिदैन के कान खड़े हो गए !

बाज़पुर्स शुरूअ़ हो गई, चुनान्चे उस से घर में सुवाल हुवा : बेटा ! बात क्या है कि आज कल सलाम करने और اِنْ شَآءَاللّٰهعَزَّوَجَلَّ कहने लग गया है ! उस ग़रीब ने सुन्नतों के अदना ख़ादिम सगे मदीना عُفِىَ عَنْهُ का नाम ले दिया, बस खेल ख़त्म, उसे सख़्ती के साथ रोक दिया गया कि ख़बरदार ! आज के बा'द इस "**मुल्ला**" की सोह़बत में तुझे नहीं रहना ! आख़िरे कार वोह बेचारा मॉडर्न बन गया ।

वोह दौर आया कि दीवानए नबी के लिये
हर एक हाथ में पथ्थर दिखाई देता है

म-दनी माह़ोल से रोका तो हेरोइन्ची बन गया, बाप पछता रहा है : इसी से मिलता जुलता एक और इ़ब्रत अंगेज़ वाक़िआ़ सुनिये, चुनान्चे एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि (है़दरआबाद, बाबुल इस्लाम, पाकिस्तान) का एक नौ जवान ग़ालिबन 1988 सि.ई. में दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हुवा । नमाज़ों की पाबन्दी के साथ साथ चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली, सर पर इ़मामा शरीफ़ अपनी बहारें दिखाने लगा । उस ने मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ान) में पढ़ना भी शुरूअ़ कर दिया । उस का तअ़ल्लुक़ एक मॉडर्न और अमीर घराने से था, घर वालों को उस की ज़िन्दगी में आने वाला **म-दनी इन्क़िलाब** समझ में न आया चुनान्चे उस की मुख़ा-लफ़त शुरूअ़ हो गई, त़रह़ त़रह़ से उस की दिल आज़ारियां की जातीं, सुन्नतों पर चलने की राह में रुकावटें खड़ी की जातीं और **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल छोड़ने पर मजबूर किया जाता । वोह कभी कभार बे बस हो कर फ़रियाद करता कि मुझे इस म-दनी माह़ोल से दूर न करो वरना पछताओगे, मगर उस की किसी ने न सुनी । मुख़ा-लफ़त का येह सिल्सिला तक़्रीबन तीन साल तक चलता रहा बिल आख़िर तंग आ कर उस ने घर वालों के सामने हथियार डाल दिये और दाढ़ी शरीफ़ मुंडवा कर दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल को "ख़ैर आबाद" कह दिया । बड़े भाई चूंकि डॉक्टर थे इस लिये इसे भी डॉक्टर बनने कि लिये सरदारआबाद (पंजाब, पाकिस्तान) के एक मेडीकल कॉलेज में दाख़िल करवा दिया गया । जहां वोह हॉस्टेल (इक़ामत गाह) में बुरी सोह़बत की नुहूसतों का शिकार हो कर चरस पीने लगा और सख़्त बीमार हो गया, घर वाले उसे वापस है़दरआबाद ले आए ।

वालिद साहिब ने इलाज पर लाखों रुपै ख़र्च कर डाले मगर न सिह्हत याब हुवा न ही सुधरा बल्कि अब वोह हेरोइन का नशा करने लगा। कसरत से नशा करने की वजह से वोह सूख कर कांटा हो गया, दांतों की सफ़ेदी ग़ाइब हो कर उन पर कालक की तह चढ़ गई और अब ता दमे तह्रीर उस की हालत पागलों की सी हो चुकी है। **अल्लाह** की रह्मत से अब वालिद साहिब दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो चुके हैं, और बेचारे बहुत पछता रहे हैं कि काश ! उस वक़्त मुझे दा'वते इस्लामी की **अहम्मिय्यत** समझ में आ जाती और मैं अपने बेटे को दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से दूर न करता तो शायद आज मुझे येह दिन न देखने पड़ते। मगर "अब पछताए क्या होत जब चिड़ियां चुग गईं खेत।" **अल्लाह** तआ़ला उस नौ जवान को नशे की आ़दते बद छोड़ कर फिर से दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم

औलाद की दुरुस्त तरबिय्यत कीजिये वरना पछताएंगे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस सच्ची हिकायत में उन वालिदैन के लिये इब्रत ही इब्रत है जो अपनी औलाद को सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत, म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत, आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत नीज़ दाढ़ी और इमामा शरीफ़ सजाने, सुन्नतों भरा लिबास अपनाने से रोकते और सुन्नतों पर अ़मल करने पर बार बार टोकते बल्कि म-दनी माहोल से दूर होने पर मजबूर करते हैं, याद रखिये ! आप का प्यारा बेटा, आप के जिगर का टुकड़ा और अपनी अम्मी की आंखों का तारा ही सही लेकिन येह मत भूलिये कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा, उस के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मती और इस्लामी मुआ़-शरे का एक फ़र्द है। अगर आप की तरबिय्यत उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दुरुस्त त़रीक़े पर इ़बादत, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें और इस्लामी मुआ़-शरे में उस की ज़िम्मेदारी न सिखा सकी तो उसे अपना इत़ाअ़त गुज़ार फ़रज़न्द देखने के सुनहरे ख़्वाब भी मत देखिये क्यूं कि येह इस्लाम ही तो है जो एक मुसल्मान को अपने वालिदैन की इत़ाअ़त और उन के हुक़ूक़ की बजा आ-वरी का दर्स देता है। देखा येह गया है कि जब औलाद की तरबिय्यत से ग़फ़्लत के अ-सरात सामने आते हैं तो येही वालिदैन हर कस व नाकस के सामने

अपनी औलाद के बिगड़ने का रोना रोते दिखाई देते हैं, उन्हें येह नहीं भूलना चाहिये कि औलाद को इस ह़ाल तक पहुंचाने में ख़ुद उन का अपना ही हाथ है। उन्हों ने अपने बच्चे को ABC बोलना तो सिखाया मगर क़ुरआन पढ़ना न सिखाया, मग़रिबी तहज़ीब के त़ौर त़रीक़े तो समझाए मगर रसूले अ़-रबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें न सिखाईं, जनरल नॉलेज (मा'लूमाते आ़म्मा) की **अहम्मिय्यत** पर तो उस के सामने घन्टों लेक्चर दिये मगर फ़र्ज़ दीनी उ़लूम के ह़ुसूल की रग़बत न दिलाई, उस के दिल में माल की **मह़ब्बत** तो डाली मगर इश्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शम्अ़ न जलाई, उसे दुन्यवी ना कामियों का ख़ौफ़ तो दिलाया मगर क़ब्र व ह़श्र के इम्तिह़ान की नाकामी के भयानक नताइज से न डराया, उसे "हेलो ! हाउ आर यू !" कहना तो सिखाया मगर सलाम करने का सह़ीह़ त़रीक़ा न बताया।

इरतिकाबे गुनाह की मादर पिदर आज़ादी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! इरतिकाबे गुनाह की मादर पिदर आज़ादी, केबल, वी सी आर और इन्टरनेट की दस्त-याबी, रक़्सो सुरूद की मह़फ़िलों की आबादी और बिगड़ा हुवा घरेलू माह़ोल, येह सब कुछ मिल कर किरदार की अ़-ज़्-मतों को बे इन्तिहा दाग़दार कर देते हैं और फिर ऐसे इन्सान से पाकीज़ा अफ़्आ़ल का सुदूर मुह़ाल न सही मगर निहायत दुश्वार ज़रूर हो जाता है। इस लिये वालिदैन को चाहिये कि अपनी औलाद की ज़ाहिरी ज़ैबो ज़ीनत, अच्छी ग़िज़ा, उ़म्दा लिबास और दीगर ज़रूरिय्यात की कफ़ालत (या'नी ज़िम्मेदारी निभाने) के साथ साथ उन की **म-दनी तरबिय्यत** के लिये भी कोशां रहें, और सिर्फ़ औलाद ही की नहीं अपनी इस्लाह़ की भी फ़िक्र करनी चाहिये क्यूं कि जो ख़ुद डूब रहा हो वोह दूसरों को क्या बचाएगा ! जो ख़ुद ख़्वाबे ग़फ़्लत में हो वोह दूसरों को क्या जगाएगा, जो ख़ुद पस्तियों की त़रफ़ लुढ़क रहा हो वोह किसी और को बुलन्दियों पर क्यूंकर पहुंचाएगा ! लिहाज़ा ख़ुद भी नेकियां अपनाना, रिज़ाए इलाही पाना, अपने आप को गुनाहों से मह़फ़ूज़ बनाना, जहन्नम के होलनाक अ़ज़ाबों से बचाना और रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ से जन्नतुल फ़िरदौस में जाना है और अपनी प्यारी प्यारी औलाद को भी इसी डगर (या'नी राह) पर चलाना है। इस मक़्सद के ह़ुसूल के लिये **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल एक ज़बर दस्त ने'मत है। क़ुरआनो अह़ादीस और अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن

की रोशनी में औलाद की तरबिय्यत का त़रीक़ा जानने कि लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 188 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"तरबिय्यते औलाद"** का ज़रूर मुत़ा-लआ़ कीजिये।

सूना जंगल रात अंधेरी, छाई बदली काली है
सोने वालो जागते रहियो चोरों की रखवाली है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इस शे'र के मा'ना येह हो सकते हैं कि ऐ मुसल्मानो ! इस दुन्या का जंगल सुन्सान व वीरान है, रात भी घुप अंधेरी और ऊपर से काली घटा भी छाई हुई है, ऐसी ख़ौफ़नाक सूरते ह़ाल में अव्वल तो नींद आ नहीं सकती और अगर फिर भी सो चुके हो तो फ़ौरन जाग उठो क्यूं कि यहां के ह़िफ़ाज़त करने वाले तुम्हारी ह़िफ़ाज़त ख़ाक करेंगे येह तो ख़ुद ही लुटेरे हैं। या'नी ग़फ़्लतों और नफ़्सानी ख़्वाहिशों का हर त़रफ़ घटा टोप अंधेरा छाया हुवा है, येह नफ़्सो शैत़ान जो हर वक़्त तुहारे साथ लगे हुए हैं इन को अपना ख़ैर ख़्वाह मत समझ बैठना येह मुह़ाफ़िज़ नहीं बल्कि **चोर** हैं ख़बरदार ! होशियार !! जागते रहो !!! कहीं येह तुम्हारा **ईमान** न चुरा लें।

चन्द रोज़ा है येह दुन्या की बहार दिल लगा इस से न ग़ाफ़िल ज़ी नहार
उ़म्र अपनी यूं न ग़फ़्लत में गुज़ार होशियार ऐ मह़्वे ग़फ़्लत होशियार
एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या बेटा भी कभी बाप को मारता है ? : तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन में है कि "समर क़न्द" के एक आ़लिमे दीन ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू ह़फ़्स** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास एक शख़्स आया और कहने लगा : "मेरे बेटे ने मुझे मारा है।" उन्हों ने ह़ैरत से पूछा : क्या बेटा भी कभी बाप को मारता है ? उस ने कहा : जी हां ! ऐसा ही हुवा है।

हज़रते सय्यिदुना **अबू हफ़्स** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दरयाफ़्त किया : क्या आप ने इसे दीनी इल्मो अदब सिखाया है ? उस शख़्स ने नफ़ी (या'नी इन्कार) में जवाब दिया। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पूछा : क़ुरआने करीम सिखाया है ? उस ने कहा : नहीं। फिर पूछा : तो वोह क्या करता है ? उस ने बताया खेतीबाड़ी करता है। हज़रते सय्यिदुना अबू हफ़्स رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : जानते हैं कि उस ने आप को क्यूं मारा है ? कहा : नहीं। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस्लाह़ की ख़ातिर उस पर चोट करते हुए फ़रमाया : शायद वोह सुब्ह़ के वक़्त गधे पर सुवार हो कर जब खेत की त़रफ़ जा रहा होगा, बैल उस के आगे और कुत्ता उस के पीछे होगा, क़ुरआने पाक तो उसे पढ़ना आता नहीं कि कुछ रूह़ानिय्यत नसीब होती बस यूं ही ग़फ़्लत में कुछ गुनगुना रहा होगा, ऐसे में आप उस के सामने आ गए होंगे, उस ने समझा होगा कि बैल आड़े आ गया है और उस को हांकने के लिये सर पर कोई चीज़ दे मारी होगी ! शुक्र कीजिये कि आप का सर फटा नहीं। (تَنبِيهُ الْغافِلِين ص٦٨)

महशर में पिटाई से बाप का गोश्त पोस्त झड़ जाएगा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! अपनी औलाद को इस्लामी तरबिय्यत न देने वाले का अन्जाम ! आज भी बे शुमार बाप ऐसे मिलेंगे जिन्हें येह शिकायत होगी कि हमारी औलाद हमें गालियां सुनाती, हम पर शोर मचाती, हमारी पिटाई लगाती और घर से निकाल देने की धम्कियां सुनाती है। बस मां बाप की दुन्या व आख़िरत की भलाई इसी में है कि ऐन शरीअ़त व सुन्नत के मुताबिक़ औलाद की तरबिय्यत करें। वरना दुन्या अगर संवर भी गई तो आख़िरत में आ़फ़िय्यत का हुसूल दुश्वार हो जाएगा। औलाद की दुरुस्त तरबिय्यत न करने वाले एक बाप के तअ़ल्लुक़ से एक लरज़ा ख़ैज़ रिवायत समाअ़त फ़रमाइये चुनान्चे फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल करते हैं : मरवी है कि मर्द से तअ़ल्लुक़ रखने वालों में पहले उस की ज़ौजा और उस की औलाद है, येह सब (या'नी बीवी, बच्चे क़ियामत में) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करेंगे : ऐ हमारे रब عَزَّ وَجَلَّ ! हमें इस शख़्स से हमारा ह़क़ दिला, क्यूं कि इस ने कभी हमें **दीनी उमूर की ता'लीम** नहीं दी और येह हमें **ह़राम** खिलाता था जिस का हमें इल्म न था, फिर उस

शख़्स को ह़राम कमाने पर इस क़दर मारा जाएगा कि उस का गोश्त झड़ जाएगा फिर उस को मीज़ान (या'नी तराज़ू) के पास लाया जाएगा, फ़िरिश्ते पहाड़ के बराबर उस की नेकियां लाएंगे तो उस के इ़याल (या'नी बाल बच्चों) में से एक शख़्स आगे बढ़ कर कहेगा : **''मेरी नेकियां कम हैं।''** तो वोह उस की नेकियों में से ले लेगा, फिर दूसरा आ कर कहेगा : **''तू ने मुझे सूद खिलाया था।''** और उस की नेकियों में से ले लेगा, इस त़रह़ उस के घर वाले उस की सब नेकियां ले जाएंगे और वोह अपने अहलो इ़याल की त़रफ़ ह़सरत व यास (या'नी रन्ज व मायूसी) से देख कर कहेगा : '' अब मेरी गरदन पर वोह गुनाह व मज़ालिम रह गए जो मैं ने तुम्हारे लिये किये थे।'' (उस वक़्त) फ़िरिश्ते कहेंगे : ''येह वोह (बद नसीब) शख़्स है जिस की नेकियां इस के घर वाले ले गए और येह उन (या'नी घर वालों) की वजह से जहन्नम में चला गया।'' (قُرَّةُ الْعُيُون ص٤٠١)

जो घर वालों की वजह से म-दनी माह़ोल से दूर हो गए : न जाने कितने इस्लामी भाई ऐसे होंगे जिन्हों ने **दा'वते इस्लामी** से **मु-तअस्सिर** हो कर दाढ़ी शरीफ़ सजाई होगी, दीगर फ़राइज़ व वाजिबात और सुन्नतों पर अ़मल की तरकीब बनाई होगी मगर घर वालों या किसी और की त़रफ़ से की जाने वाली मुख़ा-लफ़त के सबब दिल बरदाश्ता हो कर दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे **म-दनी माह़ोल** से दूर जा पड़े होंगे। ऐसों की ख़िदमतों में सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ की दस्त बस्ता **म-दनी इल्तिजा** है कि दा'वते इस्लामी आप की अपनी सुन्नतों भरी तह़रीक है, बराए करम ! इस से पहले पहले पलट आइये कि मौत आप को दुन्या की रौनक़ों से उठा कर **क़ब्र** की तन्हाइयों में मुन्तक़िल कर दे और आप पर येह ह़सरत त़ारी हो जाए कि काश ! दुन्या में ज़ियादा से ज़ियादा नेकियां कमा लेता। उठिये ! हिम्मत कीजिये ! गुनाहों से ह़िफ़ाज़त और नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे **म-दनी माह़ोल** से एक बार फिर वाबस्ता हो जाइये। हो सकता है अब मुख़ा-लफ़त न हो, या हो भी तो पहले से कम हो क्यूं कि वक़्त के साथ साथ ह़ालात व ख़यालात बदल जाते हैं, मगर याद रहे कि मुख़ा-लफ़त की सूरत में भी आप को नरमी

नरमी और सिर्फ़ नरमी से काम लेना है और गुफ़्तार व किरदार और आ़दात व अत्वार में ऐसा म-दनी इन्क़िलाब लाना है कि घर वाले ज़बाने ह़ाल से पुकार उठें : **"वाह क्या बात है दा'वते इस्लामी की !"** आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं, चुनान्चे

गिर गिर कर संभल गया : पंजाब (पाकिस्तान) के ज़िलअ़ मुज़फ़्फ़र गढ़ के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि जब मैं ने **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से **मु-तअस्सिर** हो कर **दाढ़ी** रखना शुरूअ़ की तो घर में म-दनी माह़ोल न होने की वजह से ऐसी मुख़ा-लफ़त हुई कि मुझे مَعَاذَالله कटवाते ही बनी मगर मैं ने दा'वते इस्लामी से अपना नात़ा नहीं तोड़ा। सुन्नतों भरे हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में गाहे गाहे ह़ाज़िरी देता रहा, इस से गोया मेरी "बेटरी चार्ज" होती रही और नमाज़ों की पाबन्दी जारी रही। कुछ अ़र्सा गुज़रने के बा'द फिर जज़्बे ने उठान ली, ज़ेह्न बना और मैं ने दोबारा **दाढ़ी** बढ़ानी शुरूअ़ की, फिर मुख़ा-लफ़त शुरूअ़ हो गई, इस मर्तबा पहले के मुक़ाबले में जियादा अ़र्सा मुख़ा-लफ़त झेली मगर फिर हिम्मत हार गया और اَسْتَغْفِرُ الله मैं ने दाढ़ी कटवा दी। बिल आख़िर हिम्मत कर के तीसरी बार मैं ने **दाढ़ी** का आग़ाज़ कर दिया, अब की बार घर वालों की त़रफ़ से सिर्फ़ बराए नाम मुख़ा-लफ़त की गई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं दाढ़ी बढ़ाने में काम्याब हो गया। यहां तक कि सर पर इमामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया और दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** में रच बस गया और म-दनी काम भी शुरूअ़ कर दिया। आज (ता दमे तह़रीर) तक़रीबन 14 साल होने को आए हैं, दाढ़ी शरीफ़ ब दस्तूर मेरे चेहरे पर और सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज मौजूद है, **अल्लाह** तआ़ला येह सुन्नतें **क़ब्र** में भी साथ ले जाने की सआ़दत इनायत फ़रमाए। आमीन। आज सोचता हूं कि अगर मैं दाढ़ी मुंडाने की ह़ालत में मर जाता तो मेरा क्या बनता ! **अल्लाह** तआ़ला दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए, जिस ने मुझे तबाही की

तंग गली से निकाल कर जन्नत की शाहराह पर गामज़न कर दिया और मेरे ज़ाहिरो बातिन पर ऐसा म-दनी रंग चढ़ाया कि अब मेरे घर वाले बल्कि दीगर रिश्तेदार भी **दा'वते इस्लामी** की ब-र-कतों के क़ाइल हो चुके हैं ।

अगर सुन्नतें सीखने का है जज़्बा तुम आ जाओ देगा सिखा म-दनी माहोल
तू दाढ़ी बढ़ा ले इमामा सजा ले नहीं है येह हरगिज़ बुरा म-दनी माहोल
संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَالله
तुम अपनाए रख्खो सदा म-दनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मौत के बा'द की होशरुबा मन्ज़र कशी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! और ऐ आशिक़ाने रसूल ! येह अ़हद कीजिये : ख़्वाह कितनी ही सख़्तियां सहनी पड़ें **मक्की म-दनी आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत **दाढ़ी मुबारक** चेहरे पर मुस्तक़िल सजानी और क़ब्र में भी साथ ले जानी है । याद रहे ! दाढ़ी मुंडवाना और एक मुठ्ठी से घटाना दोनों ह़राम है । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत्बूआ़ रिसाला, **"काले बिच्छू"** सफ़ह़ा 4 से शुरूअ़ होने वाला दिल हिला देने वाला मज़मून बित्तसर्रुफ़ पेश किया जाता है बगोशे होश सुनिये : **ऐ ग़ाफ़िल** इस्लामी भाई ! ज़रा होश कर !! मरने के बा'द तेरी एक न चलेगी, **तेरे नाज़ उठाने वाले** तेरे कपड़े भी उतार लेंगे । तू कितना ही बड़ा सरमाया दार सही, तुझे वोही **कोरे लठ्ठे का कफ़न** पहनाएंगे जो फ़ुटपाथ पर दम तोड़ने वाले ला वारिस को पहनाया जाता है । तेरी कार है तो वोह भी गेराज (GARAGE) में खड़ी रह जाएगी । तेरे बेश क़ीमत लिबास सन्दूक़ में धरे रह जाएंगे । तेरा माल व मताअ़ और ख़ून पसीने की कमाई पर वु-रसा क़ाबिज़ हो जाएंगे । **"अपने"** अश्क बहा रहे होंगे, **"बेगाने"** (या'नी पराए) ख़ुशियां मना रहे होंगे । तेरे नाज़

उठाने वाले तुझे अपने कन्धों पर लाद कर चल देंगे और एक ऐसे वीराने में ले जाएंगे कि तू कभी इस होलनाक सन्नाटे में खुसूसन रात के वक़्त एक घड़ी के लिये भी तन्हा न आया था न आ सकता था बल्कि इस के तसव्वुर से ही कांप जाया करता था। अब गढ़ा खोद कर तुझे **मनों मिट्टी तले** दफ़्न कर के तेरे सारे अ़ज़ीज़ चल देंगे, तेरे पास एक रात कुजा एक घन्टा भी ठहरने के लिये कोई राज़ी न होगा। ख़्वाह तेरा **चहीता बेटा** ही क्यूं न हो, वोह भी भाग खड़ा होगा। तू ह़सरत भरी निगाहों से अ़ज़ीज़ों और दोस्तों को निगाहों से ओझल होता देख रहा होगा, दिल डूबता जा रहा होगा। इतने में **दो ख़ौफ़नाक शक्लों वाले फ़िरिश्ते** (मुन्कर व नकीर) अपने लम्बे लम्बे दांतों से **क़ब्र** की दीवारें चीरते हुए तेरे सामने आ मौजूद होंगे, उन की आंखों से आग के शो'ले निकल रहे होंगे, काले काले मुहीब (या'नी हैबत नाक) बाल सर से पाउं तक लटक रहे होंगे, तुझे झिड़क कर बिठाएंगे, करख़्त (या'नी निहायत ही सख़्त) लहजे में इस त़रह़ **सुवालात** करेंगे : ''مَنْ رَّبُّكَ؟'' (या'नी तेरा रब कौन है ?) ''مَا دِيْنُكَ؟'' (या'नी तेरा दीन क्या है ?) इतने में तेरे और मदीने के दरमियान ह़ाइल शुदा तमाम पर्दे उठा दिये जाएंगे किसी की ह़सीन व दिलरुबा और प्यारी प्यारी सूरत सामने आ जाएगी, या वोह अ़ज़ीम और प्यारी हस्ती ख़ुद तशरीफ़ ले आएगी। क्या अ़जब ! तेरी आंखें शर्म से झुक जाएं ! हो सकता है कि तू सोच में पड़ जाए कि निगाहें उठाऊं तो कैसे उठाऊं ! अपनी बिगड़ी हुई सूरत दिखाऊं तो कैसे दिखाऊं ! येह वोही तो **म-दनी आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जिन का मैं कलिमा पढ़ा करता था, अपने आप को इन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुलाम भी कहता था, लेकिन मैं ने **मह़ब्बते** रसूल की निशानी अपनी दाढ़ी शरीफ़ के साथ येह क्या किया ! मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तो येह फ़रमाया : **''मूंछें ख़ूब पस्त करो और दाढ़ियों को मुआ़फ़ी दो और यहूदियों जैसी सूरत मत बनाओ।''** (شرح معانی الآثار للطحاوی ج ٤ ص٢٨) लेकिन हाए मेरी बद बख़्ती ! मैं चन्द रोज़ा दुन्या की ज़ीनत में खो गया, **फ़ेशन** ने मेरा सत्तियानास कर दिया, आह ! आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सख़्ती से मन्अ़ करने के बा वुजूद मैं ने दाढ़ी मुंडवा कर अपना चेहरा

यहूदियों या'नी म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दुश्मनों जैसा बनाए रखा ! **हाए !** अब क्या होगा ! कहीं ऐसा न हो कि मेरी बिगड़ी हुई शक्ल देख कर **सरकारे आ़ली वक़ार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुंह फेर लें और येह फ़रमा दें कि **"येह तो मेरे दुश्मनों वाला चेहरा है मेरे ग़ुलामों वाला नहीं !!"** अगर ख़ुदा ना ख़्वास्ता ऐसा हुवा तो सोच उस वक़्त तुझ पर क्या गुज़रेगी !

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम
अगर नबी ने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

ऐसा नहीं होगा, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हरगिज़ नहीं होगा। अभी तू ज़िन्दा है, मान जा ! अपने कमज़ोर बदन पर तरस खा ! झटपट उठ हिम्मत कर ! अंग्रेज़ी फ़ेशन और फ़िरंगी तहज़ीब को तीन तलाक़ें दे डाल और अपना चेहरा मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा **सुन्नत** से आरास्ता कर ले और **एक मुट्ठी दाढ़ी** सजा ले। हरगिज़ हरगिज़ शैतान के इस फ़रेब में न आ और इन वसाविस की तरफ़ तवज्जोह मत ला, कि **"अभी तो मैं इस क़ाबिल नहीं हुवा, मेरी तो उम्र ही क्या है ? मेरा इल्म भी इतना कहां है ! अगर किसी ने दीन के बारे में सुवाल कर दिया तो मुझे जवाब नहीं आएगा मैं तो जब क़ाबिल हो जाऊंगा उस वक़्त दाढ़ी रखूंगा।"** याद रख ! येह शैतान का काम्याब तरीन वार है कि इन्सान अपने बारे में येह समझ बैठे कि **"हां ! अब मैं क़ाबिल हो गया हूं।"** याद रखिये ! अपने आप को "क़ाबिल" समझना येही "ना क़ाबिलिय्यत" की सब से बड़ी दलील है। आ़जिज़ी इख़्तियार कर ! बड़े बड़े **उ-लमाए किराम** भी हर सुवाल का जवाब नहीं देते तो क्या हर सुवाल का जवाब देने की तू ने कोई ज़िम्मेदारी ले रखी है ? नफ़्स की ह़ीला बाज़ियों में मत आ ! और मान जा, ख़्वाह मां रोके, बाप मन्अ़ करे, मुआ़-शरा आड़े आए, शादी में रुकावट खड़ी हो। कुछ ही हो जाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे **रसूल** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म मानना मानना और मानना ही है, **तसल्ली रख !** आगर जोड़ा लौहे महफ़ूज़ पर लिखा हुवा है तो तेरी **शादी** हो कर रहेगी और अगर नहीं लिखा तो दुन्या की कोई त़ाक़त तेरी **शादी** नहीं करवा सकती। ज़िन्दगी का क्या भरोसा ?

दाढ़ी मुंडवाते ही मौत : **किसी** ने सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ (राक़िमुल हुरूफ़) को कुछ इस त़रह़ का वाक़िआ़ सुनाया था कि **बंगलादेश** में एक नौ जवान ने दाढ़ी रखी थी, जब उस की **शादी** का वक़्त क़रीब आया तो वालिदैन ने **दाढ़ी** मुंडवाने पर मजबूर किया । बा दिले ना ख़्वास्ता (या'नी न चाहते हुए भी) नाई के पास जा कर **दाढ़ी** मुंडवा कर घर की त़रफ़ आते हुए सड़क उ़बूर कर रहा था कि किसी तेज रफ़्तार गाड़ी ने कुचल कर रख दिया, उस का दम निकल गया और उस की **शादी** के अरमान ख़ाक में मिल गए, मां बाप न बचा सके ! न **शादी** हुई न **दाढ़ी** रही । **तो प्यारे इस्लामी भाई !** होश में आ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा कर के आज ही दाढ़ी मुंडवाने से तौबा कर के अ़ह्द कर ले कि ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की **मह़ब्बत** में गरदन तो कट सकती है मगर अब मेरी **दाढ़ी** दुन्या की कोई त़ाक़त मुझ से जुदा नहीं कर सकती । शाबाश......! मुबारक......! मुबारक......! मुबारक......!!!

उन का दीवाना इ़मामा और ज़ुल्फ़ो रीश में
वाह ! देखो तो सही लगता है कितना शानदार

(वसाइले बख़्शिश, स. 399)

दाढ़ी मुन्डों से आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नफ़रत का इ़ब्रत नाक वाक़िआ़ : **सगे** ईरान ख़ुस्रव (परवेज़) के पास ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन हु़ज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के हाथ **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल नामए मुबा–रका (या'नी मक्तूब शरीफ़) पहुंचा तो इस गुस्ताख़े रसूल ने मक्तूबे वाला को देखते ही गुस्से से शहीद कर डाला और उस बद ज़बान ने बका : (......परवेज़ का बे अ–दबाना जुम्ला नक़्ल करने की हिम्मत नहीं, लिहाज़ा ह़ज़्फ़ किया जाता है......) इस के बा'द सगे ईरान ख़ुस्रव (परवेज़) ने **बाज़ान** को जो **यमन** में उस का गवर्नर था और **अ़रब** का तमाम मुल्क उस के ज़ेरे इक़्तिदार समझा जाता था येह हुक्म भेजा कि...... (यहां भी सगे ईरान परवेज़ की बक्वास ह़ज़्फ़ की जाती है) **बाज़ान** ने एक फ़ौजी दस्ता मामूर किया, जिस के अफ़्सर का नाम **ख़ुर ख़ुस्सरह** था । नीज़ **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के

अ-सरो रुसूख़ पर गहरी नज़र डालने के लिये एक मुल्की अफ़्सर भी उस के साथ किया जिस का नाम **बान्विया** था । येह दोनों अफ़्सरान जिस वक़्त **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में पेश किये गए तो रो'बे **नुबुव्वते मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की वजह से उन की गरदन की रगें थरथरा रही थीं । **येह लोग चूंकि आतश परस्त (पारसी) थे । इस लिये दाढ़ियां मुंडी हुई और मूंछें इस क़दर बढ़ी हुई थीं कि उन से उन के लब ढके हुए थे** और अपने बादशाह परवेज़ को "रब" कहा करते थे । उन के चेहरे देख कर **प्यारे आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ पहुंची, कराहत (या'नी बेज़ारी) के साथ फ़रमाया : "**तुम पर हलाकत हो** कि ऐसी सूरत बनाने का तुम से किस ने कहा है ?" उन्हों ने जवाब दिया : "हमारे रब परवेज़ ने ।" **प्यारे आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**मगर मेरे रब तआला ने तो मुझे येह हुक्म दिया है कि दाढ़ी बढ़ाऊं और मूंछें कतरवाऊं ।**" (تاريخ الخميس ج٢ص٣٥, फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 647, मुलख़्ख़सन)

क़ियामत का दिल हिला देने वाला मन्ज़र : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए पर ग़ौर फ़रमाइये ! समझ में न आया हो तो दोबारा पढ़िये ! ख़ूब ग़ौर कीजिये ! दो ऐसे अश्ख़ास जो अभी ग़ैर मुस्लिम हैं मुसल्मान नहीं हुए । अह़कामे शरीअ़त से ना वाक़िफ़ भी हैं । मगर चूंकि उन्हों ने फ़ित़री वज़्अ़ के साथ ज़ियादती की, चेहरे के क़ुदरती हुस्न को बरबाद किया । **सरकारे आ़ली वक़ार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़बीअ़ते मुबा-रका को उन का येह (या'नी दाढ़ी मुंडाने का) फे'ल इन्तिहाई ना गवार गुज़रा और बा वुजूद **रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** होने के फ़रमाया : "**तुम पर हलाकत हो ।**" ज़रा सोचिये ! ग़ौर कीजिये ! जब मैदाने क़ियामत में सब जम्अ़ होंगे, नफ़्सी नफ़्सी का आ़लम होगा, मां अपने बेटे से और बेटा अपने बाप से भाग रहा होगा, उस वक़्त एक ही तो **ज़ाते पाक** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم होगी जो आ़सियों की उम्मीद गाह होगी, उसी **सरकारे नामदार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में सब को ह़ाज़िरी देनी होगी । **याद रखिये ! जो जिस ह़ाल में मरेगा,** उसी ह़ाल में

क़ियामत के रोज़ उठाया जाएगा। दाढ़ी वाला, दाढ़ी के साथ उठेगा और दाढ़ी मुन्डा, दाढ़ी मुन्डा ही उठेगा।

ऐ महबूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत को अपने चेहरे से दूर करने वालो ! अगर प्यारे सरकार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप से इस्तिफ़्सार फ़रमा लिया : **"क्या तुम मुझ से महब्बत करते रहे हो ?"** ज़ाहिर है इन्कार तो कर ही नहीं सकते येही अ़र्ज़ करेंगे : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप ही हमारे सब कुछ हैं, हम आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने मां बाप, माल व औलाद सब से अ़ज़ीज़ तर समझते हैं। सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम तो दुन्या में झूम झूम कर अ़र्ज़ किया करते थे :

मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रह़मते आ़लम !
मैं जी रहा हूं ज़माने में आप ही के लिये

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमारी बेताबी का आ़लम तो येह था कि बे क़रार हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा करते थे :

ग़ुलामे मुस्तफ़ा बन कर मैं बिक जाऊं मदीने में
मुह़म्मद नाम पर सौदा सरे बाज़ार हो जाए

ऐ आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! जब **महब्बत** कुछ ज़ियादा ही जोश मारती थी तो येह तक कह देते थे :

जान भी मैं तो दे दूं ख़ुदा की क़सम !
कोई मांगे अगर मुस्तफ़ा के लिये !

येह सब कुछ सुन कर (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न करे) आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बिलफ़र्ज़ येह इर्शाद फ़रमाएं : ऐ मेरे ग़ुलामो ! अगर वाक़ेई तुम मुझे मां बाप और माल व औलाद सब से अ़ज़ीज़ तर समझते थे और सिर्फ़ मेरी ही ख़ातिर दुन्या में ज़िन्दा थे। नीज़ मेरे नाम पर बिकने बल्कि जान तक देने के लिये तय्यार थे तो फिर **आख़िर क्या वजह थी कि शक्लो सूरत मेरे दुश्मनों जैसी बनाए फिरते थे ?**

क्या तुम्हें मेरे येह इर्शादात न पहुंचे थे कि ﴾1﴿ "मूंछें ख़ूब पस्त (या'नी छोटी) करो और दाढ़ियों को मुआफ़ी दो (या'नी इन को बढ़ने दो) और यहूदियों की सी सूरत मत बनाओ ।" (شرح معانی الآثار للطحاوی ج٤ ص٢٨) ﴾2﴿ "जो मेरी सुन्नत इख़्तियार करे वोह मेरा और जो मेरी सुन्नत से मुंह फैरे वोह मेरा नहीं ।" (ابنِ عساکر ج٣٨ ص١٢٧) ﴾3﴿ "जो मेरी सुन्नत पर अ़मल न करे वोह मुझ से नहीं ।"

(ابنِ ماجہ ج٢ ص٤٠٦ حدیث ١٨٤٦)

अगर आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم रूठ गए तो.....! : फ़ेशन पर मर मिटने वालो ! येह इर्शादाते आ़लिया याद दिलाने के बा'द अगर ख़ुदा ना ख़्वास्ता हमारे **प्यारे आक़ा** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रूठ गए तो आप क्या करेंगे ? किस के दरवाज़े पर फ़रियाद करेंगे ? किस के दरवाज़े पर **शफ़ाअ़त** की भीक लेने जाएंगे ? कौन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब से बचाने वाला होगा ? अभी मौक़अ़ है, जब तक सांस बाक़ी है वक़्त है, झटपट तौबा कर लीजिये, अपना चेहरा **प्यारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **की मीठी मीठी सुन्नत** से आरास्ता कर लीजिये, अपने रुख़ पर **महब्बत की निशानी** सजा लीजिये । येह ख़ुश फ़हमी ख़त्म कर दीजिये कि अभी तो **उ़म्र** ही क्या है ? बा'द में रख लेंगे, **शादी** के बा'द देखी जाएगी ! **भोले भाले इस्लामी भाइयो !** शैत़ान के चक्कर में मत आइये ! वोह कैसे ही क़रीबी अ़ज़ीज़ की ज़बानी तुम्हें येह बावर करवाने की कोशिश करे कि अभी तुम्हारी उ़म्र **दाढ़ी** रखने जितनी नहीं हुई है, बा'द में रख लेना । यक़ीन मानिये येह शैत़ान का बहुत बड़ा और बुरा वार है, इस वार से उस मरदूद ने न जाने कितनों को तबाह कर दिया । **आइये ! आप को एक इ़ब्रत नाक वाक़िआ़ सुनाऊं ।**

मरने से पहले शामत : एक नौ जवान कमो बेश साल भर **"दा'वते इस्लामी"** के सुन्नतों भरे म-दनी माहोल से वाबस्ता रहा और दाढ़ी भी सजा ली । फिर न जाने क्या सूझी ! शायद बुरे दोस्त मिल गए । مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ दाढ़ी साफ़ करवा दी । शबे जुमुआ़ को बाबुल मदीना कराची के

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ग़ैर हाज़िर रहा । जुमुआ़ के रोज़ दोस्तों के साथ बाबुल मदीना (कराची) के साहिले समुन्दर पर पिकनिक मनाने के लिये गया । और **आह** ! दाढ़ी मुंडवाने के सिर्फ़ 15 दिन के बा'द बेचारा समुन्दर में डूब कर मौत के घाट उतर गया ।

मिले ख़ाक में अहले शां कैसे कैसे मकीं हो गए ला मकां कैसे कैसे
हुए नामवर बे निशां कैसे कैसे ज़मीं खा गई नौ जवां कैसे कैसे !
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

फ़ेशन परस्तों की सोहबत की नुहूसत : उस मर्हूम नौ जवान की उ़म्र तक़रीबन बीस साल होगी, क्या उ़म्र थी ! बक़ौल कसे शायद **दाढ़ी** रखने की अभी उ़म्र ही नहीं आई थी ! कहीं इस लिये तो इन्तिक़ाल से सिर्फ़ पन्दरह दिन पहले **दाढ़ी** साफ़ नहीं करवा दी थी ! नहीं हरगिज़ नहीं, बस बेचारे के नसीब ! बुरी सोहबत का असर ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मर्हूम की मग़्फ़िरत करे । येह डूबने वाला नौ जवान हम सब को उभारने के लिये बहुत कुछ सामाने इब्रत छोड़ गया ! जो कोई **दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल** से दूर होने का ख़याल करे या सैरो तफ़रीह़ के शाएक़ीन से दोस्ती का रिश्ता जोड़े, उसे चाहिये कि इस **इब्रत नाक वाक़िए़** पर अच्छी त़रह़ ग़ौर कर ले कि कहीं मैं भी दूसरों के लिये सामाने इब्रत न बन जाऊं ! कहीं ऐसा न हो कि मेरे येह फ़ेशन परस्त दोस्त ख़ुद भी डूबें और मुझे भी ले डूबें ! और ग़ौर करे कि कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरी ज़िन्दगी के दिन पूरे होने को आ गए हैं और इसी वजह से शैत़ान अपना पूरा ज़ोर मुझ पर लगा रहा है, कहीं चन्द रोज़ की बुरी सोहबत की नुहूसत के ज़रीए़ वोह मेरी ज़िन्दगी भर की कमाई पर पानी न फैर दे । बे नमाज़ियों और फ़ासिक़ों की **सोहबतों** में बैठने वालो ! ख़बरदार !!! रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ पारह 7 **सू-रतुल अन्आ़म** आयत नम्बर 68 में इर्शाद

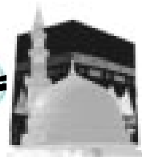
फ़रमाता है :

وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۶۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ ।

दाढ़ी सिर्फ़ मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **की पसन्द की रखो : ऐ म-दनी महबूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **के चाहने वालो !** मान जाओ ! अपनी जवानी पर मत इतराओ ! दुन्यवी मजबूरियों को ह़ीला मत बनाओ, आओ ! आओ ! ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आओ ! रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दामने करम ले लिपट जाओ ! इन के परवर दगार, रब्बे गफ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ से भी मग़्फ़िरत की भीक त़लब कर लो । इन से भी मुआ़फ़ी मांग लो ! येह बारगाह करम वाली बारगाह है, यहां से कोई साइल मायूस नहीं जाता, सुन्नत की ख़ैरात ले लो, अपने चेहरे से दुश्मने ख़ुदा व मुस्तफ़ा की नुहूसत की अ़लामत को हमेशा हमेशा के लिये धो डालो और प्यारी प्यारी सुन्नत चेहरे पर सजा लो । और हां ! ख़याल रखना ! शैत़ान बड़ा मक्कार व अ़य्यार है, कहीं ऐसा न हो कि आप अंग्रेज़ों और यहूदियों से तो दामन छुड़ा लें और दाढ़ी भी सजा लें मगर शैत़ान दूसरे ज़ाविये से फिर घेर ले और आप को फ़्रान्सीसियों के क़दमों में पटख़ दे । मत़लब येह कि कहीं "फ़्रेन्च कट" या'नी **ख़श्ख़शी दाढ़ी न रख लेना कि दाढ़ी मुंडाना और कतरवा कर एक मुठ्ठी से छोटी कर देना दोनों ही ह़राम है । दाढ़ी रखिये और ज़रूर रखिये मगर मीठे मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **की पसन्द की रखिये या'नी एक मुठ्ठी पूरी रखिये ।**

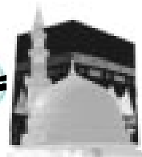
दाढ़ी मुन्डे की 30 शामतें : फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 22 में दाढ़ी मुंडाने और एक मुठ्ठी से घटाने की मज़म्मत में "لَمْعَةُ الضُّحٰی فِی اِعْفَاءِ اللُّحٰی" नामी एक रिसाला है और उस रिसाले के इख़्तिताम पर या'नी फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 22 सफ़ह़ा 675 ता 676 पर दाढ़ी मुंडाने और एक मुठ्ठी से घटाने वालों के **मु-तअ़ल्लिक़** कुरआनो ह़दीस की रोशनी में 30 सज़ाओं, वईदों और मज़म्मतों की फ़ेहरिस दर्ज फ़रमाई है :


(बख़ौफ़े त़वालत ह़वाले ह़ज़्फ़ कर दिये हैं, जिन्हें देखना हो वोह वहीं से देख लें) ❁ दाढ़ी मुंडाने वाले **अल्लाह व रसूल** के ना फ़रमान हैं جَلَّ جَلَالُہٗ وَصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ❁ शैत़ाने लईन के मह़कूम (या'नी मा तह़्त) हैं ❁ सख़्त अह़मक़ हैं ❁ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उन से बेज़ार है ❁ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बेज़ार हैं ❁ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ऐसी सूरत देखने से कराहत आती है ❁ यहूदी सूरत हैं ❁ नसरानी वज़्अ़ हैं फ़िरंगियों से मुशाबेह (या'नी मिलते जुलते हैं) ❁ मजूस (आतश परस्तों) के पैरव (या'नी नक़्शे क़दम पर) हैं ❁ हिन्दूओं की सूरत, मुश्रिकीन की सीरत हैं ❁ मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के गुरौह से नहीं ❁ उन्हीं (उन ही) अपने हम सूरतों नसारा व यहूद व **मजूस** व हुनूद के गुरौह से हैं ❁ **वाजिबुत्ता'ज़ीर** (या'नी लाइक़े सज़ा) हैं शहर बदर करने के क़ाबिल हैं ❁ **मुबद्दिलीने** फ़ित़रत (या'नी फ़ित़रत बदलने वाले) हैं **मुग़य्यिरे ख़ल्क़िल्लाह** (या'नी **अल्लाह** के बनाए हुए को बिगाड़ने वाले) हैं ❁ ज़नाने **मुख़न्नस** (या'नी हिजड़े) हैं ❁ ख़ुदा के अ़ह्द शिकन (वा'दा ख़िलाफ़) हैं ❁ ज़लीलो ख़्वार हैं ❁ घिनौने क़ाबिले नफ़रत हैं ❁ मरदूदुश्शहादह (या'नी गवाही के लिये ना लाइक़) हैं ❁ पूरे इस्लाम में दाख़िल न हुए ❁ हलाकत में हैं, मुस्तह़िक़्क़े बरबादी हैं ❁ दीन में बे बहरा (मह़रूम) आख़िरत में बे नसीब हैं ❁ अ़ज़ाबे इलाही के मुन्तज़िर ❁ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को सख़्त दुश्मन व **मबग़ूज़** हैं ❁ सुब्ह़ हैं तो **अल्लाह** के ग़ज़ब में, शाम हैं तो **अल्लाह** के ग़ज़ब में ❁ क़ियामत के दिन उन की सूरतें बिगाड़ी जाएंगी ❁ **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मल्ऊ़न हैं, दुन्या व आख़िरत में मल्ऊ़न (ला'नत किये गए) हैं, **अल्लाह** व मलाएका व बशर (इन्सान) सब की उन पर ला'नत है, फ़िरिश्तों ने उन के ला'नती होने पर आमीन कही ❁ **अल्लाह** तआ़ला उन पर नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा ❁ वोह बिहिश्त (या'नी जन्नत) में न जाएंगे ❁ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें जहन्नम में डालेगा। **وَالْعِیَاذُ بِاللّٰہِ تعالٰی** (या'नी और (इस से) **अल्लाह** तआ़ला की पनाह)






फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है । (عبدالرزاق)

मक्के शैतां में मत आओ भाइयो ! रुख़ पे तुम दाढ़ी सजाओ भाइयो !
छोड़ो फ़ेशन मान जाओ भाइयो ! ख़ुद को दोज़ख़ से बचाओ भाइयो !
बिल यक़ीं दुन्या बड़ी है बे वफ़ा इस से तुम मत दिल लगाओ भाइयो !

मैं निहायत ही बिगड़े हुए किरदार का मालिक था : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मह़ब्बते रसूल की निशानी दाढ़ी बढ़ाने का जज़्बा पाने, सर पर इमामा शरीफ़ का ताज सजाने का शौक़ बढ़ाने, जज़्बए इश्क़े रसूल से सरशार हो कर ज़ुल्फ़ें रखाने की सुन्नत अपनाने का ज़ौक़ निभाने, म-दनी हुल्ये पर इस्तिक़ामत पाने और क़ुरआने करीम पढ़ने पढ़ाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये । सुन्नतों भरे **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र का मा'मूल बनाइये और **म-दनी इन्आमात** के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारिये । आप की तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** पेश की जाती है । **बाबुल मदीना** (कराची) में मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं निहायत ही बिगड़े हुए किरदार का मालिक था, रात गए तक दोस्तों के झुरमट में ख़ुश **गप्पियों** में मसरूफ़ रहता, न तो वालिदैन की इ़ज़्ज़त का पास था और न ही अपने क़ीमती वक़्त के ज़ियाअ़ (या'नी ज़ाएअ़ होने) का एह़सास, मेरी ज़िन्दगी के चारों त़रफ़ ग़फ़्लतों का पहरा था । घर वाले मेरी ह़-र-कतों की वजह से सख़्त परेशान, मुझे सुधारने की तगो दौ में लगे रहते क्यूं कि नेक औलाद से मुआ़-शरे में वालिदैन की भी नेक नामी होती है । एक रोज़ मेरे भाई ने एक **आ़शिक़े रसूल** से मेरी मुलाक़ात करवाई, उन्हों ने निहायत **मह़ब्बत** भरे अन्दाज़ में दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाले **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत पेश की और **मद्र-सतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) में दाख़िला लेने की रग़बत दिलाई नीज़ अह़कामे शरीअ़त पर अ़मल की ब-र-कतें और फ़ज़ीलतें बताईं । उन की भरपूर **इन्फ़िरादी कोशिश** ने दिल पर गहरा असर डाला और मैं इन्कार न कर सका । मैं ने **मद्र-सतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) में दाख़िला ले लिया ।





اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मद्र-सतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) में मुझे दुरुस्त मख़ारिज से हुरूफ़ की अदाएगी के साथ कुरआने मजीद फुरक़ाने हमीद पढ़ने की सआदत मिली और **सुन्नते मुस्तफ़ा** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाले **आशिक़ाने रसूल** की सोहबत की ब-र-कत से दीन से ऐसी **महब्बत** पैदा हो गई कि आज के बिगड़े हुए हालात में जब कि चहार सू फ़ेशन परस्ती का दौर दौरा है। मैं चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ और सर पर इमामा शरीफ़ का ताज सजाए न सिर्फ़ खुद सुन्नतों भरी ज़िन्दगी बसर करने की कोशिश कर रहा हूं बल्कि सुन्नतों के परचार का भी कोशां (या'नी कोशिश करने वाला) हूं, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तहरीर मुझे ज़ैली मुशा-वरत के निगरान की हैसिय्यत से म-दनी कामों की ज़िम्मेदारी मिली हुई है।

बुरी सोहबतों से कनारा कशी कर — के अच्छों के पास आ के पा म-दनी माहोल
तनज़्ज़ुल के गहरे गढ़े में थे उन की — तरक़्क़ी का बाइस बना म-दनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के जामिआत व मदारिस की ता'दाद : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस म-दनी बहार में इन्फ़िरादी कोशिश और **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ान) की ब-र-कतें नुमायां हैं कि जिन की वजह से एक औबाश नौ जवान राहे सुन्नत पर चल कर दूसरों को चलाने वाला बना। तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से मेरी म-दनी इल्तिजा है कि अपने अपने **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ान व बालिग़ात) में ज़रूर दाख़िला लें और कुरआने करीम न पढ़े हों तो पढ़ें और अगर तज्वीद के साथ पढ़े हुए हों तो अपने तन्ज़ीमी ज़िम्मेदार से तरकीब बना कर दूसरों को पढ़ाएं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी मा'लूमात के मुताबिक़ ता दमे तहरीर (14 र-मज़ानुल मुबारक 1432 सि.हि./ 15 अगस्त 2011 सि.ई.) सिर्फ़ पाकिस्तान में बराए हिफ़्ज़ व नाज़िरा म-दनी मुन्नों के तक़रीबन **766** और म-दनी मुन्नियों के तक़रीबन **316** मदारिसुल मदीना चलाए जा रहे हैं जिन में म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों की मिला कर कुल ता'दाद तक़रीबन **72000** है। नीज़

इस्लामी भाइयों के **मद्र-सतुल मदीना** बालिग़ान (उ़मूमन वक़्त : बा'दे इ़शा दौरानिया : तक़रीबन 40 मिनट) की ता'दाद तक़रीबन **3316** है और इस्लामी बहनों के **मद्र-सतुल मदीना** बालिग़ात (उ़मूमन वक़्त : सुब्ह़ 8:00 से ले कर अ़स्र तक मुख़्तलिफ़ अवक़ात में, दौरानिया : 1 घन्टा 12 मिनट) की ता'दाद तक़रीबन **39938** है । नीज़ (10 र-जबुल मुरज्जब 1432 सि.हि. । 12-6-2011) इस्लामी भाइयों के दर्से निज़ामी के जामिआ़तुल मदीना की ता'दाद तक़रीबन **90** और इस्लामी बहनों के जामिआ़तुल मदीना की ता'दाद तक़रीबन **72** है, **त़-लबा की ता'दाद तक़रीबन 6671 और त़ालिबात की ता'दाद तक़रीबन 2841 है ।** इन तमाम **जामिआ़तुल मदीना (लिल बिनीन व लिल बनात)** और **मदारिसुल मदीना (लिल बिनीन व लिल बनात)** में मुफ़्त ता'लीम दी जाती है और इन के अख़्राजात मुख़य्यिर इस्लामी भाइयों के अ़त़िय्यात से पूरे किये जाते हैं । हर मुसल्मान को दुरुस्त क़ुरआने करीम पढ़ना और फ़र्ज़ दीनी उ़लूम से आश्ना (या'नी वाक़िफ़) होना ज़रूरी है ।

ता'लीमे क़ुरआने करीम के मु-तअ़ल्लिक़ दो अहम म-दनी फूल : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल" सफ़ह़ा 545 ता 546 पर है : (1) एक आयत का ह़िफ़्ज़ करना हर मुसल्मान मुकल्लफ़ (या'नी आ़क़िल व बालिग़) पर फ़र्ज़े ऐ़न है और पूरे क़ुरआने मजीद का ह़िफ़्ज़ करना फ़र्ज़े किफ़ाया और **सूरए फ़ातिह़ा** और एक दूसरी छोटी सूरत या उस के मिस्ल, म-सलन तीन छोटी आयतें या एक बड़ी आयत का ह़िफ़्ज़, वाजिबे ऐ़न है । (دُرِّمُختار ج۲ص۳۱۵) (2) ब क़दरे ज़रूरत मसाइले फ़िक़्ह का जानना फ़र्ज़े ऐ़न है और ह़ाजत से ज़ाइद (मसाइल) सीखना ह़िफ़्ज़े जमीअ़ क़ुरआन (या'नी ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बनने) से अफ़्ज़ल है । (رَدُّالمُحتار ج۲ص۳۱۵)

येही है आरज़ू ता'लीमे क़ुरआं आ़म हो जाए
तिलावत करना अपना काम सुब्ह़ो शाम हो जाए

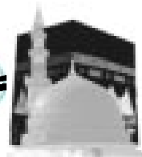
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क्या फ़ेशन परस्त ही मुअ़ज़्ज़ज़ है ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मक़ामे ग़ौर है ! क्या आज दुन्या को "बहुत बड़ी चीज़" नहीं समझा जा रहा ? क्या आज कल के मुसल्मानों की भारी अक्सरिय्यत के दिलों से इस्लाम की ह़क़ीक़ी हैबत निकलती नहीं जा रही ? क्या नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना तर्क नहीं कर दिया गया ? क्या आपस में गाली गलोच का सिल्सिला ज़ोरों पर नहीं ? सद करोड़ अफ़्सोस ! आज भारी अक्सरिय्यत की ज़िन्दगी का अन्दाज़ येही बता रहा है कि दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ दी जा रही है, शरीअ़त व सुन्नत से مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ लोग दूर होते चले जा रहे हैं, सुन्नतों से येह दूरी और फ़िरंगी फ़ेशन का जुनून आख़िर इस मुआ़-शरे को कहां ले जाएगा !

दुन्या की मह़ब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! होश में आइये और मरने से पहले संभल जाइये ! यक़ीन मानिये ! येह सारी तबाही दुन्या की मह़ब्बत ही ने मचाई है, हुब्बे दुन्या के सबब आज लोग सुन्नतों से दूर जा पड़े हैं, **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **حُبُّ الدُّنْيَارَأْسُ كُلِّ خَطِيْئَةٍ** या'नी दुन्या की मह़ब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है। (كتاب ذم الدنيا مع موسوعة الامام ابن ابى الدنيا ج٥ ص٢٢ حديث٩)

सद करोड़ अफ़्सोस ! जन्नत की ला ज़वाल ने'मतों के ह़ुसूल के लिये मा'मूली सी घरेलू आसाइशें छोड़ कर फ़क़त़ चन्द दिन के लिये भी सुन्नतों की तरबिय्यत की ख़ात़िर राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र के लिये आज हम तय्यार नहीं होते जब कि फ़ानी दुन्या की आ़रिज़ी दौलत कमाने के लिये अपने घर वालों से बरसहा बरस के लिये हज़ारों मील दूर जाने के लिये फ़ौरन तय्यार हो जाते हैं। क्या मुसल्मानों की दीनी ए'तिबार से बरबादी और ग़ैर मुस्लिमों का इन पर ह़ावी होना, मस्जिदों की वीरानी, सीनेमा घरों और ऐशो नशात़ के अड्डों की आबादी, फ़िरंगी तहज़ीब की यलग़ार, मग़रिबी फ़ेशन की भरमार, फ़िल्में डिरामे देखने कि लिये घर घर टी वी, केबल सिस्टम, इन्टरनेट और वी सी आर, हर त़रफ़ गुनाहों का गर्म बाज़ार और मुसल्मानों की भारी अक्सरिय्यत का बिगड़ा हुवा किरदार, येह सब कुछ हमें पुकार पुकार कर दा'वते फ़िक्र नहीं दे रहा कि "हमें अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये






फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

म-दनी क़ाफ़िलों का ज़रूर बिज़्ज़रूर मुसाफ़िर बनना चाहिये।" आज हमें ज़िन्दगी में यक मुश्त 12 माह हर 12 माह में 30 दिन और उ़म्र भर हर माह 3 दिन के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करना बेहद मुश्किल महसूस होता है। सोचिये तो सही ! अगर हम में से हर एक अपनी मजबूरियों में फंस कर रह गया तो आख़िर कौन इन म-दनी क़ाफ़िलों सें सफ़र करेगा ? कौन सारी दुन्या के लोगों तक **नेकी की दा'वत** पहुंचाएगा ? ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही कौन करेगा ? कौन अग़्यार की वज़्अ़ क़त़्अ़ पर इतराने वाले नादान मुसल्मानों को सुन्नतों के सांचे में ढलने का ज़ेहन देगा ? कौन इन्हें येह म-दनी मक़्सद अपनाने की तरग़ीब देगा कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ । **ऐ काश** ! हर इस्लामी भाई येह निय्यत कर ले कि ज़िन्दगी में यक मुश्त 12 माह हर 12 माह में यक मुश्त 30 दिन और उ़म्र भर हर माह 3 दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार करूंगा, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ । **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कतों को समझने के लिये एक **म-दनी बहार** मुला-हज़ा हो, चुनान्चे

बद तरीन, अ़ज़ीज़ तरीन कैसे बना ? : **लासीगोठ** (बाबुल मदीना कराची) के मुक़ीम इस्लामी भाई का कुछ यूं बयान है : मैं बेहद बिगड़ा हुवा इन्सान था, फ़िल्मों डिरामों का रसिया होने के साथ साथ औबाश लड़कों से दोस्तियां और रात गए तक उन के साथ आवारा गर्दियां करना मेरे मा'मूलात में शामिल था। मेरी बुरी ह़-र-कतों की वजह से न सिर्फ़ ख़ानदान भर के लोग बल्कि मेरे अपने वालिदैन भी मुझ से कतराते, घर में मेरी आमद से घबराते और यहां तक कि दूसरों को भी मेरी सोह़बत की नुहूसत से बचने की तल्क़ीन फ़रमाते। मुआ़-मला इस ह़द तक बढ़ चुका था कि वालिद साहिब मुझे घर से निकाल देने पर तय्यार हो चुके थे। मेरी गुनाहों भरी ख़ज़ां रसीदा शाम के सुब्ह़ बहारां बनने की सबील कुछ इस त़रह़ हुई कि एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने निहायत ही शफ़्क़त के साथ **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे दा'वते इस्लामी के तह़त पाकिस्तान के मश्हूर शहर कोएटा





में सूबाई सत़ह़ पर होने वाले दो रोज़ा **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत पेश की। मैं ने मुआ़-मला वालिद साह़िब की इजाज़त पर छोड़ दिया। नेकी की दा'वत के जज़्बे से सरशार आ़शिक़े रसूल इस्लामी भाई मेरे इस फ़ैसले को सुन कर ख़ुशी से झूम उठे क्यूं कि वालिद साह़िब पहले ही दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से बहुत मह़ब्बत करते थे। मौक़अ़ पाते ही उन मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने वालिद साह़िब पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मेरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की इजाज़त चाही। वालिद साह़िब ने मेरी इस्लाह़ का ज़रीआ़ समझते हुए मअ़ अख़्राजात इज्तिमाअ़ में जाने की बख़ुशी इजाज़त बख़्श दी। मुक़र्ररा तारीख़ पर **आ़शिक़ाने रसूल** की मइय्यत में इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत नसीब हुई। इज्तिमाअ़ में होने वाले सुन्नतों भरे बयानात, **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने मेरे दिल में हलचल मचा कर रख दी। म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत मिलने पर मैं हाथों हाथ आ़शिक़ाने रसूल के हमराह दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बतों और शफ़्क़तों ने मुझ सियाह कार व बदकार के दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया। गुनाहों से तौबा का तोह़फ़ा और सुन्नतों भरे म-दनी लिबास का जज़्बा मिला, वालिदैन की ह़क़ त-लफ़ियों की मुआ़फ़ी मांगने का ज़ेह्न बना, चेहरे पर सुन्नते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم या'नी दाढ़ी शरीफ़ और सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाने की निय्यत बनी। **म-दनी क़ाफ़िले** से वापसी पर घर में दाख़िल होते ही वालिद साह़िब के क़दमों में गिर गया और उन से रो रो कर मुआ़फ़ी त़लब की। इस त़रह़ मुझ जैसा गुनहगार और अबुल फ़ुज़ूल सुन्नतों के म-दनी फूल लुटाने में मश्ग़ूल हुवा। कल तक जो अ़ज़ीज़ो अक़ारिब मुझे देख कर कतराते थे اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब वोह मुझे गले लगाते हैं। कल तक मैं ख़ानदान के अन्दर "बद तरीन" था اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से आज उन के नज़्दीक "अ़ज़ीज़ तरीन" बन गया हूं।

जब तक बिके न थे कोई पूछता न था
तुम ने ख़रीद कर मुझे अनमोल कर दिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

घर वालों को नेकी की दा'वत की ताकीद : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! आ़शिके़ रसूल की इन्फ़िरादी कोशिश रंग लाई और मुआ़-शरे का एक नासूर नुमा "बद तरीन" इन्सान सब की आंखों का तारा और "अ़ज़ीज़ तरीन" मुसल्मान बन गया। हम सभी अगर हर मिलने जुलने वाले को नमाज़ की तल्क़ीन करते, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत देते और म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की रग़बत दिलाते रहें तो देखते ही देखते मुआ़-शरे में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाए ! बिल ख़ुसूस अपने घर वालों को भी **नेकी की दा'वत** देनी और उन्हें गुनाहों से बचाना चाहिये। चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे अबद क़रार, साहि़बे पसीनए ख़ुश्बूदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ نَارًا
(پ۲۸،التحریم:۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ।

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हम अपने घर वालों को किस त़रह़ आग से बचाएं ? हुज़ूरे पुरनूर, **शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उन को उन कामों के करने का हुक्म दो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मह़बूब (या'नी प्यारे) हैं और उन कामों से मन्अ़ करो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ना पसन्द हैं।

(تفسیردُرِّ مَنْثور ج ۸ ص ۲۲۵)

ख़ौफ़े ख़ुदा की ईमान अफ़्रोज़ ह़िकायत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़दीसे पाक में हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पारह 28 **सू-रतुत्तह़रीम** की आयत नम्बर 6 का जो ह़िस्सा तिलावत फ़रमाया है उस की तफ़्सीर से क़ब्ल एक ईमान अफ़्रोज़ **ह़िकायत** समाअ़त फ़रमाइये चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1012 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल"** जिल्द 2 सफ़ह़ा 881 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि जब **अल्लाह** तआ़ला

ने मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर येह आयते मुबा-रका नाज़िल फ़रमाई :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ (پ۲۸، التحریم:٦)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं ।

तो शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के सामने तिलावत फ़रमाया तो एक नौ जवान ग़श खा कर गिर गया । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के दिल पर अपना दस्ते मुबारक रखा तो वोह ह़-र-कत कर रहा था । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ नौ जवान ! لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहो ।" उस ने कहा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे जन्नत की बिशारत (या'नी खुश ख़बरी) दी, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या हमारे दरमियान में से ? (या'नी हम में से किसी और की येह ह़ालत हो जाए तो ?) आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं सुना :

ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِىْ وَخَافَ وَعِيْدِ ﴿۱۴﴾ (پ۱۳، ابراهيم:١٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह उस के लिये है जो मेरे हुज़ूर खड़े होने से डरे और मैं ने जो अ़ज़ाब का हुक्म सुनाया है उस से ख़ौफ़ करे ।

(اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج۳ ص۹۳ حديث ۳۳۹۰، الزّواجِر ج۲ ص٤٧١)

अ़ज़ाब से किस त़रह़ बचाएं ? : सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबा-रका يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا के तह़त फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** तआ़ला और उस के **रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर के, इबादतें बजा ला कर, गुनाहों से बाज़ रह कर और घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मुमा-न-अ़त

कर के और उन्हें इल्मो अदब सिखा कर ।" (ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ)

अहले ख़ाना को नेकी की बातें बताओ : **ह़ज़रते** मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم बयान कर्दा आयते करीमा के तह़त फ़रमाते हैं : ख़ुद भी भलाई की बातें सीखो और अपने अहले ख़ाना को भी नेकी की बातें और अदब सिखाओ । (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۱۳ ص۲٤٤ حدیث٦٧٧٦)

बालिग़ औलाद की इस्लाह़ के मु-तअ़ल्लिक़ आ'ला ह़ज़रत का फ़तवा :

फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 24 सफ़ह़ा 370 से एक मा'लूमाती फ़तवा आसान कर के पेश करने की सअ़य की है : मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : **सुवाल :** बालिग़ औलाद को नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना वालिदैन पर फ़र्ज़ है या वाजिब ? **अल जवाब :** जिस फे़'ल (काम) की जो शर-ई ह़ैसिय्यत है वालिदैन के लिये इस्लाह़ के तअ़ल्लुक़ से शरअ़न वैसा ही हुक्म है या'नी फ़र्ज़ पर फ़र्ज़, वाजिब पर वाजिब, सुन्नत पर सुन्नत, मुस्तह़ब पर मुस्तह़ब मगर बशर्ते क़ुदरत ब क़दरे क़ुदरत **ब उम्मीदे** मन्फ़अ़त (या'नी जितनी क़ुदरत हो उसी के मुत़ाबिक़ इस्लाह़ की बात कहें जब कि नफ़अ़ की उम्मीद हो) वरना (हुक्मे क़ुरआनी वाज़ेह़ है कि) :

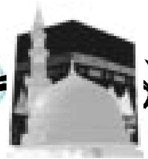
عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ (پ۷ المائدہ:۱۰۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 370)

जहन्नम का तआ़रुफ़ : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हमें अपनी और घर वालों की इस्लाह़ पर ख़ुसूसी तवज्जोह देते हुए ख़ुद को और उन को जहन्नम की अंधेरी और ख़ौफ़नाक काली आग से बचाने की पैहम कोशिश जारी रखनी चाहिये । ख़ुदा की क़सम ! जहन्नम की आग बेह़द शदीद है, इसे किसी सूरत से भी कोई बरदाश्त नहीं कर सकेगा । फ़र्ज़ नमाज़, रोज़ा, ज़कात और ह़ज में कोताही करने वालों, मां बाप को सताने वालों, अपनी औलाद की शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़

तरबिय्यत न करने वालों, अपने बेटों को दाढ़ी रखने से रोकने वालों और ख़ुद भी दाढ़ी मुंडाने वालों, दाढ़ी को एक मुठ्ठी से घटाने वालों, मिलावट वाला माल धोके से गाहक को पकड़ाने वालों, डन्डी मार कर सौदा चलाने वालों, चोरों, डाकूओं, जेब कतरों, टीवी, **(T.V.)**, वी सी आर **(V.C.R.)** और इन्टरनेट **(INTERNET)** पर फ़िल्में डिरामे देखने वालों, गाने बाजे सुनने वालों, अपने घर वालों को इस की सहूलत फ़राहम करने वालों, अपने घरों पर फ़िल्में देखने के लिये डिश एन्टिना **(DISH ANTENNA)** लगाने वालों, लोगों को फ़िल्मों की लीड **(LEAD)** या केबल **(CABLE)** देने वालों ! और त़रह़ त़रह़ से गुनाहों का बाज़ार गर्म करने वालों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है । यक़ीन मानिये ! जहन्नम के अंधेरे में डूबी हुई काली काली आग सही नहीं जा सकेगी, **तिरमिज़ी** शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि **सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है **:** दोज़ख़ की आग हज़ार साल जलाई गई यहां तक कि **सुर्ख़** हो गई, फिर हज़ार साल भड़काई गई यहां तक कि **सफ़ेद** हो गई, फिर हज़ार साल दहकाई गई यहां तक कि **सियाह** (या'नी काली) हो गई पस (अब) वोह निहायत ही **सियाह** है । **(سُنَنِ تِرمِذی ج٤ ص٢٦٦ حدیث ٢٦٠٠)**

जहन्नम की लरज़ा ख़ैज़ कहानी जिब्रईल की ज़बानी : ख़ुदा की क़सम ! जहन्नम का अ़ज़ाब किसी से भी न सहा जाएगा । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबुल क़ासिम सुलैमान **त़-बरानी** قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی नक़्ल करते हैं **:** एक बार **सरकारे नामदार**, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, **बि इज़्ने** परवर दगार ग़ैबों पर ख़बरदार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार, हम बे कसों के मददगार, साह़िबे पसीनए ख़ुश्बूदार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे दुरबार में **ह़ज़रते जिब्रईल** عَلَيْهِ السَّلَام ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस ज़ात की क़सम ! जिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को नबिय्ये बरह़क़ बना कर भेजा है, अगर **जहन्नम** को सूई के नाके के बराबर खोल दिया जाए तो तमाम ज़मीन वाले उस की गर्मी से हलाक हो जाएं, अगर अहले **जहन्नम का एक कपड़ा** ज़मीन व आस्मान


के दरमियान लटका दिया जाए तो तमाम अहले ज़मीन मौत के घाट उतर जाएं। **आक़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! उस ज़ात की क़सम ! जिस ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को हक़ के साथ सब्ऊ़स फ़रमाया अगर जहन्नम पर **मुक़र्रर** फ़िरिश्तों में से **एक फ़िरिश्ता** दुन्या वालों के सामने ज़ाहिर हो जाए तो उस की हैबत से तमाम अहले ज़मीन मर जाएं। **सरकार !** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस ज़ाते वाला की क़सम ! जिस ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को रसूले बरहक़ बना कर भेजा है जहन्नम की **ज़न्जीरों** का एक ह़ल्क़ा जिस का ज़िक्र क़ुरआने करीम में फ़रमाया गया है अगर उसे दुन्या के पहाड़ों पर रख दिया जाए तो वोह रेज़ा रेज़ा हो जाएं और **तह़ूतस्सरा** (या'नी सातवीं ज़मीन के नीचे) जा पहुंचें। सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **ऐ जिब्राईल** (عَلَیْهِ السَّلَام) ! बस करो इतना ही तज़्किरा काफ़ी है, कहीं ऐसा न हो कि मेरा दिल फट जाए और मैं वफ़ात पा जाऊं। प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **सय्यिदुना जिब्राईले** अमीन (عَلَیْهِ السَّلَام) को मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि रो रहे हैं, फ़रमाया : **ऐ जिब्राईल** (عَلَیْهِ السَّلَام) ! तुम क्यूं **रो रहे हो** ? बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में आप को तो एक ख़ास मक़ाम ह़ासिल है। अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मैं क्यूं न रोऊं, कहीं ऐसा न हो कि इ़ल्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मौजूदा ह़ाल के बजाए मेरा कोई और ह़ाल हो, कहीं **इब्लीस** की त़रह़ मुझे भी इम्तिह़ान में न डाल दिया जाए। कहीं **हारूत** व **मारूत** की त़रह़ मुझे भी आज़्माइश में मुब्तला न कर दिया जाए।

रावी बताते हैं, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم भी रोने लगे, ह़ज़रते सय्यिदुना **जिब्राईल** (عَلَیْهِ السَّلَام) भी रो रहे थे। दोनों ह़ज़रात रोते रहे, आख़िरे कार आवाज़ आई : **"ऐ जिब्राईल !** (عَلَیْهِ السَّلَام) **ऐ मुह़म्मद !** (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने आप दोनों को अपनी ना फ़रमानी से मह़फ़ूज़ कर लिया है।" **सय्यिदुना जिब्राईल** (عَلَیْهِ السَّلَام) आस्मानों की त़रफ़ परवाज़ कर गए। **मदीने के ताजवर,** शाहे बह़ूरो बर, रसूले अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए। बा'ज़ अन्सार सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان के क़रीब से गुज़रे जो हंस और खेल रहे थे। फ़रमाया : "**तुम** हंस रहे हो और




तुम्हारे पीछे **जहन्नम** है, अगर तुम वोह बातें जानते जो मैं जानता हूं तो तुम थोड़ा हंसते और ज़ियादा रोते और तुम खाना पीना छोड़ देते और पहाड़ों की त़रफ़ निकल जाते और ख़ूब मशक़्क़तें बरदाश्त कर के इबादते इलाही (عَزَّ وَجَلَّ) बजा लाते।" आवाज़ आई : ऐ **मुह़म्मद** ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे बन्दों को मायूस मत कीजिये, मैं ने आप को ख़ुश ख़बरी देने वाला बना कर भेजा है और तंगी करने वाला बना कर नहीं भेजा। पस **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : राहे रास्त पर गामज़न रहो (या'नी सीधे रास्ते पर चलो) और मियाना रवी इख़्तियार करो। **(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی ج۲ ص۷۸ حدیث ۲۰۸۳)**

अफ़्सोस ! हमारा दिल नहीं लरज़ता ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये हमारे **मीठे मीठे आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मा'सूम बल्कि सय्यिदुल मा'सूमीन हो कर भी और **सय्यिदुना जिब्राईले अमीन** (عَلَيْهِ السَّلَام) भी मा'सूम और मा'सूम फ़िरिश्तों के आक़ा होने के बा वुजूद अ़ज़ाबे **जहन्नम** का तज़्किरा छिड़ने पर ख़ौफ़े **रब्बे बारी** عَزَّ وَجَلَّ से गिर्या व ज़ारी फ़रमाएं। और एक हम हैं कि गुनाह पर गुनाह किये जाएं मगर **जहन्नम** का होलनाक तज़्किरा सुन कर न दिल लरज़े और न हमारा कलेजा कांपे और न ही पल्कें भीगें। **अफ़्सोस !** अ़ज़ाबे जहन्नम की ख़ौफ़नाक बातें सुन कर भी न हमें पशेमानी है न परेशानी, ख़जालत है न नदामत।

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता
हमें रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

(वसाइले बख़्शिश, स. 238)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रात की तन्हाई में आयात सुन कर वफ़ात : हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की ह़ालत येह होती कि जहन्नम का तज़्किरा सुन कर या जहन्नम के अ़ज़ाबात के बयान पर मुश्तमिल क़ुरआनी आयात सुन कर बेहोश हो जाते बल्कि बा'ज़ों की तो रूहें परवाज़ कर जातीं चुनान्चे ह़ज़रते मन्सूर बिन इमामा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

मैं सफ़रे **हज** के दौरान कूफ़े की एक गली में ठहरा हुवा था । अंधेरी रात में किसी ज़रूरत से निकला, एक घर से रिक़्क़त अंगेज़ **मुनाजात** की कुछ इस तरह आवाज़ सुनी : ऐ मेरे परवर दगार तेरी इ़ज़्ज़त और तेरे जलाल की क़सम ! मैं ने अपनी मा'सिय्यत में तेरी मुख़ा-लफ़त का इरादा नहीं किया था, हां इतना ज़रूर है कि गुनाह करते वक़्त तुझ से ना वाक़िफ़ भी न था, बस मुझ से गुनाह सरज़द हो गया और मुझ पर तेरी ढील देने वाली पर्दापोशी ने मुझे गुनाह पर दिलेर कर दिया और मेरी बद बख़्ती ने गुनाह पर मेरी मदद की और मैं अपनी नादानी के सबब ना फ़रमानी में मुब्तला हो गया । अब मैं तेरे फ़ज़्ल से उम्मीद रखता हूं कि तू मेरा उ़ज़्र क़बूल फ़रमाएगा । अब अगर तूने मेरी मा'ज़िरत क़बूल न की और मुझ पर रह़्म न फ़रमाया तो हाए अ़ज़ाब में मेरे ग़म की दराज़ी ! जब वोह ख़ामोश हुवा तो मैं ने पारह 28 **सू-रतुत्तह़रीम** की छटी आयते करीमा पढ़ी :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓىٕكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿۶﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं । उस पर सख़्त कर्रे फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं, जो **अल्लाह** का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वोही करते हैं ।

आयते मुबा-रका पढ़ने के बा'द मैं ने एक शदीद चीख़ने और धड़ाम से गिरने की आवाज़ सुनी और उस के बा'द ख़ामोशी त़ारी हो गई और किसी क़िस्म के हिल जुल की आवाज़ मह़सूस न हुई । फिर मैं अपना काम निमटा कर अपनी क़ियाम गाह पर वापस आ गया । जब मैं सुब्ह़ उस त़रफ़ गया तो लोग ता'ज़िय्यत के लिये जम्अ़ थे और रोने की आवाज़ें आ रही थीं, दर्रीं अस्ना एक ज़ईफ़ बुढ़िया देखी जो रो रो कर कह रही थी **अल्लाह** तआ़ला मेरे बेटे के क़ातिल को जज़ाए ख़ैर न दे कि उस ने मेरे बेटे पर अ़ज़ाबे इलाही के बयान पर मुश्तमिल आयते करीमा तिलावत की, जिस की ताब न ला कर वोह ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सबब गिरा और फ़ौत हो गया । ह़ज़रते मन्सूर बिन इमामा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं : उस

रात मैं ने ख़्वाब में एक शख़्स को देखा जो मुझ से कह रहा था : "मैं वोही हूं जिस ने आप की ज़बानी **सू-रतुत्तहूरीम** की छटी आयते करीमा की तिलावत सुन कर ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सबब दम तोड़ा है ।" मैं ने पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ **अल्लाह** तआ़ला ने तेरे साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? उस ने जवाब दिया : **अल्लाह** तआ़ला ने मेरे साथ वोह किया है जो शु-हदाए बद्र के साथ किया । मैं ने पूछा येह कैसे ? उस ने कहा : इस लिये कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन को काफ़िरों की तलवार से शहीद किया और मुझे अपने इश्क़ की तलवार से । (بِتَغَيُّرمواعظه حسنه ٤٣،٤٢)

ख़ुदाया तेरे ख़ौफ़ का हूं मैं साइल सदा दिल रहे तेरी उल्फ़त में घाइल
गुनाहों से हर आन डरता रहूं मैं फ़क़त नेक ही काम करता रहूं मैं
तू कर दर गुज़र मुझ को हर मा'सिय्यत से नवाज़ ऐ ख़ुदाए करीम मग़्फ़िरत से

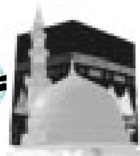
اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

घर वालों को भी नेकी की दा'वत दीजिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ख़ाइफ़ीन (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वालों) की भी क्या शान होती है ! जिस आयते करीमा को सुन कर ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले बन्दे ने दम तोड़ा था, उस में अपने साथ साथ अपने घर वालों को भी जहन्नम की आग से बचाने का हुक्म दिया गया है । हर एक को चाहिये कि ख़ुद भी नेकियां करे, गुनाहों से बचे और अहले ख़ाना की भी इस्लाह़ का सामान करता रहे । ह़ज़रते अ़ल्लामा **क़ुरतुबी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने ह़ज़रते सय्यिदुना **इल्किया** رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰى عَلَيْه का क़ौल नक़्ल फ़रमाया : हम पर फ़र्ज़ है कि अपनी औलाद और अपने अहले ख़ाना को दीन की ता'लीम दें, अच्छी बातें सिखाएं और उस अदब व हुनर की ता'लीम दें जिस के बिग़ैर चारा नहीं ।

(تفسیر قُرطبی ج٩ ص١٤٨)






बच्चे को सब से पहले दीन सिखाइये : **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : सब से मुक़द्दम येह है कि बच्चों को क़ुरआने मजीद पढ़ाएं और दीन की ज़रूरी बातें सिखाई जाएं, रोज़ा व नमाज़ व त़हारत और बैअ़ व इजारा (या'नी ख़रीद व फ़रोख़्त और उजरत वग़ैरा के लैन दैन) व दीगर मुआ़-मलात के मसाइल जिन की रोज़ मर्रा ह़ाजत पड़ती है और ना वाक़िफ़ी से ख़िलाफ़े शर-अ़ अ़मल करने के जुर्म में मुब्तला होते हैं उन की ता'लीम हो। अगर देखें कि बच्चे को इ़ल्म की त़रफ़ रुज्ह़ान (या'नी मैलान) है और समझदार है तो इ़ल्मे दीन की ख़िदमत से बढ़ कर क्या काम है और अगर इस्तित़ाअ़त न हो तो तस्ह़ीह़ व ता'लीमे अ़क़ाइद और ज़रूरी मसाइल की ता'लीम के बा'द जिस जाइज़ काम में लगाएं इख़्तियार है। (बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 256) लड़की को भी अ़क़ाइद व ज़रूरी मसाइल सिखाने के बा'द किसी औ़रत से सिलाई और नक़्शो निगार वग़ैरा ऐसे काम सिखाएं जिन की औ़रतों को अक्सर ज़रूरत पड़ती है और खाना पकाने और दीगर उमूरे ख़ानादारी में उस को सलीक़े होने की कोशिश करें कि सलीक़े वाली औ़रत जिस ख़ूबी से ज़िन्दगी बसर कर सकती है बद सलीक़ा नहीं कर सकती। (ایضاً ص ۲۰۷، رَدُّالْمُحتار ج ۵ ص ۲۷۹)

औलाद को सख़ावत व एह़सान की ता'लीम देना वाजिब है : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त जिल्द 3" सफ़ह़ा 68 पर है : इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी رَحِمَهُ اللهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं : मोमिन पर अपनी औलाद को **जूद** (या'नी सख़ावत) **व एह़सान** की ता'लीम वैसी ही वाजिब है जिस त़रह़ तौह़ीद व ईमान की ता'लीम वाजिब है क्यूं कि जूद व एह़सान से दुन्या की **मह़ब्बत** दूर होती है और **मह़ब्बते** दुन्या ही हर गुनाह की जड़ है। (دُرِّمُختار ج ۸ ص ۵۶۸)

बे औलाद को जब औलाद मिली ! : कहा जाता है : एक मालदार शख़्स के यहां औलाद न थी, उस ने उस के लिये बड़े जतन किये मगर काम्याबी न मिली, किसी ने मश्वरा





फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (جامع صغير)

दिया कि **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا हाज़िर हों और मस्जिदुल हराम शरीफ़ के अन्दर **मक़ामे इब्राहीम** के पास दुआ मांगिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का काम हो जाएगा। उस ने ऐसा ही किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे चांद सा बेटा दिया। उस ने बड़े चाव चोचले से उस की परवरिश की, इक्लौते बच्चे को ज़रूरत से ज़ियादा प्यार मिला और दुरुस्त तरबिय्यत न की गई, जिस के सबब वोह आवारा और उड़ाऊ ख़र्च हो गया। बाप को बहुत देर में होश आया, उस ने अपने बिगड़े हुए बेटे को पैसे देने बन्द कर दिये, इस से वोह अपने बाप का मुख़ालिफ़ हो गया और जहां उस के बाप ने औलाद के लिये दुआ मांगी थी जिस का येह समर (या'नी नतीजा) था वहीं या'नी **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا हाज़िर हो कर **मक़ामे इब्राहीम** के पास येह ना लाइक़ बेटा अपने बाप के मरने की दुआएं मांगने लगा ताकि बाप की मौत की सूरत में इसे तर्के (या'नी विरसे) में उस की दौलत हाथ आ जाए।

औलाद के त़लब गारों की ख़िदमत में नेकी की दा'वत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो लोग बे औलादी का रोना रोते हैं ! उन के लिये इस **हिकायत** में इब्रत ही इब्रत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सिर्फ़ "औलाद" का नहीं **आफ़िय्यत वाली औलाद** का सुवाल करना चाहिये वरना कहीं ऐसा न हो कि औलाद तो हो मगर सख़्त बीमार हो या मा'ज़ूर हो या ऑपरेशन से आए या आते ही अपनी अम्मी की मौत का सबब बने जैसा कि बिल ख़ुसूस पहली ज़चगी में कई माएं फ़ौत हो जाती हैं वग़ैरा। कभी ऐसा भी होता है कि बच्चा बड़ा हो कर बे नमाज़ी बन जाता है, मां बाप को सताता है, बुरी सोहबत की वजह से **मुनश्शिय्यात** का आदी हो जाता है या चोर, डाकू बन कर मुआ-शरे में उभरता है, या बद अक़ीदा लोगों की सोहबत के बाइस बद मज़हब हो जाता है, हत्ता कि कभी कभी مَعَاذَاللّٰه गुस्ताख़े रसूल बन कर या सरीह कुफ़्रिय्यात बक कर या इस्लाम से मुन्हरिफ़ (या'नी बाग़ी) हो कर **मुरतद** हो जाता है। बहर हाल किसी का दुन्या में "आना" दुन्या व आख़िरत के बहुत बहुत और बहुत ही सारे इम्तिहानात में मुब्तला होना है। इस ज़िम्न में दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ 692 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब, **"कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल**

जवाब'' सफ़्हा 5 ता 6 पर दिया हुवा मज़्मून निहायत इब्रत ख़ेज़ है, मअ़ तसर्रुफ़ अ़र्ज़ है : ह़दीसे मुबारक में कस्रते उम्मत की तरग़ीब दिलाई गई है और हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बरोज़े क़ियामत इस उम्मत के कसीर होने पर खुश होंगे और दीगर उम्मतों पर फ़ख़्र करेंगे लिहाज़ा औलाद के ह़ुसूल की ख़्वाहिश में दुन्या व आख़िरत की भलाई पाने के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें करनी चाहिएं । आज दुन्या में जो बे औलाद दिल जलाता और बच्चा पाने के लिये ख़ूब जतन करता है, वोह अच्छी त़रह़ ग़ौर कर ले कि अगर इस का **मत़्मह़े** नज़र (या'नी मक़्सदे अस्ली) औलाद से फ़क़त़ घर की ज़ीनत और दुन्या की राह़त है, ह़ुसूले औलाद से मक़्सूद आख़िरत की मन्फ़अ़त की कोई अच्छी निय्यत नहीं, तो ऐसा बे औलाद आदमी ना दानिस्ता त़ौर पर (या'नी अन्जान पन में) गोया ''किसी'' के दुन्या में पैदा होने और फिर बहुत बड़े इम्तिह़ान में मुब्तला होने की आरज़ू कर रहा है ! मेरी येह बात शायद वोही शख़्स समझ सकता है जो ख़ुद ''बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़'' में मुब्तला हो । एक ख़ाइफ़ (या'नी ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले) बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़रमान का ख़ुलासा है : **मुझे बड़े से बड़े नेक बन्दे पर भी रश्क नहीं आता जो कि क़ियामत की होल नाकियों का मुशा-हदा करे (या'नी देखे) गा, मुझे सिर्फ़ उस पर रश्क आता है जो ''कुछ भी'' न हो ।** (या'नी पैदा ही न हो) **(حِلْيَةُ الاولياء ج٨ ص ٩٣ رقم ١١٤٧٠ مُلَخَّصاً)** अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने **ग़-ल-बए ख़ौफ़** के वक़्त फ़रमाया : काश ! **मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता !** **(الطَّبقاتُ الكُبرىٰ لابنِ سعد ج٣ ص٢٧٤)**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

काश कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता — क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता
आह ! कस्रते इस्यां हाए ख़ौफ़ दोज़ख़ का — काश ! इस जहां का मैं न बशर बना होता
आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है
काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 256, 258)

एक आ़लिम बाप का इ़ब्रत नाक अन्जाम : मां बाप के ह़क़ में औलाद गो कभी ने'मत भी साबित होती है मगर कभी सह़ीह़ इस्लामी तरबिय्यत पर वालिदैन के तवज्जोह न देने के बाइ़स बहुत बड़ी ज़ह़मत भी बन जाती है, इस बात को **ह़िल्यतुल औलिया** में वारिद शुदा इस ह़िकायत से समझने की कोशिश कीजिये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : **मन्क़ूल** है कि बनी इस्राईल में एक **आ़लिम साह़िब** घर में इज्तिमाअ़ कर के उस में बयान फ़रमाया करते थे, एक दिन उन के जवान लड़के ने एक ख़ूब सूरत लड़की की त़रफ़ आंख से इशारा किया, जो कि उन आ़लिम साह़िब ने देख लिया और कहा : **"ऐ बेटे सब्र कर।"** येह कहते ही आ़लिम साह़िब अपने मन्च से मुंह के बल गिर पड़े यहां तक कि उन की हड्डियों के बा'ज़ जोड़ टूट गए, उन की बीवी का ह़म्ल साक़ित़ हो गया और उन के लड़के जंग में मारे गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस वक़्त के नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को वह़्य फ़रमाई कि **फ़ुलां आ़लिम** को ख़बर कर दो कि मैं उस की नस्ल से कभी **सिद्दीक़** पैदा नहीं करूंगा, क्या मेरे लिये सिर्फ़ इतना ही नाराज़ होना था कि वोह बेटे को कह दे : **"ऐ बेटे सब्र कर।"** (حلیۃ الاولیاء ج۲ ص۴۲۲ رقم۲۸۲۳) मत़लब येह कि अपने बेटे पर सख़्ती क्यूं नहीं की और उसे उस बुरी ह़-र-कत से अच्छी त़रह़ बाज़ क्यूं न रखा ? इस रिवायत में "सिद्दीक़" का ज़िक्र है, औलियाए किराम की सब से अफ़्ज़ल क़िस्म सिद्दीक़ कहलाती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ हमारे **ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم सिद्दीक़ थे।

पेन्सिल की चोरी से फांसी के फन्दे तक : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! औलाद की ऐसी तरबिय्यत करनी चाहिये कि वोह बचपन ही से अच्छाइयों से प्यार करें और बुराइयों से बेज़ार रहें, अगर ऐसा न किया गया तो हो सकता है कि बच्चा बिगड़ जाए और बड़ा हो कर कुछ का कुछ कर डाले जैसा कि कहा जाता है कि एक **ख़त़रनाक डाकू** गरिफ़्तार कर लिया गया, मुक़द्दमा चला, उस पर डकेतियों और क़त्लो ग़ारत गरियों की मुख़्तलिफ़ वारिदातें साबित हो गईं जिन के सबब उसे **फांसी की सज़ा** सुनाई गई। जब फांसी का वक़्त क़रीब आया तो उस से उस की आख़िरी आरज़ू पूछी गई, उस ने

अपनी मां से मुलाक़ात की ख़्वाहिश ज़ाहिर की, चुनान्चे उस की मां को बुला लिया गया, **जूं ही उस ने अपनी मां को देखा, एक दम उस पर ह़म्ला कर दिया और नोचा नाची और मारा मारी शुरूअ़ कर दी,** ड्यूटी पर मौजूद अ़मले ने जूं तूं ज़ख़्मी मां को बे रह़्म बेटे के चुंगल से छुड़ाया। जब उस डाकू से इस सफ़्फ़ाकाना ह़-र-कत का सबब पूछा गया तो बोला : मुझे फांसी के फन्दे तक इसी मां ने पहुंचाया है, दर अस्ल क़िस्सा यूं है कि मैं ने बचपन के ला शुऊ़री के दौर में स्कूल के अन्दर एक त़ालिबे इ़ल्म की **पेन्सिल चुरा ली** और घर ला कर अपनी इस मां को दिखाई, अब चाहिये तो येह था कि वोह मुझे इस ग़लत़ काम से नफ़रत दिलाती मगर येह सिर्फ़ मुस्करा कर चुप हो रही, उस वक़्त मुझ में अ़क़्ल ही कितनी थी ! मैं समझा कि मैं ने कोई बहुत ही अच्छा कारनामा अन्जाम दिया है ! लिहाज़ा मेरा ह़ौसला बढ़ा और मैं मज़ीद पेन्सिलें और कॉपियां चुराने लगा, जब बड़ा हुवा तो **चोरी** की आ़दत काफ़ी पक्की हो चुकी थी और दिल ख़ूब खुल गया था लिहाज़ा मैं ने **डकेतियां** शुरूअ़ कर दीं, इसी लूटमार के दौरान मुझ से बा'ज़ क़त्ल की वारिदातें भी सरज़द हो गईं और मैं बहुत **"ख़त़रनाक डाकू"** बन गया आख़िर पोलीस के हाथों गरिफ़्तार हो कर आज अपनी इसी ना लाइक़ मां की ग़लत़ तरबिय्यत की बदौलत चन्द ही लम्ह़ों के बा'द अपने गले में फांसी का फन्दा पहनने वाला हूं।

आख़िरत की सज़ा के मुक़ाबले में दुन्या की सज़ा कुछ भी नहीं ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! बचपन की ग़लत़ तरबिय्यत कैसा रंग लाई ! हो सकता है कि कोई सोचे कि हम अपने बच्चे को चोर चकार थोड़े ही बना रहे हैं ! ठीक है सब मां बाप "मा'रूफ़ चोरी" या'नी बा क़ाइदा दूसरों का माल चुराने की ता'लीम नहीं दिया करते लेकिन सिर्फ़ चोरी ही को तो बुराई नहीं कहते, और भी तो बहुत सारी बुराइयां हैं जो कई मां बाप आज कल अपनी औलाद को सिखाते हैं म-सलन झूट बोल कर, धोका दे कर, कम नाप तोल कर माल बेचना वग़ैरा। क्या सूदी लैन दैन, नाक़िस माल को उ़म्दा ज़ाहिर कर के बेचने का गुर सिखाना या बेटे को दाढ़ी बढ़ाने और बेटी को शर-ई पर्दा करने वग़ैरा से रोकना गुनाह नहीं ? क्या इस त़रह़ करने वाले मुआ़-शरे के **"मुहज़्ज़ब चोर और सफ़ेद पोश डाकू"** नहीं कहलाए जा सकते ? येह दुन्या में मुअ़ज़्ज़ज़ नज़र

आने वाले क्या आख़िरत में भी इ़ज़्ज़त मिलने की उम्मीदें बांधे हुए हैं ! ख़ुदा की क़सम ! उस डाकू को होने वाली फांसी की दुन्यवी तक्लीफ़ और उस मां को पहुंचने वाली लम्हे भर की ईज़ा के मुक़ाबले में औलाद को गुनाहों की तरबिय्यत देने वालों को मिलने वाले अ़ज़ाब का करोड़वां हिस्सा करोड़हा करोड़ गुना से भी शदीद व अशद और सख़्त तर होगा। اَلْاَمان وَالْحَفِیظ۔

बाप को जलाने के लिये लक्ड़ियां ले आऊं : हमारे मौजूदा मुआ़-शरे का एक अ़जीबो ग़रीब दिल ख़राश वाक़िआ़ सुनिये और ह़ैरत से सर धुनिये कि वालिदैन की त़रफ़ से सुन्नतों भरी तरबिय्यत न मिलने की सूरत में औलाद कैसे कैसे अनोखे कारनामे अन्जाम देती है ! चुनान्चे शहर ह़ैदरआबाद (पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि 2001 सि.ई. में हमारे यहां एक बहुत बड़े सेठ का इन्तिक़ाल हो गया। लोग उस के आ़लीशान बंगले में जम्अ़ थे कि मर्ह़ूम का 19 सालह बेटा जो कि एक मॉडर्न स्कूल में पढ़ता था, कहीं जाने के लिये एक दम उ़ज्लत (या'नी जल्दी) में उठा, किसी ने उ़ज्लत (या'नी जल्दी) का सबब दरयाफ़्त किया तो कहने लगा : ''मेरे वालिद साह़िब मेरे साथ बहुत **मह़ब्बत** करते थे, मैं ने सोचा कि आख़िरी वक़्त अपने हाथों से इन की कुछ ख़िदमत कर लूं, चुनान्चे इन की मय्यित को जलाने के लिये मैं ख़ुद लक्ड़ियां ले कर आऊंगा।'' येह सुन कर लोगों की ह़ैरत की इन्तिहा न रही कि इस का बाप तो मुसल्मान था, फिर इस को जलाने के लिये लक्ड़ियां क्यूं लेने जा रहा है ! ग़ौर किया तो अन्दाज़ा हुवा कि इस नादान ने ग़ैर मुस्लिमों की फ़िल्मों में लाशें जलाने के मनाज़िर देख लिये होंगे तो इस के ज़ेह्न में येह बात बैठ गई होगी कि जो भी मर जाए उस को जलाना होता है इस फ़िल्में देखने के शौक़ीन को येह पता ही न होगा कि मुसल्मानों को जलाया नहीं दफ़्नाया जाता है। बहर ह़ाल उस के मर्ह़ूम वालिद की तदफ़ीन कर दी गई। जब फ़िल्मों के इस ख़ौफ़नाक मन्फ़ी असर (SIDE EFFECT) का येह वाक़िआ़ उस अ़लाक़े के लोगों को मा'लूम हुवा तो उन्हें बड़ी इ़ब्रत हुई, कई नौ जवानों ने जोश में आ कर ''केबल'' काट डाले कुछ अ़र्से तक येही सूरते ह़ाल रही मगर रफ़्ता रफ़्ता नफ़्सो शैत़ान ग़ालिब आए और केबल फिर से जोड़ लिये गए !

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

सरवरे दीं लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर
नफ़्सो शैत़ां सय्यिदा कब तक दबाते जाएंगे

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे़ कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इस शे'र के मा'ना हैं : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम कमज़ोर ग़ुलामों की गुनाहों से ह़िफ़ाज़त फ़रमाइये, ऐ आक़ा ! हम गुनाहों के मरज़ से आख़िर कब शिफ़ा पाएंगे ! आख़िर येह नफ़्सो शैत़ान हमें कब तक गुनाहों में फंसाए रहेंगे ! (नफ़्सो शैत़ान के शर से बचने का एक बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि किसी पीरे कामिल का मुरीद हो जाए कि जब उस के जामेअ़ शराइत़ पीर पर नफ़्सो शैत़ान के वार नहीं चल पाएंगे तो उस की ब-र-कत से उस के मुरीदीन की भी ह़िफ़ाज़त की सूरत बनी रहेगी। एक इस्राईकी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है)

पीर दे हथ विच हथ कूं डे कर
नफ़्स दी बांहा मरोड़ तां तूं हिक थीवें

(या'नी अपना हाथ किसी पीरे कामिल के हाथों में दे कर नफ़्स का बाज़ू मरोड़ दे ताकि तुझे मक़ामे फ़नाइय्यत ह़ासिल हो)

ईसाले सवाब का इन्तिज़ार : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस अनोखे वाक़िए़ में इ़ब्रत ही इ़ब्रत है। अगर्चे आप आज ज़िन्दा हैं मगर कल यक़ीनन मरना पड़ेगा, अगर आप ने अपने बेटे को सिर्फ़ और सिर्फ़ दुन्या पढ़ाई, दौलत कमानी ही सिखाई, ख़ूब मूसीक़ी सुनाई, एक से एक फ़िल्म दिखाई, दीनी ता'लीम न दिलाई न सिखाई, मस्जिद की राह न दिखलाई, उस के दिल में मह़ब्बते रसूल की शम्अ़ न जलाई, मक्की म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी प्यारी प्यारी मुबारक दाढ़ी उस के चेहरे पर न सजवाई बल्कि ठीक ठाक फ़ेशन करवाया तो याद रखिये ! न वोह आप का जनाज़ा पढ़ सकेगा और न ही उसे आप के लिये **ईसाले सवाब** करना आएगा ! ह़ालां कि मरने के बा'द ईसाले सवाब की आप को बहुत ज़ियादा ह़ाजत होगी। **सरकारे नामदार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार है : मुर्दे का ह़ाल क़ब्र में डूबते हुए

इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ़ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह **दुन्या व मा फ़ीहा** (या'नी दुन्या और जो कुछ उस में है) से बेहतर होती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा **मु-तअ़ल्लिक़ीन** की त़रफ़ से हदिय्या किया हुवा सवाब पहाड़ों की मानिन्द अ़ता फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोहफ़ा) मुर्दों के लिये "दुआ़ए मग़्फ़िरत करना" है।

(شُعَبُ الْاِیمان ج٦ص٢٠٣حدیث٧٩٠٥)

हर भले की भलाई का सदक़ा
इस बुरे को भी कर भला या रब

(ज़ौक़े ना'त, स. 60)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुझे मेरे बाप ने बरबाद कर दिया ! : **एक** नौ जवान ने सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ को एक त़वील और दर्दनाक मक्तूब दिया, जिसे ब तसर्रुफ़ पेश करता हूं चुनान्चे उस नौ जवान का बयान है : मैं **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से नया नया वाबस्ता हुवा था। एक बार रात के इब्तिदाई ह़िस्से में अपने कमरे के अन्दर हाथ उठाए बसद नदामत रो रो कर अपने **गुनाहों से तौबा** कर रहा था। रोने की आवाज़ सुन कर वालिद साह़िब घबरा कर मेरे कमरे में आ गए। **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से **ना वाक़िफ़िय्यत** व दूरी के बाइ़स मेरी गिर्या व ज़ारी उन की समझ में नहीं आई, उन्हों ने मेरा बाज़ू थाम कर मुझे खड़ा कर दिया और पकड़ कर अपने कमरे में बिठा कर T.V. ऑन कर के कहा : बिल्कुल ही **मौलवी** मत बन जाओ, येह भी देख लिया करो। मैं अगर्चे **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से दीगर गुनाहों के साथ साथ फ़िल्मों, डिरामों और गाने बाजों से भी ताइब हो (या'नी तौबा कर) चुका था, मगर वालिद साह़िब ने मुझे T.V. देखने पर मजबूर कर दिया, उस वक़्त T.V. पर कोई "डिरामा" चल रहा था, बे ह़या लड़कियों की फ़ोह़्श अदाओं ने मेरे जज़्बात में हैजान पैदा करना शुरूअ़ किया, आह ! अभी थोड़ी ही देर पहले मैं ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के बाइ़स गिर्या कनां

(या'नी रो धो रहा) था और अब...... अब...... नफ़्सानी ख़्वाहिशात ने मुझ पर एक दम ग़-लबा किया, मौक़अ़ देख कर शैत़ान ने अपना दाव चला दिया और वहीं बैठे बैठे मुझ पर "ग़ुस्ल फ़र्ज़" हो गया ! इस वाक़िए़ के बा'द एक बार फिर मैं गुनाहों की दलदल में उतरता चला गया। चूंकि **ज़ालिम मुआ-शरे** के बे जा रस्मो रवाज मेरे निकाह़ के मुक़ाबिल बहुत बड़ी दीवार बने हुए हैं, मैं शह्वत की तस्कीन के लिये अपने हाथों से अपनी जवानी पामाल करने लग गया हूं और गन्दी ह़-र-कतों के बाइ़स अब नौबत यहां तक आ पहुंची है कि मैं शादी के क़ाबिल नहीं रहा। बताइये ! **मुजरिम कौन ? मैं ख़ुद या कि मेरे वालिद साह़िब ?**

ह़क़ीक़ी म-दनी मुन्ने का ख़ौफ़े ख़ुदा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कैसा नाज़ुक दौर आ गया है कि आज अक्सर वालिदैन "शफ़्क़त नुमा हलाकत" के ज़रीए़ अपने हाथों अपनी औलाद को तबाही के गढ़े में झोंक रहे हैं यहां तक कि अगर बच्चा अज़् ख़ुद सुधरना चाहे तब भी उस की राहें मस्दूद (या'नी बन्द) कर दी जाती हैं, इस त़रह़ के वालिदैन गोया ज़बाने ह़ाल से येह ए'लान करते सुनाई दे रहे हैं : "हम जहन्नम में अकेले क्यूं जाएं अपनी औलाद को भी साथ ले कर जाएंगे (مَعَاذَاللّٰه)।" एक दौर वोह था कि ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वाली मां की रह़मत भरी गोद में पलने और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा रखने वाले बाप की शफ़्क़त के साए में परवान चढ़ने वाले **म-दनी मुन्ने** मुआ-शरे पर ऐसे नुक़ूश छोड़ते थे कि उन की दिलरुबा अदाएं आज भी हमारा दिल मोह लेती हैं, चुनान्चे एक चार सालह **ह़क़ीक़ी म-दनी मुन्ना** सय्यिद ज़ादा सरे बाज़ार ज़ारो क़ित़ार रो रहा था, किसी साह़िब ने आले रसूल की ख़िदमत के जज़्बे से सरशार हो कर अ़र्ज़ की : शहज़ादे ! क्या बात है ? अगर किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो हुक्म फ़रमा दीजिये अभी ह़ाज़िर करता हूं। येह सुन कर म-दनी मुन्ने के रोने की आवाज़ और बुलन्द हो गई और कहा : चचाजान ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब और अ़ज़ाबे जहन्नम के ख़ौफ़ से दिल बैठा जा रहा है ! उन साह़िब ने शफ़्क़त से अ़र्ज़ की : शहज़ादे ! आप बहुत ही कमसिन हैं, अभी से इतना ख़ौफ़ कैसा ! ख़ात़िर जम्अ़ (या'नी इत़्मीनान) रखिये बच्चों

को अ़ज़ाब नहीं दिया जाएगा। येह सुन कर म–दनी मुन्ने का ख़ौफ़ मज़ीद नुमायां हो गया और रोते हुए बोला : चचाजान ! मैं ने देखा है कि बड़ी लकड़ियां सुलगाने के लिये उन के गिर्द **छपटियां** (या'नी लकड़ी की छीलन और छोटी छोटी **खपच्चियां** वग़ैरा) चुन दी जाती हैं, **छपटियां** जल्दी से आग पकड़ लेती हैं और उन की बदौलत फिर बड़ी लकड़ियां भी जल उठती हैं ! मैं डरता हूं कि अबू जह्ल और अबू लहब जैसे बड़े बड़े काफ़िरों को जहन्नम में जलाने के लिये **छपटियों** की जगह कहीं मुझे आग में न डाल दिया जाए ! मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप जानते हैं वोह चार सालह ह़क़ीक़ी म–दनी मुन्ना कौन था ? वोह कोई और नहीं ! हमारे टूटे दिलों के सहारे और अहले बैते अत़्हार की आंखों के तारे ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम जा'फ़रे सादिक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे ।

(بِتَغَیُّرانیس الواعظین ص ۷۵)

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐ़ने नूर तेरा सब घराना नूर का

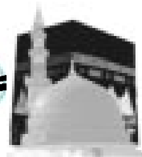
(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस शे'र में फ़रमाते हैं : **या नूरल्लाह !** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप तो हैं ही नूर बल्कि नूरुन अ़ला नूर (या'नी नूर पर नूर) । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक नस्ल में ता क़ियामत जितने भी बच्चे होंगे या'नी सादाते किराम वोह भी सब के सब नूर हैं । ऐ नूर वाले प्यारे प्यारे आक़ा ! आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का सारे का सारा घराना ही नूर, नूर और बस नूर है ।

नूर अन्दर नूर बाहर घर का घर सब नूर है
आ गया वोह नूर वाला जिस का सारा नूर है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد






फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है । (ابویعلیٰ)

दीनी मुआ-मले में हौसला शि-कनी करने वाली मां का पछतावा :

वालिदैन को चाहिये कि अपनी औलाद को शुरूअ़ ही से नेकियों और सुन्नतों भरा म-दनी माहोल फ़राहम करें, वरना बुरी सोहबत की वजह से बिगड़ जाने की सूरत में बाज़ी हाथ से निकल सकती है । सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को इस की बड़ी बहन ने बताया : एक इस्लामी बहन ने अपने बेटे की इस्लाह के लिये रो रो कर दुआ का कहा है, बेचारी कह रही थी, हाए ! हाए ! मैं ने खुद ही उस को बरबाद किया है, इस को दा'वते इस्लामी के **मद्र-सतुल मदीना** में हिफ़्ज़ के लिये बिठाते तो बिठा दिया मगर बेचारा जो सुन्नतें वग़ैरा सीख कर आता वोह घर में आ कर बयान कर देता तो हम उस का मज़ाक़ उड़ाते । आख़िरश उस का दिल टूट गया और उस ने **मद्र-सतुल मदीना** में जाना छोड़ दिया । अब बुरे दोस्तों की सोहबत में रह कर आवारा हो गया है, ख़ुश क़िस्मती से मुझे दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल मिल गया है अब मैं सख़्त पछता रही हूं, हाए मेरा क्या बनेगा !

صُحبتِ صالِح تُرا صالِح کُنَد   صحبتِ طالِح تُرا طالِح کُنَد

(या'नी अच्छे की सोहबत तुझे अच्छा बना देगी) (बुरे की सोहबत तुझे बुरा बना देगी)

सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की फ़ज़ीलत : **अपनी** औलाद को भी दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की रग़बत दिलाइये और खुद भी हाज़िरी की सआदत पाइये, इस तरह के इज्तिमाआत की ब-रकात के भी क्या कहने ! चुनान्चे नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का फ़रमाने अज़ीम है : क़ियामत के दिन कुछ ऐसे लोग होंगे जो न अम्बिया होंगे न शु-हदा, (मगर) उन के चेहरों का नूर देखने वालों की निगाहों को ख़ीरा (या'नी चकाचौंद) करता होगा । अम्बिया व शु-हदा उन के मक़ाम और क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ को देख कर इज़्हारे मसर्रत फ़रमाएंगे । सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से किसी सहाबी ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह कौन (ख़ुश नसीब) होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : येह मुख़्तलिफ़ क़बाइल और बस्तियों के लोग होंगे जो (दुन्या में) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद करने





के लिये इकट्ठे होते थे और पाकीज़ा बातें इस त़रह़ चुनते थे जिस त़रह़ खजूर खाने वाला बेहतरीन खजूरें चुनता है । (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب للمنذری ج٢ ص ٢٠٢ حديث٢٣٣٤)

यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर जिसे ख़ैर से मिल गया म-दनी माह़ोल
यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा म-दनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 602)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ाफ़िल नौ जवान : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े ख़ुदा से दिल को लरज़ाने, इश्क़े मुस्त़फ़ा में रूह़ को तड़पाने, गुनाहों की आ़दतें मिटाने, नेकियों का जज़्बा बढ़ाने और अपने आप को सुन्नतों का पैकर बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता रहते हुए हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करते रहिये और **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करते हुए ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारिये । आइये ! आप का जज़्बा बढ़ाने के लिये एक "म-दनी बहार" सुनाऊं, चुनान्चे **गुलज़ारे त़यबा** (सरगोधा, पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई ने अपनी तौबा के अह़वाल बयान किये जिन का लुब्बे लुबाब पेश करने की सअ़्य की जाती है : दा'वते इस्लामी के पाकीज़ा और महके महके म-दनी माह़ोल से इक्तिसाबे फ़ैज़ से क़ब्ल मैं जवानी के नशे में मस्त आवारा दोस्तों की सोह़बत में अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती लम्ह़ात बरबाद कर रहा था, मुआ़-शरे में पाया जाने वाला कौन सा ऐसा गुनाह था कि जिस के अन्दर मैं मुब्तला न हुवा था, लड़कियों का पीछा करना, उन पर आवाज़े कसना, रात कलब में और दिन ताश व बिलयर्ड (स्नोकर की क़िस्म का एक खेल) खेलने में बरबाद कर देना, घर वालों के समझाने पर ज़बान दराज़ी करना मेरी आ़दात बन चुकी थीं । ज़िन्दगी यूं ही गुनाहों भरी ग़फ़्लत में गुज़र रही थी कि ख़ुश क़िस्मती से एक आ़शिक़े रसूल की **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से दा'वते इस्लामी का महका महका मुश्कबार म-दनी माह़ोल **मुयस्सर** आ गया । आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत से मुझे नेकियों पर अ़मल करने और गुनाहों से दूर रहने का जज़्बा मिल

गया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने चेहरे पर दाढ़ी मुबारक सजा ली और सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजा लिया म-दनी कामों का शौक़ मिला और दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के म-दनी रसाइल गली कूचों और घर घर जा कर तक़्सीम करने का भी ज़ेहन बना ।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस म-दनी बहार के ज़िम्न में नेकी की दा'वत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने "इन्फ़िरादी कोशिश" की भी क्या ख़ूब बहारें हैं ! गुनाहों में बद मस्त रहने वाला ग़ाफ़िल नौ जवान **इश्क़े रसूल** में मस्त हो गया । हमें भी हर एक पर इन्फ़िरादी कोशिश करते रहना चाहिये, कोई हमारी बात माने या न माने हमारा समझाने का सवाब कहीं नहीं जाता ! हमारी **इन्फ़िरादी कोशिश** की वजह से अगर कोई राहे रास्त पर आ गया तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारा भी बेड़ा पार हो जाएगा । **बुरी सोह़बत** से हमेशा दूर रहना चाहिये कि इस की वजह से आदमी बिगड़ जाता और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में पड़ जाता है जब कि **अच्छी सोह़बत** निहायत अच्छा फल लाती है चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 56 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"अच्छे माह़ोल की ब-र-कतें"** सफ़ह़ा 18 ता 19 पर है : एक ह़दीस शरीफ़ में है, ह़ज़रते अबू रज़ीन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि उन से **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें उस चीज़ की अस्ल पर रहबरी न करूं जिस से तुम दुन्या व आख़िरत की भलाई पा लो (पस वोह अस्ल चीज़ येह है कि) तुम ज़िक्र करने वालों की मजलिस इख़्तियार करो ।

(شُعَبُ الْإِيمان ج٦ ص٤٩٢ حديث ٩٠٢٤)

इस ह़दीसे पाक के तह़्त **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं कि (ज़िक्र करने वालों की) मजलिस से मुराद उ़-लमाए दीन व औलियाए कामिलीन, सालिह़ीन व वासिलीन (या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मुक़र्रब बन्दों)

की मजलिसें हैं, क्यूं कि येह मजलिसें जन्नत के बाग़ात हैं जैसा कि दूसरी ह़दीस शरीफ़ में है । येह मजलिसें ख़्वाह मद्रसे हों या दर्से कुरआनो ह़दीस की मजलिसें या ह़ज़राते सूफ़ियाए किराम की मह़फ़िलें । येह फ़रमान बहुत जामेअ़ है । जिस मजलिस में **अल्लाह** का ख़ौफ़, हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इश्क़ और इत़ाअ़ते रसूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का शौक़ पैदा हो वोह मजलिस इक्सीर (या'नी मुफ़ीद तरीन) है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 603 ता 604)

तुम अपनाए रख्खो सदा म-दनी माह़ोल संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَاللّٰہ
न अ़त़्त़ार तुम छोड़ना म-दनी माह़ोल बहुत सख़्त पछताओगे याद रख्खो

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कलिमए त़य्यिबा नफ़्अ़ देगा जब तक......: **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : "لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ (مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ)" हमेशा अपने कहने वालों को नफ़्अ़ पहुंचाता रहेगा और उन से अ़ज़ाब को दूर करता रहेगा जब तक इस का ह़क़ हलका न जानें । **सह़ाबए किराम** عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! कलिमए त़य्यिबा के ह़क़ को हलका जानना क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : یَظْھَرُ الْعَمَلُ بِمَعَاصِی اللّٰہِ فَلَا یُنْکَرُ وَلَا یُغَیَّرُ ۔ या'नी ("لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ" के ह़क़ को हलका जानना येह है कि) **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी वाला काम होता देख कर न उसे रोका जाए और न ही उसे तब्दील किया जाए । **(اَلتَّرْغِیب وَالتَّرْھِیب ج ۳ ص ۱۸٤ حدیث ۳۰۳۸)**

इस्लाम के 8 ह़िस्से : **ह़ज़रते** सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि इस्लाम के **आठ ह़िस्से** हैं ﴾1﴿ इस्लाम ﴾2﴿ नमाज़ ﴾3﴿ ज़कात ﴾4﴿ र-मज़ान का रोज़ा ﴾5﴿ ह़ज्जे **बैतुल्लाह** ﴾6﴿ **नेकी का हुक्म देना** ﴾7﴿ **बुराई से रोकना** और ﴾8﴿ **अल्लाह** तआ़ला की राह में जिहाद करना । और वोह शख़्स काम्याब नहीं

जिस का कोई हिस्सा न हो । (شُعَبُ الْإِيمان ج٦ص٩٤حديث٧٥٨٥)

दुन्या में भी सज़ा मिलेगी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो क़ौम क़ुदरत के बा वुजूद गुनाह करने वाले को इस से रोकती नहीं, अन्देशा है कि वोह न रोकने वाली क़ौम मरने से पहले दुन्या ही में अ़ज़ाब में गरिफ़्तार हो जाए । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत है कि रसूलों के सालार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद है : अगर किसी क़ौम में कोई शख़्स गुनाह का मुर-तकिब हो और क़ौम के लोग **बा वुजूदे क़ुदरत** उसे गुनाह से न रोकें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के मरने से पहले उन पर अपना अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाएगा ।

(سُنَنِ ابوداوٗد ج ٤ ص ١٦٤ حديث ٤٣٣٩)

आख़िरत में भी सज़ा मिलेगी दुन्या में भी सज़ा मिलेगी : इस ह़दीसे पाक के तह़्त "मिरआतुल मनाजीह़" में है : जिस क़ौम या जमाअ़त में कुछ लोग बुराई के मुर-तकिब हों और वोह क़ौम उन को रोकने की त़ाक़त रखने के बा वुजूद न रोकें तो वोह भी अ़ज़ाबे ख़ुदा वन्दी के मुस्तह़िक़ होंगे और येह अ़ज़ाब वोह लोग मरने से पहले दुन्या ही में देख लेंगे । ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी (عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی) फ़रमाते हैं कि बुराई को बदलने में कोताही करना दूसरे जराइम के मुक़ाबले में इस लिह़ाज़ से **मुन्फ़रिद** है कि दूसरे गुनाहों की सज़ा आख़िरत में मिलेगी जब कि इस कोताही की सज़ा दुन्या में भी मिलेगी और आख़िरत का अ़ज़ाब इस के इ़लावा होगा ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 507)

आप का दिल नहीं लरज़ता ! : जन्नत की अ-बदी व सर-मदी ने'मतों के त़लब गार **इस्लामी भाइयो !** आप का दिल नहीं लरज़ता ? आप पर ख़ौफ़ त़ारी नहीं हो जाता ? कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो बे नियाज़ है, उसे परवाह ही कब है कि लोग उसे सज्दा करें ही करें, यक़ीनन अगर सारी की सारी मख़्लूक़ भी उस की बारगाह में झुक जाए,

तब भी उस की ज़ात पर किसी का कोई एह़सान नहीं। हमें उस की बे नियाज़ी और ख़ुफ़्या तदबीर से डरना और उस की गिरिफ़्त से पनाह मांगनी चाहिये, आख़िर दुन्या में कब तक गुलछर्रे उड़ाएंगे ! याद रखिये ! एक न एक दिन सब को मरना पड़ेगा, अंधेरी क़ब्र में उतरना पड़ेगा और अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा

اَلْمَوْتُ بَابٌ كُلُّ نَفْسٍ دَاخِلُهَا   اَلْمَوْتُ قَدَحٌ كُلُّ نَفْسٍ شَارِبُهَا

या'नी मौत एक ऐसा दरवाज़ा है जिस में से हर जानदार ने गुज़रना है और मौत एक ऐसा जाम है जिसे हर शख़्स ने पीना है।

जी लगाने की जा नहीं दुन्या   किस को ह़ासिल दवाम होता है

मुर्दे की बे बसी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उस वक़्त कैसी बे कसी होगी जब रूह़ जिस्म से जुदा हो चुकी होगी, उस दम किस क़दर बे बसी का आ़लम होगा जब बेश क़ीमत कपड़े बदन से उतारे जा रहे होंगे, ग़स्साल नहला रहा होगा, लठ्ठे का कफ़न पहनाया जा रहा होगा, कैसी ह़सरत की घड़ी होगी जब जनाज़ा उठाया जा रहा होगा, **हाए ! हाए !** वोह दुन्या जिसे संवारने के लिये उ़म्र भर भागदौड़ की थी, जिस की ख़ातिर रातों की नींदें उड़ाई थीं, त़रह़ त़रह़ के ख़त़रे मोल लिये थे, ह़ासिदीन के रुकावटें खड़ी करने के बा वुजूद भी जान लड़ा कर दुन्या का माल कमाते रहे थे, ख़ूब ख़ूब दौलत बढ़ाते रहे थे, जिस मकान को मज़बूत़ ता'मीर किया था फिर उस को त़रह़ त़रह़ के फ़र्नीचर से आरास्ता किया था, वोह सभी कुछ छोड़ कर रुख़्सत होना पड़ रहा होगा। आह ! क़ीमती लिबास खूंटी पर टंगा रह जाएगा, कार हुई तो गेराज में खड़ी रह जाएगी, खेलकूद के आलात, ऐ़शो त़रब के अस्बाब और हर त़रह़ का मालो सामान धरा का धरा रह जाएगा। उस वक़्त **मुर्दे की बे बसी** इन्तिहा को पहुंचेगी जब उस को रोशनियों से जग-मगाती आ़रिज़ी ख़ुशियों से मुस्कराती दुन्याए ना पाएदार के फ़ानी घर से निकाल कर अंधेरी क़ब्र में मुन्तक़िल करने के लिये उस के नाज़ उठाने वाले उस को कन्धों पर लाद कर सूए क़ब्रिस्तान चल पड़ेंगे।

आ़लमे इन्क़िलाब है दुन्या   चन्द लम्हों का ख़्वाब है दुन्या
फ़ख़्र क्यूं दिल लगाएं इस से   नहीं अच्छी, ख़राब है दुन्या

क़ब्र की दिल हिला देने वाली नेकी की दा'वत : **ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ एक जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए, वहां एक **क़ब्र** के पास बैठ कर ग़ौरो फ़िक्र में डूब गए, किसी ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मुअमिनीन ! आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ यहां तन्हा कैसे तशरीफ़ फ़रमा हैं ? फ़रमाया : अभी अभी एक **क़ब्र** ने मुझे पुकार कर बुलाया और बोली : ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) मुझ से क्यूं नहीं पूछते कि मैं अपने अन्दर आने वालों के साथ क्या बरताव करती हूं ? मैं ने उस **क़ब्र** से कहा : मुझे ज़रूर बता। वोह कहने लगी : जब कोई मेरे अन्दर आता है तो मैं उस का **कफ़न फाड़** कर जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर डालती और उस का गोश्त खा जाती हूं। क्या आप मुझ से येह नहीं पूछेंगे कि मैं उस के जोड़ों के साथ क्या करती हूं ? मैं ने कहा : येह भी बता। तो कहने लगी : "हथेलियों को कलाइयों से, घुटनों को पिंडलियों से और पिंडलियों को क़दमों से जुदा कर देती हूं।" इतना कहने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हिचकियां ले कर रोने लगे, जब कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो कुछ इस त़रह़ इ़ब्रत के "म-दनी फूल" लुटाने लगे : **ऐ इस्लामी भाइयो !** इस दुन्या में हमें बहुत थोड़ा अ़र्सा रहना है, जो इस दुन्या में साहि़बे इक़्तिदार है वोह (आख़िरत में) इन्तिहाई ज़लीलो ख़्वार होगा, जो इस जहां में मालदार है वोह (आख़िरत में) फ़क़ीर होगा। इस का जवान बूढ़ा हो जाएगा और जो ज़िन्दा है वोह मर जाएगा। दुन्या का तुम्हारी त़रफ़ आना तुम्हें धोके में न डाल दे, क्यूं कि तुम जानते हो कि येह बहुत जल्द रुख़्सत हो जाती है। कहां गए तिलावते क़ुरआन करने वाले ? कहां गए **बैतुल्लाह** का ह़ज करने वाले ? कहां गए माहे र-मज़ान के रोज़े रखने वाले ? ख़ाक ने उन के जिस्मों का क्या ह़ाल कर दिया ? क़ब्र के कीड़ों ने उन के गोश्त का क्या अन्जाम किया ? उन की हड्डियों और जोड़ों के साथ क्या बरताव हुवा ? **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! जो (बे अ़मल) दुन्या में आराम देह नर्म नर्म बिस्तर पर होते

थे लेकिन अब अपने घर वालों और वत़न को छोड़ कर राह़त के बा'द तंगी में हैं, उन की औलाद गलियों में दर बदर है क्यूं कि उन की बेवाओं ने दूसरे निकाह़ कर के फिर से घर बसा लिये, उन के रिश्तेदारों ने उन के मकानात पर क़ब्ज़ा कर लिया और मीरास आपस में बांट ली। **वल्लाह**! उन में बा'ज़ ख़ुश नसीब भी हैं जो कि क़ब्रों में मज़े लूट रहे हैं जब कि बा'ज़ ऐसे हैं जो अ़ज़ाबे क़ब्र में गरिफ़्तार हैं।

अफ़्सोस सद हज़ार अफ़्सोस, ऐ नादान! जो आज मरते वक़्त कभी अपने बाप की, कभी अपने बेटे की तो कभी सगे भाई की आंखें बन्द कर रहा है, उन में से किसी को नहला रहा है, किसी को कफ़न पहना रहा है, किसी के जनाज़े को कन्धे पर उठा रहा है तो किसी को क़ब्र के तंग व तारीक गढ़े में दफ़्ना रहा है। (याद रख! कल येह सभी कुछ तेरे साथ भी होने वाला है) काश! मुझे इ़ल्म होता कि कौन सा गाल (क़ब्र में) पहले सड़ेगा फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रोने लगे और रोते रोते बेहोश हो गए और एक हफ़्ते के बा'द इस दुन्या से तशरीफ़ ले गए।

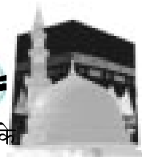
(اَلرَّوضُ الْفائِق ص۱۰۷)

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي "एह़याउल उ़लूम" में नक़्ल फ़रमाते हैं : ब वक़्ते वफ़ात ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ज़बान पर येह आयते करीमा जारी थी :

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِیْنَ لَا یُرِیْدُوْنَ عُلُوًّا فِی الْاَرْضِ وَ لَا فَسَادًا ؕ وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿۸۳﴾ (پ۲۰، القصص:۸۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में **तकब्बुर** नहीं चाहते और न फ़साद, और आ़क़िबत परहेज़ गारों ही की है। (اِحیاءُ الْعُلوم ج۵ص۲۳۰)

याद रख हर आन आख़िर मौत है बन तू मत अन्जान आख़िर मौत है
मरते जाते हैं हज़ारों आदमी आ़क़िलो नादान आख़िर मौत है


क्या ख़ुशी हो दिल को चन्दे ज़ीस्त से ग़मज़दा है जान आख़िर मौत है
मुल्के फ़ानी में फ़ना हर शै को है सुन लगा कर कान आख़िर मौत है
बारहा इल्मी तुझे समझा चुके
मान या मत मान आख़िर मौत है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

इ़ज़्ज़त वाले ज़लील कर दिये जाते हैं : **ह़ज़रते** सय्यिदुना जरीर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : किसी क़ौम में मुअ़ज़्ज़ज़ीन या'नी इ़ज़्ज़त वाले लोग ऐसी बुराई को न रोकें जिसे रोकने पर वोह क़ुदरत रखते हों तो **अल्लाह** तआ़ला उन को ज़लील कर देता है। (تَنبِیهُ الْمُغْتَرِّین ص۲۳۶)

कटे हुए कानों वाला बहरा : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : जो कोई सुने कि फ़ुलां शख़्स फे'ले बद (या'नी गुनाह) का मुर–तकिब हुवा और फिर (बा वुजूदे क़ुदरत) वोह उस गुनाह करने वाले को न रोके तो क़ियामत के रोज़ वोह **कटे हुए कानों वाला बहरा होगा।** (ایضاً)

गुनाह से न रोकना कब गुनाह है : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बयान कर्दा दोनों रिवायतों पर बार बार ग़ौर कीजिये ! गुनाह करने वाले को बा वुजूदे क़ुदरत गुनाह से बाज़ न रखने वाले के लिये ज़िल्लत और क़ियामत में "कान कटे हुए बहरे" की सूरत में उठाए जाने की वई़द है, येह मस्अला ज़ेहन नशीन फ़रमा लीजिये कि जब कोई गुनाह कर रहा हो और देखने वाले का ज़न्ने ग़ालिब हो कि मैं मन्अ़ करूंगा तो बाज़ आ जाएगा तो अब मन्अ़ करना **वाजिब** हो जाएगा अगर मन्अ़ नहीं करेगा तो गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। आदमी को तक़रीबन रोज़ाना ही ऐसे मवाक़ेअ़ पेश आते हैं कि बा'ज़ लोग ला इल्मी की वजह से या ब स–बबे ग़फ़्लत "गुनाहे बे लज़्ज़त" कर रहे होते हैं अब अगर ग़ौर किया जाए तो बारहा ऐसा ज़ेहन बनता है




कि फ़ुलां को समझाऊंगा तो मान जाएगा। मगर आदमी सुस्ती या शर्म व मुरव्वत की वजह से मन्अ़ करने से बाज़ रहता और यूं गुनहगार व अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार हो जाता है। मेरा अपना तजरिबा है कि **ना जाइज़ अंगूठी** पहनने वालों, गले में धात (METAL) की ज़न्जीर (CHAIN) लटकाने वालों वग़ैरा को जब समझाया है तो अक्सर हाथों हाथ उतार देते हैं, बा'ज़ों को तो जोश में आ कर सोने की ज़न्जीर तक तोड़ डालते देखा है ! ठीक है हर एक ऐसा नहीं करता और हर एक का दूसरों पर इतना असर भी नहीं होता मगर जो बा असर शख़्सिय्यत हो उस के लिये इस त़रह़ के गुनाहों से मन्अ़ करना मुश्किल नहीं होता और गुनाह करने वाले के मान जाने के ज़न्ने ग़ालिब होने की सूरत में तो मन्अ़ करना **वाजिब** हो जाएगा।

सोने की अंगूठी मर्द को ह़राम है : शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत, हु़ज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم इस त़रह़ के मुआ़-मलात में बहुत मु-तह़र्रिक (ACTIVE) थे चुनान्चे **"मुफ़्तिये आ'ज़म की इस्तिक़ामत व करामत"** सफ़ह़ा 146 पर रईसुल क़लम ह़ज़रते अ़ल्लामा अर्शदुल क़ादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के ह़वाले से नक़्ल है : उन (या'नी सरकारे मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द) के लिये सब से ज़ियादा तक्लीफ़ देह वोह मन्ज़र होता था जब वोह किसी मुसल्मान को इस्लामी शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते हुए पाते थे।...... اَمْرٌ بِالْمَعْرُوف وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने) का **फ़र्ज़** अदा करते वक़्त वोह छोटे बड़े, अमीर व ग़रीब और ह़ाकिम व मह़कूम के दरमियान कोई इम्तियाज़ नहीं करते थे। उन के दरबार का आ़म मा'मूल था कि कोई बड़े से बड़ा रईस हो या ऊंचे से ऊंचे मन्सब का अफ़्सर, उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते वक़्त अगर उस की उंगली में **सोने की अंगूठी** होती तो वोह फ़ौरन उतरवा देते और निहायत शफ़्क़त और **मह़ब्बत** के साथ उन्हें तल्क़ीन फ़रमाते कि अज़ रूए शरीअ़ते मुह़म्मदी عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मर्दों के लिये (कई सूरतों में) सोने का इस्ति'माल ह़राम है। फिर दिल का किश्वर (या'नी दिल का मुल्क) फ़त्ह़ कर लेने वाले लहजे में इर्शाद फ़रमाते : कोई गुनाह लम्ह़े दो लम्ह़े या घन्टे दो घन्टे का होता है लेकिन **सोने की अंगूठी** का गुनाह ऐसा गुनाह है कि जब तक पहने

रहो मुसल्सल गुनाह ही गुनाह है। (अंगूठी के बारे में तफ़्सीली अह़काम इसी बाब के सफ़्ह़ा नम्बर 409 ता 412 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये)

मुफ़्तिये आ'ज़म से हम को प्यार है
اِنْ شَآءَاللّٰه अपना बेड़ा पार है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बन्दर और ख़िन्ज़ीर की शक्ल वाले : बे नमाज़ियों, गालियां बकने वालों, ग़ीबतों और चुग़्लियों के आ़दियों, फ़िल्में डिरामे देखने वालों और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों की गन्दगियों में लतपत रहने वालों की सोह़बतों में रहने वालों और बा वुजूदे क़ुदरत उन्हें गुनाहों से न रोकने वालों को डर जाना चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में **मुह़म्मद** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) की जान है ! मेरी उम्मत में से बा'ज़ लोग अपनी क़ब्रों से **बन्दर और ख़िन्ज़ीर** की शक्ल में उठेंगे, येह वोह लोग होंगे जिन्हों ने गुनाहगारों के साथ तअ़ल्लुक़ात रखे और क़ुदरत रखने के बा वुजूद उन्हें गुनाहों से मन्अ़ न किया। (تفسیر دُرِّ مَنثور ج ۳ ص ۱۲۷)

बन्दर और ख़िन्ज़ीर जैसे चेहरे : इसी त़रह़ चेहरा मस्ख़ होने या'नी बिगड़ जाने से **मु-तअ़ल्लिक़** एक और रिवायत पढ़िये और कुढ़िये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि इस उम्मत में से बा'ज़ लोग क़ियामत को **बन्दर और ख़िन्ज़ीर** की शक्ल में उठेंगे क्यूं कि वोह ना फ़रमानों से मेलजूल रखते हैं और उन को (गुनाहों से) रोकते नहीं **ह़ालां कि** वोह उन्हें रोकने की क़ुदरत रखते हैं। इस रिवायत को नक़्ल करने के बा'द ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं : मैं कहता हूं जब **ना फ़रमानों** से मुख़ा-लत़त (या'नी मेलजूल) करने वालों का येह ह़ाल हो जो कि ख़ुद ग़ाफ़िल न हों और गुनाहों में मुलव्वस भी न हों तो ख़ुद उन लोगों का क्या ह़ाल होगा जिन के

आ'ज़ा गुनाह से नहीं रुकते ! हम **अल्लाह** तआ़ला से उस की मेहरबानी त़लब करते हैं । (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّيْن ص۲۳۷)

आज चेहरे के कील मुहासे तो परेशान करें मगर......: मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन दोनों रिवायतों को पढ़ कर क्या आप को कोई तश्वीश नहीं हुई ? सोचिये तो सही ! आज अगर किसी के चेहरे पर **कील मुहासे** निकल आएं या कोई दाग़ धब्बा पड़ जाए तो वोह डॉक्टरों के पास खूब धक्के खाए या'नी आदमी अपने चेहरे के रंग रूप में मा'मूली सी और वोह भी आ़रिज़ी ख़ामी भी बरदाश्त न कर पाए तो ग़ौर कीजिये कि गुनाह करने वाले को देख कर येह ज़न्ने ग़ालिब आ जाने के बा वुजूद कि समझाऊंगा तो मान जाएगा फिर भी उसे उस गुनाह से न रोकने के सबब अगर कल क़ियामत में مَعَاذَالله शक्ल बिगड़ कर **बन्दर** और **सुअर** जैसी हो गई तो क्या बनेगा ! येह तो गुनाह से न रोकने वाले हम-सोह़बत का ह़ाल है और जो बज़ाते ख़ुद गुनाह करता है उस का अपना तो न जाने क्या अन्जाम होगा !

मेरी तारीक राहें रोशन हो गईं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जन्नतुल फ़िरदौस पाने और दूसरों को भी इस राह पर लगाने, अ़ज़ाबे जहन्नम से अपने आप को बचाने और दूसरों को भी इस का ख़ौफ़ दिलाने के लिये **नेकी की दा'वत** के म-दनी काम में हर दम लगे रहिये । रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ ख़ुद भी **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कीजिये और दूसरों को भी इस की रग़्बत दिलाइये, ख़ुद भी हर माह कम अज़् कम तीन दिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये और दूसरों को भी इस की दा'वत दीजिये । आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं : **ह़ाफ़िज़आबाद** (पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल मैं गुनाहों के अ़मीक़ (या'नी गहरे) गढ़े में धंसता चला जा रहा था । फ़िल्में डिरामे देखना, गाने बाजे सुनना और फ़ोह़्श नाविलें पढ़ना मेरे मा'मूलाते ज़िन्दगी में शामिल था । मेरे सर पर आवा-रगी का ऐसा भूत सुवार था कि रात भर घर से बाहर बुरे दोस्तों की सोह़बत में ज़िन्दगी

के नादिर लम्ह़ात बरबाद करता रहता, मैं ने अपनी इन ह़-र-कतों से घर वालों की नाक में दम कर रखा था। **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से मुन्सलिक मेरे बड़े भाईजान हर चन्द मेरी इस्लाह़ की सअ़्य (या'नी कोशिश) फ़रमाते मगर उन की नसीह़त आमोज़ बातों पर अ़मल करना दर कनार मैं सिरे से उन की बातें सुनने को ही तय्यार न होता। भाईजान मुस्तक़िल मिज़ाजी के साथ कोशिश करते रहे। आख़िरे कार उन की कुढ़न रंग ले ही आई। एक रोज़ बे साख़्ता मेरी तवज्जोह उन के **मीठे बोल** की जानिब मब्ज़ूल (या'नी मु-तवज्जेह) होने लगी, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में डूबी हुई उन की बातें सुन कर जज़्बाते **तअस्सुर** से मैं रोने लगा। اَلْحَمْدُ لِله मेरी आंखों से ग़फ़्लत का पर्दा हट गया और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ मेरे दिल में घर कर गया। मैं ने हाथों हाथ अपने भाई के सामने तमाम गुनाहों से सच्ची तौबा की और इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का अ़ह्द कर लिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से भाईजान की हमराही में **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल होने लगी, और **इस की ब-र-कत से मेरी ज़िन्दगी की तारीक राहें रोशन से रोशन तर होती चली गईं।** भाईजान ने सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने का ज़ेह्न दिया तो उन की इस ख़्वाहिश को अ़-मली जामा पहनाते हुए ता दमे तह़रीर اَلْحَمْدُ لِله عَزَّوَجَلَّ यक मुश्त **छब्बीस माह के म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर हूं। येह सब एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी या'नी मेरे प्यारे प्यारे भाईजान की मुस्तक़िल मिज़ाजी से की जाने वाली **इन्फ़िरादी कोशिश** का नतीजा है कि मुझ जैसा दीन से अ़-मलन कोसों दूर रहने वाला गुनहगार शख़्स अब अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश में मसरूफ़े अ़मल है।

तुम्हें लुत्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का — क़रीब आ के देखो ज़रा म-दनी माह़ोल
नबी की मह़ब्बत में रोने का अन्दाज़ — चले आओ सिखलाएगा म-दनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने बिल आख़िर बड़े भाई की कुढ़न भरी मुसल्सल **इन्फ़िरादी कोशिश** रंग लाई और छोटा भाई गुनाहों की दलदल से निकल कर

26 माह के म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। हर इस्लामी भाई को चाहिये कि वोह घर में और बाहर हर जगह दूसरों को नेक बनाने के लिये ख़ूब ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश करता और सवाब कमाता रहे, इस म-दनी काम से हरगिज़ न उक्ताए। **इन्फ़िरादी कोशिश तो गोया सोने की कान है जितना खोदेंगे उतना सोना निकलता रहेगा** या'नी जितनी इन्फ़िरादी कोशिश ज़ियादा होगी उतना ही सवाब भी ज़ियादा मिलेगा तो बस "सवाब का सोना" इकठ्ठा करते जाइये, **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए किसी एक शख़्स को हिदायत अ़त़ा फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास सुर्ख़ ऊंट हों। (مُسلِم ص١٣١١ حديث ٢٤٠٦) अगर आप के ज़रीए कोई हिदायत पा गया और म-दनी माह़ोल में आ गया तो इस का सवाब मज़ीद बरआं या'नी इस के इ़लावा। कोई **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया इस का सवाब जुदा और अगर कोई **म-दनी इन्आ़मात** का आ़मिल बन गया फिर तो आप के वारे ही नियारे हो गए! बस जितनों की इस्लाह़ का सबब आप बनेंगे उतना ही आप के लिये सवाब में इज़ाफ़ा होता चला जाएगा। बस नेकी की दा'वत देते चले जाइये। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है : **اِنَّ الدَّالَّ عَلَی الْخَیْرِ کَفَاعِلِہٖ** या'नी बेशक नेकी की राह दिखाने वाला **नेकी** करने वाले की त़रह़ है। (ترمذی ج٤ ص٣٠٥ حديث ٢٦٧٩)

जन्नती है वोह जिस ने सुन्नत के
ख़ुद को सांचे में ढाल रख्खा है

(वसाइले बख़्शिश, स. 357)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

या रब्बे मुस्त़फ़ा جَلَّ جَلَالُہٗ ! ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमें ख़ुद नेकियां करते हुए, दूसरों को नेकी की दा'वत देने वाला और गुनाहों से बचते हुए दूसरों को गुनाहों

से बचाने वाला बना, **या अल्लाह** हमें जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला अ़ता फ़रमा और वहां अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हो मग़्फ़िरत पए सुल्ताने अम्बिया या रब
मुआ़फ़ फ़ज़्लो करम से हो हर ख़ता या रब
पड़ोस ख़ुल्द में सरवर का हो अ़ता या रब
बिला हि़साब हो जन्नत में दाख़िला या रब
कभी भी होना न नाराज़ या ख़ुदा या रब
नबी का सदक़ा सदा के लिये तू राज़ी हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 98)

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

आवाज़ बैठ जाए तो तीन इलाज

﴾1﴿ **नमक** का छोटा सा टुकड़ा आग में ख़ूब गर्म कर के किसी चीज़ से पकड़ कर फ़ौरन ठन्डे पानी के गिलास में बुझा दीजिये, फिर वोह **नमक की डली** पानी से निकाल कर उस पानी को पी जाइये। दो तीन बार येह इलाज करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा हो जाएगा ﴾2﴿ एक चम्मच **जव शरीफ़** के दाने चबाइये और चूसिये फिर आख़िर में निगल जाइये ﴾3﴿ ख़शख़ाश के छिलके और अज्वाइन हम वज़्न लीजिये और पानी में उबाल कर बरदाश्त के क़ाबिल हो जाने के बा'द उस पानी से **ग़रारे** कीजिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

"मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है" के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के 22 म-दनी फूल

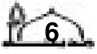
 **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़्हबी दूर की जाए तो वोह जन्नती है।" (حِلْيَةُ الْاولياء ج١٠ ص٤٥ رقم ١٤٤٦٦)

 **सरकारे** मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीस को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए।" (سُنَنِ تِرمِذی ج٤ ص٢٩٨ حديث ٢٦٦٥)

 **ह़ज़रते** सय्यिदुना इदरीस عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नामे मुबारक की एक ह़िक्मत येह भी है कि कुतुबे इलाहिय्यह की कस्रते दर्सो तदरीस के बाइस आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नाम **इदरीस** हुवा। (تفسیر کبیر ج ٧ ص ٥٥٠، تفسير الحسنات ج٤ ص٤٨)

 **हुज़ूरे** ग़ौसे पाक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰى صِرْتُ قُطْبًا या'नी मैं ने इ़ल्म का **दर्स** लिया यहां तक के मक़ामे क़ुत़्बिय्यत पर फ़ाइज़ हो गया। (क़सीदए ग़ौसिय्या)

 **फ़ैज़ाने सुन्नत** से **दर्स** देना भी दा'वते इस्लामी का एक म-दनी काम है। घर, मस्जिद, दुकान, स्कूल, कॉलेज, चौक वग़ैरा में वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना **दर्स** के ज़रीए ख़ूब ख़ूब सुन्नतों के **म-दनी फूल** लुटाइये और ढेरों सवाब कमाइये।

 **फ़ैज़ाने सुन्नत** से रोज़ाना कम अज़ कम **दो**[2] **दर्स** देने या सुनने की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। (इन दो में एक "घर दर्स" ज़रूर हो)

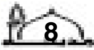
 पारह 28 **सू-रतुत्तह़रीम** की छटी आयत में इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाने का एक ज़रीआ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** का **दर्स** भी है। (दर्स के इ़लावा दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान या म-दनी

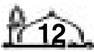
मुज़ा-करे की एक केसिट या V.C.D भी घर वालों को सुनाइये)

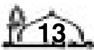
 8. **ज़िम्मेदार** घड़ी का वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना **चौक दर्स** का एहतिमाम करें। म-सलन : रात **9** बजे **मदीना चौक** (साढ़े नव बजे) **बग़दादी चौक** में वग़ैरा। छुट्टी वाले दिन एक से ज़ियादा मक़ामात पर **चौक दर्स** का एहतिमाम कीजिये। (मगर हुक़ूक़े आ़म्मा तलफ़ न हों म-सलन आप की वजह से मुसल्मानों का रास्ता न रुके वरना गुनहगार होंगे)

 9. **दर्स** के लिये वोह नमाज़ मुन्तख़ब कीजिये जिस में ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई शरीक हो सकें।

 10. **दर्स** वाली नमाज़ उसी मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ **बा जमाअ़त** अदा फ़रमाइये।

 11. **मेह़राब** से हट कर (सेह़्न वग़ैरा में) कोई ऐसी जगह दर्स के लिये मख़्सूस कर लीजिये जहां दीगर नमाज़ियों और तिलावत करने वालों को दुश्वारी न हो।

 12. **ज़ैली** मुशा-वरत के निगरान को चाहिये कि अपनी मस्जिद में **दो ख़ैर ख़्वाह** मुक़र्रर करे जो दर्स (बयान) के मौक़अ़ पर जाने वालों को नरमी से रोकें और सब को क़रीब क़रीब बिठाएं।

 13. **पर्दे में पर्दा** किये दो[2] ज़ानू बैठ कर **दर्स** दीजिये। अगर सुनने वाले ज़ियादा हों तो खड़े हो कर या माईक पर देने में भी ह़रज नहीं जब कि किसी एक भी नमाज़ी या तिलावत करने वाले वग़ैरा को तश्वीश न हो।

 14. **आवाज़** न तो ज़ियादा बुलन्द हो और न ही बिल्कुल आहिस्ता, ह़त्तल इम्कान इतनी आवाज़ से **दर्स** दीजिये कि सिर्फ़ ह़ाज़िरीन सुन सकें। इस बात की हमेशा एह़तियात़ फ़रमाइये कि दर्स व बयान की आवाज़ से किसी सोए हुए या किसी नमाज़ी या मश्ग़ूले तिलावत वग़ैरा को तक्लीफ़ न हो।

 15. **दर्स** हमेशा ठहर ठहर कर और धीमे अन्दाज़ में दीजिये।

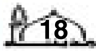
 16. **जो** कुछ **दर्स** देना है पहले उस का कम अज़ कम एक बार मुत़ा-लआ़ कर लीजिये ताकि ग़-लत़ियां न हों।

 17. **फ़ैज़ाने सुन्नत** के मुअ़र्रब अल्फ़ाज़ ए'राब के मुत़ाबिक़ ही अदा कीजिये इस त़रह़






اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **तलफ़्फ़ुज़** की दुरुस्त अदाएगी की आ़दत बनेगी।

 18 **ह़म्दो** सलात, दुरूदो सलाम के दोनों सीग़े, आयते दुरूद और इख़्तितामी आयात वग़ैरा किसी सुन्नी आ़लिम या क़ारी को ज़रूर सुना दीजिये। इसी त़रह़ अ़-रबी दुआएं वग़ैरा जब तक उ़-लमाए अहले सुन्नत को न सुना लें अकेले में भी न पढ़ा करें।

 19 **फ़ैज़ाने सुन्नत** के इलावा दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ होने वाले **म-दनी रसाइल** से भी **दर्स** दे सकते हैं।[1]

 20 **दर्स** मअ़ इख़्तितामी दुआ़ सात मिनट के अन्दर अन्दर मुकम्मल कर लीजिये।

 21 **हर** मुबल्लिग़ को चाहिये कि वोह **दर्स का त़रीक़ा,** बा'द की **तरग़ीब** और **इख़्तितामी दुआ़** ज़बानी याद कर ले।

22 **दर्स** के त़रीक़े में इस्लामी बहनें ह़स्बे ज़रूरत तरमीम कर लें।

फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देने का त़रीक़ा

तीन बार इस त़रह़ ए'लान फ़रमाइये : "क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइये।" पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर इस त़रह़ इब्तिदा कीजिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

इस के बा'द इस त़रह़ दुरूदो सलाम पढ़ाइये :

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

अगर मस्जिद में हैं तो इस त़रह़ ए'तिकाफ़ की निय्यत करवाइये :

نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَاف (**तरजमा :** मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की।)

1. अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल के इलावा किसी और किताब से दर्स की इजाज़त नहीं। **मर्कज़ी मजलिसे शूरा**





फिर इस तरह़ कहिये, **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** क़रीब क़रीब आ कर दर्स की ता'ज़ीम की निय्यत से हो सके तो दो ज़ानू बैठ जाइये अगर थक जाएं तो जिस त़रह़ आप को आसानी हो उसी त़रह़ बैठ कर निगाहें नीची किये तवज्जोह के साथ रिज़ाए इलाही के लिये इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की निय्यत से फ़ैज़ाने सुन्नत का **दर्स** सुनिये कि ला परवाही के साथ इधर उधर देखते हुए, ज़मीन पर उंगली से खेलते हुए, लिबास, बदन या बालों वग़ैरा को सहलाते हुए सुनने से इस की ब-र-कतें ज़ाइल होने का अन्देशा है। (बयान के आग़ाज़ में भी इसी अन्दाज़ में रग़बत दिलाइये और अच्छी अच्छी निय्यतें भी करवाइये) येह कहने के बा'द **फ़ैज़ाने सुन्नत** से देख कर एक दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत बयान कीजिये। फिर कहिये :

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जो कुछ लिखा हुवा है वोही पढ़ कर सुनाइये। आयात व अ़-रबी इ़बारात का सिर्फ़ तरजमा पढ़िये। किसी भी आयत या ह़दीस का अपनी राय से हरगिज़ खुलासा मत कीजिये।

दर्स के आख़िर में इस त़रह़ तरग़ीब दिलाइये

(हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि ज़बानी याद कर ले और दर्सो बयान के आख़िर में बिला कमी बेशी इसी त़रह़ तरग़ीब दिलाया करे)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की **आ़लमगीर** ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है । (ترغیب و ترہیب)

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है । إِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ"** अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये[1] म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है । إِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी ! तेरी धूम मची हो

आख़िर में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ (या'नी जिस्म व दिल की आ़जिज़ी) और क़बूलिय्यत के यक़ीन के साथ दुआ़ में हाथ उठाने के आदाब बजा लाते हुए बिला कमी बेशी इस त़रह़ दुआ़ मांगिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ٥ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी, हमारे मां बाप की और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** दर्स की ग़-लत़ियां और तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा, नेक अ़मल का जज़्बा दे, हमें परहेज़ गार और मां बाप का फ़रमां बरदार बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें अपना और अपने म-दनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का **मुख़्लिस** आ़शिक़ बना । हमें गुनाहों की बीमारियों से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने और इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए दूसरों को भी म-दनी कामों की तरग़ीब दिलवाने का जज़्बा अ़त़ा फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** मुसल्मानों को बीमारियों, क़र्ज़ दारियों, बे रोज़गारियों, बे औलादियों, बे जा मुक़द्दमे बाज़ियों और त़रह़ त़रह़ की परेशानियों से नजात अ़त़ा फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** इस्लाम का बोलबाला कर और दुश्मनाने इस्लाम का मुंह काला कर । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत, **जन्नतुल बक़ीअ़** में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** मदीने की ख़ुश्बूदार ठन्डी ठन्डी हवाओं का वासित़ा हमारी जाइज़ दुआ़एं क़बूल फ़रमा ।

مدینہ

1. यहां इस्लामी बहन कहे : "घर के मर्दों को म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाना है ।"

कहते रहते हैं दुआ के वासित़े बन्दे तेरे
कर दे पूरी आरज़ू हर बे कसो मजबूर की

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

शे'र के बा'द येह आयते मुबा-रक पढ़िये :

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٥٦﴾ (پ٢٢ الاحزاب:٥٦)

सब दुरूद शरीफ़ पढ़ लें फिर पढ़िये :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾ (پ٢٣ الصّٰفّٰت)

दर्स की कमाई पाने के लिये सवाब की निय्यत के साथ (खड़े खड़े नहीं बल्कि) **बैठ** कर ख़न्दा पेशानी के साथ लोगों से मुलाक़ात कीजिये, चन्द नए इस्लामी भाइयों को अपने क़रीब बिठा लीजिये और **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए ख़ूब मुस्कुराते हुए उन्हें **म-दनी इन्आमात** और **म-दनी क़ाफ़िलों** की ब-र-कतें समझाइये । (बैठ कर मिलने में हिक्मत येह है कि कुछ न कुछ इस्लामी भाई हो सकता है आप के साथ बैठे रहें वरना खड़े खड़े मिलने वाले उ़मूमन चल पड़ते हैं यूं इन्फ़िरादी कोशिश की सआदत से महरूमी हो सकती है)

तुम्हें ऐ मुबल्लिग़ येह मेरी दुआ है
किये जाओ तै तुम तरक़्क़ी का ज़ीना

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **!** मुझे और पाबन्दी के साथ **फ़ैज़ाने सुन्नत** से रोज़ाना कम अज़ कम **दो**[2] **दर्स एक** घर में और दूसरा मस्जिद, चौक या स्कूल वग़ैरा में देने और सुनने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा और हमें हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर बना । اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

मुझे दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की तौफ़ीक़
मिले दिन में दो मर्तबा या इलाही

ماخذ ومراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ/سال اشاعت
1	قران پاک	کلامِ الٰہی عزوجل	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
2	ترجمۂ کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
3	تفسیر عبد الرزاق	امام ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام صنعانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
4	تفسیر طبری	علامہ ابو جعفر محمد بن جریر طبری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۰ھ
5	احکام القرآن	ابوبکر احمد بن علی رازی جصاص رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
6	تفسیر بغوی	امام ابو محمد حسین بن مسعود رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۴ھ
7	تفسیر کبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر رازی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۰ھ
8	تفسیر قرطبی	امام ابو عبد اللہ محمد بن احمد انصاری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
9	تفسیر خازن	علامہ علاء الدین علی بن محمد بغدادی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	اکوڑہ خٹک
10	تفسیر بیضاوی	علامہ عبد اللہ ابو عمر بن محمد بیضاوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
11	تفسیر درمنثور	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
12	تفسیرات احمدیہ	علّامہ احمد بن ابو سعید جونپوری المعروف مُلّا جیون رحمۃ اللہ تعالی علیہ	پشاور
13	تفسیر روح البیان	شیخ اسماعیل حقی بروسی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۰۵ھ
14	حاشیۃ الصاوی علی الجلالین	احمد بن محمد صاوی مالکی خلوتی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۱ھ

15	روح المعانی	علامہ شہاب الدین سید محمود آلوسی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۰ھ
16	تفسیر خزائن العرفان	سید نعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۳۲ھ
17	تفسیر نعیمی	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبہ اسلامیہ مرکز الاولیاء لاہور
18	تفسیر نور العرفان	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	پیر بھائی اینڈ کمپنی
19	صحیح بخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
20	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار ابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ
21	سنن ترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
22	سنن نسائی	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
23	سنن ابو داود	امام سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
24	سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید قزوینی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
25	سنن کبریٰ	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
26	سنن دارمی	امام عبد اللہ بن عبد الرحمٰن دارمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتاب العربی بیروت ۱۴۰۷ھ
27	موطا امام مالک	امام مالک بن انس رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
28	نوادر الاصول	علامہ محمد بن علی بن حسن حکیم ترمذی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبۃ الامام البخاری القاہرہ ۱۴۲۹ھ
29	مسند البزار	امام ابوبکر احمد بن عمرو بن عبد الخالق بزار رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورہ ۱۴۲۴ھ
30	مسند عبد بن حمید	علامہ عبد بن حمید بن نصر ابو محمد الکسی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبۃ السنۃ القاہرہ ۱۴۰۸ھ

31	شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
32	مستدرک	امام محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۱۸ھ
33	المسند	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالفکر بیروت ۱۴ ۱۴۱۱ھ
34	مسند ابی یعلی	امام احمد بن علی موصلی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
35	الفردوس بمأثور الخطاب	علامہ شیرویہ بن شہردار دیلمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۶ھ
36	معجم کبیر	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۲ھ
37	معجم الاوسط	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
38	معجم صغیر	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۳ھ
39	مسند الشامیین	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۴۰۵ھ
40	مکارم الاخلاق	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
41	الکامل فی ضعفاء الرجال	امام ابواحمد عبد اللہ بن عدی جرجانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
42	شرح السنۃ	امام ابو محمد الحسین بن مسعود بغوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
43	مصنف عبد الرزاق	امام ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام صنعانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
44	مصنف ابن ابی شیبہ	امام عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
45	کتاب ذکر الموت	امام عبد اللہ بن محمد، ابوبکر بن ابی الدنیا رحمۃ اللہ تعالی علیہ	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۶ھ
46	کتاب التوبۃ	امام عبد اللہ بن محمد، ابوبکر بن ابی الدنیا رحمۃ اللہ تعالی علیہ	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۶ھ

47	کتاب الصمت	امام عبداللہ بن محمد،ابوبکر بن ابی الدنیا رحمة الله تعالى عليه	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۶ھ
48	کتاب المنامات	امام عبداللہ بن محمد،ابوبکر بن ابی الدنیا رحمة الله تعالى عليه	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۶ھ
49	کتاب المحتضرین	امام عبداللہ بن محمد،ابوبکر بن ابی الدنیا رحمة الله تعالى عليه	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۶ھ
50	کتاب ذم الدنیا	امام عبداللہ بن محمد،ابوبکر بن ابی الدنیا رحمة الله تعالى عليه	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۶ھ
51	الزہد	امام عبداللہ بن مبارک مروزی رحمة الله تعالى عليه	دار الکتب العلمیہ بیروت
52	الزہد	امام احمد بن حنبل رحمة الله تعالى عليه	دار الغد الجدید مصر ۱۴۲۶ھ
53	الزہد	ابوداود سلیمان بن الأشعث رحمة الله تعالى عليه	دار المشکاۃ بحلوان بمصر ۱۴۱۴ھ
54	الزھد الکبیر	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمة الله تعالى عليه	مؤسسۃ الکتب الثقافیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
55	الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	حافظ محمد بن حبان بن احمد رحمة الله تعالى عليه	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
56	جمع الجوامع	امام جلال الدین سیوطی رحمة الله تعالى عليه	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
57	جامع صغیر	امام جلال الدین سیوطی رحمة الله تعالى عليه	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۵ھ
58	مجمع الزوائد	امام حافظ نور الدین ہیثمی رحمة الله تعالى عليه	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
59	کنز العمال	علامہ علاؤ الدین علی متقی رحمة الله تعالى عليه	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
60	حلیۃ الاولیاء	علامہ ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی رحمة الله تعالى عليه	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
61	البدور السافرۃ فی امور الآخرۃ	امام جلال الدین عبدالرحمٰن سیوطی رحمة الله تعالى عليه	مؤسسۃ الکتب الثقافیہ بیروت ۱۴۲۵ھ
62	شرح معانی الآثار	امام احمد بن محمد طحاوی رحمة الله تعالى عليه	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ

63	کشف الخفاء	شیخ اسماعیل بن محمد عجلونی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
64	عمدۃ القاری	علامہ ابو محمد محمود بن احمد عینی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
65	شرح صحیح مسلم	علامہ ابو زکریا یحیٰی بن شرف نووی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۱ھ
66	اِرشاد الساری	علامہ شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۱ھ
67	مرقاۃ المفاتیح	علامہ علی قاری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
68	التیسیر	علامہ محمد عبد الرء ُوف مناوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الحدیث مصر
69	فیض القدیر	علامہ محمد عبد الرء ُوف مناوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
70	اشعۃ اللمعات	شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	کوئٹہ
71	مرآۃ المناجیح	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
72	نزہۃ القاری	مفتی محمد شریف الحق امجدی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	فرید بک اسٹال مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۱ھ
73	مبسوط	علامہ محمد بن احمد بن ابی سہل سرخسی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
74	ہدایہ	علامہ علی بن ابی بکر مَرغینانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت
75	تبیین الحقائق	علامہ عثمان بن علی زیلعی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۰ھ
76	شرح الوقایہ	علامہ صدر الشریعہ عبید اللہ بن مسعود رحمۃ اللہ تعالی علیہ	باب المدینہ کراچی
77	جوہرہ نیرہ	علامہ ابو بکر بن علی حداد رحمۃ اللہ تعالی علیہ	باب المدینہ کراچی
78	غنیۃ المتملی	علامہ محمد ابراہیم بن حلبی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	سہیل اکیڈمی مرکز الاولیاء لاہور
79	المیزان الکبریٰ	علامہ عبد الوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مصطفی البابی مصر

80	الفتاوی الحدیثیہ	علامہ احمد بن محمد بن علی بن حجر ہیتمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۹ھ
81	تنویر الابصار	علامہ محمد بن عبد اللہ بن احمد تمرتاشی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
82	مراقی الفلاح	علامہ حسن بن عمار بن علی شرنبلالی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	باب المدینہ کراچی
83	درمختار	علامہ علاء الدین محمد بن علی حصکفی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
84	فتاوی عالمگیری	شیخ نظام و جماعۃ من علماء الہند رحمۃ اللہ تعالٰی علیہم	دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
85	حاشیۃ الطحطاوی علی المراقی	علامہ احمد بن محمد طحطاوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	باب المدینہ کراچی
86	حاشیۃ الطحطاوی علی الدر المختار	علامہ احمد بن محمد طحطاوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	کوئٹہ
87	ردالمحتار	علامہ ابن عابدین محمد امین شامی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
88	جدالممتار	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
89	فتاوی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
90	الملفوظ	مفتی مصطفٰے رضا خان رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۹ھ
91	فتاوی امجدیہ	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبہ رضویہ باب المدینہ ۱۴۱۹ھ
92	بہارِ شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۹ھ
93	وقار الفتاوی	مفتی وقار الدین رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	بزم وقار الدین باب المدینہ ۲۰۰۱ء
94	تاریخ بغداد	حافظ احمد بن علی خطیب بغدادی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
95	تاریخ دمشق	علامہ ابو القاسم علی بن حسن رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۶ھ
96	الطبقات الکبری	علامہ محمد بن سعد المعروف بابن سعد رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ

97	الطبقات الکبریٰ	علامہ عبدالوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالفکر بیروت ١٤١٩ھ
98	المنتظم فی تاریخ الملوک والامم	علامہ ابن جوزی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ١٤١٥ھ
99	الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	علامہ یوسف بن عبداللہ بن محمد بن عبدالبر رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ١٤٢٢ھ
100	تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	باب المدینہ کراچی
101	شمائل محمدیہ	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	داراحیاء التراث العربی بیروت
102	دلائل النبوۃ	علامہ ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ١٤٢٣ھ
103	مدارج النبوت	شیخ عبدالحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	نوریہ رضویہ مرکز الاولیاء لاہور ١٩٩٧ء
104	المواہب اللدنیۃ	علامہ شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ١٤١٦ھ
105	شرح الزرقانی علی المواہب	علامہ محمد بن عبدالباقی الزرقانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ١٤١٧ھ
106	بہجۃ الاسرار	علامہ نورالدین علی بن یوسف شطنوفی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ١٤٢٣ھ
107	الخیرات الحسان	علامہ شہاب الدین احمد بن حجر ہیتمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ١٤٠٣ھ
108	القول البدیع	امام حافظ محمد بن عبدالرحمٰن سخاوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مؤسسۃ الریان بیروت ١٤٢٢ھ
109	رسالہ قشیریہ	امام ابوالقاسم عبدالکریم بن ہوازن قشیری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ١٤١٨ھ
110	قوت القلوب	شیخ ابوطالب محمد بن علی مکی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت ١٤٢٦ھ
111	تنبیہ المغترین	علامہ عبدالوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالمعرفہ بیروت ١٤٢٥ھ
112	احیاء العلوم	امام ابوحامد محمد بن محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارصادر بیروت ١٤٢١ھ
113	منہاج العابدین	امام ابوحامد محمد بن محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دارالکتب العلمیہ بیروت

114	کیمیائے سعادت	امام ابو حامد محمد بن محمد بن محمد غزالی رحمة الله تعالى عليه	انتشارات گنجینہ تہران ۱۳۷۹ھ
115	اتحاف السادہ	علامہ سید محمد بن محمد حسینی زبیدی رحمة الله تعالى عليه	دار الکتب العلمیہ بیروت
116	حدیقہ ندیہ	علامہ عبد الغنی نابلسی حنفی رحمة الله تعالى عليه	پشاور
117	سبع سنابل	علامہ میر عبد الواحد بلگرامی رحمة الله تعالى عليه	مکتبہ قادریہ مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۰۲ھ
118	تذکرۃ الاولیاء	شیخ فرید الدین محمد عطار رحمة الله تعالى عليه	انتشارات گنجینہ تہران
119	اخبار الاخیار	شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمة الله تعالى عليه	فاروق اکیڈمی
120	التذکرہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن احمد انصاری رحمة الله تعالى عليه	دار السلام مصر ۱۴۲۹ھ
121	کشف الغمہ عن جمیع الامہ	علامہ عبد الوہاب بن احمد شعرانی رحمة الله تعالى عليه	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
122	کتاب العظمۃ	امام عبد اللہ بن محمد ابو الشیخ رحمة الله تعالى عليه	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۴ھ
123	روض الریاحین	علامہ عبد اللہ بن اسعد بن علی یافعی رحمة الله تعالى عليه	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
124	الروض الفائق	علامہ شعیب بن سعد عبد الکافی رحمة الله تعالى عليه	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ
125	بحر الدموع	علامہ ابن جوزی رحمة الله تعالى عليه	مکتبہ دار الفجر دمشق ۱۴۲۴ھ
126	عیون الحکایات	علامہ ابن جوزی رحمة الله تعالى عليه	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
127	ذم الہوی	علامہ ابن جوزی رحمة الله تعالى عليه	مکتبۃ الکتاب والسنہ پشاور
128	قرۃ العیون	فقیہ ابو اللیث سمرقندی رحمة الله تعالى عليه	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ
129	الزواجر عن اقتراف الکبائر	علامہ ابو العباس احمد بن محمد بن حجر ہیتمی رحمة الله تعالى عليه	دار المعرفہ بیروت ۱۴۱۹ھ
130	شرح الصدور	امام جلال الدین سیوطی رحمة الله تعالى عليه	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ

131	نفحات الانس	علامہ عبدالرحمٰن جامی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۳ھ
132	تنبیہ الغافلین	فقیہ ابو اللیث محمد بن احمد سمرقندی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	پشاور ۱۴۲۰ھ
133	مکاشفۃ القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
134	مستطرف	علامہ شہاب الدین محمد بن ابو احمد رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
135	حیاۃ الحیوان الکبری	علامہ کمال الدین محمد بن موسی دمیری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۵ھ
136	کتاب التوابین	شیخ ابو محمد عبداللہ بن احمد رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۷ھ
137	غنیۃ الطالبین	شیخ عبدالقادر جیلانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
138	انفاس العارفین	علامہ شاہ ولی اللہ محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	فضل نور اکیڈمی گجرات
139	کشف المحجوب	حضرت علی بن عثمان ہجویری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مرکز الاولیاء لاہور
140	برالوالدین	علامہ ابوبکر محمد بن ولید طرطوشی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مؤسسۃ الکتب الثقافیہ بیروت ۱۴۲۳ھ
141	امالی ابن بشران	علامہ ابو القاسم عبدالملک بن بشران رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الوطن ۱۴۱۸ھ
142	جذب القلوب	شیخ عبدالحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	نوری بک ڈپو لاہور
143	التعریفات	علامہ سید شریف علی بن محمد جرجانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار المنار سوڈان
144	مثنوی	مولانا جلال الدین رومی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۷۴ھ
145	فضائل دعا	علامہ مولانا نقی علی خان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
146	حیات اعلیٰ حضرت	علامہ مولانا ظفر الدین بہاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی